

Durga Sah Municipal Library
NAINI TAL
दुर्गासाह म्युनिसिपल लाइब्रेरी
नैनीताल

Class No. 153.1108
Book No. S14A
Rec No. 3569





मूल्य
दस रुपया

गोविन्द सिंह
महेश कुमार शर्मा

सोहनराम एण्ड सन्स
झाड़ाबाग, वाराणसी-१
द्वारा प्रकाशित

★

Durga Sah Municipal Library,
NAINITAL.
दुर्गासाह म्युनिसिपल लाइब्रेरी
नैनीताल
Class No. 954.083
Book No. C64A
Received on Nov 57

प्रथम संस्करण
मार्च, १९५७

★

—अधिकृत विक्रेता
कन्हैयालाल, रामकृष्ण बुकसेलर
आसभैरो चौक, वाराणसी

★

दीपक प्रेस
नदेसर, कैंट, वाराणसी
द्वारा मुद्रित

3867

दोपहर हो जाने पर भी, जनवरी के सूरज में तपन थी। बॉरीक बाहर फैली धूप में बैठना बड़ा सुहावना लग रहा था। दीनानाथ पांडे कुँए के पानी से भरी बाल्टी पास रखे, लोटे के जल से कुल्ला करता हुआ स्नान की तैयारियाँ कर रहा था।

भीगे हाथों जनेऊ सेंकते हुए गायत्री गुनगुनाने लगा।

"महाराज, बड़ी प्यास लगी है जरा लोटा तो दीजिए!"

दीना ने देखा। सामने खड़े आदमी की पोशाक पर नजर पड़ते ही भाँप गया—खलासी, कारतूस वाले कारखाने में काम करने वाला आदमी।

"क्या कहा बे?"

"प्यास लगी है, महाराज! लोटा माँगता हूँ।"

"आँख फूट गई है क्या! जनेऊ नहीं देखता!"

"देखता हूँ महाराज आप ब्राह्मन हैं।"

"फिर लोटा क्यों माँगता है ! खलासी...पांड़े के लोटे में पानी पियेगा। दूँगा एक हाथ, मुँ भुरता हो जायेगा !..."

खलासी हँस पड़ा—"जाँत-पाँत की बात खूब कही, महाराज ! अबके तो सबकी जात गई !"

दीना पांड़े का मुँह खुला का खुला रह गया।

खलासी की बात समझ न पड़ी।

"महाराज, अबके हमारे कारखाने में नये ढंग का कारतूस बन रहा है। गाय की चर्बी, सुअर का पित्ता लगा है। आप लोगों को ओंठ से पकड़, दाँत से काटना होगा। अबके तो सिपाहियों की जात गई महाराज।"

दीना पांड़े जनेऊ से हाथ हटा झनझनाकर खड़ा हो गया।

"क्या...क्या...क्या कहा ?"

"ठीकई कहा, महाराज। अबके सब सिपाहियन की जात गई। लोटा से मत पानी पीने दो, इससे क्या !"—खलासी हँसता हुआ चला गया।

दीनानाथ बुत ! खलासी की कही बात कान में पिघले शीशे की तरह घुसने लगी। क्या कह गया खलासी ? ठीक ही कहा उसने। कारतूस के कारखाने में काम करने वाला आदमी। खुद कारतूस बनाता है। कोई बात उससे कैसे छिपी रह सकती है ! जरूर कारतूस में गाय की चर्बी, सुअर का पित्ता लगता होगा, तभी तो कहा। भला उसे झूठ बोलने की जरूरत ?

खलासी की बात सच हो सकती है, क्योंकि आजकल अंग्रेज यहाँ के रहने वालों को क्रिस्तान बना देना चाहते हैं। जो क्रिस्तान बन जाता है, साहब की तरह सिर पर टोकरी और कड़ा सुथना पहिरने लगता है, उसे अंग्रेज बहुत चाहते हैं। आजकल गिटपिट पढ़ाने के लिए मदर्से भी खुल रहे हैं। खलासी ने बात झूठी नहीं कही। चुपके-चुपके अंग्रेज धरम ले लेना चाहते हैं। हिन्दू मुसलमान दोनों का धरम।

दीनानाथ ने जल्दी-जल्दी दो चार लोटे पानी डाल नहाया। हरेराम हरेराम करते हुए फुर्ती से देह पोंछी। भगवान ही अब धर्म के रक्षक हैं। धर्म के पीछे नौकरी चली जायगी। नौकरी जाना मंजूर, धरम बिगाड़ना नहीं। दीना नहीं

पोंछकर ऑगोछा सूखने को फैला दिया। कोठरी में गया। उपलों पर बटलोई में पकती दाल खदबद कर रही थी।

बटलोई उतारी। बाटियाँ बना चुका था।

खाने बैठा, पर खलासी की बात याद आते ही हाथ रुक गया। परोसा अन्न माथे लगा, हरेराम कह, हाथ धो उठ गया। हे भगवान अब इन्हीं दाँतों गोमाता की चर्बी, सुअर का पित्ता मिला कारतूस काटना पड़ेगा! हरेराम, हरेराम!! जी उबकाई से इतना भरा कि भूख ही मर गई।

बाहर निकला।

संगी साथी अपने अपने काज लगे थे। दीना ने सबको गौर से देखा। शायद दूसरे लोगों को भेद नहीं मालूम। इन सबका धरम चोरी-चोरी खराब हो जायेगा। बाद में मालूम होने से क्या! धरम एक बार गया सो गया...और वह भी गो-माता की चर्बी, एक हिन्दू के दाँत लगे...ऐसे हिन्दू की मौत भली। इन बेचारों को कुछ मालूम नहीं।

"का हो, जगरनाथ सिंह?"

"हाँ, पांड़ेजी!"

"का हो रहा है?"

"हम तो जीम चुके महाराज!"—जगरनाथ सिंह पेट पर हाथ फेरता हुआ बाहर निकला—"आप पाय चुके?"

"हमसे तो आज खाना ही नहीं खाया गया, जगरनाथ।"

"खाना पकने में गड़बड़ हो गई?"

"नहीं, खाना तो ठीक बना है। हम ऐसी बात सुने हैं कि खाना नहीं खाया गया!"

"घर में तो सब कुशल मंगल है?"

"घर दुआर की बात नहीं जगरनाथ!"—दीनानाथ ने फुसफुसाकर कहा—"अबके सबका धरम गया।"

"क्या बरमा की लड़ाई में हम लोगों को जहाज में भरकर भेजने का हुकुम फिर आया है?"

"नहीं, अबके कारखाने में ऐसा कारतूस बन रहा है, जिसमें गोमाता की..."

"गौमाता की...पांडे जी, चुप क्यों हो गये ? बोलिए ?"

"भगवान रक्षा करें, उसमें गौमाता की चरबी और सुअर का पित्ता लपेटा आ रहा है। यही दाँतों काटना होगा।"

"महाराज, महाराज, महाराज आप ये क्या कह रहे हैं !!"

"मैंने अभी सुना है, जगरनाथ सिंह..."

"हमें तो किसी ने नहीं कहा !"

"हम लोगों को काहे बताया जायेगा ! ये अंग्रेज चुपके-चुपके हमारा धरम नष्ट कर सबको क्रिस्तान बना लेना चाहते हैं। ये सब इन लोगों की चाल है। सुना तो होगा, बारकपुर की सिपाही को नया भेष दिया जाने वाला है। कंठी-माला, छाप न लगे। पगड़ी न बँधे। सिर पर टोपी लगाओ और ये टोपी अँग्रेज टोपी से मिलती जुलती है !"

"ये बात तो सही है, पांड़े जी !"

"बस ! धीरे धीरे यहाँ भी यही होगा। अबके सबका धरम गया जगरनाथ सिंह, अबके तो..."

दीनानाथ साहब के चपरासी को आते देख, जरा हट, चुप हो गये।

"पालागी पांड़े जी !"

"अनन्द रहो !"

"आपको साहब बुलाये हैं, तैयार होकर जाना है।"

"अभी आये।"...

दीनानाथ मुड़कर बोले—"फिर बात होगी जगरनाथ सिंह ! जरा तुम इस बात का पता लगाना...।"

"अच्छा पांड़ेजी !"

दीनानाथ कोठरी आया। कमर—पेटी वगैरह लगाकर, तैयार हो साहब के बँगले गया। चिक हटा सलाम ठोंका।

"तुमको बारकपुर जाना है। अभी !"

"......"

"ये खरीता सर जॉन हियरसे को देना है !"

दीनानाथ ने सलाम कर खरीता उठाया। बाहर आ गया।

शाम तक बारकपुर पहुँच ही जायगा। रास्ते में कुछ पानी पी लेगा। मौका लगा तो रात,-नहीं तो कल सवेरे वापस आ ही जाना है।

❀

जान हियरसे परीशान थे। चार्ल्स ग्रान्ट अभी अभी गये है। समझ में नहीं आता, यकायक तार घर में आग कैसे लग गई? परसों एक साहब के बँगले में भी आग लग गई थी। अपने आप आग लगना संभव नहीं? चोर डाकुओं का भी काम नहीं? तारघर में खजाना कहाँ? तारघर का जल जाना, विचित्र बात है। चार्ल्स ग्रान्ट भी बहुत पूछ-ताछ के बाद भी कुछ पता नहीं लगा पाये।

तोपखाना दमदम से उठ कर मेरठ चला गया है। फिर भी बारूद की कमी नहीं। संभव है, इन अग्निकांडों में वहीं की बारूद का उपयोग किया गया हो। इस संबंध में दमदम के अधिकारी को लिखा गया है। आगजनी की इन रहस्यमय घटनाओं का चलते रहना, बदनामी की बात है।

सिपाही आता दिखलायी पड़ा। उसके हाथ का खरीता देखा। सिपाही सामने आया। सलाम दिया। खरीता आगे बढ़ाया।

"दमदम?"

"हाँ सा, ब! दीनानाथ पांडे!"

"......"

सिपाही उनको पीठ न दिखा बाहर गया। खरीता खोल, कागज निकाला। दमदम भेजे गये पत्र का उत्तर था।

दीनानाथ ने पीठ फेरी। साँझ का झुटपुटा फैल चुका था। दमदम लौटा जा सकता था, पर रात मँगल के पास रहने की सोच, बॉरिक की ओर बढ़ गया। मँगल पाँड़े उनके ही गाँव का है। कारतूस वाली बात उनमें हजार मुँह की हो, फूट-फूट पड़ रही थी। इस बात को वह छिपा न सकता था। मँगल से भी इसकी चर्चा हो!

बॉरिक आकर देखा। एक चारपाई पर कई सिपाही बैठे शतरंज खेल रहे हैं। धीमी-धीमी लालटेन जल रही है। मँगल पांड़े उनके ही बीच था।

"का हो पाँड़े!"

दीनानाथ का स्वर पहिचानते ही मँगल चारपायी छोड़ खड़ा हो गया—"वाह, वाह पाँड़े जी। कब आए?"

"बस! चला ही आ रहा हूँ"

"अबके बहुत दिनों में आए!"

"काम पड़ेगा, तभी न आना होगा!"

मँगल पाँड़े के उठ जाने के बाद भी शतरंज जमी थी। सभी एकदम डूबे हुए थे।

"ब्यालू किए पांड़ेजी!"

"न भाई। आज तो कुछ नहीं खाया गया। चलो, यहाँ क्या करते हो? कोठरी में चलो। कहो, घर का क्या समाचार है?"

"सब गंगाजी की दया है, पांड़ेजी!"

"हुँ हूँ!!"

"साहब के पास आए रहे?"

"हाँ, हाँ।"

कोठरी के बाहर छोटी सी चारपायी पड़ी थी।

"आओ, इसी पे बैठो!"

"......"

दीनानाथ बैठ गया। मँगल ने बटुआ खोल, सरौता निकाल, सुपारी कतरते हुए कहा—"दमदम में तो सब अनंद है?"

"हाँ।"

"यहाँ बड़े साहब कई रोज से पेशो-पेश में पड़े हैं। कल तारघर किसी ने फूँक दिया।"

"सो तो दमदम में भी हो जाता है। दो साहबों के बँगले जल गए। मालूम नहीं होता, कौन फूँक जाता है।"

"मेरे ख्याल से ये करतूत कुछ पलटनियों की मालूम पड़ती है, जिन्हें निकाल दिया गया है।"

"हो सकता है।"

"आपका क्या विचार है?"

दीनानाथ अपने को अब और जब्त न कर सका, बोला—"इस तरफ तो मेरा दिमाग चलता ही नहीं। हमने एक ऐसी बात सुनी है कि जबसे सुनी है, तब से हमारा खाना पीना छूट गया !"

अशुभ समाचार की आशंका से भर मँगल ने पूछा—"क्या बात है, पाँड़ेजी?"

"कुछ न पूछो। अबके सब की जात गई !"

"......"

"तुमने सुना होगा। नई बंदूकें आयी हैं?"

"हाँ, सो तो मालूम है। ब्राउन बेस से भी अच्छी बन्दूकें आयी हैं। भला सा नाम है, याद नहीं आ रहा।"

"सो तो मैं भी भूल गया हूँ। बात ये है कि इन्हीं बन्दूकों के लिए आजकल दमदम में नए कारतूस बन रहे हैं। दाँतों से काटना पड़ेगा।"

"......"

"इन कारतूसों में गौमाता की चर्बी, सुअर का पित्ता मिलाया जा रहा है।"

"पाँड़ेजी !..."

"एकदम सही बात है, मँगल ! जनेऊ की सौगंध ! एक खलासी ने मुझसे यही कहा—अबके सब की जात गई !"

मँगल का बलिष्ठ शरीर क्रोध से ऐंठ गया। ये अंगरेज हमको क्रिस्तान बनाकर रहेंगे,...? हमारा धर्म नष्ट करेंगे? ऐसा कभी नहीं होगा। जब तक एक भी हिन्दू इस धरती पर जिन्दा है, तब तक धर्म नहीं जायगा...गौमाता की चर्बी तभी आजकल कलकत्ते में आठ-आठ कसाई खाने खुल गए हैं।...सुअर का पित्ता, अबके मुसलमानों का भी धरम जायगा। पता नहीं शेख पलटू को ये बात मालूम हुई या नहीं। शेखपलटू ने तो मुझ से नहीं कहा। अच्छा, आज ही पूछूँगा।

दीनानाथ अपनी बात कह चुप हो गया। उनके चेहरे का रंग उड़ गया था। धर्म नष्ट हो जाने की आशंका से मन घबरा रहा था। अबकी परेड में यदि यही कारतूस दिए गए तो...?

❀

हवा को फैलते देर लगती है, पर अफवाह को नहीं। चर्बी और पित्ते का समाचार बरहमपुर पहुँचा। सिपाहियों में सनसनी फैल गई।

कवायद का बिगुल बजा। कवायद और चाँदमारी की शिक्षा देने के लिए अंग्रेज आफीसर परेड के मैदान में आए।

"इन वन लाइन!"

आर्डर होते ही तमाम सिपाही एक पंक्ति में आ गये। कारतूस और टोटे दिए गए। हाथ में आते ही उन कारतूसों, टोटों को सिपाही देखने लगे। साथ ही एक दूसरे का मुँह भी ताक रहे थे।

"इसमें सुअर का पित्ता है।"

"इसमें गौ की चर्बी है।"

फुसफुसाहट एक कोने से दूसरे कोने तक फैल गई।

"रेडी..."

सामने डोरियाँ, कपड़े के आदमी झूल रहे थे। बन्दूकों से निशाना साधना था।

"रेडी, वन..."

"......"

"टू..."

आफिसर चकित। किसी ने अभी तक कारतूस दाँत से काटा नहीं, कैसे बन्दूक में चलायेंगे..."

"रेडी..."

"....."

सब खामोश खड़े रहे।

"तुम लोग कारतूस ठीक करो।"

"साहब, हम लोग-इसे दाँत नहीं लगाना सकता।"

"क्यों?"

"इसमें चर्बी है, पित्ता है!"

"चर्बी है, पित्ता है?"

"हाँ साहब।"—एक सिपाही ने कारतूस फेंक दिया—"हमारा धर्म चला जायगा।"

आफीसर घबड़ाया। हिन्दुस्तानी सिपाहियों की बात समझ में न आयी। तुरन्त कर्नल मिचेल को सूचना दी गई। कर्नल साहब घोड़े पर आए। परेड के मैदान उतरते ही सिपाहियों ने सलामी दी।

"क्या बात है ? हम सुनना माँगता ?"

"साहब, इसमें गौ की चर्बी, सुअर का पित्ता है !"

"तुमको किसने कहा ?"

"हमको मालूम है, साहब !"

"इसमें कुछ नहीं है।"—कर्नल मिचेल ने कड़ककर कहा—"तुम लोगों को कारतूस काटना परेगा !"

"......"

"हमारा हुकुम है !"

सिपाही फिर भी न हिले। कर्नल मिचेल ने कड़ककर पुनः आर्डर दिया, पर सिपाही बुत बन गये थे। कोई भी अपना धर्म गँवाने तैयार न था।

"तुम लोगों को इसकी सजा मिलेगा।"

कर्नल मिचेल की यह धमकी थी। व्यर्थ गई। धर्म के लिए हिन्दोस्तान का आदमी क्या नहीं कर सकता। धर्म के नाम पर मरने के लिए इस भूमि में गुरु गोविन्द सिंह के बेटों और फातिमा की कमी नहीं।

"आर्डर...आर्डर...आर्डर..."

कर्नल मिचेल की अन्तिम चेतावनी भी व्यर्थ। सिपाहियों को विश्वास हो गया, अवश्य ही कारतूसों में ऐसी बात है, तभी तो कर्नल ऐसा आर्डर दे रहे हैं। सबका धर्म भ्रष्ट करने के लिए।

कर्नल मिचेल, दाँत पीस, मुट्ठियाँ कस चुप रह गए। गोरी पलटन बर्मा के युद्ध में रंगून जा चुकी थी। इस वक्त गोरी पलटन यहाँ मौजूद होती तो इन सिपाहियों को इस हुकम-उदूली का मजा चखा दिया होता।

सिपाहियों को रिट्रीट होने का आदेश दे गुस्से से भरे कर्नल मिचेल चुपचाप लौट गए। कर्नल मिचेल ने निश्चय कर लिया गोरी पलटन के आते ही उन्नीस

नम्बर की इस पलटन को दंड दिया जायगा। बारकपुर में भी इसकी व्यवस्था हो सकती है। इस पलटन को वहाँ ले जाना होगा। हथियार छीन इन लोगों को कड़ा दंड दिया जाय।

उन्नीस नम्बर की हिन्दोस्तानी पलटन की इस करतूत की लिखित सूचना एड-जुटेएट जनरल को देने के लिए वह सीधे अपने बँगले आए।

❀

"कम्पनी का राज्य सन् सत्तरा सौ सत्तावन में हिन्दोस्तान में जारी हुआ, अब सौ साल बाद क्या होता है, यह देखना। मुसलमानों में बहुत पहले से यह बात कही हुई है कि सौ साल तक पूजनेवालों का राज्य रहेगा, फिर सौ साल तक ईसा-मसीह के मानने वालों का, इनकी हुकूमत में लोग दुःखी होंगे। इसलिए रियाआ के आँसुओं पर तरस खाकर खुदा फिर सचाई की हुकूमत कायम करेगा और हर एक काफिर का सिर तन से जुदा होगा।"

मुहल्ले भर के लोग मुल्ला के बाड़े में उपस्थित थे। हिन्दू मुसलमान दोनों थे। मकान की खिड़कियों पर हिन्दू-मुसलमान औरतें बैठीं फकीर की तकरीर सुन रही थीं।

"अँगरेजों को भी ये बात मालूम है!"—फकीर कह रहा था—"इसलिए चुपके-चुपके ये लोग हमको क्रिस्तान बना लेना चाहते हैं। सिपाहियों को जो कारतूस और टोटे दिए जा रहे हैं, उनमें गौ की चर्बी और सुअर का पित्ता मिलाया गया है। सिपाही लोग इन कारतूसों को दाँत से काटते हैं।"

"हरे राम! हरे राम!!"

"तोबा! तोबा!!"

"इसलिए हमारा फर्ज है कि कोई भी सिपाही अगर वह हिन्दू है, तो उसके हाथ का छुआ पानी न पिया जाय, अगर मुसलमान है, तो घर में घुसने न दिया जाय। चाहे वह हमारा सगा बाप भी क्यों न हो!"

"हमें मंजूर है। हमें मंजूर है।"

"हमारा बड़ा भाई है, तो क्या हुआ। मैं मुँह नहीं देखूँगा!"

"अब्बाजान घर में घुसेंगे तो बरछी मार दूँगा। तोबा...तोबा...कम्पनी के रुपयों के लिए हम ईमान गँवाएँ...तुफ् है।"

"आज ही खबर भेजता हूँ, नौकरी छोड़ दे!"

उपस्थित जनसमुदाय में फुसफुसाहटें शुरू हो गईं।

"अजीजो!"—फकीर उच्च-स्वर से बोला—"हम अँगरेजों के कारनामे नहीं भूल सकते हैं। इस वक्त एक कौम का सवाल नहीं है। हिन्दू, मुसलमान, सिक्ख, मराठा सब कौम का सवाल है। महाराणा रणजीत सिंह की बेवा औरत के साथ अंगरेजों ने क्या सलूक किया? छत्रपति शिवाजी के खानदान के प्रताप सिंह के साथ क्या किया? नागपुर रियासत में क्या किया? निजाम के साथ क्या किया? पेशवा बाजीराव के साथ क्या किया? तंजोर के राजा की लड़की के साथ क्या किया? अवध की बेगमों के साथ क्या किया?"

"जुल्म किया! जुल्म किया!!"

"हाय हाय! बेचारियों को सड़क पर नंगा किया!"

"नागपुर के शाही महल में भी लूट-पाट की!"

"प्रतापसिंह को रात भर वहाँ कैद रखा, जहाँ जानवर बाँधे जाते हैं!"

"क्या ये जुल्म हम बर्दाश्त कर सकते हैं?"

"नहीं, नहीं!!"

"अजीजो, फकीर का काम यह नहीं कि अल्लाह की याद करे बल्कि यह भी है कि जब लोगों के दीन और ईमान पर डकैतियाँ पड़ने लगें तो आगाह करे। जेल में बन्द कैदियों को लोटा थाली दिया जाता था। वे अलग से खाना पकाते थे, पर आजकल मिट्टी के बर्तन दिये जाते हैं और खाना पकाने के लिए सरकार ने रसोइयों को नौकर रखा है। आरा में कैदियों ने इसकी खिलाफत की। हमारा ईमान चला जायगा! पता नहीं, रसोइए कौन जात हैं? मिट्टी के बर्तन में दुबारा हिन्दू खाना कैसे खा सकते हैं? सरकार ने एक न सुनी। वह तो सब को क्रिस्तान बनाना चाहती है। इस खिलाफत का जवाब गोली से मिला!"

"......"

"टीपू सुलतान के खानदानी आदमियों ने वैलोर के किले के पास रहने वाले यूरोपियनों को कत्ल कर डाला है। मैसूर कर्नाटक, मद्रास के सिपाहियों ने

बगावत कर दी थी। छियासठ नम्बर की पलटन ने बगावत का झंडा उठाया, पर गोरखा पलटन ने उन्हें गिरफ्तार कर लिया। बगावत रुक गई। फिर भी क्या हम चुप बैठेंगे ?"

"नहीं, नहीं, नहीं !!!"

'सिपाहियों को, कैदियों को अंगरेज इस तरह से क्रिस्तान बना लेना चाहते हैं। अब हम लोगों को दिए जाने वाले आटे और चीनी में भी सुअर गाय की हड्डियाँ पीस कर दी जाँयगी ?"

"हरे राम ! हरे राम !!"

"तोबा ! तोबा !!"

"इस तरह का आटा बाजार में बिकने के लिए जल्दी ही आने वाला है !"

"हम नहीं लेंगे, नहीं लेंगे !!"

"इसीलिए आप सब भाइयों को होशियार करने आया हूँ। अपने धरम, अपने दीन को बचाने के लिए हमें तैयार रहना चाहिए। अब चुप बैठने से काम न चलेगा !"

"हम सब तैयार हैं ! हम सब तैयार हैं !"

फकीर का चेहरा मुस्कुराहट से खिल गया। अपनी वक्तृता समाप्त कर बाड़े से निकला। बाहर उसके लिए हाथी खड़ा था। प्यादे, नौकर-चाकर थे। फकीर हाथी पर बैठा। हाथ उठाकर सबको आशीर्वाद दिया। कुछ दूर तक हिन्दू मुसलमानों की भीड़ साथ गई, फिर वह मेरठ के राज मार्ग पर आगे बढ़ गया।

फकीर ने बीस वर्ष तक जिस ईमानदारी से अंगरेजी सरकार की सिपाही रूप में खिदमत की थी, उनका पुरस्कार मुअत्तली के रूप में मिला। क्षुब्ध हो उसने फकीर का बाना धारण किया। स्थान पर घूम-घूमकर लोगों को अंग्रेज सरकार के खिलाफ भड़काने लगा। अपने अन्याय का प्रतिशोध लेने के लिए उसका हृदय धधक रहा था।

❀

सारा देश अफवाह की आँधी में बह रहा था। क्रीमिया युद्ध के समय, रूस इंगलैंड की लड़ाई के समय सारा देश अफवाहों से भर गया था। रूस ने इंगलैंड

"आ जा फिरंगी !"

मंगल भी तलवार खींच भिड़ गया। तलवार का माहिर था वह।

खट खटा खट ! खट खटाखट !!

सार्जेन्ट मेयर हिडसन भी तलवार लेकर टूट पड़े। दो-दो अंगरेज आफीसरों का अकेले मुकाबला करने लगा मंगल। वह अकेला ही काफी था। उसके पैतरें खाली न जाते। देखते-देखते उसने दोनों को लहू लुहान कर दिया।

दोनों भागे।

"हरहर महादेव !"—मँगल ने खदेड़ा।

एकत्रित सिपाहियों ने हर्ष ध्वनि की।

शेखपलटू यह सब देख घबरा गया। साहस कर मैदान में कूदा। लैफ्टिनेंट बौग को मारने के लिए जैसे ही मँगल की तलवार उठी कि शेख पलटू ने हाथ पकड़ लिया।

"क्या कर रहे हो, मॅगल। सब सिपाहियों की जान खतरे में पड़ जायगी।"

"......"

शेख पलटू का हाथ लहूलुहान हो गया। फिर भी उसने मँगल की तलवार न छोड़ी। शेख पलटू अगर न कूदा होता, तो निश्चित था बौग का सिर धड़ से अलग।

दोनों अंगरेजों को मौका मिला। भाग गये।

सिपाहियों में हलचल मच गई। यह तो बड़ा बुरा हुआ। अब किसी की खैर नहीं। मँगल पाँड़े लहू टपकाती तलवार लिए मैदान में अकेला खड़ा हँस रहा था।

"जनरल आ गया।"

"जनरल आ गया।"

सबने देखा—जनरल हियरसे अपने दो बेटों के साथ फौजी पोशाक में चले आ रहे थे।

"रेडी जान, हफ ही फायर्स मी, यू किल हिम !"

"..."

"खबरदार, आगे बढ़ा, हमने गोली मारा।"

जनरल ललकार कर मैदान में दौड़े।

"......"

"तुम लोग पकड़ो उस बागी को!"—हियरसे के बेटे जान ने सिपाहियों को हुक्म दिया।"

"......"

"पकड़ो!"

जनरल के बेटे का हुक्म सिपाही टाल न सके। सिपाही दौड़े। मंगल घबड़ा गया। उसके ही भाई-बन्धु अंग्रेज की मदद कर रहे हैं। जान बचना मुश्किल।

पिस्तौल का मुँह अपनी ओर कर घोड़ा दबा दिया।

"धड़ाम! धूँ!!"

मँगल पांड़े लहूलुहान हो गिर पड़ा। सिपाहियों ने घेर लिया।

"मर गया साब!"

"मरा नहीं!"

"अभी मरा नहीं, जिन्दा है!"

"अस्पताल ले जाओ!"

"......"

"मँगल पांड़े का जमादार कौन है?"

"हरबंस सिंह!"

"उसे अभी भेजो!"

जनरल हियरसे लौट गए। हरबंस सिंह कैद कर लिया गया। मंगल पांड़े अपनी पिस्तौल का निशाना हड़बड़ाहट में चूक गया था। केवल कंधे में मामूली चोट लगी। प्राणों के लिए कोई खतरा नहीं हुआ। आत्महत्या के प्रयास में वह विफल हो गया।

❀

"अटेंन्सन!"—गोरे आफीसर का आदेश गूँज गया।

पूरी पलटन पंक्तिबद्ध हो सावधान हो गयी। सिपाहियों के चेहरे पर हवाईयाँ

पड़ रही थीं। मौत का सन्नाटा पूरे परेड मैदान में छाया हुआ था। सूरज की पहली पहली किरण पूर्वाकाश पर जनम लेकर बकैयाँ-बकैयाँ चल रही थी। सिपाहियों के पहरे में मंगल पांड़े और हरबंस सिंह लाये गये। मंगल पांड़े के कँधे पर पट्टी बँधी हुई थी।

परेड मैदान में तोप के सामने दो तिकठियाँ खड़ी थीं।

यंत्र की तरह सिपाहियों के हाथ काम कर रहे थे।

मँगल पांड़े और हरबंस सिंह को एक एक तिकठी पर लटका दिया गया। मुँह पर काले टोप डाल दिये गये।

एक पंडित मँगल पांड़े को रामायण की कुछ चौपाइयाँ सुना रहा था और हरबंश सिंह को ग्रन्थ साहब के कुछ अंश सुनाए जा रहे थे।

"रेडी!"

पास ही गोरी पलटन एकदम तैयार खड़ी थी।

"वन..."

"......"

"टू..."

"थ्री"—कहते ही जल्लादों ने तिकठियों की रसियाँ खींच लीं। एक झटके से मँगल पांड़े और हरबंस सिंह के शरीर ऊपर झूल गए। हिन्दोस्तानी पलटन आँखें फाड़कर इस दृश्य को देख रही थी। काले टोपे हटे। सबने देखा, दोनों की आँखें फटी हैं। जीभ बाहर निकली है।

सिपाहियों के मन भय से भर गये। ऐसा लग रहा था, मानों दोनों मृत सिपाही जीभ निकाले उन सब की कायरता का उपहास उड़ा रहे हैं।

दोनों सिपाहियों को पलटन के सामने सार्वजनिक रूप से फाँसी की सजा दी गई।

"डिसमिस!"

आर्डर हुआ। तमाम सिपाही अपनी बैरकों में वापस लौट आये। कहीं से कोई स्वर न उठ रहा था। सब एकदम खामोश थे। शोक पलटन की आँखों से

झर-झर आँसू बह रहे थे। बैरकों में रात भर मौत का सन्नाटा छाया रहा। रात भर दोनों सिपाहियों की लाशें मैदान में लटकती रहीं।

सुबह जब लाश उतारने जल्लाद आए, तो आश्चर्य से उन लोगों ने देखा, दोनों के गले में किसी ने मालाएँ पहिना दी हैं और माथे पर रोली लगा दी गई हैं। कोई दोनों के पाँव पूज गया है।

❀

"मँगल पांड़े और उस पलटन के जमादार को फाँसी पर लटका दिया गया है!"

"मालूम है!"

"वही टोटे वाली बात थी!"

"हाँ, ये भी मालूम है हम लोग इन टोटों को हाथ न लगायेंगे।"

"समझ लो?"

"समझ लिया है!"

तीसरी पलटन के तमाम घुड़सवार सिपाहियों ने रातों-रात बैरक में इसका फैसला कर लिया। चाहे कुछ हो, अपवित्र टोटों को हाथ न लगायेंगे।

बड़ी बेचैनी से रात कटी। सबेरे जैसे ही सब कवायद के मैदान आए, उनके सामने नए कारतूस आए। सभी सिपाहियों ने छूने से इन्कार कर दिया।

कर्नल स्माइथ ने घोड़े पर बैठे ही बैठे ललकार कर कहा—"आर्डर... यह क्या है?"

"......"

"कारतूस चलाओ!"

"......"

एक भी घुड़सवार टस से मस न हुआ। कर्नल स्माइल का चेहरा क्रोध से लाल। सैनिक, अपने अफसर की हुक्म उदूली करें। तुरन्त सर हिवेट के बँगले जाकर सूचना दी। स्वयं हिवेट कवायद के मैदान आए। सिपाहियों को समझाया, पर एक भी घुड़सवार ने उनकी बात न मानी।

"तुम लोगों पर कारवाई होगी !"

इस धमकी का भी असर न पड़ा। सिपाही अपने निश्चय पर अटल रहे।

चार रोज बाद फौजी अदालत बैठी। सेनापति आनसन ने तीसरी घुड़सवार पलटन पर सैनिक कार्रवाई करने की आज्ञा प्रदान कर दी थी। पचासों घुड़सवार फौजी अदालत के सामने पेश हुये और सभी को दस-दस बरस कड़ी कैद की सजा दी गई।

कवायद के मैदान में तोपें एकदम तैयार थीं। तोपों के पास गोरे सिपाही खड़े थे। कवायद के मैदान में सन्नाटा छा गया।

सभी घुड़सवार एक पंक्ति से खड़े किये गये। हथियार और वर्दी सर हिवेट के सामने उतार चले। वर्दी उतार, हथियार रख हर एक सिपाही कुछ दूर आ खड़ा होता था। सभी ऐसा कर चुके तो एक दूसरी पलटन ने उनको घेर लिया।

"ले जाओ !"

सेनापति का आदेश। सभी सिपाही हथकड़ी-बेड़ियों से कस दिये गये और उन्हें जेलखाने की ओर घसीटकर ले जाया गया। बहुतों ने हाथ जोड़कर चिल्ला-चिल्लाकर माफी माँगी, पर किसी की एक न सुनी गई। सबके सब मेरठ के जेलखाने भेज दिए गए।

छावनी के तमाम हिन्दोस्तानी सिपाहियों में हलचल मच गई।

सैनिक छावनी के बीचोबीच काली नदी थी। इस ओर पड़े गोरे सैनिकों—अफसरों में इस घटना की चर्चा थी, पर सनसनी न थी जब कि दूसरी ओर खड़ी तमाम बारिकों में, जहाँ हिन्दोस्तानी सिपाही थे, बड़ी सनसनी थी।

घुड़सवार सिपाहियों को दिए गये इस दंड से सभी दुखी थे। रात के गहरे सन्नाटे में बैरक के बारामदे में तमाम सिपाही इकट्ठे हुए। सबने अपने-अपने मत व्यक्त किये। सर्वसम्मति से तय हुआ, यह अन्याय है। इसका प्रतिकार होना ही चाहिये।

"खुदा के बन्दो ! देखना क्या ! सोचना क्या ! अंगरेजी सल्तनत के सौ साल

पूरे हो गए। अब इनकी हुकूमत खतम होगी। खुदा हमारे साथ है। हमें बगावत कर देना चाहिए।"

"क्या हम मुट्ठी भर अंग्रेजों को परास्त नहीं कर सकते। यहाँ का तोपखाना और सारे हथियार बड़ी आसानी से हमारे कब्जे आ सकते हैं। इसके मुकाबले कोई अंग्रेजी फौज हमारे आगे ठहर सकती है!"

हिन्दु मुसलमान दोनों सम्प्रदाय के लोगों की यही राय ठहरी। बारकपुर, अम्बाले से आए हुए दो सिपाही भी इस बैठक में उपस्थित थे। उनका कहना था कि वहाँ भी बगावत की तैयारियाँ हो चुकी हैं! सभी तरफ से लोग दिल्ली की तरफ बढ़ेंगे।

"खुदा ने चाहा तो आलीजहाँ बहादुरशाह निजामुलमुल्क फिर हमारे बादशाह होंगे।"

"हमें मंजूर है!"

रातोंरात योजना बन गई। कल क्या करना है?

नदी के पार पड़ी छावनी में गोरे सैनिक और अफसर सुख की नींद सो रहे थे।

❀

रविवार का दिन। मेरठ शहर में सर्वत्र शान्ति थी। बाजार और सड़कों पर पूर्ववत् चहल-पहल थी। अशान्ति का कहीं कोई लक्षण न था। रविवार का दिन होने के कारण अधिकांश नागरिक आमोद-प्रमोद व्यस्त थे। अंग्रेज गिर्जा घर गए हुए थे। उनकी सामूहिक प्रार्थनाएँ हो रही थीं।

दिन योंही बीत रहा था। शाम के पाँच बजने में कुछ देर थी कि यकायक नगर के एक भाग में शोरोगुल सुनाई पड़ा। नागरिकों ने आश्चर्य के साथ देखा—घुड़सवार सिपाहियों, पैदल सिपाहियों की एक बड़ी भीड़ उमड़ी चली आ रही है। सब के सब हथियारों से लैस हैं। सिपाहियाने ढंग से वे नहीं चल रहे थे। न ही उनके साथ कोई अंग्रेज आफीसर ही था।

"हरहर महादेव!"

"दीन.दीन!!"

शहर में आतंक व्याप्त गया। भगदड़ मच गई। सिपाहियों ने नगर में किसी तरह की लूट-मार न की। सब जेलखाने की ओर बढ़ गए।

बात की बात में जेलखाना घेर लिया गया। सिपाहियों की क्रोधित भीड़ देखकर जेल के तमाम अधिकारी वार्डर भाग गए। बेखटके तमाम सिपाहियों ने जेल में प्रवेश किया। जेलखाने में खूब तोड़-फोड़ हुई। तमाम कैदी छुड़ा लिए गए। इसी जेलखाने में वे घुड़सवार भी बन्द थे, जिन्हें दस दस बरस की सजा मिली थी। इतने जल्दी अपने साथियों द्वारा अपना उद्धार देख, उनके प्रसन्नता की सीमा न रही।

जेल के तमाम कैदियों के मिल जाने से भीड़ और बढ़ गई।

विद्रोहियों की यह भीड़ दो भागों में बँट गई। कुछ लोग सैनिक छावनी की ओर बढ़ गए और कुछ शहर के भीतरी भाग की ओर।

॥

कानपुर बाजार में हलचल मच गई। दूकानदारों, खरीददारों में कानाफूसी होने लगी। देखते देखते आटा व्यापारियों की दूकानों की भीड़ छँट गई। मेरठ से आया आटा सस्ता होने पर भी कोई न खरीद रहा था। कल ही आटे का चालान आया है।

"हरे राम! हरे राम!!"

"..."

"इस में गाय की हड्डी का चूरा है!"

सारे नगर में आग की तरह यह बात फैल गई। लोगों ने खरीदा हुआ आटा वापिस कर दिया। जिन घरों में रोटियाँ पक गई थीं, वहाँ रोटियाँ सड़क पर फेंक दी गईं। जो थाली पर बैठ गए थे, वे थाली छोड़ उठ खड़े हुए। जिन घरों में आटा था, वह फेंक दिया गया। घरों में गंगाजल छिड़का जाने लगा। सारे शहर के नागरिकों में अंगरेजों के प्रति घृणा फैल गई। ऐसा छल कपट!

असंतोष सुलग उठा।

"देखो, हमारा धर्म बिगाड़ने की कैसी चाल है!"

"इसीलिए आटा भी सस्ता है !"

"अरे ! थूको थूको । मुफत में भी ऐसा आटा मिले तो लात मार दें !"

❀

पश्चिमोत्तर सीमा प्रान्त की अड़तालीसवीं पलटन ने टोटे न छूने की कसम खा ली । सर हेनरी लारेंस के लाख समझाने का कोई भी असर न पड़ा । सातवीं पलटन तो अपने इस निर्णय से टस से मस न हुई ।

"फाल इन !"—आर्डर दिया गया ।

गोरे सैनिकों ने तोपों पर हाथ रखा । पूरी पलटन मैदान में खड़ी की गई ।

सिपाही स्थिति भाँप गये । उन्हें तोप से उड़ाया जायगा । सहसा भगदड़ मच गई । अड़तालीसवीं पलटन के सिपाहियों ने उन्हें घेर लिया । फिर भी एक सौ बीस सैनिक भाग निकले । जो पकड़े गए उनके हथियार छीन कर उन्हें निरस्त्र कर पलटन से निकाल दिया गया ।

भागे हुए सिपाहियों में से पचास सिपाही पकड़े गए । तत्काल उन्हें कठोर दंड की सजा देकर जेलखाने भेज दिया गया ।

निकाले गये सिपाही संतोष की साँस ले अपने घरों की ओर चल पड़े । अंगरेजी हुकूमत के खिलाफ लोगों को भड़काने का दृढ़ निश्चय उनके मन में था ।

इस घटना की रात में ही अड़तालीस नंबर के सिपाहियों की बैरकें फूँक दी गईं । साथ ही एक आफीसर का बँगला भी जला दिया गया ।

❀

सिपाहियों के बिगड़ उठने का समाचार बिजली की तरह मेरठ में फैल गया । छावनी के अंग्रेजों को भी यह समाचार ज्ञात हुआ । कर्नल फिलिप्स घोड़े पर सवार होकर निकले । उन्हें आशा थी कि वे सिपाहियों को मना लेंगे, पर सिपाहियों के पास पहुँच भी न पाए थे कि किसी ने गोलियाँ दाग दीं । एक गोली घोड़े को लगी । दूसरी उनकी पीठ में लगी ।

कर्नल फिलिप्स लड़खड़ाए । गिरे । ढेर हो गए ।

"मारो...मारो !"

सिपाहियों की बड़ी भीड़ छावनी पर टूट पड़ी ।

खचा खच ! खचा खच !!

तलवारें चलने लगी । अंग्रेज स्त्री बच्चे साग भाजी की तरह काटे जाने लगे । क्रन्दन, हाहाकार, भयानक चीखों, मार-काट के भयानक काण्डों से युद्ध क्षेत्र का दृश्य उपस्थित हो गया ।

अंग्रेज बच्चों, महिलाओं के टुकड़े तड़पने और कुछ देर में शान्त होने जाते ।

सिपाही क्रोध से पागल हो रहे थे ।

एक बड़ी भीड़ ने सरकारी खजाने पर हमला किया । खजाने के पहरेदारों ने मुकाबला किया । भीड़ को लौटना पड़ा ।

रात्रि होते-होते मेरठ में आग की लपटें धधकने लगी । शहर श्मशान बन गया । घर द्वार की चिन्ता छोड़, अपनी जान बचाने की फिक्र में, जिसको जहाँ जगह मिली, वह वहीं छुप गया ।

रह-रहकर रात्रि की महाशांति महानाश का हुँकार कर उठती । बलवाईयों छोटे-छोटे दल घूम रहे थे । लूटमार, हत्या, आगजनी के खेल नंगे होकर खेले जा रहे थे ।

उत्पातियों का एक दल कमिश्नर ग्रिथेड के बँगले पर टूट पड़ा । माली गुलाब सिंह ने रोकने की बहुत कोशिश की, पर कोई रोका न जा सका । सदर फाटक तोड़-ताड़ कर सब अन्दर घुस आए ।

बलवाईयों का शोर सुन ग्रिथेड और उनकी पत्नी के होश उड़ गए । डर के मारे मकान के ऊपरी खंड में भाग गये ।

आततायियों ने बँगले में घुसते ही पहिले आग लगा दी । बँगला धधक उठा । गुलाब सिंह की आँखों आँसू आ गए । जिस मालिक की उसने उम्र भर सेवा की आज वही मालिक उसकी आँखों-आगे आग की लपटों में अपनी पत्नी समेत जलाया जा रहा है ।

आग की लपटें ऊपरी मंजिल को छूने लगीं ।

गुलाबसिंह चिल्लाया—"देखो, देखो, वहाँ कुछ नहीं है। साहब का सारा माल यहाँ है और साहब भी है!"

माली की बात का विश्वास कर तमाम बागी दूसरे मकान पर टूट पड़े। तोड़-फोड़, हुल्लड़ शुरू हो गई। गुलाब सिंह ने अपने जीवन की बाजी लगा दी! आग की लपटें ऊपरी मंजिल को पकड़ चुकी थीं। धुएँ और गर्मी से घबराकर कमिश्नर ग्रिथेड और उनकी पत्नी छत पर आ गए। असहाय, आँखों में आँसू भरे चारों ओर देख रहे थे। अब उनकी मृत्यु निकट थी। आग की लपटों में उनका कबाब पकने वाला था।

सहसा सीढ़ी आ लगी।

"साहब, उतर आइए। जल्दी उतरिये!"

गुलाब सिंह की आवाज। डूबते को तिनके का सहारा। कमिश्नर ने सीढ़ी पकड़ी। धड़ाधड़ उतर आए। उनकी पत्नी उतरी, पर आधे दूर से ही लड़खड़ाकर नीचे आ गिरी। गुलाब सिंह ने काँधे पर उठा लिया।

"भागिए साहब!"

दोनों को लेकर वह एक बगीचे में छुप गया।

"घबराइए नहीं। रात हम लोग यहीं काटेंगे। कल सुबह आपको छावनी पहुँचाने का इन्तजाम करूँगा।"

❀

सिपाहियों के बलबे की खबर आसपास के गाँवों में फैलते देर न लगी। अंग्रेजी शासन से जले-भुने लोग रातों-रात मेरठ आकर बलवाईयों से मिल गये। इन लोगों के पहुँचते ही आधी रात के बाद फिर लूट-मार शुरू हुई। कप्तान लेगी का घर घेर लिया गया, पर उनके अच्छे व्यवहार के कारण बहुत से सिपाही प्रसन्न थे, इसलिए केवल शोर मचाकर सब लोग आगे बढ़ गये।

छावनी की ओर भीड़ न बढ़ती थी! क्योंकि यह सबको मालूम हो गया था, बचे हुए अंग्रेज छावनी में पहुँच गये हैं और तोपें लगाकर बैठे हैं। खजाने के पास भी तोप लग गई है, इसलिए विद्रोहियों का कोई झुंड उस ओर न बढ़ रहा था।

जो अंग्रेज अपनी जान बचा सके, वे सब छावनी भाग गये। सिपाहियों के इतनी बड़ी संख्या में विद्रोही हो जाने की कल्पना उन लोगों ने कभी न की थी अतएव अपनी सुरक्षा की तैयारियाँ देर से कर सके। गिर्जाघर से जो जल्दी लौट आए वे तो बच गये, पर जो रह गये उनके टुकड़े-टुकड़े कर दिये गये।

शहर में तो यमदूत ही उतर आए थे। डाकुओं की तरह चलने वाली लूटमार से सारा शहर आक्रांत हो गया।

सड़कों पर लाशें, शरीर के टुकड़े सर्वत्र दृष्टिगत हो रहे थे। नन्हें-नन्हें अंग्रेज बच्चों की लाशें कूड़े-कर्कट के ढेर की तरह नालियों में पड़े थे। अंग्रेज औरतों के नंगे शरीर क्षत-विक्षत होकर पड़े थे। अधजले मकान, अधजले बँगले खूँख्वारता के प्रतीक बनकर खड़े थे।

बचे-खुचे अंग्रेज तोपों की आड़ में अपने बीवी बच्चों के साथ पड़े थे। आग की लपटें और शहर से आता शोर पल-पल उन्हें बेचैन कर रहा था। प्रतिपल आततायियों के टूट पड़ने की आशंका थी।

सहसा छावनी की बैरकें धधक उठीं।

आ गए।

गोरे सैनिक तैयार हुए, पर वहाँ कोई न था। जैसे चुपके से आग लगाकर सबके सब भाग गये हैं।

ॐ

सूरज की किरण फूटी।

सवेरा हुआ। मेरठ के रहने वालों को नादिरशाह, तैमूरलंग की याद आ गई। छिपे हुए स्थानों से लोग बाहर निकले। जो अपने घर न जा सके थे, गए। अपने जले घर, अपने संबंधियों की क्षत-विक्षत लाशें देख धाड़ें-धाड़ें मार-मार रोने लगे।

रात भर का अशान्त वातावरण दिन होते ही एकदम शान्त हो गया। सारा शहर महाश्मशान सा हो गया। कुत्ते रोने लगे। सर्वत्र करुणा पनाह माँगने लगी।

तमाम सिपाही गोल मैदान में इकट्ठे थे। फकीर ऊँचे आसन पर बैठा था।

उसका चेहरा तेज से भरा था। उसके खड़े होते ही सर्वत्र सन्नाटा छा गया। सिपाहियों से चौगुनी संख्या में, नगर तथा आसपास के लोग इस दल में आ मिले थे।

"अजीजो!"—फकीर बोला—"हमें कानपुर की तरफ आज ही कूच कर देना चाहिए। वहाँ हमारे साथी हमारा इन्तजार करते होंगे। बिठूर के नानाजी भी हमारे साथ हैं। अंग्रेजी हुकूमत के खिलाफ हमारी बगावत शुरू हो गई। हर गाँव में रोटी और कमल पहुँच रहे हैं। हर गाँव के लोग हमारा साथ देंगे।"

कुछ रुककर उसने कहा—"हम अपनी जान की बाजी लगा देंगे, पर अंग्रेजी हुकूमत इस देश में नहीं रहने देंगे। हमारा धर्म, हमारा दीन नहीं मिट सकता।"

"हरहर महादेव!"

"दीन दीन!!"

विद्रोहियों ने अपने हथियार उठाकर नारा लगाया।

"सब चलने की तैयारी कर लें। तीन बजे कूच का डंका बजेगा। इस देश का डंका! अब एक भी अंग्रेज जिन्दा न रहेगा!"

फकीर की घोषणा के अनुसार तीन बजे कूच का डंका बजा। विद्रोहियों का दल टिड्डी की तरह मेरठ शहर से निकल गया। आगे जाकर विद्रोहियों के दो दल हो गए। कुछ कानपुर के लिए और शेष दिल्ली के लिए।

राह में पड़ने वाले गाँवों में उनका स्वागत होता और कुछ न कुछ लोग उनमें शामिल होते जा रहे थे।

ॐ

"साब! साब!! गजब हो गया!"

"क्या हुआ?"—फ्रेजर चौंक पड़े।

"साब! मेरठ में बलवा हो गया। सिपाहियों ने बगावत कर दी।"

सहसा फ्रेजर को इस बात पर विश्वास न हुआ। पर दूत मेरठ से ही आया था। इसलिए उसकी बात का विश्वास करना ही पड़ा। संभव है, विद्रोहियों ने तार काट दिया हो, इसी वजह से तार कटा और खबर नहीं आ सकी।

"साहब, सब साहब लोग मार डाला गया। थोड़ा सा साहब बचा है खजाना बचा है!"

फ्रेजर तुरन्त अपने बँगले गये। फौजी वर्दी में बाहर निकले। गोरे सैनिकों के लिए तुरन्त बिगुल बजा। बात की बात में कूच की तैयारियाँ हो गईं। मेरठ चालीस मील दूर ही तो है। शाम को जरूर ही पहुँच जाँयगे। सेना ने कूच कर दिया। फौज के साथ एक तोप भी चल रही थी।

गाँव वाले गोरों की फौज देखते ही भागने लगे।

सिपाहियों का एक दल चला आ रहा था। फ्रेजर ने उन्हें साथ देने की चेतावनी दी। सिपाहियों ने उनकी बात न मान, उल्टे हमला कर दिया।

फ्रेजर ने संकेत किया।

तोप ने आग उगली और कुछ ही देर में पचास साठ लाशें नजर आयीं। सिपाही भाग गये। फ्रेजर अपनी सेना के साथ लाशों को रौंदते हुए आगे बढ़ गये।

❀

मेरठ जीवन हीन लग रहा था। साहस कर मिस्टर क्रेमलर बाहर निकले। नगर की स्थिति देखी। अधिकांश विद्रोही नगर से कूच कर गये थे। खजाना सुरक्षित था। लौटकर यह समाचार उन्होंने छावनी में दिया। अंग्रेज छुपे स्थानों से निकले और युद्ध की तैयारियाँ करने लगे। साथ ही मेरठ की इस खबर को चारों ओर भेजने के लिए दूत भी भेज दिये।

दोपहर को क्रोधोन्मत्त अंग्रेज बाहर निकले। नगरवासियों से उन्होंने प्रतिशोध लेना शुरू किया। पहले दिन जो कुछ विद्रोही कर गये थे, वही अंग्रेज करने लगे। बच्चों को उठा उठाकर नारियल की तरह फोड़ा जाने लगा। स्त्रियों को संगीनों की नोकों पर लटका कर चौराहों पर पटका जाने लगा।

निरस्त्र नागरिकों के पास प्रतिरोध का कोई साधन न था।

रह रहकर छावनी में गरजती हुई तोप उन्हें भयभीत कर रही थी।

गुलाब सिंह साहब से मिलने के लिए जा रहा था। कमिश्नर ग्रिथेड को दूसरे दिन प्रातः उसने निरापद छावनी पहुँचा दिया था।

एक अंग्रेज की दृष्टि उस पर पड़ी।

लपका।

"खच्च !"

एक ही वार में गुलाब सिंह का सिर धड़ से अलग जा गिरा।

मानवता को शर्मा देने वाले कर्म अंग्रेज कर रहे थे। स्त्रियों और बच्चों की खूब दुर्गत हो रही थी।

सहसा उत्तर की ओर शोर सुनकर सब घबराये। भगदड़ मच गई। क्रोध का सारा उबाल बर्फ हो गया। लेने के देने पड़ गये। मालूम होता है, विद्रोही फिर लौट आये। सब भागकर गिरते-पड़ते छावनी में आये। तोपें आगे रख मरने-मारने तैयार हो गये।

शोर निकट आता जा रहा था। एक बड़ी भीड़ चली आ रही थी। सहसा अंग्रेजों को उस भीड़ में देखकर रुकी साँस चली।

खबर दी गई। रुड़की से मिस्टर फ्रेजर अपनी सेना के साथ बलवा होने का समाचार पाते ही सहायता के लिए चले आ रहे हैं।

समाचार पाते ही तमाम अंग्रेज खुशी से नाच उठे।

❀

शराब का दौर-दौरा चल रहा था। तंबू में साहब लोग मेमों की कमर में हाथ डाले नाच रहे थे। खुशियाँ मनाई जा रही थीं। हिन्दोस्तानी सिपाही अपने हाथों साहब लोगों को शराब भर-भर दे रहे थे। नाच-रंग का दौर चल रहा था।

हँसी मजाक हो रहा था।

सहसा हरकारा दौड़ा।

"बड़े साब कहाँ हैं ? बड़े साब कहाँ हैं ?"

"वो !"

बड़े साहब एक खूबसूरत मेम की कमर में हाथ डाले नाच रहे थे। वह उनके एक घनिष्ट मित्र की पत्नी थी।

हरकारा दौड़ा। साहब के पास आने का साहस न हुआ। खबर बहुत जरूरी थी। साहस कर साहब के हाथ पत्र रख ही दिया।

"ह्वाट...यू इडीयट..."

युवती के आनन्द में भी विघ्न पड़ा। साहब ने पत्र खोला, पढ़ा। पत्र हाथ से छूट गिरा। युवती ने उठाया। पढ़ा। चीख पड़ी। उसके चीखते ही रंग में भंग पड़ गया। सब घबड़ाकर रुक गये। उसे घेर लिया। एक ने वह पत्र उठाकर पढ़ा जोर से।

"मेरठ में बलवा हो गया है। दिल्ली और कानपुर की भी यही हालत है। अंग्रेजों को बुरी तरह मारा जा रहा है। होशियारी के साथ तैयारी कर हम लोगों की मदद के लिए तुरन्त आइए। विद्रोह चारों ओर फैल रहा है..."

पत्र अंग्रेजी में था। सुनते ही गहरा सन्नाटा छा गया। उत्सव तत्काल स्थगित कर दिया। हिन्दोस्तानी सिपाहियों में काना-फूसी होने लगी। तमाम सिपाहियों में यह खबर फैलते देर न लगी कि मेरठ में सिपाहियों ने बलवा कर दिया है। दिल्ली की ओर बलवाई बढ़ गए हैं। अंगरेजों के हाथ से हुकूमत निकल रही है।

जामा मस्जिद की दीवार पर हाथ-लिखा पोस्टर लगा था। बात की बात में सैकड़ों मुसलमानों की भीड़ लग गई। जो भी पोस्टर पढ़ता, उसके चेहरे पर हवाइयाँ उड़ने लगतीं। उस पोस्टर में यह सूचना दी गई थी कि फारस की सेना अंग्रेजों की हुकूमत खत्म करने के लिए चल पड़ी है। हर एक मुसलमान का फर्ज है कि वह काफिरों के हाथ से हिन्दोस्तान को बचाने के लिये तैयार रहे। पोस्टर में हिन्दू मुसलमान दोनों के नाम यह अपील थी।

पोस्टर का समाचार सारे नगर में बिजली की तरह फैल गया।

शाही महल में कप्तान डगलस यह खबर सुनते ही दौड़े। अंगरेज सैनिकों के साथ जामा मसजिद घेरकर वह पोस्टर उखड़वा दिया।

आग की छिटकती चिनगारियाँ बारूद पर पड़ जाती हैं, तो आग बुझायी नहीं जा सकती।

पोस्टर का समाचार नगर की चर्चा का विषय बन गया। हर जगह लोग अंग्रेजों की भर्त्सना करने लगे। प्रतापी अकबर के वंशज सम्राट बहादुरशाह की दयनीय दशा किसी से छुपी न थी।

"एक दिन यही अंग्रेज भिखारी बनकर आये थे!...

"हाँ, हाँ, सर टामस रो...।"

"हाँ जनाब, वही टामस रो, दरबार में हाथ जोड़े खड़ा था। एक कोठी जमीन के लिए उसने भीख माँगी थी। आज उनका वही बादशाह भिखारी हो गया है।"

"बादशाह को भिखारी कहने वाले की जुबान पकड़कर खींच ली जायगी।...

"गलती की मुआफी चाहता हूँ।"

"जानते हो, राजा राममोहनराय बादशाह की तरफ से विलायत गये। बादशाह ने अपनी वरीयत तीन लाख सालाना चाही, अंग्रेजों ने मंजूर नहीं की। जार्ज टामसन की चाल भी अंग्रेजों ने नहीं मानी। उनका कहना यही था कि दिल्ली का किला और बादशाह का खिताब दे देने पर ही तीन लाख मिल सकता है, पर बादशाह ने इस तीन लाख पर ठोकर मार दी।"

"फरुखद्दीन मर गया नहीं तो अंगरेज कब के काबिज हो जाते।"

"बादशाह का ये बेटा भी एक ही नमकहराम निकला।"

"उसका क्या कुसूर ! ये अंगरेज बड़े चालबाज होते हैं।"

पूरे दिन शहर में अफवाहें उड़ती रहती रहीं। जगह-जगह लोग इकट्ठे थे। दरियागंज के अंग्रेजी मुहल्ले में भी हलचल थी। मेरठ के सिपाहियों के विद्रोह का समाचार उड़ते-उड़ते आ गया था। जैसे ही यह समाचार शहर में फैला, वैसे ही सर्वत्र आतंक छा गया।

❀

जीवन भर जिन्होंने अंग्रेजों की सेवा की। उनके लिए बड़े-बड़े युद्ध लड़े और उनका राज्य मजबूत किया, उन्हीं सिपाहियों को जब बारकपुर की पलटनों से निःशस्त्र कर निकाल दिया गया, तो चुपचाप अपने-अपने प्रांतों में फैलकर अंग्रेजों के विरुद्ध जनता को जगाने लगे। धर्म नष्ट होने की प्रबल भावना उन लोगों के मन में बहुत गहरी जम गई थी। धर्म नष्ट होने की आशंका एक प्रकार से सारे देश में फैल गई। अंग्रेजों के वे जुल्म जिन्हें जनता भूल चुकी थी, फिर हरे हो गए।

मेरठ के सिपाहियों का विद्रोह आग की तरह चारों ओर फैल गया। शिमला में बैठे प्रधान सेनापति आनसन को भी यह समाचार मिला।

टाड चौंक पड़े।

खट खट खट खट गिर गिर गिट गिट !!

तार एकदम बेकाबू हो गया था। कोई उत्तर न आ रहा था। टाड का माथा ठनका। क्या दिल्ली और मेरठ का तार संबंध कट गया ! अवश्य ही यही बात है। कुछ गड़बड़ जरूर है।

टाड तार-निरीक्षण करते हुए दफ्तर से निकले। बारीकी से देखते चले। आफिस से निकलकर यमुना पुल तक गये। पुल पर खड़े होकर वह देख रहे थे—तार शहर में ही काटा गया है या शहर के बाहर काटा गया है ? यकायक पुल पार बहुत से घुड़सवार सिपाही दिखलायी पड़े।

ये कौन हैं ?

टाड ठिठक गए।

"मारो, मारो, साला अंग्रेज है।"

अश्वारोही सिपाही टूट पड़े। देखते-देखते टाड के टुकड़े-टुकड़े कर दिए गये।

"हर हर महादेव !"

"दीन दीन दीन !!"

रणोन्मत्त सिपाहियों की टुकड़ी यमुना पुल पारकर दिल्ली शहर पनाह की ओर बढ़ी।

सलामगढ़ के बहुत से गूजर भी इस विद्रोही दल के साथ हो गये थे। बड़े जोरों का शोरोगुल सुन शहर पनाह के पास से लोग चौंके। देखा—घुड़सवार सिपाहियों का दल टिड्डी की तरह दौड़ा चला आ रहा है।

"बादशाह बहादुरशाह !"

"जिन्दाबाद !"

"अंग्रेजी हुकूमत !"

"मुर्दाबाद !"

"शंहशाहे आलम बहादुरशाह !"

"जिन्दाबाद !!"

"हर हर महादेव !"

"दीन ! दीन !! दीन !!!"

गगन भेदी नारों के साथ विद्रोही सिपाहियों का दल शहर-पनाह के चारों ओर बिखर गया। लाल पत्थरों की दीवारों के ग्यारहों दरवाजों पर सिपाही टूट पड़े।

"हम बादशाह सलामत की मदद के लिए आए हैं।"

"हमने फिरंगियों को मार डाला है !"

"दीन दीन दीन ! काफिरों को मारो !"

❀

महल के रक्षक सैनिकों के अध्यक्ष कप्तान डगलस ने शोर सुना। महल की खिड़की से देखा। टिड्डी-दल की तरह विद्रोही सिपाहियों ने शहर पनाह को घेर रखा है। बादशाह की दुहाई दे रहे हैं। सुनते ही घबराए। तुरन्त उल्टे पाँव लौटे दीवान-एआम में गए। बादशाह को खबर दी। बहादुरशाह अपनी बेगम के साथ बैठे थे। सम्राट कुछ गुनगुना रहे थे। बेगम ध्यान से सुन रही थी।

"बादशाह सलामत !"

बादशाह ने सिर उठाया—"क्या है ?"

"कप्तान डगलस आपसे मिलना चाहते हैं।

"चलो, आते हैं !"

बहादुरशाह उठते हुए बेगम से बोले—"बेगम, ये अंग्रेज हमें चैन से मरने भी न देंगे। बताओ ! इतने सबेरे क्या जरूरत आ पड़ी।"

बहादुरशाह दीवाने आम में आए। कप्तान डगलस बेचैनी से टहल रहे थे। बादशाह को देखते ही उन्होंने सिर झुकाया।

"कप्तान डगलस, किसलिए हमें याद किया। क्या कोई नया फरमान आया है ?"

"फरमान नहीं बादशाह सलामत ! मेरठ के बागी सिपाही शहर पनाह घेरे हुए हैं और आपकी दुहाई दे रहे हैं !"

"क्या चाहते हैं वे ?"

"बादशाह सलामत ! वे लोग मेरठ के अंग्रेजों को मारकाट कर यहाँ आये हैं। हम सबको मारकर दिल्ली पर कब्जा चाहते हैं।"

"कप्तान डगलस !!"

"हाँ, बादशाह सलामत ! उनके रुख से जाहिर होता है !"

"उन्हें मना कर दो। बादशाह का हुक्म है, वे शहर में न घुसें !"

कप्तान डगलस सिर झुकाकर चला गया। खिड़की से चिल्लाकर उसने बादशाह का हुक्म उन लोगों को सुनाया, पर उन्मत्त सिपाहियों ने एक न सुनी। एक ने तो डगलस को मारने के लिए गोली दागी पर कप्तान डगलस हट गए।

सिपाहियों की भीड़ राजघाट दरवाजे की ओर बढ़ी।

"दीन दीन दीन ! अगर तुम मुसलमान हो तो बादशाह सलामत के नाम पर दरवाजा खोल दो !"

"हर हर महादेव ! अगर तुम हिन्दू हो तो गीता की कसम, दरवाजा खोल दो।"

घड़र घड़र घर्र !!

दरवाजा खुल गया।

बड़े जोर का शोर एक बारगी उठा। सैकड़ों की संख्या में शहर पनाह को घेरे हुए सिपाही, गूजर, मेरठ से आये पैदल सिपाही, उनके साथ आया तोपखाना सब शहर दिल्ली में दाखिल हो गए।

दिल्ली में अराजकता फैल गई।

विद्रोहियों का दल दिल्ली के राजमहल पर टूट पड़ा। कप्तान डगलस घबराकर इधर-उधर भागे। महल के सिपाहियों को हुक्म दिया—विद्रोहियों को रोकें, पर उनका हुक्म किसी सिपाही ने न माना, वे सब विद्रोहियों से मिल गये।

कप्तान डगलस भागे, पादरी के घर में घुस गए। भयभीत तमाम अंग्रेज और उनकी स्त्रियाँ बच्चे सब यहीं छुपे थे। विद्रोही सिपाहियों का दल राजमहल

"इसी में है !"

"तोड़ो !"

दरवाजा टूटा। सिपाही टूट पड़े। सारा कमरा अंग्रेजों की लाशों से भर गया। कमरे में छुपे तमाम अंग्रेजों के शरीर टुकड़े-टुकड़े कर दिये गये। स्त्री बच्चों की भी यही दशा हुई।

"बादशाह सलामत !"

"जिन्दाबाद !!"

खून से रंगी तलवारें लिए सिपाही राज महल में नारे लगा रहे थे।

"बादशाह सलामत !"

"जिन्दा बाद !"

बहादुरशाह बाहर निकले। पीछे पीछे बेगम जिन्नतमहल थीं। खूबसूरती और तेजस्विता की अप्रतिम मूर्ति। बादशाह को देखते ही सिपाहियों ने खून टपकाती तलवारें झुकादीं।

"बादशाह सलामत !"

"जिन्दाबाद !"

"......"

"बादशाह सलामत ! हमने फिरंगियों का खात्मा दिया है। अब आप सलामत सँभालें। आप हमारे बादशाह हैं।"

बहादुरशाह ने क्षण भर सबकी ओर देखा। तमाम सिपाही अदब के साथ सिर झुकाए खड़े थे।

"बहादुरो, हम तुम्हारी वफादारी से खुश हैं, लेकिन हर काम हमें बहुत दूर की सोचकर करना चाहिए। अंग्रेजों को क्या हम इतनी आसानी से भगा सकते हैं ?"

"उनको मार डाला गया है, बादशाह सलामत !"

"और सारे मुल्क में जो अंग्रेजी फौजे हैं ?"

"वे हमारी कुछ नहीं कर सकतीं। बादशाह सलामत सारा मुल्क हमारे साथ है। सारे मुल्क ने बगावत कर दी है।"

"......"

"बादशाह सलामत।"

"जिन्दाबाद !!"

❀

कानपुर सनसनी से भरा हुआ था। नगरवासियों को मेरठ और दिल्ली पतन की खबरें मिल चुकी थीं। सिपाहियों में उत्तेजना भरी हुई थी। अम्बाला बारिकपुर, बरहमपुर, मेरठ के सिपाहियों के हथियार छीने जाने की बात से सब घबराए हुए थे। प्रतिपल भय का था। कहीं अंग्रेज उनके भी हथियार छीनकर तोपों से भरना न डालें। कानपुर के बाजार में बड़ी सनसनी थी।

एक दूकान पर एक मेम कुछ सामान खरीद रही थी। पास खड़े एक आदमी ने कहा—"अब तुम बाहर मत निकलो। तुम्हारी जिन्दगी एक सप्ताह से ज्यादा की नहीं है।"

मेम सुनते ही चिल्लाकर भागी। इसी पर सारा बाजार फटाफट बन्द हो गया। लोग जान बचाकर भागने लगे।

बड़ी मुश्किल से शाम को बाजार खुला। लोगों के चित्त एकदम शंका-कुल थे।

सेनापति ह्वीलर से यह सब न छुपा था। दिल्ली और शिमला से आयी खबरों ने उन्हें सशंकित कर रखा था। कलक्टर हिलर्डसन के साथ वह इसी समस्या पर चिन्तित थे।

"सबसे बड़ी बात तो यह है कि हमारे भाईयों और उनके परिवारों को कहाँ रखा जाय! शहर भर के तमाम अंग्रेज किस तरह से डरते हुए छावनी आते हैं।"

"तोपखाने की इमारत में ही सबको बुला लेना ठीक होगा"—कलेक्टर ने कहा—"इस तरह से हम अपने खजाने की भी रक्षा कर सकते हैं!"

ह्वीलर कुछ क्षण मौन रह बोले—"आपका प्रस्ताव तो ठीक है, पर इसके कार्यान्वित करने से एक नये संकट का सामना करना पड़ेगा!"

"क्या ?"

"तमाम अंग्रेजों को तोपखाने में आते देख, हिन्दोस्तानी सिपाही बगावत न कर दें। उनको यह शक हो सकता है कि हम लोग तोपखाने में आने के बाद उन लोगों को उड़ा न दें।"

"नहीं, नहीं!"

"नहीं मिस्टर हिलर्डसन! एक-एक कदम हमें फूँक-फूँककर रखना होगा जिन्दगी के चौवन साल इन हिन्दोस्तानी सिपाहियों के बीच बीते हैं। मैं इनकी एक-एक नस जानता हूँ। क्या शहर से तमाम अंग्रेजों को यहाँ लाते वक्त यह बात छुपी रहेगी! सिपाहियों में इस समय जैसी उत्तेजना है, वह तुम नहीं जानते। कहीं ऐसा न हो कि हमारे लोगों के तोपखाने में आने से पहिले ही सिपाही बगावत कर दें। तोपखाने और खजाने पर कब्जा कर लें तब तो हम लोग कहीं के न रहे!"

कलक्टर का चेहरा सूख गया। सेनापति की बात पते की थी। ऐसा सम्भव है।

"तब सबको कहाँ रखियेगा? इस समय शहर से तमाम अंग्रेजों को हटा लेना बहुत जरूरी है।"

"मेरा ख्याल है, अस्पताल की दोनों इमारतों में रखा जाय!"

"वहाँ सुरक्षा का प्रबन्ध क्या है?"

"दीवार उठवा लो। काम चल जायेगा।"

"लेकिन तोपखाने से छह मील का फासला पड़ जाता है!"

"इससे क्या होता है! हिन्दोस्तानी सिपाहियों को शक तो नहीं होगा!"

"आपकी बात ठीक है, लेकिन हम तोपखाने और खजाने की रक्षा कैसे कर सकते हैं?"

"उस पर हम सोचेंगे! कानपुर से बिठूर कितनी दूर है! खबर भेज दो हमारे अजीज नाना धुंधुपन्त को। क्या इस मौके पर वह हमारी मदद नहीं करेंगे?"

"हाँ, हाँ, अवश्य। वह हमेशा से हम लोगों के वफादार रहे हैं!"

"आज ही सारा इन्तजाम कीजिये। नाना धुंधुपन्त की फौज आने पर हम

बेखटके कानपुर बनाए रह सकते हैं ! आगे देखिये लार्ड और सेनापति आनसन का क्या हुक्म आता है !"

*

चीफ मांटगोमरी और ब्रिगेडियर कार्बेट चिन्तित मुद्रा में एक दूसरे का मुँह ताकते कुछ देर स्तब्ध खड़े रहे।

"यह तो बहुत गजब हुआ !"

"दिल्ली और मेरठ की यह बात शायद सिपाहियों को यहाँ भी मालूम हो गई होगी !"

"इस समय कुछ नहीं कहा जा सकता मिस्टर कार्बेट !"

कार्बेट बार-बार अपने सामने पड़े तार को देख रहे थे। तार में लिखा था—मेरठ के अंग्रेज मारे गए। दिल्ली की भी यही हालत हुई। जेलखाने के कैदियों, सिपाहियों ने दिल्ली पर कब्जा कर लिया है। अपने यहाँ सुरक्षा का बंदोबस्त कर आगे बढ़िए। जितनी दूर विद्रोहियों को दबा सकें, दबाये रहिये !"

चीफ मांटगोमरी कुछ देर सोचने के बाद बोले—"इस समय सिपाहियों से हथियार लेने से खतरा हो सकता है !"

"हाँ, लेकिन..."

"मेरा विचार है। इन लोगों के हथियार न लिए जाँय। कारतूस और टोपी देना बन्द कर दिया जाय तो इनके हथियार किसी काम के नहीं।"

"मान लिया जाय कि अगर ये तोपखाने पर कब्जा कर बैठे तो..."

"उफ़ ! कुछ समझ में नहीं आता। क्या किया जाय ?"

कार्बेट के माथे पर चिन्ता की सिकुड़नें उभर आयीं।

सहसा द्वार पर थपथपाहट हुई। ब्रिग्रेडियर कार्बेट चौंक पड़े—"हू ज़ देअर...?"

"......"

मुंशी वेशधारी एक आदमी ने झाँका।

"मुझे पुलिस कप्तान ने भेजा है !"

"कहो ?"

"साहब, मुझे एक भयानक षडयंत्र का पता लगा है, उसी की खबर देने के लिए आया हूँ ! यहाँ के सिपाही भी बगावत करने वाले हैं ।"

"क्या कहा ?"

"हाँ साब ! यह तय किया गया है कि जब उनचास और छब्बीस नम्बर की पलटन किला फसील में आयेगी तो उस समय अफसरों पर हमला करके फौरन किले को कब्जे में कर लिया जायगा । खजाना और तोपखाना दोनों कब्जे में आ जायगा । इसके बाद पास वाले अस्पताल में आग लगा दी जायगी । इससे मियाँ-मीर के सिपाही समझ जाँयगे कि बगावत हो गई है । वे भी बगावत कर देंगे । जेल के दो हजार कैदी भी छुड़ाकर इसमें शामिल कर लिये जाँयगे !"

"माईगाड !"—मांटगोमरी एकदम विचलित हो उठे—"डिले नाट फार ए सिंगल मिनिट ! मिस्टर कार्बेट हिन्दोस्तानी सिपाहियों के हथियार इसी वक्त ले लो । बहुत ही होशियारी के साथ । सिपाहियों के परेड मैदान में आने तक किसी को इसका पता न लगे ।"

❀

सबेरा हुआ ।

तमाम सिपाहियों को परेड मैदान में आने का हुक्म जारी हुआ । सारे हिन्दोस्तानी सिपाही परेड मैदान में आ गए । उनके मन आशंका से भरे हुए थे, फिर भी किसी भी सिपाही ने तनिक भी चूँ न सकी । सब के सब परेड मैदान में आ गये ।

इनमें सोलह नम्बर की पैदल पलटन भी थी । कंधार और गजनी के युद्ध में, मुदकी, सुबराँव और फीरोजशाहर में अंग्रेजों की ओर से सिक्खों के खिलाफ, श्रीरंगपट्टम के राजा के खिलाफ यही पलटन बड़ी वीरता के साथ लड़ी थी और अंग्रेजी नक्शे को अपने खून से भरा था । चाँदी के सफेद मैडिल इन शूरमाओं की छाती पर चमक रहे थे ।

अपने निवासस्थान अनारकली से चीफ मांटगोमरी अपने आफीसरों के साथ परेड मैदान में आए । सब सिपाही एक लाइन में खड़े थे । उनके आगे तोपें

सजा दी गई । इक्यासी नंबर की पलटन के गोरे सैनिक एकदम तैयार हो गये। दूसरी ओर सिक्ख रिसाले ने अपनी बन्दूकें उठा लीं।

चीफ मांटगोमरी का हाथ हिला। तोपें एकदम तैयार।

लेफ्टिनेंट से कुछ कह हिन्दोस्तानी सिपाहियों के सामने आये।

"हुक्म होता है!"—वे हिन्दुस्तानी में बोले—"तमाम सिपाही अपने हथियार रख दें। इस वक्त बगावत के ख्याल से लार्ड जनरल के हुक्म से यह आर्डर है!"

लेफ्टिनेंट का आर्डर होते ही गोरी सेना दो भागों में बँट गई। गोलंदाज अपनी जलती बत्तियाँ लेकर हुक्म का इंतजार करने लगे। इक्यासी नम्बर की गोरी सेना की बन्दूकें तन गईं। इस तरह चारों तरह से घेरकर हिन्दोस्तानी सिपाहियों के हथियार लिये जाने लगे। पूरी तैयारी थी कि एक भी सिपाही के बागी होते ही सबको तोप से उड़ा दिया जाय, गोलियों से भून दिया जाय।

एक भी सिपाही कुछ न बोला। सबने आज्ञा का पालन किया।

छः सौ गोरों के सामने ढाई हजार हिन्दोस्तानी सिपाहियों ने अपने हथियार रख दिये। हथियार उतारते समय बहुतों की आँखों में आँसू थे। जीवन भर वीरता से, जान हथेली पर लेकर अंग्रेजी सरकार की सेवा करने का यह पुरस्कार! इतना अविश्वास !!

सारे हथियार गाड़ियों पर लादकर तोपखाने की देखभाल में शस्त्रागार में भेज दिये गए। सारा काम हो जाने पर सिपाहियों को छावनी लौट जाने का हुक्म हुआ।

निरस्त्र सैनिक अपनी बैरिकों में लौट आए पर हर एक सैनिक का मन दुःखी था। अंग्रेजों पर उनकी रही-सही श्रद्धा भी हट गई।

ॐ

रात का सन्नाटा चारों ओर फैला हुआ था। दो घुड़सवार कानपुर शहर शहर की कच्ची पर चौड़ी बाजार की सड़क से भागते हुए कानपुर शहर के बाहर हो गए। उनके जाने के बाद ही अंधकार में दुबके हुए चार पाँच आदमी बाहर निकले।

"वे लोग कहाँ गये ?"

"मेरा ख्याल है , बिठूर गये है, नाना साहब के पास।"

"नाना साहब क्या अंग्रेजों की मदद करेंगे ?"

"कुछ कहा नहीं जा सकता !"

"ऐसा कभी नहीं होना चाहिए। हम लोगों की भरसक ये कोशिश हो कि नाना साहब अंग्रेजों की मदद न कर सकें।"

"इतने दिनों से नाना साहब बराबर मदद कर रहे है ?"

"इससे क्या ! क्या इस आजादी के मौके पर भी पेशवा खानदान का शेर सियार निकलेगा ! दिल्ली में बहादुरशाह की हुकूमत कायम हो गई है। ग्वालियर, झाँसी, छोटा नागपुर, मथुरा, आगरा, पेशावर, बनारस, कलकत्ता सारे हिन्दोस्तान के सिपाही बागी हो गये हैं। जो भी इस समय अंग्रेजों का साथ दे वह देश का गद्दार है।"

"......"

"तुम तुरन्त नाना साहब के पास जाओ। उन्हें रोको। हमें मुल्क से अंग्रेजों को निकाल भगाना है।"

झुंड के दो आदमी तेजी से अंधकार में विलीन हो गए। शेष चुपके-चुपके छावनी की ओर बढ़ गये।

❀

"मिस्टर हिलडंसन।"

"यस सर।"

"दीवार उठ चुकी है। तमाम अंग्रेजों को अस्पताल की इसी इमारत में बुलाने का इन्तजाम करो।"

"साहब, एक बात और है। आप इस पर ध्यान दें ?"

"क्या ?"

"तोपखाने और खजाने से हिन्दोस्तानी सिपाहियों को हटाकर अंग्रेजी सेना खड़ी कर दें ! दिल्ली से इस वक्त जैसी खबर आयी है, उससे यह काम करना जरूरी है।"

"लेकिन..."

"नहीं साहब! मथुरा और आगरा में भी बगावत हो गई है। इस वक्त जरा कड़ाई से काम लीजिये।"

"अच्छा। तुम तमाम लोगों को इकट्ठा कर सुरक्षा स्थान पर ले आओ।"

सेनापति ह्वीलर अंग्रेजी पलटन तैयार कर खजाने और तोपखाने के पास गये। उन्हें आते देख सिपाहियों में हड़कम्प मचा, पर सेनापति के हुक्म से जहाँ के तहाँ खड़े रह गये।

उनको अपने स्थानों से हटाकर सेनापति ने अंगरेज सैनिकों को खड़ाकर दिया।

"तुम लोग छावनी वापस आओ। अगले हुक्म तक इन्तजार करो!"

"......"

खजाने और तोपखाने की ईमानदारी से अब तक रक्षा करने वाले हिन्दोस्तानी सिपाही चुपचाप छावनी की ओर बढ़ गए। बहुतों के मन दुःख से भर गए। इतना अविश्वास!

३

बिठूर में हवा कुछ दूसरी ही थी। मेरठ और दिल्ली के सिपाहियों के विद्रोह का समर्थन स्थान-स्थान पर होने लगा। बिठूर के रहने वाले उत्तेजित हो गये थे। अंग्रेजों पर उनकी अश्रद्धा बढ़ गई थी। जागीर के तमाम लोगों को सरकारी दीवानी और फौजदारी कानून के अधीन बना दिया गया था।

सभी लोग नाना साहब की प्रतीक्षा में थे। सबकी आँखें उन पर थीं नाना साहब क्या करते हैं? विद्रोह शुरू होने के पहिले लखनऊ झाँसी और कानपुर नाना साहब गये थे। इसलिए बहुतों को विश्वास था, यह विद्रोह नाना साहब का ही है। जरूर उनका कुछ न कुछ हाथ है। ऐसा अनुमान लगाने वाले प्रसन्न हो रहे थे। चाहते थे। अंग्रेजों का नाश हो। जागीर के तमाम लोगों से वीर पेशवा बाजीराव की मौत न छुपी थी। उस दर्दनाक मौत की याद सभी के मन अंग्रेजों से भड़क देती थी।

महाराष्ट्र युद्ध में वीर बाजीराव ने सेनापति सर जान नालकम के दाँत खट्टकर दिये। कुछ मित्रों के विश्वासघात से महाराष्ट्र शेर को पीछे हटाना पड़ा। हार जाने पर भी एक वीर की भाँति उन्होंने शत्रुको आत्म-समर्पण किया। विजेताओं ने भी उनके साथ वीरोचित व्यवहार किया। पूना से उन्हें हटाकर कानपुर से बारह मील दूर बिठूर भेज दिया। आठ लाख सालाना की वृत्ति देकर बिठूर की जागीर दे दी। जागीर के रहने वाले अंग्रेजों के दीवानी और फौजदारी कानून से बरी कर दिये गये।

बाजीराव सब कुछ भूल धार्मिक जीवन व्यतीत करने लगे। अंग्रेजों से उनकी मित्रता नहीं टूटी। बराबर बनी रही। उनके महल में अंग्रेज आते जाते रहे। बराबर उनकी खातिर होती रही।

वृद्धावस्था में बाजीराव चिन्तित रहने लगे।

उनके कोई उत्तराधिकारी न था। दत्तक पुत्र लेने की इच्छा हुई। दत्तक पुत्र को पेशवा की उपाधि, आठ लाख वार्षिक वृत्ति का उत्तराधिकारी मान लेने की प्रार्थना ब्रिटिश गवर्मेंट से की। प्रार्थना अस्वीकार कर दी गई। काबुल और पंजाब की लड़ाइयों में बाजीराव की सेना या आर्थिक सहायता का भी कुछ ख्याल न किया गया। बाजीराव को आशा थी। सरकार उनकी इन सेवाओं को याद रखेगी और समय पर इसका फल मिलेगा, पर आशा धूल मिली।

दुःखी बाजीराव को लकवा मार गया। आँखें जाती रहीं। सारा बिठूर स्तब्ध होकर वीर पेशवा की यह दशा देख रहा था। देश भर में बिखरे हुए मराठे महाराष्ट्र-केसरी की यह दीन दशा देख चुपके-चुपके अंग्रेजों को कोस रहे थे।

पेशवा बाजीराव की मृत्यु हो गई।

मृत्यु के पूर्व अपने मित्र सूबेदार रामचन्द्र पन्त की सलाह से उन्होंने दत्तक पुत्र लिया। धून्धुपन्त नाना साहब को अपना उत्तराधिकारी घोषित कर उसे पेशवा के खिताब और उसे अपनी समस्त स्थावर सम्पत्ति का वारिस मान वसीयतनामा लिख दिया।

❀

पेशवा बाजीराव की मृत्यु के उपरान्त नाना साहब को सरकार की आठ लाख लाख वार्षिक वृत्ति का मुँह जोहना पड़ा। परिवार के नौकरों तथा सैनिकों की संख्या बहुत अधिक थी।

रामचन्द्र पन्त ने ब्रिटिश सरकार को पत्र लिखा।

"परम आदरणीय, कंपनी ने जिस प्रकार भूतपूर्व महाराज का रक्षण और प्रति पालन किया है, उसे याद कर उनके उत्तराधिकारी नाना साहब को भी पूरा भरोसा है कि सरकार उन्हें भी पहले महाराज की तरह मानेगी। इस समय ब्रिटिश गवर्नमेंट की दया और उदारता के सिवा कोई सहारा नहीं है। नाना साहब सदा गवर्नमेंट की शक्ति और अभ्युदय की वृद्धि चाहते हैं।"

बिठूर के कमिश्नर ने इस प्रार्थना को स्वीकार कर प्रार्थना पत्र आगे भेज दिया। छोटे लाट टामसन ने मुँह बिचकाकर पत्र लार्ड डलहौजी के पास भेजा।

लार्ड डलहौजी ने लिखा, पेशवा बाजीराव ने तैंतालीस साल तक आठ लाख रुपया सालाना वृत्ति पाई है। इसके सिवा उन्हें जागीर भी मिली हुई थी। उन्हें दो करोड़ से अधिक का लाभ हो चुका है। किसी तरह का विशेष खर्च तो था नहीं और न ही कोई औरस पुत्र था! मरते समय अपने परिवार के लिए अट्ठाइस लाख की सम्पति छोड़ गये हैं। इस समय पेशवा के जो आत्मीय-स्वजन वर्तमान हैं, उनका कोई स्वत्व सरकार नहीं मानती। सरकार-वृत्ति की आशा व्यर्थ है। पेशवा बाजीराव इतनी सम्पति छोड़ गये हैं, जो उनके पालन पोषण के लिए पर्याप्त है। अब से इस जागीर के लोग सरकारी दीवानी और फौजदारी कानून के आधीन माने जाँयगे

लार्ड डलहौजी के इस उत्तर ने बिठूर में खलबली मचा दी।

तात्या टोपे और अजीमुल्लाखाँ क्रोध से भर गये।

अजीमुल्ला ने सलाह दी—"विलायत में कम्पनी के बोर्ड आफ डायरेक्टर्स के पास प्रार्थना पत्र देना चाहिए। मुझे उम्मीद है, वहाँ जरूर सुनवायी होगी!"

"पर जायगा कौन?"

"मैं!"—अजीमुल्ला बोला—"बहादुरशाह की तरफ से राजा राममोहन राय विलायत गये ही थे। उसी तरह मुझे विलायत जाने की मंजूरी भी मिल ही जायगी। आपकी दया से मैं यह काम बखूबी कर सकता हूँ।"

तात्या टोपे का चेहरा क्रोध से लाल था। बोला—"इस तरह भीख माँगने से दया नहीं मिलती, महाराज!"

"इसमें भीख की क्या बात है! यह तो हमरा हक है!"—अजीमुल्ला बोला।

"अमाँयार! हक हाथ पसारने से नहीं डंडे से मिलता है।"

"हमें शान्ति से काम लेना चाहिए।"—अजीमुल्ला से नाना साहब ने कहा—"तुम विलायत जाने का इंतजाम करो। सब ईश्वर मालिक हैं।"

❀

बेगम जिन्नतमहल को अतीत की एक-एक बातें याद आ रही थीं।

दिल्ली के सम्राट शाहआलम को लार्डलेक और लार्ड वेलस्ली ने मराठों की कैद से छुड़ाया था। बादशाह जब कैद से छूटे, तो उन्हें देखकर दिल्ली की जनता जार जार रोयी। बूढ़ा बादशाह अंधा और फटे हाल था। शाहआलम दिल्ली के शाही महल में आए। अंग्रेजों ने उनका सम्मान किया। बादशाह की पदवी बनी रही और दस लाख सालाना की वृत्ति दी गई।

बूढ़ा बादशाह अपनी जिंदगी की आखिरी साँस ले रहा था। अक्सर बुद बुदाता—"तबाही के तूफान ने उठकर मुझे बरबाद कर डाला। मेरी कुल इज्जत हवा में उड़ा दी। मेरे तख्तेताऊस को दूर फेंक दिया। अँधेरी गुफा में पड़ा हूँ। इस मुसीबत से मेरी रूह पाक हो जायगी। या परवरदिगार तेरी ही मिहरबानी से मैं इस अँधेरे से छुटकारा पा सकता हूँ।"

शाहआलम की मौत हो गई।

❀

शाह अकबर गद्दी पर आए। बादशाह की पदवी का रौब अभी भी था। मुगल सिक्का ही चल रहा था। बादशाह के दस्तखत के बगैर कम्पनी कोई कार्रवाई नहीं कर सकती थी। दिल्ली के अंग्रेज रेजिडेण्ट को बादशाह के सामने जूते पहिनकर जाने की हिम्मत नहीं होती थी। नंगे पाव जाना पड़ता था।

अकबरशाह ब्यासी साल के होकर मौत हुए। उनके बेटे अबुल मुजफ्फर सुराजुद्दीन मुहम्मद बहादुरशाह ज़फर गद्दी पर आए।

दस लाख सालाना से एक बादशाह का क्या खर्च चल सकता है !

कम्पनी के डायरेक्टरों से रकम बढ़ाने कहा गया ।

कंपनी ने कहा, बादशाह अपना रहा-सहा सम्मान और अधिकार कंपनी को दे दें तो तीन लाख सालाना बढ़ाया जा सकता है । बादशाह को शाहीमहल छोड़ कर कुतुबमीनार में रहना पड़े ।

बहादुरशाह ने तीन लाख रुपए में यह सम्मान बेचने से इन्कार कर दिया ।

काफी उम्र ढल जाने पर बहादुरशाह ने जीनतमहल से शादी की । जीनत महल का एक बेटा हुआ । जवान बख्त । बादशाह जवान बख्त को बहुत चाहने लगे । उसे ही अपना वारिस बनाने का इरादा किया तो खान-दान में झगड़ा पैदा हो गया ।

शाहजादे दाराबख्त के इन्तकाल से शाहजादा फकीरुद्दीन ही हकदार था । फकीरुद्दीन ने गद्दी पर अपना हक जतलाना शुरू कर दिया । बादशाह के आगे फकीरुद्दीन की एक न चली । जीनत महल ने बादशाह से कह दिया फकीरुद्दीन का खतना हो गया है, इसलिए गद्दी नापाक नहीं की जा सकती ।

फकीरुद्दीन अंग्रेजों से जा मिला ।

अंग्रेजों की सारी शर्तें मान उसने इकरारनामे पर दस्तखत भी कर दिये । अंग्रेज उसका साथ देने को तैयार हो गए । बादशाह को फकीरुद्दीन की इन हरकतों से बड़ा धक्का लगा । खुदा की मार फकीरुद्दीन इस झगड़े को पैदा करने के बाद ही चल बसा ।

फकीरुद्दीन के बाद मिर्जा कुरैश का हक था । बादशाह तो जीनत महल की खूबसूरती और उसकी बातों पर फिदा थे । शाहजादा जवानबख्त को ही वह अपना वारिस बनाना चाहते थे ।

तख्त नशीनी का मामला, कंपनी के सामने रखा गया । लार्ड केनिंग ने स्वयं इस विवाद में भाग लिया और अपना फैसला किया ।

उनके फैसले के मुताबिक, जवान बख्त को गद्दी का हकदार नहीं माना जा सकता था । जब तक बहादुरशाह हैं, तब तक विरासत के बारे में कोई लिखा-

पढ़ी की जरूरत नहीं । बादशाह के इन्तकाल बाद गवर्मेंट मिर्जा मुहम्मद कुरैशा को शाही खानदान का प्रधान व्यक्ति मानेगी पर इस संबंध में शाहजदा फखीरुद्दीन के साथ जो शर्तें तय हुई हैं, वे कायम रहेंगी । साथ ही मुहम्मद कुरैशा को बादशाह का खिताब भी नहीं मिलेगा । वह सिर्फ शाहजादा कहलायेगा । शाहजादे को सिर्फ पन्द्रह हजार रुपया सालाना मिलेगा ।

इस फैसले से बेगम जीनत महल अंग्रेजों से घृणा करने लगी । साथ ही दिल्ली की तमाम जनता अंग्रेजों के इस अन्याय से कुपित हो गई ।

❀

तमाम बागी सिपाहियों को बादशाह के सामने तलवार झुकाते देख बेगम जीनत महल की खुशी का ठिकाना न रहा ।

"बादशाह सलामत !"

"जिन्दाबाद !"

"बादशाह सलामत !"

"जिन्दाबाद !"

महल के बाहर अंग्रेजों के खिलाफ बागी रियाआ की आवाज गूँज रही थी । बेगम जीनत महल मुस्कुरायीं । बादशाह की ओर उसने मुस्कुरा कर देखा ।

"देखते क्या हैं ? तख्त सँभालिए । ये अंग्रेज बनिए तुम पर हुकूमत नहीं कर सकते । एक टुकड़े जमीन की भीख माँगने वाले अंगरेज हमारे मालिक बनेंगे । हिस्स !!"

बादशाह बहादुरशाह दिल्ली के तख्त पर बैठ गए ।

❀

अजीमुल्ला खाँ विलायत से नाकामयाब होकर लौट आया था । विलायत में उसने अपने सुन्दर सुगठित शरीर के कारण खूब आनंद लिया । क्रीमिया के युद्ध को भी उसने अपनी आँखों से देखा । घूमता-फिरता नाना साहब के पास लौट आया ।

अजीमुल्ला खाँ पहले एक अंग्रेज का बावर्ची था । वहीं पढ़ता भी था । कुछ

दिन मास्टर रहा। फिर नाना साहब का दोस्त हो गया। टूटी-फूटी अंग्रेजी और फ्रेंच बोल लेने के कारण उसने नाना साहब पर अपना रोआब बाँध लिया था। नाना साहब ने उसे अपना सलाहकार मान लिया।

उसकी नाकामयाबी की बात सुनकर नाना साहब के मन को दुःख हुआ। इसी दुःखी अवस्था में वह कुछ दिन के लिए झाँसी और लखनऊ भी गये। अवध की बेगम, निजाम को हड़पने और इन्दौर स्टेट पर हुए अत्याचार उनसे छिपे न रह सके।

❀

कलक्टर हिलडंसन का पत्र लेकर दूत नाना साहब के सामने हाजिर था।

तात्या टोपे ने पत्र पढ़ा। पढ़कर नाना साहब को सुनाया। पत्र में कानपुर विद्रोह का समाचार था। साथ ही मेरठ और दिल्ली की बातें भी उसमें थीं। नाना साहब को सरकारी खजाने की सहायता के लिए तुरन्त बुलाया गया था।

"क्या जवाब दिया जाये?"

अजीमुल्ला के चेहरे पर मुस्कुराहट फैली—"आप क्या सोचते हैं?"

"सोचना क्या है! अंग्रेज हमारे दोस्त हैं दोस्त की मुसीबत में मदद करना चाहिए!"

"तब फिर चलिए!"

तात्या टोपे कुछ न बोला। मन ही मन वह अंग्रेजों की इस विपत्ति पर प्रसन्न था। कानपुर चलकर वहाँ की स्थिति देखने के बाद ही उसने कुछ करने का निश्चय किया। अतएक मन की बात मन में रखे रहा।

नाना साहब अपने दो सौ चुने हुए सैनिकों, तोपों के साथ कानपुर चल पड़े।

❀

कानपुर विद्रोह के समाचारों से सनसना रहा था। नवाबगंज के तोपखाने के पास आकर नाना साहब ने एक भी अंग्रेज को न पाया। कलक्टर साहब का मकान खाली पड़ा था। नाना साहब इसी मकान में ठहरे।

छावनी खबर भेजी गयी।

नाना साहब के आने का समाचार सुन कलेक्टर साहब दौड़ आए। उनके साथ सेनापति ह्वीलर भी थे।

"मुबारक ! मुबारक ! "—कलक्टर ने नाना साहब का स्वागत किया ।

"मैं आपकी सेवा में हाजिर हूँ ।"—नाना साहब बोले ।

कलक्टर मुस्कुराए—"इसी भरोसे तो मैंने आपको याद किया है !"

"साहब लोग शहर में नजर नहीं आते ।"

"हम सब लोग छावनी में हैं ।"—कलक्टर बोले—"यह मकान भी मैंने आपके लिए छोड़ दिया है । आप आराम से इसमें रहिए । जब तक बगावत खत्म न हो जाय या हमारी मदद के लिए गोरी फौज न आ जाय तब तक आप हमारी मदद करिये । खजाने का पूरा भार आप पर है !"

"आपके इस विश्वास के लिए मैं आपको धन्यवाद देता हूँ ।"

तात्या टोपे कलक्टर की बात सुनकर बोला—"श्रीमान, आपने जो कहा है, उस पर अमल होगा, पर एक सवाल है ।"

"क्या ?

"हमारे सिपाहियों का खर्च कौन देगा ?"

"हम देंगे ।"

तात्या टोपे की इस त्वरित बुद्धि पर नाना साहब मन ही मन बहुत खुश हुए ।

"इस समय शहर की हालत बड़ी नाजुक है । दो नम्बर का रिसाला बड़ी गड़बड़ी कर रहा है । हम लोगों को विश्वास है कि खजाना आप सँभाले रहेंगे ।"

नाना साहब का विश्वास पा दोनों अधिकारी लौट गए । नाना साहब के सैनिक कानपुर के खजाने और तोपखाने की रक्षा में तैयार हो गये ।

❀

अजीमुल्ला की प्रसन्नता का ठिकाना न था । कानपुर का खजाना, छः लाख रुपया नगद और पूरा तोपखाना इस समय कब्जे में है । इतनी ताकत से तो अंग्रेजों को कानपुर से बड़ी आसानी से खदेड़ा जा सकता है । इस समय सारे देश में गदर फैल गई है । राजपूताना, इन्दौर स्टेट, बँगाल, बिहार, सारा रुहेल खंड अंग्रेजों के खिलाफ है । दिल्ली के तख्त पर मुगल बादशाह बैठ गये हैं । यह मौका बड़ा नायाब है । अंग्रेजों के इस विश्वास का लाभ उठाना चाहिए ।

यह विश्वासघात होगा । नाना साहब शायद इसके लिए तैयार न हों, पर

इन अंग्रेजों ने हमारे साथ क्या कम विश्वास घात किया है ! आज जब सिर पर पड़ी है, तो नाना साहब याद हैं और जब वृत्ति बढ़ाने को कहा, तो ठेंगा दिखला दिया। ये अंग्रेज बड़े मतलबी हैं।

अजीमुल्ला आधी रात के सन्नाटे में बाहर निकला। तात्या टोपे के कमरे में झाँका। तात्याटोपे सोया न था। बेचैनी से टहल रहा था। मराठा पुत्र की आँखों के आगे नागपुर के राजमहल की रानियाँ और माताओं का चित्र झूल रहा था। गोरे आफीसर उन्हें घसीट रहे हैं। महल का खजाना खोद-खोद निकाला जा रहा है। आज अंग्रेज चंगुल में आए है। आज मौका आया है कि इनसे अत्याचार का प्रतिशोध लिया जाय।

तात्या टोपे के दूत जो समाचार दे गए थे, वे बड़े ही उत्साहवर्धक थे। बगावत चारों तरफ फैल चुकी है। दिल्ली के तमाम अंग्रेजों को मौत के घाट उतार दिया गया है। कानपुर की सारी जनता अंग्रेजों के खिलाफ है। इस समय जनता का साथ न दिया तो कल को यही जनता हमारी भी दुश्मन बन सकती है।

"तांते..."

"कौन ?"

"मैं !"

"आओ !"

"अभी तक नहीं सोये। क्या बात है ?"

"योंही।"

"कुछ है जरूर।"

"पहले तुम कहो कि तुम क्यों नहीं सोये ?"

"मेरे दिमाग में इस समय बहुत सी बातें चक्कर खा रही हैं। क्रीमिया की लड़ाई में तुर्की में ये अंगरेज ऐसे कट-कट गिरते थे, मानों गाजर मूली। आखिर वहाँ हार गए।"

"हुँ !"

"आज यहाँ भी काटे जा रहे हैं और हम इनकी मदद कर रहे हैं !"

"तुम्हारा क्या विचार है ?"

"मेरा विचार !"—अजीमुल्ला बोला—"इस समय अंग्रेजों का नहीं, हमें मुल्क का साथ देना चाहिए ?"

"यही मैं सोच रहा हूँ !"

"पर सवाल नाना साहब का है !"

"नाना साहब को आप समझें !"

"जरूर ! इस वक्त क्या नाना साहब इन अंग्रेजों के तमाम कर्म भूल जायेंगे। आज अगर हम अंगरेजों की मदद भी करते हैं, तो इससे फायदा। काबुल और पंजाब की लड़ाईयों में मदद देकर हम लोगों ने क्या पाया ? ये अंग्रेज नमक हराम है। एहसान फरोश हैं।"

"जरूर ! हमें नाना साहब को इस समय होशियार करना चाहिए।"

अजीमुल्ला और तात्याटोपे का गाठ बंधन पक्का हो गया।

"हमें जल्दी काम करना चाहिए। सुना है, लखनऊ से लारेंस की सेना आ रही है !"

"उससे क्या ? खजाना और तोपखाना तो हम लोगों के आधीन है।"

❀

"वैल मैन। क्या कहना माँगता !"

नानक चन्द बोला—"ये ज्वाला प्रसाद गवाही हैं, आप पूछिए !"

ज्वाला प्रसाद बोला—"साब ! नाना साहब पर भरोसा मत करिये। उनके दो मित्रों, अजीमुल्ला और तात्याटोपे को हम लोगों ने बागियों से मिलते देखा है !"

"......"

"इसीलिए आपको होशियार करने आए हैं !"

"मिस्टर नानक चन्द।"—हिलर्डसन ने डपटकर कहा—"हम जानते हैं कि नाना साहब से आपकी दुश्मनी बहुत दिनों से चली आ रही है, इसलिए आप इस मौके का फायदा उठाने आए हैं।"

"जी नहीं, जी नहीं, ऐसी बात नहीं है।"

"आप चले जाइए !"

❀

कानपुर में कोलाहल मच गया।

भागदौड़ शुरू हो गई। बाजार बंद हो गया। तोप गाड़ियों की गड़ गड़ाहट और सैनिकों का शोर सुन सबके कान खड़े हो गए। बागी इस शहर में आ रहे है। छावनी से दूर अस्पताल की दो इमारतों में छुपे तमाम अंग्रेज घबड़ा गए। नाना साहब की उपस्थित के कारण कुछ साहस शेष था।

आवाज पास आती गई।

पता लगा। लखनऊ से सरलारेंस आये हैं। लारेंस के सैनिक सारे शहर में बिखर गये। तब पूरा शहर सँभला। नगर ने संतोष की साँस ली।

नगर में लारेंस के सैनिक गश्त करने लगे। सिपाहियों के झुंड भी घूम रहे थे।

चौराहे पर एक गोरे ने कहा—"जो सिपाही हुक्म उदूली करेगा उसे हथकड़ी बेड़ी पहिनायी जायगी!"

"कैसी हुक्म उदूली ?"

"यही कारतूस काटने की !"

"क्या हम अपना धर्म गँवायेंगे !"

"धर्म फर्म क्या बला है !"

"ए कुत्ते, जुबान सँभाल !"—दो चार सिपाही उसकी ओर लपके।

अंग्रेज सैनिक ने आव देखा न ताव। गोली छोड़ दी गोली लगते ही एक सिपाही मर गया। तमाम लोग जुटकर उस अंग्रेज को मारने दौड़े, पर तब तक वह भाग गया। बाजार में सनसनी मच गई। सिपाहियों ने अपने साथी की लाश उठा ली। छावनी की ओर चले।

सिपाहियों का यह झुंड जैसे-जैसे शहर से छावनी की ओर बढ़ता गया, वैसे-वैसे सारे शहर में सनसनी फैलती गई। एक गोरे ने एक सिपाही को मार डाला है।

सिपाहियों का झुंड छावनी की तरफ बढ़ चला। जहाँ गोरे सैनिक और उनके

आफीसर थे, वह स्थान सिपाहियों ने घेर लिया। सनसनी फैल गई। अंग्रेजों ने समझा मौत आ गई। सेनापति व्हीलर साहसकर बाहर आये। सिपाहियों की सब बातें सुनीं। गोरे सैनिक के खिलाफ कार्रवाई करने का आश्वासन दिया। सिपाही लौट गए।

फिर भी उत्तेजना कम न हुई।

गोरे सैनिक को कोई दंड न दिया गया। सिपाहियों में क्रोध की लहर फैली। अगर किसी सिपाही ने अंग्रेज सैनिक को मार डाला होता, तो अब तक उसे फाँसी पर लटका दिया गया होता। पक्षपात के इस दृश्य ने नागरिकों को भी भड़का दिया। एक हिन्दुस्तानी अफसर रात में इतना उत्तेजित हो गया कि उसने बिगुल बजाकर अपनी सेना को तैयार होने का आदेश दिया, पर एक सिपाही ने उसके हाथ से बिगुल छीनकर आग की लपटें को धधकाने से रोक लिया।

❀

विद्रोही सिपाही दिल्ली की सड़कों पर बिखर गये। नंगी खून टपकाती तलवारें सर्वत्र दिखलायी पड़ने लगीं।

"मारो, मारो!"

जो भी ईसाई या अंग्रेज सामने पड़ता, उसे मौत के घाट उतार दिया जाता। उसके शरीर के टुकड़े-टुकड़े हो जाते। उसकी बोटियाँ जूतों की ठोकरों से उछाल दी जातीं।

"दीन दीन!!"

आवाज होती। मुसलमान अपने घरों से निकलते और इन बागियों के साथ मिल जाते।

बलवाईयों की बड़ी भीड़ दरियागंज की ओर बढ़ी। अंग्रेज बस्ती पर विद्रोही टूट पड़े। घरों में आग लगाई जाने लगी। अंग्रेजों को काटने, उनकी लाशों को रौंदते, पागल, उन्मत्त से सिपाही भयङ्कर काण्ड करने लगे। स्त्रियों और बच्चों को घसीट-घसीट कर मारा जाता। उन्हें जीते जी आग में झोंक दिया जाता।

दिल्ली बैंक पर हमला हुआ।

तमाम कर्मचारियों को मार डाला गया। बैंक की ओर लूटमार हुई। जिसको

जो मिला, वही लेकर आगे बढ़ गया। बैंक का खजाना लुट गया। डाकुओं की तरह लूट पाट मचाकर बैंक की इमारत में आग लगाकर विद्रोही सिपाही आगे बढ़ गए।

दिल्ली गजट का दफ्तर। तमाम ईसाई कंपोजीटरों के टुकड़े-टुकड़े कर दिये गये। प्रेस में आग लगा दी गई।

दरियागंज खून से नहा उठा। सड़कों पर अंग्रेजों और ईसाईयों की लाशों के टुकड़े, अंग्रेज स्त्रियों के कटे शरीर, नन्हें नन्हे बच्चों के सिर, कूड़े कर्कट, कंकड़, पत्थर की तरह चारों तरफ बिखरे हुए थे।

दिल्ली शहर के तमाम अंग्रेजों में हलचल मच गई। ब्रिगेडियर ग्रेव्स के आदेश से कर्नल गिल अपने सिपाहियों की टुकड़ी लेकर काश्मीरी दरवाजे की ओर बढ़े, पर रास्ते में ही सिपाहियों ने विद्रोह कर दिया और अपने साथ के तमाम अंग्रेज अफसरों को मार डाला।

खबर पाकर मेजर पैंटरसन तोपों और सैनिकों के साथ काश्मीरी दरवाजे की ओर बढ़े पर वहाँ अंग्रेजों की लाशों के अतिरिक्त और कोई न था। पैंटरसन मेन गार्ड की ओर बढ़े। मेन गार्ड में बहुत से अंग्रेज भागकर छुपे हुये थे।

उनके पहुचते ही विद्रोहियों की बड़ी भीड़ ने मेन गार्ड को घेर लिया।

दोनों ओर से गोलियाँ चलने लगी।

अंग्रेज घबड़ा गये। कुछ तो पीछे से उतर खाई के रास्ते जँगल में भाग गये। स्त्री बच्चे भी उतार दिये गये।

विद्रोहियों ने बड़ी तेजी से हमला किया। मेन गार्ड के अंग्रेजों और उनके रक्षक हिन्दोस्तानी सिपाहियों को भागना पड़ा। बहुत मारे भी गए।

अनायास दिल्ली का आकाश फट पड़ा।

आग की ऊँची-ऊँची लपटें एक धड़ाके के बाद ही उठीं। आदमियों की लाशों के टुकड़े, मकानों के मलबे चील की तरह आकाश में मँडराये और चारों ओर फैल गए।

दिल्ली के मुख्य शास्त्रागार में आग लगा दी गई।

❀

मेरठ में अंग्रेज मारे गए। दिल्ली सिपाहियों के कब्जे में आ गई। मुगल बादशाह फिर तख्त पर बैठ गये। सिपाही उनके पक्ष में है। हिन्दुस्तानियों ने खुद हुकूमत की बागडोर सँभालली है।

इस समाचार के मिलते ही सेनापति रीड, ब्रिगेडियर काटन, मेजर एडवर्डस घबड़ा गये। सारे पेशावर मे सन सनी फैल गई थी। साधु और फकीर जाने कहाँ से यकायक मेरठ और दिल्ली के समाचारों को लेकर शहर में आ गये।

कर्नल निकलसन बेचैनी से चेम्बरलेन के आने की प्रतीक्षा कर रहे थे।

"साहब आ गये!"

जैसे ही चेम्बरलेन अंदर आए। तीनों अफसरों को जान में जान आई। सब बैठे।

"आपने सब सुन लिया?"

"हाँ!"

"क्या करना चाहिये?"

"यहाँ के सिपाहियों में तो अभी कोई उत्तेजना नजर नहीं आ रही!"

"लेकिन मुझे इनका भरोसा नहीं!"

"सर जान लारेंस रावलपिंडी में हैं। मेरा खयाल है, उनकी राय लेना ठीक होगा!"

"तब आप जाइए!"

चेम्बरलेन ने प्रस्ताव स्वीकार कर लिया और उसी समय वह रावलपिंडी रवाना हो गये।

पेशावर छावनी और शहर में सनसनी मची हुई था। इक्कीस, चालीस, इकतालीस और चौवन नंबर की पलटनों के तमाम सिपाहियों मे बेचैनी थी। अधिकांश हिन्दोस्तानी अफसरों के पास गुम नाम पत्र आ रहे थे, जिनमें धर्म के नाम पर अंग्रेजों का नाश करने की उत्तेजक बातें रहती। नगर में बहुत से फकीर, साधु घूम रहे थे जो धर्म के नाम पर जनता को अंग्रेजों से सावधान रहकर अपनी धर्म रक्षा का निवेदन कर रहे थे।

ऐसा स्थिति में भी विद्रोह के कहीं कोई लक्षण न थे। सेना के उच्च पदस्थ अंग्रेज अधिकारी चिन्ता से भरे तोपखाना, और शस्त्रा गार सँभाल रहे थे।

चेम्बरलेन सर जान लारेंस से सलाह कर वापस आये। अंग्रेजों ने फौज में नये लोगों को भरती किया। अफगान सरदार दोस्त मुहम्मद को बहुत सा रुपया इनाम में भेजकर खुश किया गया। चारों ओर से अंग्रेजों ने अपनी रक्षा का सुदृढ़ प्रबन्ध कर प्रान्त के बाहर की भी स्थिति की खबर ली। लाहौर के विद्रोह का समाचार आ चुका था। विद्रोह की लपटें बढ़ती आ रही थीं।

इनके दमन की तैयारियाँ होने लगीं।

❀

"साहब!"—हरकारे ने समाचार दिया—"नौशेरा की पचपन नम्बर की पलटन के सिपाही बागी हो गये!"

"क्या कहा?"

"हाँ साब!"

एडवर्ड्स् ने निकल्सन को यह समाचार सुनाया। सुनते ही निकल्सन के चेहरे पर घबराहट फैल गई। हरकारा समाचार देकर चला गया।

"ब्रिगेडियर के यहाँ चलें!"

निकल्सन एडवर्ड्स् के साथ रात में ही ब्रिगेडियर के बँगले धमके। साहब को सोते से उठाया गया। नौशेरा की पलटन की बगावत का समाचार दिया गया। ब्रिगेडियर ने सब सुनने के बाद एक मिनिट की भी देर करना उचित न समझा। पाँचों पलटन के आफीसरों को तुरन्त बुलाया गया।

सेनापति रीड प्रति पल के समाचारों से चिन्तित हो रहे थे।

"सुना आप लोगों ने?"

"जी हाँ!"

"इससे साफ है कि यहाँ के सिपाही कभी भी बगावत कर सकते हैं।"

"हाँ शहर की हालत भी ठीक नहीं!"

"मेरी राय है, सिपाहियों को निरस्त्र कर दिया जाय!"

"लेकिन..."

"क्या कहना चाहते हैं? कहिए न!"

"इक्कीस नम्बर की पलटन बड़ी पुरानी है। इसमें जो सिपाही हैं, वे वफा-

दार हैं। बहुत से बहादुर लोग भी इसमें हैं। इन लोगों के यदि हथियार लिये जायेंगे, तो बड़ी बेचैनी फैलेगी। दुःख कभी-कभी आक्रोश का कारण भी बन जाता है।"

"तो चार पलटन लीजिये!"

बहस-मुबाहिसे के बाद चारों पलटनों की वर्दी और हथियार ले लेने का फैसला कर लिया गया।

❀

सूर्यास्त के पहिले ही तमाम पलटनें मैदान में खड़ी कर दी गईं। गोरे सैनिकों ने बन्दूकें भरीं। तोपों के पास गोलन्दाज जलती बत्तियाँ लेकर खड़े हो गये।

सेनापति रीड ने इस तरह सिपाहियों को चारों ओर से घेरकर हथियार रखने और वर्दी उतारने का आदेश दिया।

इस आदेश के गूँजते ही तमाम सिपाहियों के चेहरे उतर गये। हिंदोस्तानी अफसरों ने एक दूसरे का मुँह ताका। विद्रोहियों के पत्र, उनके दूतों की खबरों और विद्रोहियों की सफलताओं को सारे समाचार मालूम हो आने पर भी किसी सिपाही ने अपनी राजभक्ति में कमी न आने दी। इसके बाद भी यह अविश्वास...?

एक अफसर साहसकर आगे बढ़ा।

उसने सेनापति रीड से कहा—"सिपाहियों की तरफ से मुझे कुछ कहने की इजाजत दी जाय!"

"कहो क्या कहना है?"

"हमारी प्रार्थना है कि हमारी पलटनों को निरस्त्र न किया जाय। हम लोग राज भक्ति का प्रमाण अफगान, काबुल की लड़ाईयों में दे चुके हैं। विद्रोहियों की ताकत बढ़ रही है। हम सब आपके साथ हैं। उनके आने पर, अगर हमारे हथियार छीनकर हम लोगों को बरखास्त कर दिया जाता है, तो हम लोग कैसे मुकाबला करेंगे!"

सेनापति रीड ने अफसर की ओर घूमकर देखा।

कहीं यह एक चाल तो नहीं।

निकल्सन पास ही खड़े थे। धीरे से बोले—"विश्वास न कीजिए। कहीं ऐसा न हो हमारे ये हथियार हमारे ही सिर बजें।"

सेनापति रीड बोले—"आपकी बात ठीक है। लेकिन हम लोग प्रधान सेनापति के हुक्म के कारण मजबूर हैं।"

प्रधान सेनापति के नाम पर अफसर चुपचाप पीछे हट गया।

सेनापति रीड ने अपना आदेश फिर दुहराया।

पलटन के सिपाहियों ने हथियार रख दिये। वर्दियाँ उतरना शुरू हो गईं। किसी ने चूँ तक न की। बहुत से अफसरों की आँखो में आँसू आ गये। हिन्दोस्तानियों, सिपाहियों की ऐसी राज भक्ति देख कुछ अंग्रेज अफसर भी पिघल गये उनकी आँखें भर आयीं।

दो अंग्रेज अफसरों ने भी अपनी वर्दियाँ उतार दीं और हथियार रख दिये।

सिपाहियों की इतनी भक्ति देख तमाम उच्च पदाधिकारी विह्वल हो उठे। पर अब किया क्या जा सकता था! आर्डर हो चुका था। आदेश के मुताबिक तमाम पलटन निरस्त्र हो गई। बर्खास्तगी का हुक्म सुनाया गया। सिपाहियों ने अन्तिम बार अपने अधिकारियों को सैल्यूट दिया और डिसमिस हो गए।

सेना के उच्चाधिकारी हाथ मलते रह गए।

❀

बर्खास्त सिपाहियों ने छावनी से अपना डेरा उठाया। शहर और आस पास के गाँवों में फैल गये। विद्रोह की विजय के समाचारों ने उनके मन के दुःख को क्रोध में बदल दिया! सिपाहियों ने जनता से समझौता किया और विद्रोह की की तैयारियाँ होने लगीं।

अपनी अदूरदर्शिता पर अफसोस मनाने के बाद भी सेनापति ने बर्खास्त किए हुए सिपाहियों की गति विधि पर दृष्टि रखने के लिए गुप्तचर लगा दिए।

विद्रोह फैलाने के अभियोग में एक सूबेदार को पकड़ा गया।

सूबेदार पर मुकदमा चलाया गया।

सार्वजनिक रूप से उसकी सुनवायी होने के बाद सूबेदार को सब के सामने

फाँसी पर लटका दिया गया। कुछ सिपाही भी पकड़े गये थे। उन सबको लंबी कैद की सख्त सजाएँ देकर जेलखाने भेज दिया गया।

❀

झेलम किनारे पड़ी चौदह नम्बर की पलटन के सिपाहियों को भी मेरठ की बगावत और दिल्ली पतन के समाचार मिले। साथ ही पेशावर, आगरा, मथुरा, पंजाब आदि के सिपाहियों के हथियार, वर्दियाँ छीन लेने की भी बात मालूम हुई।

इससे पहले कि वे कोई निर्णय कर सकें, गोरी सेना झेलम के उस पार तोप, बन्दूकों से लैस होकर आ खड़ी हुई। छावनी में पड़े तमाम सिपाहियों ने इस दृश्य को देखा। समझ गये। उनकी दुर्गति निकट है।

"देखते क्या हो! भिड़ जाओ!"—एक सिपाही ने ललकार दी।

अफसरों के रोकने के बाद भी सिपाही बन्दूकें लेकर टूट पड़े। गोला बारी शुरू हो गई। तोपें पास होने के कारण उनकी मार बेकार जा रही थी। तोपों की अपेक्षा बन्दूकों से मार काट हो रही थी। सिपाहियों की बन्दूकों से गोरी सेना के छक्के छूट चले।

दो पहर का प्रचण्ड सूर्य गोरी सेना के लिए असह्य था। दूसरी ओर सिपाही पेड़ों की ओट से लगातार मार कर रहे थे। सिपाहियों की इस मार के आगे गोरी सेना का प्रधान मारा गया। अंग्रेजी सेना पीछे हटी। दिन भर युद्ध होता रहा।

❀

सूर्योदय के साथ ही युद्ध शुरू हो गया। अंग्रेजी सेना की सहायता के लिए और फौज आ गई। युद्ध डटकर शुरू हो गया। दोनों ओर से गोलियाँ बरसने लगीं। तोपों की मार ठीक की गई। विद्रोही सिपाही टिक न सके। उनके पाँव उखड़ गए। अंग्रेजी सेना तेजी के साथ आगे बढ़ी। विद्रोहियों में भगदड़ मच गई। सिपाही प्राण लेकर भागे। कुछ झेलम में कूदे। डूबमरे, कुछ काश्मीर की राह पर भागे। सेना ने पीछा किया। जो पकड़े गये उन्हें बंदी बनाया गया। गाँवों तक खदेड़ा गया। ग्रामीणों ने भी सिपाहियों को पकड़ने में मदद दी।

जो पकड़ गये उन सबको तोपों के मुँह पर बाँध दिया गया।

बारूद भर बत्ती लगा दी गई।

धड़ाके के साथ बारूद फटी और बन्दी सिपाहियों के शरीर के टुकड़े दूर दूर तक उड़ गये।

❀

"नाना साहब!"—अजीमुल्ला मुस्कराते हुये बोला—"अब मेरी बड़ी मुश्किल है। कोई भी हमारा सिपाही बात सुनने को तैयार नहीं!"

"क्यों...क्यों?"

"नाना साहब, हमारे ही सिपाही आजकल हमारी ही बदनामी कर रहे हैं। वफ़ादार है, इस लिए हम लोगों की आज्ञा पर जान देने को भी तैयार हैं, पर मन ही मन वे लोग हमारे नाम पर आँसू बहा रहे हैं।"

"आखिर क्यों?"

"बात ऐसी है नाना साहब कि अंग्रेज तो सबका धर्म ले रहे है। बहुतों को उन लोगों ने क्रिस्तान भी बना लिया है। अब खाने पीने के सामान में गड़बड़ी कर सबका धर्म लेने पर उतारू हुए। आप मराठा है, मै मुसलमान। हम लोगों में दोस्ती है। मै आपका गुलाम हूँ। यह बात दूसरी है, पर जब आप मेरा धर्म लेने पर उतारू हो जाऊँगा या आप मेरा धर्म लेने पर उतारू हो जायगे तब क्या होगा, हम लोग एक दूसरे को मारने-मरने के लिए तलवारें निकाल लेंगे! कहिए मैंने ठीक कहा।"

"ठीक है।"

"इसीलिए आज जब हिन्दू मुसलमान दोनों का धर्म जा रहा है, तो दुश्मनों के हम मददगार बनकर खड़े हैं। इससे बड़ी तौहीनी की क्या बात हो सकती है!"

"अजीमुल्ला......"

"हाँ नाना साहब, मैं सिपाहियों के मन की बात आपसे कह रहा हूँ। आज कल हमारा हर सिपाही यही बात सोचता है!"

"......"।

"दूसरे वह आपको कुल कलंक और डरपोंक समझता है !"

"अजी मुल्ला !"

"नाना साहब, याद कीजिये अपना पेशवा खानदान ! याद कीजिए अपने मरहूम वालिद बाजीराव पेशवा को ! उनकी ही औलाद अंग्रेजों के आगे झुके ! आज जब अंग्रेजी सल्तनत क्रीमिया से लेकर हिन्दोस्तान तक उखाड़ कर फेंकी जा रही है, तो हम अंग्रेजों के वफादार बनकर खड़े हैं। हमें अपने मुल्क की परवाह नहीं और हम एक गैरमुल्की की सलतनत के पाए मजबूत बना रहे हैं। हम सब गद्दार हैं, नाना साहब ! हम सब गद्दार हैं !"

"अजीमुल्ला, तुम्हें आज क्या हो गया है ?"

"नाना साहब, बाहर निकलकर देखिए, आपके तमाम नौकर चाकर, सिपाही आँखों में आँसू भरे आपके हुक्म की तामील कर रहे हैं, पर मुल्क, कौम दीन ईमान के साथ गद्दारी करते वक्त उनके हाथ भी काम कर रहे हैं। कहीं ऐसा न हो कि उनके हाथों की बन्दूकों के निशाने हमारी ओर हो जाँय।"

"क्या कह रहे हो, अजीमुल्ला..."

"मैंने एकदम कड़ुवी बात कही है, नाना साहब, इसके लिए मैं आपसे मुआफी चाहता हूँ, पर आप खुद सोचिए। इतने दिनों तक इन अंग्रजों की खिदमत करने का क्या नतीजा मिला आपको ? आपका वजीफ़ा गया। अंग्रेजी अमलदारी के दीवानी और फौजदारी कानून आपकी जागीर में लागू कर दिए गए।"

"....."

"ख्याल कीजिए मैं विलायत तक गया। रङ्गो बापाजी भी गये। इतना बड़ा राजा राममोहनराय भी गया। टामसन भी गये। पर इन अंग्रेजों ने न गोरी चमड़ी की और न काली चमड़ी सिफारीश सुनो। हम लोगों की खिदमतों को ठोकर से मार दिया इन्हीं लोगों ने। आज इस मुसीबत के वक्त हम इनकी सहायता करेंगे तो हमें क्या मिलेगा ?"

"एक दोस्त की मुसीबत में हमारा सहायता करना फर्ज है अजीमुल्ला !"

"अपने बजा फरमाया नाना साहब !"—अजीमुल्ला बोला—"पर नमकहराम दोस्त की नहीं। आज सारे मुल्क में क्या हो रहा है। पिछली बार जब आप

लखनऊ गये थे, मैंने आपसे क्या कहा था ! बगावत होने वाली है। आज जब कि दिल्ली पर हमारा कब्जा है। सारे मुल्क में चारों तरफ रियाश्रा और सिपाही बागी हो गए हैं, तो हम अंग्रेजों की मदद करें। कहीं ऐसा न हो कि हमारे ही भाई हम पर ही गोली चलाएँ। बाबा बलवन्त भट्ट से पूछिए। तात्या टोपिये से पूछिए ! इन सबके मन पर आपके इस रुख से क्या गुजर रही है। मै आपके मुँह लगा हूँ, इसलिये मैंने इतनी सारी बातें आपसे कह दीं।"

"अजीमुल्ला, रुको...

"आप गौर कीजिए। मैं चलता हूँ।"

"ठहरो, तुम क्या सोचते हो ! खजाने और तोपखाने की रक्षा करने का वचन हम दे चुके हैं।"

"इससे क्या ! अंग्रेजों ने पचीसों मरतबे हम लोगों को दिए वचन भंग किये हैं। आप तो पेशवा खानदान के आफताब हैं। इस समय अंग्रेजों को यहाँ से खदेड़कर आप पूरे सूबे पर अपनी हुकूमत कायम कर सकते हैं।"

अजीमुल्ला अपनी बात कहकर चला गया।

नाना साहब की आँखों आगे एक नया ही नक्शा झूल गया। अजीमुल्ला की बातों से उनकी आँखों में एक नयी दृष्टि आयी। अब तक का अपना अतीत और अब तक की तमाम घटनाओं का विश्लेषण इस दृष्टि से करने पर वह चौंके।

"अजीमुल्ला ठीक कहता है।"—अपने आप उनके होंठ बुदबुदाए।

अंग्रेज उन पर विश्वास करते हैं। इसलिए कि आज वे संकट में हैं। शत्रुको भी शरण आने पर सहायता दी जाती है, पर हर बार पृथ्वीराज की तरह उदारता दिखलाने से देश को परतंत्र बना देना पड़ता है। आज तो समय का तकाजा कुछ और है।

नाना साहब के मन में उथल-पुथल मच गई।

❀

तात्या टोपे एकदम गंभीर था। नाना साहब की सारी बातें सुनने के बाद कठोर स्वर में बोला—"अजीमुल्ला ने ठीक कहा है। यह तोपखाना और

खजाना जो आज हमारी ही बदौलत अंग्रेजों के पास खड़ा है, उसी की हिफाजत हम उनके लिए कर रहे हैं, ताकि उनकी हुकूमत होने पर इसी से वे हमें फिर गुलाम बना सकें !"

"तो मैं क्या करूँ ? तुम्हारी क्या राय है ?"

"मेरी राय ?"

"हाँ !"

"आप चुपचाप बैठिए। देखिए सिपाहियों का रुख किस ओर है। अगर सिपाही भड़क जायेंगे तो आप अकेले क्या करेंगे !"

"......"

"आपको उनका ही पक्ष लेना पड़ेगा। सारी दुनिया से अलग कौन रह सकता है !"

"हूँ। ठीक कहते हो !"

"आप जानते हैं। सारे सिपाही क्या सोच रहे हैं ?"

"क्या ?"

"वे आपको इस पूरे सूबे का पेशवा बनाना चाहते हैं। अंग्रेजों का आगा कर वे इतने वफादार तो हैं। इस फिरंगी कौम की तरह गद्दार नहीं।"

"लेकिन मैं खजाना तोपखाना लूटने या हमला करने नहीं जाऊँगा !

"ठीक है। हम भी यही चाहते हैं। जिस दिन सिपाही बगावत करेंगे उस दिन खुद आपके सिपाही जो खजाने और तोपखाने की हिफाजत कर रहे हैं, उस दिन बागियों से मिल जाँयगे। आपका अंग्रेजों के लिए इसको बचाना हो, तो बचा लीजियेगा !"

"मैं अकेला क्या कर सकता हूँ।"

"इससे आप हवा का रुख समझ लीजिए। नाना साहब, हमारी भलाई इसी में है कि हम कौम का, मुल्क का साथ दें"

"......"

"बाहर हवा की रफ्तार देखिए। आपको कुछ नहीं करना पड़ेगा। जब यही हमारे वफादार सिपाही फिरंगियों को मारकर आपको इस सूबे का राजा बनायेंगे,

तब तो आपको अपनी प्रजाका ख्याल रखना पड़ेगा। नाना साहब, अब अंग्रेजी हुकूमत के दिन लौट गए!"

"तुमने अपने बारे में क्या सोचा?"

"मैं अपने बारे में क्या सोचूँगा! जहाँ सारे सिपाही वहाँ सरदार। मैं तो देश का गुलाम हूँ।"

"......"

नाना साहब चुप हो गए। इस दुधारे रास्ते पर वह अपने पथ पर विचार करने लगे।

*

अमृतसर से वापिस आए नौ नंबर रिसाला के घुड़सवार सिपाहियों की खबर बात की बात में स्यालकोट की फौजी छावनी में फैल गई।

"बगावत हो गई!"

"हाँ, दिल्ली में बादशाह की हुकूमत हो गई है।"

"इतना ही नहीं, तमाम सिपाहियों के हथियार भी छीने जा रहे हैं। उन्हें बरखास्त किया जा रहा है!"

"क्या हम लोगों के साथ भी यही होगा?"

"जरूर!"

"इसमें संदेह की गुँजाइश नहीं। दिल्ली की तरफ जो गोरी सेना जा रही है, वह अमृतसर पहुँच गई है। हम लोगों के भी हथियार जबरदस्ती छिन जाँयगे, इसमें संदेह नहीं!"

"हम लोगों ने क्या किया है?"

"करने न करने का प्रश्न नहीं। बड़ी बात यही है कि हम लोग क्रिस्तान नहीं हो सकते!"

"वह तो है।"

"बस तो फिर! बर्खास्त!"

इन सब बातों से सिपाहियों में एक अजीब सी सनसनी मच गई। रात भर छावनी में हलचल रही। सिपाहियों की उत्तेजना और शंका बढ़ती गई। सहसा

रात को खबर फैली कि एक बहुत जरूरी मशविरा होने वाली है। इस खबर को पाकर सब सिपाही एक जगह इकट्ठे हुए।

एक बूढ़ा मुसलमान उठ खड़ा हुआ। बोला—"अजीजो, एक बहुत जरूरी काम से मैंने आप लोगों को चुपके से यहाँ बुलाया है। बात यह है कि दिल्ली के बादशाह सलामत का एक खत आया है।"

"बादशाह बहादुर जफर का?"

"हाँ, अल्ला उम्रदराज करे। उन्होंने अपने खत में तमाम सिपाहियों को अपनी मदद के लिए दिल्ली बुलाया है। अजीजो, यह वक्त खामोश बैठने का नहीं है। आप लोगों को मैं बादशाह सलामत का खत सुनाए देता हूँ। आप लोग देख सकते हैं।"

बादशाह का खत पढ़कर सुनाया गया। बादशाह ने देश और धर्म के नाम पर तमाम सिपाहियों को दिल्ली आने लिखा था। पत्र बड़ी ही ओजस्वी शैली में लिखा था। बूढ़े ने पत्र पढ़कर सिपाहियों की ओर बढ़ा दिया।

हरेक सिपाही ने उस पत्र को चूमा, माथे लगाया और पढ़कर आगे बढ़ा दिया।

"अब आप लोग जो ठीक समझें, करें।"

बूढ़ा बैठ गया। उसके बैठने के बाद ही फुसफुसाहटें शुरू हो गईं। सरदार तेजा सिंह का मकान ही स्यालकोट में किले का काम देता था। कुछ अंग्रेज आफीसर वहीं रहते थे। जलखाना खजाना और तोपखाना भी था। तमाम सिपाहियों ने मिलकर बगावत की योजना बनायी।

कायदा था। रोज सबेरे तोप गरजती। इस आवाज के तत्काल बाद ही तमाम सिपाही कवायद के लिए परेड के मैदान जा पहुँचते। उस दिन इस आवाज के उठने के पहिले ही सिपाही तैयार हो गये। अनायास आकाश गूँज उठा।

"दीन दीन दीन दीन!!!"

सिपाहियों का झुंड बागी हो गया और अंग्रेजों का खात्मा करने आगे बढ़ा। इस आवाज के उठते ही सारा नगर घबड़ा गया। नींद में बेखबर अंग्रेजों को उनके नौकरों ने उठाकर सावधान किया। भागदौड़ मच गई। सभी अंग्रेज

अपनी-अपनी जान बचाने के फेर में पड़कर किले की ओर भागे, जहाँ कुछ गोरे सैनिक थे; जहाँ उनकी रक्षा के लिए तोपखाना था।

"दीन! दीन!!"

विद्रोही सिपाहियों का झुंड बढ़ता आ रहा था।

"मारो!"

"धाँय!"

गोली छूटी। एक अंग्रेज को लगी। वह किले की ओर अपनी स्त्री के साथ भाग रहा था। गोली लगते ही गिर गया। एक सिपाही ने अंग्रेज स्त्री की ओर निशाना साधा। दूसरे सिपाही ने उसकी बंदूक झुका दी।

"ऐ। अंग्रेजों को मारो। औरतों बच्चों ने क्या बिगाड़ा है!"

सहसा सिपाहियों में शोर मचा।

पकड़ो, मारो, भागो!

सिपाहियों का बूढ़ा सेनाध्यक्ष भागा जा रहा था। गोली छूटी। पीठ में लगी। गिर गया उसके साथ दो तीन अंग्रेज और थे। वे बूढ़े सेनाध्यक्ष को उठाकर भाग गये।

विद्रोही सिपाही तेजी के साथ बढ़ रहे थे। अंग्रेजों को जहाँ जगह मिलती, उसी ओर भागते। एक कप्तान, एक डाक्टर, उसकी बेटी एक चौकीदार के घर में छिप गए। चौकीदार ने उन तीनों को अपने यहाँ छुपा लिया और किसी को इसकी खबर भी न लगने दी।

"वह गई। मारो!"

"अरे! औरत को क्यों मारते हो?"

एक पठान न माना। उसने बंदूक साधी। चिल्ला कर बोला—"पादरी की औरत है। इसी ने हमारे बच्चों को स्कूल में पढ़ने की लालच देकर क्रिस्तान बनाना चाहा था।"—और उसने बंदूक दाग दी। गोली निशाने पर बैठी। वह स्त्री ढेर हो गई।

सिपाहियों की संख्या बढ़ती गई। किले की ओर जाने वाला रास्ता बंद हो गया। बचे हुए अंग्रेज शहर से भागे। दोपहर की कड़ी धूप में वे गिरते पड़ते गुजरानवाला की राह गये।

सिपाहियों के कदम बढ़ते गये ।

"दीन ! दीन !!"

जेलखाने पर हमला कर तमाम कैदियों को छुड़ा लिया गया । खजाना लूट लिया गया । कचहरी और सरकारी दफ्तरों में आग लगा दी गई । ईसाई और अंग्रेजों का कत्ले-आम शुरू हो गया । शहर में गुंडों की बन आयी । बाजार लुटने लगा । लोगों के घर दिन दहाड़े लुटने लगे । चारों ओर अराजकता का साम्राज्य फैल गया । सारे शहर में हाहाकार मच गया । स्त्रियों और बच्चों को भी गुंडों ने धन और आभूषण की लालच में बर्बाद करना शुरू कर दिया ।

सारा शहर तबाही से डूब गया।

तोपखाने, खजाने को लूट सिपाहियों ने किला फतह करने में अपनी शक्ति का व्यर्थ व्यय न कर सीधे दिल्ली जाने की बात तय की । शहर को तबाह कर, अंग्रेजों का खात्मा कर बागियों की भीड़ तोपखाने और खजाने के साथ दिल्ली जाने के इरादे से शहर से बाहर चली । बलवाईयों को शहर से जाते देख, किले में छुपे अंग्रेजों ने संतोष की साँस ली । प्राण तो बचे ।

गुजरानवाला की राह, भागते अंग्रेजों की ग्रामीणों ने मदद की उनके भोजन रहने के साथ साथ रुपयों से भी मदद की ताकि वे सब अंग्रेज सकुशल गुजरान वाला पहुँच सकें । विद्रोही सिपाहियों का आतंक इन भगोड़े अंग्रेजों के मन में बुरी तरह समाया हुआ था । अतएव एक गाँव के लोगों ने अपने पहरे में इन अंग्रेजों को दूसरे गाँव भेजा ।

स्यालकोट के सिपाही जयघोष करते हुए दिल्ली के रास्ते बढ़े जा रहे थे ।

❀

नौशेरा में मरदान से आए एक सिपाही ने कहा—"अब अंग्रेजों को हम पर विश्वास नहीं रह गया है ।"

"कैसे पता ?"

"पेशावर से एक अंग्रेज अफ़सर हम लोगों के हथियार लेने आ रहा है ।"

"......"

"कर्नल हेनरी स्पेटिसवुड !"

"अरे ! ये तो बड़े सज्जन आदमी हैं। हम हिन्दोस्तानी सिपाहियों का बड़ा विश्वास करते है। बिना किसी उपद्रव के वे हम लोगों के हथियार लेकर अन्याय नहीं कर सकते !"

"हो सकता है !"—सिपाही धीरे से बोला—"पर कुछ न कुछ गड़बड़ जरूर है। पेशावर, मरदान और यहाँ के कुछ सिपाहियों के बीच कुछ न कुछ जरूर पक रहा है। मुझे तो सन्देह है, यहाँ भी बगावत हो सकती है।"

सिपाही की यह बात एक मुँह से दूसरे मुँह गई और इस तरह सारी छावनी भर में फैल गई। पेशावर के नृशंस हत्याकांड का समाचार, वहाँ के सिपाहियों को निरस्त्र करने की अनेक घटनाएँ यहाँ तक फैल चुकी थीं। अतः अब हथियार लिये जाने की बात सुनकर सिपाही सेना के हिन्दोस्तानी अफसर भी घबराये। जीवन भर जिन्होंने अपना पसीना और खून अंग्रेजी हुकूमत के लिए बहाया, अब यह पुरस्कार पायेंगे ?

रात भर सिपाहियों, अफसरों में मशविरा होता रहा। इस मशविरे में अधिकांश सिपाहियों ने बगावत की ही योजना रखी। क्योंकि बहुतों के मन क्रोध और क्षोभ से भरे थे।

"हुँ। अंग्रेजों का दिल्ली में सफाया हो गया। अब रहा ही क्या !"

"सब तरफ बगावत फैल रही है। हम अकेले अंग्रेजों की मदद क्या कर सकते है।"

"सवाल इसका नहीं है। सवाल वफादारी का है। हम उस समय तक अंग्रेजों से नहीं बोलेंगे जब तक कि हमारे साथ अन्याय नहीं होगा !"

"उधर कर्नल निकल्सन अपनी पलटन के साथ बागियों को दबाते हुए दिल्ली तक जाने के इरादे में हैं। मैंने सुना है कि अपने तोपखाने और फौज के साथ फिलौर चल पड़े हैं !"

"इससे क्या ?"

"इससे क्या ! स्पेटिस साहब अगर हम लोगों के हथियार न भी लें तो निकल्सन के आने पर वह काम होगा ही। वो बहुत खरा अफसर है।"

"होगा, पर हमारी वफादारी में कमजोरी का सुबूत देखा जायगा, तभी न हथियार लिये जायँगे।"

"ये सब नहीं होता !"

"ऐसे हथियार नहीं देंगे।"

सिपाहियों का मशविरा चलता रहा। यह तय हुआ कि सिपाही अपनी वर्दी और अपने हथियार इस तरह नहीं देंगे। अपने इस हक के लिए वे मरने को तैयार रहेंगे।

सवेरा होते ही कर्नल हेनरी स्पेटिसवुड अपनी गोरी पलटन के साथ छावनी आ पहुँचे। हिन्दोस्तानी अफसर एकदम तैयार बैठे थे। स्पेटिस के आते ही, उन्हें चारों ओर से घेर लिया।

स्पेटिसवुड से पूछा—"साहब, क्या हुक्म है ? हम लोग आपका ही इन्तजार कर रहे हैं।"

"मुझे तो आप लोगों के हथियार और वर्दी लेने का आर्डर हुआ है !"

"साहब, हम लोगों ने जिन्दगी भर आपकी सेवा की है। अभी हम लोगों ने आप लोगों के खिलाफ एक भी कदम नहीं उठाया और न ही, हम लोग ऐसा करेंगे। शपथपूर्वक हम लोग आपके लिए अब भी जान देने के लिए तैयार हैं।"

"मैं जानता हूँ भाई !"

"फिर साब, ऐसा हुक्म क्यों ? हम लोगों का मन बहुत दुःखी है !"

"मैं क्या करूँ ? ऊपर से आर्डर जो है।"

"आप न मानें।"

"सैनिक के लिए अपने आफीसर का आर्डर न मानना शोभा देता है ?"

"अच्छा साब ! आप अपने आर्डर का पालन करिये। हम लोग अपने कर्तव्य का पालन करेंगे। हम लोग हथियार और वर्दी देना अपने आप पर अविश्वास का कलंक मानते हैं और कोई भी सिपाही इस कलंक को अपने माथे लगाकर जीनेवाला नहीं है ! इससे बेहतर है मौत।"

"......"

"हम सब लोग अपने ही हथियारों से अपनी-अपनी हत्या कर लेंगे। हम लोगों की लाशों से आप वर्दी उतार लीजियेगा। हथियार ले जाइयेगा। एक भी सिपाही कभी बागी नहीं होगा !"

हिन्दोस्तानी अफसरों की यह बात सुनकर स्पेटिसवुड बड़े धर्म-संकट में

पड़े। चुपचाप वह आफीसर—बंगले चले गये। उस दिन सिपाहियों पर कोई कार्रवाई न की गई। सनसनी पहिले से कहीं अधिक बढ़ गई। क्षण-क्षण सिपाहियों की चिन्ता बढ़ती गई। शाम हो गई, पर परड मैदान में जाने का कोई आर्डर न आया।

सिपाही कुछ भी न समझ पा रहे थे कि उनके साथ क्या होने वाला है!

ॐ

"साहब मर गये!"

"......"

"साहब मर गये!"

"कैसे?"

"उन्होंने खुद गोली मारकर हत्या कर ली!"

कर्नल हेनरी स्पेटिसवुड ने अपने बँगले में पिस्तौल मारकर आत्महत्या कर ली। यह समाचर आग की तरह सारी छावनी में फैल गया। सिपाहियों की बड़ी भीड़ स्पेटिसवुड के बँगले पर गई। हर एक को यह समझते देर न लगी कि कर्नल स्पेटिस ने आत्म हत्या क्यों की है? सिपाहियों पर पूरा विश्वास था। तमाम सिपाहियों को मरने के लिए तैयार देख उनको साहस न हुआ कि उन्हें निरस्त्र कर सकें, साथ ही अपने आफीसर की आज्ञा का उल्लघंन सैनिक अनुशासन की मर्यादा के विपरीत! इस धर्म-संकट में पड़कर उनको आत्महत्या कर लेना ही एक रास्ता दीख पड़ा है।

इस दृश्य से सिपाहियों के मन में बड़ी उत्तेजना फैली।

सब क्रोधित हो गये।

सहसा किले की दीवार पर पहरा देते हुए सन्तरियों का समाचार लेकर कुछ लोग आए कि अंग्रेजी पलटन आ रही है। अंग्रेजी सेना के आने का समाचार पाकर सिपाही खामोश न बैठे।

"भागो, भागो!"

"......"

"चलो!"

सिपाहियों की भीड़ किले में घुसी। जो हथियार, बारूद जिसके हाथ लगा, लेकर भागे! किले का सब सामान लेकर सिपाहियों की टुकड़ी भाग चली। तब तक निकल्सन की सेना के घुड़सवार नजदीक आ गये थे।

धाँय! धाँय!!

धुड़म्!!

रास्ता रोक लिया गया गया। हिन्दोस्तानी सिपाहियों ने पीछे कदम न रखे। अंग्रेजी पलटन के घुड़सवारों से भिड़ गये।

❀

बड़ी देर तक दोनों ओर से लड़ाई चलती रही। दोनों पक्ष के सैनिक मारे गये। अंग्रेजी पलटन की एक टुकड़ी और आ धमकी। इस टुकड़ी के आते ही तमाम बचे सिपाही भाग खड़े हुए। बहुत से कैद भी किये गए।

मरदान, नौशेरा, पेशावर के बचे सैनिकों के हथियार ले लिए गए। वर्दियाँ छीन ली गई और जिनके विरुद्ध गम्भीर आरोप थे; वे तोपों के मुँह पर बाँधकर उड़ा दिये गये। निकल्सन की क्रूरता खुलकर खेल रही थी। कदम-कदम पर दिल्ली और देश के अन्यान्य भागों से मिलनेवाले उत्तेजक समाचारों के कारण वह अपने को संयम में न रख पा रहे थे।

❀

परास्त सिपाही कोहाट की ओर भागे जा रहे थे। अब उनके पास इतने साधन इतनी शक्ति न थी फिर मुकाबला कर सकें। कोहाट में इन सिपाहियों के आते ही सनसनी मच गई। सिपाहियों की हिम्मत टूट रही थी।

"क्यों न हम राजा साहब के पास चलें!"

"......"

"शायद वे हमारी मदद कर सकें!"

"हाँ, हाँ ठीक है। कोशिश करना चाहिए! इस तरह भूखे प्यासे हम लोग कब तक मरते रहेंगे!"

सिपाहियों का झुण्ड कोहाट राजा आरबुन्द की शरण गया। नेता ने अपनी फरियाद कही। राजा से आश्रय की प्रार्थना की। सहायता माँगी।

"राजा साहब, आप लोगों की कुछ मदद नहीं कर सकते हैं।—मन्त्री ने कहा—"वे इस संबंध में असमर्थ हैं!"

सिपाहियों को निराशा हुई। बहुतों को आशा थी फिर अगर राजा आर-बुन्द उनकी बात मान लें, तो पहाड़ी कौमों की सहायता से पश्चिमी-उत्तरप्रदेश की सीमा से अंग्रेजों एकदम खदेड़ा जा सकता है। विधि को कुछ और ही मंजूर था।

❀

"यह हमारे हित में अच्छा न होगा!"—सूबेदार भवानी सिंह ने चिल्लाकर कहा—"अंग्रेजों की सेना चारों तरफ से बढ़ी चली आ रही है।"

"दिल्ली पर हमारा अधिकार है! सारे देश में बगावत है!"

"इससे क्या! हम विजयी नहीं हो सकते!"

"चुप रहो!"

उत्तेजित सिपाही सूबेदार भवानी सिंह पर टूट पड़े। देखते देखते बूढ़े सूबेदार के टुकड़े-टुकड़े कर दिये गये। उन्मत्त सिपाहियों ने बगावत का झण्डा फहरा दिया। बिगुल बजा और तमाम हिन्दोस्तानी पलटन ने बगावत कर दी।

"दीन! दीन!"

"हर हर महादेव!!"

सिपाही बिखर गये। सारा कानपुर सिपाहियों की आवाज से भर गया। सेनापति अपने साथियों के साथ आत्म रक्षा के प्रयत्न में लग गये। खजाने और तोपखाने की रक्षा का भार नानासाहब पर सौंपकर वे निश्चिन्त थे। फिर भी मन में संशय था। अगर नानासाहब लड़े भी और विजयी न हुए, तो...

सिपाहियों की बड़ी भीड़ बढ़ी जा रही थी। देखते देखते जेलखाने का फाटक तोड़ दिया गया। तमाम कैदी मुक्त हो गये। बागियों के साथ वे भी आ मिले। रास्ते भर लूटमार हो चली। घरों में आग लगाई जाने लगी। औरतों बच्चों की हत्या शुरू हो गई। लूटमार करता हुआ बागियों का दल खजाने की ओर बढ़ा।

विद्रोहियों की भीड़ में अजीमुल्ला भी वेश बदले हुए चल रहा था।

सहसा वह चौंक पड़ा।पैंसठ और पैंतीस नम्बर के रिसाले के आदमी नहीं हैं!

"पैंसठ और पैंतीस क्या हुए?"

"वे तो छावनी में पड़े हैं!"

"शायद वे लोग बागी नहीं हुए! अच्छा, सुनो, एक काम करो।"—अजीमुल्ला ने एक सिपाही के कान में कुछ कहा। वह तुरन्त भीड़ से अलग हो, छावनी की ओर बढ़ गया। दौड़ता गया। बागियों का शोरोगुल पीछे छूट गया।

छावनी में पैंसठ नम्बर के तमाम सिपाही खाने पीने में लगे थे।

"सुनो भाइयो! रिसाले के तमाम अजीजों ने आपको याद किया है?"

"क्यों?"

"बगावत हो गई।"

"......"

"सब लोगों ने खजाने को घेर लिया है। उन लोगों का कहना है जब तक हमारी सेना वाले भाई आकर अपने हिस्से का रुपया नहीं लेंगे, तब तक हम खजाना नहो तोड़ेंगे।"

"हर हर महादेव!"

"दीन! दीन!!"

सभी सिपाही भहराकर भागे और नवाबगंज की ओर दौड़ गए। इन लोगों के आ जाने से बागियों की ताकत और बढ़ गई। खजाना घेर लिया गया। खजाने पर तैनात सिपाहियों ने बन्दूकों में कारतूस भरे!

"खबरदार! हुक्म नानासाहब का!"—तात्या टोपे की आवाज गूँज गई—"कोई भी सिपाही हमला नहीं करेगा। नाना साहब भी अंग्रेजों के खिलाफ हो गये हैं?"

"नाना साहब की जय।"

"नाना साहब की जय!"

"पेशवा की जय!"

"पेशवा नाना साहब की जय।"

खजाने पर बागियों का कब्जा हो गया। सारा खजाना गाड़ियों पर लाद

लिया गया ! आगे वाले सूबेदार ने तोप के ऊपर खड़े होकर विद्रोहियों को शान्त करने के बाद कहा—"अब हम लोगों को बादशाह सलामत की मदद के लिए दिल्ली चलना चाहिए।"

"बादशाह सलामत।"

"जिन्दा बाद।"

"मुगलिया हुकूमत।"

"जिन्दाबाद!"

अजीमुल्ला खाँ ने तोप के टोंटे पर खड़े सिपाही को ठेल दिया। स्वयं खड़ा हुआ। बोला—"नहीं, हम लोग दिल्ली नहीं जाँयगे। नाना साहब हमारे पेशवा है। उत्तर भारत में हम अपनी हुकूमत मजबूत करने के बाद अंग्रेजों का एकदम खात्मा करेंगे तब दिल्ली बादशाह से हम सुलह करेंगे।"

"......"

"इस तरह दिल्ली जाने से कोई फायदा नहीं!"

सिपाहियों में आपस में विचार हुआ। अजीमुल्ला की बात सबने स्वीकार कर ली। तमाम सिपाही लौट पड़े। तमाम सिपाही शोर करते हुए जोबाला भवन आए। अददअली और सूबेदार टीकासिंह नाना साहब के पास दौड़े।

"नाना साहब, तमाम बागी सिपाही आ गये।"

नाना साहब भवन की दालान में आए।

"नाना साहब, जिन्दाबाद!"

नाना साहब ने देखा—हजारों सिपाही उनके सम्मान में अपने हथियार उठाकर स्वागत कर रहे हैं। अजीमुल्ला घोड़े से उतर नाना साहब के पास आया। अदब से सिर झुकाकर बोला—"नाना साहब, आपकी क्या इच्छा है?"

"इस वक्त मैं सिपाहियों के हाथ हूँ। जैसा वे कहें!"

"हम सब आपको अपना राजा मानते हैं।

नाना साहब का मन प्रसन्नता से फूला न समाया—"मुझे मंजूर है।"

"आप ऐलान कीजिये।"

नाना साहब ने सिपाहियों की ओर देखा, कहा—"अजीजो, आप लोगों की

बात मैं मंजूर करता हूँ। ईश्वर को साक्षी देकर, मैं पेशवा धुँधुँपन्त नाना साहब प्रतिज्ञा करता हूँ कि अंग्रेजों को इस देश से निकालकर रहूँगा।"

"नाना साहब की जय।"

"नाना साहब की जय!"

"नाना साहब दिल्ली चलिए।"

"हाँ, नाना साहब दिल्ली भी जाँयगे।"—अजीमुल्ला खाँ ने आगे बढ़कर कहा—"पहिले हमें अंग्रेजों को यहाँ रोकना होगा। कर्नल नील, हावेल, निकल्सन दिल्ली दबाने बढ़ रहे हैं। अपनी नींव पुख्ता करने के बाद हम आगे बढ़ेंगे। इस सूबे में एक मजबूत हुकूमत कायम कर लेने के बाद हम कहीं भी फतह हासिल कर सकते हैं।"

"......"

"नाना साहब, अब आपने तृत्त्व कीजिए। नावों का पुल तोड़कर हमें अंग्रेजों के आने का रास्ता बन्दकर देना चाहिए।"

नाना साहब भवन से वीर वेश में बाहर निकले। घोड़े पर बैठे। छत्र तना। झंडा फहराया। जैसे ही नाना साहब का घोड़ा बढ़ा, सहस्र-सहस्र सिपाहियों के कंठ फूटे। जयघोष से आकाश गूँज गया।

नावों का पुल तोड़ दिया गया।

※

बम फटा।

सिपाही चौंक पड़ा। देखा, अस्पताल में आश्रय लिये अंग्रेजों की दीवार से तोप चल रही थी।

"यह क्या है?"

"तोप चल रही है।"

"अरे! हम लोगों पर!"

फिर धड़ाका हुआ। चार सिपाहियों के शरीर के टुकड़े आसमान में उड़े, उड़कर गिर-गिर गये। पैंतीस नम्बर के सिपाहियों में भगदड़ मच गई। यह कैसा अन्याय है!

तोपें आग उगल रही थीं। सभी सैनिक घबड़ा गए। यह कैसी विचित्र बात है। जिस अंग्रेजी सेना के वे सेवक हैं, वही उन पर गोलाबारी कर रही है।

"क्या बात है ?"

"शायद अंग्रेजों को शक हो गया है, हम बागी हो गये हैं।"

"नहीं, हम लोग बागी नहीं होंगे। हम लोग नमकहराम नहीं है।"

"फिर यह गोलाबारी कैसी ?"

"चलो पूछें।"

कुछ सिपाही तोपों की मार से गिरते पड़ते अस्पताल के चारों ओर सुरक्षा के लिए उठाई गई दीवार के पास गये। चिल्लाए।

"साहब, साहब !"

"......"

"गोला बारी रोको।"

"हम लोग आपके साथ है।"

"मुँह क्या देखता है, चढ़ जा ऊपर !"

सिपाही के ऊपर सिपाही खड़ा होकर दीवार पर गया। उसने चिल्लाकर यही कहा। दीवार के नीचे खड़ा अंग्रेज उसे गोली मारकर ढेर करने ही वाला था कि सेनापति ने आदेश दिया आने दो।

सिपाही कूदा। दौड़कर सेना पति के पास आया।

दोनों हाथ उठाकर बोला—" साहब, साहब, आप यह क्या कर रहें हैं !"

"तुम लोग बागी हो।"

"नहीं साहब !"

"तमाम फौज ने बगावत कर दी है।"

"नहीं साब ! पूरी पैंतीस नंम्बर की पलटन आपके साथ है। आप लोगों की गोलाबारी से हम लोगों के कई साथी मर गये, फिर भी हम आपके साथ हैं।"

सेनापति ह्वीलर ने आश्चर्य से अपने सामने खड़े सिपाही की ओर देखा, तभी एक अंग्रेज उनके कान में कुछ फुसफुसा गया। सेनापति बोले—" तुम लोगों की बात का क्या भरोसा ?"

"विश्वास करिये साहब !"

"नो !"—एक अंग्रेज बोला—" हम लोग मरते दम लड़ेंगे । जिसको हमारी मदद के लिए आना हो, वह इसी गोलाबारी में आए !"

तोप के मुँह फिर खुल गये । पैंतीस नम्बर की पलटन तितर-बितर हो गई । कुछ खीझकर बागियों की ओर भाग गये । कुछ अपनी जान हथेली पर रखकर अस्पताल में कूद आए । ऐसे लोगों की संख्या कम थी । अतएव अंग्रेजों ने उन्हें अपने साथ कर लिया । कुछ काम ही करेंगे । अगर कुछ शरारत करेंगे तो पल भर में सबको आसानी से साफ भी किया जा सकता है !

❀

गुप्तचर ने सेनापति निकल्सन को सलाम किया । तंबू से बाहर निकल सेनापति उसके साथ एकान्त में सोयाट तट पर रुके । सोयाट मंथर गति से बह रही थी । रात्रि की निस्तब्धता चारों ओर बिखरी पड़ी थी ।

"हुँ । अब कहो !"

"साहब, पूरे देश की हालत खराब है !"

"यह तो मैं सौ बार सुन चुका हूँ । बार-बार रोने से क्या लाभ ? हमें अब काम करना है, काम । समझे ?"

"......"

"मैं यहाँ का समाचार जानना चाहता हूँ !

"वही तो बताने आया !"

"वही कहो, फालतू एक बात नहीं सुनना माँगता !"

"आजम खाँ चौवन नम्बर की पलटन को भड़का रहा है !"

"कैसे ?"

"कल रात वह गया था और आज भी इस वक्त वहाँ है । उम्मीद है साहब, कहीं ये रिसाला बागी हो जाय !"

"मेरी सब पर नजर है ।"

"पचपन नम्बर की फौज भागी है । उसका पीछा हमारे आदमी कर रहे हैं !"

"बहुत ठीक...और कोई नई बात ?"

"जालन्धर, लुधियाना की भी हाल गड़बड़ है !"

"कोई ज्यादा गड़बड़ तो नहीं ?"

"न !"

"खैर, मैं एक-एक को ठीक करूँगा।"—निकल्सन ने अपनी मुट्ठियाँ कस-कर कहा—"एक एक को ठीक करूँगा। नाभा के महाराज को मेरा पत्र गया ?"

"जी हाँ।"

"अच्छा ! तुम जा सकते हो !"

गुप्तचर के जाने के बाद सेनापति निकल्सन अपने खेमे लौट आए। मन बड़ा बेचैन था। कानपुर, बारकपुर, झाँसी, मथुरा, आगरा, नीमच, मेरठ, चारों ओर जैसे सारे हिन्दोस्तान में अंग्रेजों के खिलाफ आग लग गई है। दिल्ली के कानपुर के अंग्रेजों का खून, एक-एक घटना की खबर आ चुकी थी। पता नहीं, लार्ड कैनिंग क्या कर रहे हैं !

चिन्तामग्न निकल्सन ने एक लम्बी साँस ली।

पौ फटते ही उठे। अपनी सेना को तैयार किया। चौवन नंबर की हिन्दोस्तानी पलटन को घेरा।

"फाल इन वन !"

परेड के मैदान में सबको खड़ाकर चौवन नंबर की हिन्दोस्तानी पलटन की वर्दी और हथियार छीन लिए। आवाज दी किले की पलटन को भी निरस्त्र कर दिया जाय।

अजाम खाँ भाग गया। सेनापति कोशिश करने पर भी न पकड़ सके। केवल यही जान सके कि अफगानिस्तान के अमीर दोस्त मुहम्मद की तरफ से वह सिपाहियों में बगावत फैलाने आया था।

❀

मेजर लेक के चेहरे पर चिन्ता की रेखाएँ खिंच गईं। मेरठ और दिल्ली कांड के समय से ही अगर वह जालन्धर होते, तो अब तक स्थिति बहुत सँभल गई होती, पर इस समय क्या हो ? सारे शहर की अजीब हालत है। सिपाहियों में बेचैनी है। रात-रात बैरकों में, छावनी में झुंड के झुंड सिपाही इकट्ठे होते हैं।

"यस मिस्टर रिक्सटन, क्या किया जाय ?"

"जैसा आप समझें !"

कमिश्नर थर्नटन बोले—"जल्दीबाजी से काम नहीं होगा। हमें शान्ति से रहना चाहिए।"

"मैं सोच रहा हूँ, हथियार ले लिये जाँय।"

"तब तो गजब ही हो जायगा।"—ब्रिगेडियर जान्स्टन बोले—"फिल्लौर की हालत होगी।"

रिक्सटन ने कहा—"मुझे गुप्त रूप से एक बात का पता लगा है !"

"क्या ?"

"हमारे यहाँ के सिपाही बगावत करने के इरादे में हैं। ऐसा पता लगा है कि ये लोग फिल्लौर और होशियारपुर की पलटन को अपने साथकर दिल्ली बढ़ने वाले हैं।"

"यह सब खतरनाक स्थिति है।"

"लेकिन..."

सहसा साहब का चपरासी दौड़ा आया। चिल्लाकर बोला—"साहब गदर हो गया। साहब बँगले में आग लग गई। भागिए !"

सभी आफीसर हड़बड़ाकर बाहर निकले। रात्रि का सन्नाटा भयानक शोर के साथ भंग हो गया। शोर मचाते, चिल्लाते-चीखते लोग भागने लगे। मालूम हो रहा था, जैसे शहर में महाप्रलय आ गया है। देखते-देखते बँगले आग की लपटों में धधकने लगे।

"दीन ! दीन !! दीन !!!"

सारे शहर में भगदड़ मची। अंग्रेज-स्त्री-बच्चे अपने-अपने घरों से जान लेकर गिरते-पड़ते भागे।

धाँ ! धाँ !!

गोलियों की आवाजें आने लगीं। विप्लव हो गया।

अंग्रेज आफीसरों ने हिम्मत न हारी। कुछ सिपाहियों ने साथ दिया। गोरी पलटन भी आ गई।

"मिस्टर जानस्टन आप सिपाहियों को रोकिए, मैं इस ओर देखता हूँ !"

"......"

ब्रिगेडियर जान्स्टन अपनी टुकड़ी लेकर शहर में धँसे। पता लगा, सिपाही सतलज के पुल की तरफ भाग गये है। बिना रसद लिए उनका पीछा करना उचित न समझ वह रसद की प्रतीक्षा करने लगे।

❀

मेजरलेक के आदेशानुसार अंग्रेज आफीसर अपनी सैनिक टुकड़ी और दो तोपों के साथ लगातार भागता आ रहा था। सैनिक श्रम से चूर हो गये थे, फिर भी दौड़ जारी थी। शीघ्रातिशीघ्र फिल्लौर पहुँचकर सिपाहियों को रोकने और अंग्रेजों की रक्षा के लिए यह सैनिक टुकड़ी भागी जा रही थी।

रात हो गई तो सब फिल्लौर पहुँचे।

सर्वत्र शान्ति थी। कहीं कुछ न था।

क्या सब साफ हो गया ?

रात के अँधेरे में, सैनिक टुकड़ी फिल्लौर का किलानुमा घर न पा सकी। सब मैदान में पड़े रहे। सबेरे पता चला कि किले में सब अंग्रेज स्त्री बच्चे सुरक्षित हैं और बागी सिपाही चार मील दूर सतलज पार कर रहे हैं।

❀

कमिश्नर थर्नटन ने जरा भी देर न की। अपने घोड़े पर निजी सहायकों के साथ वे तेजी से सतलज की ओर दौड़े। तुरन्त नावों का पुल तुड़वा दिया। बागी सिपाही भागे और दूसरे स्थान से नदी पारकर लुधियाना की ओर भाग गये।

थर्नटन ने रिक्स्टन को सूचना दी।

समय ही कहाँ था!

"लुधियाना लूटते हुए सब सिपाही दिल्ली की ओर बढ़ जाँयगे।"

"यही मुझे भय है!"

"लेकिन इनमें से कोई कामयाब नहीं होगा। भेड़ियों की तरह सबने गदर की है। न कोई नेता है। न कोई बुद्धिमान आदमी। जब सेना की व्यवस्था ही नहीं है, तो ये लोग सिवाय लूटमार के और क्या कर सकते हैं।"

"यही तो हम पर भगवान की दया है, वरना हम सब आज यहाँ न होते!

ये हिन्दोस्तानी बहादुर हैं। बहुत बहादुर हैं, मगर ये लोग ठीक ढंग से संगठित होना नहीं जाते !"

❀

चार नम्बर सिक्ख सेना के लेफ्टिनेंट विलियम्स तेजी के साथ कुछ चुने सैनिकों को लेकर सतलज की ओर दौड़े।

बागी सिपाहियों के आने की खबर मिल गई थी। यह भी मालूम हो गया था कि कमिश्नर थर्नटन ने नावों का पुल तोड़ दिया है। बागी सिपाही पुल से चार मील दूर, जहाँ नदी की गति मन्द है, पार उतर रहे थे।

डिप्टी कमिश्नर नाभा के राजा के सिपाहियों और दो तोपों के साथ सतलज की ओर बढ़े।

रात हो गई थी।

ऊबड़-खाबड़ किनारे को रौंदती सैनिक टुकड़ी दौड़ रही थी।

"वो रहे।"

विलियम्स ने बागी सिपाहियों को देखा।

"मारो !"

अधिकांश सिपाही नदी पारकर आ गये थे।

"दीन-दीन !!"

"हर हर महादेव !"

"या इलाही !"

"वाह गुरु की फतह !!"

"धाँ, धाँ, धाँ ! धड़ धड़ धड़ धड़ !!!

सैनिक टुकड़ियाँ सामने आ डटीं। बागी सिपाहियों की बन्दूकों से गोलियों की बौछार शुरू हो गई और इधर अंग्रेजों की तरफ से तोपें गोले फेंकने लगीं। सिक्ख सेना तेजी से बागी सिपाहियों से भिड़ गई।

"अरे गद्दारो !"—एक सैनिक ने ललकार दी—"फिरंगियों का साथ छोड़ दो। हमारी तरफ आओ !"

"......"

सैनिक गिर गया। सिक्ख बहादुरी से लड़ रहे थे।

"मारो! मारो!!"

नदी पारकर और बागी सिपाही आ गये। सिपाहियों की संख्या बढ़ी। अब क्या था! दुगुने जोश से बागी आगे बढ़े। उनकी बन्दूकों की मार के आगे अंग्रेजी पक्ष की सेना के कदम उखड़े।

"मारो!"

"दीन! दीन!!"

"बजरंग बली की जै!"

इतनी तेजी से बागी एक साथ दौड़कर टूट पड़े कि अंग्रेजी पक्ष की सेना भाग खड़ी हुई। शत्रु की सेना को भागते देख बागियों की प्रसन्नता का ठिकाना न रहा। दुश्मन की तोपें हाथ लगीं। विजयोल्लास से भरे बागी लुधियाना घुसे।

❀

लुधियाना में लूटमार शुरू हो गई। काबुली, आस-पास के लुटेरे शहर पर टूट पड़े। शाल की कोठियाँ लुटने लगीं। व्यापारियों को कत्ल किया जाने लगा, ईसाई, अंग्रेज स्त्री बच्चों को काट डाला गया। सारे शहर में हाहाकार मच गया। अराजकता की आग सारे शहर में फैल गई।

"मारो मारो। इन अंग्रेजों को मारने से बहिश्त मिलेगी।"—एक मौलवी मुसलमानों की एक बड़ी भीड़ का नेतृत्व कर रहा था।

लुधियाना में बचे-खुचे अंग्रेज अपनी रक्षा न कर सके। सब मारे गये। लुधियाना में बागियों की हुकूमत फैल गई। नगरवासियों ने बहुत बड़ी संख्या में इस विद्रोह में भाग लिया।

तोपें चलीं।

सब दहले।

"कौन आ रहा है?"

दीन-दीन की आवाज से आनेवालों का पता लग गया। लुधियाना में एक बड़ी भीड़ ने बागी सिपाहियों का स्वागत किया। इनकी विजय का समाचार शहर

में पहले ही आ चुका था। दिल खोलकर सब एक दूसरे से मिले और फिर हजारों की भीड़ शहर की ओर धँसी।

जेलखाना टूटा।

खजान खुलकर लूटा गया।

तोपखाने पर कब्जा हो गया।

पूरा लुधियाना बागियों के कब्जे में आ गया। लुधियाना के किले में सब सिपाही इकट्ठा हुए। अब उनकी ताकत पहले से कहीं ज्यादा बढ़ गई थी। उनके हाथ खजाना और भारी तोपखाना था।

"अब हम लोगों को दिल्ली चलना चाहिए!"

"हाँ, हाँ!"

"बादशाह सलामत ने हम लोगों को बुलाया है!"

"हम सब चलने के लिए तैयार हैं!"

'ठहरो!"

"......"

"क्या है? हम कुछ नहीं सुनना चाहते!"

"हम लोगों को यहीं रहना चाहिए!"—एक सूबेदार ने चिल्लाकर कहा—"इस समय हमारी ताकत बहुत ज्यादा है। हम लोगों को अपनी हुकूमत यहीं जमा लेना चाहिए!"

"क्यों?"

"इसलिए कि अंग्रेजों को हम आगे बढ़ने से रोक सकें। इसी में हमारी जीत है। सब तरफ से मोर्चेबन्दी होना चाहिए। दिल्ली जाने से क्या होगा!"

"बादशाह सलामत ने बुलाया है!"

"यह पागलपन छोड़ दो। दिल्ली में हमारे जमा होने से फायदा क्या? हमें अंग्रेजों को चारों तरफ से रोकना चाहिए!"

"इसका दिमाग खराब है। मारो इसे!"

दो तीन सिपाहियों ने सूबेदार को ढकेल दिया। विजय की खुशी में सिपाही अपने आगे किसी की सुनते ही न थे!

"हम लोग दिल्ली चलेंगे!"

"हाँ, दिल्ली चलेंगे !!

सिपाहियों के जोश का ठिकाना न था। सबने दिल्ली चलने का ही निर्णय ठान लिया।

निर्णयानुसार, लूट के सारे सामान के साथ तमाम सिपाही लुधियाना से दिल्ली की ओर बढ़ गए। लुधियाना विद्रोहियों से खाली हो गया।

❀

दिल्ली की भयंकर मारकाट के बाद भी भागी हुई अंग्रेज सेना, अपने साथियों को बचाती हुई शहर से निकल भागी। सिपाही विद्रोह की इस बढ़ती हुई शक्ति के आगे उसने भागना ही पसन्द किया। इसके सिवाय जीवन बचाने का और कोई रास्ता न था। सब मिलकर मुकाबला करने पर काम आते, क्योंकि उनकी संख्या विद्रोहियों के आगे अत्यधिक कम थी।

सेनापति बनार्ड किसी प्रकार एक छोटी सी पहाड़ी पर बने हिन्दूराव बाड़े में आ गये। ग्वालियर के श्रीजीराव का यह विशाल भवन एकदम खाली पड़ा था। बाड़े में एक टूटी मसजिद थी। उस मसजिद में भी अंग्रेजी सेना टिक गई। दो सौ गज के फासले पर जयपुर नरेश का मानमंदिर भी था। बदलिका सराय में सिपाहियों का मुकाबला करने के बाद सेनापति बनार्ड ने इसी स्थान पर टिकना उचित समझा। बाड़े के पास ही फ्लैगस्टाफ था।

दिल्ली के चारों ओर गाँव थे। सड़कें इन गाँवों से होकर जाती थीं। गाँवों में टूटे खंडहर अधिक थे। कुछ रहने योग्य मकानों के अतिरिक्त सर्वत्र खेत ही खेत थे।

दिल्ली एक फसील से घिरी थी। फसील की लंबाई करीब सात मील और ऊँचाई चौबीस फीट थी। चारों ओर खाई थी, पर वह सूख गई थी। फसील पर विद्रोहियों ने तोपें लगा रखी थीं। दिल्ली में दिल्ली और मेरठ की पाँच पलटनें थीं। तोपखाना था। फीरोजपुर, झाँसी, हिसार और मथुरा के सिपाही आ गये थे। अन्य स्थानों से भी सिपाहियों के झुंड के झुंड चले आ रहे थे।

सेनापति बनार्ड के पास तीन हजार गोरी सेना और बाईस तोपें थीं। एक गोरखा सेना के अलावा मदद के लिए पंजाब से एक पलटन आ गई थी। पंजाब

के लेफ्टिनेंट गवर्नर दिल्ली की सहायता का प्रबंध कर रहे थे। छावनी से कर्नाल और कर्नाल से पंजाब तक का रास्ता साफ था।

इस पहाड़ी को झीलों और नहरों की भी सहूलियत थी। यमुना से निकली नहर शहर के बीच होकर चाँदनी चौक से बहती थी।

❀

सैनिक अफसरों से सलाह करता हुआ, हाथ में एक नक्शा लिए हुए युवक अंग्रेज इंजीनियर खेमे से बाहर निकला। वे सब सेनापति के खेमे की ओर जा रहे थे। सेनापति एक ऊँचे स्थान पर खड़े चारों ओर देख रहे थे। दिल्ली का अधिकांश दृश्य इस पहाड़ी से दिखाई पड़ता था।

विद्रोही सिपाहियों की हलचल जारी थी। युद्ध के लिए वे पूर्ण रूप से तैयार थे। चारों ओर तोपें सधी थीं। गोला बारूद और आदमियों की कमी न थी। सिपाहियों का व्यूह सुदृढ़ हो गया था। सेनापति चुपचाप इसी व्यवस्था को देख रहे थे। दूर का दृश्य स्पष्ट न होते हुए भी प्रबंध की एक झलक तो देता ही था।

"सर..."

"यस!"

"आपसे बातें हैं। आइए!"

सब खेमे में गए। सेनापति के बैठ जाने पर दोनों अफसर और वह युवक भी बैठ गया। उसने अपना नक्शा सामने रक्खा।

"देखिए!"—बोला वह—"यह है लाहौरी दरवाजा, यह रहा काबुली दरवाजा! इन दोनों दरवाजों को हम लोग बारूद से उड़ा दें। इसके बाद ही हमारी सेना तेजी के साथ शहर में घुस जाय। यह देखिए, ये फसील पर तोपें रखी हैं। सेनाएँ घुसते ही इन तोपों पर कब्जा कर लें। दूसरी टुकड़ी इसी स्थान से अलग होकर, चाँदनी चौक से राजभवन पर टूट पड़े।"

"लेकिन..."

"हम लोगों ने इस पर खूब सोच विचार किया है!"—एक अफसर बोला—"इससे बढ़िया स्कीम दूसरी नहीं हो सकती!"

"ठीक है!"—सेनापति बर्नार्ड बोले—"इस योजना से मैं भी सहमत हूँ,

पर सबसे बड़ा सवाल इस वक्त यह है कि हमारी ताकत सिपाहियों से कम है। यह भी तो हम लोगों को नहीं मालूम कि दिल्ली में इस वक्त ताकत का माद्दा क्या है!"

"इससे क्या होता है। मुट्ठी भर आदमी यदि साहस और ठीक ढंग से काम लें, तो क्या नहीं कर सकते!"

"हमारा ख्याल है, परसों हम हमला कर दें!"

"मिस्टर रीड की भी राय ले ली जाय!"

"इन्तजार करने से सिपाहियों को अपनी तैयारी करने का मौका मिलता है!"

सेनापति बोले—"अच्छा! और सोच लूँ तब बताऊँगा!"

ॐ

योजना स्वीकृत हो गई! ब्रिगेडियर ग्रेस के नेतृत्व में भी एक टुकड़ी तैयार हुई। बारह जून को आधी रात को अंग्रेजी अफसरों के नेतृत्व में सिपाहियों की एक टुकड़ी चुपके-चुपके दोनों दरवाजे की ओर बढ़ी। बड़ी ही सावधानी से वह लोग बढ़े। कुछ ही देर में दोनों दरवाजों के पास पहुँच गये।

आफीसर घबड़ा गया।

ग्रेस की सहायक सेना आयी नहीं?

"देखो तो?"

लोग दौड़े। सेना को वहीं छुप जाना पड़ा। बिना सहायक सेना के आए कुछ भी कर सकना मुश्किल था। थोड़ी देर में खबर आयी, ग्रेस नहीं आयगे। निराश सेना को वापस लौट जाना पड़ा।

आफीसर क्रोधित हो गया।

कहा—"यह सब क्या है?"

"......"

"हम लोग जान हथेली पर लेकर गये और लौट आना पड़ा!"

"ठीक है, पर योजना पर काम नहीं होगा। दिल्ली के चारों ओर मजबूत दीवार है। हर एक दरवाजे पर तोप लगी है। और भी सिपाही आ गये हैं। ऐसी

हालत में हमें सोच विचार कर हमला करना चाहिए। नाकामयाबी होने पर हम लोगों की मौत है!"

❀

दिल्ली में सिपाही हुकूमत कायम हो गई थी। चारों ओर से विद्रोही सिपाही दिल्ली में इकट्ठे हो रहे थे।

"दीन! दीन!!"

रोहतक की साठ नंबर पैदल पलटन दिल्ली आ गई। जालन्धर और फिल्लौर के रिसाले के भी आने की खबर मिली। देश भर के सिपाही चले आ रहे थे। दिल्ली चलो की आवाज़ दूर-दूर तक जा रही थी। बादशाह के नाम पर सिपाही चले आ रहे थे।

शहर का शासन सिपाहियों के हाथ था। जन जीवन अस्त-व्यस्त हो गया था। सनसनी बनी रहती।

शहर में एक भी अंग्रेज न था।

"सुना है, महल में कुछ अंग्रेज छिपे हैं!"

"तेरा दिमाग खराब है?"

"नहीं रे। सच कहता हूँ!"

"झूठा है!"—एक ने कहा।

"इसे बकने दो। तेईस तारीख अब करीब ही है।"

"बिलकुल ठीक कहा भाई! तेईस तारीख को अंग्रेजी हुकूमत के पूरे सौ साल पूरे होते हैं। उस दिन अंग्रेजी हुकूमत जरूर खतम हो जायगी।"

"इंशाल्ला! यही होगा!"

दिल्ली शहर अफवाहों से भरा था। हर तरफ तेईस तारीख की ही चर्चा थी। शहर भर में सिपाहियों को भी यही विश्वास था कि अगली तेईस तारीख तक अंग्रेजी हुकूमत का खात्मा हिन्दोस्तान से हमेशा के लिये हो जायगा।

❀

लुधियाना सिपाहियों से एकदम खाली हो गया था। शहर के बचे-खुचे लोग

घबड़ाए हुए थे। जालन्धर से गोरी सेना के आने का समाचार पहुँच चुका था। शहर के निवासी आतंकित थे। जिन्होंने सिपाहियों की मदद की थी, वे डर के मारे शहर छोड़ भाग गए।

अंग्रेजी फौज लुधियाना में आ गई। सिपाहियों से बदला न ले सकने के कारण यह पलटन नागरिकों पर टूट पड़ी। गोराशाही का नंगा नाच शुरू हो गया। शहर के बहुत से मुहल्लों में रोना-पीटना मच गया। औरतों और बच्चों की करुण पुकारों से वातावरण काँप उठा।

जिस किसी पर जरा-सा भी शक हुआ नहीं कि पुलिसवाले पकड़कर ले गए। फौजी अदालत कायम हो गई। एक-एक घंटे में मुकदमा और उसका फैसला होने लगा। एक तरफ से सबको फाँसी की सजा। उपस्थित परिजनों की भीड़ छाती पीटती रह गई और देखते-देखते लोगों को सार्वजनिक रूप से फाँसी दे दी गई। फाँसी पानेवालों में बीस काश्मीरी शाल के व्यापारी भी थे। विद्रोहियों को उत्तेजित करने अथवा जरा भी सहायता करने के आरोप में पचीसों व्यक्ति फाँसी पर लटका दिये गये।

कैप्टन काटन अटक और रावलपिंडी की हिफाजत के लिए अपनी सैनिक टुकड़ी के साथ चल पड़े।

दिल्ली के लिए रसद और आवश्यक वस्तुएँ भी अंग्रेजी पलटन के लिए यहाँ से भेज दी गईं।

कप्तान डेली अपनी एक टुकड़ी के साथ गाँव के गाँव बरबाद करते हुए दिल्ली की ओर बढ़ चले। कप्तान डेली की टुकड़ी हर गाँव को रौंदती, कुचलती दिल्ली की ओर बढ़ती जा रही थी।

❀

अजीमुल्लाखाँ अजीजन की ओर देखकर हँस पड़ा। बोला—"तुम्हारा कहना ठीक हो सकता है। विलायत में बड़े-बड़े लोगों की मेमें मेरे साथ रही हैं।"

"तो फिर इस नाचीज की क्या कद्र !"

"नहीं अजीजन !"—अजीमुल्ला बोला—"तुम लाजवाब कहो, इसलिए मुझे तुमसे नफरत नहीं है।"

"तब फिर किस बात से नफरत है ?"

"सिपाहियों का दिल तो तुमने खूब बहलाया, पर अफसोस कि तुम अंग्रेजों के खिलाफ उनका मन फेर न सकीं।"

"हाय अल्ला।"—अजीजन ने दाँत तले अँगुली दबाकर कहा—"यह आपने क्या कहा ! भला, मैं इस काम को कैसे कर सकती हूँ !"

"कैसे का सवाल नहीं है। जब मुल्क पर मुसीबत की घटाएँ झूमें तो लोगों को कौम और पेशे की बात भूल एक साथ आगे आना चाहिए। मैं उस वक्त तुम्हें बहुत प्यार करूँगा जब कि तुम किसी अंगरेज का कत्ल अपने हाथ से करोगी।"

"......"

"अच्छा। आज का तोहफा रहा ये। चला ! शुक्रिया।"

अजीमुल्ला बूट कस नीचे उतर गया। अपने सामने पड़ी चाँदी की मुहर अजीजन आँखें फाड़कर देखती रह गई। उसका इशारा पा सारंगिया तबलचिया चले गये। अजीजन अपनी खिड़की पर जाकर खड़ी हो गई। इस वक्त सारा कानपुर जल रहा है। लखनऊ में भी आग लगी है। सारा शहर फिरंगियों के खिलाफ हो गया है। फिरंगियों की हुकूमत यहाँ से हट गई है। सिपाहियों को उसने खूब देखा है। सिपाहियों की दिलचस्पी के लिए अक्सर उसका नाच गाना सरकार की तरफ से छावनी में होता रहा है। उसने देखा है, सिपाही जिस तरह थर-थर अंग्रेजों से काँपते थे। आज वे ही सिपाही अंग्रेजों के एकदम खिलाफ हो गये हैं।

अजीमुल्ला !

अजीमुल्ला की सलौनी सूरत उसकी आँखों के आगे झूल उठी। अजीमुल्ला के साथ उसके नाम में कुदरती सामंजस्य है। विलायत जाने से पहले वह उसे प्यार करने लगी थी ! जब तक वह लौटकर नहीं आया, वह ग़म में ही डूबी रही, लेकिन वह है कि उसकी कद्र नहीं करता। शायद इसलिए कि उसके माथे पर तवायफ का टीका लगा है।

"अगर तुम किसी अंग्रेज को काट सको, तो मैं तुम्हें प्यार कर सकता हूँ।... मुल्क पर जब मुसीबत के बादल मड़राएँ तो हर आदमी का फर्ज है कि वह अपनी कौम और पेशा भूल मुल्क के लिए कदम बढ़ाए !"

अजीमुल्ला के शब्द उसके कानों गूँज गए।

❀

लखनऊ से समाचार पाकर कानपुर के सैनिक और उत्तेजित हो गए। उनकी हलचलें तेजी से बढ़ गईं। दिन भर कानपुर के सिपाही शोरोगुल करते और अंग्रेजों के छुपे स्थान पर वार करते पर टीकासिंह की मदद के कारण वे मजबूर हो गये थे। तोपखाने के कुछ तोपें हथियाकर अस्पताल की दीवार पर खड़ी कर दी गई थीं, इसलिए छिट-फुट हमले ही होते थे।

सिपाहियों में बड़े जोर की यह खबर फैली कि नाना साहब ने सेनापति होलर को एक पत्र भेजा है, जिसमें यह कहा गया है कि वे शीघ्र ही अंग्रेजों पर हमला करेंगे। इससे सिपाहियों में और जोश बढ़ गया। छिटफुट हमलों की संख्या बढ़ गई।

अस्पताल के हाते में घिरे अंग्रेजों पर मुसीबत टूट पड़ी थी। रात भर छावनी सँभालते और पहरा देते तमाम अफसर थक गये थे। बचे-खुचे अंग्रेज और उनके परिवार यहाँ पड़े थे। सभी ने अपनी सुरक्षा की तैयारियाँ पूरी कर लीं थीं। गर्म हवा के झोंके भट्ठी की लौ की तरह लगते। विद्रोहियों की लपकती भीड़ को तोपों से मारकर भगाते-भगाते तोपें और बन्दूकें इतनी गर्म हो गई थीं कि उन पर हाथ नहीं रखा जाता था। रोज कुछ न कुछ साथी घायल ही होते, मरते और उनके आर्तनाद सुनायी पड़ते।

❀

"लो, ये लो!"

"......"

"ये लो!"

"......"

सर्र फुर्र! सर्र फुर्र! शहर भर में चारों तरफ लाल पर्चे बाँटे जा रहे थे, फेंके जा रहे थे। परचा हिन्दी, उर्दू दोनों में छपा था। पर्चे का मजमून ये था कि हर आदमी को अंग्रेजों को खत्म करना चाहिए। अंग्रेजी हुकूमत के सौ साल हो गए इसलिए ये हुकूमत खत्म होकर रहेगी।

इस परचे ने सारे शहर को उत्तेजना से भर दिया।

मसजिदों में मौलवियों ने तकरीरें की और अंग्रेजों के खून से हाथ रंगनेवाले मुसलमान को बहिश्त की लालच दी। कई साधु भी नगर के चौराहों पर दिखलायी पड़े, जिन्होंने धर्म के नाम पर हिन्दुओं को अगरेजों के खिलाफ उठाया।

सारा शहर सनसना गया। अजीजन उस दिन शहर में घोड़े पर बैठी, हाथ में नंगी तलवार लिये दिखलायी पड़ी। हर आदमी को वह लड़ाई के लिए ललकार रही थी।

दीन! दीन!!

गंगा की नहर के दक्षिण वाले मैदान में हरी पताका उड़ने लगी। नगर के मुसलमानों की एक बड़ी भीड़ उस स्थान पर जुटने लगी। देखते देखते सैकड़ों की संख्या में मुसलमान वहाँ आ गये। शहर की यह सारी हलचल अस्पताल में तोपों आड़ में पड़े अंग्रेजों से छुप न सकी। वे भी मरने-मारने की तैयारियाँ करने लगे। दोपहर की जलती धूप में एक गोला आकर गिरा। अंग्रेज स्त्री—बच्चों में क्रदन मचल उठा। सब अपने-अपने परिजनों से लिपट-लिपट रोने लगे, क्योंकि उन सबको यह विश्वास हो गया था कि अन्त समय अब निकट आ गया है। मुट्ठी भर अंग्रेज सैनिकों और उनके मददगारों ने साहस न छोड़ा। विद्रोहियों का सामना करने के लिए वे कटिबद्ध हो गये।

*

सूर्य डूबने से पहिले ही तोपें तैयार हो गईं।

"बादशाह सलामत—"

"जिन्दा बाद।"

गगनभेदी नारा उठा और तोपचियों ने गोले दागे। गोले पहाड़ी पर मार करने लगे। नसीराबाद से आये हुये इन सिपाहियों के हमले से हिन्दूराव के बाड़े में पड़े अंग्रेज घबरा गये। एक तरह से वे चारों तरफ से घिरे थे। पंजाब की सहायता अब तक न आयी थी। दिल्ली की ओर आते हुए सिपाहियों का रास्ता भी वे सब न रोक पा रहे थे, सिपाहियों की शक्ति से उनकी शक्ति काफी कम थी।

जैसे रात घनी हुई, वैसे ही हमला भी घना हुआ। विवश अंग्रेजों को उत्तर

देना पड़ा। उन्होंने भी अपनी तोपों के मुँह खोले पर रात में दिशा भ्रम के कारण नीचे पड़ी अपनी ही टुकड़ी पर वार करने लगे। कुछ देर बाद भूल मालूम हुई। तोपों के सहारे, विद्रोहियों को पीछे हटा दिया गया।

रातभर छिटपुट-छिटपुट गोले बरसते रहे। एक ओर आक्रमण-प्रत्याक्रमण चल रहा, तो दूसरी ओर कुछ उच्च सैनिक अधिकारी खेमे में बैठे विचार विमर्श कर रहे थे। सबके चेहरों पर चिन्ता की रेखाएँ थीं।

"तीन दिन बाकी है अभी तो ?"

"समझ में नहीं आता। आज कैसे हमला हो गया। हमें तो तेईस तारीख का ही सबसे बड़ा खतरा है !"

"तेईस तारीख के दिन ही कितने रहे !"

"संभव है, इसी बीच कुछ मदद आ जाय !"

"मदद की आशा छोड़, हम लोगों को अपने ही भरोसे तैयार हो जाना चाहिए। पांडेपुरी पर हम लोग अगर कब्जा न कर सके, तो ऐसी ही मर खप जाँयगे !"

"यही होगा ही !"

"जो योजना मैंने कल पेश की थी, उसके ही अनुसार काम होना चाहिए। अभी से काम शुरू हो जाय !"

"अच्छा।"

सब अफसर खेमे से निकल अपने काम में जुट गए।

❀

बाइस जून की रात दिल्ली के लिए कत्ल की रात थी। सिपाहियों में कोई संगठन अथवा नेतृत्व न था। सब अपने मन माफिक काम करते थे। चार सिपाही अफसर चाहे जब मिलकर बादशाह के नाम से मनमाना फरमान निकाल देते थे। व्यापरियों, पैसेवालों की मुसीबत आ गई थी। व्यवस्था और शासन का नाम ही था। सिपाही चाहे जहाँ से रुपया वसूलते, अपने काम में लाते।

इतने अनेक रूपों के बाद भी उन सबका एक सम्मिलित ध्येय था। वह ध्येय था, जैसे भी हो इन धर्म भ्रष्ट करनेवाले अंग्रेजों, ईसाइयों का नाश, उनकी

हुकूमत का नाश। इसी ध्येय से वे सब इकट्ठे थे। रात भर सारा नगर मौलवियों और साधुओं के भाषणों से गूँजता रहा। युद्ध की ललकार ही सर्वत्र सुनाई पड़ रही थी।

"कल तेईस तारीख है। कल फिरंगियों को आए पूरे सौ साल हो रहे हैं। कल का दिन अल्लाह का दिन है।"

हर जगह यही आवाज सुनायी पड़ रही थी।

"......"

रात भर युद्ध की तैयारियाँ होती।

रात भर दिल्ली जागती रही।

रात भर डंका पिटता रहा।

प्रलयमेघों की भाँति दिल्ली के तमाम सिपाही बादशाह के महल के बड़े मैदान में इकट्ठे हो रहे थे। सब जोश से भरे थे। गगन-भेदी नारों, बादशाह की जय-जयकार से रात सो न सकी। इसी रात दूज का चाँद निकला। हिन्दू और मुसलमानों में हर्ष की लहर दौड़ गई। ज्योतिषियों की भविष्यवाणी ठीक निकली। आज दूज का चाँद भी दिखलायी पड़ गया। युद्ध के अनगढ़ सिपाही आफीसर अपनी-अपनी खिचड़ी पकाते हुए अलग-अलग आक्रमण की योजनाएँ बनाने लगे।

❀

सुबह का सूरज आसमान पर चमका। युद्धोन्मत्त सिपाहियों की बहुत बड़ी संख्या बादशाह बहादुरशाह की जय बोल छोटी-छोटी टुकड़ियों में अपने-अपने सामानों के साथ बँटकर अपनी-अपनी योजना के अनुसार आक्रकण के लिए चल पड़ी। इनका भयंकर शोर और भयंकर हलचल देखकर पहाड़ी पर बड़े अंग्रेज पूरी मुस्तैदी के साथ डट गए। तेईस तारीख के इस आक्रमण का सामना करने के लिए वे संगठित रूप से तैयार थे और कई बार इसका पूर्वाभ्यास भी कर चुके थे।

बागी सिपाहियों ने जोश में आकर व्यर्थ ही गोले दागे। शायद वे अंग्रेजों को आगाह कर देना चाहते थे कि ख्याल रक्खो, तुम्हारा काल आ गया। इस प्रकार

पूर्व चेतावनी देकर वे आगे बढ़े जब कि अंग्रेजों ने एक भी कारतूस व्यर्थ न फेंका।

सबसे पहिले सवेरा फूटने से पूर्व ही अंग्रेजों ने नजफगढ़ झील पर बना पुल चुपचाप तोड़ दिया और पीछे हटकर सावधानी से शत्रु के आने की बाट जोहने लगे।

टिड्डियों की भाँति सिपाही दौड़े। नजफगढ़ का पुल टूटा पा तोपों को वे आगे न बढ़ा सके तो एक टुकड़ी लाहौरी दरवाजे से दौड़ी और दूसरी ने सब्जी-मंडी धमकधर दाँए बाजू से आक्रमण कर दिया। तोपों के मुँह खुल गये। पृथ्वी थर्रा उठी। सिपाहियों ने पूरी ताकत के साथ हमला कर दिया।

बन्दूकों की मार, तोपों की आवाज के साथ-साथ दोनों पक्ष भिड़ गए। अंग्रेजों की तरफ से पंजाबी सैनिक, गोरी सेना और गोर्खा सेना मजबूती से टूट पड़ी।

लड़ाई ने बड़ा जोर पकड़ा।

सेनापति रीड युद्ध स्थल का बड़ी बारीकी से निरीक्षण कर रहे थे। सिपाहियों की ताकत बढ़ती जा रही थी। उनकी संख्या अंग्रेजी सेना और उसकी मददगार सेना से कई गुनी अधिक थी। सिपाहियों का दबाव प्रतिपल बढ़ता ही जा रहा था।

अपने साथियों और दुश्मनों की लाशों को रौंदते हुए सिपाही बढ़ते चले आ रहे थे। स्पष्ट दृष्टिगत हो रहा था कि विजय सिपाहियों के साथ रहेगी और हिन्दू राव का बाड़ा टूटकर रहेगा। भीषण नरमेध हो रहा था। दोनों पक्षों के लड़ाके मार-काट कर रहे थे।

देखते-देखते दोपहर को सिपाहियों की संख्या और बढ़ गई। इन सिपाहियों में अधिकांश नागरिक भी थे, जो धर्म के नाम पर शहीद होने आ गये थे। स्थिति गम्भीर देखते ही सेनापति रीड ने संरक्षित खड़ी एक सैनिक टुकड़ी को टूट पड़ने का संकेत किया। सेनापति रीड ने अपनी कम शक्ति का नाप तौलकर ही उपयोग करने का सिद्धान्त बना लिया था। इस सहायक सेना के टूटते ही सारी स्थिति पलटा खा गई। उखड़ती सेना में दुगुना जोश आया और बढ़ते हुए सिपाहियों को रोक लिया गया।

इस भयंकर मार-काट के बीच साँझ हो गई। युद्ध का निर्णय न हो सका।

रात हो जाने पर सिपाही शोर करते हुए लौट गए ।

※

सूर्य निकला । युद्ध क्षेत्र का भयंकर दृश्य देखकर किरणें भी काँप उठीं । सर्वत्र मानव शरीरों के टुकड़े बिखरे पड़े थे । दोनों पक्ष के काफी आदमी मर गये थे । कारतूसों और तोपों की भयंकर विध्वंस लीला के परिणाम सामने थे । थके माँदे अंग्रेज अपने को संभाल रहे थे । घायलों की देखभाल हो रही थी । कल के दिन का ही खतरा उनके लिए बहुत बड़ा था । पल-पल अंग्रेजों को अपने विनाश की आशंका थी । वह दूर हुई । सिपाही पस्त हो लौट चुके थे । गोर्खों और पंजाबियों ने बड़ी बहादुरी से बागी-सिपाहियों की शक्ति को चूरकर भगा दिया था । इनकी भयंकर मार और बहादुरी के कारण ही सिपाही अधिक होते हुए भी अंग्रेजों को हटा न सके ।

सिपाहियों के पीछे हट जाने पर अंग्रेजों को कुछ आशा बँधी । साथ ही दूसरे दिन चेम्बरलेन के आ जाने से उनमें उत्साह आया । रुड़की से वर्ड्सवर्थ स्मिथ, सेनापति बर्नार्ड भी आ गए । सिपाहियों के इस भीषण आक्रमण के तत्काल बाद ही ऐसी सहायता आ जाने से पस्त पड़ी अंग्रेजी फौज दुगुने जोश से भर गई ।

तभी हडसन ने आकर सनसनी खेज समाचार दिया ।

"बरेली के तमाम बागी सिपाही एक बहादुर मुसलमान बख्त खाँ के नेतृत्व में आ रहे हैं । कर्नाल से हमारा खजाना भी आ रहा है ।"

"पुल तोड़ दो !"

नजफगढ़ पुल के बाद दो पुल और थे । इन्हीं पुलों से होकर तमाम बागी दलों का दिल्ली आना चालू था । सिपाही इस क्षेत्र को सख्त हिफाजत रखे हुए थे !

"पुल तोड़ने से क्या फायदा ! व्यर्थ हमारी शक्ति नष्ट होगी । हमारी ताकत बढ़ेगी तो हम स्वयं पुल पर कब्जा कर लेंगे ।"

पुल तोड़ने का विचार रुक गया, पर बख्त खाँ और विद्रोही सिपाहियों के आने के समाचार से चारों ओर सनसनी फैल गई ।

※

"कर्नाल से खज़ाना आ रहा है!"

"खज़ाना!"

"हाँ!"

"लूटो!"

"बरेली से भी हमारे साथी आ रहे हैं!"

"शाबस! मारो!"

विद्रोही सिपाही दौड़े, पर उनका उत्साह कम हो गया था। तेईस तारीख को पराजित होने की कल्पना उन्हें तनिक भी न था। साथ ही तेईस तारीख की भविष्यवाणी पर सबको विश्वास था। फिर भी अंग्रेज को जिन्दा देख और उनकी शक्ति बढ़ते देख सभी सिपाही घबरा चले। भविष्यवाणी झूठी सिद्ध हुई। उनकी हिम्मतें टूट चलीं। एक असम्भव बात संभव हो गई।

मुँहअंधेरे ही बख्त खाँ दिल्ली आ गया। बहादुर बख्त खाँ ने आते ही अंग्रेजों पर आक्रमण की योजना बनाई, पर उसे लौटना पड़ा क्योंकि चेम्बरलेन की तोपों और सैनिक टुकड़ी के आने का समाचार उसे रास्ते में ही मिल गया था। कर्नाल से आनेवाले अंग्रेजी खजाने का पता लगते ही वह दौड़ा, पर यहाँ भी निराशा हाथ लगी। खजाना जा चुका था। सिपाहियों ने हमला किया था, पर वे नाकामयाब होकर लौटते हुए रास्ते में ही मिल गए।

❀

मिट्टी की दीवार पर स्थान स्थान पर तोपें लगीं थीं। हर पन्द्रह कदम पर योद्धा खड़ा था। जो सैनिक भी न था, इस वक्त उसके भी हाथ बन्दूक थी। सेनापति ह्वीलर के आदेश से हर समर्थ आदमी आत्म-रक्षा के लिए तैयार था। हर सैनिक के पास गोली भरी तीन-तीन बन्दूकें थीं। जो अभ्यस्त थे, उनके पास सात-सात, आठ-आठ भरी बन्दूकें थीं। तोपें दीवारों पर मैदान में लगी थीं, इसलिए गोलन्दाज़ हरदम शत्रु-पक्ष की बन्दूकों के निशानों के सामने थे। पीछे के क्षेत्र में घायल और स्त्री बच्चे पड़े थे। उनकी देखभाल या सेवा करनेवाला एक भी आदमी न था। जेठ की तपती धूप में मेमें और उनके बच्चे बुरी तरह परीशान थे। भरपूर पानी भी उपलब्ध न था। भोजन भी उचित मात्रा में

संचित न था। चारों ओर से घिर जाने के कारण जो कुछ था, वह दिन पर दिन घटता ही जा रहा था। सामने भयावह मौत मुँह फाड़े आती दिखलायी पड़ रही थी।

तोप छूटते ही युद्ध प्रारम्भ हो गया। बढ़ते हुए सिपाहियों को रोकने के लिए सभी डट गए। देखते-देखते बन्दूकें गरम हो गईं। तोपों का ढाँचा लाल हो गया।

धड़ाम ! धुँ !!

धड़ाम ! बड़ !!

दोनों ओर से कारतूस छूट रहे थे। तोपों के गोले अरअरा रहे थे। एक टुकड़ी कुछ विश्राम करती तो दूसरी लड़ती। इस तरह पारी-पारी युद्ध का सामना होने लगा। गोला फटता अथवा गोली लगती और कोई न कोई ढेर हो जाता। उसे हटानेवाला भी कोई न था। यह काम रात के लिए रख छोड़ा गया था।

❀

रात में भी अंग्रेजों को चैन न थी। अँधेरे में छिपकर सिपाही वार करते और गोलियों की झड़ी लगा देते। इस तरह दिन रात अंग्रेजों को मुकाबला करना पड़ता। उनकी समझ में न आ रहा था कि सिपाही इस तरह छिट-फुट हमला क्यों करते हैं? वे सब तो एक बारगी ही कुछ न कुछ निर्णय की आशा में थे। इसी आशंका से वे मरने के लिए तैयार थे, पर ऐसा न हो रहा था। सिपाही उन लोगों को चारों तरफ से घेरे फुटकर हमले करते। इस तरह घिरे हुए वे सब बहुत ही परीशान हो रहे थे। इस तरह घुट-घुट मरने की अपेक्षा वे सब एक बार ही टूट पड़ने की सोचते, पर सेनापति सहायता आने की आशा देकर उनके इस आयोजन को विफल कर देते।

निरन्तर छिटपुट गोलाबारी से कुछ कुछ अंग्रेज अब समझ रहे थे कि उन सबको तड़फा-तड़फाकर, भूखे प्यासे मार डालने की ही योजना इन सिपाहियों की है। इस बात को बार-बार उन्होंने सेनापति को समझाया, पर सेनापति ने कहा, कुछ दिन देख लो। सेनापति हावेल कानपुर से आते ही होंगे। अमुक स्थान से अमुक सेना हमारी सहायता के लिये आने ही वाली है। इन्हीं आशाओं के सपनों पर वे सब जीवन पाने की आशा कर रहे थे।

अजीमुल्ला खाँ को बड़ा आनन्द आ रहा था। देशवासियों पर किए गए जुल्मों का स्मरण कर वह भी इन अंग्रेजों को तिल-तिल मारना चाहता था। उसी के आदेश से सिपाही जब तब छिट फुट हमला करते और अंग्रेजों को परीशान करते। एक बारगी ही वे उन सबको साफ न कर रहे थे। एक टुकड़ी को अजीमुल्ला खाँ ने इसी काम के लिए तैनात कर दिया था।

"भाँग छानो और मारो!"

धड़ाम !!!

फिर गोला फूटा। विद्रोही सिपाहियों की तोपें सबेरा होते ही फूटने लगतीं। कई रोज से चलनेवाले इस आक्रमण के फलस्वरूप प्रायः सभी अभ्यस्त हो गये थे। निरन्तर बन्दूकें थामे बारूद भरते-भरते हाथों में छाले पड़ गए थे, फिर भी सब डटे थे मौत का सामना बहादुरी से करने का निश्चय सबने कर लिया था।

स्त्रियाँ और बच्चे एक कमरे में पड़े थे। भोजन सामाग्री दिन पर दिन घटती जा रही थी। अतएव बड़ी हिफाजत के साथ वितरण हो रहा था। स्त्रियाँ भरसक जितनी सहायता कर सकतीं, कर रहीं थी।

रोज कुछ न कुछ घायल होते। मरहम-पट्टी का समान भी खत्म होने आया। सभी तरह के संकट घिरे हुए अंग्रेजों पर टूट रहे थे। गर्भवती स्त्रियों की देखभाल करनेवाला कोई न था। दिन में चार बार नहाने और कपड़े बदलनेवाली महिलाएँ बिना नहाए एक-एक कपड़े से पड़ी थीं। पानी का भी अभाव अपने पैर पसारता जा रहा था। नित नए संकट आते जा रहे थे।

सुरक्षा के लिए खड़ी दीवार अनेक स्थान पर गिरकर और सहारा देने से मुँह मोड़ रही थी। दिन रात युद्ध करते-करते सभी अंग्रेजों के चेहरे बुरी तरह विकृत हो गये थे। युद्ध और रक्षा के अतिरिक्त उन्हें किसी और बात का ध्यान न था।

धड़ाम ! धड़ !!

बारूद की गाड़ी की छत पर गोला पड़ा। धड़ाके से छत उड़ गई। जलते हुए कुछ टुकड़े बारूद के संग्रह पर पड़े। डिलाफीसा पास ही खड़ा था। एक टुकड़ा उसके कन्धे पर भी पड़ा था और वह घायल हो गया। फिर भी वह भरपूर

ताकत से दौड़ा और रेत के टिन उठाकर पटक दिए। अगर जरा-सी देर कर जाता तो तमाम बारूद का ढेर उड़ जाता। अंग्रेजों के शस्त्र व्यर्थ हो जाते।

जोश में आ डिलाफीसा अपना काम तो कर गया, पर घायल होने के कारण बेहोश होकर गिर गया। आस-पास के सैनिक दौड़े। उठा ले गये। आश्चर्य से देखा गया। मरहम पट्टी के लिए अब कोई समान नहीं है।

तुरन्त एक अंग्रेज महिला से अपना मोजा निकालकर दे दिया।

तोप का गोला फटने के बाद ही विद्रोही सिपाहियों की छोड़ी गोलियों की आवाज आयी। सैनिक डट गए।, वे जिन्होंने कभी शस्त्रों को हाथ भी लगाया न था--लड़ रहे थे। पादरी थे और रेलवे के इंजिनियर थे। जितने थे, वे सभी आत्म रक्षा के लिए शस्त्र लिए खड़े थे।

सेनापति ह्वीलर अपने बूढ़े शरीर को ढोकर जितना काम कर सकते, कर रहे थे। नाना साहब भी विद्रोहियों से मिल सकते हैं, इसकी उन्होंने कल्पना न की थी। नाना साहब अंग्रेजों के प्रति सदा से उदार रहे हैं। इसके कई प्रमाण उनके सामने थे। एक बार कानपुर के कलक्टर की पत्नी को बिठूर का निमन्त्रण मिला। नाना साहब ने अपनी नई बग्घी और तुरन्त खरीदे घोड़े लगवा कर उन्हें बिठूर बुलाया। बिठूर में सुबह-शाम कलक्टर साहब की पत्नी बग्घी में अपने गोद के बच्चे के साथ घूमा करती थी। एक रोज बच्चा मर गया। नाना साहब ने इस शोक में बग्घी जलवा दी और घोड़ों को गोली मार दी। लखनऊ यात्रा में नाना साहब ने लखनऊ के तमाम अंग्रेजों का बड़ा सम्मान किया था। ऐसा राजभक्त आदमी भी आज विद्रोहियों से मिल गया! यह विश्वास की बात न थी किन्तु नाना साहब का आया पत्र इस बात का साक्षी था कि वे विद्रोही हो गये हैं। एक साथी के इस विश्वासघात से बूढ़े सेनापति का दिल और टूट गया था। प्रतिपल वे वाविल के आने की प्रतीक्षा कर रहे थे। पंजाब से सर जानलौरस मदद करेंगे, सेनापति नील भी इलाहाबाद से आ सकते हैं।

समय बीतता जा रहा था। कहीं से कोई सहायता न आ रही थी। लखनऊ के जज गोबिन्स को पत्र लिखकर भेज चुके थे। अपनी सारी करुणा की दशा लिख भेजी थी उन्होंने। अब तो विद्रोहियों ने इस ओर भी ध्यान देना शुरू कर

दिया है। चारों तरफ से इस कदर नाके बन्दी कर दी है कि अब तो बाहर संदेश भेजना भी मुश्किल है।

दोनो ओर से गोलियाँ चल रही थीं।

सहसा गोली छूटी और रेलवे इन्जीनियर के जबड़े में गोली। उपचार का कोई प्रबन्ध न था। वह तड़प-तड़पकर मर गया। सेनापति उसकी ओर देखते रहे, पर उसके लिए कुछ भी न कर सके।

※

संकट बढ़ता ही जा रहा था। कुछ विद्रोही सिपाहियों को कैद करके रखा गया था, वे मौका पाकर भाग खड़े हुए। एक अंग्रेज स्त्री हाथ में नंगी तलवार लिए उन पर पहरा देती थी। उनके बीमार पड़ने पर एक दूसरा आदमी आया, तो वह अपनी ड्यूटी मुस्तैदी से न कर सका। रात में मौका पाकर सभी कैदी सिपाही भाग गए।

सेनापति चारों तरफ घूम-घूमकर हर एक को सांत्वना दे रहे थे। कुछ औरतों को बच्चे हो गये थे। अपने नये जन्मे शिशुओं को गोद लिए वे औरतें धार-धार रोतीं। बच्चों के लिए, उनके लिए कोई प्रबन्ध न था।

रसद घटती जा रही थी। बारूद भी समाप्त होने आ रही थी। जल भी समाप्ति पर था। हाते में एक कुँआ था, पर उस कुँए के सामने की दीवार तोप के गोले खाकर टूट गिरी थी और हरदम विद्रोही-सिपाहियों की गोलियों का खतरा बना था।

रोज अंग्रेज मर रहे थे। लाशों का कोई प्रबन्ध न था। कुछ दिन तक तो लाशें इसी तरह यहाँ वहाँ पड़ी रहीं और अपने प्रिय जनों की अन्तिम दशा में यह दुर्गति देख औरतें जार जार रोती रहीं। बच्चे सिर पीट-पीट रोते रहे, जिनके माँ बाप की लाशें वे थीं। बाद में हाते में ही एक कोने में लाशें डाल दी गईं।

सेनापति का दिमाग विक्षिप्त सा हुआ जा रहा था। तमाम अंग्रेज जैसे अमानवीय तत्त्वों से भर गए थे। मौत वीभत्स रूप धर हाते में मँडराने लगी।

धड़ाम!

सामने खड़ी दीवार गिर गई। अब तो स्त्रियों पर भी संकट आ गया। इस

दीवार के टूटते ही वह कमरा एकदम सामने आ गया, जिसमें औरतें और बच्चे थे। एक यही स्थान बचा था। वह भी अब सुरक्षित न रहा।

विद्रोहियों की सनसनाती गोलियाँ आने लगीं। देखते-देखते तीन चार स्त्री बच्चे वहीं ढेर हो गए।

हाहाकार मच गया।

वृद्ध सेनापति अपने आँसू पोंछ एक ओर हट गए। इस दृश्य से उत्तेजित अंग्रेज पूरी शक्ति के साथ सामने आए। अपने प्राण हथेली पर रख सामने के विद्रोहियों को मार भगाया। साँझ घिर आयी थी। कुछ राहत मिली। युद्ध की तेजी घट गई। फिर भी छिटपुट आक्रमण चल ही रहे थे। यह तो रोज का क्रम था। अपने साथियों के साथ सेनापति ह्वीलर टूटे बरामदे में बैठे। स्थिति किसी से कुछ छुपी न थी। सारी बात साफ थी।

ह्वीलर का स्वर काँपा—"अभी तक सहायता नहीं आयी। हम सब बुरी तरह फँस गये हैं। क्या किया जाय!"

"हम लोग आखिरी दम तक लड़ेंगे!"—अपनी स्त्रियों और बच्चों की मौत के कारण चोट खाए साथी बोले।

"हाँ, ठीक है, पर रसद समाप्त है। शायद कल तक ही चल सके!"

"इसके लिए मैंने इन्तजाम किया है!"—एक बोला—"मेरा एक विश्वास नौकर कल आया था। वह वायदा कर गया है!"

"हिन्दोस्तानी है?"

"हाँ!"

"उसका भरोसा नहीं! अगर रोटियों में हम लोगों को जहर दे दे तो!"

"हम परीक्षा कर लेंगे!"

"यह भी तो हो कि हममें से कोई बाहर जाय। मदद के लिए!"

"बाहर जाना एकदम मुश्किल हो रहा है!"

"वेश बदलकर?"

"हाँ, शायद इस ओर कामयाबी मिल सके।"

सहसा वार्ताक्रम टूट गया। दो बच्चे चले आ रहे थे। तोप का गोला उन पर पड़ा और उनके शरीर टुकड़े-टुकड़े हो बिखर गये। उनकी माँए हाहाकार

कर उठीं। उसी समय कैलू की छत पर भी गोला पड़ा। छत अरअराकर बैठ गयीं। उस छत के नीचे घायल स्त्री पुरुष बच्चे और बीमार आदमी पड़े थे।

छत गिरते ही बहुत से दब गये। भयंकर हाहाकार मच गया। सब दौड़े पर भागम-भाग में मदद कैसी! कैलू की छत में आग लगने से प्रकाश हो गया और यह प्रकाश सिपाहियों की मदद में योग देने लगा। वे निशाना साध साध बन्दूकें दागने लगे। सहायता के लिए दौड़े लोग ढेर होने लगे। सूबेदार भवानी सिंह भी गिरकर मर गया। कुछ और राज भक्त सिपाही भी ढेर हो गए।

इस नयी मुसीबत ने तो एकदम तबाही कर दी। काफी संख्या में लोग दबकर मर गए। साथ ही रही सही दवाईयाँ, औजार भी नष्ट हो गये। खाने पीने की शेष सामग्री भी नष्ट हो गई।

❀

जिन अफसरों के सामने सब सिर झुकाते थे, जिस सेनापति के इशारे हजारों सैनिक चलते थे, जिन अंग्रेज स्वामियों की आज्ञा से नौकर सत्रस्त रहते, उनकी ही अब बुरी दशा थी। सिपाहियों की मार से किसी का भी शरीर अछूता न बचा था। एक-एक पल मौत का सामना था।

रक्षा के लिए खड़ी दीवार अनेक स्थानों पर क्षत-विक्षत हो गई थी। सिपाहियों के निशानों से बचना मुश्किल था। कोई भी ऐसा स्थान न था कि जहाँ तक सिपाहियों की गोलियाँ न पहुँच सके।

कलक्टर हिलर्डसन बारामदे में खड़े थे। पास ही उनकी स्त्री भी थी। अपने साथियों को वह समझा रहे थे कि सेनापति को नाना साहब के साथ सुलह कर लेने पर जोर डाला जाय। इस तरह घुट-घुट मरने की अपेक्षा सुलह अच्छी है।

सहसा तोप का गोला आया।

हिलर्डसन वहीं ढेर हो गये और लोग घबराकर इधर-उधर भाग गए।

तोपों की विकट मार हुई।

एक स्थान पर खड़े तीन अंग्रेज अफसरों के सिर उड़ गये। सेनापति ह्वीलर के घायल बेटे के पलंग पर गोला गिरा। उसका सिर उड़ गया। गोलियों और तोपों की मार के आगे ठहरना मुश्किल।

लाशों के ढेर। समाधि का स्थान भी नहीं। सर्वसम्मति से दीवार के बाहर बना कुँआ इस कार्य के लिए चुना गया और एक के बाद एक लाशें उस कुएँ में डाली जाने लगीं। बड़ा हृदय विदारक दृश्य था। कल तक जो हँसते खेलते थे, आज उनकी लाश को भी गति न मिली। स्त्री पुरुष और बच्चों के शवों से कुँआ भर गया।

❀

सिपाहियों का हौसला बढ़ता जा रहा था। दूसरे स्थानों से भी सिपाही आ रहे थे। तात्या टोपे अपने पूर्व कार्यक्रम के अनुसार चल रहा था। तेजी से रोटी और कमल गाँव-गाँव पहुँचकर संदेशा दे रहे थे—चलो, समय आ गया। अब इकट्ठे होकर अंग्रेजों को सदा के लिए मिटा देना है।

तात्या टोपे का फैला जाल पूरी शक्ति के साथ कार्य कर रहा था। कानपुर की ओर मदद के लिए पैदल बढ़ने वाली अंग्रेज आफीसरों की टुकड़ियों को छेंक लिया गया था। आजमगढ़ से सत्रह नम्बर पैदल सेना आ गई थी। चौबेपुर से पैदल और सवार भी आ गये थे। सिपाहियों की शक्ति बढ़ती जा रही थी। तालुकेदार मीर नवाब भी अपनी दोनों सेनाओं के लिए नाना साहब की मदद के लिए आ गया था।

मीर नवाब लार्ड डलहौजी के ही जमाने से जला-भुना बैठा था। अब मौका पाकर वह भी उठ खड़ा हुआ।

सिपाहियों की गति विधि बढ़ती जा रही थी। अंग्रेजों के घिरे हुए स्थान के चारों ओर उनकी चौकसी थी।

रात के अँधेरे में एक छकड़ा उस ओर जाते देख सिपाहियों को कुछ शक हुआ।

"पकड़ो!"

"कौन है?"

"रोक लो!"

सिपाहियों ने छेंक लिया। छकड़े की तलाशी लेने पर उस पर रोटियाँ लदी पायी गईं।

"कहाँ लिये जा रहे हो ?"

"......"

साथ के आदमी चुप । एक सिपाही ने बन्दूक उठा गोली चला दी । दो वहीं ढेर हो गए ।

"अब बोलो, कहाँ लिये जा रहे हो ?"

"......"

"नहीं बताओगे तो तुम सब लोगों को गोली से उड़ा दिया जाएगा !"

"जी !"

"बोल..."

"......"

"मार दो गोली !"

"बताता हूँ । बताता हूँ !"

"......"

"साहब लोगों के वास्ते खाना है !"

"साहब लोगों के वास्ते खाना है । पकड़ लो इन सबको । घसीटकर ले जाओ! अजीमुल्ला साहब के सामने पेश करो !"

छकड़े के साथ चलनेवाले स्त्री पुरुष पकड़ लिये गये ।

दूसरी ओर भी यही दृश्य था । सिर पर बड़ी टोकरी रखे एक जौहरी पकड़ा गया । टोकरी में गोश्त और अंडा था । पहरे पर तैनात सिपाही उसे भी धर ले गए । इस तरह चारों तरफ से पहरा और कड़ा कर दिया गया ।

❀

"कहाँ पकड़ा ?"

"हुजूर, बड़ी रात गये यह आदमी अंग्रेजों के आहाते से निकलकर गंगा की तरफ भाग रहा था ।"

"हुँ !"—अजीमुल्ला ने गौर से अपने सामने खड़े एक हिन्दोस्तानी वेशधारी गोरे आदमी को देखकर कहा—"क्या नाम है तुम्हारा ?"

"बदलू साब !"

"बदलू ! तुम अंग्रेज की मदद के लिए बाहर जा रहे थे।"

"नहीं हुजूर। उन लोगों ने मुझको गिरफ्तार कर लिया था !"

"गिरफ्तार कर लिया था। आराइट मिस्टर हेफार्ड आई नो यू वैल।"—अजीमुल्ला मुस्कुराया—"तुम्हारी चालाकी काम नहीं आयेगी !"—और वह खिलखिलाकर हँस पड़ा।

"......"

"इसे ले जाओ। इसे तीस साल के लिए कैदखाने में डाल दो। साला अंग्रेज का बच्चा बदलू बनता है। तुम्हारा बाप भी अब तुम्हारी मदद के लिए यहाँ नहीं आ सकता !"

अपना फैसला दे अजीमुल्ला नाना साहब से मिलने चल पड़ा। अब अंग्रेजों के नाश में और विलम्ब नहीं करना चाहिए। तात्या टोपे को भी उसने आने की खबर दी। कुछ और साथी आए।

सवेदा-कोठी में अंग्रेजों को समूल नष्ट करने की योजना बनने लगी।

❀

योजनानुसार अंग्रेजों के खेलने के मैदान में तोपें लगा दी गईं। बाकरअली ने इन तोपों का संचालन अपने ऊपर लिया। सेनाध्यक्ष टीका सिंह अपनी फौज के साथ इसी मैदान में आये। कई बड़े-बड़े भरे बोरे सामने आये। दो और सेना और बँटी। इस तरह घेरा पूरा कर युद्ध का बिगुल बजा।

आहाते में तोपों की आड़ में घिरे अंग्रेज इस विपत्ति से अनभिज्ञ न थे। पूरी शक्ति के साथ वे सब भी मरते मारने के लिए आ डटे। तोपों और कारतूसों की बौछार करती हुई सिपाहियों की टुकड़ी आगे बढ़ी।

आत्मरक्षा के लिए रुई कसे बोरे थे। बोरों की आड़ में सैनिक टुकड़ियाँ बढ़ती जा रही थीं। अंग्रेजों का गिरजाघर और सैनिक विद्यालय की अधूरी बनी इमारत भी इस आक्रमण में बागियों को सहायता दे रही थी।

अजीमुल्ला खाँ सैनिकों को उत्साहित कर रहा था। घोड़े पर सवार अजीजन सिपाहियों को ललकार रही थी।

भयंकर युद्ध हुआ।

अंग्रेज जी जान से डट गए। उनकी तोपों की मार के आगे सिपाहियों के छक्के छूट गये। कुछ ही दूर रह जाने पर भी वे बढ़ न सके। भयंकर गोलाबारी कर अंग्रेजों ने उन्हें पीछे हटने के लिए विवश कर दिया। अपने साथियों की लाशों पर खड़े होकर अंग्रेजों ने युद्ध किया। शत्रु को पास न आने दिया।

दिन भर जमकर लड़ाई होने के बाद भी निर्णय न हो सका। सिपाहियों को साँझ हो जाने पर पीछे लौटना पड़ा।

अंग्रेजों ने राहत की साँस ली पर इस घनघोर आक्रमण में सबकी कमर टूट गई। खाद्य सामग्री कुछ भी शेष न थी। पीने के पानी वाला कुँआ अब और अरक्षित हो गया था। काफी फासले तक दीवार टूट गई थी।

थके माँदे घायल अंग्रेज भूख और प्यास से तड़फने लगे। सेनापति ह्वीलर भी घायल हो गये थे। वह एकदम किंकर्तव्यविमूढ़ थे। सबको अपनी आँखों के आगे वीभत्स मौत नाचती दिखलाई पड़ी। हर ओर भूख प्यास के स्वर आने लगे। बची-खुची स्त्रियाँ पागलों की तरह रोती हुई यहाँ से वहाँ दौड़ने लगीं। उनके पति, उनके भाई, उनके अन्य संबंधी, उनके बच्चे और स्वयं वे भूख प्यास से बेहाल हो उठीं। सिपाहियों ने चारों ओर से घेर रखा था। भूख प्यास से तड़प-तड़पकर मर जाने के सिवाय और कोई रास्ता न था।

❀

"दीन! दीन!!"

"हर हर महादेव!!"

कुछ हिन्दू और मुसलमानों के एक झुंड को ऐसा नारा लगाते देख, नागरिक चौंक पड़े। साथ ही गली कूचों में घबराहट फैल गई। आजमगढ़ और बनारस से विद्रोह के समाचार आ चुके थे। दिल्ली और मेरठ की घटनाएँ भी छिपी न थीं। सारे देश में विद्रोह फैल गया है। अंग्रेजों को कत्ल किया जा रहा है।

पत्थर के मजबूत किले के पूरब की तरफ पड़ी सिक्ख पलटन तक यह समाचार पहुँचा कि नगर में कुछ लोग नारे लगा रहे हैं। सिक्ख पलटन में हलचल मच गई। सेनापति मरा के कार्य से वे सब क्षुब्ध थे। अनुशासन के नाम पर चुप पड़े थे, पर भीतर ही भीतर उनमें असंतोष की ज्वाला धधक रही थी।

"नारे लग रहे हैं ?"

"हाँ।"

"इसका मतलब है कि आजमगढ़ के सिपाही हमारी मदद के लिये आ रहे हैं ?"

"हो सकता है !"

तभी एक आदमी दौड़ा हुआ आया। हाँफता हुआ बोला—"सिपाहियों ने बगावत कर दी है। कोठी लूट कर वे लखनऊ की तरफ जा रहे हैं !"

सहसा बंदूक की आवाज सुनकर सभी सिपाही चौंक पड़े। सबके सब भागे और अपने हथियार उठा शोर करते हुए शहर की ओर दौड़े। शहर में भगदड़ मच गई। देखते-देखते शान्त जौनपुर विद्रोह की आग से धधक उठा। धर्म के नाम पर, अंग्रेजों की सत्ता मिटाने के लिए हिन्दू सिक्ख मुसलमान एक हो सारे शहर में अंग्रेजों, ईसाईयों का कत्ल करने लगे। दूकानें लुटने लगीं। ईसाई या अंग्रेज देखते हो उसका कत्ल हो जाता।

अंग्रेजों और ईसाईयों में भगदड़ मच गई। भागते हुए अधिकांश मारे गये। कुछ गिरते पड़ते, चोट खाते हुए भी भाग निकलने में समर्थ हुए।

विद्रोही सिपाहियों को भीड़ खजाने की ओर दौड़ी।

"मारो ! मारो !!"

मुट्ठी भर रक्षक ठहर न सके। अधिकांश रक्षक खजाने की लालच वश बागियों से मिल गये। देखते देखते खजाना लूट लिया गया। कुछ ही घंटों में जौनपुर से अंग्रेजी सत्ता उठ गई।

❀

सेनापति मरा कचहरी में बारामदे में खड़े थे। उनकी स्त्री साथ थी। कुछ आफीसर भी थे। बातें हो रही थीं।

"धाँय !"

गोली सनसनाती हुई आयी। सेनापति मरा के सीने को पार गई। सेनापति लुढ़ककर वहीं ढेर हो गये। उनकी स्त्री सँभल सके इसके पहिले ही बड़ा शोर मचा। विद्रोही सिपाहियों की भीड़ दिखलायी पड़ी। भीड़ के साथ नाग-

निक भी थे और जेल से निकले गए कैदी भी साथ थे। कचहरी में भगदड़ मच गई।

विद्रोह हो गया।

गिरते-पड़ते अंग्रेज और ईसाई भागे। सेनापति की पत्नी अपने प्राण लेकर भागी, पर किसी बंदूक की गोली लगी। राह में ही गिर गई। देखते-देखते कचहरी लूट ली गई। आवश्यक कागज पत्रों में आग लगा दी गई। गिरते पड़ते अंग्रेज भागते जा रहे थे। कुछ बागी उनका पीछा कर रहे थे, पर बाद में लौट आए

बचे हुए अंग्रेज गोमती की ओर भाग रहे थे। शहर पीछे छूट गया था। शहर से आता शोर सुनायी पड़ रहा था। आग की लपटें दिखलाई पड़ रही थीं। सब गोमती तट पर रुके। तब तक कुछ और आ गए। गोमती में गरमी के कारण पानी अधिक न था। पीपे का कच्चा पुल सुरक्षित था। भयभीत अंग्रेज पुल पार कर उस ओर निकल गये। बागियों का भय अब न था।

भागे हुए सभी गतिमन्द कर चलने लगे।

सब घबराए हुए थे। जान बच गई, पर अब क्या होगा? अगर कहीं आश्रय न मिला, तो मौत निश्चित है।

कराकट की झोपड़ियाँ दिखलाई पड़ीं।

एक अंग्रेज चिल्लाया—"आओ, इसी गाँव मे आओ!"

"लेकिन..."

"कोई खतरा नहीं। यहाँ हिंगनलाल हमारी मदद करेंगे। बहुत अच्छे आदमी हैं। मेरी उनसे दोस्ती है।"

अंग्रेज ईसाई रुक गए पर सामूहिक रूप से चलने का विचार स्थगित कर दिया। पता नहीं, इस गाँव की क्या स्थिति है? अतएव सिर्फ एक ही अंग्रेज गाँव में धँसा। झोपड़ियाँ पारकर कच्चे पक्के मकानों के सिलसिले के बाद वह लाला हींगनलाल के घर के सामने आए। यकायक एक अंग्रेज को अपने गाँव में आया देख, कुछ लोग ताज्जुब में पड़े।

अंग्रेज ने लाला हींगनलाल से भेंटकर अपनी और अपने साथियों की विपदा

का बयान किया। दुखियों की रक्षा करना अपना धर्म समझ लाला हींगनलाल ने विपद के मारे अंग्रेजों को अपने यहाँ आश्रय देना स्वीकार कर लिया।

*

रात गाँव में बड़ा शोर मचा।

बागियों के साथ कुछ लुटेरे भी मिल गए थे। गाँव लूटने आ गए थे वे। लुटेरों की संख्या अधिक होने पर भी गाँववालों ने उनका मुकाबला किया।

गाँववाले टिक न सके।

लुटेरों ने खूब लूटपाट की।

लाला हिंगनलाल का मकान घेर लिया।

"घुसो! देखते क्या हो?"

"किसका मकान है?"

"लाला हिंगनलाल!"

"अरे राम राम!! ऐसा पाप मत करो। ये बड़े धर्मात्मा आदमी हैं।"

"हाँ, हाँ,!"

"लाला हिंगनलाल राम के बड़े भक्त हैं!"

"चलो, चलो, आगे बढ़ो!"

लुटेरों की भीड़ लाला हिंगनलाल के मकान को अछूता छोड़ आगे बढ़ गई। लाला के मकान में छुपे अंग्रेजों ने संतोष की साँस ली।

*

इलाहाबाद गरम था। शहर भर में अफवाहें थीं। कर्नल सिमसन को तार से सारे समाचार मिल गये थे। बनारस, आजमगढ़ और जौनपुर की खबरें भी आ गई थीं। इलाहाबाद में बारूद हथियार और खजाना बड़ी मात्रा में था। कर्नल सिमसन ने रक्षा की व्यवस्था पूरी की। इलाहाबाद आनेवाले नाव के रास्ते पर दारागंज में दो तोपें खड़ी कर दी गईं। चारों तरफ सुरक्षा व्यवस्था की गई।

कर्नल सिमसन के सहयोगियों ने बराबर सलाह दी। छह नम्बर की सेना को निरस्त करने की सलाह दी, पर इस सेना के अधिकांश सिक्ख सैनिकों की राज भक्ति पर उन्हें पूरा विश्वास था, इसलिए कर्नल ने एक न सुनी। सिक्ख सैनिकों

के प्रति उनका विश्वास उस समय और बढ़ गया, जब कि उन लोगों ने दो सैनिकों को उनके सामने पेश किया।

"साहब, ये हम लोगों को भड़काते हैं।"

"क्या कहते हैं?"

"कहते हैं, अंग्रेजों ईसाईयों को मार डालो। ये तुम्हारा धर्म बिगाड़ रहे हैं!"

कर्नल ने दोनों सैनिकों को जेल भेज दिया।

कर्नल सिमसन भरसक अपना कार्य कर रहे थे। बनारस के सेनापति के पतन का समाचार पाते ही कर्नल ने अनुमान लगाया, बनारस, के सिपाही इलाहाबाद अवश्य जायेंगे अतएव शहर की सीमा पर उनको रोकने के लिए एक टुकड़ी भेज दी।

❀

रक्षक टुकड़ी चौंक पड़ी। दूर से शोरोगुल आ रही थी। चाँदनी रात छिटकी थी। सिपाहियों ने देखा—बागी चले आ रहे हैं। अपने अपने हथियार सँभाल बागियों का मुकाबला करने सब तैयार हो गए। सहसा एक सन्यासी सामने आया।

"ठहरो!"

सिपाहियों ने उसकी ओर देखा।

"किससे लड़ोगे?"

"बागियों से!"

"ये बागी कौन हैं?"

"हिन्दू मुसलमान!"

"तुम अपने भाईयों पर हथियार उठाओगे। अंग्रेजों की हुकूमत के वास्ते। बेवकूफ अंग्रेज तुम्हारा धर्म भ्रष्ट कर रहे हैं और तुम उनकी ही मदद के लिए अपने भाईयों पर गोली चलाओगे। तुम लोगों को शर्म आनी चाहिए!"

सिपाहियों पर इसका असर पड़ा।

तब तक बागी सामने आ गये। चाँदनी रात में अपने सामने के लोगों को उन्होंने देख लिया।

एक चिल्लाकर बोला—"जो हमारा भाई हो वो साथ आए !"

"हर हर महादेव !"

"दीन ! दीन !!"

तमाम बागी सिपाहियों से मिल गए। सम्मिलित भीड़ शहर की ओर बढ़ी। सन्यासी भी उस भीड़ में था। किले के निकट आते ही सन्यासी ने बिगुल फूँका।

बिगुल ध्वनि के साथ ही हलचल मच गई।

ठाँय ! ठाँय !!

धड़ाम !!

तोपों और बन्दूकों आवाज आई। फिरंगी दहल गए। समझते देर न लगी—विद्रोह धधक उठा है। कर्नल सिमसन को सहसा विश्वास न हुआ। घोड़े पर सवार हो बाहर आए।

देखा। कुछ लोग तोपें लिए आ रहे हैं।

"कौन है ?"

"......"

"किसके हुक्म से तोपें जा रही हैं ?"

ठाँय।

गोली कर्नल की कनपटी को छूती हुई निकल गई। कर्नल ठहर न सके। आशा के विपरीत स्थिति देख घोड़े का रुख मोड़ दिया।

"मारो ! मारो !!"

एक साथ गोलियां छुटीं। कर्नल ने अपना घोड़ा भगाया। उन्हें गोली तो न लगी, पर घोड़ा घायल हो गया। फिर भी भागता गया। कर्नल भागकर किले में आए। जैसे ही घोड़े से उतरे, घोड़ा गिरकर ढेर हो गया।

❀

शहर उपद्रव से भर गया।

जेलखाना टूट गया। तार की लाइनें काट दी गईं। रेलवे का कारखाना तोड़-फोड़ दिया गया। ईसाईयों, अंग्रेजों के घरों में आग लगा दी गई। ईसाईयों की दूकानें लूट ली गईं। शहर के तमाम अंग्रेज ईसाई मार डाले गए। बहुत कम लोग भागकर किले में जा सके। शहर में बागियों की हुकूमत हो गई।

कोतवाली पर अर्धचन्द्र अङ्कित हरा झंडा फहरा दिया गया।

शहर के तमाम लुटेरे और बागी रात में गंगा तट पर इकट्ठे हुए। सन्यासी आया। ललकारकर बोला—"इलाहाबाद से हम अंग्रेजों का नाश करके रहेंगे। किले में छुपे अंग्रेजों को मारेंगे। खजाना लूटेंगे।"

"लेकिन किले में पंजाबी पलटन भी है।"

"वो हमारा साथ देंगे!"

नारों के बीच बागी तितर-बितर हो गये। उनके मुखिया किले पर आक्रमण की योजना बनाने लगे।

किले की पलटन बाहर गोली, बम और शोर सुन चौंक पड़ी। शायद बनारस के बागी आ गए। कुछ सिक्ख सरदार दौड़े। आते ही फाटक पर देखा—सिमसन रक्त से लथ-पथ खड़े हैं।

"क्या हुआ साब!"

अपने घोड़े पर अन्तिम करुण दृष्टि डाल सिमसन अन्दर आए।

"फाटक बन्द कर दो!"

कर्नल की आज्ञा से फाटक बन्द हो गया। घायल अवस्था में भी कर्नल ने अपनी परवाह न कर तमाम सिक्ख सरदारों को बुलाया।

"बाहर बगावत शुरू हो गई है!"

"हम लोग आपके साथ हैं। आपका जो हुक्म होगा, वही हम करेंगे!"

"मुकाबला करना होगा!"

"हम सब तैयार हैं!"

"तो पहले, आप लोगों को छोड़कर और दूसरे जो सिपाही हैं, उनके हथियार और वर्दी लेकर उन्हें किले से बाहर करना है। उनका मुझे भरोसा नहीं!"

कर्नल की आज्ञा का पालन हुआ।

सिक्ख पलटन दुर्ग की रक्षा के लिए कमर कस तैयार हो गई। चुनार से आयीं तोपें खड़ी कर दी गईं। अंग्रेज सेना ने अपनी बंदूकें तान लीं। गोलन्दाज जलते पलीते लेकर तोपों के पास आ खड़े हुए।

"फालिन..."

कर्नल का हुक्म गूँजा। तमाम हिन्दोस्तानी सिपाही भीगी बिल्ली की तरह पंक्तिबद्ध हो खड़े हो गये। सबके प्रकृतिस्थ होते ही कर्नल ने अपना हुक्म सुनाया।

हुक्म का पालन हुआ।

हिन्दोस्तानी सिपाही अपने हथियार सौंप वर्दियाँ उतारने लगे। सभी के निरस्त्र हो जाने पर किले का फाटक खोल दिया गया और वे सब बाहर कर दिये गए।

फाटक बंद हुआ।

अपने साथ किए गए इस दुर्व्यवहार और इस अविश्वास के कारण कितने ही युवक सिपाहियों का खून उबल पड़ा।

"हम इसका बदला लेंगे।"

"देखते क्या हो ? खजाना लूट लो!"

निरस्त्र सिपाहियों की बड़ी भीड़ शोर करती हुई बागियों से मिल गई। बागियों की संख्या और जोश बढ़ गया। सभी खजाने की तरफ दौड़े।

ठाँय। ठाँय !!

बागी कब माननेवाले थे! इस तेजी से वे दौड़े कि रक्षक रोक ही न सके। गोलियों की बौछार के बीच भी अधिकांश निहत्थे बागी रक्षकों पर टूट पड़े। खजाने का दरवाजा तोड़ दिया गया। गगनभेदी शोर के बीच खजाने की लूट शुरू हो गई, जिसके हाथ जो आया, ले भागा रुपयों से भरी थैलियाँ, जिसके पल्ले पड़ीं, ले लेकर भागने लगे। रुपयों के लिए छीना झपटी ने आपस में भी युद्ध शुरू कर दिया। एक दूसरे को मारकर जो बलिष्ठ होता, वही थैली ले भाग जाता। बागियों और लुटेरों की यह अनियंत्रित भीड़, खजाने के लिए आपस में मार-पीट करती हुई खजाना लूट-पाट कर भाग गई। किसी निराश सिपाही ने आग भी लगा दी।

❀

लार्ड कैनिंग के सामने विद्रोह के सारे चित्र थे। तमाम स्थानों से देर-अबेर में आपद् समाचार उन्हें प्राप्त हो चुके थे। प्रधान सेनापति को बार-बार पत्र देकर

वे अपनी ओर से आवश्यक हिदायतें दे चुके थे। फिर भी निश्चिन्त न हुए थे। कारण कि विद्रोह दबने के नहीं, फैलने के ही समाचार आ रहे थे। पश्चिमोत्तर सीमा प्रान्त, दिल्ली के अतिरिक्त बंगाल, बिहार, उत्तर प्रदेश के अन्यान्य नगरों से जैसे समाचार आ रहे थे, वे अत्यधिक चिन्ताजनक थे। मध्य भारत में भी आग सुलग चुकी थी। कलकत्ते के तमाम अंग्रेज घबड़ा गये थे। अधिकांश अपनी जान बचाकर स्वदेश भाग जाने की योजना बना रहे थे।

कलकत्ते के तमाम स्थानों पर गोरे सैनिकों का सख्त पहरा लग गया था। फिर भी अंग्रेजों के मन भय से खाली नहीं हुए। अपनी जाति और अपनी हुकूमत के खत्म होने के समाचार चारों ओर से आ रहे थे। सब घबराए हुए थे।

महारानी विक्टोरिया का जन्म दिवस और ईद का त्यौहार कलकत्ते में निर्विघ्न बिदा हो गया। कलकत्ते में फैली चर्बी और पित्ते की अफवाह का खंडन करते हुए लार्ड ने एक विज्ञप्ति भी निकाली, पर इसका कुछ असर न हुआ।

लार्ड कैनिंग, मंत्रि सभा के तमाम सदस्य तथा अन्यान्य उच्चपदस्थ अंग्रेज आफीसर दिल्ली के लिए विशेष चिन्तित थे। सभी का विश्वास था। अन्य स्थानों का विद्रोह दबाने के पूर्व दिल्ली पर अंग्रेजी अधिकार आवश्यक है। दिल्ली पर कब्जा होने का अर्थ है, अन्य स्थानों का विद्रोह अपने आप बैठ जायगा। अगर रहा भी तो वहाँ से दबाने में आसानी होगी। दिल्ली पर बहादुरशाह के अधिकार के कारण ही सर्वत्र विद्रोहाग्नि फैल रही है।

लार्ड कैनिंग ने प्रधान सेनापति के पास पुनः पत्र भेजा।

गवर्नर जनरल की मंत्री सभा ने एक कानून पास किया। जहाँ कहीं के सिपाही बलवा करेंगे, वहाँ के सर्वसाधारण के जानो माल की रक्षा का भार, शासन विभाग की किसी भी श्रेणी, किसी भी पद और किसी भी तरह के अख्तियारवाले कर्मचारी के हाथ दे दिया जायगा।

इस विद्रोह की सूचना लंदन भी भेज दी गई। साथ ही सहायता के लिए प्रार्थना की गई।

कर्नल नील मद्रास से अपनी टुकड़ी के साथ कलकत्ता आ गए। लार्ड

कैनिंग का पत्र प्राप्त होते ही वे चल पड़े थे। कर्नल नील की फौज के कलकत्ता पहुँचते ही अंग्रेजों में जान आयी।

कर्नल नील लार्ड के बँगले गए। अभिवादन कर बैठ गए।

लार्ड कैनिंग ने सारी स्थिति सामने रखी।

कर्नल नील सब कुछ समझकर मुस्कुराए—"अब आप चिन्ता न करें मैं आज ही रवाना होता हूँ।"

"बेहतर हो आप रानीगंज तक रेल से चले जाँय।"

"जी हाँ। जितने शीघ्र धमक सकूँ, अच्छा होगा। रोटी और कमल में इतनी ताकत नहीं है, माई लार्ड कि वे बंदूकें हजम कर सकें।"

कर्नल नील अपने चुने हुए साथियों और मद्रासी सैनिकों के साथ कलकत्ता में अब तनिक भी विलम्ब न कर चल पड़े। स्टेशन मास्टर को खबर भेज दी। इसी गाड़ी से उनकी फौज जायगी।

❀

कलकत्ता स्टेशन के प्लेटफार्म पर गाड़ी खड़ी थी। विलायत से आया बेडौल इंजन छक् पक् कर रहा था। कुछ बड़े लोग और कुछ यात्री ही थे। बाकी डिब्बे फौज के आदमियों के लिये खाली पड़े थे।

ट्रेन का समय हो गया था।

पाँच मिनिट अधिक हो गए।

स्टेशन मास्टर ने देखा, कर्नल नील अपनी फौज के साथ अभी तक नहीं आए।

"साब, गाड़ी लेट हो रही है।"

"कुछ देर और देखो!"

"साब, बात कानून के खिलाफ है। हम लोगों की नौकरी जाती रहेगी। बड़ी लाट के लिए भी गाड़ी लेट नहीं की जा सकती।"

"कुछ देर देख लो।"

कर्नल नील और उनके साथी नहीं आए। स्टेशन मास्टर बड़े पेशोपेश में पड़ा। पन्द्रह मिनट हो गए। गाड़ी छोड़ने का हुक्म देने की व्यवस्था करने की

सोच ही रहे थे कि सैनिक दिखलायी पड़े। कर्नल नील आ गये। उनकी सैनिक टुकड़ी डिब्बों में बैठने लगी।

"आपने बहुत देर कर दी। अब जल्दी कीजिए! आपकी सेना डिब्बों में बैठ पाए या न बैठ पाए अब हम पाँच मिनिट में गाड़ी छोड़ देंगे।"

"अच्छा!"—कर्नल नील क्रोध से भर गए—"तुम गाड़ी छोड़ दोगे।"

"हाँ साब, आप फौज के सिपाहियों पर अपनी हुकूमत चला सकते हैं, यहाँ नहीं!"

"सैटप!"—कर्नल नील ने चीखकर कहा—"माई आर्डर!"—पास खड़े एक आफीसर की ओर घूमकर उन्होंने कहा—"ड्राइवर पर बंदूक तान दो। जब तक हमारे सैनिक बैठ न जाँय, गाड़ी चलने न पावे। कब्जा कर लो।"

कर्नल नील की आज्ञा का तत्काल पालन हुआ।

सभी सैनिक बैठ गए तभी गाड़ी चली।

❀

शिमला की ठंडी हवाओं में आनन्द था। प्रधान सेनापति आनसन आनंद से बँगले में थे। अर्दली ने आकर उनका यह आनंद भंग कर दिया। अम्बाला से आये एक सैनिक अंग्रेज जवान का पत्र हाथ आया। आनसन ने पढ़ा। दिल्ली और मेरठ की घटनाओं का विवरण था।

पढ़कर आनसन ने पत्र रख लिया।

"कहो, शाम को उत्तर दे देंगे।"

अर्दली चला गया। आनसन ने पत्र पर विचार नहीं किया। यही समझा कुछ लोगों ने उपद्रव किया है। मेरठ और दिल्ली के सैनिकों को वह हुक्म दे देंगे, विद्रोह दब जायगा। शायद रुहेलखंड के पिंडारे आ मरे हैं।

दोपहर को पुनः उनके आनंद में खलल पड़ा।

लार्ड कैनिंग का पत्र था।

उस पत्र में विद्रोह का पूरा विवरण था। आनसन के कान खड़े हुए। तत्काल इधर-उधर आदेश भेजे।

दूसरे दिन लार्ड कैनिंग का पुनः एक पत्र आया। इससे आनसन और

चिन्तित हुए। मसूरी की गोरखा पलटन को पश्चिमोत्तर प्रान्त की ओर बढ़ने का हुक्म दे, स्वयं भी तैयारियाँ करने लगे।

❀

"पानी! आह!! पानी माँ! पानी दो माँ!"—प्यास के मारे अपने बेटे को छटपटाते देख माँ का हृदय रो पड़ा। पास खड़े साथी से उसने पानी लाने की प्रार्थना की।

सैनिक तैयार हो गया। किसी प्रकार साहस कर वह कुँए की ओर बढ़ा। कुएँ के पास की दीवार एकदम टूट गिरी थी और विद्रोही सिपाहियों के निशाने सीधे कुएँ तक आते थे। पानी लाने के प्रयास में अब तक कई अपने प्राण दे चुके थे।

पानी काफी गहरे भी था। कोई साठ फीट नीचे।

सैनिक दौड़ा।

बाल्टी कुएँ में छोड़ वहीं लेट गया।

बाल्टी खींचने लगा पर तभी गोली छूटी और रस्सी बाल्टी कुएँ में ही चली गई।

सैनिक वहीं ठंडा हो गया।

घिरे अंग्रेज बूँद-बूँद पानी के लिए तड़पने लगे। बड़ी मुश्किल से रात में जो कुछ पानी इकट्ठा कर पाते, उसीसे काम चलाते। वह अपर्याप्त ही होता। कितने ही अंग्रेज,, स्त्री बच्चे एक-एक कपड़े से पड़े थे। उनके अधिकांश वस्त्र, मोजे आदि घायलों की पट्टियाँ बन चुके थे। भूखे प्यासे अंग्रेज घिरे पड़े थे। सेनापति ह्वीलर मृत्यु के इन अन्तिम क्षणों में भी सहायता आने की आशा कर रहे थे। विश्वास करते-हर आनेवाला दिन-उनकी मुक्ति का दिन है।

खाद्य सामग्री एकदम समाप्त थी। घोड़े को मारकर उसका माँस पकाकर किसी प्रकार भूख शान्त की गई थी। घोड़े के माँस का झोल अपनी पत्नी को देने के लिए जाते वक्त एक गोरा गोली खाकर ढेर हो गया। इस प्रकार प्रतिक्षण संकट बढ़ते ही जा रहे थे। टूटे आहाते में घिरे तोपों और बन्दूकों से अपनी रक्षा करते हुए तमाम अंग्रेजों की बुरी दशा थी। सबकी मुखाकृतियाँ क्रूर डरावनी, पागलों सी हो रही थीं। सेनापति ह्वीलर के घायल बेटे का सिर तोप के गोले से जब से उड़ा था, तब से उनकी भी दशा विक्षिप्त सी हो गई थी।

आठ-आठ दस-दस बूँद पानी के लिए अंग्रेज तरसते। इतने से ही बड़ी मुश्किल से वे अपने ओंठ और कंठों का सूखापन शान्त करते।

अधिकांश गोरे नंगे हो गए थे। कुछ कोपीन बाँधे थे। तोपों में भरने के लिए उन्होंने अपने वस्त्र भी दे दिए थे।

शाम के भोजन का कोई प्रबन्ध न था।

भूखे प्यासे सब पड़े थे।

रात हो गई।

एक बाल्टी पानी प्राण की बाजी लगाकर लाया गया और थोड़ा-थोड़ा बाँट दिया गया। लोगों ने अपने कंठ शीतल किए। सभी गोरों को भयावह मौत नाचती दिखलायी पड़ रही थी। मौत की तरह डरावनी आँखों वाले चेहरे लिए वे एक दूसरे को देखा करते।

सहसा एक आदमी सकपकाया। उसने देखा, हाते के पास कोई घूम रहा है।

कौन ?

वह चौंका। देखा—कोई जानवर। साँड़!

तुरन्त उसने अपने पास के लोगों को उठाया। साँड़ सामने देख, उन सबके मुँह में पानी आ गया। गोलियाँ छोड़ उसे मार डाला। गोलियों की आवाज सुन, घेरा डाले सिपाही भी जबाब देने लगे।

"जल्दी खींचो!"

"साँड़ को मारना पाप है। सिपाही देख लेंगे तो ले जायँगे और हम पर मुसीबत भी आ जायगी!"

तुरन्त रस्सियाँ फेंकी गईं। अपने साथियों की भूख मिटाने लिए कुछ मरने को तैयार हुए। कूदकर। बाहर आए। गोलियों की बौछार के बीच उन लोगों ने साँड़ को रस्सियों से बाँध दिया। भीतर के लोगों ने साँड़ को खींच लिया। बाहर कूदे चार आदमियों में से एक ही बचकर लौट सका। शेष तीन वहीं ढेर हो गए।

❀

शिमला में भगदड़ मच गई।

गोरों ने खजाने को घेरकर तोपें लगा दीं। सारे नगर में सनसनी फैल गई। इधर-उधर रहनेवाले अंग्रेज, स्त्री बच्चे भाग चले और सबने गिरजाघर में आकर शरण ली।

तमाम अधिकारी घबड़ा गए।

यकाएक यह क्या हो गया?

सारा शहर मुर्दा हो गया। लोग भागकर अपने घरों में जा छुपे। शहर में अफवाह ने मुर्दनी फैला दी। यकायक दोपहर को खबर आई कि मसूरी की गोरखा सेना बागी हो गई है और शिमला लूटने, अंग्रेजों को कत्ल करने वे आ रहे हैं। अंग्रेजों ने आत्म रक्षा की तैयारियाँ कर लीं। मरने मारने को तैयार हो गए। फिर भी इस घटना से उनके हृदय दहल गए। विद्रोह की आग को यहाँ तक फैलते देख, उनको इस बात पर विश्वास हो गया कि देश के अन्य भागों से उनकी हुकूमत खत्म हो गई है। अब तक की सुनी हुई सारी अफवाहें, उन्हें सत्य प्रतीत हुईं।

मसूरी से सम्पर्क स्थापित हुआ।

"क्या गोरखा बागी हो गए?"

"किसने कहा?"

"यहाँ अफवाह है। सारा शहर मुर्दा हो गया है!"

"नहीं, गोरखा सेना फिल्लौर जाने से इन्कार कर रही है। उनकी तनखाह बाकी है। रुपिया मिले तो जाँयगे!"

"तो दे दो!"

"दिया जा रहा है!"

"अब क्या हालत है?"

"वे चलने को तैयार हैं!"

"और सब ठीक है?"

"हाँ!"

मेजर बैगट के इस आश्वासन से शिमला का आतंक टूट गया।

❀

रात ढलती जा रही थी। छावनी के अन्धकार में एक छाया बढ़ रही थी। सन्तरी की निगाह उस पर गई। कड़ककर बोला—"हूज देयर...हाल्ट।"

छाया ने हाथ हिलाया। इस क्रिया में एक संकेत भी था। सन्तरी ने आगे कुछ न कहा। वह छाया चुप-चाप छावनी में बढ़ गई।

एक बारक के बाहर धीमी धीमी लालटेन जल रही थी। पन्द्रह बीस सिपाही बैठे हुए थे। दिखाने के लिए शतरंज बिछी थी, पर वे आपस में बातें कर रहे थे।

एक नया आदमी वहाँ पहुँचा। सबने उसकी ओर देखा।

"क्या खबर है, उल्फत!"

"सब ठीक है। कुछ पैदल और कुछ घुड़सवार ही साथ हैं। लेफ्टिनेंट पालिसर इन्चार्ज है। पाँच लाख रुपया है!"

"पाँच लाख!!"

"हाँ दो लाख यहाँ के खजाने का। इस तरह कुल सात लाख रुपया बनारस जाने वाला है!"

सिपाही आपस में मशविरा करने लगे।

❀

ठाँय!!

गोली छूटी। छावनी से बन्दूक की आवाज। तमाम गोरे घबड़ाकर कचहरी की तरफ भागने लगे।

"अंग्रेजों को मारो।"

"इन्होंने धर्म बिगाड़ा है!"

"मारो!"

बागी हो गए तमाम सिपाही। देखते-देखते क्वार्टर मास्टर और सर्जन को काट डाला गया। घबड़ाकर भागते हुए अंग्रेज अपने स्त्री बच्चों के साथ कचहरी में इकट्ठा हो गए। कचहरी के तमाम अफसरों और कुछ हिन्दोस्तानियों ने उनकी रक्षा की।

बागी सिपाहियों ने लूट-मार शुरू कर दी।

"अरे, दौड़ो, खजाना निकल गया !"

"कहाँ ?"

"पालिसर ले गया !"

आजमगढ़ के तमाम बागी दौड़े। कुछ ही मील गए हुए पालिसर को घेर लिया। पालिसर मुट्ठी भर आदमियों के साथ टिक न सका। बागियों ने खजाने पर कब्जा कर लिया। पालिसर और उसके साथी बागियों के हाथ मारे गये। सात लाख रुपया लूट लिया गया।

लूटपाट कर विद्रोही वापस आए।

देखा—कचहरी, छावनी खाली पड़ी है। न आफीसरों का पता है, न गोरों का! इसी बीच मौका पाकर सब गाजीपुर की तरफ भाग गये हैं।

विजय घोष करते हुए बागी दिल्ली की ओर बढ़े। कुछ ने फैजाबाद का रास्ता पकड़ा।

*

सिकरौल में सनसनी मच गई! जौनपुर आजमगढ़ का समाचार आ गया था। बनारस के तमाम आफीसर घबड़ाए। सिपाहियों का हौसला बढ़ने लगा। पानसनबी को खबर लगी। शहर के सिपाहियों और बदमाशों के बीच आजकल सम्पर्क है। रात को मन्त्रणाएँ होती हैं।

पानसनबी बड़े फेर में थे।

समझ में न आ रहा था। क्या करें? हिन्दोस्तानी सिपाहियों के हथियार और वर्दी ले लेने की इच्छा बार-बार मन में होती, पर अकेले कुछ कर न पा रहे थे। हिन्दोस्तानी पलटन का जितना डर न था, उससे कहीं ज्यादा सिक्ख पलटन का डर था। सबसे अधिक खतरा इसी पलटन से था। अतएव एक भी ऐसा कदम उठाने का साहस उन्हें न हो रहा था कि जिससे वे नाराज हो सकें।

रानीगंज से खबर आने पर उन्होंने ठंडी साँस ली।

कर्नल नील अपनी सेना के साथ रानीगंज उतरे हैं और घोड़ों की डाक गाड़ी पर काशी आ रहे हैं।

जज, कमिश्नर और तमाम फौजी अफसर पानसनबी के बँगले पर इकट्ठे हुए

गार्डन बोले—"सिपाहियों की हरकतें बढ़ रही हैं !"

"हाँ, आजमगढ़ की खबर से इन लोगों में और जोश आ गया है !"

"नील आ रहे हैं। आने दीजिए। तब सब ठीक हो जायगा !"

"अगर उनके आने से पहले यहाँ बगावत हो गई तब ?"

"हाँ, हाँ, हो सकती है। बगावत फैलना कोई ताज्जुब की बात नहीं ! कोई ठिकाना नहीं-किस क्षण क्या हो जाय ?"

"......"

"इन लोगों के हथियार ले लिये जाँय !"

"अभी ऐसी जल्दी करने से तो और मुसीबत आ जायगी।"

सर्व सम्मति से यही बात तय पायी गई। अंग्रेज चुपचाप सिपाहियों की गतिविधियों पर दृष्टि रखते हुए कर्नल नील के आने की प्रतीक्षा करने लगे।

मेजर बारेट सिपाहियों पर बहुत विश्वास करते थे। हथियार छीन लेने की बात से उनको काफी दुःख हुआ। उनको विश्वास था कि सिपाहियों के हथियार छीन लेने से उनके मन को दुःख होगा और वे अंग्रेजों पर अविश्वास कर, राज भक्त होने पर भी विद्रोह कर देंगे।

*

प्रातः कर्नल नील आ गए। कर्नल के आने की खबर सारे सिकरौल में पड़ी फौजों में फैल गई। सिपाही चिन्तित हो गए। अन्य स्थानों के समाचार प्राप्त हो चुके थे। अतएव उन सबको अन्देशा होने लगा, शस्त्र-वर्दी छिन जायगी। सिपाहियों में फुसफुसाहट फैल गई। मेजर बारेट पर अनेक हिन्दोस्तानी अफसरों को विश्वास था।

घोड़े पर सवार जैसे ही वे छावनी आए, अफसरों ने उन्हें घेर लिया। मेजर बारेट ने नीचे उतर उन सबका अभिवादन स्वीकार किया।

"हमने सुना है, कर्नल नील आ गए हैं।"

"हाँ, पानसनबी ही साहब के बँगले पर हैं।"

"हम लोग आप से एक बात कहना चाहते हैं, क्योंकि हम लोग आपको अपना हितैषी समझते हैं।"

"कहिए ।"

"हम लोगों पर किसी तरह का अविश्वास न किया जाय !"

"यह मैं कह चुका हूँ ।"

"हम लोगों की वर्दी और हथियार छिन जाँयगे, तो हम लोगों को दुःख होगा और शायद..."

"मैं आप लोगों की मनः स्थिति समझता हूँ । मैं कर्नल साहब से मिलकर आपकी बात कहूँगा ।"

अफसरों को कुछ आशा बँधी । उन लोगों को द्विविधा में छोड़ मेजर बारेट पानसनबी साहब के बँगले आए । तमाम अंग्रेज अफसर उपस्थित थे । कर्नल नील के साथ सलाह मशविरा हो रहा था ।

"बिलकुल ठीक । अभी निरस्त्र कर दिया जाय ।"

सुनते ही मेजर बारेट चौंक पड़े । बोले—"एक मिनिट..."

"सैनिकों के हथियार लेना उचित नहीं है ।"—मेजर बारेट जोर देकर बोले—"मैं अभी उन लोगों से मिलकर आ रहा हूँ । सब राज भक्त हैं !"

"नो !"—कर्नल नील ने टेबिल पर घूँसा मारा—"एक भी हिन्दोस्तानी का विश्वास नहीं । ये लोग पीठ पीछे गोली मार देनेवाला, नमक हराम आदमी है ।"

"नहीं, साब ! ऐसी बात नहीं है ।"

"तुम चुप रहो । हम लोगों के बीच बोलने वाला, तुम अदना सा मेजर क्या है ? गेट आऊट !"

कर्नल नील बँगले से निकले । अपने अंग्रेज साथियों के साथ उन्होंने व्यवस्था हाथ में ली । तोपें तैयार कर परेड के मैदान में खड़ी कीं । गोरी सेना को अपनी बंदूकों सहित तैयार रहने का हुक्म दिया ।

पाँच बजते ही बिगुल बजा ।

परेड का बिगुल ।

परेड के मैदान सभी हिन्दोस्तानी सिपाही अपनी वर्दी पहिन और हथियार लेकर नियमानुसार उपस्थित हुए । परेड मैदान में पानसनबी कर्नल नील और अन्यान्य सभी गोरे अफसर थे । गोरी सेना तैयार खड़ी थी । तोपों के पास गोलन्दाज खड़े थे । यह रंग ढँग देख सभी भाँप गए । कुछ होने वाला है ।

अटेनशन होने पर पानसानबी ने हुक्म सुनाया।

"सभी हिन्दोस्तानी सिपाही अपने हथियार और वर्दियाँ उतार दें।"

इस आर्डर क होते ही सबके चेहरे सूख गए।

आर्डर फिर दुहराया गया। सिपाहियों ने हथियार रखना शुरू किए।

❀

इलाहाबाद के किले को छोड़ शेष तमाम शहरी क्षेत्र में बागियों की हुकूमत थी। कोई कायदा न था। न कानून था। लुटेरों की बन आई थी। जिसकी लाठी, उसकी भैंस। शहर में अराजकता का बोल-बाला था।

अंग्रेजों का किले पर कब्जा था।

फसीलों पर तोप लगाए वे बागियों को रोक रहे थे। कई बार बागियों ने प्रयास किया, पर हारकर लौटना पड़ा। किले पर कब्जा करने की अपेक्षा उन लोगों का ध्यान लूट की ओर अधिक था। संख्या और शक्ति में अधिक रहने पर भी वे कई हिस्सों में विभाजित हो गए थे। उनमें कोई एक संगठन न था। छोटे छोटे सरदार अपनी-अपनी टुकड़ियों के साथ इधर-उधर लूट खसोट-करते रहते।

अंग्रेजों के साथ किले में बन्द सिक्ख पलटन उनका पूरा साथ दे रही थी। किले में रसद भी बहुत मात्रा में थी। अंग्रेज निश्चिन्त हो किले पर अधिकार किए पड़े थे। कर्नल नील के बनारस पहुँचने की खबर उन्हें मालूम हो गई थी, इसलिए अब वे सब निरापद थे।

इलाहाबाद में कुछ ही अंग्रेज ईसाई मारे गये। बाकी सब किले में रक्षित थे।

❀

सिपाहियों ने हथियार रख दिये। गोरे सैनिक उन्हें उठाने बढ़े। तैयार तोपें और तनी बंदूकें देख अधिकांश सिपाही यह समझे कि उनके हथियारों को हथियाने के बाद ही सबको तोप से उड़ा दिया जायगा। संभव है, यही गति हो, तो इससे अच्छा, लड़ते हुए मरना। एक मुसलमान सिपाही अपने को जब्त न कर सका।

सामने उतारकर रखी अपनी बंदूक उसने उठा ली।

ठाँय ।

"देखते क्या हो । मारो इनको ! लड़ते-लड़ते मरो ।"

इस आवाज ने और गोली खाकर गिरे हुए एक गोरे ने परेड के मैदान का रूप ही बदल दिया । बिजली सी कौंधी । तमाम सिपाहियों ने अपने हथियार उठा लिए और हमला बोल दिया । गोरी पलटन असावधान न थी और न ही कर्नल नील । युद्ध छिड़ गया । तोपें गोले फेंकने लगीं । बन्दूकें कड़कने लगीं ।

हिन्दोस्तानी पलटन और गोरे आमने-सामने भिड़ गए ।

गोले बरस रहे थे ।

सिपाहियों की लाशें गिर रही थीं ।

गोलियाँ चल रही थीं ।

बागी मर रहे थे ।

फिर भी बागी सिपाहियों की संख्या कम न थी । बड़ी वीरता के साथ वे सब टिड्डी दल से बढ़े और गोरों पर टूट पड़े । तोपें और बन्दूकें उन्हें रोक न सकीं । गोरे पटापड़ मर-मर गिरने लगे । भीषण नरमेध परेड के मैदान होने लगा । सभी गोरे विद्रोहियों का मुकाबला कर रहे थे ।

मेजर बारेट गुमसुम खड़े थे । उनकी आशंका सच निकली । सिपाहियों ने उन्हें घेर लिया ।

"ठहरो, मेजर बारेट हैं ।"

"साब, आप हमारे साथ आइए ।"

कुछ सिपाही मेजर बारेट को अपने साथ ले गये और उन्हें सुरक्षित स्थान तक पहुँचा दिया । मेजर बारेट पर किसी ने हाथ भी न लगाया ।

मात खाने पर भी गोरी पलटन पीछे हटने का नाम न ले रही थी ।

सहसा परेड मैदान में देशी घुड़सवार पलटन और सिक्ख पलटन आ गई । वे भी बागियों से मिल गये । अब क्या था ? दोनों ओर से भयंकर मार शुरू हो गई । अंग्रेज तोपें छोड़ पीछे हट गये । देखते-देखते मैदान साफ हो गया । मैदान बागियों के हाथ रहा ।

युद्ध रात को समाप्त हुआ । बची हुई गोरी सेना छिप गई । गोलियों की

कड़क और बंदूकों की आवाज तोपों की गर्जना के साथ विजयी बागी जयघोष करते हुए तितर बितर हो गये।

❀

"अब आप सब सँभालिए!"—पानसानबी बोले।

"यह आपको कहने की जरूरत नहीं।"—कर्नल नील बोले—"बड़ा धोखा हुआ। अच्छा! मैं एक एक से बदला लूँगा।"

काफी थक जाने और रात हो जाने पर भी कर्नल नील ने साहस न छोड़ा अपने सब साथियों को बटोरा उन्होंने। फिर तैयारी की। जब कि बागी सिपाही विजय की खुशी मे एक दूसरे के सामने शेखी हाँक रहे थे, उस समय कर्नल नील अपने चुने-साथियों के साथ रात के अँधेरे में परेड मैदान की ओर बढ़ रहे थे।

तोपें ज्यों की त्यों पड़ी थीं।

बागियों ने उन पर अपना अधिकार कर, गोरों को भगाने के बाद अरक्षित वस्था में ही छोड़ दिया था।

कर्नल नील ने तोपों पर अपना अधिकार कर लिया।

सिपाहियों के इस विद्रोह से ईसाई और पादरी घबड़ा गए। बहुत से चुनार भागने की तैयारियाँ करने लगे। बहुतों ने कलक्टरी-कचहरी में शरण ली। प्रायः सभी को यह विश्वास हो रहा था कि इस बगावत का असर शहर में भी पड़ेगा। लुटेरे और बदमाशों की बन जायगी पर शहर में पूर्ण शान्ति रही कहीं कुछ न हुआ।

सूर्योदय से पूर्व ही कर्नल नील ने तोपों के साथ मार्च कर दिया। अंग्रेजों की इस गहरी मार के आगे बागी ठहर न सके। अंग्रेजों को भगाने और मारने के पश्चात् अधिकांश सिपाही रात में ही अपने घरों की ओर चल पड़े थे। कोई संगठन या नियन्त्रण न था। थोड़े बहुत बारकों में पड़े रह गये थे।

मुकाबला हुआ। बागियों को भागना पड़ा। जो सिपाही घेरा डालकर कैद आए उन्हें गोली मारने का काम शुरू हो गया। कर्नल नील दया जानते ही न थे कुछ ही घण्टों में अंग्रेजों का फिर अधिकार हो गया। सिपाही भाग गये। बड़ी संख्या में मारे गये।

❀

कर्नल नील को इस बात का विश्वास हो गया कि अधिकांश भागे हुए बागी सिपाही आसपास के गाँव में छुपे हुए हैं। कर्नल एक भी सिपाही को दंडित किए बिना छोड़ने के पक्ष में न थे। कर्नल नील ने बनारस-डिवीजन में फौजी कानून की घोषणा कर दी। आसपास के गाँवों में सिपाहियों का पता लगाने के लिए आदमी छोड़े गए। कर्नल नील का क्रोध अपनी चरम सीमा पर था। इन काले आदमियों का इतना साहस!

छावनी के पास कुछ लड़कों को खेल सूझा।

झंडा उड़ाया जाय। ढोल बजाया जाय। अंग्रेज अंग्रेज खेलें। एक लड़का घर से ढोलक ले आया। एक लड़के ने कमीज को डण्डे से बाँध झंडा उड़ाया।

"मारो! मारो!!"

लड़कों ने शोर किया।

"तुम अंग्रेज हो!",

"हम तुमको मारेगा!"

चार-पाँच लड़के जो अंग्रेज बने थे, उनके साथी उन पर टूट पड़े। हँसते खिलखिलाते गुत्थम-गुत्था करने लगे। इस खेल में लड़कों को बड़ा मजा आ रहा था।

कर्नल नील चले आ रहे थे। लड़कों का यह खेल वे देख रहे थे। भड़क गये। लड़कों को पकड़ लिया। फौजी अदालत हर समय बैठती। लड़के पेश हुए जज को आश्चर्य हुआ। कर्नल नील ने एक न मानी!

"फाँसी देना होगा आपको। एक भी विंगारा नहीं छूटना चाहिए!"

लड़कों को तुरन्त फाँसी पर लटका दिया गया।

❀

कर्नल नील ने गाँव के गाँव उजाड़ना शुरू किये। आस-पास के किसी भी गाँव पर इस बात का जरा भी शक होता कि वहाँ बागी सिपाही छुपे हैं, कर्नलनील का हुक्म होता, गाँव फूँक दिया जाता। जानवरों की तरह गाँववालों को बेतों से पीटा जाता। बूढ़े बच्चे, स्त्रियों-किसी पर रहम नहीं।

पशुता मनुष्य रूप में गाँवों में कूद रही थी।

इस क्रूर दमन से चारों तरफ मौत छा गई ! बिना अपराध व्यक्तियों को फाँसी पर लटकाया जाने लगा। फौजी कानून की आड़ में घोर अत्याचार खुलकर नाचने लगा। बनारस-डिवीजन में हाहाकार मच गया। गोरों के आने की खबर पाते ही लोग गाँव छोड़-छोड़ भागने लगे।

❀

कर्नल नील ने अपनी सेना के साथ मार्च किया। बनारस से सारा साज सामान बटोर और अंग्रेजों की पूरी सत्ता जमाकर आगे बढ़े। कर्नल नील के नेतृत्व में चलनेवाली इस सेना ने, राह में जो भी गाँव मिला, उजाड़ा, आग लगाई। लोगों को उलटा लटकाकर बेतों से मार-मार अधमरा किया। हर गाँव में छुपे बागी सिपाहियों के नाम पर जुल्म चला।

अत्याचारों से ग्रामीण थर्रा उठे।

गाँव छोड़-छोड़ भागने लगे।

स्त्रियों और बच्चों की दुर्गति अपनी पराकाष्ठा पर थी। कर्नल नील एक न सुनते थे। उनके पास दो ही शब्द थे। मारो और लूट करो !

चाहे दिन हो या रात गाँव सामने देखते ही फौज टूट पड़ती। औरतों बच्चों को घर से घसीटा जाता। स्त्रियाँ नंगी की जातीं। उन्हें बेतों से पीट-पीट पूछा जाता—

"बोल, इस गाँव में कितने सिपाही छुपे हैं !"

"कोई नहीं ! कोई नहीं !"

"......"

"कोई नहीं ! कोई नहीं !"

"......"

"एक भी नहीं !"

पच्चीसों आदमियों की बात का भी कर्नल नील को विश्वास न होता। विलायत में ही उन्होंने यह सीख लिया था कि काले आदमी की बात का भरोसा नहीं !

फिर बच्चों की बारी आती। बच्चे झूठ नहीं बोलेंगे और फिर मार खाने पर है !

"पिटो !"

नन्हें-नन्हे बच्चों पर सड़ासड़ बेंत पड़ते। मछली से तड़पते, मासूम बच्चों की देहों से रक्त छलछलाने लगता।

"बताओ!"

"....."

"बोलो, कौन सिपाही यहाँ छुपा है!"

बच्चों की इस दुर्गति के बाद भी कर्नल को भरोसा न होता। उनके मन से शक का काँटा न निकलता और वे झोपड़ियों में आग लगवा देते। ग्रामीणों की भीड़ की भीड़ रोती-कलपती सिर पीटती रह जाती।

नादिरशाह और तैमूरलंग के अंशों से बने कर्नल नील इलाहाबाद की ओर बढ़ते जा रहे थे। एक-एक हिन्दोस्तानी से वे अपने गोरों की मौत का भयंकर प्रतिशोध लेने के लिए कटिबद्ध थे।

❀

इलाहाबाद आते ही कर्नल नील की प्रसन्नता का ठिकाना न रहा। इलाहाबाद के किले के लिए वे कुछ चिन्तित थे, पर यह सुनकर कि किले पर अंग्रेजों का ही अधिकार है, उन्हें अत्यधिक प्रसन्नता हुई। तुरन्त किले में अपने साथियों से मिले और अपने आफीसरों को इलाहाबाद शहर में छोटी-छोटी टुकड़ियों के साथ भेज दिया।

शहर मे अराजकता थी।

लुटेरों और बदमाशों का भी कोई संगठन होता है!

एक ही दिन में इलाहाबाद में अंग्रेजी सत्ता जम गई। कर्नल नील ने दूसरे ही दिन अपनी शासन व्यवस्था स्थिर की। इधर-उधर छुपे तमाम आफीसर बाहर निकले। राजकाज पूर्ववत् प्रारम्भ हो गया।

कलकत्ते की मन्त्री सभा द्वारा बनाया नया कानून यहाँ लागु हो गया। हर एक छोटा आफीसर काफी अधिकार पा गया। यहाँ फाँसी की सजा देने का अधिकार सभी को मिल गया। मामूली-मामूली से अपराध में और साधारण शक में नागरिक धरे जाने लगे।

"फाँसी!"

"......"

"फाँसी !"

"....."

"फाँसी !"

हर आफीसर यही आर्डर देता। फाँसी का ऐसा बाजार गर्म हुआ कि प्रति दिन फाँस लगने लगी। इलाहाबाद का बटवृक्ष पत्तों के बदले मुर्दों से फूल गया।

सैकड़ों निरापराध व्यक्ति फाँसी पर लटका दिये गए। कर्नल नील भयंकर सख्ती के साथ इलाहाबाद के विद्रोह का प्रतिशोध लेने लगे।

❀

ढाई सौ से अधिक अपने साथियों की लाशों को कुएँ में भर देने के बाद घिरे अंग्रेज एकदम हताश हो गये। खाद्य सामग्री के पश्चात् अब कारतूस और बारूद भी समाप्ति पर आ गई थी। लगातार गोलाबारी के कारण कुछ तोपें भी फट गई थीं।

बीमार, असहाय स्त्री बच्चों को लेकर बागियों को चीरते हुए भागने की ताकत भी न थी इसलिए सबने यही तय किया कि लड़ते-लड़ते मारा जाय। असहायों और बच्चों को गोली मार दी जाय। इस भयंकर निर्णय के साथ दूसरे दिन घिरे अंग्रेजों ने अपना जौहर करने का निर्णय किया।

टामसन का चेहरा सूख गया था। चिन्तित हो इसी निर्णय पर सोच रहे थे। साँझ का झुटपुटा बढ़ रहा था। सहसा चौंक पड़े। पास खड़ा एक साथी किसी की ओर बन्दूक का निशाना साध रहा है।

देखा—एक स्त्री—ईसाई स्त्री।

"ठहरो!"

"..."

"इसे आने दो!"

वह ईसाई स्त्री आहाते में आयी। टामसन ने देखा, उसके हाथ में एक पत्र है।

"किसने भेजा?"

"नाना साहब ने !"

टामसन की उत्सुकता बढ़ी। बागी नाना साहब का क्या मन्तव्य है, वह इस पत्र से स्पष्ट हो जायगा। उस स्त्री को अपने साथ लेकर वह सेनानायक के सामने गए। ह्वीलर बहुत दुबले हो गये। चेहरा मौत के पंजों की खरोंचों से भरा था।

"क्या है ? यह स्त्री कौन है ?"

"नाना साहब का खत लेकर आई है।"

सेनापति ने पत्र ले लिया। खोलकर देखा। पत्र पर किसी के हस्ताक्षर न थे, पर पत्र की लिखावट और अशुद्ध भाषा देखते ही वे ताड़ गए, पत्र किसने लिखा है ? पत्र अजीमुल्ला ने लिखा है। पत्र का मुख्य आशय था—महारानी विक्टोरिया की प्रजा के वे लोग, जिनका सम्बन्ध लार्ड डलहौजी की नीति से नहीं है, हथियार डालकर आत्मसमर्पण कर देंगे तो इन्हें इलाहाबाद तक निरापद पहुँचा दिया जायगा !"

ह्वीलर ने अपने साथियों को बुलाया।

पत्र पेश किया गया।

"हमारे स्त्री बच्चों और घायलों की सेवा का जब कोई प्रबन्ध नहीं है, तो हम लोगों के लिए अब युद्ध जारी रखना असम्भव है। यदि हमें इलाहाबाद तक पहुँचा दिया जाता है, तो इस प्रस्ताव को स्वीकार कर लेना चाहिए !"

"और इलाहाबाद में हम फिर घिर गये तो ?"

"क्या इलाहाबाद में हमारा कुछ भी नहीं है !"

"ऐसी बात नहीं है, भाई। सुना है, हमारी फौज इलाहाबाद में है। सुलह कर लेना ही अच्छा होगा !"

"अब सुलह ? इतने कष्ट झेलने के बाद सुलह ? अब या तो हम मरेंगे अथवा इन लोगों को तिल-तिल मारेंगे !"

"अभी इतनी उत्तेजना से काम नहीं चलेगा, मेरे भाई। पहिले नाना से सब समझ बूझ लो !"

बहस के बाद यही तय हुआ कि कैप्टन मूर ह्वीटिंग और रीड नाना धुंधुपंत से मिलें और पहिले शर्तें तय करें !

❀

बहादुरशाह नाम मात्र को बादशाह थे।

सिपाहियों के जी में जो आता करते। चार बड़े आफीसर जहाँ बैठ जाते और जो फरमान बादशाह के नाम निकाल देते उस पर अमल होता। रियाआ के लिए कोई कानून कायदा न था। सिपाही अपने लिये चाहे जहाँ से टैक्स वसूल कर लेते। जो जी में आता करते। रँगरेलियों का दौरदौरा था। न कोई शासन था। न कोई संगठन! दल के दल दूसरे स्थानों से बागी सिपाही आते। उनका खूब उत्साह से स्वागत होना और खूब धूमधाम रहती। सिपाही हथियार बाँधे हर समय मौज मस्ती लेते रहते। न कोई परेड होती और न अभ्यास ही। बादशाह की जय जयकार और अंग्रेजों के नाश के अतिरिक्त कोई बात मिलकर न होती।

बहादुरशाह सब देख रहे थे। विवश थे। वृद्ध शरीर में इतनी शक्ति न थी कि दौड़ धूपकर सकें। बेगम ज़ीनतमहल जितना कर सकती-कर रही थी, पर, औरत होने के कारण उसकी गतिविधि सिर्फ शाही महल तक ही थी। इससे आगे कदम उठाने का हौसला उसमें न था। औरत होने के नाते ऊँचे ओहदेवाले सिपाही उसकी कुछ सुनते ही न थे।

बेगम जीनत महल इस अव्यवस्था से बड़ी दुःखी थी। मौका बहुत अच्छा था। अगर सब सिपाही संगठित होकर कुशल नेतृत्व में दिल्ली पर अपना शासन जमा एक बारगी ही अंग्रेजों को खत्म कर चारों तरफ बढ़ना शुरू कर दें, तो इसमें शक नहीं कि मुगलिया खान-दान की हुकूमत फिर दूर-दूर तक इस मुल्क में फैल जाय। फिर क्या मजाल कि कभी इस धरती पर अंग्रेजों के पाँव जम सकें। यह सब कर सकना बड़ा मुश्किल हो रहा था।

दिल्ली के पास ही अंग्रेजी फौज हिन्दूराव के बाड़े में पड़ी थी। एक तरह से दिल्ली घिरी ही हुई थी। अगर अंग्रेजों की मदद के लिए इधर-उधर से फौज आ जाय तो दिल्ली हाथ से जाते भला देर लगेगी! बेगम जीनत महल यही सोच-सोच घबड़ा रही थी। एक सुनहरा मौका हाथ से जा रहा है। सिपाही हैं कि सब यहाँ वहाँ बिखरे हुए। सबकी खिचड़ी अलग पक रही है। हिन्दूराव के बाड़े में पड़े मुट्ठी भर अंग्रेजों को मार भगाने की कोई सम्मिलित योजना ही नहीं बनती।

तेईस तारीख को लड़ाई क्या हुई! एक नाटक हो गया। तब से सिपाहियों की हिम्मत ही जैसे पस्त पड़ गई है। इस स्थिति से और निराशा हो रही है।

बादशाह का दिमाग भी कुछ ठिकाने नहीं है। हर समय अपने कमरे में पड़े रहते शेर गुनगुनाया करते हैं! कुछ खोये-खोये घबराए रहते हैं।

चारों तरफ सिपाहियों के झुंड है। सारा नगर जैसे सैनिकों से भर गया है। नियंत्रण कहीं नहीं। बड़े-बड़े चरागाहों में चरनेवाले भेड़-बकरी के झुंड से सिपाही एक बड़ी संख्या में मुगलिया राजधानी में हैं। शाहिमहल से जीनत महल अक्सर देखती एक बड़ी ताकत दिल्ली में फैली है, बिखरी पड़ी है। हथियार और बारूदों की कमी नहीं।

"बेगम साहब की कदमों की खाक का आदाब बजाता हूँ!"

बेगम जीनत महल ने देखा—बखत खाँ, विचारधारा टूट गई। पूछा—"कहो कैसे आए?"

"मलिक ए-आलम! मैं हरचन्द समझाकर परीशान हुआ। सिपाहियों में लालच इस कदर बढ़ गई है कि सिवाय लूट मार और कैक्स वसूली के किसी तरफ ख्याल भी नहीं करते! बादशाह के नाम पर खाने का खर्चा वसूल करने का आज ही एक फरमान जारी हुआ है।"

"उफ़! दूसरे सरदार क्या कहते हैं?"

"वे समझते हैं। हमारी हुकूमत हो गई और पहाड़ी पर पड़े अंग्रेज खुद भूखों मर जाँयगे। चारों तरफ से बागी सिपाही चले आ रहे हैं, इस वजह से ये लोग समझते हैं कि पूरे मुल्क से अंग्रेज उठ गए!"

"रज्जबअली झूठ नहीं बोल सकता!"—बेगम ने कहा—"उसने मुझे खबर दी है कि कानपुर पर हमले के लिए अंग्रेजी फौज जा रही है और इस तरफ पंजाब से भी मदद के लिए अंग्रेज आ रहे हैं। अगर यही हालत रही तो वो दिन दूर नहीं जब कि हम लोग गहरी शिकस्त खायें!"

"यह तो मैं देख रहा हूँ!

"जाओ बखत खाँ! जी जान से कोशिश करो। सिपाहियों को तैयार करो। उन्हें समझाओ अगर ये मौका हम चूक गये तो हम कहीं के न रहेंगे!"

❀

हडसन निष्क्रिय न बैठा था। उसके अपने आदमी बराबर सिपाहियों की ताकत का

पता लगा रहे थे। शहर दिल्ली के कई नागरिकों को उसने अपनी ओर मिला लिया था, जो बराबर सिपाहियों को निष्क्रिय बना रहे थे। उनमें अफवाहें फैलाते—अंग्रेजी हुकूमत मिट गई और वे अंग्रेज जो हिन्दूराव के बाड़े में पड़े हैं। भूखों मर रहे हैं। वह दिन दूर नहीं जब कि सब तड़फ-तड़फकर मर जाँय। इन अंग्रेजों की मदद के लिए कोई नहीं आ रहा है।

हडसन का अपना जाल फैला था।

तेईस तारीख की लड़ाई के बाद अंग्रेजों में उत्साह आ गया था। अपनी ताकत इकट्ठा कर रहे थे और साथ ही बाहर से मदद पा रहे थे। पूरी शक्ति के साथ दिल्ली पर आक्रमण कर बागियों के हाथ से हुकूमत छीन लेने की योजना बड़े ही सुनियोजित ढंग से चल रही थी।

हडसन घोड़े से उतरा। फिर पैदल चल पड़ा। काफी आगे जाने पर उसने एक आदमी को अपनी ओर आते देखा। वह आदमी तेजी से बगल से निकल गया। राहगीर की तरह और इस ढंग से जैसे हडसन से उसका कोई मतलब नहीं है।

वह आदमी जब बगल से गुजरा तो कागज का एक टुकड़ा गिराता गया। हडसन ने उठाया। खोलकर देखा। रज्जब अली का पत्र था। हडसन पत्र को पाकेट में डाल टहलते हुए लौट आए।

※

गंभीर स्थिति। चारों तरफ से विद्रोह के समाचार! कलकत्ता से लार्ड कैनिंग का रोज एक पत्र। अंग्रेजी सेना के प्रधान सेनापति आनसन शिमला में ठहर न सके। गरमी के मौसम में शिमला की बहार छोड़कर जाना बड़ा कष्टप्रद लग रहा था, फिर भी विवशता थी।

सेनापति अम्बाला की ओर बढ़े। वहीं ओर अपने साथियों के साथ मिलकर आगे की योजनाएँ निर्धारित करने के पश्चात् इस विद्रोह को दबा देने के लिए वे चल पड़े। उन्हें विद्रोह की विभीषिका का पता ही न था। करनाल से सम्पर्क स्थापित करने पर पता चला, शान्ति है। नाभा और जिंद की रियासतों में भी

शान्ति थी। सिक्ख राजाओं और सरदारों ने उनके आगमन पर प्रसन्नता प्रकट की। सहायता का वचन दिया।

प्रधान सेनापति बिना विघ्नबाधा के बढ़ते चले। उनका यह मत निश्चित हो गया था कि अन्य स्थानों का विद्रोह मामूली है। दिल्ली हाथ से निकल गई है, इसलिए सिर्फ दिल्ली पर ही कब्जा कर लेने से सब ठंडा पड़ जायगा। इसी विश्वास के साथ करनाल आए।

करनाल में भव्य स्वागत हुआ।

सेनापति ने अपने आफीसरों को बुलाया। प्रत्येक स्थान के समाचार उपस्थित हुए।

"कर्नल निकल्सन बागियों को दबाते हुए इसी तरफ आ रहे हैं। गुरदासपुर अमृतसर से वे इसी तरफ आ रहे हैं!

"तब हमें आगे बढ़ने की क्या जरूरत ?"

"ठीक है!"

"कर्नल निकल्सन आसपास शान्ति स्थापित कर आये जाते हैं, तो उनके साथ हम लोग दिल्ली चलें!"

"राजपूताना, झाँसी और बंगाल की तरफ भी हालत अच्छी नहीं है!"

"दिल्ली पर हथियार बजते ही सब ठीक हो जायगा। डैम केयर फार दूर!"

प्रधान सेनापति ने अम्बाला में डेरा डाल दिया।

❀

गोले नहीं बरसाए गये और न ही बन्दूकें कड़की। आहाते में बन्द अंग्रेजों ने सन्तोष की साँस खींची। विश्वास हो गया कि नाना साहब सुलहकर जान बख्श देना चाहते हैं। इस परिवर्तन से अधिकांश अंग्रेजों की राय हो गई कि जो होना था सो हो गया, अब भी इस काल के मैदान से मुक्ति मिल जाय तो अच्छा हो। कुत्ते की तरह यहाँ परिजन मर रहे हैं। इस दुर्दशा से मुक्ति अच्छी। गुलाम की तरह भी अगर यहाँ से निकल गए तो कभी देखा जायगा!

दोपहर पश्चात् कैप्टन मूर, व्हीटिंग और रीड नाना साहब के पास जाने के लिए तैयार हुए। थोड़ी देर में नाना साहब के भेजे हुए पाँच छह सिपाही आ

गए। इन लोगों के लिए ये लोग घोड़े भी लाए थे। तीनों सवार हो गए। वस्त्रों के विकट अभाव के कारण तीनों व्यक्ति मैले और फटे कपड़े पहिने थे। लगातार मुसीबतों की मार से तीनों की आकृति बिगड़ गई।

अपने पहरे में लेकर सिपाही नाना साहब की कोठी की तरफ बढ़ चले। अंग्रेजों को जाते देख राह चलते लोगों और सिपाहियों में जोश आया। स्थान-स्थान पर लोग लुलुआने लगे। भीड़ से तीनों की रक्षा करते हुए सिपाही सवेदा कोठी आए। अंग्रेजों के आने की खबर नाना साहब को दी गई। सवेदा कोठी के चारों तरफ सिपाहियों का पहरा था। दरवाजे पर तोपें लगी थीं। पूरा राजसी ठाट था।

तीनों अंग्रेज नाना साहब के सामने पेश हुए।

अजीमुल्ला, तातिया टोपे और ज्वालाप्रसाद उपस्थित थे। नाना साहब धुँधु पन्त एक शानदार सोफे पर बैठे थे। उनके सुनहरे हुक्के की सुनहरी तली हाथ में थी।

"बैठिए !"

सहमते हुए तीनों ने अपना स्थान ग्रहण किया। नाना साहब तीनों की करुण दशा देख व्यथित हो गए। तीनों के वस्त्रों और आकृति से उनकी दयनीय स्थिति का पता लग रहा था। कल तक के शासक अंग्रेज एकदम भिखारी हो गये हैं। कल तक वे अंग्रेजों के आगे माथा नवाते थे। आज अंग्रेज भिखारी बनकर उपस्थित हैं। समय सब कुछ संभव कर देता है।

"आपको हमारा पत्र मिला ?"

"जी !

अजीमुल्ला ने आगे मुस्कुराकर पूछा—"आप लोगों का निर्णय है ?"

रीड बोले—"अपना निर्णय देने से पहले हम लोग कुछ बातों का स्पष्टीकरण चाहेंगे !"

"कहिए ?"

"हम लोगों ने यदि आत्म-समर्पण कर दिया, तो हम लोगों की रिहाई कैसे होगी ?"

तात्या एकदम गम्भीर था। तीनों अंग्रेजों को एकटक देख रहा था। एक

भी अंग्रेज को वह जिन्दा छोड़ने के पक्ष में न था। तात्या टोपे का यह अपना विश्वास था कि अंग्रेजों जैसी बेईमानी और विश्वासघातक कौम दूसरी नहीं। उन्हें वह काले नाग से कम न समझता। यह उसका अपना सिद्धान्त था कि इन सबका खात्मा कर देना ही श्रेयस्कर है। एक भी अंग्रेज यदि इस मुल्क में रहेगा, तो वह खतरा पैदा कर सकता है। वह एक को भी छोड़ने के पक्ष में न था, पर अजीमुल्ला के दबदबे के कारण वह खामोश था। अजीमुल्ला से विरोध करने का अर्थ था मुसलमानों से जुदा होना। इस समय तो मिल-जुलकर लड़ना जरूरी है। जरा सा बाकरअली का घर लुट गया तो मुसलमान बिगड़ गये। बाकरअली को एक टुकड़ी का सेनापति बनाने पर ही गड़बड़ी मिटी।

अजीमुल्ला ने नाना साहब की ओर देखा। वे चुप थे।

"हम लोग आप लोगों को!"—अजीमुल्ला ने कहा—"गंगा किनारे तक निरापद पहुँचाकर नावों में बैठा देंगे। आप लोग नदी के रास्ते इलाहाबाद जा सकते हैं। नावें आप लोगों के लिए तैयार रहेंगी!"

"लेकिन खाना पीना?"

"हम आटा देंगे!"

"बकरे और भेड़ मैं दे दूँगा!"—ज्वाला प्रसाद ने कहा।

कैप्टन मूर बोले—"ठीक है, पर एक चीज और। हम लोगों को इलाहाबाद तक जाना होगा। आप लोग तो वहाँ तक साथ देंगे नहीं!"

"न!"

"रास्ते के लोगों ने हम पर हमला किया तो हम लोग क्या करेंगे?"

"आपका मतलब क्या है?"

"आप लोग तो हम से सब हथियार ले लेंगे!"

"वह जरूरी है!"—तात्या ने बड़ी देर बाद ओंठ बिदकाकर अपना मौन भंग किया।

"ऐसी हालत में रास्ते के हमले से हम कैसे बचेंगे?"

"अच्छा!"—अजीमुल्ला बोला—"एक बन्दूक और साठ-साठ कारतूस आप लोग ले जा सकते हैं!"

"......"

"और कुछ ?"

"इसकी बाकायदा लिखा पढ़ी हो ?"

"कर देंगे। आप लोग किसी को भेज दीजियेगा !"

"ठीक है !"—रीड बोले—"हम लोग सहमत हैं। सेनापति से और सलाह कर आप लोगों को खबर दी जायगी। वही फैसला आखिरी होगा !"

तीनों अंग्रेज सिपाहियों के संरक्षण में वापस कर दिये गए।

ॐ

टामसन बिगड़ गया।

"मुझे हिन्दोस्तानियों का भरोसा नहीं। यह हम लोगों को मार डालने की चाल है ! भरोसा नहीं। भरोसा नहीं। हम आखिरी दम तक लड़ेंगे !"

'किस बूते ?"

"जब तक जान है !"

"नहीं ! अपने स्त्री बच्चों की और दुर्दशा हम नहीं देख सकते हैं। यह स्थिति असह्य है ! यदि इस बार विश्वासघात होगा, तो हम सब लड़ते मर जाँयगे !"

कुछ लोगों के विरोध के बाद भी सर्व-सम्मति से नाना साहब की शर्तों पर ही सुलहकर लेने की बात तय पा गयी। रीड संधि-पत्र तैयार कर दस्तखत कराने के लिए जाने लगे, तो मूर ने रोक लिया।

"आप मत जाइए !"

"क्यों ?"

"मिस्टर टाड को भेजिए !"

"अरे ! उस बूढ़े आदमी को क्यों मारते हो ?"

"इसमें एक बात है !"—मूर ने कहा—"टाड नाना साहब को अंग्रेजी पढ़ाते रहते हैं। नाना साहब के गुरू हुए। देखें, इस अवसर पर नाना साहब का क्या व्यवहार होता है ? इतने से ही तो पता लग जायगा कि इन लोगों का मन कितना साफ है !"

मूर के जोर देने के कारण टाड ही संधि-पत्र लेकर चले। उन्हें साथ ले जाने

के लिए घुड़सवार सिपाही तैयार खड़े थे। इस संधि-चर्चा के अवसर पर भी बन्दी अंग्रेजों की मुस्तैदी में ढील न आई थी। विश्राम तो कर रहे थे, पर हर स्थिति के लिए मुस्तैद भी थे।

टाड सवेदा कोठी आये। सिपाही नाना साहब के सामने ले गया। जैसे ही नाना साहब को देखा, तुरन्त उठ गये।

"आइए गुरु जी। आइए!"

टाड को स्वयं अपने हाथों स्थान दिया। बूढ़े टाड की आँखों आँसू आ गए। उनकी समझ में न आ रहा था, ऐसे दयालु व्यक्ति को आज क्या हो गया है, जो उसके भाइयों की जान लेने तुला है!

"गुरुजी, सबसे पहले मैं आपके कष्टों के लिए आपसे माफी माँगता हूँ। मुझे मालूम न था कि आप भी कैद हैं। नहीं तो मैं आपको यहाँ अपने पास बुलवा लेता!"

टाड कुछ न बोल सके। उनका गला रुँध आया था। चुपचाप कागज रख दिया।

"दस्तखत कीजिए!"

नाना साहब ने उस पर हस्ताक्षर कर दिये। बोले—"आप लोग निरापद इलाहाबाद पहुँच जायगें। अब हमारी हुकूमत यहाँ होगी। वैसे सुना है, इलाहाबाद में आपका राज है। कर्नल नील आकर पड़े है। हावेल आनेवाला है। खैर, हम मुकाबला करेंगे!"

"......"

"इसीलिए आप लोगों को छोड़ देना चाहते हैं!"

"......"

"शौक से जाइए। आपको किसी विशेष वस्तु की आवश्यकता हो, तो कहियेगा। मैं प्रबन्ध करूँगा। साथ ही यदि आप यहाँ मेरे साथ रहना चाहें तो मैं प्रबन्ध कर सकता हूँ!"

"धन्यवाद!"—टाड बोले—"मैं अपने साथियों के साथ ही जाना पसन्द करूँगा।"

दस्तखत कराकर टाड सिपाहियों के पहरे में लौट आए। नाना साहब के

व्यवहार की चर्चा सुन प्रायः सभी अंग्रेजों को भरोसा हो गया कि इस सन्धि का पालन होगा। टामसन को भी विश्वास करना पड़ा।

सन्धि की शर्तों के अनुसार साँझ को ही सारे हथियार तोपें, बारूद नाना साहब के सिपाहियों को सौंप दी गईं। केवल एक-एक बन्दूक और साठ-साठ कारतूस ही हर एक ने अपने पास रखे। रात को ही कानपुर छोड़ने का प्रस्ताव आया। इसे सबने मिलकर अस्वीकार कर दिया। सबेरे जाने की बात तय पा गई। रात को नाना साहब के ही आदमियों ने भोजन का प्रबन्ध किया। अंग्रेजों ने सन्तोष की साँस ली। मौत के पंजे से छुटकारा मिला।

रात को ज्वालाप्रसाद दो साथियों के साथ आहाते में अंग्रेजों के साथ ही सोये।

❀

तात्या टोपे के पास एक-एक मिनिट का समाचार आ रहा था। रात को ही अंग्रेजों के जाने की बात सुन वह घबड़ा गया कि ये सब अंग्रेज सुरक्षित ही निकल जाँयगे पर जब कुछ देर बाद मालूम हुआ कि अंग्रेजों ने रात में जाने से इन्कार कर दिया है, अब सुबह जाँयगे, तो उसे सन्तोष हुआ। इतना समय पर्याप्त है, वह अपनी तैयारियाँ पूरी कर लेगा। एक भी अंग्रेज को वह जिन्दा जाने न देगा। अजीमुल्लाखाँ से यदि उसका विरोध बढ़ जायगा, तो तात्या भी इसके लिए तैयार है। कानपुर छोड़ झाँसी चला जायगा। महारानी लक्ष्मीबाई भी अपनी पूरी तैयारियों के साथ अंग्रेजी हुकूमत मिटा देने के लिए कटिबद्ध हैं। जैसे भी हो, अंग्रेजों का इस देश से समूल नाश करना है।

रात घनी होती जा रही था।

तात्या टोपे को नींद कहाँ!

खट-खट-खट !

"कौन?"

"मैं!"

द्वार खोला। तात्या का अपना गुप्तचर।

"कहो, हुआ?"

"जी हाँ। सब तो नहीं, कुछ नावों के छप्परों में बारूद भर दी गई है।"

खैर, कुछ पर ही सही! और?"

"तोपें भी एकदम छुपाकर तैयार हैं?"

"आदमी?"

"इन्तजाम हो रहा है। सब इन्तजाम हो जायगा। अब आप निश्चित रहें!"

गुप्तचर चला गया। तात्या टोपे के अपने आदमी चारों तरफ फैले थे। स्थिति की गम्भीरता का ज्ञान था उसे। इलाहाबाद और लखनऊ के समाचारों से वह विदित था। इस बात का पक्का विश्वास था कि यहाँ के बन्दी अंग्रेज इलाहाबाद पहुँच वहाँ की गोरी पलटन को और उत्तेजित कर देंगे। अभी अंग्रेजों से बहुत मुकाबला करना है! जब तक हमारी जड़ें इस सूबे में जम न जाँय तब तक अंग्रेजों को छोड़ना मूर्खता है। इन्हीं सब बातों से तात्या अजीमुल्ला के इस काम का सख्त विरोधी था। तात्या ने दूसरे के भरोसे रहना सीखा न था। बालाजी भट्ट से उसका साथ पुराना था। वे भी तात्या की इस बात से सहमत थे। अतएव अजीमुल्ला के इस कृत्य को मेंट देने के लिए उनका भी सहयोग मिल रहा था।

खट-खट-खट।

"के?"

खट-खट-खट!!

तात्या टोपे ने द्वार खोला। अपने को संयमित किया। समझ गया, अजीमुल्ला है।

"आओ? इतनी रात गये?"

"हाँ देखना चाहता था, मेरा प्यारा सरदार क्या कर रहा है? वैसे मैं अभी अजीजन के यहाँ से चला आ रहा हूँ। मर्द जाँबाज औरत है!"

"सिपाहियों में उसने खूब जोश भरा है। इस बात को मैं मानता हूँ!"

"उसके पास से सीधे तुम्हारे पास आ रहा हूँ। इसलिए कि अजीजन से मुझे एक नई बात मालूम हुई है। तुम जानते हो उसको चाहनेवाले कम नहीं। इसी फेर में अजीजन सबका पेट ले लेती है। तुम्हारे आदमी भी अपना पेट दे गये हैं!"

"तुम मेरी बातों में टाँग मत अड़ाओ अजीमुल्ला!"

अजीमुल्ला हँस पड़ा—"खुदा कसम। तुम बड़े प्यारे आदमी हो। तुम्हारी स्कीम मैंने और पुख्ता कर दी!"

"कैसी स्कीम?"

"मुझे चराते हो!"

"बोलो भी!"

"तुमने अंग्रेजों को मार डालने की जो स्कीम बनाई है, उसका मुझे पता है!"

"......"

"तुम्हारी उसी स्कीम को मैंने पुख्ता कर दिया है। मतलब अपनी स्कीम भी इसके साथ मिला दो।"

"अजीमुल्ला!"

"तात्या तुमने मुझे बेवकूफ समझ रखा है क्या!"—अजीमुल्ला हँस पड़ा—"मैं अंग्रेजों को चींटियों की तरह मारकर बदला लूँगा। भला ये लोग ऐसे ही जाने पायेंगे!"

"तब...ये नावों का प्रबन्ध..."

"इन्तजाम सब दिखावटी है!—मैं पानी में डुबो-डुबो इनको मारूँगा। बाद में जो बचेंगे कैद रखूँगा। खास तौर से मेमों को। हीलर की छोकरी कम हसीन नहीं है।

"अजीमुल्ला, तुम अपनी खोटी नीयत छोड़ दो। जैसे नाना साहब की बेटी है, वैसे ही हमें दूसरों की बेटियों को समझना चाहिए!"

"नाना साहब की बेटी, मेरी बहिन के बराबर है!"

"तब अंग्रेज...?"

"साला दुश्मन है। अरे तात्या, तू क्रीमिया की लड़ाई देखता। कसम खुदा की ये लोग ऐसे मरते थे, ऐसे मरते थे—" अजीमुल्ला खिलखिलाकर हँस पड़ा।

"खैर, तुम्हारी स्कीम में मेरा भी हिस्सा!"—अजीमुल्ला ने उठते हुए कहा—"सवेरा होने दो!"

❀

कर्नल नील ने कठोरता से इलाहाबाद का विद्रोह एकदम दबा दिया। सर्वत्र

अंग्रेजों का आतंक व्याप्त हो गया। कर्नल नील अपने मातहत छोटे-छोटे अधिकारियों की कठोर दमन नीति से बड़े प्रसन्न हुए। इलाहाबाद के किले में ही उन्होंने अपना डेरा डाला और इस विजय की सूचना कलकत्ता भेज दी।

बिहार, बंगाल, मध्यभारत, दिल्ली और पंजाब की घटनाओं के समाचार भी सच-झूठ रूप में मिल रहे थे। कर्नल नील की मदद के लिए सेनापति हावेल आ रहे हैं! यह समाचार भी आ चुका था। पेट्रिकग्रान्ट भी मद्रास से कलकत्ता के लिए चल पड़े थे।

इस बीच दुःख का एक ही समाचार आया कि सेनापति आनसन अम्बाला में बीमार पड़े हैं और उनकी हालत काफी खराब है! इलाहाबाद में भी हैजे का जोर हो गया था। अनेक सिपाही बीमार होकर पड़ गये। कर्नल नील इच्छा रहते हुए भी कानपुर की ओर न बढ़ सके। सिपाहियों की बीमारी मार्च की एक बड़ी बाधा बन गई। कानपुर से उड़ते-उड़ते समाचार आ रहे थे।

फतेहपुर तक बागियों का राज बढ़ गया था। बाबाभट्ट अपनी सेना के साथ उसी ओर थे। इसी सब स्थिति से कर्नल नील को यह पक्का विश्वास हो गया था कि आगे जमकर मुकाबला करना है। इलाहाबाद की तरह आसानी से वहाँ कब्जा न होगा।

धुँधुपन्त नाना के भी बारे में कर्नल नील आवश्यक जानकारी प्राप्त कर चुके थे। अतएव पूरी मजबूती के साथ ही बढ़ने के इरादे से इलाहाबाद रुक गये। अगर इसी बीच सेनापति हावेल भी आए जाते हैं, तो अच्छा ही होगा।

ॐ

बख्त खाँ अब हाथ पर हाथ धरे बैठे रहना नहीं चाहता था। कोई साथ दे या न दे उसने हमला करने का पक्का निश्चय कर लिया। अपनी टुकड़ी के साथ मुँह अँधेरे ही वह पहाड़ी की तरफ फतहपुरी दरवाजे से बढ़ गया और उसने हमला बोल दिया। बख्त खाँ का अनुमान था कि उसके इस अचानक हमले से अंग्रेजों की कुछ न कुछ क्षति अवश्य होगी, पर हडसन को उसके इस आक्रमण का पता रात में ही लग गया।

बख्त खाँ छिटफुट हमले करके ही अंग्रेजों को परेशान कर उनकी शक्ति क्षीण करने के इरादे में था। पंजाब की ओर से आनेवाला रास्ता वह बन्द

करना चाहता था, पर अपनी अल्प शक्ति के कारण वह कामयाब न हुआ। दूसरे लोग साथ देते तो शायद काम बन जाता, पर ऐसा न हुआ।

अंग्रेज तैयार थे।

बखत खाँ को आक्रमण का तत्क्षण अवसर मिला।

बखत खाँ डटा रहा।

तोपों से बराबर गोले बरसाता रहा। उसके सिपाही गोलियाँ बरसाते रहे। दोपहर तक वह अंग्रेजों को परीशान करता रहा!

एक बार तो तोपों की मार से अंग्रेज घबड़ा गए पर उनकी सहायता के लिए सुरक्षित तोपें तुरन्त मैदान में आ गईं। उल्लास में बढ़ते हुए बखत खाँ के सिपाहियों को पीछे हटना पड़ा। दोपहर बाद बखत खाँ लौट आया। कुछ सरदारों को जब यह बात मालूम हुई तो उसका मजाक उड़ाया गया।

"अरे! मरे को क्या मारते हो!"

"भई! मालिका को ये खुश कर रहे हैं।"

इस पर हिन्दू आफीसर ठठाकर हँस पड़े। बखत खाँ का मन उदास था। वह कुछ न बोला, चुपचाप आगे बढ़ गया। रात में पुनः हमला कर अंग्रेजों को परीशान करने का उसने पूरा निर्णय कर लिया था। इस योजना में रज्जब अली भी उसका हाथ दे रहा था।

❀

मुंशी जीवनलाल और मिर्जा इलाहीबख्श बड़ी देर से रज्जब अली का इन्तजार कर रहे थे। आश्चर्य हो रहा था आज इतनी देर कहाँ लगा रहा है? मुंशी जीवनलाल चलने की सोच ही रहे थे कि नौकर ने रजब अली के आने की खबर दी। एक आँख से कम रजबअली कमरे में आया।

"आदाब अर्ज!

"बड़ी देर कर दी।"

"शायद एक आँख से काम कम होता है।"

रजबअली इस व्यंग पर हँसकर बोला—"हुजूर एक ही आँख का ये करिश्मा है। खुदा के फजल से अगर एक और होती तो फिर क्या पूछना था!"

सब ठठाकर हँस पड़े। फिर मसनदों का सहारा ले सभी बैठ गये।

जीवनलाल ने पूछा—"हडसन साहब की क्या खबर है ?"

"मुझे उनसे ही बातचीत में आज देर लग गई। देर लग जाने की एक खास बात है। आप लोगों को मेरी जासूसी का लोहा मानना पड़ेगा। मैंने एक ऐसी बड़ी बात का पता लगाया है कि लोग दिन में चाँद का चमकना और सूरज का ठंडा होना मान लेंगे, पर मेरी इस बात का यकीन नहीं करेंगे !"

"आज तो तू बड़ा बढ़-बढ़ बोल रहा है।"

"हाँ जनाब ! ज्योतिषियों, नजू मियों की बात झूठी। मेरी नहीं !"

"हुँ ! इनकी बात का क्या ठिकाना ! देखो ना, कहते थे कि तेईस तारीख को अंग्रेजी हुकूमत खत्म है, पर हो क्या रहा है ? कमबख्त !"

"इसलिए तो मुंशी जी ! बड़े लोग कह गये हैं, खुशहाल वही है जो हवा का रुख देखकर चलता है।"

"वल्लाह। ठीक कहा !"

"देखना, एक न एक दिन अंग्रेजी हुकूमत होगी।"

"दिल्ली जाय जहन्नम में। हम लोग तो सलामत रहेंगे। चाहे किसी की हुकूमत हो ! अच्छा रज्जब बोल क्या बात है बे ?"

"बताऊँ ?"

"हाँ !"

"यकीन करोगे ?"

"करेंगे !"

"तो सुनो, शाहीमहल में पचास अंग्रेज छुपे हैं।"

"हाँय !!"

"हाँ, पचास अंग्रेज ! ये अभी से नहीं, पहले छुपे हैं। बहादुरशाह ने ही उनको छुपा लिया है। भला इस बात पर कभी यकीन करोगे !"

"नहीं, नहीं !"

"पर यह बात एक दम सही है। मैंने अपनी आँखों देखा है और उन लोगों का सन्देसा हडसन साहब तक पहुँचा दिया है।"

"ताज्जुब !"

"बहादुरशाह ने इन अंग्रेजों को इस तरह छुपा रखा है कि किसी का भी पता लग सकना मुश्किल है। आप लोग भी इस बात को पेट में रखियेगा।"

"जरूर! जरूर!! अच्छा मजे में तो है न मा लोग।"

"हाँ, दो कमरों में दिन रात बन्द पड़े रहते हैं।"

"अल्लाह! उन्हें उम्र दराज करे। अच्छा, हडसन साहब क्या बोले?"

"जल्दी ही दिल्ली पर हमला होगा। देखना तो ऐसा करारा हमला होगा कि दिल्ली के ये बागी अपने होश भूल जायेंगे।"

"भई। सच ये है कि हम अंग्रेजी हुकूमत में बड़े सुखी थे। बादशाह की हुकूमत में क्या है! तुम्हीं देखो? कहने को वो बादशाह है, पर चल रही है सबकी घर जानी, मनमानी। अल्लाह! ऐसी हुकूमत से करम किए। साहब ही अच्छे।"

"उम्मीद है, हम लोगों की सिफारिश बड़े साहब से..."

"ठीक है। देखा जायगा। पहले अमन चैन चाहिए। मेरा तो सारा कारोबार ठप्प है।"

रजबअली ने बातचीत का सिलसिला खत्म करने के ख्याल से सीधे काम की बात पूछी—"ये सब छोड़िए अब। कहिए आप लोगों को क्या-क्या मालूम हुआ और हडसन साहब के पास क्या-क्या खबर भिजवाना जरूरी है?"

तीनों आदमी आपस में मशविरा करने लगे।

❀

भोर का सूरज चमका। एक हाथी पर गये तीन अंग्रेज लौट आए। उन लोगों ने गंगा किनारे जाकर इस बात का पता लगाया था कि जाने की क्या व्यवस्था है? छप्परदार नावें और खाद्य सामग्री का निरीक्षण कर पूर्ण सन्तुष्ट होवे लौट आये और इसकी सूचना अपने साथियों को दी।

सभी अंग्रेज चलने की तैयारी करने लगे। जिसके पास जो बचा था, वही समेटकर चलने लगा। कुल साढ़े चार सौ अंग्रेज स्त्री बच्चे थे। सभी की दशा बुरी थी। सबके चेहरे मैले हो गये थे। वस्त्रों की दशा भी दयनीय थी। हर एक अंग्रेज भिखमंगे सा हो गया था। मुक्ति की आशा से उनके कुम्हलाए चेहरे कुछ खुश हुए।

सिपाही आ गये।

सब बाहर निकले ।

स्त्रियों ने अपने छोटे बच्चों को कंधों पर रखा । जिसके पास जो असबाब था, उसे अपनी-अपनी पीठ पर लादा या हाथ में लटकाया । सभी पैदल गंगा की ओर चल पड़े । उनकी मुक्ति का समाचार शहर भरमें फैल गया था । फलतः अंग्रेजों को देखने के लिए नगरवासियों की भीड़ गंगा के रास्ते इकट्ठी हो गई ।

सतीचौराघाट की ओर अंग्रेज चले, जहाँ नावें तैयार खड़ी थीं ।

अंग्रेजों की भीड़ और उनकी दशा को देखकर अनेक नागरिकों का हृदय भर आया । वृद्ध सेना पति व्हीलर को देखकर तो बहुतों की आँखें झर पड़ीं । बेचारा फटे कपड़े लपेटे अपनी दो बेटियों के कंधे पर हाथ रखे पैदल चल रहा था । दोनों बेटियों के वस्त्र भी मैले और फटे थे । सेनापति की स्त्री आगे-आगे कांधे पर एक छोटी सी पोटली रखे, नंगे पाँव चल रही थी ।

तमाशा देखने के लिए इधर-उधर कुछ सिपाही भी थे ।

छोटे-छोटे झुंडों में अंग्रेज जा रहे थे । सिपाही उन्हें लुलुआते । बेचारे अंग्रेज आँखों आँसू ढरका सिर झुका लेते ।

बीमार और घायलों के लिए पालकियाँ थीं । एक के बाद एक थोड़ी-थोड़ी देर में पालकियाँ जा रही थीं ।

एक पालकी निकली । उसमें एक अफसर घायल पड़ा था । सिपाहियों ने उसे लुलुआया तो वह उठकर बैठ गया, यह देखने कि क्या हुआ ?

"देखो साले को, अच्छा भला है । पालकी पर है !"

"हमारे सामने पालकी पर चलेगा ।"

"मारो साले को !"

कहारों को रोक लिया गया । सिपाहियों के डर के मारे कहार पालकी छोड़ कर भाग गये । दो सिपाहियों ने तलवारें निकालकर उस अंग्रेज को काट डाला और भाग गए ।

❀

"सब तैयार ?"

"जी हाँ ।"

"टीकासिंह आ गये ?"

"जी हाँ !"

घाट किनारे खड़े मन्दिरों की आड़ में हुआ इन्तजाम तात्या टोपे ने खुद चारों तरफ घूम-फिरकर देखा। उसे पूर्ण सन्तोष हो गया तो वह एक मंदिर के पीछे रुककर अजीमुल्ला की प्रतीक्षा करने लगा। थोड़ी ही देर में अजीमुल्ला मुस्कुराता हुआ आ गया।

"कहो तात्या आज तुम्हारी गंगा माता खून पियेगी !"

"गंगा माता ने तो हमेशा विधर्मियों का खून पिया है !"

"......"

"इन्तजाम हुआ ?"

"हाँ, एक घुड़सवार टुकड़ी एकदम तैयार खड़ी है !"

"संकेत ?"

"बिगुल !"

"......"

"वह बिगुल ठीक उसी समय बजेगा, जब सब अंग्रेज नाव में बैठ जाँयगे !"

"ठीक !"

❀

फिरंगियों को मारने और उनका राज समाप्त करने की इच्छा से अपना संगठन करने वालों की संख्या बहुत कम थी। इन लोगों के साथ वैसे हजारों आदमी आ गये थे, पर उनमें लुटेरों, बदमाशों की ही संख्या अधिक थी। ऐसे लोगों का ध्यान लूटमार की ओर ही अधिक था। अराजकता के इस सुनहले मौके को ये छोड़ना नहीं चाहते थे और चाहे जहाँ अंग्रेजों को मारने, उनकी हुकूमत को खत्म करने के नाम पर विद्रोह का झंडा खड़ाकर लूटमार कर देते थे। पूरे सूबे की यही दशा थी। विद्रोह की हवा छोटी छोटी जमींदारियों तक फैल चुकी थी।

गंगा किनारे कानपुर से कोई चालीस मील दूर एक छोटी सी जमींदारी थी। बाबू राम बख्श सिंह जमींदार थे ! यहाँ भी उत्पात हुआ। एक ईसाई दम्पत्ति को जो स्कूल चलाने आये थे, मार डाला गया। बाबूराम बख्श सिंह ने अपनी जमींदारी स्वतन्त्र घोषितकर अपनी हुकूमत कायम कर ली।

सभी एक सी प्रवृत्ति के नहीं होते। मोरारमऊ के जमींदार राजा दिग्विजय सिंह यद्यपि वृद्ध हो गये थे, फिर भी विद्रोहियों के मुकाबले डट गये। अपनी जमींदारी में उन्होंने लुटेरों को घुसने नहीं दिया। किसी भी प्रकार की गड़बड़ होने नहीं दी। पूर्ण शान्ति रखी। न विद्रोह का समर्थन किया और न ही विरोध! उनका अपना एक सिद्धान्त था—राज चाहे जिसका हो, प्रजा सुखी रहे। अपने तईं वे प्रजा को कोई कष्ट नहीं दे रहे थे।

विद्रोह की खबरें प्रतिदिन उनके पास आ रही थीं। उन्हें भी झंडा उठाने की सलाह दी जाती, पर दिग्विजय सिंह इस ओर से कान मूँदे बैठे थे।

❀

हरदेव मन्दिर के पास से अंग्रेजों के झुंड के झुंड लकड़ी के सफेद पुल के पास गंगा में उतर रहे थे। किनारे पर कम पानी होने के कारण नावें दूर पर थीं। किनारे पर अनेक स्थानों पर गंगा उथली थी। अतएव घुटने-घुटने पानी में डूबकर अंग्रेज को नावों तक जाना पड़ रहा था।

देखने वालों की काफी भीड़ लगी थी। सभी अंग्रेजों की दशा और उनका जाना देख रहे थे। घुटने घुटने पानी में धँसे अंग्रेज अपने स्त्री बच्चों को नावों पर बैठा रहे थे। किनारे पर दो तोपें खड़ी थीं। उन तोपों के प्रति किसी अंग्रेज के मन में शंका न हुई, क्योंकि सिपाहियों की उत्तेजना से वे परिचित थे। उन पर हमला न कर बैठें, इस खयाल से उनकी ही सुरक्षा के लिए तोपें लगाई गई हैं।

अंग्रेज चले आ रहे थे। चालीसों नावें अंग्रेजों से भरने लगीं। दल के दल अंग्रेज आते और बैठते।

"सब आ गये?"

"हाँ!"

❀

अंग्रेजों का आहाता खाली पड़ा था। शहर के कुछ लोग आहाते में घुसे। बहुतों को आशा थी, कुछ माल होगा पर सब उल्टे पाँव लौट आए। लाशों और कटे अंगों के अतिरिक्त वहाँ कुछ और न था। मुर्दों से भरे एक कुँए से नाक फाड़ देनेवाली गंध आ रही थी।

एक ओर बारामदे में गुड्डे सा एक दुधमुँहा बच्चा मरा पड़ा था। शायद दूध के अभाव में वह तड़फ-तड़फ मर गया था। उस बच्चे की माँ कफन के लिए कपड़ा न पा सकी थी, तो शायद अपने मोजे से ही उसकी देह ढाँक दी थी।

❀

हरदेव मन्दिर के पास खड़े तात्या टोपे ने अजीमुल्ला की ओर हाथ हिलाया। अजीमुल्ला ने कुछ दूर खड़े एक सिपाही को संकेत किया। सिपाही ने बिगुल फूँका।

बिगुल की आवाज होते ही तोपों के पास गोलन्दाज दौड़े। पलीते लगे और तोपें गरज उठीं। नावों में बैठे अंग्रेज घबड़ा गए। गोले उनके ही पास आकर गिरने लगे। एक गोला एकदम ठीक निशाने पर बैठा। नाव पर बैठे कुछ अंग्रेज छित्ती-बित्ती हो गए। साथ ही साथ पूरी नाव करवट खा डूब गई। उसमें बचे लोग भयंकर चीत्कार करते हुए पानी में डुब डुब होने लगे। यकायक गोलियाँ बरसाते हुए कुछ घुड़सवार गंगा का पानी खदबदाते आ गए।

भाग दौड़। एक के ऊपर एक अंग्रेज गिरने लगे! स्त्री बच्चों की दुर्गति हो गई। सब नावों से भड़ाभड़ कूदने लगे। कोई कहीं गया। कोई कहीं। हाय-हाय चीत्कारों और मारकाट का बाजार गर्म हो गया। पानी में धँसे घुड़सवारों ने तलवारें निकाल लीं। अंग्रेजों को काट चले। एक अंग्रेज स्त्री के हाथ का बच्चा पानी में गिरा। घोड़े ने अपनी टाप से उसे दबा दिया और सवार ने तलवार से उस स्त्री की गर्दन अलग कर दी।

फिरंगी किंकर्त्तव्यविमूढ़!

यह क्या?

यह कैसा विश्वासघात!

इतना ही नहीं नावों पर लगे छप्परों में आग लग गई। बहुतेरे संभल भी न पाए और मौत के घाट उतर गये। गंगा का पानी लाल हो गया।

कुछ अंग्रेज और मुकाबले पर डटे। गंगा के पानी में ही नर संहार शुरू हो गया।

किनारे खड़ा अजीमुल्ला मुस्कुराया और सिगार सुलगा ऐसे नाटक का आनंद

लेने लगा। तात्या चुपचाप खिसक गया। तमाशा देखने के लिए आए हुए और लोग इस दृश्य को देखकर भाग खड़े हुए।

❀

गोला गिरा।

पानी उछला।

सभी घबरा गये पर टामसन समझ गया। बड़ी जोर से चिल्लाया—"भागो नहीं, इस नाव को ठेलो!"

वह स्वयं पानी में कूदा। उसकी बात कुछ ने सुनी और नाव को पानी में ठेलना शुरू कर दिया। गोलियाँ बरसाते घुड़सवार पानी में धँसे चले आ रहे थे। फिर भी हिम्मत न हारी। नाव पर बैठी कुछ स्त्रियाँ और पुरुष गोली खाकर लुढ़क गए। टामसन ने उन लोगों को नाव से ढकेल दिया। खाद्य सामग्री भी फेंक दी। नाव काफी हलकी हो गई। गोलियों की बौछार से बचते हुए वह नाव धारा तक अपने कुछ साथियों की मदद से ले ही गया।

धारा में पड़ते ही नाव ने गति ली।

"बैठो!"

घायल और अछूते बचे लोग पानी से लथ-पथ हो गये थे। नाव में चढ़ गए। नाव तेज धारा के साथ बह गई। तोपों के गोलों और बन्दूकों के कारतूसों की पहुँच के परे।

इनकी देखा-देखी कुछ लोगों ने और साहस किया। अस्सी आदमियों से भरी एक नाव और ठेली गई। वह भी धारा में पड़कर बह गई।

सिपाहियों की टुकड़ी अंधाधुंध मारकर रही थी। स्त्री बच्चे भी न छूट रहे थे। सेनापति ह्वीलर के टुकड़े-टुकड़े हो गए उनकी स्त्री को काट डाला गया। सिपाही एकदम विक्षिप्त दानव से हो गए थे।

किनारे खड़ा अजीमुल्ला सिगार का धुँआ छोड़ रहा था।

गंगा की छाती पर नरमेध हो रहा था।

❀

"नाना साहब, नाना साहब!"

"......"

"दुहाई नाना साहब की। दुहाई नाना साहब की !"

एक बूढ़ा शोर करता हुआ सवेदा कोठी में दौड़ा आया। सन्तरी उसे रोक न सके। धड़-धड़ाता हुआ कोठी में घुस गया।

"नाना साहब...नाना साहब...दुहाई।"

"......"

"दुहाई नाना साहब की। नाना साहब के रहते स्त्रियों और बच्चों का कतल हो।"

नाना धुँधुपन्त यह शोर सुन चौंक पड़े। ज्वालाप्रसाद की बात अधूरी छोड़ तुरन्त बाहर निकले।

"कौन है ?"

"मैं हूँ नाना साहब, आपका दास सदाशिव !"

"क्या हुआ ?"

"नाना साहब, विश्वासघात की हद हो गई। गंगा माता का पवित्र जल निर्दोष स्त्रियों बच्चों के खून से लाल हो रहा है। आपके सिपाहियों ने उनका कत्ले आम शुरू कर दिया है। तोपें और बन्दूकें चल रही हैं। यह कैसा विश्वासघात है, नाना साहब !"

"किसके हुक्म से ऐसा हुआ ?"

"मैं नहीं जानता।"

"रोको, अभी रोको !"—नाना चीख उठे—"मेरा हुक्म है। तुरन्त दौड़ो।"

घुड़सवारों की एक टोली दौड़ पड़ी।

❀

"हुक्म नाना साहब का, हाथ रोको।"

तलवारें रुक गईं। चीत्कार न रुके। स्त्री बच्चे पशुओं की तरह कराहते हुए बिलबिला रहे थे। प्राण बचाकर जो तेजधारा में भागे वे बह गए। कुछ बच्चे भय से नदी के जल में कूदे और वहीं उनकी समाधि बन गई।

घुड़सवारों ने सिपाहियों को रोका और बचे हुए लोगों को एक घेरे में कर

लिया। उनके दर्द का, आँसुओं का ठिकाना न था। अपने पतियों, पुत्रों, परिजनों की नृशंस हत्या देखकर बची हुई अंग्रेज स्त्रियाँ सिर पीट-पीट रो रही थीं। कुछ पुरुष भी बचे थे। भूखे सिंहों की तरह वे अपने रक्षकों और सिपाहियों की ओर देख रहे थे। बेबस न होते तो शायद अपने इन विपक्षियों का, दुश्मनों का खून पी गए होते। बन्धन में पड़े क्रूर सिंहों की तरह वे ऐंठ रहे थे।

"इन सबको ले चलो!"

लगभग एक सौ चौबीस अंग्रेज-स्त्री बच्चे शेष बचे थे। कुछ भाग गए। शेष कत्ल कर डाले गए।

बाकी लोगों को घेरकर नाना साहब के हुक्म के अनुसार सवेदा कोठी की तरफ ले जाया गया। अजीमुल्ला तुरन्त दौड़ा।

"रुको!"

"कहाँ जा रहे हैं ये लोग?"

"नाना साहब के सामने।"

"नहीं, अभी इन लोगों को जेल ले जाओ। मैं नाना साहब को इसकी खबर कर दूँगा।"

अजीमुल्ला के हुक्म से बन्दी अंगरेजों को सिपाही जेल ले गए, जहाँ उन्हें कैद कर दिया गया।

*

नाना साहब दुःखी थे, क्रोधित थे, पर वे अपना यह क्रोध किस पर निकलें। जो होना था सो हो गया। स्त्री-बच्चों की हत्या सुनकर उनके मन को बड़ा क्लेश हो रहा था। घुड़सवार अभी तक लौटकर न आए थे। क्या सबके सब मार डाले गए?

आहट सुन नाना साहब ने देखा। अजीमुल्ला मुस्कुराता हुआ उनका अभिवादन कर रहा था।

"अजीमुल्ला, तुम कहाँ चले गए थे? तुमने कुछ सुना?"

"हाँ नाना साहब। मैंने अभी सुना। बन्दी अंगरेजों को जेलखाने भेज दिया है। रास्ते में उनसे मिला था।"

"कितने लोग हैं ?"

"एक सौ पच्चीस या चौबीस होंगे।"

"और बाकी ?"

"मैं नहीं बता सकता, नाना साहब। जैसे ही मैंने सुना कि अंगरेजों का कत्ले-आम हो रहा है, मैं तुरन्त दौड़ा गया। सिपाहियों को रोका।"

"यह सब किसने किया ? कौन जिम्मेदार है ?"

"यह पता लग सकना मुश्किल है !"

नाना साहब अपने मन का दर्द पीकर बोले—"लेकिन अजीमुल्ला, यह सब कैसे हो गया ? हो कैसे गया ? स्त्री बच्चों का कत्ल...अजीमुल्ला, हमने तो उस सुलह पर दस्तखत किये थे, जिसमें यह कहा गया था कि तमाम अंगरेजों को हम नावों पर बैठाकर छोड़ देंगे। इस तरह का धोखा हुआ ? उन लोगों को धोखा दिया गया ? किसके हुक्म से यह कत्ले आम हुआ ? यह विश्वासघात क्यों ? हमारी मर्यादा पर धक्का लगा है ! ओः यह दुनिया क्या कहेगी। आज हम दूसरे के स्त्री बच्चों के खून से अपने हाथ रँगते हैं। कल को अपने स्त्री बच्चे को भी मारने लगेंगे। यह बहादुरी नहीं। बहादुर वो जो मैदान में ललकारकर लड़े।"

"यह सब ठीक है। नाना साहब !"—अजीमुल्ला ने धीरे से कहा—"पर इस मौके पर किस-किसको रोका जा सकता है। सिपाही तो किसी की सुनते ही नहीं।"

"इसका क्या मतलब है ? स्त्री बच्चों को कत्ल करने की बात कौन से धर्म में है ?"

"ठीक है नाना साहब !"—अजीमुल्ला मुस्कराया—"यह बहुत ही बुरा हुआ है, पर अब इसके लिए किया क्या जा सकता है ! सिपाहियों के जोश का ठिकाना नहीं है। मौलवी और पंडित अंगरेजों के कत्ल को पुण्य कहते हैं। सिपाहियों की हिम्मत कैसे पस्त हो ? आपके हुक्म के बाद भी वे टूट पड़े।"

"क्यों ?"

"पहिले आप बाकायदा गद्दी पर बैठिए। सिपाही ऐसे आपकी सुनेंगे नहीं।' जोश में आकर उन्होंने अंग्रेजों का कत्ल कर दिया। वे बर्दाश्त नहीं कर सके कि उनके सामने अंग्रेज बचकर निकल जाँय। इस जोश में आकर कुछ सिपाही आपकी हुक्म उदूली कर गये।"

नाना साहब चुप हो गए। मन का दुःख दबाने का प्रयास करने लगे। अजीमुल्ला की राय उन्हें पसन्द आई। अब तो सब बखेड़ा समाप्त है। उन्हें विधिवत् शासन अपने हाथ में लेकर पेशवा की गद्दी स्थापित कर घोषणा कर देना चाहिए। नाना के मन में यही भाव उठ रहे थे कि तात्या आता दीख पड़ा। नाना की दृष्टि पड़ते ही उसने सिर झुकाया।

"यह सब क्या गोलमाल हुआ तात्या?"

"गोलमाल क्या नाना साहब? जो अंग्रेजों ने किया सो भरा।"

"अरे! मासूम बच्चे, औरतों का कत्ल..."

"क्रोध में मनुष्य क्या नहीं कर डालता!"

"अरे वाह! यह भी..."

"शायद आपको पूरा किस्सा नहीं मालूम।"—तात्या ने कहा—"जब ये अंग्रेज नाव पर बैठ गए तो एक ने सिपाहियों को गाली दी। बस! इसी पर खून हो गया।"

"ऐसी बात हुई?"

"हाँ नाना साहब!"

"तब तो ये अंग्रेज बड़े बदतमीज हैं।"

"इसीलिए तो नाना साहब! जैसा इन लोगों ने किया सो भरा। इसमें सिपाहियों का क्या दोष! खबर पाकर मैं भी गया और पूरी तहकीकात करके आ रहा हूँ।"

तात्या की बात सुनकर नाना धुँधुपन्त चुप हो गए।

*

अजीमुल्ला खिलखिलाकर हँस पड़ा।

"वाह यार, तात्या! तूने कमाल किया। मुझसे नाना साहब ने एकाएक पूछा तो मैं तो घबरा गया था। नाना साहब इस खबर से गुस्से में और भी दुःखी थे।"

"उदारता प्रायः गुलामी का कारण बनती है। नाना साहब को जो दीखे सो करें। हम तो अपने रास्ते हैं।"

"पर यार! बहुत से तो भाग गए?"

"हाँ, दो नाव पर लोग भागे हैं। एक पर ज्यादा आदमी हैं।"

"जाने दो। भागकर कहाँ जायँगे।"

"नहीं, मैंने टीकासिंह को भेजा है। चार नावों पर हमारे सिपाही पीछा कर रहे हैं।"

"वाह! मालूम होता है, इन अंग्रेजों को तुम जहुन्नम मे भी मारोगे!"

तात्या चुप रह गया। अजीमुल्ला की तरह बार बार मुस्कराने या ठठाकर हँसने की आदत उसमें न थी। तात्या स्वभाव से ही गंभीर था।

❀

अंग्रेजों के प्रति उसके मन मे घृणा आज से ही नहीं, उस समय से ही थी, जब उसने अहमदाबाद में होश सँभाला था। जन्मता महाराष्ट्रीय ब्राह्मण होने के कारण अंग्रेजों की नीचता के प्रति उसके मन में गहरा प्रतिशोध जम गया था। नागपुर का राज वंश, रुई के लोभ मे आकर अंग्रेजो ने जिस प्रकार नष्ट किया, यह उसके ही सामने की बात थी। राजमहल की लूट-खसोट, भोंसला वंश की सम्मानित महिलाओं का अपमान और फिर महाराष्ट्र सूर्य शिवाजी के वंशज सतारा गद्दी के शासक प्रतापसिंह पर हुआ जुल्म उसने देखा था। व्यर्थ में ही पोर्चुगीजों से मिलकर षड़यन्त्र करने के आरोप मे अंग्रेजों ने उनको गद्दी से उतार दिया। इतना ही नहीं, रात भर इस मराठा को उन्होंने पशु-स्थल पर कैद कर समस्त महाराष्ट्रीय रक्त का अपमान किया था।

क्या ये घटनाएँ आसानी से भुलायी जा सकती है? तात्या अंग्रेजों को कभी क्षमा नहीं कर सकता!

अजीमुल्ला को चुप बैठना अच्छा न लगता था। तात्या के गंभीर स्वभाव से बड़ा परीशान रहता। बोला—"तात्या तुमने टीका सिंह को कब रवाना किया?"

"तुरन्त!"

"इसका मतलब है भागे अंग्रेज कालाकाँकर के पहिले ही धर लिये जायँगे!"

"हाँ!"

"वहीं खत्म या यहाँ लाया जायगा!"

"टीका सिंह यहीं लायेंगे। अपने सामने खत्म करवाऊँगा।"

"नाना साहब को मालूम हुआ तो ?"

"नाना साहब इसीलिए नाराज होते हैं न कि औरतों और बच्चों का कत्ल किया जाता है।"

"हाँ !"

"तो हम औरतों बच्चों को छोड़ देंगे।"

"छोड़ दोगे ?"

"मेरा मतलब, उन्हें कैद कर तड़पा-तड़पा मारूँगा।"

"ठीक !"—अजीमुल्ला बोला—"औरतों बच्चों को मारना ठीक भी नहीं। एक बड़ी दिल कँपा देनेवाली बात मैंने आज देखी। तुझसे कहूँ ?"

"कह !"

"वह, क्या नाम ? चमरिया ! उसके कोई नहीं है। एक बेटा है। अंग्रेज के यहाँ बच्चा खिलाती थी। बड़ी गरीब है। कभी-कभी मैं सिम्पसन के यहाँ जाता था। वो भी इनके साथ कैद थी। सिमसन की औरत के बच्चे के साथ वो भी चली। गंगा में जब सिपाही ने उस पर तलवार उठाई तो उसने बच्चे को न मारने की प्रार्थना की !"

"अंग्रेज बच्चे को ?"

"हाँ ! उसने कहा, इसके बदले में वह अपने बच्चे को तलवार के घाट उतारने के लिए दे सकती है पर उसे नहीं !"

"तब ?"

"तब क्या ?"—अजीमुल्ला हँस पड़ा—"जानते ही हो, आदमी पर जब शैतान सवार रहता है, तो उसे कुछ भी नहीं सूझता। सिपाही ने उसके बच्चे को और खुद उसे भी काट डाला !"

"......"

"समझ में नहीं आता, कुछ लोग अंग्रेजों के इतने भक्त क्यों हैं ?"

"भक्ति की बात नहीं है अजीमुल्ला !"—तात्या बोला—"यह भारतीय परम्परा ही कुछ ऐसी है कि मेहमानों की, दुखियों की, शरण में आए हुओं की सहायता करना और इसके लिए यहाँ के लोग अपनी जान भी दे देते हैं। भले ही इस उदारता का दूसरे लोग लाभ उठा लें। अपनी इसी परम्परा के कारण यह

देश कई बार गुलाम हो चुका है। उदारता में महानता के साथ-साथ यह बड़ा अवगुण भी तो है।"

तात्या की वक्तृता सुन अजीमुल्ला उकता गया। उठते हुए बोला—"चला। पता लगाऊँ तुम्हारे शेर टीका सिंह ने क्या किया?"

❀

घाट का सहारा पा नाव पानी में तेजी से भागी पर कुछ दूर आकर रेती में अटक गई। टामसन फिर कूदा। कुछ साथी कूदे। सबने मिलकर नाव को फिर ठेला। पानी में आ बहने लगी। भाग दौड़ और अनायास आक्रमण के कारण मल्लाह पहिले ही कूद-कूदकर भाग गये। पता नहीं डांड़ों का क्या हुआ? अगर डाँड़े होते तो बड़ी सुविधा रहती। फिर भी नाव पर बचे अंग्रेजों ने हिम्मत न हारी। पानी की धारा की दिशा का ही सहारा। कम से कम विद्रोहियों के पंजे से तो बचे!

पहिले तो शक था कि विद्रोही सिपाही पीछा करेंगे। नाव पर रखी बंदूकें और कारतूस बच गये थे। अतएव कुछ अंग्रेज तैयार होकर बैठ गये। विद्रोहियों की नाव दिखलायी देते ही गोली वर्षा करें पर काफी दूर आने पर भी कहीं से कोई खतरा न देख, निश्चिन्त हुए।

अपनी-अपनी व्यवस्था करने लगे। उनके अधिकांश साथी छूट चुके थे। नर-संहार में उनके अन्त की आशा कर नाव के तमाम अंग्रेजों ने अपने मन को समझा लिया। नाना साहब के इस विश्वासघात से सबके मन दुःखित और क्षोभ से भरे थे, पर वे कर ही क्या सकते थे? टामसन के मन की आशंका सत्य निकली। इन हिन्दोस्तानियों का विश्वास नहीं करना चाहिए!

कैप्टन मूर के मारे जाने से अधिकांश के मन बहुत ही दुःखी थे। साथ ही अपने वृद्ध सेनापति की दुःखद हत्या ने उनके हृदय विदीर्ण कर दिये थे। सब दुःख डूबे चुपचाप नाव पर बहे जा रहे थे। खाद्य-सामग्री कुछ भी न थी। भार हलका करने के लिए अधिकांश सामग्री फेंकी जा चुकी थी।

भूखे प्यासे सभी अंग्रेज भाग्य-भरोसे बहे जा रहे थे। अधिकांश स्थानों पर उथला पानी पा बार-बार उतरकर नाव ठेलना पड़ती। बहते-बहते नाव किनारे

आ लगती तो ठेल-ठालकर फिर बीच में ले आते। विद्रोहियों के हाथ से निकल कर अब सब प्रकृति के हाथ थे। तपती धूप और उथले पानी से परेशान। वर्षा की प्रार्थना करने लगे।

शाम के वक्त आकाश पर बादल देख बहुतों के मन खुश हुए।

❀

काला कॉंकर के पहिले ही टीकासिंह ने भागी हुई नाव को घेर लिया। कुछ ही देर में नाव पर कब्जा हो गया। इस नाव पर पुरुषों की अपेक्षा स्त्रियाँ अधिक संख्या में थीं। अतएव आसानी से नाव पर अधिकार हो गया। टीका सिंह के अपने आदमी नाव पर गए और नाव सिपाहियों के कब्जे में कानपुर वापस लायी गई। एक नाव का और पता न लग रहा था। उसकी खोज में भी टीका सिंह ने कुछ आदमियों को भेज दिया था। घाट लगने पर टीका सिंह को मालूम हुआ कि दूसरी नाव की खोज में गए आदमी अभी तक वापिस नहीं आए।

अंग्रेजों को किनारे ही छोड़ टीका सिंह ने सवेदा कोठी की राह ली। राह में ज्वालाप्रसाद मिल गए। टीका सिंह की सफलता का समाचार पा प्रसन्न हुए—पर उन्हें विशेष प्रसन्नता नहीं हुई क्योंकि इलाहाबाद की ओर से आनेवाले अपने कुछ आदमियों से उन्हें अंग्रेजों की तैयारी की कुछ खबर लग गई थी। आशा थी कि इलाहाबाद पर विद्रोहियों का अधिकार होगा, पर इस आशा के विपरीत इलाहाबाद में अंग्रेजों और उनके सहायकों का जमघट तेजी से हो रहा था।

"अंग्रेज जोर शोर से तैयारियाँ कर रहे हैं। यह बात आज नाना साहब के सामने दृढ़ता से रखना होगी!"

"हम लड़ेंगे"—टीका सिंह ने कहा।

"ऐसे नहीं। नाना साहब तुरन्त गद्दी पर बैठें। पेशवा बनें और तब तमाम सूबे का संगठन करें। राजा की पदवी लेने से रक्षा के लिए प्रजा आयेगी ही। जब तक विधिवत् वे सिंहासन पर नहीं बैठते, सिपाही उनकी आज्ञा का उल्लघंन कर सकते हैं।"

"यह काम तुरन्त होना चाहिए!"

"हाँ!"

ज्वालाप्रसाद टीका सिंह के साथ सवेदा कोठी आए। ज्वालाप्रसाद नाना से मिलने के लिए ऊपर के खंड में चले गए और टीका सिंह चुपचाप तात्या के कमरे में गया। तात्या अकेला, विचारमग्न कमरे में था। अपने हाथ में किसी का पत्र लिये था वह। टीका सिंह के आने की आहट मिली। बोला कुछ नहीं। सिर्फ उसकी ओर देखा।

"नाव पकड़ ली गई?"

"कितने लोग है?"

"अस्सी, पुरुष सिर्फ तीन है।"

"हुँ, कहाँ है?"

"घाट पर। सिपाहियों के कब्जे में। जो हुक्म हो, किया जाय!"

तात्या कहने जा रहा था कि सबको तोप से उड़ा दो, पर स्त्रियों की संख्या अधिक सुन उसने अपना विचार बदल दिया।

"नाना साहब से आज्ञा लो!"

तात्या के मुँह ऐसी बात सुन टीका सिंह को कुछ आश्चर्य हुआ, फिर भी वह कुछ न बोला। चुपचाप नाना साहब के पास गया। नाना साहब अजीमुल्ला और ज्वालाप्रसाद के साथ मशविरा कर रहे थे। टीका सिंह को आया देख नाना साहब ने हाथ उठाकर आशीर्वाद दिया।

पूछा—"बाबा भट्ट अच्छी तरह?"

"हाँ, इस समय फतेहपुर की तरफ गये हैं।"

"वहाँ की सब स्थिति तो संभल चुकी है!"

"जी हाँ! अब सब ठीक है।"

"अभी ज्वाला ने बतलाया है कि तुम कुछ अंग्रेजों को पकड़ लाये हो?"

"जी हाँ, वे शरण आए हैं। व्यर्थ सिपाहियों के हाथ मारे जाते इसीलिए मैं सुरक्षित ले आया हूँ। स्त्री बच्चे ही ज्यादा हैं। सब घाट पर रुके हैं। आपकी आज्ञा की प्रतीक्षा है!"

"स्त्री बच्चे ही ज्यादा हैं, तो उन सबको इसी कोठी में लाकर रखो!"

"......"

"जेल में जो लोग बन्द हैं। अगर उन्हें भी यहाँ ले आओ तो अच्छा है!"

"जी !"

टीका सिंह अभिवादन कर चला गया।

❀

विद्रोह कहाँ नहीं था ! धर्म के नाम पर प्रायः सभी स्थानों के हिन्दू-मुसलमान अंग्रेजों के दुश्मन हो गये थे। गाँव-गाँव खबरें फैल चुकी थीं। बगावत हो गई। चारों तरफ सिपाहियों का राज्य हो गया है। बीच गंगा से एक नाव में अंग्रेजों को जाते देख किनारे के गाँववालों ने ढेले पत्थर फेंके। यत्र तत्र लोग नावों पर चढ़कर हमला करने गये पर अंग्रेजों की बन्दूकों के कारण उन्हें लौटना पड़ा।

नाव में पड़े अंग्रेज भाग्य भरोसे भागे जा रहे थे। गंगा के पानी से अपनी प्यास बुझाते-बुझाते वे थक गए थे। भूख से अँतड़ियाँ फट रही थीं। टामसन एकदम विक्षिप्त-सा हो रहा था। बार-बार किनारे नाव लगाने जोर दे रहा था। रात भर बरखा में भीगने के कारण अंग्रेजों की और दुर्दशा हो गई थी।

"वो देखो !"—एक अंग्रेज चिल्लाया।

सब ने घबड़ाकर देखा। एक नई विपत्ति मुँह फाड़े चली आ रही थी। तेजी से एक नाव उन सबकी ओर दौड़ी आ रही थी। उस नाव पर बैठे लोगों को पहिचानते देर न लगी। बन्दूकों से लैस सिपाही।

"तैयार !"

सभी अंग्रेज मारने-मारने को तैयार हो गए। मरता क्या न करता। जैसे ही नाव समीप आयी—दोनों ओर से गोलियाँ बरसना शुरू हो गईं। खूँख्वार पागलों की तरह अंग्रेज ऐसे टूटे कि पहिले ही झोंके में सिपाहियों की नाव डगमगा गई। बहती हुई नावें आपस में टकरा गईं। फिर क्या था ? बाघ की तरह अंग्रेज उछले और बन्दूकों के कुन्दों की मार से अनेक सिपाहियों को गिरा दिया।

कुछ अंग्रेज दनादन बन्दूकें दागते रहे। कुछ ही देर में इस भिड़न्त का निर्णय हो गया। अनेक सिपाही प्राण बचाने गंगा में कूद गए। अंग्रेजों ने नाव पर कब्जा कर लिया। इस नाव पर डाँड़े भी थे। घातक, भूखे अंग्रेजों ने दोनों नावों को एक में बाँधा और आगे चल पड़े।

इस नाव पर अधिकार हो जाने के कारण बारूद, कारतूस और हथियार भी हाथ आए पर खाद्य सामग्री कुछ भी न हाथ लगी। टामसन घायल भी हो गया।

भूख अब बर्दाश्त के बाहर थी। नाव किनारे लगाने का निर्णय हुआ।

अजीजन के होठों पर फीकी मुस्कुराहट खेल गई। अजीमुल्ला सामने था। उसकी ओर देखता हुआ मुस्कुरा रहा था।

"इतने दिनों बाद मेरा ख्याल आया है!"—अजीजन बोली। उसके स्वर में हलका-सा दर्द था। कई दिनों की बीमारी के पश्चात् वह उठकर खड़ी हुई थी। गोरा बदन कुम्हला गया था। चेहरे का रंग फीका पड़ गया था।

"इधर बहुत काम में फँस रहा!"

"मेरे लिए चन्द लहमे भी नहीं निकाल सके!"—अजीजन ने लम्बी साँस लेकर कहा—"ठीक है। बेवफा ऐसे ही होते हैं। इसमें तुम्हारा क्या कसूर!"

"नहीं अजीजन! ऐसी बात नहीं। तुम्हारे लिए मेरे दिल में वही जगह है, जो पहले थी।"

"रण्डी के पास आने पर सभी ऐसा कहते है!"—अजीजन की आँख भर आयीं।

"अजीजन!"

अजीजन अपने को और न सम्भाल सकी। फूट पड़ी वह। हाथों से मुँह ढाँप सिसकने लगी। आज उसके मन का सारा दर्द फूट पड़ा। अजीमुल्ला को वह एक अरसे से प्यार करती चली आ रही है। अजीमुल्ला ने अपना मतलब साधने के लिए झूठा प्यार दिखलाया, भरमाया। पर आज तक अपना वादा पूरा किया। वेश्या-पुत्री होने के बाद भी उसका पहिला सम्बन्ध अजीमुल्ला से ही हुआ। तेरह चौदह साल की उम्र में ही वह अजीमुल्ला की हुई! तभी से उसे अजीमुल्ला से प्यार हो गया। विलायत गया वह। अजीजन उसके नाम पर बैठी रही। लौटकर आया तो उसके ही इशारे पर उसने पलटन में सिपाहियों का जी बहलाने की नौकरी कर ली। अजीमुल्ला के इशारे पर वह इस काम की आड़ में चुपके-चुपके सिपाहियों को अंग्रेजों के खिलाफ भड़काने लगी।

अजीमुल्ला के इशारे पर उसने क्या-क्या नहीं किया—और आज वही अजीमुल्ला उसके बीमार होने पर भी पास नहीं आया। अजीमुल्ला का दिल वह आज तक

नहीं जीत पायी। इसमें शक नहीं कि अजीमुल्ला बहुत ही खूबसूरत और हँसमुख आदमी है, पर अजीजन किसी से कम है क्या ?

नन्हें नवाब ने कितने बार उसने प्रणय याचना नहीं की ! कितने बार उसे पाने के लिए उसने हजारों की बोली लगा दी, पर अजीजन तो तन से, मन से केवल अजीमुल्ला के लिए बैठी है !

"अजीजन !"

अजीमुल्ला ने उसे अपने पास खींचा। आँसू पोंछे।

अपनी का प्यार पा दर्द और उमड़ आता है। अजीजन रोई। खूब रोयी। अजीमुल्ला समझाता रहा। अन्ततः अजीजन बड़ी मुश्किल से चुप हुई।

इधर-उधर की बहुत सी चिकनी-चुपड़ी बातें करने के पश्चात् अजीमुल्ला ने अपने मतलब की बात की।

"नन्हें नवाब कहाँ है ?"

"कल तो आए थे। वैसे आजकल नवाब गंज उनका डेरा है।"

"आज उनके आने की कोई उम्मीद है ?"

"शायद !"

"आएँ तो कह देना, मैंने एक बहुत ही जरूरी काम से उन्हें याद किया है ?

"अच्छा !"

❀

हिकमतुल्ला ने ईसाई हो जाने पर भी अपना नाम न बदला था। अपने इस धर्म-परिवर्तन के कारण फतेहपुर के एक ऊँचे आफीसर हो जाने पर भी उन्होंने किसी को ईसाई बनने पर मजबूर न किया था। मेरठ, कानपुर और दिल्ली की हवा फतेहपुर पहुँची, पर इसका हिकमतुल्ला पर कोई प्रभाव न हुआ।

नगर में सुअर की हड्डियों और गाय की चर्बी आने की अफवाह ने जब जोर पकड़ा, तो हिकमतुल्ला ने सबको समझा-बुझाकर शान्त किया। किसी प्रकार कुछ दिन स्थिति काबू में रही। सनसनी तो मिट न सकी। साधारण नागरिकों से लेकर सिपाहियों तक में यह सनसनी व्याप्त थी।

सिपाहियों की गति विधियाँ शंकास्पद हो चलीं। अंग्रेज आफीसर चिन्ता से

भर चले । सहसा तार का सम्बन्ध टूट गया । मालूम हुआ कि कानपुर में गदर हो गई । रात को कहीं से तोपों के गरजने की आवाज से तो चारों ओर बेचैनी फैलने लगी ।

अंग्रेज अपने स्त्री बच्चों को सुरक्षित स्थान पर हटाने लगे । अधिकांश अंग्रेज इलाहाबाद चले गए । राबर्ट टुकुर ने इलाहाबाद जाने से इन्कार कर दिया । हिकमतुल्ला के साथ घूम-घूमकर नागरिकों और सिपाहियों को समझाने लगे । इसका अच्छा प्रभाव पड़ा । शान्ति बनी रही और कहीं कुछ गड़बड़ी न हुई ।

सहसा कानपुर से आनेवाली खबरों ने नागरिकों को बेचैन कर दिया । मेरठ का समाचार आते ही नगर भड़क उठा । देखते-देखते लोग युद्ध की तैयारियाँ करने लगे । बाबा भट्ट और अजीमुल्ला के आदमियों ने नगर में आकर सारी स्थिति को डाँवाडोल कर दिया ।

खजाने की रक्षा का समुचित प्रबंध किया गया । आसपास विद्रोह हो गया । नाना साहब के आतंक की अनेकों कहानियाँ फैलीं । रहे सहे दस अंग्रेजों में से नौ भाग गए । इलाहाबाद की राह गही । राबर्ट टुकुर डटे रहे ।

सहसा नौ जून के सबेरे सिपाही बागी हो गए । बाबा भट्ट के आदमियों का षड्यंत्र सफल हो गया । हिकमतुल्ला को कुरान के नाम पर झुकना पड़ा । हरा-झंडा फहराती हुई बागी सिपाहियों, बागियों की भीड़ ने शहर में लूट-मार शुरू कर दी । सरकारी इमारतें जलायी जाने लगीं । कचहरी और जेल तोड़ दिए गए । कैदियों को साथ लेकर खजाने पर अधिकार कर लिया ।

हिकमतुल्ला के नेतृत्व में भीड़ बढ़ रही थी ।

राबर्ट टुकुर कोतवाली भागे । विद्रोहियों ने वहाँ भी जा घेरा । हिकमतुल्ला के नेतृत्व में उनको देख राबर्ट टुकुर बारामदे में आए ।

ठाँय !!!

एक सिपाही ने गोली मार दी । फतेहपुर का आखिरी अंग्रेज भी मारा गया । फतेहपुर में विद्रोहियों का राज्य हो गया ।

*

रामरतन और उसके साथियों से न रहा गया । नाव किनारे लगा, सब उतरे

किनारे-किनारे खेत फैले थे और पास ही कच्चे मकान, फूस की झोपड़ियाँ दिखलाई पड़ रही थीं। पता नहीं, कौन गाँव था ? भूख के मारे अंग्रेज अपनी भूख किसी भी दशा में, कुछ भी चीज से मिटाने उतरे। सबने अपने हथियार साथ रख लिये।

जैसे ही कुछ आगे बढ़े, गाँव के कुछ लोगों ने उन्हें देखा। अंग्रेजों को देखते ही उल्टे पाँव भागे,। एक तो अंग्रेज, उस पर से क्रोध, दुःख से भरे, बहुतों के शरीर पर पट्टियाँ। लोगों को भागते देख अंग्रेजों का उत्साह बढ़ा, साथ ही घबराए भी—इसलिए शीघ्रतापूर्वक अपना काम समाप्त कर तुरन्त लौटने के लिए उत्सुक हुए। कुछ भी दिखलाई न पड़ रहा था। आस-पास के खेत सूने हा पड़े थे। कुछ जानवर चर रहे थे।

भूख के आगे ज्ञान भी मारा जाता है। टामसन और उसके साथियों की दृष्टि जानवरों पर गई। बंदूक चली और एक बैल ढेर हो गया। घायल होकर एक गाय अपने झुंड के साथ भाग गई। अंग्रेज दौड़े। उस बैल को घसीटकर ले आए। आसपास से ईंधन जुटा उस बैल का कच्चा माँस भूनकर खाने की तैयारी करने लगे। सारा कार्य वे बड़ी शीघ्रता से कर रहे थे। चार-पाँच मिलकर बैल का माँस निकालने लगे।

अभी आग भी न सुलग पाई थी कि पास ही शोर सुनायी पड़ी। शोर से आनेवाली विपत्ति का अनुमान लगाकर अंग्रेज सावधान हो गए। कैसी मुसीबत है कि पेट भी नहीं भर पा रहे हैं। थोड़ी ही देर में गाँव से भीड़ आती दिखलायी पड़ी। सभी के हाथ में कुछ न कुछ था। उनके साथ कुछ बंदूक धारी सिपाही भी चले आ रहे थे।

"गौ माता की।"

"जय!"

"धर्म की—"

"जय!"

टिड्डीदल की तरह छितराकर अंग्रेजों को चारों तरफ से घेरने के लिए गाँव वाले दौड़े। बहुतों के हाथ में ऊँची-ऊँची लाठियाँ थीं। हवा में लाठी भाँजते हुए प ड़े दौड़े।

ठाँय ! ठाँय !! ठाँय !!!

अंग्रेजों की बन्दूकें कड़कीं। सिपाहियों ने भी अपनी बंदूकों से जवाब दिया।

अंग्रेजों की बंदूकों से डरकर लोग भागे नहीं। कुछ ढेर भी हो गए। फिर भी गाँववालों ने अंग्रेजों को घेर लिया। अंग्रेज बुरी तरह से घिर गए। जब तक कारतूस भरते, बंदूकें सँभालते, तब तक कितनों के सिर खुल गये। नारियल की तरह डंडे की चोट से सिर तोड़ दिए गए।

अंग्रेज गिरने लगे।

टामसन अपनी रक्षा असंभव देख हथियार फेंक-फाक भागा।

"भागो !"

उसके तीन साथियों ने उसका अनुकरण किया। वे भी हथियार फेंक-फाक भागे। बाकी लोग बुरी तरह घिर गये और देखते तमाम अंग्रजों को बिछा दिया गया।

"गौ माता की—"

"जय !"

भागते हुए चारों अंग्रेजों का पीछा किया गाँववालों ने। सिरपर पैर रख अंग्रेज भागते जा रहे थे। देखते-देखते वे सब गंगा की धारा में कूद पड़े। नाव ठेल-ठालकर उसे साथ लेकर भागना मुश्किल था। गंगा में कूद किसी तरह उन लोगों ने प्राण रक्षा की।

चारों थके थे। फिर भी प्राण मोह से विवश हो हाथ पैर सँभालते हुए बहे रहे थे। यही अंग्रेज जीवित भाग सके। बाकी काम आए।

टामसन आगे-आगे था। शेष पीछे थे। किसी निर्जन स्थान में किनारे लगने की सोच बहते जा रहे थे, कारण कि अब और परिश्रम करना उनकी शक्ति के बाहर की बात थी।

*

आसपास के क्षेत्रों में विद्रोह की चिनगारी छिटकी। तमाम जिलों में खजाने और जेलखाने की रक्षा के लिए कुछ न कुछ सिपाही अवश्य थे। लगान के रुपये वसूल हो चुके थे और सभी खजानों में संदूकों में रुपया बन्द पड़ा था। अंग्रेज अधिकारियों की देखरेख में खजाने की रक्षा हिन्दोस्तानी सिपाही कर रहे थे।

मेरठ की चिनगारी आसपास छिटकी ।

मेरठ के कुछ विद्रोही सिपाही मुजफ्फरनगर आए । इन लोगों के आते ही शहर सनसना गया । मजिस्ट्रेट बरफोर्ड अपने को संयमित न कर सके । लगातार आनेवाली अफवाहों के कारण घबराकर उन्होंने कचहरी और सरकारी दफ्तर बंद कर दिए । अपने विश्वासी रक्षकों के साथ नगर के तमाम अंग्रेजों को लेकर खजाने की इमारत में आ छिपे ।

अंग्रेजों को इस तरह भयभीत देखकर बागियों का हौसला बढ़ा । नगर के लोगों ने समझ लिया कि सचमुच अंग्रेजी राज खत्म हो गया है ।

कानपुर तथा आसपास के उत्तेजक समाचार पाते ही मजिस्ट्रेट और घबराए । इस बार जेलखाने के रक्षकों को भी उन्होंने अपनी और अपने साथियों की रक्षा के लिए बुला लिया । इस घटना से तमाम कैदी निकल भागे । इन लोगों ने शहर में गड़बड़ी शुरू कर दी ।

मजिस्ट्रेट पास के जंगल में भागे । खजाना वहीं मंगवाने की व्यवस्था की उन्होंने, पर इस काम के लिए गए हुए सिपाही बागियों से मिल गए । खजाना लूट-पाटकर सब लंबे हो गए ।

मजिस्ट्रेट जंगल की राह अपने साथियों के साथ भाग गए ।

मुजफ्फरनगर से अंग्रेजी राज उठ गया । नगर के लोग सनसनी भरी जिंदगी में चुपचाप अपने दिन गुजारने लगे । जिसकी लाठी, उसकी भैंस का राज हो गया ।

*

अंग्रेजी राज बढ़ने पर सहारनपुर का किला जेलखाने में बदल दिया गया था । इसी के आसपास नगर पर शासन करनेवाले अंग्रेज और सिपाही रहते थे । आसपास की बगावत का असर आते ही नागरिक घबड़ाने लगे । आदमियों ने चुपके-चुपके सिर उठाना शुरू कर दिया ।

सहायक मजिस्ट्रेट राबर्टसन बड़ी सावधानी से सतर्कतामूलक कार्रवाईयाँ करने लगे ।

नगर में आतंक बढ़ गया । बाजार बंद हो गए । रास्ते सूने पड़ गए । लोग

अपने धन, आभूषण आदि कीमती वस्तुओं को गुप्त स्थानों में छिपाकर भागने की तैयारियाँ करने लगे।

दिल्ली का समाचार आते ही अंग्रेज घबराए।

मजिस्ट्रेट स्पेकी और राबर्टसन ने सलाह मशविराकर अंग्रेज स्त्री-बच्चों को रातों रात मसूरी रवाना कर दिया। विश्वासी आदमियों के साथ वे रक्षा के लिए तत्पर हुए।

सहारनपुर में विशेष उपद्रव न हुआ। सिपाहियों ने अपने मालिकों का साथ दिया। एक टुकड़ी के साथ स्पेकी आसपास के क्षेत्रों में शान्ति स्थापित करने लगे। कहीं आक्रमण या मुकाबले की नौबत न आयी।

आसपास के जमींदारों ने भी मजिस्ट्रेट का साथ दिया।

सहारनपुर शान्त रहा।

नवाब न्यामतुल्ला खाँ मुंसिफ रह चुका था। अब पेंशन पा रहा था। विद्रोह के समाचार पाते ही उसे इस बात का पक्का विश्वास हो गया कि सौ साल हो गए। अब अंग्रेजी अमलदारी जाती रहेगी। नजूमियों और मौलवियों की इस बात पर उसे यकीन हो गया।

न्यामतुल्ला खाँ नवाब खानदान था। समय का फेर। अंग्रेजी अमलदारी। तबाह हो गया, पर खून तो वही था। नवाब ने चुपके-चुपके तैयारियाँ शुरू कर दीं।

दिल्ली बादशाह के नाम पर हुकूमत करने की घोषणा के साथ उसने सिपाहियों को सूचित किया—मैं नवाब खानदान का हूँ। अब दिल्ली बादशाह के नाम पर हुकूमत करूँगा। मेरी अमलदारी में मुरादाबाद में किसी प्रकार का अन्याय न होगा।"

इस घोषणा के साथ सिपाहियों के पास उसने रोटी पानी भेज अपनी ओर मिलाने का प्रयास किया—पर इसका कुछ असर न पड़ा।

❀

काफ़्फ्ट विल्सन साधारण बुद्धि का मनुष्य न था। पहले ही दिन मेरठ का समाचार आते ही वह भाँप गया कि इसका असर चारों तरफ पड़ेगा। अनेक दिनों से इस देश में रहने के कारण वह इस बात को समझ गया था कि यहाँ के लोगों

की दृष्टि में धर्म का क्या मूल्य है ? अतएव उसने पहिले से ही सतर्कतामूलक कार्रवाई शुरू कर दी।

फौज के तमाम देशी अफसरों और सिपाहियों को उसने परेड के मैदान बुलाया।

घोड़े पर बैठकर घोषित किया—"जो लोग बगावत करेंगे उन्हें मारा जायगा और लोग इस संकट के समय सरकार की सहायता करेंगे, उन्हें तरक्की दी जायगी !"

अफवाहों से सिपाही अपरिचित न थे।

एक अफसर ने आगे बढ़कर कहा—"लेकिन हम लोग नए टोटों और कारतूसों का इस्तेमाल नहीं करेंगे !"

विल्सन समझ गया था। झगड़े की अधिकांश जड़ यही टोटे और कारतूस है। कहा उसने—"ठीक है। अगर आप लोग नहीं लेना चाहते तो हम लोग इसके लिए जोर नहीं देंगे।"

. सिपाही इस घोषणा से खुश हुए। अपने धर्म पर कोई आघात न देख उन्होंने राजभक्ति की शपथ ली।

विद्रोह की हवाएँ मुरादाबाद में कुछ हलचल पैदा न कर सकीं।

नवाब न्यायतुल्ला खाँ का योजना विफल हो गई इस पर भी वह चुप न बैठा। उसने गाजी बनने की घोषणा की। दिल्ली जाने की तैयारियाँ करने लगा। उसका साथ किसी ने न दिया। जैसे ही वह बाहर निकला। आस पास के लोग उसका मजाक उड़ाने लगे। लड़कों ने पत्थर और धूल फेंकी।

ठाँय !!

किसी ने गोली मार दी।

नवाब न्यामतुल्ला खाँ ढेर हो गया।

❀

रात का अँधेरा चारों तरफ बिखरा था। विल्सन प्रगाढ़ निद्रा में मग्न थे। शहर में अब किसी प्रकार की अशान्ति की आशंका न थी। विल्सन की सामयिक बुद्धि से शहर का कारोबार पूर्ववत् चल रहा था। अफवाहों के बाद भी तमाम हिन्दोस्तानी सिपाही राजभक्त बने हुए थे।

एक सिपाही दौड़ा आया।

अर्दली को जगाकर बोला—"साहब को इसी वक्त उठाओ!"

"साहब सो रहे हैं!"

"बहुत जरूरी काम है, उठाओ!"

अर्दली से खबर पाकर अङ्ग रक्षक के साथ विल्सन तुरन्त बाहर आये। सिपाही ने अभिवादन किया। वह घबड़ाया हुआ था।

"क्या बात है?"

"साहब, मेरे पास कुछ साथियों ने खबर दी है!"

"क्या खबर दी है, जल्दी कहो!"

विल्सन घबड़ा गए। क्या इतनी सावधानी बरतने के बाद भी उनके अधिकार क्षेत्र में बगावत फैल गई।

"साहब, मेरठ के कुछ बागी सिपाही खजाना लूटकर बाहरी रास्ते से भागे जा रहे हैं।"

"कितने आदमी हैं?"

"बहुत थोड़े लोग!"

"अच्छा।"

विल्सन उल्टे पाँव अपने बंगले लौटे। थोड़ी ही देर में तैयार होकर आ गए। अपने मातहत आफीसरों को भी तुरन्त तैयार किया। छावनी दौड़े। सिपाहियों की एक टुकड़ी लेकर तुरन्त रवाना हो गए।

रात का प्रगाढ़ अँधेरा।

फिर भी विल्सन अपनी टुकड़ी के साथ भागे जा रहे थे। अगर विद्रोही उनकी सीमा से सकुशल निकल गए, तो इसका बुरा असर यहाँ के सैनिकों पर पड़ सकता है, इस ख्याल से वे दुगुनी शक्ति से भाग रहे थे। कुछ आगे जाने पर शोर सुनायी पड़ा। विल्सन समझ गया। खजाना लिये हुए बागी सिपाही ही हैं। तुरन्त अपनी टुकड़ी को दो हिस्सों में बाँट घेरा डाल दिया।

अँधेरे में घिरे बागी सिपाही यकायक इस मुसीबत से घबड़ा गए। वे न जान सके, उनका दुश्मन कौन है और अँधेरे में उन्हें कुछ सूझा भी नहीं।

विल्सन उन पर टूट पड़ा। मुट्ठी भर बागी सिपाही। देखते-देखते बहुत से

तलवार घाट उतार दिये गये। अपने विपक्षी की शक्ति का कोई अंदाजा न पा अधिकांश बागी सिपाही तिरीरी-तिरीरी हो गए।

❀

सवेरे इस घटना की चर्चा सर्वत्र फैल गई। इस घटना का असर सिपाहियों पर पड़ा। बागियों की इस हार से वे निराश हो गए। चारों तरफ से आनेवाली खबरें उन्हें अफवाहें ही लगीं।

बागी सिपाही भागकर इधर-उधर छिप गए थे। सवेरा होने पर शहर में आए। सिपाहियों से मिलकर भड़काने लगे। इन बागी सिपाहियों के छावनी में आते ही हलचल मच गई। सभी तरफ सभी किस्म की चर्चा होने लगी। बागी सिपाहियों की लम्बी-चौड़ी बातों से हिन्दोस्तानी सिपाहियों में उत्तेजना फैलने लगी।

बागी सिपाहियों में बहुत से कत्ल हो गये थे। उनमें एक सिक्ख भी था जिसक एक भाई छावनी की फौज में था। अपने भाई की इस मौत से वह राजभक्त सिपाही उत्तेजित हो गया। अपने साथियों को वह भड़काने लगा। इसका असर पड़ा।

बात की बात में तमाम सिक्ख सिपाही तैयार हो गए और इस सिपाही के नेतृत्व में बगावत का झंडा उठ गया। अंग्रेजों के नाश और बादशाह जफरशाह की जय के नारे लगाती हुई यह बड़ी भीड़ कैदखाने की ओर बढ़ी। शहर के गुंडे और लुटेरे इसी मौके की राह देख रहे थे। चट इस भीड़ में आ मिले।

जेलखाना टूट गया।

रक्षकों को मौत के घाट उतार दिया गया। जेलखाने के कोई छः सौ कैदी बागियों से आ मिले और सारे शहर में हलचल मच गई। बागियों ने लूटमार शुरू कर दी। आग लगाई जाने-लगी। अंग्रेजों और ईसाईयों को मारा जाने लगा।

❀

विल्सन घबड़ा गए।

यकायक विद्रोह इस तेजी के साथ शहर में फैल गया कि रोक सकना मुश्किल था। विल्सन किंकर्त्तव्यविमूढ़ शान्त, राजभक्त सिपाही इतने आश्वासन के बाद भी भड़क गए। सहसा विल्सन तैयार हुए। स्वयं अकेले घोड़े पर चढ़ दौड़े।

रियासत रामपुर के नवाब की सेना का पड़ाव पास ही था। कानपुर नवाब के घुड़ सवार सैनिक समीप ही पड़े थे। विल्सन दौड़े गए। घुड़सवार सैनिकों के बड़े अफसर को बुलाया। विल्सन को आया देख तमाम सिपाहियों में हलचल मच गई।

"आपकी सहायता चाहिए!"—विल्सन ने कहा—"हमारे कुछ लोग बागी हो गए हैं।"

"लेकिन..."

"नवाब साहब अंगरेजी सरकार के मित्र है, इसलिए इस वक्त उन्हें मदद करना चाहिए।"

"वह तो ठीक है!"—अफसर ने कहा—"पर बिना नवाब साहब के हुक्म के हम लोग कुछ नहीं कर सकते हैं। हम उनके आधीन हैं!"

अफसर से टका-सा उत्तर पाकर भी विल्सन निराश न हुए। तुरन्त घोड़ा मोड़ शहर आए। शहर की हालत श्मशान थी। सर्वत्र सन्नाटा था। दूकानें बन्द पड़ी थीं। लोग छिप गए थे। यत्र-तत्र जेल से निकले कैदी और बागी शोर मचा रहे थे। कुछ मकान, दूकानें जल रही थीं।

विल्सन ने देखा, उसका एक साथी अफसर कुछ सिपाहियों के साथ बागियों को भगा रहा है और जेल से भागे कैदियों को पकड़ रहा है। विल्सन का साहस लौटा। वह भी साथ हो गए। इस तरह बहुत से भगोड़े कैदी पकड़ लिए गये और जेलखाने में बन्द हो गए।

अब छावनी की ओर शोर था।

विल्सन उसी ओर दौड़े।

परेड मैदान आकर उन्होंने देखा—बागी सिपाहियों की एक बड़ी भीड़ इकट्ठा थी। तोपची लोग तोपों के पास खड़े थे। वे सब बड़े ही उत्तेजित दिखलाई पड़ रहे थे। लग रहा था, बागी तोपों पर कब्जा कर तमाम छावनी फूँकने ही वाले हैं। विल्सन ने माथा हथेली पर रख घोड़ा आगे बढ़ाया।

"ठहरो !"

यकायक निहत्थे अकेले विल्सन को अपने बीच पा तमाम सिपाही घबरा गये।

विल्सन ने ललकारकर कहा—"बगावत करने से तुम लोगों को कोई लाभ नहीं। जब अंग्रेजी सरकार की हुकूमत यहाँ कायम हो जायगी तो तुम लोगों को चुन-चुनकर कड़ा दंड दिया जायगा, इसलिए इस वक्त अगर तुम मेरी आज्ञा का पालन करोगे तो गवर्नर जनरल के पास मैं किसी की शिकायत न भेजूँगा और न ही अब तक के उपद्रव के लिए किसी सिपाही को दंड दिया जायगा !"

विल्सन की इस घोषणा से बागी सिपाहियों में खुस-फुस शुरू हो गई।

"झूठ बोलता है !"

"अंग्रेज दगाबाज होते हैं !"

"मारो गोली, देखते क्या हो !"

"सौ साल पूरे हो चले। अंग्रेजी अमलदारी मिटकर रहेगी !"

इस फुस-फुसाहट के बाद भी अनिश्चित भविष्य की चिन्ता के कारण अधिकांश सिपाही घबराए हुए थे। अफसर भी दुविधा में पड़ गए।

"बाइबिल की कसम लो !"

"आप बाइबिल की कसम खाकर अपनी इस घोषणा को दुहरा सकते हैं!"

"अवश्य !"

तत्काल बाइबिल आयी। विल्सन ने बाइबिल हाथ लेकर अपनी घोषणा को दुहरा दिया। इस घोषणा से उन्नीस नम्बर की सेना के तमाम सिपाही संतुष्ट हो गए। बगावत ठंडी पड़ गई। सैनिक छावनी की बारकों में लौट गए। शहर में शान्ति हो गई।

शहर के प्रमुख व्यक्तियों के सहयोग से विल्सन ने बाजार खुलवा दिया। मुरादाबाद पूर्ववत् स्थिति में आ गया।

❀

घटना चक्र तेजी से चल रहा था।

पूरा रुहेलखंड अशान्त था। दिल्ली पतन से बागियों का हौसला और बढ़

गया। बरेली और फतहगढ़ में भी उपद्रव चले। मुरादाबाद खबर आयी। कानपुर में नाना साहब की राज्य-स्थापना से यहाँ और जोश फैला। शहर में फिर घबराहट फैली। पता लगा कि पास की ही रियासत रामपुर का एक मौलवी हरा झंडा फहराए डंके के साथ बागियों को लेकर शहर लूटने आ रहा है।

विल्सन तुरन्त सँभले।

अपनी टुकड़ी के साथ राम गंगा पारकर डट गए। यह अफवाह नहीं थी। सच बात थी। बादशाह के नाम गाजी बन एक मौलवी एक भीड़ के साथ डंका बजाता, हरा झंडा उड़ाता चला आ रहा था।

"दीन! दीन!!"

"हर हर महादेव!"

शोर आ रहा था। विल्सन ने धैर्य के साथ उनके निकट आने की प्रतीक्षा की। सामने दुश्मनों को देख भीड़ में खलबली मची। तभी विल्सन टूट पड़े।

दोनों तरफ से मार हुई।

बागियों की संख्या बहुत कम थी। बरेली का थानेदार मुसलमान था। उसने अपनी तलवार से मौलवी को हमेशा के लिए गाजी ही बना दिया। मौलवी के मरते ही बागी भाग खड़े हुए। कुछ पकड़े गए। इस प्रकार विल्सन बागियों को भगाकर पुनः मुरादाबाद में अपना सिक्का जमा बैठे।

❀

रुड़की के अंग्रेज मेरठ की तरफ गये तो सफरमैना टुकड़ी ने बगावत कर दी। बचे खुचे अंग्रेजों और ईसाईयों को मारकर कुल खजाना लूटकर बागियों का यह दल मुरादाबाद की ओर बढ़ा। मुरादाबाद की सीमा पर ये लोग रुक गये। कुछ लोगों को मुरादाबाद की खबर लाने के लिए भेजा गया।

लौटकर खबर दी गई।

"मुरादाबाद में शान्ति है! विल्सन की हुकूमत है!"

"सिपाहियों का क्या कहना है?"

"बगावत के लिए कोई तैयार नहीं।"

"सब हिजड़े हैं!"

बागियों की इस टोली ने तय किया मुरादाबाद के रास्ते से न जा बगल के गाँवों से आगे निकल चलना अच्छा होगा। इसी उद्देश्य से शहर का रास्ता छोड़ सब गाँव के रास्ते आगे बढ़े। मुरादाबाद के सिपाहियों की गद्दारी पर सभी को दुःख हुआ।

कुछ ही आगे गये थे कि तोपें भभक उठीं।

बागियों में भगदड़ मच गई।

देखा—विल्सन उनका रास्ता रोके खड़े थे। तोपों की मार के साथ ही उन्नीस नम्बर की पल्टन के सिपाही बाज का तरह झपटे और तमाम बागियों को खदेड़ दिया। बागियों का झुंड छितरा गया और बहुत से मार डाले गए। जयघोष करते हुए विल्सन लौट आए।

❀

कर्नल ट्रिप ने तमाम सिपाहियों को परेड मैदान में इकट्ठा कर समझाया। उनकी वक्तृता का प्रभाव पड़ा। बरेली के तमाम सिपाहियों के बीच जो उत्तजना फैल रही थी, वह शान्त हो गई। सिपाहियों का विश्वास प्राप्त करने के लिए कर्नल ट्रिप ने रिसाले में कुछ नये आदमियों को भरती किया। उन्हें वर्दियाँ और हथियार दिए। उनके इस काम से सिपाही आश्वस्त हुए। निरस्त्र होने का जो एक भय फैल रहा था वह इस घटना से मिट गया।

आस-पास के क्षेत्र से आए बागी बड़े निराश हुए।

रोटी और कमल का संकेत आते ही घबड़ा गए कि नियत तिथि आ गई है और यहाँ के सिपाहियों को अभी तक तैयार नहीं किया जा सका।

हाफिज रहमत की वीरता और अंग्रेजों द्वारा उनके साथ किये गये अमानुषिक व्यवहारों तथा उनकी मौत की याद रुहेलखण्ड से न गई थी। साथ ही कुछ दिनों पहिले अंग्रेजों की लगान बढ़ाने की नीति से जो असंतोष आस-पास व्याप्त था, उसकी भी स्मृति ताजी थी।

गुप्त रूप से आये हुए बागियों ने इसी सूत्र को पकड़ा।

"अब लगान बढ़ेगा!"

"अंग्रेजी हुकूमत मजबूत होगी तो हम सबको गरीब होकर रहना पड़ेगा!"

"देखना, हिन्दू व्यापारियों को गाय की हड्डी का चूरा मिला आटा बेचना पड़ेगा !"

"ऐसा कानून विलायत में बन रहा है !"

इन अफवाहों के साथ-साथ आसपास से विद्रोह के समाचार भी अतिरंजित होकर फैलने लगे। मौलवी और पंडित वेशधारी, इधर-उधर से आए तमाम निरस्त्र सिपाहियों ने इस चिनगारी को भड़काया। सिपाहियों में खलबली मच गई। छावनी में गुप्त रूप से बैठकें होने लगीं।

सदा की तरह दो पल्टन के सिपाही स्नान करने घाट आए। जैसा हमेशा होता था, वैसे ही छोटे छोटे झुंडों में घाटों पर बिखरकर अपना-अपना काम करते हुए वे बातों में लग गए। पहिले वे आपस में हास परिहास, पास पड़ोस, घर परिवार की बातें करते थे, पर अब स्थिति कुछ और थी। गदर के कारण सभी सनाए हुए थे। इसी की चर्चा छोटी-छोटी टोलियों में होने लगी।

"सुना है, मुरादाबाद में हो गई !"

"हाँ, मेरठ से भी कुछ आदमी आए थे !"

"सो तो मारे गये !"

"यह सब तो ठीक है !"—एक सिपाही बोला—"पर हम लोग तो उजबक की तरह एक दूसरे का मुँह ताक रहे हैं। दिल्ली से अंग्रेजी राज जाने को है। कानपुर से गया। हमारे इस रुहेलखंड सूबे से भी उठ गया, पर हम लोग जड़ जमाए बैठे हैं !"

"हम लोग क्या कर सकते हैं !"

"सब कुछ कर सकते हैं। हाफिज रहमत के खानदानवाले अभी मरे नहीं, जिंदा हैं। इनके रहते अंग्रेज हमारे ऊपर हुकूमत करें। अरे मुट्ठी भर भालू रुहेल-खंडियों पर हुकूमत करें। डूब मरने की बात है यारो !"

सिपाही की इस बात से बहुतों के मन को ठेस लगी।

सिपाही को जोश आया बोला—"लो आज शपथ ! उठाओ जल हाथ में कि हम अंग्रेजों का नाश करेंगे। देखो, भवानी हमारी इच्छा पूरी करती है !"

बात चुभ गई।

बहुतों ने तुरन्त शपथ ली। इस दृश्य से आसपास के घाटों पर बिखरे

सिपाहियों को भी जोश आया। धर्म-नाश की आशंका अंग्रेजों के प्रति उनके मन में पहिले से काम कर रही थी। देखते-देखते सभी सिपाहियों ने अंग्रेजी राज मिटाने की शपथ ली।

❀

"साहब, मैंने आँखों देखा है, कानों सुना है!"

"......"

"सबने पानी में खड़े होकर कसम ली है!"

"अच्छा!"

कर्नल ट्रिप का चेहरा गम्भीर हो गया। आसपास के तमाम समाचारों के कारण यहाँ भी गदर हो जाना आश्चर्य की बात न थी। विश्वासनीय से विश्वसनीय हिन्दोस्तानी सिपाही भी धर्म के नाम पर भड़क सकते हैं! अब चिनगारी फैलने में देर नहीं।

चहुँ ओर अंग्रेजी राज के खिलाफ विद्रोह का झंडा उठ रहा है। धर्म की आड़ में अंग्रेजी राज उखाड़ फेंकने का एक बड़ा षड्यंत्र सारे हिन्दोस्तान में चल रहा है। इसका साफ अर्थ है, अंग्रेजी हुकूमत लोग नहीं चाहते। इसके अत्याचारों से सभी तंग आ गये हैं। रुहेलखंड में पठानों के साथ अंग्रेजों ने जैसा व्यवहार किया, वह किसी से छिपा नहीं है। अतएव ऐसी दशा में यहाँ विद्रोह हो जाना कोई आश्चर्य की बात नहीं।

कर्नल ट्रिप ने अपने सहयोगियों को बुलाया।

कप्तान मैकैंजी और ब्रिगेडियर आए। सबने मिलकर आत्म-रक्षा की योजना बनाई। अंग्रेज स्त्री-बच्चों की रक्षा का प्रश्न ही प्रमुख था। खजाने और जेलखाने की भी समुचित रक्षा का प्रबन्ध किया गया। कमिश्नर। एलेग्जेंडर भी पूर्ण रूप से सावधान हो गए।

विद्रोह की हवा थी, आशंका थी, पर ऐसे कोई लक्षण दृष्टिगोचर न हो रहे थे कि जिससे यह अनुमान लगाया जा सके कि यहाँ विद्रोह होगा ही। छावनी में हिन्दोस्तानी पलटनें बराबर प्रत्येक आज्ञा का पालन कर रही थीं, उनमें कोई असन्तोष न था।

❀

नन्हें नवाब ने होंठ बिदकाए—"क्या इसीलिए मैं आज चार महीने से जमीन आस्मान एक कर रहा हूँ। अंग्रेजी हुकूमत के खिलाफ इतनी बड़ी बगावत खड़ी कर देना क्या आसान काम है! तुम तो बिठूर में मजा लेते रहे और यहाँ मुझे, मेरे आदमियों को किस कदर रात-दिन एक करना पड़ा है, सो हमीं लोग जानते हैं। गाँव गाँव में इसकी खबर भेजी गई। हर छावनी के सिपाही को तैयार किया गया। इक्तीस मई की बात पक्की की गई। उससे पहिले मेरठ में बगावत हो जाय तो हम क्या करें...फिर भी फतह हमारी रही!"

"सब ठीक तो है!"—अजीमुल्ला मुस्कुराया—"इसमें नाराज होने और अपना गुनगान करने की कौन सी बात है!"

"अजी, तुम्हें अपना वायदा तो याद है?"

"हाँ!"

"तो फिर नाना साहब को पेशवा बनाने का कौन सा तुक है? मैंने कल यह सब सुना इसीलिए शुरू से आखिर तक तुम्हारे सामने सारी बातें रखीं!"

"नाना साहब के पेशवा बन जाने में बुराई क्या है?"

"और हम लाग किस उम्मीद पर मरे-खपे? सच पूछा जाय और ईमानदारी की बात की जाय तो जितनी मेहनत तात्या ने की है, उसका मुकाबला कोई नहीं। उसने अपना जाल एक सिरे से दूसरे सिरे तक इस कदर फैला रखा है कि अंग्रेजी हुकूमत टूट गई और अब कायम होना भी बड़ा मुश्किल है। तात्या ऐसा घुन्ना आदमी है कि उसके काम-धाम का पता ही नहीं चलता!"

"तात्या तो कुछ नहीं चाहता!"

"उसके चाहने न चाहने से क्या होता है। सच्ची बात ये है कि इस वक्त पूरे सूबे की ताकत उसके हाथ है सभी सिपाही उसे सबसे ज्यादा मानते हैं। यकीन न हो तो किसी दिन आजमा लो!

"अजीमुल्ला हँसकर बोला—"मुझे सब मालूम है!"

"मेरी तो कहीं पूछ नहीं है। कोई जगह नहीं है!"

"मेरा तुम्हारा वायदा पक्का रहेगा।"—अजीमुल्ला ने कहा—"मैं इतना ही कर सकता हूँ कि तुम्हें कानपुर का सबसे बड़ा हाकिम बना दूँगा। पेशवा तो नाना ही रहेंगे। हम लोग जल्दी ही बिठूर में उनको गद्दी पर बैठाने वाले हैं!"

नन्हें नवाब प्रसन्न हो गया। इतना ही तो वह चाहता था। इधर कई दिन से सबका रुख देखकर वह घबरा गया। शायद उसे कुछ न मिले। कानपुर का बड़ा हाकिम बनाए जाने की बात सुनकर वह मगन हो गया। अजीजन का सलोना चेहरा आँखों के आगे झूल गया।

❀

रविवार का सबेरा शान्ति के साथ बीता। अंग्रेजों ने सन्तोष की साँस ली। उड़ते-उड़ते ऐसी खबरें आई थीं कि इस सूबे में आज ही के दिन चारों तरफ सिपाही बगावत करेंगे। इसी आशंका से सुरक्षा की आवश्यक व्यवस्थाएँ कर ली गई थीं। प्रातः शान्ति से बीत गया।

मई का सूरज आसमान पर चढ़ता हुआ झुलसाने लगा। सहसा कहीं तोप चली। तोप चलने की आवाज सुनते ही तमाम यूरोपियन घबड़ा गए। बगावत हो गई।

तमाम अंग्रेज पूर्व योजनानुसार अपने रक्षकों के साथ बगीचे में आकर इकट्ठे हो गए।

शहर में बगावत हो गई। अड़सठ नम्बर की सेना के सिपाही बागी हो गए। शहर लुटने लगा। अंग्रेजों के बंगलों का सामान तोड़ फोड़कर लूटा जलाया जाने लगा। आग लपटें चारों ओर दिखलायी पड़ने लगीं। यकायक शान्त पड़े तमाम सिपाही बागी हो गये। हर तरफ से मारो-काटो की आवाज आने लगी।

अंग्रेज ईसाई जहाँ नजर आते तुरन्त गोली मार दी जाती या उनके टुकड़े-टुकड़े कर दिए जाते। आस-पास के क्षेत्रों से आए बागी नेतृत्व कर रहे थे।

ब्रिग्रेडियर तोप की आवाज सुनते ही घोड़े पर बैठकर भागे पर बागी सिपाहियों की नजर पड़ गई।

"मारो! मारो!!"

सिपाही दौड़े।

ठाँय। ठाँय। ठाँय!!

एक साथ कई बन्दूकें छूटीं और ब्रिग्रेडियर घोड़े सहित ढेर होकर ठंडे पड़ गए।

जनता बागी हो जाती है, तो उसे रोक सकना बहुत मुश्किल होता है। एक ऐसी अनियंत्रित अराजकता चारों तरफ फैल जाती है कि जिसमें सभी अपने-अपने को नेता समझते हैं। बागियों की भीड़ कई हिस्से में बँट गई। लुटेरों और बदमाशों की भीड़ तो शहर के महाजनों और दूकानदारों को लूटने लगी। चीटीं की तरह किसी भी आदमी को लाठी के जोर मसल देना साधारण बात थी।

बागियों ने जेलखाना तोड़ दिया। खजाना लूट लिया। अंग्रेज ईसाई जितने मिले मारे गये। अधिकांश यूरोपियन विद्रोह की पूर्व संभावना के कारण सुरक्षात्मक स्थानों में थे और वहाँ से धीरे-धीरे बगीचे मे इकट्ठे हो रहे थे।

ब्रिगेडियर के मरने की खबर सुनकर कर्नल ट्रूप ने अपने साथियों का नेतृत्व सँभाला। अड़सठ नम्बर की सेना का रिसाला बागी न बना था। इस रिसाले पर सभी अंगरेजों को पूरा विश्वास था। ब्रह्मदेश के युद्ध में भी इस रिसाले ने अपनी स्वामिभक्ति का परिचय दिया था।

बगावत की खबर मिलते ही यह रिसाला बगीचे में आया। ताजबरखाँ देर से आया। शहर की हालत की खोज-खबर लेने में उसे देर लग गई थी।

आते ही उसने कर्नल ट्रूप को सलाम किया।

"शहर की हालत बहुत खराब है, साहब!"

"एकदम!"

"जी हाँ, अगर आस-पास के भी बागी यहाँ आकर मिल गये तो हम लोगों के लिए आपकी रक्षा कर सकना मुश्किल है।"

कर्नल ट्रूप ने भाग चलना ही उचित समझा। इस कार्य मे उन्होंने रिसाले का सहयोग चाहा।

ताजबरखाँ बोला—"सरकार, आप लोगों को हम लोग शहर के बाहर कर दे सकते हैं, पर आगे जा सकना मुश्किल है, क्योंकि अब मुझे अपने आदमियों पर भी भरोसा नहीं है।"

ताजबरखाँ की इस स्पष्टोक्ति से कर्नल ट्रूप को स्थिति की गम्भीरता का आभास हो गया। अपने साथियों के साथ इस रिसाले के संरक्षण में वे बगीचे से निकल नैनीताल के रास्ते चल पड़े। शहर में डंका बज रहा था। हरी पताका उड़

रही थी और दीन दीन के साथ विद्रोहियों का स्वर आ रहा था। मुसलमानों के लिये यह धर्म की पुकार थी।

शहर की सीमा तक प्रायः सभी घुड़सवार साथ आए पर बहुतों का आगे जा सकना मुश्किल हो गया। उनमें से अधिकांश बागियों से वचनबद्ध हो चुके थे। उनके लिए यही बहुत बड़ी बात थी कि उन तमाम अंग्रेजों को उन लोगों ने सुरक्षित शहर बाहर कर दिया।

अंग्रेजों के साथ बीस बाइस घुड़सवार ही गए। बाकी वापस लौटकर बागियों से मिल गए।

बरेली से अंग्रेजी राज उठ गया।

*

बरेली से डाक आना बन्द हो गई। विल्सन कुछ घबराए। अवश्य ही बरेली में कुछ हुआ है। इसका पता लगाने की व्यवस्था कर ही रहे थे कि कुछ अंग्रेज दौड़े आए।

"मिस्टर विल्सन, गजब हो गया।"

"......"

"बरेली लूट गया। तमाम भाईयों को मार डाला गया!"

विल्सन तुरन्त बँगले से निकले। बरेली की इस घटना का प्रभाव निश्चित रूप से यहाँ के सिपाहियों पर पड़ेगा। इसका पूरा विश्वास हो गया। जी-जान से इस स्थान का विद्रोह अब तक दबा रखनेवाले विल्सन के लिए अब आगे स्थिति सँभालना बहुत ही मुश्किल हो गया।

हर तरफ विद्रोह है। उनके हितैषी बार-बार समझा रहे हैं, यहाँ से भाग चलना ही अच्छा है अन्यथा बागियों की ताकत बढ़ते ही सबको मार डाला जायगा।

छावनी आकर तमाम अफसरों को इकट्ठा किया।

विल्सन ने उनसे कुछ न छिपाकर रखा। सारी स्थिति सामने रखी।

"अब ऐसी हालत में क्या करना चाहिए?"

अफसर एक दूसरे का मुँह ताक रहे थे। विल्सन की इस सतर्कता का उनके मन पर अच्छा प्रभाव पड़ा था।

"हम लोग आपकी रक्षा करेंगे ?"

"लेकिन बागियो की ताकत बढ़ती जा रही है। अगर मुकाबला हुआ तो हम लोगों को हारना पड़ेगा तब ?"

"......"

"मैने एक उपाय सोचा है। आप लोग पसन्द करेंगे ही !"

"......"

"तोपे और खजाना लेकर हम मेरठ चल पड़ें। वही हमारे लिए सुरक्षित स्थान रहेगा।"

अफसरो ने विल्सन की बात स्वीकार कर ली। यह तय हो गया कि तमाम भक्त सेना, अफसर, झंडा, तोपें और खजाना अंग्रेजो के साथ मेरठ की ओर आज ही शाम को चल पड़ेगा। इस तरह से अपनी रक्षा करते हुए सब यहाँ पहुँच जाँयगे।

अंग्रेजो का यह निर्णय अफसरों द्वारा तमाम पलटन को मालूम हो गया।

"इन अंग्रेजो को हमारे ऊपर हुकूमत करने का क्या हक है ? हम हिन्दोस्तानी हैं। हम सब एक है। इस मुल्क को गुलाम बनानेवाले को कत्ल करना सबाब है। इस मुल्क पर हमारी हुकुमत रहेगी। हमारे बादशाह की हुकूमत रहेगी। बेवकूफो क्यों भूलते हो, इसी रुहेलखंड को अंग्रेजों ने रौंद डाला। गाजी हाफिज रहमत खाँ के हाथ से हुकूमत इन बागियों ने छीन ली। आज उनकी औलाद खाँ बहादुर खाँ को दबा रखा है। एक मामूली पेंशन देकर शाही खानदान की तौहीन की है। जिस मुसलमान का खून न खौले वो काफिर। जिस हिन्दू का खून न खौले। वो गौमाता का हत्यारा। बोलो, खाँ बहादुर खाँ।"

"जिन्दाबाद।"

"दीन दीन !"

"हर हर महादेव !"

गगनभेदी जय घोष के साथ हरी पताका और ऊँची उठी।

"हमारे रहते अंग्रेज यहाँ से जिन्दा भाग गये। एक भी न जाने पाये। चलो।"

घुड़सवार बागियों की टोली दौड़ी। शहर के बाहर नैनीताल जानेवाली सड़क पर बागी आँधी से दौड़े।

कर्नल ट्रूप और उनके साथी घुड़सवारों को आते देख घबड़ाकर भागे। पूरा दल छितरा गया। जिसको जो राह सूझी, प्राण बचाने वही राह गही।

विद्रोही टूट पड़े। जो सामने आया उसे काट डाला। बहुत से अंग्रेज काट डाले गए। उनके साथ के रक्षक हिन्दोस्तानी घुड़सवारों को भी कत्ल कर दिया गया।

थोड़े से अंग्रेज प्राण बचाकर भाग निकले।

जय घोष करते हुए बागी लौट आए। उनकी तलवारें अंग्रेजों के खून से पाक हो गई थीं।

*

"अंग्रेजों का विश्वास नहीं।"

"हाँ कौन ठिकाना! मेरठ जाने पर हम लोगों को फाँसी पर लटका दिया जाय!"

"अरे! इससे पहले ऐसा चुका है। तोपों से बाँधकर अंग्रेजों ने उन सिपाहियों को उड़ा दिया, जो वफादार थे।"

"खजाना भी गया। तोपें भी गईं। हम लोगों की जान भी गई।"

"अफसर तो तैयार है।"

"अफसरों के तैयार होने से क्या होता है! हम लोग नहीं जायँगे।"

"कोई मेरठ नहीं जायगा। जो जायगा उसे गोली मार देंगे।"

"तुम सब हिजड़े हो। हिजड़े हो। बरेली से अंग्रेजी हुकूमत उठ गई। वहाँ के बागी यहाँ आकर सिपाहियों के मुँह पर थूकेंगे।"

"रोटी छूकर कसम जो अंग्रेजों का साथ दे वो गद्दार।"

"तुफ़ है।"

देखते-देखते सिपाहियों का झुंड जोश में आ गया। सिपाहियों की उत्तेजना बढ़ गई। बरेली से कुछ आदमी भी आ गये। उनकी भड़कानेवाली बातों ने सिपाहियों ने उभार दिया।

जय घोष के साथ सिपाही बागी हो गए। हथियारों से लैस होकर वे खजाना लूटने दौड़े। शहर में लूट शुरू हो गई। बागियों का हरा झंडा उठते ही गड़बड़ी मच गई।

विल्सन सुनते ही सकते में आ गये पर एक भी लहमा व्यर्थ न खो तुरन्त कुछ साथियों के साथ खजाने की ओर दौड़े।

देखा सिपाहियों और उनके समर्थकों की एक बड़ी भीड ने खजाने को घेर रक्खा है। रक्षक घबड़ा गए हैं।

"ठहरो!"

विल्सन की आवाज सुन सिपाही रुक गये।

"तुम लोग खजाना लूटना चाहते हो?"

"ये अंग्रेज है मारो। साला हमेशा चिकनी-चुपड़ी बातें कर बुद्धू बनता है।"

सिपाही फिर भहराए पर विल्सन ने रास्ता रोककर कहा—"मैं खुद सब खजाना तुम लोगों को देता हूँ!"

विल्सन ने संकेत किया और रुपयों से भरी थैलियाँ बागियों के सामने आ गईं।

"तुम लोग इन्हें चाहते हो, तो ले जाओ!"

सिपाहियों ने थैलियाँ हथिया लीं। विल्सन ने सोचा था, उनकी इस चालाकी का असर पड़ेगा और बागी इस उदारता से शान्त हो जाँएगे। अंग्रेजों को अपना हितैषी समझने लगेंगे, पर इसका कुछ भी असर न पड़ा। तमाम बागी अपना मानसिक संतुलन खो बैठे थे।

"और खजाना है?"

"हाँ और है!"

"बेईमान है साला। असली खजाना तो भीतर है!"

खजानची भी पास खड़ा था। एक सिपाही ने उसके सीने पर बन्दूक तान दी बोला—"खजाना बता!"

विल्सन उसकी रक्षा के लिए दौड़े तब तक बागियों ने उन्हें घेर लिया। विल्सन मारे ही जानेवाले थे कि सूबेदार भवानी सिंह कूद पड़ा।

"खबरदार! अंग्रेजों का कत्ल हमारा धर्म नहीं है!"

इस पर बड़ी खलबली मची। बागी सिपाहियों को बुद्धि तो थी ही नहीं, उल्टे सभी भवानी सिंह पर टूट पड़े। भवानी सिंह ढेर हो गया। इसी गोलमाल में

मौका पाकर विल्सन भाग खड़े हुए। समझ गये। अब विद्रोह दबनेवाला नहीं है। तुरन्त अपने साथियों के साथ शहर से निकल गये।

सर्वत्र बागियों का राज्य हो गया।

विल्सन ने मेरठ जाने का विचार बदल दिया। साथियों की राह मानी और नैनीताल का रास्ता पकड़ा। दोपहर में कुछ अंग्रेज और मिले। घबड़ाए, भूखे प्यासे। विल्सन से मिलकर वे प्रसन्न हुए। और सबके सब आगे चल पड़े! ये अंग्रेज बरेली के थे जो मुश्किल से अपने प्राण बचाकर भाग सके थे।

❀

टामसन अपने साथियों सहित किनारे लगा। भूख अब असह्य थी। आधे से अधिक साथी मारे जा चुके थे। शेष की बुरी दशा थी।

टामसन ने किनारे लग चारों तरफ देखा। अब हथियार भी साथ न थे। जो कुछ था, पीछे छूट गया था! भूख के मारे अब प्राण जा रहे थे। टामसन ने साहस कर सामने दीखनेवाले गाँव की ओर जाने का प्रस्ताव रखा। गाँववालों से ही कुछ माँगकर खाया जाय! अब यदि वे मार डालना चाहें तो मारें। भूख से तड़फकर मरने की अपेक्षा साथ-साथ प्राण दे देना कहीं अच्छा है।

टामसन अपने साथियों के साथ गाँव में आया। गाँव के शुरू में ही एक मंदिर था। वहाँ आकर टामसन ने ग्रामीणों को देखा। उनको देख, उनकी दशा देख ग्रामीण घबड़ाकर भागे। टामसन ने इशारे से खाने के लिए कुछ माँगा, पर वहाँ देखने सुननेवाला ही कौन था!

टामसन मंदिर में गया। शायद कुछ खाने को मिले, पर वहाँ कुछ न था। टामसन भोजन की तलाश कर रहा था कि गाँववालों का शोर सुनायी पड़ा। गाँववालों की भीड़ दौड़ती आयी। देखा—अंग्रेज मंदिर में घुसा है।

"अरे! मंदिल भ्रष्ट हो गया रे!"

"फिरंगी है!"

"मारो!"

"बाबू रामबक्श सिंह की जमींदारी से अंग्रेजी राज उठ गया है!"

गाँववाले आक्रमण करने दौड़े। घबड़ाकर अंग्रेज मंदिर में घुस गए। प्राण

किसे प्यारे नहीं होते ! मूर्तिगृह में प्रवेशकर अंग्रेजों ने दरवाजा भीतर से बन्द कर लिया।

ग्रामीणों ने मंदिर घेर लिया।

"भीतर बन्द हैं !"

"दरवाजा तोड़ो।"

"एक भी बचकर न जाय। सबको मार डालो !"

"ठहरो। ऐसे नहीं !"

"आग लगा दो !"

"हाँ, हाँ ! ठीक !!"

तुरन्त ग्रामीण घास के ढेर ले आए। दरवाजे पर रखकर आग लगा दी। भीतर घुसे अंग्रेज बड़े घबड़ाए। अगर अब देर करते है, तो जिन्दा भुन जाना पड़ेगा। टामसन ने एक झटके से दरवाजा खोला।

"भागो !"

अंग्रेज कूदकर भागे।

"भागे भागे।। दौड़ो रे दौड़ो !"

हँगामा मच गया। भागते अंग्रेजों को गाँववालों की भीड़ ने घेर-घेरकर मारना शुरू किया। लाठियों के प्रहारों से उनके शरीर भुरता बना दिये गये। इस हँगामे में फिर भी चार अंग्रेज भाग निकले। इनमें टामसन भी था। वही सबसे पहिले भागा था, इसलिए सबसे आगे था। तीन अंग्रेज भी तेज भागे, इसीलिए बच गये।

फिर भी ग्रामीणों का एक झुण्ड दौड़ा आ रहा था। लाठियाँ उठाये वे भागे आ रहे थे। पत्थर भी फेंक-फेंक मारे जा रहे थे।

टामसन नदी तक आ गया।

धड़ाम !

धड़ाम !!

एक के बाद एक अंग्रेज नदी में कूदे और प्राण बचे उनके।

बरेली के तमाम बागियों का मुखिया बख्त खाँ चुना गया। बख्त खाँ ने बरेली का शासन सँभाला, पर खजाने में रुपया नाम मात्र को भी न था। सिपाहियों का खाना खर्चा मुश्किल था। अतएव शहर के तमाम महाजनों से रुपया वसूल किया गया। बख्त खाँ के इस आदेश पर खूब मनमानी की गई। शहर के तथा आसपास के धनीमानी आदमियों की संपत्ति पर बलात् अधिकार किया गया। गाँव के बड़े किसानों का अनाज जब्त किया गया।

अराजकता की स्थिति अधिक न सँभल पा रही था।

रुहेलखंड के शासक मरहूम गाजी हाफिज रहमत खाँ के खानदान में खाँ बहादुर खाँ जिन्दा था। अमीनी के पद पर काम करने के कारण सरकारी पेंशन पा रहा था। सिपाहियों का ध्यान उनकी ओर गया। साथ ही मौका देखकर खाँ बहादुर खाँ बाहर निकला। शासक बनने की लालसा जाग उठी और हाफिज रहमत खाँ के नाम पर उसने शासन को बागडोर सँभालने की घोषणा कर दी।

बरेली के बाजार से शाही ठाट से उसका जुलूस हाथी पर निकला। नबाब की तरह उसका रौआब हो गया। जुलूस में तमाम बागी उसकी जय-जयकार के नारे लगा रहे थे। खाँ बहादुर खाँ ने बादशाह बनने की घोषणा कर दी। इस अवसर पर उसने एक घोषणा-पत्र निकाला और अपने को दिल्ली के बादशाह के आधीन घोषित किया। रुहेलखंड के हर भाग के लिए उसने अपनी ओर से मातहत अधिकारियों का चुनाव किया।

बरेली के एक आलीशान भवन को उसने शाही-भवन घोषित किया और राज दरबार वहाँ लगने लगा।

ꕥ

मुबारकशाह को अपने सामने देख बख्त खाँ चौंक पड़ा।

"अरे! तुम अब तक कहाँ थे?"

"तमाशा देख रहा था!"

"अब क्या होता है! अगर तुम उस वक्त होते तो मैं जरूर तुमको बादशाह बनाता। अब तो बहादुर खाँ गद्दी पर बैठ गया है!"

"हाफिज के नाम पर बैठ गया है न!"

"हाँ !"

"मैं अंग्रेजों को खदेड़ने में लगा था। हाफिजजी के नाम पर खाँ बहादुर खाँ कै दिन टिकेगा सो मैं देखूँगा !"

"भई, सच तो यह है कि हाफिजजी के खानदान की जितनी इज्जत बागियों के दिल में हैं, उतनी तुम्हारे खानदान की नहीं है ! इसीलिए मैं भी मजबूर हो गया।"

"खैर, अब मुझे भी साथ देना होगा !"

"वह तो जरूरी है !"

"इन अंग्रेजों की पेंशन खानेवाला एक बूढ़ा खैरख्वाह गद्दी पर बैठे, यह अफसोस की बात है। और गदर के मौके पर बिल्ली बन अपने दरबे में घुसा था। कमिश्नर और डिप्टी कमिश्नर के पाँव चूमनेवाला क्या कर सकता है !"

"सुनो यार ! इस वक्त खामोशी से काम लो। अभी हालत कुछ भी ठीक नहीं है। खजाने में एक पैसा नहीं है।"

"अच्छा। देखूँगा, पर मैं उम्मीद करता हूँ, तुम बराबर मेरा साथ दोगे !"

"जरूर ! तुम इससे बेफिक्र रहो।"—बखत खाँ ने मुबारकशाह को आश्वस्त किया।

❀

बैरक के बाहर सिपाही छोटे छोटे झुंडों में बैठे थे। आसपास की चर्चा हो रही थी। कुछ दिनों से जो नई-नई अफवाहें आतीं, उसी पर रोज गरम-गरम चर्चा होती। साँझ का झुटपुटा था। बैरक की ओर ऊँचा साफा बाँधे एक आदमी बढ़ा आ रहा था। उसके हाथ एक पोटली थी।

तेजी से वह आया।

एक टोली के बीच पोटली फेंक जैसे आया था, वैसे लौट गया। सिपाहियों ने पोटली खोली। रोटी और कमल निकलते ही सब सकते में आ गए। साथ ही उर्दू में लिखा एक पुर्जा भी था, जिसमें लिखा था, इक्तीस मई। बिजली की तरह यह समाचार पूरी पलटन में फैल गया। रात भर विद्रोहियों के सरदार एक दूसरे से मिलते रहे।

रविवार का सूरज निकला।

शहर एकदम शांत था। कहीं कुछ न था। ईद के मौके पर अंग्रेजों को कुछ डर था। पर ईद बीत जाने के कारण वे निश्चिन्त हो गये थे। हर रविवार की नाई झुंड के झुंड अपनी-अपनी हैसियत के अनुसार अंग्रेज गिरजाघर की तरफ चल पड़े। देखते-देखते गिरजाघर में प्रायः सभी अंग्रेज आ गये और प्रार्थना करने लगे।

सहसा विद्रोह की चिनगारी फूट पड़ी।

बिगुल बजा। छावनी में एकदम तैयार अंग्रज सेना के तावेदार हथियारों से लैस खड़े थे। बिगुल उठते ही सब शहर की ओर धाए। देखते-देखते शहर में लूटमार शुरू हो गई। सिपाही तो खजाना और जेलखाना तोड़ने चले गये पर इधर लुटेरे और बदमाश नागरिकों को लूटने लगे।

शहर में दंगे की सी स्थिति हो गई।

बगावत का समाचार चारों तरफ बिजली की तरह फैल गया। अंग्रेज फौज की टुकड़ी घबड़ा गई। साहबों के बँगलों के हिन्दोस्तानी नौकर घबड़ा गए। तमाम अंग्रेज इस वक्त गिरजे में हैं। उनके पास हथियार वगैरह कुछ नहीं हैं। अनेक स्वामिभक्त नौकर साहबों के हथियार लेकर गिरजाघर की तरफ अपने मालिकों की सहायता के लिये दौड़े।

अनेक सिपाही इस विद्रोह के समर्थक न थे। अतएव वे अपने अफसरों की रक्षा के लिए दौड़े।

कप्तान जेम्स शाहजहाँपुर के सर्वेसर्वा थे। बगावत की खबर पाते ही अपने अंगरक्षकों के साथ स्थिति देखने दौड़े। बागियों ने सर्वत्र कब्जा कर रक्खा था। चीनी की गोदाम, शराब का कारखाना लूटा जा चुका था। जेलखाना टूट गया था। खजाना लुट गया था।

बागियों की मारकाट का बाजार गर्म था।

कप्तान जेम्स को देखते ही बागी सिपाहियों ने घेर लिया। अंगरक्षकों को मार डाला और साथ ही जेम्स को भी काट डाला गया।

बागियों की भीड़ गिरजाघर की तरफ बढ़ी। अँग्रेजों के सामूहिक कत्ल के लिए बागी बढ़े आ रहे थे।

गोलियों की मार से बचता हुआ एक अंग्रेज डाक्टर गिरता पड़ता अपनी

घायल स्त्री के साथ गिरजाघर में आया। उसके आते ही हलचल मच गई। स्त्री बच्चे भय से रोने चीखने लगे। गिरजाघर के तमाम अंग्रेज पुरुष बाहर आ गये।

"साहब बंदूक !"

"साहब तलवार !"

"साहब, साहब, आपकी पिस्तौल !"

"साहब, आपकी बंदूक..."

"होश्यार ! बागी लोग आ रहा है, साब !"

स्वामिभक्त नौकरों से निहत्थे अंग्रेज देखते-देखते काफी संख्या में हथियार पा गये। बागियों का शोर पास आता जा रहा था। थोड़ी ही देर में अंग्रेजों के विश्वासी सिपाही रक्षा के लिये आ डटे।

बागी आ गए।

दोनों ओर से मुकाबला होने लगा। जमकर लड़ाई छिड़ गई। अंग्रेज भी हार न रहे थे। बागियों को खदेड़ दिया गया पर फिर बागियों की ताकत बढ़ गई। गिरजाघर युद्ध के मैदान में बदल गया।

"मुकाबला मुश्किल है !"

"......"

"बागियों की ताकत बढ़ती जा रही है !"

"शहर से बहुत से लोग बागियों की मदद के लिए आ रहे हैं !"

"भाग चलना ठीक होगा !"

"भागकर कहाँ जायेगा साब ?"

"पौहियान ! वहाँ का राजा हमारी मदद करेगा।"

विश्वासी सिपाहियों ने रातों रात अंग्रेजों के भागने की व्यवस्था कर दी। तमाम अंग्रेज पौहियान की तरफ भाग गये। अपने नौकरों और विश्वासी सिपाहियों के कारण शाहजहाँपुर में बहुत कम अंग्रेज मारे गये।

॥

बदायूँ निकट आ गया तो फिलिप्स ने संतोष की साँस ली। माथे का पसीना

पोंछा और अपने साथ आए हिन्दोस्तानी अफसरों की ओर कृतज्ञता से देखा। अगर ये अफसर न होते तो एटा में ही या अब तक रास्ते में ही कहीं उनकी जीवन लीला समाप्त हो गई होती।

देखते-देखते एटा से अंग्रेजी अमलदारी टूट गई। एक सुनियोजित षड्यंत्र था। चारों तरफ बागी ही बागी। सरकारी इमारतों में आग, जेलखाने पर हमला, खजाने की लूट। अंग्रेजों ईसाईयों का कत्ल, एक साथ सारा काम हुआ। अगर कुछ अफसरों ने साथ न दिया होता, तो अब तक उनका भी बच सकना मुश्किल था।

कुछ घुड़सवारों को आते देख छावनी में पड़े सैनिक चौंक पड़े। शहर में कल से ही यह जोरदार अफवाह थी कि बगावत हो गई है। बरेली की पलटन यहाँ के अंग्रेजों को कत्ल करने झंडा उड़ाती चली आ रही है। यह समझकर कि बागी आ गए छावनी में हलचल मच गई।

पास आने पर जब देखा गया कि एटा के कलक्टर फिलिप्स हैं, तो शान्ति हुई। एडवर्डस खबर पाते ही बँगले से भागे। फिलिप्स का स्वागत कर एटा का हालचाल पूछा।

"कुछ न पूछिए।"—एडवर्डस ने कहा—"यहाँ की भी हालत बड़ी नाजुक है। कब क्या हो जाय ? कुछ कहा नहीं जा सकता!"

"बरेली का क्या समाचार है ?"

"वहाँ भी यही हालत है!"

एडवर्डस और फिलिप्स सारी परिस्थिति पर विचार करने लगे। कोई रास्ता ही न सूझ रहा था। कारण कि पूरा सूबा बागी होता जा रहा था। कहीं से किसी प्रकार की मदद पा सकना बहुत मुश्किल हो रहा था। खबर भेजने के लिए भी चारों ओर के रास्ते बन्द थे। एक घेरे में आ गये थे सबके सब।

फिर भी एडवर्डस ने हिम्मत न हारी। फिलिप्स ने भी साथ दिया। यह तय हुआ कि फौज की एक टुकड़ी लेकर फिलिप्स एटा वापस लौटकर शान्ति स्थापित कर अंग्रेजी हुकूमत कायम करने का प्रयास करें।

रात का तीसरा पहर शुरू होते ही बदायूँ की सड़कों पर कुछ घुड़सवार सैनिक दिखलायी पड़े। जोश में भरे ये सैनिक छावनी की तरफ दौड़े जा रहे थे। अँधेरे में उनके चेहरे स्पष्ट दिखलायी न पड़ रहे थे पर उनकी पोशाक से साफ मालूम पड़ रहा था कि वे दूर से आए हैं और यहाँ की पलटन के सिपाही नहीं हैं।

छावनी के शुरू में ही वे घुड़सवार उतरे। उनके उतरते ही कुछ आदमी दौड़ कर आए।

"क्या खबर ?"

"हो गया।"

"ठीक। यहाँ सब तैयार है !"

"हमला बोल दो अभी। बरेली के और लोग भी आ जाँयगे !"

रात के सन्नाटे में ही बिगुल बज गया। जैसे पूरी योजना एकदम तैयार थी, बिगुल बजते ही सिपाही भहराकर उठे। हथियारों से लैस हो छावनी से निकले। झंडा फहराया।

"बादशाहे हिन्दोस्तान आलीजहाँ शाह बहादुरशाह जफर खाँ !"

"जिन्दाबाद !"

"गाजी हाफिज रहमत खाँ !"

"जिन्दाबाद !"

जय घोष के बाद ही सिपाही तितर-बितर हो गये। शहर पर हमला हो गया। सरकारी इमारतें नष्ट-भ्रष्ट हो चलीं। उन्हें फूँका जाने लगा। नींद में पड़े नागरिक सँभल भी न पाये कि नगर में बागियों का राज हो गया। जेलखाने का एक भी सन्तरी न बचा। खजाने के तमाम रक्षक बागियों से मिल रुपयों की थैलियाँ लूट ले गए।

सूर्योदय होने के पहिले ही नगर अंग्रेजी हुकूमत के हाथ से जाता रहा।

एडवर्डस और फिलिप्स या उनके साथी जब तक कुछ कर भी सकें बागियों ने घेर लिया! बड़ी मुश्किल में पड़ गये सब। कुछ सिपाहियों ने साथ दिया और छावनी के पिछले रास्ते से उन्हें बचाकर ले गए! अंग्रेज भाग खड़े हुए। इसके सिवाय और कोई रास्ता न था

जो अंग्रेज भाग न सके, उन्हें कत्लकर दिया गया।

❀

शहर से बाहर आ जाने पर एडवर्ड्स् ने सन्तोष की साँस ली। रुक गये। साथियों से मिलकर विचार करने लगे किस ओर चला जाय! मुश्किल यह थी कि विद्रोह चारों ओर फैल गया था! कोई रास्ता निरापद न था। सर्वत्र बागियों, अंग्रेजों के खून के प्यासों का राज्य था।

सहसा कुछ घुड़सवारों को अपनी ओर आते देख सब घबड़ा गए। प्राण संकट देख सब मुकाबला करने को उद्यत हो गये।

पास आने से पहिले ही एक आदमी चिल्लाया—"साहब, हम आप लोगों के दोस्त हैं।"

"कौन हो?"

"मैं शेख अमीर खाँ।"

एडवर्ड्स् अमीर खाँ को जानते थे। वह बूढ़ा मुसलमान उन्हें बहुत मानता था। इसे आया देख एडवर्ड्स् प्रसन्न हुए।

"आप लोगों को मैं खोजता फिर रहा था साहब!"

"......"

"तमाम चारों तरफ के रास्ते बन्द हैं। भला ऐसे में आप कहाँ जाँयगे!"

अमीर खाँ के साथ आठ-दस मुसलमान और थे। उन सब ने भी अमीर खाँ की बात का समर्थन किया। बात भी सच था। विद्रोह पूरे रुहेलखंड में फैल गया था। कोई भी स्थान बाकी न था और रुहेलखंड से निकल भागने का कोई भी रास्ता फिरंगियों के लिए निरापद न था।

"आप हमारे साथ चलिए साहब!"

"कहाँ?"

"हम लोग आपको अपने घर रखेंगे!"

शेख अमीर खाँ एडवर्ड्स् और उनके साथियों को अपने घर ले आया। एक रात ही वह रह पाये और सबेरे शेख ने छोटे भाई के सुझाव के अनुसार वहाँ से अठारह-बीस मील दूर एक गाँव में रहने की योजना बनाई।

"यहाँ बागियों को पता लग सकता है !"

"......"

"हम लोग भी तब कत्ल हो जाँयगे ।"

सर्व सम्मति से यही तय हुआ । गाँव वालों की आँखों में खटकने से बचने के लिए सबने अपना हिन्दोस्तानी लिबास भी बना लिया ।

शेख का छोटा भाई एडवर्डस् और उनके तमाम साथियों को गाव ले गया । उनके घर में ही ये सब हिन्दोस्तानी भेष में रहने लगे ।

❀

खाँ बहादुर खाँ ने दिल्ली बादशाह के नाम पर अपने को रुहेलखंड का शासक घोषित कर दिया । अपने नौकरों और मुँहलगे निकम्मे साथियों को ऊँचे-ऊँचे पदों पर बैठाया । सब तरह के मुकदमों की अदालत भी उसने अपने पास रखी ।

इधर-उधर छिपे हुए गोरे अगर पकड़े जाते तो खाँ बहादुर खाँ उन्हें अपने दरबार बुलाकर दो चार ऊटपटाँग प्रश्न पूछ सीधे फाँसी का हुक्म दे देता था । बहुत से अंग्रेज बहादुर खाँ के हुक्म से फाँसी पर लटका दिए गए ।

बहादुर खाँ की घोषणा सिर्फ नाम मात्र की घोषणा थी । उसके नाम से कोई डरता न था । सब मनमानी करते थे । मुबारक शाह ऊपरी तौर से उसके साथ था । भीतर ही भीतर वह बहादुर खाँ को जड़ें खोद रहा था । इस काम में उसे बखत खाँ से भी मदद मिल रही थी ।

खजाने में एक पैसा न था । बहादुर खाँ ने अपने लोगों को जबर्दस्ती रुपया वसूल करने की आज्ञा दे दी । खुद ही एक फरमान जारी किया कि आज जो खुदा के बन्दों की हुकूमत कायम करने में एक पैसा देगा उसे क़यामत के दिन सात सौ पैसे मिलेंगे और जो एक रुपया देगा उसे खुदा क़यामत के दिन सात सौ रुपया देगा । इस घोषणा का भी कुछ प्रभाव न हुआ ।

अलहमद बहादुर खाँ के नाम पर रुपया जबर्दस्ती लूटकर ले जाते, पर वह खजाने में न जमा होकर घरों में जमा होता ।

बहादुर खाँ की हुकूमत ताश का महल थी ।

❀

"अंग्रेजों ने हमारे साथ क्या नहीं किया ! हमारे धर्म में सती होना पवित्र माना जाता है, उसको रोकने के लिए इन लोगों ने कानून बनाया है। अगर कोई राजा बिना औलाद मर जाय तो उसके गोद लिए बेटे को सरकार नहीं मानेगी और वो राज अंग्रेजी अमलदारी में शामिल समझा जायगा। देखो न, नागपुर, अवध, क्या नाम से...लखनऊ वगैरह की अमलदारी ये लोग हड़प गये !"

"और विधवा विवाह का कानून बनाया है।"

"बेशक ! जो हिन्दू ईसाई हो जाता है, उसे ये लोग ऊँचा ओहदा देते हैं। देखा न साले रमधनिया को सैमुअल नाम से ईसाई हो छोरा हाकिम हो गया है ! साला चमार कहीं का। इन अंग्रेजों ने तो अपने धर्म को दो कौड़ी का कर दिया है !"

फर्रुखाबाद में सर्वत्र उत्तेजना थी। सभी जगह लोग अंग्रेजों के कार्यों की चर्चा करते। हिन्दू मुसलमान दोनों की आलोचना के शिकार थे अंग्रेज।

नित नई खबरें आतीं।

कभी अफवाह फैलती। हिन्दू-मुसलमान दोनों धर्म भ्रष्ट करने आटे में सुअर और गाय की हड्डी पीसकर मिला दी गई है। घी में चर्बी मिला दी गई है। पीने के पानी के कुँओं में गाय और सुअर का माँस डाल दिया गया है।

एक दिन सचमुच ऐसी अफवाह फैली।

"कुँए में देखा है !"

"हाँ आज ही देखा है !"

बस ! क्या था। उस कुँए के पास बड़ी भीड़ इकट्ठा हो गई। कुँए में सफेद-सफेद फूँदा सा कुछ तैर रहा था। अफवाह की पुष्टि हो गई कि अंग्रेजों ने धर्म नष्ट करने एक कुँए में गाय और सुअर का माँस जो छोड़ा था, सो ठीक से वजनदार चीज से बँधा न रहने के कारण ऊपर आ गया है।

देखते-देखते बाजार में सन्नाटा खिंच गया।

लोग अपने-अपने घरों में भागकर छिप गये। छावनी के सिपाहियों में भी उत्तेजना फैली और गोलमाल शुरू हुआ।

अंग्रेजों को खबर मिली। दौड़े आए। कुँए से काँटा डालकर उस वस्तु को निकाला गया। वह एक आदमी का शव था। पता नहीं वह धोखे से गिर पड़ा था या

उसने आत्महत्या की थी। यह बात सबको बतला दी गई तिस पर भी यह अफवाह उड़ी कि उस आदमी ने कुँए का पानी भरकर पिया तो उसमें माँस का एक टुकड़ा आया। चूँकि वह पानी पी चुका था, उसका धर्म नष्ट हो गया था इसलिए आत्मग्लानि से भर उसने कुँए में कूदकर आत्महत्या कर ली। यह उसने इसलिए किया कि उसका तो धर्म गया ही अब दूसरों का धर्म न जाय।

शहर में शान्ति हो गई, पर अफवाहें शान्त न थीं।

अंग्रेज इंजीनियर बैलर अपने बँगले में था। सरकारी काम से दो साल पहिले यहाँ आया था। सबेरे की चाय पर नगर का एक महाजन श्रीधर आमंत्रित था।

चाय की चुस्कियों के साथ अफवाहों पर चर्चा होने लगी। मेरठ की बगावत की खबर लग गई थी। साथ ही यह भी समाचार था कि बँगाल में गदर का जोर है।

श्रीधर बोला--"लोगों का कहना है कि सरकार ने घी और आटे को भ्रष्ट कर दिया है!"

बैलर ने हँसकर कहा--"लोगों को मालूम होना चाहिए कि सरकार घी और आटे का रोजगार नहीं करती है।"

"एक बात और मैंने भी सुनी है।"

"सो क्या?"

"सुना है कि सरकार ने चाँदी के बदले चमड़े का रुपया चलाया है और देश का सब सोना चाँदी विलायत जा रहा है!"

"चमड़े का रुपया आपने देखा है?"

"हाँ!"

बैलर ठठाकर हँसते हुए बोला--"अच्छा। अगर आपके पास चमड़े का रुपया हो तो ले आइए। मैं रुपये के अठारा आने दूँगा।"

श्रीधर कुछ गंभीर होकर बोला--"चमड़े का रुपया चलाना कोई बड़ी बात नहीं है, साहब! इस मुल्क में बादशाह हुमायूँ के जमाने में एक बार चमड़े का सिक्का भिश्ती के राज्य में चल चुका है!"

कर्नल स्मिथ ने सुरक्षात्मक तैयारियाँ शुरू कर दीं। मेरठ के विद्रोह के बाद शाहजहाँपुर, बदायूँ, बरेली से आने वाली खबरों ने बेचैन कर दिया। छह मील दूर बसे फर्रुखाबाद से भी विचित्र-विचित्र बातों के आगमन से चिन्ता होना स्वाभाविक था।

चारों ओर विद्रोह के लक्षण थे। कारखाने में तोपों की गाड़ियाँ बनती थीं। इसलिए अधिकांश अधिकारी अंग्रेज ही थे। नगर में अंग्रेज स्त्री पुरुष काफी संख्या में थे।

रात में बड़ी देर तक तमाम अंग्रेज आफीसरों की बैठक होती रही। सारी स्थिति पर विचार किया गया। अन्ततः यह तय हुआ कि कुछ लोग यहाँ से सुरक्षित स्थानों की ओर रवाना कर दिये जाँय। इससे अगर विद्रोह हो गया तो कम कठिनाईयों का सामना करना पड़ेगा।

"कानपुर भेजना अच्छा होगा। हमारे सेनापति वहाँ पर हैं हीं।"

"और सुना है, इलाहाबाद से वहाँ फौज आने वाली है!"

"ठीक है। कानपुर जाना ही अच्छा होगा!"

सबकी राय से दूसरे दिन एक सौ सत्तर अंग्रेज, स्त्री बच्चे नावों के द्वारा कानपुर की ओर रवाना कर दिये गये।

❀

रातोंरात नगर के कुछ बदमाशों, लुटेरों, बाहर से आए बागियों और कुछ छावनी के सिपाहियों ने नवाब अफजल खाँ के घर गुप्त बैठक कर विद्रोह का निर्णय कर लिया।

नवाब अफजल खाँ शासक खानदान के थे। अंग्रेजों की तरफ से पेंशन मिलती थी, फिर भी दरिद्र ही रहते। अधिकांश रुपया शराब कबाब और रण्डियों की भेंट चढ़ जाता था, इस पर भी सिपाही उन्हें मानते थे।

सबेरा होते ही विद्रोह फैल गया। हथियारों तोपों पर कब्जा कर अंग्रेजों को मार भगाया। जो बचे, उन्हें कत्ल कर डाला गया।

चारों तरफ बागियों का झंडा फहराने लगा।

नवाब अफजल खाँ ने अपने नाम से एक फरमान जारी कर अपने को नवाब

घोषित कर दिया। विद्रोहियों ने अफजल खाँ को अपना शासक मान लिया। फर्रुखाबाद की बागडोर फिर नवाबी खानदान के हाथ आ गई। पूरे शहर में नवाबी हुकूमत कायम होने की डुग्गी पीट दी गई।

❀

फर्रुखाबाद के इस समाचार से कर्नल स्मिथ के होश ठिकाने हो गए। तुरन्त पूरी तैयारियाँ करने लगे। दस नंबर की पलटन के सिपाही और गोलंदाजों पर पूरा विश्वास था। यह पल्टन बर्मा की लड़ाई में समुद्र पार भी गई थी। यह धर्म के खिलाफ बात थी। फिर भी इस पलटन के तमाम लोगों ने इसे न माना और अंग्रेजी हुकूमत का साथ दिया था।

कर्नल स्मिथ और कर्नल गोल्डी ने इस पलटन के अफसरों को अपने बँगले बुलाया।

"आप लोगों से कोई बात छुपी नहीं है!"

"जी हाँ!"

"ऐसी हालत में पक्का इन्तजाम करना जरूरी हो जाता है। मेरा इरादा किले में खजाना पहुँचा देने का है!"

इस पर तमाम अफसरों में सन्नाटा छा गया। अपनी पलटन के अलावा उन्हें दूसरी पलटन के तमाम सिपाहियों की बात मालूम थी कि भीतर ही भीतर वे सब बगावत की तैयारियाँ कर रहे हैं। बाहर से भी कुछ लोग आ गये हैं। इसलिए खजाना हटाते ही हमला हो जायगा। दबी चिनगारियाँ भड़क उठेंगी।

"सुनिए साब!"—एक अफसर बोला—"खजाना हटाने में बड़ा खतरा है। आप खजाना रहने दें। उसकी रक्षा हम लोग करेंगे। इस समय हालत ऐसी नहीं है। ऐसा करने से सब हमला कर देंगे।"

"......"

"सीतापुर से इकतालीस नंबर की पलटन के सूबेदार ने एक खत हम लोगों को लिखा है। मैं आपको बता दूँ। उस खत में है कि अपनी पलटन के साथ वह सीतापुर से आ रहा है और अब हम लोग भी उसका साथ दें!"

कर्नल स्मिथ का चेहरा सफेद पड़ गया।

"हम लोगों ने जवाब दिया है कि बहुत दिनों से हम लोग सरकार का नमक खा रहे हैं, इसलिए नमकहराम नहीं हो सकते। आपकी पलटन का हम लोग मुकाबला करेंगे!"

"शाबास!"—कर्नल स्मिथ बोले—"आप लोगों का हमें पूरा भरोसा है।"

कर्नल गोल्डी ने मौन भंग किया—"गंगा के पुल से अवध की सेना आ सकती है। इसलिए अगर हम लोग पुल तोड़ दें तो बागियों को रोक सकते हैं।"

"हाँ, यह ठीक होगा!"

पुल तोड़ने की योजना के साथ-साथ यह भी तय हुआ कि बचे हुए तमाम अंग्रेज किले में आ जाँय। किला कोई खास मजबूत न था। आसपास के मकानों की छत ही इतनी ऊँची थी कि किले का मैदान साफ दिखलायी पड़ता था। फिर भी कोई स्थान न रहने के कारण आश्रय के लिए यही किला उपयुक्त समझा गया।

❀

कप्तान जेम्स अपने साथियों के साथ भागते हुए पोहियान की ओर बढ़ते आए। शाहजहाँपुर की तरह चारों तरफ आग थी। रास्ते में कई स्थानों में ग्रामीणों के आक्रमणों, ईंट पत्थरों की मार से बचते हुए पोहियान आए।

एक विश्वस्त सिपाही को शहर भेजा।

शाम को वह पता लगाकर आया।

"साहब!"—उसने कहा—"मैंने राजा साहब से बात की है। वे बुरी तरह घबड़ाए हुए हैं। उन्होंने मदद देने से साफ इनकार कर दिया है। उनका कहना है कि इस मामले में उनके आदमी उनकी भी आज्ञा का उल्लघंन कर सकते हैं।"

जेम्स उदास हो गए।

रात वहीं सड़क किनारे खेतों में छिपकर काटी। रक्षा का कोई स्थान सूझ न रहा था। अन्ततः प्रातः होते ही मुहम्मदी जाने का निर्णय कर लिया। वहाँ उनके परिवार के कुछ लोग भी हैं।

प्रातः अपने दल के साथ कप्तान जेम्स मुहम्मदी की ओर चल पड़े ।

❀

अजीमुल्ला ने हँसकर कहा—"तात्या, मेरा विचार है कि जितने मर्द अंग्रेज हैं उनको..."—हाथ से कत्ल करने का संकेत कर अजीमुल्ला फिर ठठाकर हँस पड़ा ।

"वे तुम्हारे हाथ हैं, जैसी इच्छा हो, सो करो ।"

तात्या की इस ओर बिलकुल रुचि न थी । वह अपनी दूसरी योजनाओं में व्यस्त था । इधर-उधर बिखरी हुई तमाम अराजकता को रोक, वह पूरे सूबे के शासन को दृढ़ बना शक्ति बटोरने का प्रयास कर रहा था । जानता था, अंग्रेजों का मुकाबला करने के लिए एक सुगठित शक्ति की आवश्यकता है । अंग्रेज खामोश बैठनेवाले नहीं हैं । इलाहाबाद से रेनडे के आने की खबर आ ही थी । बाबा भट्ट के साथ इसी विषय पर मंत्रणा कर वह अभी आया ही था ।

अन्य सूबों से भी उसका सम्पर्क हो गया है । बहुत से स्थानों से अंग्रेजी राज उठ जाने के समाचार आ चुके हैं । मुश्किल यह है कि तमाम स्थानों में बागी बिखरे हैं । उनमें कोई संगठन नहीं । इस स्थिति के कारण तात्या का मन बड़ा दुःखी था । यह स्थिति अंग्रेजी राज की पुनर्स्थापना में सहायता दे सकती है ।

अजीमुल्ला ने सिगार सुलगाया । अंग्रेजों की तरह सिगार सुलगाकर पीने की आदत उसे पड़ गई थी ।

धुआँ छोड़ते हुए, बोला—"और नाना साहब के लिए तुमने क्या सोचा तात्या ?"

"पहिली तारीख को गद्दीनशीनी कर दो !"

"ठीक है । कानपुर के बारे में तुम्हें मेरी राय माननी होगी ।"

तात्या ने अजीमुल्ला की ओर देखा । नन्हें नवाब का प्रस्ताव उसके सामने आ चुका था । स्थिति को देखते हुए, उसने स्वीकार कर लिया । इस समय आवश्यकता है कि हिन्दू-मुसलमान सम्मिलित रूप से अंग्रेजों का मुकाबला करें । अगर मुसलमानों की यही इच्छा है कि नन्हें नवाब को कानपुर का शासक बना दिया जाय, तो इसे स्वीकार कर लेने में कोई हानि नहीं । इससे मुसलमान भी संतुष्ट हो जायेंगे । नाना साहब तो सर्वोसर्वा रहेंगे ही ।

"नन्हें नवाब तुमसे मिले थे ?"

"नहीं !"

"मैंने वायदा कर दिया है ।"

"ठीक है । गद्दी पर बैठते ही नाना साहब घोषणा कर देंगे पर अजीमुल्ला, इन सब बातों से अधिक ध्यान दूसरी ओर देना है । हम लोगों की योजना काम तो कर गई । अब सँभालना है । समय से पहिले ही बगावत हो गई । एक साथ अंग्रेजी अमलदारी पचीसों जगह से उठ गई है । अब सँभालना है । कहीं कोई संगठन ही नहीं है, जो जिसके मन आता है, कर रहा है । नाना साहब के गद्दी पर बैठते ही इस ओर तेजी से काम करना है ।"

"मैं तैयार हूँ !"—अजीमुल्ला बोला ।

❀

भागी हुई नाव के अंग्रेज, गंगा किनारे के बचे अंग्रेज और फतेहगढ़ से आयी हुई एक नाव में भरे अंग्रेज, सभी को इकट्ठा किया गया ।

पुरुषों को स्त्रियों से अलग कर एक पंक्ति में खड़ा किया गया ।

अजीमुल्ला ने इशारा किया । सिपाहियों की टुकड़ी आयी और हरएक ने एक-एक अंग्रेज पुरुष के सामने खड़े हो अपनी बंदूक सँभाल ली ।

इस दृश्य को देखते ही उपस्थित अंग्रेज-स्त्री बच्चे बिलबिलाने लगे । कुहराम मच गया । उन सबकी आँखों के सामने ही उनके परिजनों को गोली से उड़ाया जा रहा है । तमाम पुरुष-अंग्रेज अविचल हो आँखें फाड़ इस दृश्य को देख रहे थे । अधिकांश अपनी मृत्यु निकट जान बाइबिल के कंठस्थ अंश गुनगुनाने लगे ।

अंग्रेज स्त्री बच्चों की भीड़ सिर धुनती, छाती पीटती अपने परिजनों की ओर दौड़ी, पर सामने खड़ी दूसरी सैनिक-टुकड़ी के घेरे को तोड़ वे आगे न बढ़ सके ।

सामने खड़े अंग्रेजों की ओर देखते हुए अजीमुल्ला ने अंग्रेजी में कहा—"तुमने निर्दोष हिन्दोस्तानियों का कत्ल करके, भोले हिन्दोस्तानियों के साथ छल कपट का व्यवहार कर अपनी हुकूमत यहाँ कायम की । बनिया बनकर भीख माँगने के बाद तुमने हमारा घर लूटा और जिसके तुम गुलाम थे उसी मुगलिया खानदान के बादशाह सलामत बहादुरशाह जफर की तौहीनी करने से भी तुम बाज न आए

इसलिए आज हिन्दोस्तानियों की हुकूमत फिर कायम हो जाने पर तुम्हें तुम्हारे इन गुनाहों के लिए सजाए मौत दी जाती है।"

अजीमुल्ला ने इशारा किया।

ठाँय ! ठाँय !!

एक के बाद एक अंग्रेज की लाश तड़फने लगी। इसी बीच घेरा तोड़ एक अंग्रेज औरत अपने पति से लिपट गई।

"डाक्टर डियर...डाक्टर !"

"हटाओ इसे !"

"मिस्टर बायोज़, तुम अपनी औरत को अपने से अलग कर दो।"

वह स्त्री न हटी, अपने पति को उसने प्राणप्रण से जकड़ लिया था।

"दोनों को मार दो।"

ठाँय ! ठाँय !!

दोनों वहीं ढेर हो गए। इस तरह तमाम अंग्रेज-पुरुषों को मार डाला गया। स्त्रियों और बच्चों को अजीमुल्ला के हुक्म से बीबी घर में कैद कर दिया गया।

बीबीघर एक अंग्रेज का बँगला था। अपनी प्रेमिका की स्मृति में बनवाया था। उसी बँगले में सब कैद कर रख दिए गए। उनके कष्टों की कोई सीमा न थी।

※

हिन्दोस्तानी निवास में रहने पर भी एडवर्डस् छिप न सके। गाँव के बहुत से लोगों ने पहिचान लिया और आपस में कानाफूसी करने लगे। अमीरखाँ के दब-दबे के कारण कोई ऊपरी तौर से खुलकर कुछ कह नहीं रहा था, पर भीतर ही फुसफुसाहटें चल रही थीं।

एडवर्डस् हाथ पर हाथ धरे न बैठे थे। वह चारों तरफ की खबर ले रहे थे। सब ओर का वातावरण अत्यन्त निराशापूर्ण था। कहीं कोई आशा न थी। एक बड़ी कोठरी में एडवर्डस् अपने साथियों के साथ रहते।

रात को अमीर खाँ घबरा याहुआ आया।

सब लोगों को उठाया।

"साहब, कुछ सिपाही इधर आ रहे हैं। शायद उन्हें खबर हो गई है कि आप लोग यहाँ हैं!

"तब ?"

"हम लोग आपकी रक्षा करने में मजबूर हैं। आप जानते ही हैं, इस वक्त सिपाहियों की ताकत बहुत बढ़ी है। फिर भी आप जो कहें, सो यह बन्दा करने के लिये हाजिर है।"

इस नई विपत्ति के कारण सभी अंग्रेज घबरा गए। अन्त में सर्व सम्मति से यह तय हुआ कि गाँव छोड़कर रातोंरात भाग चलना चाहिए।

इस निर्णय के साथ ही सभी अंग्रेजों ने चलने की तैयारी की। अमीर खाँ ने आँखों में आँसू भर विदा दी। रातोंरात अंग्रेज शेखूपुरा छोड़कर भाग गये। भाग्य भरोसे वे आगे बढ़ गए।

४३

प्रधान सेनापति आनसन की मृत्यु के समाचार से तमाम अंग्रेजों को धक्का लगा। लार्ड कैनिंग बड़ी कष्टप्रद स्थिति में थे। विद्रोह उनके आसपास भी जोर पकड़ता जा रहा था। अवध, रुहेलखंड, कानपुर के विद्रोहों के बाद बिहार भी जोर पकड़ रहा था। पश्चिमोत्तर सीमाप्रान्त में आग ठंडी थी। मध्यभारत में चिनगारियाँ सुलग रही थीं।

लार्ड कैनिंग धैर्य के साथ सारी स्थिति का अध्ययन करते हुए यथासंभव आदेश दे रहे थे। दिल्ली उद्धार की ओर विशेष प्रयत्नशील थे।

प्रधान सेनापति आनसन के पद पर सर पेट्रिक ग्रान्ट को नियुक्त कर कर्नल हावेल के साथ इन दोनों को मद्रास से बुलाकर इलाहाबाद की ओर भेजा।

इलाहाबाद में कर्नल नील की अध्यक्षता में सामूहिक फाँसी दंड का बाजार गर्म था। अनेक वृक्षों पर लोगों को फाँसी देकर लटका दिया गया था और इसका प्रदर्शन हो रहा था ताकि बलवाई अब सिर उठाने का साहस न करें। चारों ओर इस आतंक का बाजार गर्म था।

लखनऊ और कानपुर के समाचार पाकर कर्नल नील एकदम बौखला गये। कानपुर के गोरों की दुर्दशा का समाचार सुनकर उनके शरीर में आग लग गई।

लार्ड कैनिंग के आदेश की प्रतीक्षा न कर उन्होंने मेजर रेनडे को कानपुर की ओर रवाना कर दिया।

सेनापति नील ने उन्हें हुक्मनामा लिखकर दिया—"रास्ते में जहाँ कहीं विद्रोही टिके हों, वहीं उन पर हमला कर देना होगा किन्तु और लोगों का अनिष्ट न हो, इसका ख्याल रखना। राजभक्त लोगों को घर लौट जाने में सहायता देना ताकि वे अँग्रेजी अमलदारी के तरफदार बने रहें। जिन गाँवों में बागी छिपे हों, उन गाँवों को भस्म कर देना। सिपाहियों को फाँसी पर लटका देना। फतेहपुर पर हमला कर पठानों का मुहल्ला फूँक देना। डिप्टी कलक्टर मिले तो फाँसी पर लटका देना और उसका सिर काटकर किसी मुसलमान के दरवाजे रख देना।"

रेनडे अपने दल के साथ चल पड़ा। रास्ते के गाँव जलाए और लूटे जाने लगे। लोगों को वृक्षों पर लटकाकर फाँसी दी जाने लगी। जिस गाँव में रेनडे पहुँचता वह गाँव फिर वहाँ न होता।

"साहब, साहब !!"

किनारे के लोग चिल्लाए।

"आप लोग कहाँ भाग रहे हैं, साहब! इधर आइए!"

ग्रामीणों की पुकार सुन टामसन ने हाथ पैर धीमे किए। पहिले तो वह घबड़ा गया था कि कहीं फिर हमलावर तो नहीं आ गये किन्तु स्वर में सहृदयता का आभास पा किनारे लगा।

सामने गया। उसके साथ तीन आदमी और थे। बस! कुल चार ही बचे। शेष काम आ गए।

ग्रामीणों ने उनकी दुर्दशा देख दुःख व्यक्त किया। एक ग्रामीण ने दौड़कर अपने मालिक को खबर दी। थोड़ी ही देर में टामसन ने देखा। एक हाथी आ रहा है। साथ में बहुत से लोग हैं। टामसन घबड़ा गया। कहीं हाथी से कुचलकर न मारे जाँय, पर उसकी यह आशंका निर्मूल निकली जब कि महावत ने उनसे बैठने का अनुरोध किया।

टामसन अपने साथियों के साथ बैठकर गाँव में आया।

पता लगा। इस गाँव के मालिक ठाकुर दुर्गविजयसिंह हैं। उन्होंने विपद के मारे इन अंग्रेजों का स्वागत किया। उन्हें अपने यहाँ आश्रय दिया।

टामसन और उनके तीनों साथी आराम से सुखपूर्वक ठाकुर दुर्गविजयसिंह के संरक्षण में रहने लगे।

बड़े कष्टों और बलिदान के पश्चात् सुख के दिन आए।

❀

कर्नल स्मिथ अपने साथियों के साथ किले में तो आ गए पर खाद्य सामग्री का कोई प्रबंध न था। बड़ी मुश्किल से पच्चीस बकरियाँ जुटाकर किले में लायी गईं। किले में पर्याप्त हथियार भी न थे। विवशता थी। अतएव सबको किले में आश्रय लेना ही पड़ा।

गंगा पर बना पुल कर्नल स्मिथ दस नंबर की पलटन की मदद से तोड़ चुके थे। इसी पर अन्य पलटन के सिपाहियों का असंतोष भड़क गया था। वे सब इस पलटन के सिपाहियों की भर्त्सना करने लगे। इस पलटन के लोग समुद्र पार बर्मा की लड़ाई पर भी गए थे। अतएव दूसरे सिपाही इन्हें धर्म भ्रष्ट-कह इनका बहिष्कार करने लगे।

स्थिति बिगड़ती जा रही थी।

कर्नल स्मिथ के साथ के अन्य लोग युद्ध कला में निपुण न थे। कठिनाईयाँ बढ़ती जा रही थीं। दस नंबर की पलटन के अफसरों ने दूसरे सिपाहियों की धमकियों से घबराकर अंग्रेजी-अफसरों का साथ छोड़ दिया।

सहसा तोप की आवाज आयी।

नगर में विद्रोह हो गया।

सिपाही बागी हो गये। इकतालीस नंबर की पलटन ने बगावत की। पताका फहराकर नवाब अफजलखाँ को अपना शासक घोषित कर दिया।

पलटन के सिपाहियों ने विद्रोह की घोषणा के साथ-साथ जेलखाना तोड़ दिया और खजाने पर हमला कर दिया। सीतापुर से आयी विद्रोही सूबेदार के नेतृत्व में इकतालीस नंबर की पलटन खजाने पर आयी। बाइस नंबर की पलटन ने

विरोध किया। कुछ लोगों ने साथ दिया। बाद में विरोध खत्म हो गया और खजाना लूट लिया गया। यहाँ के खजाने में स्वर्गवासी दिलीपसिंह पंजाब केसरी के हीरे जवाहरात वगैरह भी थे। सब लुट गया।

परेड के मैदान में सब इकट्ठे हुए।

सूबेदार ने किले पर हमला करने की राय दी। दस नम्बर की पलटन के सिपाहियों ने विरोध किया। वे खजाना लूटकर अब चुपचाप अपने-अपने घर खिसक जाना चाहते थे।

"ये सब गद्दार हैं!"

"मारो!"

"बर्मा की लड़ाई में जाकर ये लोग अपना धरम भिरष्ट कर चुके हैं।"

गरमा-गरमी बढ़ी और दोनों पलटनों में मार होने लगी। दोनों पक्षों के अनेक आदमी मारे गए। अन्ततः दस नंबर की पलटन ने किले पर हमला करने में साथ देना स्वीकार कर लिया।

❀

एडवर्डस् विपत्तियों का सामना करते-करते टूट चले थे। रास्ते में ग्रामीणों से जूझते-जूझते उनके अनेक साथी काम आ चुके थे। कुल चार ही व्यक्ति बचे। पिछले गाँव में उन तीनों का क्या हुआ वे स्वयं नहीं जान सके। किसी प्रकार अकेली जान बचाकर भाग आये।

रास्ते की कड़ी धूप, कठोर श्रम के कारण एडवर्डस् लड़खड़ाकर किनारे बैठ गए। प्यास से कंठ सूख गया था। उनके हिन्दोस्तानी कपड़े भी मैले हो गये थे। फट गये थे। पास ही एक गाँव दिखलाई पड़ रहा था। एडवर्डस् में इतना साहस न था कि वहाँ जा सकें।

एक आदमी आ रहा था। पास आकर वह ठिठक गया। उसने गौर से एडवर्डस् को देखा।

"साहब आप!"—वह चीख पड़ा।

"......"

"मैं आपका सिपाही साहब। मैंने आपको पहिचान लिया। आप एडवर्ड साहब हैं। मैं आपकी पलटन में था साहब। अब मुझे पेंशन मिलती है!"

उस सिपाही को स्थिति का सारा ज्ञान था। एडवर्डस् को वहीं छोड़ वह वापस गया। कुछ देर में वापस आया। अपने साथ भोजन की पोटली और रुपये भी ले आया था। एडवर्डस् को खाना खिलाकर उसने रुपए दिए।

आँखों में आँसू भर बोला—"साहब, जिन्दगी भर आपका नमक खाने के बाद भी आज मैं इस मुसीबत में आपकी इतनी ही सेवा कर पा रहा हूँ !"

एडवर्डस् ने रुपये लेने से इंकार कर दिया।

"नहीं साहब। आपको जँगल-जँगल घूमना है। आप रखिए। क्या करूँ ! आपको अपने यहाँ रख नहीं सकता। गाँव के लोग मुझे मार डालेंगे !"

सिपाही ने आँखों में आँसू भर विदा ली।

थोड़ी ही देर बाद एडवर्डस् के तीनों साथी आ गए। ग्रामीणों से लड़-भिड़कर किसी प्रकार वे भाग आए थे। तीनों घायल हो गये थे।

कुछ विश्राम के पश्चात् चारों आदमी फिर आगे बढ़ गये।

❀

धरमपुर के ग्रामीणों ने चारों अंग्रेजों को देखते ही शोर मचाया और उनको घेर लिया। ग्रामीणों की संख्या अधिक थी इसलिए एडवर्डस् और उनके साथी भाग न सके। मौत से अब वे हार गये थे।

"मारो ! देखते क्या हो ?"

"अंग्रेज मारना पुण्य है !"

"ठहरो !"

ग्रामीणों की भीड़ घबड़ाकर हट गई। गाँव के मालिक हरदेवबक्स अपने घोड़े पर आ गये थे। उन्हें इसकी खबर लग गई थी।

"रास्ता दो !"

ग्रामीण हट गये।

हरदेव घोड़े से उतरा—"आइए साहब !"

अंग्रेजों की दयनीय दशा देख उसे दया आ गई। विपत्ति में पड़े हुए मनुष्य की सहायता करना भारतीय-धर्म है। हरदेवबक्स चारों अंग्रेजों को अपने साथ ले गए। उन्हें अपने घर आश्रय दिया।

❀

दोनों पलटनों के सम्मिलित सिपाहियों ने किले पर हमला बोल दिया। किले के बाहर पड़े तमाम कुलियों को मार गिराया। कर्नल स्मिथ ने भी तोपें खड़ीकर आक्रमण रोका। तोपों की मार के आगे विद्रोह आगे न बढ़ सके। किले के पिछले हिस्से से रस्सियाँ लगाकर विद्रोहियों ने किले में घुसने का प्रयास किया, पर कामयाब न हो सके। अंग्रेजों की बन्दूकों और तोपों की मार बड़ी तेज थी।

दूसरे दिन नई तरकीब से काम लिया गया। हुसैनपुरा के मकानों की छत से किला बेपर्द था। सिपाही इन्हीं मकानों से अंग्रेजों पर हमला करने लगे। इससे अंग्रेजों की हानि शुरू हुई। इसी समय कुछ सिपाहियों ने किले से सात गज के फासले पर एक मकान पर अपना कब्जा कर किले की दीवारों में छेद कर दिया और वहाँ से गोलियों की वर्षा कर गोलेन्दाजों को मार गिराया। तोपें ठंडी पड़ गईं।

अंग्रेज जी-जान से लड़ने लगे।

सिपाहियों को एक तरकीब सूझ गई। सुरंग खोदकर बारूद भरकर उन्होंने किले की दीवार का हिस्सा गिरा दिया। अब दिन रात युद्ध होने लगा। अँधेरे में भी लड़ाई होती। अंग्रेज स्त्री-बच्चों के लिए प्रतिपल जान का खतरा रहता। अनेक अंग्रेज मरने लगे।

हथियार रह गये। बारूद बन्दूक की गोलियाँ समाप्त हो गईं। संकट अकेले नहीं आता है। फिर भी अंग्रेज मुकाबला करने लगे। लोहे की कीलें ही बन्दूकों में भरकर मारते। फिर भी कामयाबी न मिली। रसद भी खत्म हो गई। तमाम अंग्रेज ईसाई बुरी तरह घिर गये।

स्त्रियों और बच्चों का रुदन शुरू हो गया। मौत निकट आती जा रही थी। मदद के लिए कर्नल स्मिथ ने फ्रेंच में एक पत्र लिखकर आगरा भेजा पर प्रतीक्षा करने पर भी आगरा से कोई उत्तर न आया। अब मौत और विकराल हो चली।

❀

असह्य स्थिति सामने थी। भागने के अतिरिक्त और कोई रास्ता न था। भागें भी तो कैसे। स्त्री और बच्चों की किलबिलाहट बढ़ती ही जा रही थी। प्रकृति ने इस अवसर पर सहायता की। वर्षा की झड़ी लगी। गंगा का पानी कुछ बढ़ा। मौका देखकर कर्नल स्मिथ ने नावों का प्रबन्ध किया।

बरसात की झड़ी में नावें आयीं और पानी में भींगते लथपथ अंगरेज स्त्री बच्चे किले से निकलकर भागे। तीनों नावों का संचालन भार क्रमशः कर्नल स्मिथ, कर्नल गोल्डन और मेजर राबर्टसन ने सँभाला। बरसते पानी और रात के अँधेरे में ही तमाम अंग्रेज भाग खड़े हुए।

आगे पानी का बहाव न था। किसी प्रकार ठेल-ठेलकर तमाम अंग्रेज नावों को ले चले पर नई मुसीबत सामने थी। सवेरा होने जा रहा था।

सवेरा हो गया। घेरा डाले हुए सैनिकों को पता चला कि अंग्रेज रात में वर्षा में ही भाग गये। इस समाचार से बड़ी खलबली मची! छोटी छोटी डोंगियों में सवार होकर सिपाही अंग्रेजों का पीछा करने निकल पड़े

अंग्रेज मुकाबला करने खड़े हुए। बन्दूकों के कुंदों से ही लड़ाई शुरू हो गई।

इस मुठभेड़ में औरतें और बच्चों की बड़ी दुर्दशा हुई। बहुत सी अंगरेज स्त्रियाँ-बच्चे मारे गये। फिर भी अंग्रेज लड़ते रहे और गाँववालों को भगा दिया।

कुछ ही आगे रक्त से लथपथ भयभीत अंग्रेजों का झुंड बढ़ा था कि नया संकट आ गया। किश्तियों पर बैठे सिपाही आ गये। किनारे के रास्ते से तोपें लिए हुए कुछ सिपाही भी आ गये। भयंकर दृश्य उपस्थित हो गया। नदी में ही लड़ाई होने लगी। मारे भय के अनेक स्त्री-बच्चे कूद पड़े और डूब गए। गंगा की छाती पर पुनः अंग्रेजों का कत्ल हुआ। स्त्री और बच्चे काट डाले गए। वीरता से लड़ते हुए अनेक अंग्रेजों ने जल-समाधि ली।

तोपों के गोलों ने और संहार ढाया। इनकी मार के आगे अंग्रेज टिक न सके। मारे गये और जो बचे उन्हें कैद कर लिया गया।

❀

नवाब अफजल खाँ के हुक्म से बन्दी अंग्रेजों को परेड के मैदान में खड़ा किया गया। तोपों के मुँह पर उनको बाँधा गया।

धड़ाम! धड़ाम!!

तोपें दाग दी गईं। इस प्रकार बचे हुए तमाम अंग्रेजों के शरीर के टुकड़े-टुकड़े हो चारों तरफ बिखर गये।

नवाब अफजल खाँ नाम मात्र को शासक थे। लूट का कुछ भी माल उन्हें न मिला था। उनके फरमान रोज जारी होते पर उन पर अमल कोई न करता था। जिसके पास शक्ति थी, उसका बोलबाला था। हर तरफ मनमानी थी। बलवानों के घर भर रहे थे और निर्धन तबाह हो रहे थे। शासक पद पाकर नवाब अफजल खाँ विषय-विलास में चूर हो गया। उसके साथी भी कुछ इसी प्रवृत्ति के थे।

कहीं शासन न था। कहीं कानून न था। पूरा सूबा छोटे छोटे खडों में विभाजित हो सिपाहियों के अफसरों के हाथ में था। उनकी ही मनमानी चल रही थी। न्याय और कानून पूरे सूबे से उठ गया था।

रुहेलखड का शासक बनने के नाम पर खाँ बहादुर खाँ और मुबारक शाह में एक दूसरे को गिराने की योजनाएँ चलने लगीं। आपस में ही लोग एक दूसरे को कमजोर करने लगे। खजाने में एक भी रुपया न था। सिपाही इधर-उधर जबर्दस्ती वसूली करते, लूटते। न सेना का संगठन था और न ही राजकाज का संगठन। बागियों की आड़ में लुटेरे और बदमाश ही अधिक सक्रिय थे।

❀

बिठूर में एक जुलाई को राज्याभिषेक का आयोजन किया गया। नाना साहब धुँधुपन्त गद्दी पर बैठे। इस अवसर पर उत्सव मनाया गया। राज-सी ठाट-बाट से मंत्र-ध्वनियों के बीच, तोपों की सलामी के साथ, राज्यपुरोहितों ने कुल-परम्परानुसार नाना साहब को राज तिलक दिया। नाना साहब ने पेशवा की उपाधि सँभाली और इस राज्यारोहण के उपरान्त ही अपने सूबे में अपने शासन का घोषणापत्र जारी किया।

नाना साहब ने नन्हें नवाब को कानपुर का शासक घोषित किया। सिपाहियों को एक लाख रुपया इनाम देने की भी घोषणा की गई। इस अवसर पर बाबाभट्ट और भाई बालाराव को भी उच्च-पद दिये गये। तात्या टोपे और अजीमुल्ला खाँ पूर्ववत् सलाहकार बने रहे।

राज्याभिषेक के उपरान्त नाना साहब कानपुर लौट आए। एक मुसलमान की होटल का आलीशान भवन कब्जे में कर वहाँ नाना साहब ने अपना डेरा डाला।

दरवाजे पर तोपें लग गईं और सिपाही पहरा देने लगे। इस प्रकार नाना साहब पूरे सूबे के शासक बन राजकाज का संचालन करने लगे।

सूबे में हिन्दोस्तानी हुकूमत की इस नींव मजबूती के बाद तात्या ने अपना ध्यान सीमावर्ती शहरों और सूबों की ओर फेरा। तमाम दिशाओं में बागियों की ही सत्ता उठ रही थी। इस बिखरी हुई शक्ति को एकत्रित करने के प्रयास में तात्या टोपे जी-जान से लग गया।

अंग्रेजों की गति-विधि पर भी बराबर उसकी दृष्टि थी।

❀

"दिल्ली के सिपाहियों की ताकत इस वक्त बहुत ज्यादा है!"—हडसन ने कहा—"और हमारे साथी बारबार हमला करने पर जोर दे रहे हैं। इसमें हमारा नुकसान है।"

बर्नार्ड चुपचाप हडसन की बातें सुन रहे थे। हडसन की बातों पर उन्हें विश्वास था। हडसन की कुशलता और उसकी प्रणाली पर भरोसा था।

"मेरी भी यही राय है।"—सेनापति बर्नार्ड बोले—"व्यर्थ में आक्रमण कर हम अपनी शक्ति नष्ट नहीं कर सकते, जब तक और सहायता न आ जाय। अभी आक्रमण करना नहीं, बल्कि आक्रमण रोकना हमारा काम होना चाहिए। अधिकांश हमारे युवक ही जोश की बातें करते हैं!"

सेनापति बर्नार्ड का स्वर कुछ कमजोर था। चेहरा उदास मालूम पड़ रहा था। हडसन उनके मुख के भाव परिलक्षित कर रहा था।

"आक्रमण हमारा व्यर्थ नहीं जायगा!"—हडसन ने कहा—"दिल्ली पर हमारा कब्जा होकर रहेगा। क्योंकि बागियों की ताकत में एका नहीं है। दूसरे बादशाह को उन्होंने दिखावे के लिए बादशाह बनाया है। उस बेचारे की बुरी हालत है। शाही महल में दिन रात बन्द पड़ा रहता है। सिपाहियों के अफसर उसके नाम पर मनमाने फरमान निकालते हैं और मनमाना काम करते हैं।"

"हिन्दोस्तानियों को अगर हुकूमत करने का तमीज होता तो हम कैसे यहाँ रहते!"—बर्नार्ड के होठों पर व्यंग्य खेला—"डैम काला आदमी!"

"मैंने इस बगावत की तमाम बातों पर सोचा है!"—हडसन गंभीरता से बोला—"इस बगावत में इतनी ताकत आ जाने का एक कारण है। हिन्दू और

मुसलमानों का एका। मेरी समझ में यह नहीं आता कि दो विपरीत धर्म के लोग एक कैसे हो गए!"

"इनका यह एका हमारे लिए आगे भी खतरा पैदा कर सकता है।"

"जरूर! अगर ये दोनों कौमें मिलकर रहेंगी, तो हमारे लिए खतरा रहा आयेगा। मैं सरकार से इस बात की सिफारिश करूँगा कि इन लोगों को अलग-अलग रखने के उपाय हमेशा किये जाँय। इन दोनों कौमों में फूट बनाए रखना जरूरी है।"

"मैं तुम्हारे विचार से सहमत हूँ!"—बर्नार्ड ने कहा—"अब की बार हमारी जड़ें मजबूत होते ही इस ओर अवश्य ध्यान दिया जायगा! दिल्ली पर कब्जा होते ही हम एक दूसरे को भड़काना शुरू कर देंगे!"

"दिल्ली पर आसानी से कब्जा हो जायगा।"—हडसन ने मुस्कुराकर कहा—"हमें भीतरी मदद भी मिलेगी!"

"मदद? कैसी मदद? दिल्ली में हमारे दो चार जासूसों के सिवाय और है ही कौन! वे भी हिन्दोस्तानी हैं। आपके आदमी!"

"नहीं। हमारे देश के भी बहुत से लोग उसमें हैं!"

"क्या कहा?"

"हाँ साहब! हमारे पचास आदमी शाही-महल में हैं, जो हमारी वक्त पर मदद करेंगे।"

"हडसन!"

"हाँ साहब! बात सही है। दिल्ली बादशाह ने खुद इन पचास आदमियों को छुपा रक्खा है!"

"माईगाड! तब तो यह बादशाह बहुत नेक दिल आदमी है!"

"है! लेकिन उसे नेकदिल कहकर हम हिन्दोस्तानियों की भावनाओं को बलवती नहीं बना सकते हैं। इन सब उपकारों को हमें भूल जाना होगा। क्रूरता से सबका दमन करना होगा। चाहे वह बादशाह हो या कोई भी हो!"

"हाँ!"

हडसन की बात का समर्थन कर सेनापति बर्नार्ड खड़े हो गए। उन्हें कुछ कँपकँपी सी मालूम हो रही थी।

"आपकी तबियत...?"

"हाँ, मैं आराम करना चाहता हूँ। जी भारी मालूम पड़ रहा है।"

हडसन बाहर निकला। डाक्टर ने सेनापति को देखा, बतलाया उन्हें हैजा हो गया है।

※

सेनापति निकल्सन अपनी टुकड़ी के साथ अटक, फिल्लोर, पेशावर, स्यालकोट तक का दौरा कर अमृतसर पहुँच गये थे। निकल्सन कठोरता के साथ बागियों का दमन करते आ रहे थे। जहाँ-जहाँ बगावत हुई थी, वहाँ कोई शक्ति मुकाबला करने के लिए न थी। अतएव निकल्सन का सरलता से अधिकार हो जाता। फिर दमन का क्रूर चक्र चलता।

निकल्सन के हाथ अटक में विद्रोहियों के कुछ महत्त्वपूर्ण पत्र आ गये थे। निकल्सन ने कुछ विश्वसनीय गोरों, ईसाइयों को मुखबिरों का काम सौंप दिया और इस प्रकार सारी गति-विधियों का पता लगाते हुए निकल्सन बढ़ते आ रहे थे। इन पत्रों के विवरण के कारण हिन्दोस्तानियों और हिन्दोस्तानी पलटन पर से उनका विश्वास एकदम उठ गया था।

अमृतसर धमकते ही निकल्सन ने उनसठ नंबर की पलटन को मैदान में खड़ा किया।

"बाँध दो!"

निकल्सन के हुक्म से कुछ सिपाहियों को तोप के मुँह से बाँध दिया।

"बस!"

धड़ाम! धूँ!! सिपाहियों के शरीर छित्तो-बित्ती हो उड़ गये।

उनसठ नंबर की पलटन के तमाम लोग घबड़ा गये। उनका अंग्रेज आफीसर भी दुःख से भर गया। इस पलटन ने अब तक बगावत में कुछ भी हाथ न दिया था। पलटन पूर्णतः शान्त थी। फिर भी ऐसा व्यवहार! इतना ही नहीं, कुछ देर पहिले तक किसी को यह पता नहीं था कि क्या होने वाला है! इसी पलटन ने थोड़ी देर पहिले निकल्सन के आने पर उनका स्वागत किया था।

"हथियार और वर्दी उतारो!"

निकल्सन का आदेश सुना दिया गया। आतंकित सिपाहियों ने चुपचाप हथियार रख दिये। वर्दियाँ उतार दीं।

इसके बाद ही निकल्सन ने रावल पिंडी की स्थिति की जानकारी प्राप्त कर सूचना दी कि उनके भी हथियार ले लिये जाँय। रावलपिंडी में एक प्रकार से शान्ति थी। फिर भी वहाँ की पलटन को निरस्त्र करने का आदेश निकल्सन ने दे ही दिया।

❀

स्यालकोट के बागियों के पुनः सिर उठाने और उनके भागने की खबर से निकल्सन चिंतित हुए। तुरन्त अपनी सेना तैयारकर चल पड़े। इस बात का उन्हें पक्का विश्वास हो गया कि स्यालकोट के ये बागी सिपाही गुरदासपुर के रास्ते ही जाँयगे। कड़ाके की गरमी की तनिक भी चिन्ता न कर निकल्सन अपनी सेना के साथ दौड़े।

शीघ्र से शीघ्र गुरदासपुर पहुँचकर बागियों को रोक लेना चाहते थे। लगातार दौड़ के कारण गोरी पलटन पस्त पड़ गई। अनेक गोरे सैनिक बेहोश हो गिर पड़े, पर निकल्सन ने विश्राम का नाम न लिया। अपनी सेना को भगाए ले गये। गोरों के कत्ल की खबर से वे एकदम उत्तेजित हो गये थे।

इकतालीस मील का रास्ता बीस घंटे में तय कर ससैन्य निकल्सन गुरदासपुर आ धमके।

बागी तब तक न आए थे। अपनी सेना के साथ निकल्सन उनके आने की प्रतीक्षा करने लगे।

सहसा खबर मिली। सैनिक ने आकर सूचना दी। बागी सिपाही त्रिमूर-घाट के पास चन्द्रभागा पार कर रहे हैं।

निकल्सन दौड़ पड़े।

सिपाहियों को घेर लिया। गोरी सेना टूट पड़ी। इस आकस्मिक विपत्ति के बाद भी स्यालकोट के बागी सिपाही घबराए नहीं। डट गए। दोनों ओर से मुकाबला शुरू हो गया। देखते-देखते अंग्रेजी सेना प्रलय सी बढ़ी और बागियों की लाशें बढ़ गईं।

सिपाहियों में भगदड़ मच गई। थक जाने के कारण भागते हुए सिपाहियों का पीछा न किया जा सका। अधिकांश भाग न सके। नदी में एक ऊँचा स्थान निकला हुआ था। तमाम सिपाही उसी पर डट गये। स्यालकोट से लायी तोपें भी उस टीले पर लग गईं।

रात हो जाने के कारण युद्ध बन्द हो गया पर अंग्रेजी पलटन घेरा डाले पड़ी रही।

❀

बागियों के खून के प्यासे निकल्सन ने प्रातः ही नावों का प्रबंध किया और अपनी पलटन के साथ धावा बोल दिया। इस आक्रमण का स्वंय नेतृत्व किया। बागियों की तोपों की तनिक भी चिन्ता न थी। सौभाग्य से तोप चलाने का जानकार कोई न था। ब्रिगेडियर ब्रिंडला खानसामा तोपचियों के साथ रहते-रहते कुछ जान गया था। वही तोपें दागने लगा पर उसका अभ्यास था, कहाँ!

निकल्सन ने घंटे भर में ही फैसला कर लिया। घमासान लड़ाई हुई। इस मुठभेड़ में अधिकांश सिपाहियों ने लड़ते-लड़ते अपनी जान दे दी। बहुत से स्वेच्छया नदी में कूद पड़े। कुछ ने आत्महत्या कर ली। बहुत ही कम सिपाही कैद हो सके।

❀

परेड के मैदान में अंग्रेजी सेना के घेरे में बागी सिपाही बन्दी बनाकर खड़े किये गये थे। सेनापति निकल्सन घोड़े पर आए। घोड़े पर ही बैठे रहे। उतरे नहीं। रिजर्व टुकड़ी को उन्होंने संकेत किया। बागी सिपाहियों के सीनों पर बंदूकें तन गईं।

"यस रेडी!"

"......"

"वन!"

"......"

"टू!"

सेनापति निकल्सन ने क्रोध से दाँत पीसे—"थ्री!"

ठाँय। ठाँय ! ठाँय !!

सभी सिपाही ढेर हो गए। कुछ ही मिनिटों में अस्सी सिपाहियों को गोली से उड़ा दिया गया। उनकी लाशें कूड़ा कर्कट की तरह गाड़ी में भरकर नदी में बहा देने के लिए उठाकर ले जायी गईं।

अंग्रेजों के नौकरों को भी बंदी बनाया गया था। वे भी परेड के मैदान में खड़े थे। काश्मीर के अनेक क्षेत्रों से पकड़े गए बागी सिपाही भी कैदी रूप में वहाँ उपस्थित थे।

नौकरों को नंगाकर हाथ बाँध लटका दिया गया। सेनापति निकल्सन के आदेश से हर एक को पचास-पचास बेंत मारने का हुक्म हुआ।

सड़ ! सड़ासड़। सड़ ! सड़ासड़। सड़ !!

नौकरों के हाहाकार से मानवता चीख उठी। सभी की पीठ का चमड़ा छिल गया। अधिकांश बेहोश हो गए और कुछ मर भी गए। कठोरता से दमन करने का आदेश दे सेनापति निकल्सन अमृतसर लौट गए।

※

"अजीजन।"

नन्हें नवाब का स्वर सुन अजीजन चौंक पड़ी। तुरन्त उठ खड़ी हुई। पहिले की तरह उपेक्षा भाव उसके चेहरे पर न थे, अब तो नन्हें नवाब मामूली हस्ती का आदमी नहीं है। वह कानपुर का सबसे बड़ा हाकिम था। बेशकीमती वस्त्रों में सजा हुआ खूबसूरत लग रहा था, पर उसकी इस खूबसूरती का कोई असर अजीजन पर न था।

नन्हें नवाब मसनद का सहारा ले टिक गया।

बोला—"बहुत कमजोर दिखाई दे रही हो, अजीजन !"

"बहुत दिनों से बीमार हूँ !"

"तुमने कोई खबर नहीं दी।"

"खबर देने से क्या होता ? जिसकी तमन्ना थी वो तो अब रहा ही नहीं !"

"तुम्हारा मतलब क्या है अजीजन ?"

"मेरा मतलब।"—अजीजन की आँखों आँसू आ गये—"तुम क्या समझोगे ?"

नन्हे नबाब मुस्कुराया—"मैं सब समझता हूँ। कब से तुम्हें समझाता आ रहा हूँ, उसके फेर न पड़ो, जो विलायत घूमा हुआ है, उसे तुम्हारी कीमत क्या मालूम होगी। वो तो मेमों पर मरता है!"

"वायदा भी कोई चीज होती है, नन्हें। मैं जिस दिन से औरत हुई उसी दिन से उसके नाम पर बैठी हूँ!"

"बहुत बेवकूफी हो गई अजीजन। अब तो सब ठंडा पड़ गया है। हम लोग मिल-जुलकर जिस काम को कर रहे थे, वह पूरा हो गया। अब तो सब साफ है। मैं तुम्हारा फैसला जानने आया हूँ। मुझे वक्त नहीं है, बहुत से काम करते हैं!"

"मेरा फैसला बदल नहीं सकता!"

"एक बार फिर सोच लो अजीजन! जरा अपनी हालत पर तो गौर करो! घोड़े पर बैठकर सिपाहियों को ललकारनेवाली अजीजन कहाँ गई? वह अजीजन कहाँ गई, जिसने अंग्रेजों के लिए तलवार हाथ ली?"

"मर गई!"

'अजीजन। तुम अजीमुल्ला का ख्याल छोड़ दो। मैं बता दूँ आजकल वह नाना साहब..."

"मैं जानती हूँ।"

"जब तुम जानती हो कि वह उस मेम पर मरता है, फिर...?"

"मैं बैठी हूँ उसके ही नाम पर। अगर मेरी मुहब्बत सच्ची है, तो एक न एक दिन वह मेरे पास आयेगा!"

नन्हें साहब अजीजन को कुछ भी समझाना बेकार समझ उठ खड़ा हुआ। वह आखिरी बार अजीजन को समझाने आया था कि वह अजीमुल्ला का ख्याल छोड़ दे।

"चलता हूँ!"

"आदाब! कहा सुना माफ करना नन्हें नबाब!"—अजीजन का टूटता स्वर भर्राया।

"खुदा हाफिज!"

अजीजन के आँसू फूट पड़े। अनेक दिनों से वह रोग-शैय्या पर पड़ी थी।

अपने बीमारी की खबर वह अजीमुल्ला के पास भेज चुकी थी, पर अजीमुल्ला अब तक न आया था।

अजीजन अपने आँसू पोंछ उठ खड़ी हुई। प्रकृतिस्थ हो भी न पाई थी कि एक अधेड़ सी मुसलमान औरत उसके सामने आयी। चेहरा एकदम क्रूर था। लग रहा था किसी मार्मिक पीड़ा के कारण असमय ही वह बूढ़ी हो गई है।

"तुम ! हुसैनी ? मेरी खबर मिली थी ?"

"हाँ, सीधे बिठूर से चली आ रही हूँ !"

"यह तुमने अच्छा किया। नाना साहब से कहकर मैं तुम्हें काम दिलवा दूँगी। वे अंग्रेज औरतें बच्चे आज कल बीबीघर में कैद हैं !"

"हूँ !"

"अब तुम अपने खाविन्द के कत्ल का बदला ले सकती हो। उन तमाम बन्दी औरतों की देखभाल का भार तुम पर रहा !"

"जरूर ! जरूर !!"—हुसैनी खातून ने दाँत पीसे। उसकी मुट्ठियाँ कस गईं। उसका रूप चुड़ैल सा भयानक हो गया। आँखों के आगे अपने खाविन्द की मौत का दर्दनाक दृश्य झूल गया। सीमा पर ही एक गोरे ने उसे पकड़ लिया था और घोड़े की टापों से कुचल कुचलकर मार डाला। आज से पाँच साल पहिले का यह दर्दनाक नज़ारा हुसैनी भूल नहीं सकती।

"अच्छा ! आज यहीं ठहरो। कल मैं नाना साहब के पास चलकर तुम्हारा काम ठीक करा दूँगी !"

प्रतिशोध की कल्पना में मगन हुसैनी हट गई। अभी से वह कल्पना करने लगी। किस तरह एक एक अंग्रेज औरत को वह तड़फा-तड़फा कर मारेगी। खुदा का लाख-लाख शुक्र ! आज बदला लेने का मौका आ ही गया।

&

मसजिद में ठसा-ठस मुसलमान भरे थे। तिल रखने को भी जगह न थी। एक मौलवी भाषण दे रहा था। उसका चेहरा क्रोध से एकदम लाल था।

"अजीजो, मैं बयान कर चुका हूँ कि किस तरह नवाब शुजाउद्दौला के हार जाने पर अंग्रेजों से सुलह हुई। इस सुलह के मुताबिक नवाब साहब बराबर काम

करते रहे। इस पर भी कुछ साल बाद अंग्रेजों ने उन पर इलजाम लगाया कि वे बगावत करना चाहते हैं। इस पर उन लोगों ने नवाब को सिर्फ में तीस हजार फौज रखने का हुक्म दिया। इस पर भी अवध की शान-शौकत देखकर फिरंगियों का मन जलता था!"

"तोबा! तोबा!!"

"इन लोगों ने बेईमानी कर नवाब से चुनार का किला और इलाहाबाद छीन लिया। नवाब पर नये-नये खर्चे सौंपे गये। अंग्रजी फौज के लिये नवाब को हर महीने दो लाख दस हजार रुपया देना पड़ते थे!"

"गजब! गजब!!"

"नवाब के बिस्मिल्लाह होने पर नवाब आसिफुद्दौला गद्दी नशीं हुए। उनके जमाने में इन फिरंगियों ने फौज के माहवारी खर्च में पचास हजार रुपया और जोड़ दिया। साथ ही काशी, जौनपुर, गाजीपुर अपनी अमलदारी में ले लिए। नवाब के मरहूम होने पर उनके बेटे मिर्जाअली को गद्दी से उतार सदाअत अली को बैठाया। क्योंकि सदाअत अली से ये मनमाना रुपया ऐंठ सकते थे!"

"छिः! छि!! बड़े नीच हैं!"

"इसके बाद नवाब वाजिदअली शाह के जमाने तक बराबर ये अवध के कुछ हिस्से हड़पते रहे। अवध के भारी खजाने को खाली करते रहे। नवाब वाजिदअली शाह को इन लोगों ने कुछ खिला-पिलाकर खराब कर दिया। खुद अंग्रेज उनकी अय्याशी के लिए लड़कियाँ जुटाकर भेजते रहे और इस तरह हमारे नवाब को अपने हाथ का खिलौन बना ये लोग हम लोगों को भड़काते रहे!"

"तोबा! तोबा!!"

"अब मैं अपनी आँखों देखा किस्सा बयान करता हूँ!"

मौलवी जोश से भर आगे बोला—"अजीजो, लार्ड डलहौजी ने अवध की रियासत जब्त करने का हुक्म रेजिडेन्ट आउटरम को दिया। नवाब की माँ ने गिड़-गिड़ाकर मुहलत माँगी, पर एक सुनी गई। उस दिन चौथी फरवरी थी। नवाबी महल की तमाम तोपें हटा ली गईं। सिपाहियों के हथियार छीन लिए गए। नवाब अपने भाईयों और सलाहकारों के साथ रेजिडेन्ट के दरबार गये।"

"या अल्लाह!"

"रेजिडेण्ट ने उनसे हुक्मनामे पर दस्तखत करने को कहा। नवाब ने अपनी पगड़ी रेजिडेण्ट के हाथ धरी। आँखों में आँसू भर बोले, अंग्रेजी सरकार ने मेरी इज्जत धूल में मिला दी! नवाब के रोने गिड़गिड़ाने का कोई असर न हुआ। अवध ब्रिटिश इंडिया में मिला लिया गया और इतनी बड़ी हुकूमत के मालिक थोड़ी सी पेंशन के हकदार हो गये।"

लोगों के चेहरे करुण हो गये।

"बेइंसाफी की हद का वक़ाया। नवाब वाजीदअली शाह को अपना मामला पार्लामेंट में पेश करने की परमीशन नहीं मिली। रेजिडेण्ट ने उनके कुल कागज हड़प लिए और तुरन्त पलटन भेज नवाब की धन दौलत लूट ली गई। किताबें उठा ले गये। सब तोड़-फोड़ डाला। अजीजो, महलसरा की औरतों को अंदर से घसीटकर सड़क पर लाया गया। उनके जेवरात उतरवाकर उन्हें नंगा कर दिया।"

"अल्लाह! अल्लाह!!"

"क्या अब भी अरे नामर्दों! तुम लोगों का खून नहीं खौलता! इन अंग्रेजों ने हमें बरबाद कर दिया। हम तबाह हो गये हैं। उठो, अब अंग्रेजी हुकूमत को बरबाद करके रहो!"

"अल्लाहो अकबर!"

"अल्लाहो अकबर!"

उत्तेजित मुसलमान चिल्ला पड़े।

❀

तमाम लखनऊ बेचैन था। अवध के तमाम सिपाहियों में बेचैनी थी। इन्हीं सिपाहियों की बदौलत अंग्रेजों ने पंजाब के सिक्खों को हराकर पंजाब पर अपनी हुकूमत कायम की थी। काबुली और सरहद्दी दीगर कौमों के मुकाबिले यहीं की सिपाही पलटन डटी थी। नवाब की हुकूमत अंग्रेजों द्वारा जबर्दस्ती हड़प लेने के कारण सब बेचैन हो गये। अंग्रेजों के प्रति उनके मन में घृणा भर गई।

नवाब की तरफ से जिन्हें पेंशनें और जागीरें मिली थीं, वे सब जब्त कर ली

गईं। लगान बढ़ा दिया गया। सख्ती से लगान वसूली होने लगी। मैं भी बेचैनी फैल गई।

नवाब के आसरे रहनेवाले लोग भूखों मरने लगे। मुट्ठी भर अन्न के लिए तरसते हुए बहुतों को भीख माँगने के लिए सड़कों पर आना पड़ा। जो कभी महलों के बाहर न निकलती थीं, वे शाम को अँधेरा होने पर भीख माँगने के लिए सड़कों पर आने लगीं। इन औरतों को देखकर राह चलतों की आँखों में आँसू आ जाते।

ताल्लुकेदारों की जमीनों पर जबर्दस्ती कब्जा कर लिया गया।

नवाब के आसरे साठ हजार सैनिक थे। नवाबी जब्त होते ही सब बेकार हो गये। कोई बीस हजार आदमियों को ही अंग्रेजों ने बहाल रक्खा। बाकी लोग अंग्रेजी हुकूमत से एकदम असंतुष्ट हो गए।

अंग्रेजी अमलदारी के कायम होते ही महँगी आ गई। चारों तरफ तबाही और असंतोष फैल गया।

॥

अफवाहें लखनऊ आयीं। गाय की चर्बी और सुअर के पिते की बात से सनसनी फैल गई।

"जब अंग्रेज नवाबी हड़प सकते हैं, तो धर्म हड़पते क्या देर लगेगी।"

"ये अंग्रेज सबको क्रिस्तान बना देंगे!"

"मारो सालों को। बेईमान हैं!"

असन्तोष और विद्रोह लखनऊ के कोने-कोने में फूटने लगा। सिपाहियों में तो बड़ी बेचैनी फैल गई। जगह-जगह से मौलवी और पंडित आ गये। गुप्त बैठकों का बाजार गर्म हो गया। मस्जिदों और मन्दिरों में धार्मिक समारोहों की आड़ में विद्रोह की आग सुलगायी जाने लगी।

परेड के मैदान में सात नम्बर की पैदल सेना ने कारतूस लेने से इंकार कर दिया।

"हम नहीं लेंगे।"

"....."

"हमारा धर्म नष्ट हो जायगा !"

खबर मिलते ही सर हेनरी लारेंस दौड़े। आसपास के वातावरण से वे परिचित थे। साथ ही अनेक बरसों से इस देश में रहने के कारण यहाँ के लोगों के स्वभाव परिचित हो गये थे।

हेनरी लारेंस के समझाने पर भी सैनिक न माने। लारेंस ने कुछ नहीं कहा। सिपाहियों को छावनी जाने का हुक्म दे दिया। सिपाहियों के जाने के बाद लारेंस अपने सहयोगियों के साथ विचार विमर्श करने लगे।

"साहब, दो आदमी आपसे मिलना चाहते हैं !"

"कौन ?"

"सूबेदार सेवक तिवारी और हवलदार हीरालाल !"

"आने दो !"

दोनों अन्दर आए। लारेंस के हाथ एक पत्र रखा और सलामकर सेवक ने कहा—"हुजूर यह चिट्ठी हम लोगों मिली है। आपका जैसा हुक्म हो, करें।"

लारेंस ने चिट्ठी पढ़ी। पढ़ते ही चौंक पड़े। उस पत्र में अड़तालीस नम्बर की पलटन को बगावत करने के लिए बधाई देकर मई की इकतीस तारीख को तैयार रहने की बात थी।

लारेंस ने अपने साथियों के सामने पत्र रक्खा। अब देर करने की गुंजाइश न थी।

चाँदनी रात थी ! परेड के मैदान में अड़तालीस नम्बर की पलटन के सिपाही कतार से खड़े थे। गोरी पलटन ने घेर रखा था। तोपें तैयार खड़ी थीं। सर लारेंस के आते ही सिपाहियों में भगदड़ मच गई। पर भाग न सके। घेर लिये गये। लारेंस ने हथियार रखने, वर्दी उतारने का हुक्म दिया।

पलटन को निरस्त्र कर दिया गया।

तीन सिपाहियों को गिरफ्तार कर बाकी सबको बर्खास्त कर दिया गया। सिपाही हुसैन बक्श के बयान के मुताबिक ये तीन सिपाही पलटन को भड़काने का काम कर रहे थे। लारेंस ने तीनों पर खुली अदालत में मुकदमा चलाने का हुक्म पास किया।

❀

लखनऊ की उत्तेजना बढ़ती जा रही थी। सर हेनरी लारेंस ने चतुराई से काम लेने का विचार किया। बारह मई को उन्होंने मरियन में एक जलसे की घोषणा की।

गोमती के दोनों किनारों पर फौजी छावनियाँ थीं। इधर मरियन उधर मुदकीपुर। नदी पर कच्चा पुल था। पास ही ईंटों का पुल था। कुछ आगे चलकर नावों का पुल था। पक्के पुल के पास मचछी भवन था। वह गोदाम के काम आ रहा था।

गोरी पलटन रेजीडेंसी के पास रहती थी। छोटी सी पहाड़ी गोमती की तरफ झुकी थी, इसी पर रेजीडेंट की तीन मंजिल पक्की कोठी खड़ी थी। नवाब सदाअत अली ने अपनी ओर से रेजीडेण्ट के लिए यह इमारत बनवा दी थी। रेजीडेंसी की हद में जो घर बने थे, उस घेरे को बेलीगार्ड कहा जाता था। रेजीडेंसी की हद के भीतर सरकारी खजाना था। खजाने में तीस लाख रुपया नक़द के अलावा लाखों रुपये के आभूषण और कम्पनी के कागज थे।

सर हेनरी लारेंस ने मरियन में अपनी कोठी के सामने आलीशान जलसा किया। कामदार शामियाना ताना गया। तमाम बिछावन गलीचों की हुई। मखमल के गद्दे लगाए गए। इसके बाद गोरी सेना को एकदम तैयार खड़ा किया। जिन सिपाहियों ने अच्छे काम किये थे, उनको इनाम में दी जानेवाली चीजें खूब सजाकर रखी गईं। जलसे में शहर के प्रमुख नागरिक बुलाए गए।

जलसा देखने के लिए नगरवासियों की एक बड़ी भीड़ भी आयी।

ठीक समय पर सर लारेंस अपने साथियों के साथ आए। जज गोबिन्स भी भी साथ थे। यह जज के ही दिमाग की सूझ थी। इस प्रकार का आयोजन कर नगर की उत्तेजना शान्त करना ही इस जलसे का प्रमुख उद्देश्य था।

सर लारेंस हिन्दी बोल लेते थे। अतएव उन्होंने इस अवसर पर हिन्दी में एक भाषण दिया।

"ब्रिटिश गवर्नमेंट किसी के धर्म में दखल नहीं करना चाहती। मुसलमानों के जमाने में, भारत में बहुत धार्मिक अत्याचार हुए। ब्रिटिश गवर्नमेंट ने इन जुल्मों को रोककर हर तबके के लोगों के साथ बराबरी का बर्ताव किया है। गवर्नमेंट के पास जैसी फौजी ताकत है, वैसी ही दौलत भी है। थोड़े ही समय में गवर्नमेंट

विलायत से गोरी पलटन ला सकती है। इसलिए इस गवर्मेंट के खिलाफ जो लोग बगावत की बात सोचते हैं, वे पागल हैं, सिपाही बहुत सालों से सरकार का नमक खाते आ रहे हैं। सरकार को इन पर भरोसा है। इनकी सेवाएँ उल्लेखनीय हैं। आज इस मौके पर ऐसे सिपाहियों को इनाम दिये जाते हैं।"

इसके बाद लारेंस से इनाम बाँटे। इस जलसे का अच्छा प्रभाव पड़ा। देशी अफसर और गोरे अफसर दिल खोलकर मिले। नगरवासियों के मन भी ठंडे पड़ गये।

इस पर भी बाहर से आये कुछ लोगों तथा नगर के ही कुछ प्रमुख व्यक्तियों ने हिम्मत न हारी।

बरेली के एक ऊँचे खानदान का मुसलमान मुहम्मदअली इस दिशा में अत्यधिक सक्रिय था। मुहम्मदअली देश विदेश घूमा एक चुस्त व्यक्ति था। मुहम्मदअली की बातों और तर्कों के आगे नगर के अधिकांश मुसलमान और सिपाही छुपकर बगावत की तैयारियाँ करने लगे।

ॐ

अंग्रेजों को खतरे का कुछ आभास हो चला था। मच्छी भवन की मरम्मत कर उसे किले सा बनाकर सुरक्षा के लिए उपयुक्त बनाया गया। आवश्यक सामग्री यहाँ आने लगी। आसपास के मकानों को तोड़कर गिरा दिया ताकि सिपाहियों का उन पर कब्जा न हो सके।

पास ही एक मसजिद थी। इस मसजिद को तोड़ने की बात सुनते ही नगर में सनसनी फैल गई। हजारों मुसलमान वहाँ इकट्ठे हो गये। उत्तेजना बढ़ने लगी। घबराकर मजजिद तोड़ने का काम रोक दिया गया। इससे नगर में खल-बली मच गई। पूरा नगर और सिपाहियों की छावनियों में गरमाहट फैल गई।

मेरठ और दिल्ली के समाचार आए।

नगर चौंक पड़ा।

तमाम अंग्रेज घबरा गये। तार से आने वाले समाचारों ने सनसनी फैला दी।

"खजाना हटा लिया जाय!"

"जी नहीं। इस वक्त स्थिति नाजुक है। खजाना हटते ही बगावत हो जायगी।"

"तब ?"

"धीरे-धीरे हिन्दोस्तानी सिपाहियों का पहरा हटाकर गोरी पलटन खड़ी कर दीजिये। नगर के अंग्रेजों को भी हटाने का इन्तजाम कीजिये।"

शाम को फिर तार से दिल्ली का समाचार आया। दिल्ली हाथ से निकल गइ। सनसनी अपनी चरम सीमा पर आ गई। कलकत्ता से गवर्नर जनरल ने तार भेजकर हेनरी लारेंस को ब्रिगेडियर जनरल बना दिया, ताकि अपने अधिकारों का वह व्यापक रूप में प्रयोग कर सकें।

हेनरी लारेंस बुद्धिमानी से काम निकाल रहे थे। अनेक अफसरों के बार-बार जोर देने पर भी उनकी इच्छा न थी कि अब और सिपाहियों के हथियार लिये जाँय, क्योंकि इसका असर पूरे सूबे पर पड़ता और संभव था लखनऊ की इस घटना से दूसरे स्थान के सिपाही उत्तजित हो जाते।

हेनरी लारेंस ने एक घोषणा निकालकर अनियमित सेना के सिपाहियों में वेतन वृद्धि का आदेश दिया। इस सेना के सिपाहियों की बहुत दिनों से इस संबंध में शिकायत थी। इस तरह इन सिपाहियों को संतुष्ट रखने का प्रयास किया गया।

स्थान स्थान से विद्रोह की खबरें पूरे अवध सूबे में आग की तरह फैल रही थीं।

लखनऊ मकानों के झुंडों का शहर है। बड़े-बड़े बाड़ों में मकान खड़े हैं। फरीदबक्स, शाहनजीफ, सिकन्दर बाग, इमामबाड़ा, बेगममहल, कैसर बाग प्रसिद्ध हैं। शहर के दक्षिण पूर्व एक नहर थी। इस नहर के दक्षिण की ओर आलम बाग था। यह पुराना बाग शहर से दो मील के फासले पर कानपुर जाने वाली सड़क के किनारे है। इसी जगह चोर बाग भी है। गोमती और नहर के संगम से थोड़ी दूर दिलकुशा महल खड़ा था। कुछ ही दूरी पर मांटीनियर कालेज था।

इन स्थानों में उत्तेजना अत्यधिक थी। बाहर से आए लोगों का दल यहीं सक्रिय था।

❀

मरियन छावनी वाले रेजीडेंसी के भवन में हेनरी लारेंस टिके थे। सारी गतिविधि पर नजर रखे हुए थे। ऊपर से तो वातावरण एकदम शान्त लग रहा था, पर भीतर ही भीतर आग सुलग रही थी। लारेंस को कुछ-कुछ विश्वास हो चला था कि संभवतः यहाँ विद्रोह न हो।

शनिवार तीस मई की शाम थी। लारेंस जैसे ही खाना खाने के लिए बैठे एक सिपाही दौड़ा आया। खाना छोड़कर लारेंस उससे मिले।

"क्या है ?"

"साहब, आज रात नौ बजे तोप चलेगी और उसके बाद ही बगावत होगी। सब सिपाही मशविरा कर रहे हैं !"

"......"

*

चारों ओर चाँदनी बिखरी थी। घुड़दौड़ के मैदान में बहुत से सिपाही इकट्ठे हुए। वे सब हथियारों से लैस थे। अनियमित सेना के सिपाही होने के कारण वे सब उतने युद्ध कुशल न थे। तमाम सिपाही उत्तेजित थे। सभी अंग्रेजों को मारने, बँगले लूटने। आग लगाने की बातें कर रहे थे।

"क्या वक्त हुआ ?"

"अभी नौ नहीं बजा !"

"कित्ती देर है ?"

"थोड़ी देर !"

उत्तेजित सिपाही शान्त खड़े रहे। सहसा बाहर तोप गरजी और बंदूकों की आवाज आयी। बगावत का संकेत हो गया और तमाम सिपाही शोर मचाते दौड़ पड़े।

*

तोप की आवाज सुनते ही अंग्रेज सेनापति चौंक पड़े। बंदूकों की आवाज ने भोजनशाला में एकत्रित अंग्रेजों को सावधान कर दिया। सर लारेंस घोड़े पर सवार हुए। खबर मिल जाने के कारण गोरी पलटन के सैनिकों और अफसरों को उन्होंने तत्काल बुला लिया था।

गोरे सैनिकों को वहीं खड़े रहकर रेजीडेंसी की रक्षा का भार सौंप सर लारेंस अफसरों के साथ छावनी की ओर चल पड़े। एक बड़ी सड़क छावनी से शहर की ओर गई थी। बत्तीस नंबर की सेना के कुछ सैनिकों को तोपों के साथ इस सड़क पर खड़ा कर दिया ताकि बागी इस ओर आने से पहिले ही भगा दिए जाँय।

कुछ आगे जाते ही शोरोगुल तेज हुआ। बंदूकों की आवाज आयी और साथ ही छावनी के कुछ बॅगले और मकान जलने लगे। सर लारेंस छावनी की ओर बढ़े।

"साहब, साहब !"

"......"

"ब्रिगेडियर साहब को गोली मार दी गई !"

सर लारेंस तेजी से छावनी की ओर दौड़े। उस समय विद्रोह अधिक न भधक पाया था। इकहत्तर नंबर को सेना के बागी हो जाने पर भी बहुत से सिपाही गोरों के साथ थे। तेरह नंबर की पलटन के सिपाही अपना झंडा और खजाने की पेटियाँ लेकर गोरी सेना से आ मिले। अड़तालीस नंबर की पलटन मैदान में खड़ी थी। चाँदनी रात में सारा दृश्य स्पष्ट था।

लारेंस को बल मिला। अपने अफसरों के साथ दौड़े और बागी सिपाहियों पर हमला करने का हुक्म दिया। अधिकांश बागी अङ्गरेजी पलटन आयी देख भाग खड़े हुए। कुछ सिपाही कैद भी कर लिये गये।

"तुम लोग भी मारो। चलो।"

अड़तालीस नंबर की पलटन ने आज्ञा न मानी।

"मेरा हुक्म है। बागियों को मारो !"

पलटन ने इंकार कर दिया। लारेंस ने इस पलटन का झंडा, हथियार छीन लिया। सिपाही चुपचाप परेड के मैदान से निकल गये।

बागियों की संख्या कम थी। उन्हें भगा दिया गया। थोड़ी ही देर में स्थिति काबू में आ गई। छावनी के मकान और कुछ बँगले अभी भी जल रहे थे। आग की लपटें मानो कह रही थीं कि वे ऐसे ही शान्त होने को नहीं हैं।

खजाने के चारों ओर हिन्दोस्तानी रक्षक तैनात थे। रात का सन्नाटा खिंचा

हुआ था। प्रधान रक्षक ने इस पर रोशनी देखी। तुरन्त उस ओर बढ़ गया। उसके स्थान पर एक अन्य व्यक्ति आ गया। रोशनी बुझ गई।

"कहिए ?"

"तुमने सब बात की ?"

"हाँ, सब तैयार हैं !"

"सात नम्बर की पलटन के सिपाही जाँयगे। साथ देना !"

"जरूर !"

प्रधान रक्षक आश्वासन दे लौट गया। दूसरा व्यक्ति तेजी से अँधकार में छावनी की ओर बढ़ गया। छावनी में कुछ सिपाही उसकी प्रतीक्षा कर रहे थे। आने वाला व्यक्ति प्रकाश में आया। उसका भी लिबास सिपाहियाना था। छावनी के सिपाहियों के गोल के बीच वह बैठ गया।

"खजाने के आदमी तैयार है। कल हो जाय !"

"आज आगरा से रेक्स साहब की चिट्ठी क्रिश्चियन साहब को मिली है !"

"उस चिट्ठी में क्या है ?"

" हाँ, मालूम हो गया है। लिखा है, आगरा में सब शान्ति है !"

"उनका सिर शान्ति है। वहाँ भी होकर रहेगा। अंग्रेजों की कहीं खैर नहीं है। उन सालों का पाप का घड़ा भर गया।"

"अच्छा ! इकतालीस नम्बर के लोग क्या कहते हैं ?"

"तैयार नहीं है। सूबेदार शायद कुछ और सोचता है !"

"सो क्या ?"

वह फतेहगढ़ जाना चाहता है। उसी तरफ उन सिपाहियों के घर हैं। उसका कहना है, वहीं लूटमार कर अपने-अपने घर चले जाँयगे !"

"अच्छा। देखा जायगा। कल तय रहा। बन्दूक चले और हमला बोल दो।"

"......"

४३

सबेरा होते ही बन्दूक कड़की। दस नम्बर की पलटन के तमाम सिपाही दौड़ पड़े। सीतापुर के खजाने में विशेष रुपया न था। फिर भी खजाना लूटकर बागी

अपनी धाक जमा देना चाहते थे। सिपाहियों ने दौड़कर खजाना घेर लिया। उनके आते ही पूर्वयोजनानुसार तमाम रक्षक भी उनसे मिल गये।

शोरोगुल और बन्दूकों की आवाज सुन अंग्रेज, ईसाई चौंक पड़े। विश्वास न था, यहाँ भी उपद्रव हो जायगा, क्योंकि ऊपर से देखने में सिपाही एकदम शान्त लग रहे थे।

"साहब, खजाना लुट रहा है!"

"साहब, दौड़िए!"

इकतालीस नम्बर की पलटन के कुछ आदमियों से खबर पाकर कर्नल वार्च खजाने की तरफ दौड़े। रक्षक ने देख लिया।

ठाँय!

खजाने के पास आने के पहिले ही उन्हें गोली मार दी गई। उनके साथ गया हुआ, उनका सहायक घबड़ाकर भागा। सचमुच सिपाही एकदम बागी हो गये हैं।

सारे नगर में उत्पात होने लगा।

डर के मारे घबराए हुए तमाम अंग्रेज कमिश्नर साहब के बँगले पर इकट्ठे हुये। कमिश्नर जार्ज क्रिश्चियन हतप्रभ हो गए। रक्षा का कोई उपाय न सूझ रहा था। जब तमाम अंग्रेज आ गये तो बँगले पर तैनात रक्षक ही बिगड़ गये। उन्होंने बँगले पर धावा बोल दिया। इकतालीस नम्बर की पलटन पर बड़ा विश्वास था, पर उस पलटन का एक भी आदमी साथ देने को नहीं आया।

"मारो! मारो!!"

शोर करते हुए सिपाही बँगले में घुस आए। अंग्रेजों में भगदड़ मच गई। कुछ तो वहीं मार डाले गये। कुछ नदी की ओर भागे। सिपाहियों ने भागते हुए लोगों का पीछा किया।

कमिश्नर भागे जा रहे थे। पीछे-पीछे उनकी स्त्री थी। उसकी गोद में बच्चा था। जान बचाने के लिए भागे जा रहे थे।

"पकड़ो! मारो!!"

विद्रोही दौड़ते आ रहे थे!

ठाँय

कमिश्नर गोली खाकर ढेर हो गए। इसी समय एक गोली और छूटी। कमिश्नर पत्नी को लगी। लड़खड़ाकर गिरी। ढेर हो गई। बच्चा हाथ से छूट गिरा। विद्रोही दौड़ते हुए पास आये।

"अंग्रेज का बच्चा!"

और एक बागी सिपाही ने तलवार से उस लड़के के भी टुकड़े कर दिये। नदी तट तक अंग्रेजों का पीछा किया गया। कुछ पानी में कूद पड़े।

ठाँय! ठाँय!!

विद्रोहियों के आगे एक भी अंग्रेज भागकर न जा सका। कोई तट पर मारा गया; कोई नदी पार करते हुए मारा गया।

❀

"सीतापुर में गदर हो गया साहब?"

"कैसे मालूम?"

"अभी खबर आयी है!"

डिप्टी कमिश्नर घबरा गये। समझते देर न लगी। किसी भी समय यहाँ भी गदर हो सकता है। तमाम अंग्रेज, ईसाईयों को बुलाया और तुरन्त मुलायन छोड़कर लखनऊ की ओर भाग गए। एक क्षण की भी देर उन्होंने उचित न समझी।

❀

पौहियान में भी जब आश्रय न मिला, तो शाहजहाँपुर के भागे हुए हुए अंग्रेज मुहम्मदी आए। कमिश्नर टामसन ने उन्हें आश्रय दिया। मुहम्मदी का वातावरण पहिले से ही शान्त न था। इस अंग्रेजों को आया देख सिपाहियों का जोश बढ़ गया। समझते देर न लगी। चारों ओर से अंग्रेजी अमलदारी उठती जा रही है, इसलिए अंग्रेज मारे-मारे फिर रहे हैं।

अंग्रेजों से असन्तुष्ट अनेक सिपाहियों ने इन अंग्रेजों के आते ही बल पाकर सिपाहियों को भड़काना शुरू कर दिया। तीन ही दिन में सब तैयारियाँ पूरी हो गईं।

चौथे रोज बन्दूक कड़की। हरी पताका लहरायी ।

"हर-हर महादेव !"

"अल्लाहो अकबर !!"

सिपाही बागी हो गए। देखते-देखते खजाना लुट गया। जेलखाना टूट गया। अंग्रेज सँभल भी न सके। बागियों की एक बड़ी भीड़ ने अंग्रेजों को घेर लिया। सब कमिश्नर टामसन के बँगले में थे। चारों ओर से घेरकर सिपाही दरवाजा तोड़ने लगे। भीतर तमाम अंग्रेज छुपे थे ।

साहसकर टामसन एक खिड़की पर आये।

"ठहरो !"

"......"

"हम लोग लड़ाई नहीं चाहते और न ही तुम लोगों के किसी काम में दखल देना चाहते हैं। हम लोग चुपचाप यहाँ से चले जाँयगे। हुकूमत तुम लोगों की रहेगी !"

"अरे ! जाने दो !"

"हाँ हाँ, अगर ये लोग अपनी मरजी से जाते हैं, तो अच्छा है !"

"अरे ! बिना लात खाए भला अंग्रेज इस मुल्क को छोड़ सकते है ! ये लोग फिर आ जाँयगे।"

"जाने दो। बाल-बच्चे साथ में हैं !"

अन्त में सूबेदार आगे बढ़ा। बोला—"हम लोग इन लोगों को चले जाने दे !"

"अच्छा ! अच्छा !!"

सिपाहियों का आश्वासन पा अंग्रेज बाहर आये। घोड़े और बागियों में बैठ जाने के लिए तैयार हुए। उनके पीछे शोर करते हुए बागी चले। इस समय अंग्रेजों के चेहरे सूख रहे थे। उनकी हालत देखते ही बनती थी। विजय के उल्लास में डूबे बागी उन्हें चिढ़ा भी रहे थे।

"लाल बन्दर भागा है !"

"भागा है।"

कुछ ही दूर गये थे कि बागियों की एक टुकड़ी और आ गई। अंग्रेजों को

सुरक्षित जाते देख इस टुकड़ी के तमाम बागी बिगड़कर खड़े हो गये। रास्ता रोक लिया।

"जो अंग्रेजों को जिन्दा जाने दे वो काफिर है!"

"जो अंग्रेजों का खून न पिये वो सुअर का माँस खाय!"

"जो अंग्रेजों को न मारे उसे गौ हत्या लगे!"

ठाँय! ठाँय!!

बागी अंग्रेज स्त्री-बच्चों पर टूट पड़े। अंग्रेजों ने भी मुकाबला किया, पर विद्रोहियों की संख्या अत्यधिक होने पर सबके सब मारे गये। उस स्थान पर अंग्रेज, स्त्री बच्चों की लाशें बिछ गईं।

❀

मानसिंह डिप्टी कमिश्नर के सामने आए। उनका चेहरा गंभीर था। अंग्रेजों द्वारा किए गये एक-एक जुल्म उनको याद आ रहे थे। उनकी सारी जमींदारी खारिज कर दी गई थी और उनकी तरफ एक लम्बी रकम का बकाया दिखलाकर सरकारी डिग्री जारी कर दी गई थी। यह सबका अन्याय था, पर इस अन्याय का मुकाबला वह कर न सके। प्रत्यक्ष रूप मे एक भी कदम न उठाया, पर लखनऊ, कलकत्ता आदि स्थानों की यात्रा कर अपने मित्रों से इस अन्याय की बात कही। कहीं से कुछ भी सहायता न मिलने के कारण शाहगंज लौट आए। आते ही सरकारी हुक्म से नजरबंद कर लिया गया।

आज डिप्टी कमिश्नर ने उन्हें क्यों बुलाया है ? इसका मतलब वह समझ गए। इस समय चारों तरफ असन्तोष फैला है। सभी अंग्रेजों के खिलाफ हो रहे हैं। सुना है, लखनऊ मे भी उपद्रव हो गया है। लखनऊ जानेवाला रास्ता बन्द है, आदि बहुत सी बातों की अफवाहें उनके पास तक आ चुकी थीं। दो रोज पहिले ही उन पर से नजरबन्दी उठा ली गई और आज बुलाया गया है।

टामसन को सलाम कर मानसिंह बैठ गये।

"आपकी सेवा मे हाजिर हूँ!"

"मिस्टर मानसिंह, इस वक्त हम लोगों को आपकी मदद की जरूरत है। क्या आप अपना शाहगंज का किला हम लोगों के लिए खाली कर सकते हैं?"

"किला...साहब, किले पर मेरा हक नहीं है। वैसे वह मेरी मालगुजारी में है, पर उसका असली वारिस......

"साफ कह दूँ। किला हम लोगों को अपनी रक्षा के लिए चाहिये। मेरा ख्याल है, इस वक्त आप सरकार की मदद कर अपनी वफादारी का सुबूत देंगे!"

"मैं सरकार के प्रति पूर्णतः वफादार हूँ, पर किला अंग्रेज आफीसरों के रहने के लायक नहीं है, उसमें सिविलियन आफीसर रह सकते हैं, क्योंकि......"

"नहीं, तमाम लोग वहीं पर रहेंगे!"

मानसिंह ने कुछ सोचकर कहा—"तो आप सब लोग बहुत ही गुप्त रूप से वहाँ आ जाइए!"

"इसका मतलब?"

मानसिंह ने अपनी मुस्कुराहट रोककर कहा—"यहाँ के सिपाहियों के बारे में मैं आपसे अधिक जानता हूँ। खुले आम अगर आप लोग शाहगंज चलेंगे तो वहाँ पहुँचने से पहिले ही बगावत हो जायगी और आप लोग......

टामसन मानसिंह की बात सुन सन्नाटे में आ गये। घूरकर उन्होंने मानसिंह की ओर देखा। शाहगंज का किला ही एक ऐसा स्थान था, जो अंग्रजों के लिए सुरक्षित हो सकता था पर उसके मिलने में मानसिंह की सहायता की आना कानी देख, उन्हें कुछ शंका हुई। चुप रह गए।

"अच्छा। हम विचार करेंगे। मैं आशा करता हूँ! आप हम लोगों की सहायता वक्त जरूरत पर अवश्य करेंगे!"

"मैं इसका वायदा करता हूँ!"

धन्यवाद!"

टामसन उठकर अन्दर चले आए।

बुद्धि कुछ काम ही न कर रही थी। फैजाबाद में अंग्रेजों, स्त्रियों-बच्चों की संख्या अधिक है। आसपास के तमाम क्षेत्र से अंग्रेजी अमलदारी उठ गई है। लखनऊ का रास्ता भी बन्द हो गया है। सुना है, लखनऊ की रेजीडेंसी भी घिर गई है। समझ नहीं पड़ता, कहाँ कदम उठे?

फिर भी टामसन ने एक युक्ति निकाली। उस युक्ति के अनुसार तमाम अंग्रेज स्त्री-बच्चों को अपने बँगले के पास बने मकान में बुला लिया।

मानसिंह चुप-चाप लौट गये। वास्तविकता तो यह थी कि वे अंग्रेजों को किसी भी प्रकार की सहायता के लिए प्रस्तुत न थे। अंग्रेजों ने जैसा व्यवहार उनके साथ किया था ? उसका प्रतिशोध लेने का उचित अवसर आ गया था। शाहगंज का उनका अपना किला अंग्रेजों की रक्षा के लिए पर्याप्त था, पर अपने किले में तमाम अंग्रेजों को आश्रय देकर सिपाहियों को असन्तुष्ट नहीं करना चाहते थे। अगर बगावत हो जाने पर अंग्रेजों ने किला माँगा होता, तो वे साफ इंकार कर जाते पर अभी तो उसकी तैयारियाँ हो रही हैं, इसीलिए मानसिंह ने टाल-मटोल से ही काम लिया।

दो दिन पहिले कुछ सिपाही सरदारों के साथ शाहगंज में हुई मंत्रणा के विरुद्ध वह नहीं जा सकते हैं। उसी मंत्रणा के अनुसार काम हो रहा है। पैदल और गोलन्दाज साथ नहीं आ रहे हैं। समझ में नहीं आता, कुछ लोग अभी भी क्यों अंग्रेजों के वफादार बने हुए हैं।

टामसन की वार्ता से मानसिंह ने समझ लिया। अब समय नहीं है। थोड़ा भी समय मिला तो अंग्रेज सँभल जाँयगे। गोलन्दाज और पैदल सिपाही साथ दें या न दें बगावत हो जाय। अंग्रेजी अमलदारी को फैजाबाद से भी उठ जाना चाहिए।

*

सबेरा होते ही रिसालेदार ने ललकार दी।

"हुश्यार! अंग्रेजी अमलदारी, मुर्दाबाद!!"

ललकार सुनते ही तमाम घुड़सवार आँख झपते ही घोड़ों पर उछल-उछल कर बैठ गये और छावनी की ओर दौड़े। आगे-आगे हरी पताका थी। बन्दूकें हवा में छोड़कर विद्रोह की सूचना दी गई।

देखते देखते रिसाला छावनी के परेड मैदान में आ धमका।

पैदल सेना के गोलन्दाज अपनी तोपों की रक्षा के लिए दौड़े, पर तब तक घुड़सवार सैनिकों ने तोपों पर अपना कब्जा कर लिया।

"पीछे हट जाओ।"

पैदल सेना के गोलन्दाजों ने घुड़सवारों का रास्ता रोक लिया।

"हम अंग्रेजों को कत्ल नहीं होने देंगे !"

"तुम लोग गद्दार हो !"

"इन सबको भी मारो। लगा दो तोपें क्या देखते हो ! गद्दार हैं ये लोग !"

"अरे ! अरे ! अपने भाइयों को मत मारो !"

"ये लोग ठीक कहते हैं। स्त्रियों और बच्चों को हमें नहीं मारना चाहिए !"

"लेकिन अंग्रेजी अमलदारी नहीं रहेगी !"

"नहीं रहेगी। नहीं रहेगी !"

गोलन्दाजों की बात मान रिसालेवाले दूसरी ओर मुड़ गये।

*

बगावत की खबर मिलते ही किये हुए अंग्रेज घबड़ा गये। पैदल सेना के सिपाही और अफसर उनकी रक्षा के लिए तैनात थे। बागियों का शोर बढ़ता जा रहा था। टामसन धैर्य का छूटता जा रहा था। हालाँकि एक टुकड़ी सिपाही उनके लिये तैयार थे, पर बागी सिपाहियों की ताकत का कोई अनुमान न होने से वे घबरा रहे थे।

सर्वसम्मति से भाग निकलने का प्रस्ताव मंजूर हुआ।

रात के अँधेरे में भागने की बात तय पायी गई।

कुछ देर बाद बागियों ने अंग्रेजों के रक्षा स्थान पर धावा किया, पर सिपाहियों को उनकी रक्षा के लिए आपका देख सिपाहियों की इस गद्दारी के लिए उन्हें गालियाँ बकते-झकते चले गये। कुछ ही देर में जेलखाना तोड़ दिया गया। खजाना लूट लिया गया।

तमाम बागी इकट्ठ हुए।

अंग्रेजों को मारने की योजना पर विचार करने लगे। हिन्दोस्तानी सिपाहियों को ही उनकी दगा करते देख कुछ बागियों का क्रोध ठिकाने न था।

"किसी के गद्दार हो जाने से हमारा काम नहीं रुकना चाहिये !"

"ठीक बात है !"

"तो इन सबको भी मारो। तोपें हमारे कब्जे में हैं ही। ले चलो !"

कुछ लोगों के विरोध के बाद भी यह बात तय पा गई कि कल सुबह अंग्रेजों को मारा जाय, जो उनकी रक्षा के लिए आगे बढ़े, उसे भी मारा जाय !

*

"साहब, जेलखाना टूट गया। खजाना लुट गया। तमाम शहर पर बागियों की हुकूमत है। उनकी ताकत बहुत बढ़ गई है!"

टामसन एकदम घबरा गये। अब एक पल की भी देर करना ठीक नहीं। हालाँकि रात गाढ़ी हो गई है, पर इन बागियों का कौन ठिकाना! तमाम साथियों के साथ तुरन्त फैजाबाद छोड़ने का निर्णय कर लिया। अंग्रेजों को अपने पहरे में लेकर सिपाहियों की टुकड़ी नदी तट की ओर रवाना हुई।

कुछ ही देर मे रात के अंधेरे मे बिना किसी विघ्न के नदी तट पर सब पहुँच गये। सिपाहियों और अंग्रेजों को देख ऊँघते मल्लाह घबराकर भाग गये। मल्लाहों के अभाव में टामसन ने स्वंय अपने आदमियों को नावों का भार दिया। चार नावों में अंग्रेज बैठ गये। फैजाबाद बागियों के हाथों छोड़ सब भाग निकले।

❀

गाँव के लोगों में प्रायः राजा साहब के यहाँ छिपे अंग्रेजों की चर्चा होती। धीरे-धीरे यह चर्चा कई ओर फैल गई। बागी सिपाहियों को भी इसका पता लग गया और वे सब टोह लगाने इसी ओर आने लगे। राजा दिग्विजय सिंह इन सब घटनाओं से अनभिज्ञ न थे।

एक दिन रातोंरात चारों अंग्रेजों को पड़ोस के जमींदार के आश्रय में भेज दिया। इन अंग्रेजों के आते ही उस गाँव के मयूर तिवारी नामक एक ब्राह्मण ने अपने यहाँ छिपे तीन अंग्रेजों को और इनके साथ कर दिया।

पड़ोस के जमींदार को खबर मिली कि सेनापति हावेल आ रहे हैं, तो उसने इन तमाम अंग्रेजों को अपने आदमियों की देखभाल में सेनापति हावेल के पास पहुँचाने का पूरा बंदोबस्त कर दिया।

❀

नवाब के सिपाहियों ने हरदेव बक्स का मकान घेर लिया।

"अंग्रेज छिपे हैं!"

"जल्दी निकालो!"

"तुमको भी मार डाला जायगा !"

हरदेव बाहर आये। सिपाहियों के सरदार ने हरदेव बक्स को नवाब का हुक्म सुनाया कि अंग्रेजों को उसके हवाले कर दें वरना सारी जमींदारी जब्त कर ली जायगी।

"यहाँ अंग्रेज नहीं हैं !"

"तुमने छिपाकर रक्खा है !"

"आप लोगों को मेरे दुश्मनों ने मुझे फँसाने के लिए झूठी सूचना दी है।"

"आप लोगों को विश्वास न हो तो मेरे घर की तलाशी ले सकते हैं !"

"हाँ, तलाशी लेंगे।"

सिपाही बड़े घर में फैल गए। एक-एक स्थान की तलाशी लेने लगे। जनानखाना भी न छोड़ा गया। अंग्रेज कहीं न मिले। गाय बैल बँधने की कोठरियाँ भी देखी गईं। गौ मूत्र और गोबर की गंध। मच्छरों की भनभनाहट।

"उस अँधेरी कोठरी में क्या है ?"

"जाकर देख लीजिये भूसा है !"

गंध के मारे नाक न दी जाती।

"अरे चलो भी ! अंग्रेज ऐसी जगह नहीं रह सकता !"

जमींदार के मकान की तलाशी में अंग्रेज न मिले तो आसपास के घरों की तलाशी ली गई। बहुत से गाँववालों को बुलाकर पूछा गया पर अंग्रेजों का कुछ पता न लगा।

रात गाँव में रह दूसरे दिन सिपाहियों ने लौट जाने का निर्णय किया।

भूसे के पीछे छिपे एडवर्डस और उसके साथियों के कष्ट का ठिकाना न था। मच्छर काटे डाल रहे थे। उनकी भुनभुनाहट बेहद बढ़ रही थी। कोठरी में आनेवाली हवा में कड़ुवी बदबू भरी थी। गोबर, मूत्र की गंध। कुछ बड़ी मक्खियाँ भी भनभना रही थीं।

भगवान का नाम लेकर सब आँखें मूँदे पड़े थे।

"साहब...?"

"......"

"लो !"

एक मग में गरम चाय थी। एडवर्ड्स् ने पी। चाय से कुछ सहारा हुआ।

"रात भर और रहिए। सिपाही कल सबेरे जाँयगे।"

एडवर्ड्स् ने कलेजे पर पत्थर रखकर यह बात सुनी। चाय से अपने को गर्म कर कुछ देर उत्साह से पड़े रहे, पर बाद में जैसे-जैसे रात बढ़ती गई, उनके कष्ट बढ़ते गये। रात भर कोई अंग्रेज सो न सका। निरन्तर बदबू के कारण उनके सिर फटने लगे थे। आँखें मूँदे मुरदे की तरह पड़े रह गये।

दिन निकलने पर सब बाहर निकले, तो हर एक का चेहरा मुर्दों की तरह पीला पड़ गया था। मच्छरों के आक्रमण के चिन्ह सर्वत्र थे। स्नानकर कुछ जान पायी। नाश्ते और चाय से चलने-फिरने की ताकत आयी। थोड़ी ही देर में हरदेवबक्स सिंह ने उनके जाने का प्रबंध कर दिया।

घोड़े दिए, हथियार दिए, रुपये दिए, कहा—सुना है अंग्रेजी पलटन आ रही है। आप लोग उससे जाकर मिल जाँय। अब और अधिक आप लोगों की रक्षा करना मेरे लिए मुश्किल है। हरदेवबक्स सिंह के प्रति हृदय से कृतज्ञता प्रकट कर सभी अंग्रेज वहाँ से चल दिए।

❀

गंगा नहर की उत्तर तरफ खड़े बीबीघर में तमाम अंग्रेजी स्त्री और बच्चे कैद कर रख दिए गए। सिपाहियों का कड़ा पहरा बैठा दिया। बन्दियों की तरह इन सब के साथ व्यवहार होता। दाल-रोटी और दूध के अतिरिक्त कुछ और न मिलता था। नाना साहब के हुक्म से इन सबकी देखभाल के लिए हुसैनी नियुक्त हुई। बड़ी प्रसन्न होती हुई वह बीबीघर में आयी। तमाम अंगरेज स्त्री बच्चों को उसने घूरकर देखा और खिलखिलाकर हँस पड़ी।

दाल तैयार हो गई थी। हुसैनी ने उसमें कंकड़ छोड़ दिए। आटे में बालू मिला दी।

खाना जब मेमों और उनके बच्चों के सामने गया तो चखकर उन लोगों ने खाने से इन्कार कर दिया।

हुसैनी हँस पड़ी।

"खाना तो खाओ नहीं तो भूखों मरो। मेरी हुकूमत में तुम लोगों का यही खाना मिलेगा !"

स्त्री बच्चे उस दिन बिना खाये पड़े रहे।

फर्नेण्डा ह्वीलर वैसे ही चार दिनों से खाना न छू रही थी। पिता और माता की हत्या से उसका मन बहुत दुःखी था। किसी तरह वह अपनी मौत मना रही थी। निरन्तर दुःखों की मार से उसका सुन्दर शरीर खराब हो गया था। कमजोरी के कारण वह चेहरा—जो सौन्दर्य से लबालब भरा था, फीका पड़ गया था।

हुसैनी ने नया हुक्म दिया।

"यह जेलखाना है। कैदियों को खाना दिया जाता है, तो उनसे काम भी लिया जाता है।"—हुसैनी के हाथ में हन्टर भी था—"तुम लोगों को जौ बीनना फटकना होगा।"

"......"

"और जो काम करने से इन्कार करेगा, उसे हन्टर पड़ेंगे।"

सड़-सड़-सड़ !!!

जमीन पर हन्टर पीटकर हुसैनी ने हन्टर मारने का रिहर्सल किया।

जौ का भरा बोरा और सूप आ गये।

"चलो !"

कुछ भय के मारे काम पर लग गईं

"चलो !"

"......"

"सड़ !"

गोरे चिकने बदन पर हंटर पड़ते ही मेम तिलमिला उठती। खून छलछला आया।

"चल !"

हन्टर की मार के आगे सभी मेमों ने काम करना शुरू कर दिया। उनके बच्चे अपनी माताओं की यह दशा देख सिसक-सिसक रोने लगा। हुसैनी को तनिक भी दया न आयी। वह चुड़ैल की तरह खिलखिलाकर हँस पड़ी। गोद के बच्चों को छोड़कर कुछ मेमें काम करने में लग गईं।

"तू यहाँ बैठी है ! उठ !"

फर्नेण्डा ने घबराकर अपने सामने हन्टर लिए खड़ी औरत को देखा। पहरे के कुछ सिपाही यह दृश्य देख रहे थे। तमाम मेमों में—इतना कष्ट भोगने के बाद भी फर्नेण्डा का रूप और उसके शरीर की बनावट सहज ही में लोगों का ध्यान अपनी ओर खींच लेती थी।

"उठ। काम कर !"

"मुझसे न होगा !"

"तू करनल ह्वीलर की बेटी है। खूब जानती हूँ। उठ ! बड़ी नाजुक बनती है। दूँ एक हन्टर !"

"ए हुसैनी, इसको बख्श दे !"—पास खड़ा सब देखता हुआ एक मुसलमान सिपाही बोला।

"तो इसके बदले में तू काम कर। चल !"

हुसैनी की बात सुन आसपास खड़े सिपाही हँस पड़े।

"तुम लोगों में से कोई भी मेरे काम में दखल नहीं दे सकता। मुझे नाना साहब के सिवाय और कोई दूसरा हुक्म नहीं दे सकता। समझो। इस छोकरी को काम करना होगा। मार-मार हंटर !..."

एक घुड़सवार आया। उतरा और पहरे के सिपाहियों के पास आया।

"इसमें फर्नेण्डा कौन है ?"

"भीतर पूछो।"

सिपाही भीतर आया। उसने हुसैनी से पूछा—"इन कुतियों में फर्नेण्डा किसका नाम है ?"

"इसका ! ये बैठी है !"

सिपाही ने उसके सामने एक कागज फेंकते हुए कहा—"अजीमुल्ला साहब ने भेजा है !"

फर्नेण्डा ने कागज उठा लिया। अजीमुल्ला का नाम सुन हुसैनी कुछ सहम गई। शायद अजीमुल्ला की इस छोकरी पर विशेष कृपा है। हुसैनी फर्नेण्डा को छोड़ दूसरी ओर चली गई। मौका पाकर पास खड़े सिपाही ने मिठाई का दोना

फर्नेण्डा के आगे रख दिया। फुसफुसाकर बोला—"तुम्हें भूख लगी होगी। खा लो!

फर्नेण्डा ने उसकी ओर देखा। गोरा, हट्टा-कट्टा मुसलमान। उसकी ओर देखता हुआ मुस्कुरा रहा था। फर्नेण्डा ने दोना छुपा लिया।

❀

"पकड़ो! पकड़ो!! अंग्रेज भाग गये।"

विद्रोहियों का एक बड़ा झुंड शोर करता हुआ नदी तट पर आया। नावों पर बैठे अंग्रेज घबड़ा गए। नावें अभी कुछ ही दूर गई थीं। विद्रोही पानी में कूद पड़े। कुछ लोग दूसरी डोंगियों पर सवार हो दौड़े।

ठाँय! ठाँय!!

दोनों ओर से बंदूकें चलने लगीं। विद्रोहियों की संख्या बढ़ती गई। अंग्रेज अपनी नावों को भगा ले चले। कुछ लोग मारे डर के उतरकर उस ओर भाग गये। इस हड़कम्प के कारण चारों नावें भी एक दूसरे से अलग हो गईं।

नदी पारकर एक मेम अपने बच्चे को छाती से चिपटाए भागी जा रही थी। अपने साथियों से बिछुड़कर वह भाग-दौड़ में अलग हो गई थी। सबको अपनी-अपनी जान बचाने के आगे दूसरे की परवाह कहाँ थी! मेम भागती गई।

भागते-भागते बहुत दूर निकल आयी।

दिन भी निकल आया।

अकेली वह बीहड़ स्थान में थी। विद्रोहियों का कहीं पता नहीं था। चलो, जान तो बची। धीरे-धीरे वह अनुमान से ही एक ओर बढ़ने लगी।

बीहड़ मैदान के पास उसे कुछ खेत दिखलायी पड़े। खेत देखकर वह समझ गई कि गाँव पास है। आशा की किरण से वह आगे बढ़ी।

खेतों में काम करती स्त्रियों की उस पर दृष्टि पड़ी।

मेम की बुरी दशा थी। शरीर कीचड़ और धूल से भरा था। कपड़े फट गये थे। अपने बच्चे को छाती से चिपटाए आँसू बहा रही थी।

उसकी दशा देख औरतों को दया आ गई।

"कौन है?"

"मेम है !"

"ये हालत है !"

"अरी ! मालूम नहीं तुझको ! आजकल चारों तरफ गदर मची है। अँग्रेजी अमलदारी उठ गई है और अंग्रेजों को मारा जा रहा है ! ये बेचारी जान बचाकर भागी है !"

"हाय ! हाय !! इसका बच्चा देखो । कैसा कुलबुलाता है !"

मेम बच्चे की तड़फन का अर्थ समझती थी । बच्चे को दो दिन से दूध नहीं मिला है । नाव पर एक संगिनी का दूध लेकर वह बच्चे को पिलाने जा ही रही थी कि उस नाव पर हमला हो गया । पानी में कूदकर वह भागी ।

मेम ने इशारे से बताया । बच्चा भूखा है ।

"बच्चा भूखा है !"

"बच्चा भूख के मारे मर रहा है !"

"इन मेमों को दूध नहीं होता ।"

"नहीं । धाय दूध पिलाती है ।"

"तू पिला दे ।"

"मैं ?"

"हाँ रे ! पुण्य होगा ।"

एक स्त्री ने साहस कर मेम का बच्चा अपनी गोद में लिया और उसे दूध पिलाने लगी । भूख से बच्चे की आँतें ऐंठ रही थीं । वह जुट गया । मेम फफक फफककर रो उठी । हाय ! आज उसकी यह दशा !

"ऐ इसे अपने यहाँ रख लो ।"

हाय दैय्या ! हमारे घर वाले देखें तो काट दें !"

"ओ धनपत्तो ! इसे तू छिपा ले । बेचारी मर रही है । तेरे घर में भाड़ है । उसी में छिपा ले ।"

"पता लग गया तो ?"

"एक दो रोज छिपाकर भगा देना । तब तक तो विचारी की जान बचेगी !"

स्त्रियाँ उस मेम को छुपाकर ले गईं ।

❀

चार-पाँच अंग्रेजों का एक झुंड भागा जा रहा था। एक मेम भी थी। उसके साथ तीन बच्चे थे। सारा दिन भागते-भागते सब थक गये थे। दो गाँव भी रास्ते में पड़े, पर मारे डर के एक भी आदमी ने मदद न की। विद्रोही सिपाही प्रायः उनके गाँव आया करते थे, इसीलिए अंग्रेजों की मदद कर कौन मुसीबत अपने सिर मोल लेता।

रात भूखे-प्यासे खुले आसमान में काटकर फिर सब आगे बढ़े।

रात ही मेम का एक बच्चा मर गया।

कफन तक का ठिकाना न था। अपने ही हाथों गड्ढा खोद उसे दफन किया। मेम के दूसरे बच्चे बीमार पड़ गये। एक को कंधे से बैठाये और दूसरे को छाती से चिपकाए, रोती कलपती वह मेम अपने साथियों के साथ बढ़ चली।

❀

नाव पर अङ्गरेजों को देखते ही हड़कम्प मच गया।

"अङ्गरेज भाग रहे हैं।"

"मारो!"

देखते-देखते बेगमगंज में पड़ी आजमगढ़ की सत्रह नंबर पैदल पलटन के सिपाही अपनी बंदूकें लेकर आ गये। हाहाकार मच गया। अधिकांश अङ्गरेज मार डाले गये। बहुतों को तलवार से काट डाला गया। थोड़े से लोग पानी में कूदकर अपने प्राण बचा सके। ये लोग अमौरा की ओर भाग गए।

❀

नाव पर अंग्रेजों को देखते ही लोग टूट पड़े। मुसलमानों ने निहत्थे अंग्रेजों को काट डाला। थोड़े से अंग्रेज भागकर अपनी जान बचा सके। निकट के एक गाँव में मुहम्मद खाँ ने उनकी मदद की और दूसरे दिन गोरखपुर पहुँचाने की व्यवस्था की।

❀

दो नावों के अंग्रेज कप्तानगंज के पास मुसलमानों द्वारा घेर लिए गए और उन सबको कत्ल कर दिया गया।

"यहाँ अंगरेज हैं !"

"नहीं एक मेम है भैया ! उसका एक बच्चा है भैया। बड़ी दुखिया है।"

गाँव के लोगों को दया आ गई !

"तू एक काम कर। इसे राजा मानसिंह के पास भेज दे। कमबख्त ! सिपाहियों को पता लग जायगा, तो सारे गाँव पर मुसीबत आ जायगी !"

"मैं कैसे भेजूँ भैया ! तुम्हीं लोग बन्दोबस्त करो !"

आड़ से छिपी औरत निकली। उस मेम की दशा देख गाँववालों का हृदय भर आया। सबने मिलकर उसे शाहगंज भेजने की व्यवस्था कर दी

रास्ते में अमौरा से आते हुए कुछ अंग्रेज और मिल गये। ये सब भी कुछ गाँववालों की रक्षा में शाहगंज जा रहे थे। मेम उन लोगों से मिल गई।

❀

हडसन का चेहरा गंभार पड़ गया। सिर झुकाए हुए वह चुपचाप बाहर निकला। तम्बू में खाट पर सेनापति बर्नार्ड दम तोड़ चुके थे। हैजे की बीमारी ने उनके प्राण ले लिए। सेनापति की मृत्यु की खबर पूरे क्षेत्र में फैल गई। सैनिक सम्मान के साथ बाड़े के ही एक कोने में सेनापति को दफना दिया गया।

सेनापति की मौत से अंग्रेजों में उदासी छा गई। अब तक किसी ओर से सहायता न आयी थी। दिन रात के आक्रमणों से शक्ति क्षीण होती जा रही थी। फिर भी सब डटे हुए थे, क्योंकि सेनापति विल्सन के आने की खबर आ चुकी थी।

इस शोक के समय में भी अंग्रेजों ने न हिम्मत हारी और न अपने काम में किसी प्रकार की ढील आने दी। सब मुस्तैदी से डटे रहे। कर्नल रीड ने सेनापति का भार संचालन अपने हाथ लिया। हैजे की इस बीमारी का प्रभाव और भी अनेक अंग्रेज सैनिकों पर पड़ रहा था, पर सबके सब धीरता वीरता के साथ सब प्रकार के संकटों का सामना कर रहे थे।

अंग्रेजों की ओर से कोई आक्रमण न होने के कारण दिल्ली में फैले विद्रोहियों की हिम्मत बढ़ती जा रही थी। साथ ही आसपास के क्षेत्रों से यह अफवाह बड़ी तेजी के साथ चारों तरफ फैल रही थी कि बादशाह बहादुर शाह की ताकत बहुत बड़ी है। उसकी ताकत से घबराकर तमाम अंग्रेज अब भागने की तैयारियाँ कर रहे हैं।

आक्रमण का कोई निश्चित समय न था ।

पहिले तो हडसन को आक्रमण के पूर्व सूचना मिल जाया करती थी, पर इधर अंग्रेजों की तरफ से कोई सशक्त कदम न उठाए जाने के कारण विद्रोहियों का इतना हौसला बढ़ गया था कि चाहे जब कोई भी छोटी-मोटी टुकड़ी हमला कर बैठती । इस कारण अंग्रेजों को पारी-पारी से हरदम तैयार रहना पड़ता ।

❀

धड़ाम !

गोला फटा । फिर आक्रमण हो गया ।

बिगुल बजते ही गोलन्दाज जलती बत्तियाँ ले अपनी तोपों पर झुके । संकेत हुआ ।

जोर का धड़ाका ।

विद्रोही सिपाहियों की टुकड़ी के बीच जाकर गोला फटा ।

धड़ाम ।

ठाँय ! ठाँय !!

दोनों ओर से आक्रमण प्रत्याक्रमण । रात के अँधेरे में भी सिपाही आक्रमण करने आ जाते ।

"उधर !"

बखत खाँ की ललकार सुनायी पड़ी । तोपों के पास खड़ा बखत खाँ गोलन्दाजों को निशाना बतला रहा था । चारों तरफ बिखरे सिपाही अंधा-धुंध बन्दूकें दाग रहे थे । अंग्रेजों की तोपों की मार के आगे उनकी बाढ़ रुक गई थी ।

धड़ ! धड़ ! धड़ ! धड़ाम !!!

गोला ठीक निशाने पर फटा । पास खड़े कई अंग्रेज मर गये । एडजुटेण्ड जनरल चेम्बरलेन भी लुढ़क गये । कई लोग दौड़े । चेम्बरलेन को उठाया । गोले का एक टुकड़ा फटकर उनकी जाँघ पर पड़ा था । तुरन्त मरहम पट्टी कर डोली में उठा ले गए । खाट पर लिटा दिया गया ।

कुछ देर बाद हमला रुक गया ।

इस आक्रमण में बीस-पच्चीस अंग्रेज मर गये। दो सौ के करीब घायल हो गए। चेम्बरलेन ने खाट पकड़ ली। अंग्रेजों में निराशा का वातावरण फैल चला।

❀

कलकत्ते से प्रधान सेनापति का आदेश आते ही कर्नल नील ने सेनापति हावेल को भी कानपुर की ओर बढ़ने की आज्ञा दी।

"रेनडे जा चुका है। आप भी उसकी मदद को चलें। मैं भी शीघ्र आऊँगा। डरने की आवश्यकता नहीं। न पीछे हटने की। इलाहाबाद का इन्तजाम कर मैं भी आ जाऊँगा। समझे?"

"जी!"

सेनापति हावेल ने चलने की घोषणा कर दी। फौज तैयार होने लगी। सेनापति हावेल के साथ एक हजार पैदल गोरे सैनिक एक सौ तीस बहादुर सिक्ख, छः तोपों के अलावा स्वेच्छा से बने बहुत से लोग सैनिक रूप में आ गए। कचहरियाँ बन्द होने के कारण तमाम सिविलियन अंग्रेज भी सैनिक रूप में भी भरती हो गये।

हावेल ने कूच का बिगुल फूँकने का आदेश दिया।

सेना चल पड़ी।

कुछ ही दूर जाने पर मूसलाधार बरसा के कारण बहुत सी सेना पीछे रह गई। हावेल ने भी पड़ाव डाल दिया। आनेवाले लोगों की प्रतीक्षा में उन्हें एक दिन और रुकना पड़ा। फिर दूसरे ही दिन विशाल फौज कानपुर की ओर बढ़ चली।

❀

गोमती के दाहिने किनारे बसे सुलतानपुर की ओर कई घुड़सवार सिपाही भागे जा रहे थे। इन लोगों की दौड़ से साफ मालूम हो रहा था कि वे बहुत जल्दी में हैं। देखते-देखते शहर की कच्ची सड़क को टापों से रौंदते हुए सबके सब छावनी में आ गए।

इन लोगों को आया देख सिपाहियों में हड़कम्प मच गया। सब इनके पास दौड़े आए।

"हुक्म बादशाह का, हुक्म नाना साहब का, हुक्म तात्या टोपे का...बगावत कर दो। अंग्रेजी अमलदारी मुर्दाबाद!"

सिपाहियों की इस ललकार के साथ ही तमाम सिपाही अपने-अपने हथियार उठाकर दौड़े।

कर्नल फिशर इस विद्रोह की संभावना से परिचित थे, इससे बहुत पहिले ही उन्होंने अंग्रेज, स्त्री-बच्चों को इलाहाबाद भेज दिया था। केवल पाँच अंग्रेज ही रह गये थे। विद्रोह की खबर सुनते ही कर्नल फिशर अपने घोड़े पर सवार होकर सिपाहियों को समझाने आए।

सिपाहियों ने देखा।

"वो आ रहा है!"

"मारो!"

"ठाँय!"

कर्नल फिशर लुढ़क गए। उनके साथी टुकर ने उन्हें उठाया। डोली मँगवायी, पर तब तक दूर खड़े सिपाहियों ने गोलियाँ चला टुकर को खत्मकर दिया। दोनों अंग्रेज मर गये।

बचे हुए तीनों अंग्रेज भागे। एक गोमती किनारे दूर पर बने रुस्तमशाह के किले की ओर भाग गया। रुस्तमशाह ने उसे आश्रय दे बनारस भेजने का प्रबन्ध किया।

दो अंग्रेज जासिन खाँ जमींदार की शरण में गये, पर गाँववालों ने अंग्रेजों के आने का समाचार सुनकर जासिन खाँ के सामने ही दोनों को मार डाला!

*

"फैजाबाद और सुलतानपुर में अंग्रेजी अमलदारी उठ गई। गदर हो गया!"

"बहुत अच्छा हुआ!"

"यहाँ से भी अंग्रेजों को निकालो!"

सालोनी के तमाम सिपाही इकट्ठे हुए। बस्ती के तमाम आदमियों को चौक में इकट्ठा कर साथ देने की आज्ञा दी। नागरिकों ने साथ दिया। बिना किसी मार-काट के जेलखाना तोड़ दिया गया। तमाम कैदी भी साथ हो गये। बागियों की बड़ी भीड़ अंग्रेजों के बँगले की तरफ बढ़ी।

"सुनो, किसी की हत्या व्यर्थ क्यों करना? अगर अंग्रेज हमारी बात न मानेंगे तो हम सबको मार डालेंगे!"

"हाँ, हाँ!"

"और वे जो हमारी बात मानकर यहाँ की हुकूमत छोड़कर चले जाँयगे उन्हें हम लोग पहुँचा देंगे!"

सिपाहियों ने तमाम अंग्रेजों को घेर लिया। बागियों की शक्ति के आगे अंग्रेज झुक गए। सबने सालोनी छोड़कर जाना स्वीकार कर लिया। बिना मार-काट के सालोनी से अंग्रेजी शासन उठ गया और बागियों ने अंग्रेजों को शहर से बाहर कर दिया। किसी अंग्रेज को हाथ भी नहीं लगाया गया।

*

अन्त शहर के बाहर आकर अंग्रेज बड़े पेशोपेश में पड़े। चारों तरफ आग लगी है। किधर जाँय?

एक अंग्रेज ने सुझाया—"दरियाबपुर चलना ठीक होगा!"

"हनुमन्तसिंह के यहाँ!"

"हाँ, उसका किला भी मजबूत है!"

"पर उसकी बहुत सी जमीन हम लोगों ने बेदखल कर अपनी अमलदारी में ले ली है। वह हम लोगों की मदद करेगा?"

"आदमी शरीफ है।"

"अच्छा! चलकर देखो!"

सभी अंग्रेज दरियाबपुर की तरफ बढ़े। एक अंग्रेज ने जाकर हनुमन्तसिंह से भेंट की। हनुमन्त सिंह ने उन्हें आश्रय देना स्वीकार कर लिया। तमाम अंग्रेज उनके आश्रय में आ गए। हनुमन्तसिंह ने उनकी आवभगत में कोई कमी न रक्खी।

रात भर अंग्रेजों में विचार-विमर्श होता रहा। अधिकांश अंग्रेज इस मत के थे कि यहाँ व्यर्थ पड़े रहने से कोई लाभ नहीं। इस समय और स्थानों पर संकट आया हुआ है, तब हम यहाँ आराम से कैसे रह सकते हैं? यह तो कायरता है। इस कायरता का जीवन अंग्रेज नहीं बिता सकते! सर्वसम्मति से यही तय हुआ कि इलाहाबाद चला जाय।

सुबह उठते ही हनुमन्तसिंह को इस निर्णय की सूचना दी गई।

हनुमन्तसिंह ने सारी व्यवस्था कर दी।

अंग्रेज चलने लगे। एक बोला—"आप की मदद के लिए हम लोग धन्यवाद देते हैं। आपकी जमीन गदर के बाद वापिस कर दी जायगी!"

हनुमन्त सिंह हँस पड़े—"अब क्या आशा करूँ साहब! पीढ़ी दर पीढ़ी से चली आई हमारी जायदादों को आपने हड़प लिया है। हमारी तो इच्छा थी कि लखनऊ जाकर आप लोगों से मुकाबला किया जाय!"

"......"

अंग्रेज कुछ न बोले। चुपचाप चले गए।

❀

अजीमुल्ला का पत्र पढ़कर फर्नेण्डा को क्रोध आ गया। क्रोध में आकर उसने पत्र के टुकड़े-टुकड़े कर दिए। पास खड़ा मुसलमान युवक सिपाही सब देख रहा था।

"क्या हुआ बीबी?"

अपनी पैदाइश के समय से हिन्दोस्तान में रहने के कारण यूरेशियन माता होने पर भी फर्नेण्डा भली-भाँति हिन्दोस्तानी जानती थी।

बोली—"हुआ क्या? अजीमुल्ला को कुत्ते ने काटा है!"

"मतलब क्या है?"

"मुहब्बत का पैगाम भेजता है। कहता है, अगर मैं उसकी बात मान लूँ तो मुझे इस कैदखाने से छुट्टी मिल जायगी!"

सिपाही का मन ईर्षा से भर गया। फर्नेण्डा पर अजीमुल्ला की आँख देख उसके मन को दुःख भी हुआ। सच तो यह था कि वह भी फर्नेण्डा को चाहने लगा था। कुछ क्षण तक फर्नेण्डा की ओर देखता रहा।

"फिर ?"

"......"

"अगर उसकी बात न मानोगी तो उसने कुछ धमकी की बात लिखी होगी ?"

"हाँ, जबर्दस्ती मुझे यहाँ से जबर्दस्ती बुला लेगा। सच कहती हूँ, मैं उसके पास जाने के पहिले मर जाऊँगी। उसने फर्नेण्डा को समझ क्या रक्खा है ?"

सिपाही चुप हो गया। मन ही मन वह फर्नेण्डा की स्थिति पर विचार करने लगा। अजीमुल्ला को वह भली-भाँति जानता है। अजीमुल्ला अपनी जिद का पक्का है। इस समय नाना साहब की नाक का बाल है। नाना साहब का सारा शासन तन्त्र एक प्रकार से उनके हाथ है। आसानी से वह फर्नेण्डा को पकड़कर मँगवा सकता है। कोई उसका विरोध नहीं कर सकता। अजीमुल्ला को रोकने की ताकत किसी में नहीं है और फिर वह एक अदना सा सिपाही कर ही क्या सकता है !

*

रात घिरी थी। सर्वत्र सन्नाटा था। केवल पहरे के सिपाही जाग रहे थे। तमाम स्त्रियाँ ही बन्दी होने के कारण किसी के भाग जाने की आशंका न थी, इस लिए अधिकांश सिपाही ऊँघ रहे थे। उस सिपाही ने इधर-उधर देखा। मौका पाकर भीतर घुस गया।

एक कोने में फर्नेण्डा पड़ी थी। क्षण भर उसके चिकने गुलाबी शरीर को वह देखता रहा। शक हुआ उसे। फर्नेण्डा घबड़ाकर उठ गई।

"कौन ?"

"हिस्स ! अहमद खाँ !"

"क्या है ?"

"इस तरफ आओ !"

अहमद उसे अँधेरे कोने में ले गया। फर्नेण्डा का हाथ अपने हाथ में लेकर उसने धीरे से दबाया—"मैं तुम्हारी मदद करना चाहता हूँ, फर्नेण्डा !"

"क्या ?"

अहमद खाँ का प्रारम्भ से ही अपने प्रति अनुराग रहने के कारण तथा समय-समय पर उसकी सहायता के कारण फर्नेण्डा उसके प्रति कृतज्ञ था।

"जानती हो अजीमुल्ला जबर्दस्ती तुम्हें बुलाकर रहेगा!"

"बुलाने दो। उसके पास जाने से पहिले मैं मर जाऊँगी!"

"व्यर्थ मरने से लाभ क्या!"—अहमद फुस-फुसाया—"मैंने एक रास्ता निकाल लिया है। अगर तुम चाहो तो साथ दे सकती हो!"

"क्या?"

"हम तुम दोनों भाग चलें!"

"कहाँ?"

"अगर तुम तैयार हो तो मैंने लखनऊ तक जाने का इन्तजाम कर लिया है। मुझे विश्वास है, फर्नेण्डा तुम मेरी बात मान लोगी!"

अंधकार में आशा की किरण देख फर्नेण्डा की निगाहें चमक उठीं। सिपाही अहमद खाँ का प्रस्ताव पसन्द आ गया। भाग चलने में बुराई क्या है! हुसेनी के जुल्मों से और कारावास की इस यातनामयी जिन्दगी से छुटकारा अवश्य मिलेगा।

"कैसे भागोगे?"

"मैंने सब इन्तजाम कर लिया है। तुम हाँ तो कहो!"

"अच्छा!"

फर्नेण्डा की स्वीकृति पा अहमद खाँ प्रसन्न हो बोला—"दो बजे मैं आऊँगा। तैयार रहना!"

"अच्छा!"

अहमद खाँ अँधकार में गायब हो गया।

❀

आधी रात के सन्नाटे में हो-हल्ला सुन कमिश्नर डाईंग फील्ड चौंक पड़े। उनके कुछ साथी भी उठ गए। गदर की आशंका के कारण तमाम अंग्रेजों, ईसाईयों और परिवारों को लखनऊ भेज दिया था।

"कैसा शोर है?"

"मालूम होता है, सिपाहियों ने विद्रोह कर दिया है!"

शोर और तेज हुआ। बंदूक चलने की आवाज के साथ भाग-दौड़ सुनायी पड़ी। डाईंग तुरन्त बाहर निकले। खानसामा उठ गया था। दौड़ा हुआ आया।

"भाग जाइए साहब ! बहुत से सिपाही इसी तरफ आ रहे है !"

डाईंग फील्ड ने स्थिति की गंभीरता समझी । अपने साथियों के साथ गोंडा भाग गए ।

देखते देखते बहराइच पर बागियों का जोर हो गया । रात में ही सिपाहियों ने इस आशंका से विद्रोह कर दिया कि कहीं सोते समय ही बचे-खुचे अंग्रेज उन्हें तोपों से मार न डालें ।

ॐ

गोंडा आते ही डाईंग फील्ड ने देखा, यहाँ भी अशान्ति है । कुछ साथियों को और जुटाकर बलरामपुर की ओर बढ़े । बलरामपुर के ताल्लुकेदार की सहायता से गोरखपुर बढ़ गये । उनके जाने के बाद ही बलरामपुर की सिपाही-टुकड़ी बागी हो गई । कैप्टन वनहोम के अलावा और कोई न था । सिपाही पलटन के गोलन्दाज बागी न हुए थे ।

"हम आपके साथ है ।"

गोलंदाजों के इस आश्वासन के कारण वनहोम का साहस बढ़ा । बागियो की परवाह न कर उन्होंने लखनऊ चलने की योजना बनाई । तोपों के साथ चलने के लिए तमाम गोलंदाज तैयार हो गए ।

पैदल टुकड़ी को पता लगा ।

तमाम बागियों ने तोपों को घेर लिया । तोपों पर अधिकार जमाने का प्रयास किया । आमने-सामने भिड़ने की नौबत आ गई ।

"मारो, नमकहराम हैं !"

"गद्दार हैं !"

वनहोम भी घोड़े पर आ गये । गोलंदाजों को हुक्म दिया—"मार गिराओ !"

पर उनकी आज्ञा का पालन न हुआ । गोलंदाजों ने तोपो पर हाथ न लगाया । वनहोम घबड़ाए । मौका पाकर कुछ सिपाहियों ने बंदूकें तान लीं ।

"मारो मत ! मारो मत !!"

कुछ लोगों ने विरोध किया और वनहोम को अपने घेरे में रखकर निकाल ले गए ।

"साहब, अब आप भाग जाइए !"

"......"

"वह रामघाट तरफ मत जाइए। वहाँ भी सब बागी हो गए हैं।"

तमाम अंग्रेज नवापाड़ा की तरफ भागे, पर वहाँ भी बागियों का शोर सुन बहरामघाट लौटे। हिन्दोस्तानी लिबास बना लिया। फिर भी पहिचान लिए गए। कुछ सिपाहियों ने देख ही लिया।

"अंग्रेज भाग रहे हैं !"

"......"

"पकड़ो ! मारो !"

सिपाही दौड़े।

ठाँय ! ठाँय !

अंग्रेज घिर गए। कुछ बागियों की गोली से मारे गये। कुछ घिर गये तो तलवार से काट डाले गए।

❀

सुल्तानपुर छोड़कर अंग्रेज भाग गए तो इसकी खबर दरियाबाद पहुँची। दरियाबाद की एक टुकड़ी विद्रोही हो गई, पर दूसरी टुकड़ी ने विद्रोह न कर अपने अंग्रेज कप्तान का साथ दिया।

इस टुकड़ी के संरक्षण में वह तमाम खजाने को लाद लखनऊ की तरफ रवाना हुआ। आध मील बाद ही सिपाहियों में से अधिकांश बागी हो गए। कप्तान खजाना छोड़कर भाग गया। सिपाहियों ने खजाना लूट लिया और जिसने जहाँ उचित समझा, वहाँ की राह गही।

❀

अवध इलाके से अंग्रेजी अमलदारी उठने में देर न लगी। हर स्थान के अंग्रेजों की बुरी दुर्दशा हुई। प्राण रक्षा के लिए अंग्रेजों को गाँव-गाँव जंगल-जंगल भटकना पड़ा। सीतापुर, मिथौली से भागे तथा और भी अनेक स्थानों से आए अंग्रेज मिथौली के राजा लूनीसिंह की शरण गये।

लूनीसिंह धर्म संकट में पड़ बहुत घबराए। फिर भी उन्होंने अंग्रेजों को आश्रय दिया। तमाम अंग्रेज और उनकी स्त्रियों को उन्होंने कचयानी के जंगल में बने अपने पुराने किले में भेज दिया। किले में काम की कोई वस्तु न थी। घोर जँगल में किला बना था। रात को जँगली जानवर, शेर चीते दहाड़ते। किला पुराना और टूटी फूटी हालत में था, फिर भी आश्रय तो था। इसी कारण तमाम अंग्रेज उसमें पड़े रहे।

भागे हुए अंग्रेजों के पास कोई विशेष सामान न था, जो था—उसीमें गुजर करने लगे।

राजा लूनीसिंह ने कुछ रक्षकों को सेवा के लिए भेज दिया। खाद्य सामग्री की व्यवस्था कर दी गई। फिर भी अंग्रेजों के कष्ट कम न थे।

॥

अशक्त अजीजन का शरीर तवे सा जल रहा था। रह-रहकर वह होश खो बैठती थी। आँखों से कुछ भी सूझ न रहा था। बार बार वह शक्ति बटोर आँखें खोलने की कोशिश करती, पर उसे कुछ सूझ न रहा था। ओंठ थरथरा रहे थे। सारा मस्तिष्क शून्य पड़ता जा रहा था। अजीमुल्ला का बार-बार ख्याल आ रहा था, पर हिम्मत करने के बाद भी होठों से, वह कुछ भी शब्द न निकाल पा रही थी। उसकी सारी शक्ति जैसे जवाब दे चुकी थी।

सिरहाने खड़ी बाँदी घबड़ा रही थी। बार-बार वह सामने बैठे हकीम की ओर देख रही थी। चश्मे के भीतर से झाँकती बूढ़े हकीम की आँखें, गंभीर-स्थिर थीं। अजीजन की नाड़ी उसके हाथ थी। दवा देकर वह अपने सारे उपाय कर चुका था। किसी भी दवा का कोई प्रभाव न पड़ा था।

अजीजन का गला खरकने लगा।

पुतलियों का रंग बदलने लगा।

हकीम नाड़ी छोड़ उठकर खड़ा हो गया। घबरायी हुई बाँदी के चेहरे पर एक बड़ा सा प्रश्न चिह्न बना।

"खुदा की कुदरत...खेल खत्म है! खबर दे दो!"

बाँदी की आँखों के थमे सारे आँसू झरझरा पड़े। अपनी मालकिन के पैरों

पर अपना चेहरा रख वह सिसक उठी। अजीजन की आँखें एक बार घूमीं। होंठ थरथराए।

"अ...जी...मुल्ला...आये ?"

"......"

स्वर टूट गया और अजीजन ठंडी पड़ गई। बाँदी जोर से रो उठी। आवाज सुन और भी दासियाँ दौड़ आयीं। कुहराम मच गया। अजीजन अजीमुल्ला की याद करते-करते चल बसी, पर अजीमुल्ला न आया।

❀

अजीमुल्ला बोला—"अंग्रेजों को क्या आप बेवकूफ समझते हैं ?"—और हँस पड़ा।

तात्या एकदम गंभीर मुद्रा में नाना साहब के दायीं ओर बैठा था। ओंठ काटता हुआ बोला—"देर करने की जरूरत नहीं। अंग्रेजी सेनाएँ अपना गोल बनाकर इस तरफ आ रही हैं !"

"हम उन्हें रोकेंगे !"

"यह तो तय बात है !"—तात्या ने कहा—"पर सवाल यह है कि इसके लिए कुछ काम होना चाहिए।"

"तुम्हारा क्या सुझाव है ?"

"हमें फतेहपुर को ओर से हमला करते हुए इन लोगों को भगाना चाहिए !"—तात्या ने कहा।

"और बाबा भट्ट इस काम के लिए तैयार हैं ही !"—अजीमुल्ला मुस्कुराया।

"अकेले बाबा भट्ट से कुछ न होगा। मेरा विचार है, टीकासिंह और ज्वाला-प्रसाद को भी बाबा भट्ट के साथ जाना चाहिए !"

"ठीक है ! तैयारियाँ कर लो !"

नाना साहब के परामर्श से प्रबन्ध होने लगा। टीकासिंह, ज्वालाप्रसाद और बाबा भट्ट तैयारियाँ करने लगे। बारह तोपों, पन्द्रह हजार पैदल सिपाहियों, पाँच सौ सवारों और डेढ़ हजार दूसरे हथियार बन्द सिपाहियों के साथ इलाहाबाद की ओर कूच का डंका बज गया। जोश में भरी पलटन, रहे-सहे अंग्रेज शासन को भी मिटाने के लिए डंके की चोट पर चल पड़ी।

❀

कलकत्ते में बैठे गवर्नर जनरल की चिन्ताओं का शुमार न था। कानपुर की दुर्दशा के साथ-साथ अवध, दिल्ली की दुर्दशा के समाचार आ चुके थे। भरसक अपनी बुद्धि के अनुसार आदेश भेज रहे थे, पर सबसे कठिन समस्या सन्देश भेजने की थी। सन्देश देर से पहुँच रहे थे और तब तक स्थिति का नकशा ही पलटा जा जाता। सन्देश आने में भी देर हो रही थी। कहाँ क्या हो रहा है, इसका कुछ पता ठीक से लगता ही नहीं था। डाक का रास्ता रुका हुआ था और कई स्थानों पर तार भी काट डाले गये थे। अक्सर झूठे समाचार आते और कभी-कभी तो एक-दम घबड़ा देनेवाली बातें ही सुनने में आतीं।

कलकत्ता भी अशान्त था। सारा नगर नित नई-नई अफवाहों से भरता। अफवाहें आस-पास के भी क्षेत्र में पहुँच रही थी। अंग्रेजी भाषा के उत्तेजक समाचारों का अनुवाद जब देशी पत्रों में छपता तो हिन्दोस्तानी नागरिकों और आस-पास के क्षेत्रों में उसकी तीव्र प्रतिक्रिया प्रकट होती। अंग्रेजों की हिंसावृत्ति के समाचार सर्वत्र उत्तेजना फैला रहे थे। लार्ड कैनिंग ने छापेखानों पर प्रतिबंध लगा दिया। फिर भी लोगों में अफवाहों का सिलसिला न टूटा। उत्तेजना का वातावरण कम न हुआ।

कलकत्ते में बाहर से गोरी सेना और उनके आधीन सिपाही बराबर आ रहे थे। लार्ड कैनिंग के आदेशानुसार उन्हें भिन्न-भिन्न स्थानों की ओर भेजा जा रहा था। सुयोग्य नेतृत्व और संगठन से लार्ड कैनिंग पूरे विद्रोह को दबाने के लिए बड़ी ही सतर्कता से काम कर रहे थे।

सैनिक हलचलों से कलकत्ता और आस-पास के क्षेत्र में बेचैनी फैलती जा रही थी। सिपाही और गोरे एक दूसरे को शक की निगाहों देखने लगे थे। अंग्रेज स्वेच्छया सेनाओं में भरती हो रहे थे। अफवाहों के कारण हिन्दोस्तानी सिपाहियों को सभी शंका की दृष्टि से देखने लगे थे।

※

बारकपुर की पलटन नम्बर सत्तर और तैंतालीस के नायकों ने लार्ड कैनिंग से प्रार्थना की—उन्हें दिल्ली की ओर जाने का हुक्म मिले। दिल्ली के विद्रोहियों के खिलाफ वे लड़ेंगे। यह प्रस्ताव लार्ड कैनिंग के पास आया।

प्रस्ताव में सिपाहियों ने इच्छा प्रकट की थी। जिन बन्दूकों और कारतूसों के कारण इतना हो-हल्ला मचा हुआ है, वे उन्हीं का प्रयोग करेंगे।

अपने सहयोगियों के समक्ष लार्ड कैनिंग ने यह प्रस्ताव रक्खा।

"इसमें कुछ रहस्य है!"

"क्या?"

"ब्राउन बेस की अपेक्षा ये बन्दूकें लंबी मार करती हैं और ये पलटनें इसी बन्दूक की माँग कर रही हैं!"

"इससे क्या!"

"अगर इन्हीं बन्दूकों को पाकर इन लोगों ने हम लोगों के खिलाफ जेहाद बोल दिया तो?"

"......"

इस प्रश्न पर सन्नाटा छा गया। बात बड़ी तीखी थी।

"सेनापति हेअर्स तो इन पलटनों के कमांडर हैं, उनकी क्या राय है?"

"प्रस्ताव भेजा है, पर इस पर राय नहीं दी है!"

"हमें तो शक है। इस समय ऐसी स्थिति है कि हम हिन्दोस्तानी सिपाहियों का विश्वास नहीं कर सकते!"

"अगर हम इन लोगों का यह आवेदन अस्वीकृत कर दें तो यह भी संभव है कि ये लोग बागी हो जाँय कि सरकार तो हमारा विश्वास ही नहीं करती। हम धर्म नष्ट करने वाले कारतूस भी लेने को तैयार भी हो गये!"

"बागी होने दीजिये। हमारे हथियार तो हमारे पास रहेंगे। अपनी रक्षा के लिए और इन लोगों को दबाने के लिए!"

मंत्री-सभा में कोई निर्णय न हो सका।

बारकपुर से सेनापति हेअर्स का पत्र आते ही अंग्रेजी पलटन तुरन्त दौड़ी। सेनापति हेअर्स के पत्र में इस बात की शंका प्रकट की गई थी कि वहाँ की पलटन बागी होने जा रही है और इसके लिए षड्यंत्र प्रारंभ हो गया है। अतएव तत्संबंधी पलटनों की बगावत को रोकने और निरस्त्र करने के उद्देश्य से गोरी पलटन कलकत्ता से दौड़ी।

दोपहर की तेज गरमी। अधिकांश गोरों के पैरों में छाले पड़ गये। बहुतों

को नंगे पैर चलना पड़ा। विपत्ति झेलती हुई गोरी पलटन बारकपुर पहुँची। बारकपुर में शान्ति थी। कहीं कोई बात न थी। फिर भी सबके हथियार लेने की बात तो तय पा ही गई थी।

शेष समय अंग्रेजी सेना चुपचाप पड़ी रही।

शाम को पलटन के परेड मैदान में आते ही गोरी पलटन ने उन्हें घेर लिया। तोपें पहिले से ही तैयार खड़ी थीं।

सेनापति हेअर्स ने हुक्म दिया। सब सिपाही अपने हथियार रख दें। वर्दी उतार दें।

इस आदेश के कारण सन्नाटा छा गया, पर बिना किसी गड़बड़ी के तमाम सिपाहियों ने हथियार रख दिए। वर्दियाँ उतार दीं।

❀

कलकत्ते में भगदड़ मच गई।

बारकपुर के सिपाही बागी हो गए। अवध के नवाब के नौकर सिपाहियों के साथ मिलकर तमाम यूरोपियनों को मारने आ रहे हैं।

बिजली की तरह यह समाचार सारे शहर में फैल गया।

कलकत्ते के तमाम ईसाई और अंग्रेज भाग चले। जान बचाने की चिन्ता के आगे—जो जिसके हाथ लगा, वही उठाकर भागने लगे। चौरंगी से गंगा तट की ओर बड़ी संख्या में अंग्रेज किले की ओर भागे। मेमें अपने बच्चों को कंधे पर बैठाकर भागीं। देखते-देखते सरक्युलर रोड के तमाम अंग्रेज अपने-अपने घरों से भाग खड़े हुए।

किले में धँसने के लिए रेलमपेल मच गई। एक के ऊपर एक गिरते हुए अंग्रेज, स्त्रियाँ बच्चे प्राण रक्षा के लिए त्राहि-त्राहि करते हुए धँसने लगे।

अफवाहें उड़ती जा रही थीं।

दिल्ली के सिपाहियों ने कलकत्ता पर धावा कर दिया है। मटियाबुर्ज में कैद नवाब वाजिदअली शाह खुद इस पलटन के साथ आ रहे हैं।

पूरा कलकत्ता शहर गनगना गया। गोरों के झुंड गिरते-पड़ते भागते नजर आ रहे थे। नागरिक अवाक् होकर यह भगदड़ देख रहे थे। खिदरपुर एकदम

खाली हो गया । किले में सैकड़ों अंग्रेज भाग गए। अपनी रक्षा के लिए बड़े-बड़े अंग्रेज अफसर जहाजों में घुस गये।

इस हड़कम्प के कारण साधारण नागरिकों में भी भगदड़ मच गई। पक्के मकानों और होटलों में हजारों आदमी घुस गये।

कलकत्ते की इस भयानक भगदड़ से सर्वत्र आतंक छा गया। प्रतिपल सिपाहियों की बन्दूकों और तोपों के फूटने की आवाज की आशंका सारे नगर में भर गई।

लार्ड कैनिंग हतप्रभ। इस भगदड़ का कारण ही उनकी समझ में न आ रहा था। बारकपुर से उनके पास तार आ चुका था कि वहाँ शान्ति है और शान्तिपूर्वक सबके हथियार ले लिये गये हैं? इस भगदड़ से स्वयं वे घबड़ा गए।

पूरा दिन और पूरी रात कलकत्ता गनगनाता रहा।

सबेरे तक कुछ भी न हुआ। डुग्गी पीट-पीट लोगों को बतलाया गया कि यह अफवाह है। कहीं कोई बात नहीं। सबको अपने-अपने काम पर लग जाना चाहिये।

पूरे चौबीस घंटे की सनसनी के बाद सभी लोग तितर-बितर हुए।

नगर का जीवन पूर्ववत् हुआ।

फिर भी शंकाए मौजूद रहीं। अवध के विद्रोह के कारण सबकी निगाहें कैदी वाजिदअलीशाह पर थीं।

*

"ऐसा हो नहीं सकता!"—मंत्रि-सभा के एक सदस्य ने कहा—"अफवाहों में कुछ न कुछ सत्यता अवश्य होती है। कल जो भगदड़ हुई है वह कलकत्ता के इतिहास में अविस्मरणीय रहेगी। क्या आप समझते हैं कि इसमें कुछ भी सत्य नहीं!"

"मैं आपकी बात का समर्थन करता हूँ।"—दूसरे सदस्य ने कहा—"नबाब के नौकर किले के सिपाहियों को भड़काते हैं और दूसरे कुछ दिन पहिले अवध का ताल्लुकेदार राजा मानसिंह नबाब से मिलकर गया है!"

"क्या करना चाहिए ?"

"नवाब को नजरबन्द न मानकर कैदी माना जाय। अभी नाममात्र को कैद है। उनको अच्छी तरह से जकड़ा जाय और उसके साथ जो चारों सलाहकार हैं, उन्हें भी !"

"उन्होंने क्या किया है ?"

"वही तो सब खुराफात कर रहे हैं।"

सर्वसम्मति से मंत्रि-सभा ने यह निर्णय मान लिया। परराष्ट्रसचिव एन्ड-मन्स्टन को यह निर्णय कार्य रूप में परिणत करने का भार सौंपा गया।

*

सूरज की अँगड़ाई टूटी। विशाल भवन के समक्ष घोड़ागाड़ी रुकी। घुड़-सवार और पैदल हथियार बन्द गोरे सैनिक रुके। सब अन्दर आये। एन्डमन्स्टन धड़धड़ाते हुए भवन के आंतरिक कक्ष में घुस गये। हथियार बन्द गोरे सैनिकों को देखकर तमाम नौकर चाकर सकपका गये। किसी को कुछ बोलने का साहस न हुआ।

आलीनकी खाँ और उनके तीनों साथी सोकर उठने के बाद प्रकृतिस्थ हुए भी न थे कि सिपाहियों घेर लिया। गोरे सिपाही।

"क्या है ?"

"बड़े लाट का हुक्म है ?"

"क्या ?"

"आप सब लोग मेरे साथ चलने का कष्ट करें।"—गोरा अफसर बोला।

नवाब के चारों सलाहकारों के सामने इसके सिवाय और कोई चारा न था। गोरे सिपाही घेरा डालकर चारों को ले गए। योजनानुसार उन्हें मोचीखोला के पास रुके जहाज पर भेज बन्दी बना लिया गया।

एन्डमन्स्टन नवाब के खास कमरे में आए।

"नवाब कहाँ है ?"

"नमाज़ पढ़ रहे हैं !"

एन्डमन्स्टन बैठ गए। नवाब के आने की प्रतीक्षा करने लगे। समय का

भी क्या फेर है ! नवाब वाजिदअली शाह जब अवध के शासक थे, तो एल्फ़िन्स्टन एक बार उनके दरबार गये थे। क्या शान शौकत और क्या रोआब था ! एल्फ़िन्स्टन ने बड़े अदब के साथ नवाब के सामने सिर झुकाया था और आज उसी नवाब को गिरफ्तार करने आया है।

एक साधारण से महल में चन्द नौकरों के साथ नवाब अपनी जिन्दगी साधारण ढंग से बिता रहा था।

नवाब के आने की सूचना मिली।

एल्फ़िन्स्टन उठकर खड़े हो गये। नवाब चले आ रहे थे। एल्फ़िन्स्टन ने उनकी ओर देखा। असमय की मार के कारण नवाब का चेहरा मुरझा गया था। दुःख डूबे मालूम पड़ रहे थे। उन्हें देखते ही एल्फ़िन्स्टन ने अदब से थोड़ा सा सिर झुकाया।

"कहिए ?"

"गवर्नर जनरल को समाचार मिला है कि सिपाही आपका नाम ले-लेकर हर जगह के सिपाहियों को उभार रहे हैं। इसलिए गवर्नर जनरल ने मुझे भेजा है कि आप मेरे साथ कलकत्ता पधारने का कष्ट करें।"

"इसमें मेरा कोई कुसूर नहीं।"

"मैं इस बाबत कुछ नहीं कह सकता। मुझे जो कुछ हुक्म मिला है, उसी मुताबिक मैं आपके पास आया हूँ।"

"जिस दिन मेरे साथ बीस लाख आदमी थे, उस दिन मैंने सरकार की मुखालफ़त नहीं की। आप जनरल आउट्राम से दरयाफ्त करें, मैंने कितने सीधे ढंग से सारी हुकूमत उनको सौंप दी। अब मैं यहाँ भी चैन से रहने नहीं पा रहा हूँ। मुझे यहाँ नजरबन्द रक्खा गया है। अब आप लोग कैद रखना चाहते हैं ?"

"......"

"हरकारा अखबार मेरे सामने भी आया था। यह बात जब मैंने उसमें पढ़ी तभी मैंने कुरान की कसम खाकर कहा कि उसमें मेरा कुसूर नहीं। यह सब झूठ है। मेरे साथी इस बात को जानते हैं।"

"मुझे बेहद अफसोस है नवाब साहब कि आपको इन सब बातों का जवाब देने केलिए मुझे नहीं भेजा गया।"

"......"

"आप चलने का नष्ट करें।"

अवध का सशक्त शासक, अंग्रेज जिसके कभी चरण चूमते थे, भींगी बिल्ली की तरह एक मामूली अंग्रेज की आज्ञा पर चुपचाप पीछे-पीछे चल पड़ा। तमाम नौकरों चाकरों की आँखें भर आयीं। उन्हें समझते देर न लगी कि नबाब साहब कैद कर लिए गए हैं और अब उन्हें कहीं और—जाने किस दशा में रखा जायगा!

एल्डमन्स्टन नबाब को अपने साथ घोड़ागाड़ी में बैठाकर ले गए। गवर्नर जनरल के बुलावे की बात तो एक षड्यन्त्र था, एक भुलावा था, पूर्व आदेश और योजनानुसार नबाब वाजिदअली शाह को फोर्ट विलियम के किले में ले जाकर कैद कर दिया गया। किले के एक भीतरी कमरे में उनके रहने की व्यवस्था कर दी गई। उन पर कड़ा पहरा लगा दिया गया।

※

नबाब वाजिदअली शाह की गिरफ्तारी का समाचार छुपा न रह सका। तमाम कलकत्ता और आसपास के क्षेत्र में यह समाचार फैल गया। इससे यूरोपियनों के मन घबड़ाए। अवश्य ही भारत के अन्य स्थानों में भयंकर बगवड़ी हो रही है, तभी इस तरह के सख्त कदम उठाए जा रहे हैं। इस गिरफ्तारी का समाचार हिन्दोस्तानी सिपाहियों से भी छुपा न रह सका। सब मन ही मन दुःखित हुए, पर प्रत्यक्ष रूप से कुछ कर न सके। असंतोष की लहर और व्यापक हो चारों तरफ फैल गई।

※

बागी शान्त न हो सके। सिपाहियों की संख्या बढ़ती ही गई। विवश होकर लारेंस को लौटना पड़ा। रेजीडेंसी आकर तत्काल अपने साथियों से परामर्श कर गोरी पलटनों की टुकड़ियों को इधर-उधर भेज विद्रोह दबाने का प्रयास किया। रात को जो सिपाही शान्ति-रक्षा के लिए तैनात थे, वे ही सब सबेरे बागी हो गए।

सिपाहियों की शोर-ध्वनि से लखनऊ शहर गूँज उठा। यत्र-तत्र छिटपुट मुठ-भेड़े होने लगीं। सिपाहियों की अत्यधिक संख्या के कारण अंग्रेजों को पीछे हटना

पड़ा। शहर के अधिकांश अंग्रेज रेजीडेंसी में भाग आए फिर भी बहुत से सिपाहियों के घेरे में पड़ गए।

सहसा सारा लखनऊ अशान्त हो गया। तमाम हिन्दोस्तानी सिपाहियों ने बगावत कर दी। नबाब वाजिदअली शाह की गिरफ्तारी के समाचार ने शहर की काया-पलट कर दी। तमाम सिपाही इकट्ठे हुए और अंग्रेजी अमलदारी को खत्म करने और अंग्रेजों को मार डालने का नारा बुलन्द हुआ।

❀

"बेगम हजरत महल!"

"जिन्दाबाद!"

"नवाब ब्रिजिस कादिर!"

"जिन्दाबाद।"

पुराने महल के सामने हजारों हथियार बन्द सिपाही हाजिर हुए। सिपाहियों के नारे सुन बेगम हजरत महल बाहर आयीं। उनके साथ दस ग्यारह साल का बेटा ब्रिजिस कादिर भी था। सिपाहियों को अंग्रेजी अमलदारी के खिलाफ हथियार बन्द देख बेगम की आँखों आँसू आ गये।

रुँधे गले बोलीं—"आज बहुत दिनों के बाद हमारी तकदीर का सोया सूरज निकल रहा है। अंग्रेजी अमलदारी ने हमारा सब कुछ छीन लिया। हमें तबाह कर दिया। हमारे महल की बहुत सी बेगमों और बाँदियों को रात के अँधेरे में मुँह छिपाकर भीख माँगना पड़ रही है और तो और तुम्हारा यह नवाब अच्छे कपड़ों के लिए तरस जाता है।"—बेगम हजरत महल की आँखें बरस उठीं।

जोश से भरे सिपाहियों ने हथियार ऊँचे कर कहा—"हम अंग्रेजी अमलदारी से इसका बदला लेंगे।"

"हम उनका एक-एक बूँद खून पियेंगे!"

"अब हमारा और कोई नहीं। यही तुम्हारा नवाब है। इसकी लाज तुम्हारे हाथों है।"

"नवाब ब्रिजिस कादिर जिन्दाबाद!"

गगनभेदी नारे गूँज गये।

"अपनी ओर से मैं मम्मू खाँ को तुम्हारा आला सरदार बनाती हूँ। नवाब की तरफ से यही और मैं—दोनों ही हुकूमत सँभालेंगे।"

सिपाहियों ने प्रसन्नता के साथ प्रस्ताव स्वीकार कर लिया।

नवाब बिर्जिस कादिर अवध के नवाब घोषित हो गये। सिपाहियों ने अंग्रेजी हुकूमत उठाने का कस्द कर लिया। बेगम हजरत महल ने अपने दुःख के आँसू सुख की आशा से पोंछे। मुहम्मदअली को बुलाकर कहा—"क्या अब तुम भी खामोश बैठोगे?"

'नहीं। मैं अब मौलवी नहीं रहा! क्या आपका यह गुलाम आज अपनी कामयाबी का सेहरा आपके कदमों पर चढ़ाता है। आज से मैं आपका वफादार गुलाम हुआ। हर उपाय मैं अंग्रेजों को मिटाऊँगा!"

"सिपाहियों के पैर पीछे न पड़ें, मुहमदअली!"

"कभी नहीं बेगम। कभी नहीं!"

❀

व्यापक विद्रोह के कारण सारी अंग्रेजी सेना छावनी और रेजीडेंसी के क्षेत्र में सिमट आयी। सर हेनरी लारेंस इस अनायास घटना चक्र से अपने को सँभाल न सके। रेजीडेंसी में रक्षा के लिए तैयारियाँ होने लगीं। तोपें तन गईं और गोरे सिपाही हमेशा तैयार रहने लगे। रक्षा के लिए दीवार उठने लगीं। दो बार विद्रोही सिपाहियों को तोपों के बल पीछे हटा दिया गया। फिर भी उनके आक्रमण की संभावना है।

ठाँय!

धड़ाम!!

विद्रोही सिपाही फिर आ गये। दोनों ओर से आक्रमण प्रारम्भ हो गया। विद्रोहियों के नारों और तोपों की गर्जना से आकाश काँप उठा।

"बेगम हजरत महल!"

"जिन्दाबाद!"

घिरे हुए अंग्रेजों का खात्मा करने के लिए बड़ी तेजी के साथ टिड्डी दल की तरह विद्रोही सिपाहियों का समूह झपटा। तोपों की मार और तेज हुई।

फरजंदअली के स्थान पर अब रामदीन तोपों के पास खड़ा था। फरजंदअली कल की लड़ाई में मारा गया था। उसकी मृत्यु से हेनरी लारेंस भी दुःखी हुए थे। गदर की मार-काट के बीच से वही कुछ अंग्रेज आफीसरों को बचाकर लाया था और बाद में उनके साथ उसने तोपों का संचालन भार सँभाल विद्रोहियों का आक्रमण रोकने में अंग्रेजों की सहायता की। उसके इस रूख से रुष्ट होकर सिपाहियों ने फरजंद अली का घर ही जला दिया था।

रामदीन तेजी के साथ गोलन्दाजों की मदद करने लगा।

ठाँय।

एक गोली का निशाना बैठ ही गया। रामदीन लुढ़क गया। तत्काल दूसरे अंग्रेज ने रामदीन का स्थान सँभाला।

दो घंटे जमकर लड़ाई हुई। अंग्रेजों की तोपों के कारण सिपाहियों को लौट जाना पड़ा।

❀

घिरे हुए अंग्रेज चुप बैठने के पक्ष में न थे। सर हेनरी लारेंस पर उनके तमाम साथियों ने जोर डाला कि इस तरह घिरे रहने की अपेक्षा बाहर निकलकर आगे बढ़ते हुए विद्रोहियों को दबाना अत्यन्त आवश्यक है। अगर ऐसा न किया गया तो बागियों की ताकत और हिम्मत बढ़ती जायगी और एक दिन यह नौबत आ सकती है कि इसी घेरे में तमाम अंग्रेजों को मर जाना पड़े।

हेनरी लारेंस को कानपुर का समाचार मिल चुका था। ह्वीलर का प्रार्थना पत्र उनके सामने था। उनका मन बहुत दुःखी था। कानपुर की सहायता कर सकने में वह अपने को असमर्थ पा रहे थे। उन्हें यह भी पता चल चुका था कि कानपुर के तमाम अंग्रेज घिर गये हैं और बागियों ने पूरी तरह उन्हें अपने कब्जे में कर रक्खा है, पर इस समय क्या हो सकता है!

"साहब...गजब होने जा रहा है!"

"......"

"चौनहाट की तरफ से बागियों का एक बहुत बड़ा दल इसी तरफ आ रहा है!"

विश्वस्त आदमी से यह सूचना पा हेनरी घबड़ाए। चीनहाट दूर नहीं। अगर ये बागी आ गये तो उन्हें रोक सकना बड़ा मुश्किल होगा। इस तरफ के बागियों से मिलकर वे सब गजब कर देंगे। तुरन्त इस पर परामर्श हुआ।

"देर क्या करना! हमें उनका मुकाबला करना चाहिए!"

"अवश्य!"

"हम लोगों को चल देना चाहिए!"

सर हेनरी लारेंस अपनी चुनी हुई टुकड़ी के साथ चीन हाट की ओर बढ़ने के लिए तैयार हो गये। शेष लोग यहाँ के बागियों का मुकाबला करने के लिए रह गये।

❀

समाचार मिलते ही अजीमुल्ला आश्चर्यचकित रह गया, पर उसे यह सुनकर सन्तोष हुआ कि एक मुसलमान ही उसे भगा ले गया है। अजीमुल्ला ने सोचा, फिर भी यह अच्छी बात नहीं। इसका प्रबन्ध करना आवश्यक है। ऐसी घटनाओं की पुनरावृत्ति रोकना जरूरी है अजीमुल्ला ने नन्हें नवाब से भेंट की।

"सुना है न तुमने?"

"हाँ आज सबेरे ही खबर मिली कि ह्वीलर की लौंडिया एक मुसलमान सिपाही के साथ भाग गई।"

"......"

"यह तो अच्छा ही हुआ। मैंने सुना है, वह अच्छा खासा पट्ठा जवान है। उसे मुसलमानिन बना रख लेगा!"—नन्हें खिलखिलाकर हँस पड़ा।

"ये तो ठीक है, पर यही सिलसिला रहा तो सब उड़ जायगीं!"

"इसकी मैंने ताईदकर दी है। हर चौथे रोज सिपाही बदलेंगे। इससे यह होगा कि किसी से किसी की दोस्ती हो ही न पायगी, पर एक खबर मैं तुम्हें दूं जो तुमने नहीं सुनी होगी!"

"......"

"अजीजन मर गई

"आँय!"

"हाँ, कल शाम उसका इन्तकाल हो गया। तुम्हारा नाम लेते-लेते मर गई। सुना है, तुम खबर पाकर भी उसके पास नहीं गए।"

अजीमुल्ला के चेहरे की मुस्कान उड़ गई। गम्भीर होकर बोला—"मेरे पर इतनी झंझटें हैं कि दम मारने की फुरसत नहीं। इधर एक अजीब हालत पैदा हो गई है। मैं एक इन्सान का मरना देखूँ कि पूरे सूबे का!"

"सो कैसे?"

इस सूबे पर तो हमारा कब्जा हो गया। हमारे सिपाही इलाहाबाद से आने वाले अंग्रेजों का मुकाबला करने को तैयार हैं, पर आसपास के सूबों के सिपाही, जहाँ से अंग्रेजी अमलदारी उठ गई है, हमारे साथ नहीं आ रहे हैं। यदि हम सब एक हो जाँय, तो अंग्रेजों को यहाँ से विलायत तक खदेड़ सकते हैं!"

"क्यों वे क्या कहते हैं?"

"कहेंगे क्या! उनका कोई नेता नहीं। उनमें कोई ऐका नहीं। सब मनमाने सरदार, आला सरदार बन बैठे हैं। बहुतों ने महज लूटमार को ही अपना मकसद बना लिया है। बराबर खबर पर खबर और चिट्ठियों पर चिट्ठियाँ भेज रहा हूँ—कोई सुनता ही नहीं। अपनी ताकत पर हम कब तक भरोसा कर सकते हैं!"

"......"

"आज दो साल से हम लोगों ने जो स्कीम बनाई और जिसके लिए अपनी जान खपा रहे हैं वह सब फेल होती नजर आ रही है। कलकत्ते में बैठा गवर्नर जनरल शतरंज के मोहरे इस तरह से चल रहा है कि सिवाय मात के हम लोगों के हाथ कुछ नहीं आ रहा है। अंग्रेज अपने आफीसरों के हुक्म पर जान देते हैं। इसे कहते हैं। डिसीप्लेन! काश, यह डिसीप्लेन हम हिन्दोस्तानियों में हो तो अंग्रेज हमेशा के लिए यहाँ से उठ जाँय!"

नवाब नन्हें चुप रह गया। उसके मस्तक पर चिन्ता की रेखाएँ उभर आयीं। अजीमुल्ला चुपचाप उठ गया। अजीजन की मौत की बात सुन उसका मन बड़ा भारी हो रहा था।

❀

"क्या हाल-चाल है, हुसैनी?"

"सब दुआ है आपकी !"

अजीमुल्ला ने देखा—छोटे से कमरे में पड़ीं अंग्रेज औरतों की बुरी दशा थी। बहुत सी बीमार थीं। उनके कपड़े लत्ते एकदम फट चले थे। ओढ़ने-बिछाने का भी ठिकाना न था। कुछ औरतें जो फटक बीन रही थीं। अंग्रेज स्त्रियों की ऐसी दशा देख अजीमुल्ला हँस पड़ा।

"तुम अपने काम में बहुत मुस्तैद हो हुसैनी !"

"सब आपकी दुआ है, सरकार"

एक मेम उठकर अजीमुल्ला के पास आयी। वह जानती थी कि अजीमुल्ला यही है और आजकल नाना साहब का अपना आदमी है।

उसने कहा—"हम लोगों को कपड़े लत्ते की कौन कहे, खाना भी टीक से नहीं मिलता। सड़ी तरकारी, दाल रोटी में कंकड़ !"

"हए-हए तो हलुवा पूड़ी खाओगी !"—हुसैनी ने दोनों हाथ मटकाकर कहा।

"खाना तो अच्छा मिलना चाहिए।"

"तुम अपने राज में कैदियों को कैसा खाना देती थीं ! अब वही खाओ। तुम्हारी हुकूमत के दिन अब गये मेम साहब !"

उस मेम ने हुसैनी की बात पर कोई ध्यान न देकर अजीमुल्ला से कहा—"आप थोड़ा इस पर ख्याल कीजिए। आप तो साहब के दोस्त रह चुके हैं।"—पति की याद से उस मेम को आँखें भर आयी।

अजीमुल्ला हँसता हुआ बोला—"मैं कुछ नहीं जानता। तुम लोगों की मालकिन यह हुसैनी ही है !"—अजीमुल्ला ने हुसैनी की ओर इशारा किया।

हुसैनी गर्व से भर मुस्कुरा उठी। मेम अपने मन की क्षुब्धता छिपा, चुपचाप अपने काम में लग गई। अजीमुल्ला बंदी मेमों को देखता रहा। फर्नेण्डा सी सुन्दरी अब और वहाँ न थी। मेमों की दुर्दशा देख अजीमुल्ला का अन्तर पशु मगन हो रहा था। हुसैनी पास ही खड़ी थी। फुसफुसाकर बोला—"हुसैनी अभी तुमने अपना जौहर नहीं दिखलाया है !"

"सरकार का जो हुक्म हो।"

"थोड़ा और। इन कुतियों को इस तरह तड़पा-तड़पाकर मारो ताकि अंग्रेज भी सदा रक्खें कि कोई मिला था, जिसने उनकी ईंट का जवाब पत्थर से

दिया था। गोरे सिपाहियों ने इसी कानपुर में क्या नहीं किया ! उन दिनों ताकत न रहने से मैं खामोश था, हुसैनी ! इन लोगों ने अवध की बेगमों को बेइज्जत किया। खुदा कसम, उन लोगों को शाही-महल से घसीटकर नंगा किया। खुदा कसम ! जी में आता है, इन सबकी बोटी-बोटी पकाकर कुत्तों को खिला दूँ। अंग्रेज जैसी नीच कौम इस दुनिया में दूसरी नहीं। ये लाल बंदर..."

हुसैनी को अपने पति का स्मरण आ गया। क्रोध से वह थरथरा उठी। अजीमुल्ला दाँत पर दाँत रख चला गया। उसके जाते ही हुसैनी ने अपना हन्टर उठाया। देखा, एक मेम सूप लिये हाथ पर हाथ धरे बैठी है। पास बैठा उसका बच्चा खाना माँग रहा है और वह आँखों में आँसू भरे एकटक अपने बच्चे की ओर देख रही है।

बस ! क्या था।

हुसैनी टूट पड़ी।

"हरामजादी, काम नहीं करती !"

सड़ाक् ! सड़ाक् ! सड़ाक् !!

मेम की पीठ की चमड़ी उधड़ गई। हुसैनी के हन्टरों की मार से वह मछली की तरह छटपटायी, जाल में फंसी मछली की तरह। बेहोश हो गई।

"और तू कुत्ते खाना माँगता है ! ले खाना !"

सड़ाक् ! साड़क् !!

दो ही हन्टर में बच्चे ने खून फेंक दिया।

हुसैनी अट्टहास करती हुई अपना हन्टर लपेटकर बाहर हो गई। तमाम अंग्रेज औरतों को काठ मार गया। साक्षात मृत्यु का शासन अपने ऊपर देख घबड़ा उठीं। हे भगवान ! शीघ्र मौत दो ! इस नरक से मुक्ति दो ! मुक्ति दो !

*

ताजमहल के पास ही फौजी छावनी थी। अंग्रेजों के बँगले थे। ईसाईयों का गिरजाघर था। शहर और छावनी के बीच किला था। किले के पास ही पुल था। इस पुल से उतरकर ही अलीगढ़ और कानपुर का रास्ता था। कालविन लेफ्टिनेंट गवर्नर थे।

मेरठ का समाचार मिला। एक साधारण घटना समझ उस पर ध्यान नहीं दिया, पर जैसे ही दिल्ली-पतन का समाचार आया, कालविन के कान खड़े हुये। अंग्रेजों में भी बेचैनी फैल गई। सिपाहियों का रँग-ढँग ही बदला नजर आने लगा।

कारतूस की अफवाहें यहाँ भी थीं। अफवाहों का इतना असर न पड़ा, जितना कि इन घटनाओं का। दिल्ली पर सिपाहियों का अधिकार अंग्रेजी सत्ता को एक बड़ी चुनौती थी। इसी कारण कालविन चिन्तित हुए।

सभी अंग्रेज अफसरों, धर्म प्रचारकों और प्रमुख ईसाईयों को बुलाया गया।

सबके आ जाने पर कालविन साहब आए। अपने स्थान बैठे। उनका चेहरा एकदम गम्भीर हो रहा था।

"आप लोगों को यह बताने की जरूरत नहीं कि इस समय देश में क्या हो रहा है? सभी लोग परिचित हैं। इन घटनाओं के कारण हमें चिन्ता होना स्वाभाविक है। इसीलिए मैंने आप सब लोगों को बुलाया है कि सब मिलकर इस स्थिति पर विचार करें और हमें अपने क्षेत्र में क्या करना है? इस पर सुझाव दें!"

"आपने ठीक कहा। दूसरे स्थानों पर जो घटनाएँ हो रही हैं, उनको देखते हुए हमारे लिए यह जरूरी हो जाता है कि हम अपनी सुरक्षा की व्यवस्था पहिले करें!"

"हाँ!"—एक ने दबी जुबान से कहा—"सुना है। इस समय बागी सिपाही सबसे पहिले अंग्रेजों की ही हत्या करते हैं। ऐसा भी पता चला है कि स्त्री और बच्चे भी मारे जाते हैं!"

"खजाना लूट लेते हैं!"

"हमारा ख्याल है कि तमाम अंग्रेजों, ईसाईयों और उनके परिवारों को किले में रखा जाय। किले में आवश्यक व्यवस्था कर मोर्चाबन्दी बनी रहे ताकि यहाँ गड़बड़ होने पर हम सब मुकाबला कर सकें!"

"नहीं! यह बड़ा गलत कदम होगा।"

"सो कैसे?"

"इससे तो यहाँ के सिपाहियों का हौसला बढ़ जायगा। वे समझेंगे कि यहाँ के

अंग्रेज डर गये। किले में ही रहकर हम खजाने और जेलखाने की रक्षा कैसे कर सकते हैं। इन दोनों पर अगर सिपाहियों का कब्जा हो गया तो इससे उनकी ताकत और बढ़ जायगी!"

बात पते की थी। कालविन को भी इस तर्क के आगे झुकना पड़ा।

"ऐसा होना चाहिए कि हम सब अपनी-अपनी सुरक्षा की व्यवस्था करें। खजाने और जेलखाने का प्रबंध और भी कड़ा कर दिया जाय। हम सब सैनिक रूप में तैयार रहें। साथ ही सिपाहियों और जनता को भी समझा दिया जाय!"

"हाँ, यही ठीक होगा!"

यह राय मान ली गई।

✻

परेड के मैदान में तमाम अंग्रेज, अंग्रेजी-पलटन और आगरा की तमाम हिन्दोस्तानी पलटन बुलायी गई। कालविन साहब अपनी टमटम पर आए। अंग्रेजी सेना एकदम बंदूकें तैयार किये खड़ी थी। कालविन साहब ने बन्दूकों की सलामी ग्रहण की।

"आप लोगों से मेरा अनुरोध है कि आप लोग हिन्दोस्तानी सिपाहियों का भरोसा करें। उन पर किसी प्रकार का अविश्वास न करें। आज की उड़ती हुई अफवाहों को यदि सत्य भी माना जाय, तो भी हम सबको यहाँ मिल-जुलकर रहना चाहिए।"

अंग्रेजी सेना को उपदेश देने के बाद कालविन साहब हिन्दोस्तानी सिपाहियों की ओर मुड़े।

"आप लोगों की सारी बातें मुझे मालूम हैं। यदि आप लोग नए कारतूसों के कारण अपना धर्म नष्ट समझते हों, तो हम आपको नहीं देंगे। इस बात की मैं सख्त ताईद करता हूँ कि यहाँ पर किसी तरह की गड़बड़ी कदापि न हो! यदि कोई सिपाही नौकरी छोड़ना चाहता है तो वह शौक से जा सकता है। यदि आपको कुछ शिकायत है, तो ऊधम करने से पहिले मुझसे मिलिए। अंग्रेजी अमलदारी के खिलाफ अनायास कदम उठायेगा उसे मैं कठोर दंड दूँगा और यह दंड प्राण-दंड भी हो सकता है।"

कालविन साहब दोनों पलटनों को उपदेश देकर चले गए। उन्हें आशा थी कि इसका अच्छा असर सिपाहियों पर पड़ेगा। इस उपदेश के तत्काल बाद ही उन्होंने आवश्यक सुरक्षा का प्रबंध किया। दिल्ली और आगरा की राह के लिए एक अंग्रेज अफसर के नेतृत्व में एक टुकड़ी की व्यवस्था की। इस रास्ते पर पूरा पहरा बैठा दिया गया।

कालविन ने मित्र-राज्यों की ओर ध्यान दिया। भरतपुर और ग्वालियर राज्य को अपनी सहायता के लिए लिखा। कुछ दिनों में कप्तान निक्सन के नेतृत्व में भरतपुर की एक सेना आ गई। ग्वालियर से रिसाला और गोलंदाज सेना आ गई।

सिंधिया महाराज ने अपने शरीर रक्षकों को कालविन साहब के पास उनकी रक्षा के लिए भेज दिया।

कालविन साहब इन सारी व्यवस्थाओं से पूर्ण संतुष्ट हो गए। अपने क्षेत्र में उन्हें अशान्ति की आशंका न रही।

"हरदेव मिसिर हैं?"

"हाँ! कौन?"

"जगपाल!"

"आओ।"

जगपाल अंदर गया। हरदेव ने बैठने के लिए मूढ़ा दिया। चिलम भरी। दो दम लगा जगपाल को दी। फिर छरारा धुँआ छोड़ते हुए पूछा—"अब सुनाओ? क्या तय हुआ?"

"सिपाहियों से मैंने बात चीत की!"—जगपाल बोला—"बताया कि इस वक्त अलीगढ़ खजाने में सात लाख रुपया नगद है। सिपाही साथ दें तो दो हजार गाँव वाले भी तैयार हैं। खजाना लूटकर बँटवारा कर लिया जाय। चारों तरफ अंग्रेजों की दाल पतली हो रही है। क्यों न इस मौके का फायदा उठाया जाय!"

"अवश्य! सिपाही क्या कहें?"

"सब तैयार ही समझो, पर एक बड़ी मजबूत बात हो गई है, इसलिए मैं सिपाहियों से कुछ तय न कर सीधे दौड़े आया हूँ!"

"सो क्या ?"

"एक देशी अफसर इस काम में हम लोगों की मदद वास्ते एकदम तैयार है। उसने तुमको बुलाया है। चलकर सब बात तय कर लो। इससे तय हो गया तो फिर सिपाहियों से बात बतंगड़ करने की हमें क्या जरूरत ? अफसर के हाथ तले तो सिपाही हैं ही।"

"वाह ! कब बुलाया है ?"

"आज शाम को। छावनी के बाहर !"

"मैं तैयार हूँ।"

हरदेव मिश्र मगन होते हुए कपड़े बदलने लगे। उसका एक भाई खजाने का पहरेदार था। इसलिए खजाने की रकम का पक्का पता हरदेव के अलावा और किसी बाहरी आदमी को न था। भाई ने ही यह सुझाव दिया था कि खजाना लूटने को सिपाहियों को तैयार किया जाय ! हरदेव की बहुत सी जमीन पर एक साहब ने जबर्दस्ती दखल कर लिया था। इसलिए हरदेव का पूरा खानदान अंग्रेज को हिकारत की दृष्टि से देखता था।

"साहब !"

"......"

अंग्रेज सेनानायक ने देखा, एक देशी अफसर। सलाम का जवाब दे पूछा—"कहिए, क्या बात है ?"

"एक बात का मुझे पता लगा है साहब ! हरदेव मिसिर नामक आदमी सिपाहियों को खजाना लूटने के लिए भड़का रहा है !"

"कौन है वह आदमी ?"

"यहीं पास के देहात में रहता है। इसका एक भाई खजाने का पहरेदार भी है !"

"हूँ। अभी उसे गिरफ्तार होने दो !"

"पर साहब, आज शाम को वह यहाँ आ रहा है। यही झाँसा देकर मैंने उसे बुलाया है कि इस काम में मैं भी उसका साथ दूँगा !"

"शाबास ! हमारे आदमी उस वक्त तैयार रहेंगे !"

अफसर सलामकर लौट आया ।

❀

छावनी के बाहर सड़क की मोड़ पर बने एक कच्चे खपरैल के घर में हरदेव मिश्र और वह देशी अफसर बातें कर रहे थे ।

"पूरा सात लाख है !"

"......"

"बीस सौ आदमी गाँव के इस काम में मदद कर सकते हैं । मैं उन्हें तैयार कर रहा हूँ । अब देखना अंग्रेजी अमलदारी मारी मारी फिरेगी ।"

हरदेव हँस पड़ा, पर उसकी यह हँसी दूसरे ही क्षण उड़ गई । धड़ा-धड़ सिपाहियों ने उसे घेर लिया । सिपाहियों के साथ एक गोरा अफसर भी था ।

"कस लो !"

हरदेव की मुश्कें कस दी गईं । उसे सेनानायक के सामने तुरन्त पेश किया गया । एक थप्पड़ मारते हुए सेनानायक ने उसे फाँसी पर चढ़ा देने का हुक्म दिया ।

परेड के मैदान—एक कोने में तिकठी खड़ी कर दी गई ।

ढिंढोरा पीट दिया गया—"राजद्रोह के अभियोग में कल हरदेव मिसिर को फाँसी दी जायगी । कल सबेरे । जो ऐसा करेंगे उन्हें हुशियार हो जाना चाहिए । हुक्म अंग्रेजी अमलदारी का !"

शहर और छावनी में सनसनी फैल गई ।

एक ब्राह्मण को फाँसी ?

❀

सूर्योदय के साथ ही हरदेव ब्राह्मण की लाश तिकठी पर झूलती दिखलायी पड़ी । उत्तेजना फैल गई ।

"धर्म रक्षा के लिए ब्राह्मण ने प्राण दे दिए !"

"अरे कायरो ! धिक्कार है !"

"अंग्रेजी अमलदारी में एक ब्राह्मण फाँसी पर लटका दिया गया। घोर अधर्म !"

सूरज के चमकीले होते ही सारा नगर विद्रोह से भर गया। नागरिकों और सिपाहियों ने बगावत कर दी। तमाम सिपाही अपने अफसरों की उपेक्षा कर टूट पड़े। देखते-देखते खजाना लूट गया। जेलखाना टूट गया। अंग्रेज इस भयंकर लूटमार की खबर पाते ही गिरते-पड़ते प्राण बचाकर भागने लगे।

बँगलों में आग लगा दी गई। गिरजाघर फूँक दिया गया। अंग्रेजों से संबंधित हर वस्तु नष्ट-भ्रष्ट कर दी गई। अलीगढ़ बागी हो गया।

ह्यूम[1] मेरठ से तार पाते ही सतर्क हो गए। उन्हें विश्वास हो गया, मेरठ के बागी सिपाही इटावे के रास्ते से अवश्य गुजरेंगे। अतएव कुछ सिपाहियों को टोह में लगा दिया। बुलन्दशहर और मैनपुरी से भी ऐसी ही खबरें आईं कि वहाँ सिपाही बागी हो गये हैं! बुलन्दशहर का खजाना लूटमार कर सिपाही भाग गये हैं। ह्यूम तनिक भी न घबरा अपनी आवश्यक व्यवस्थाओं में लग गये।

सहसा सूचना मिली उनके सिपाहियों ने मेरठ के कुछ बागी घुड़सवारों को गिरफ्तार कर लिया है और वे सब छावनी आ रहे हैं! ह्यूम तुरन्त छावनी गये। कुछ ही देर में सवारों को घेरे हुए सिपाही छावनी में आ गये। सवार पिस्तौलें और तलवारें लिये थे।

जैसे ही ये सवार छावनी में आए, एक सवार ने अपने सामने खड़े अंग्रेज को गोली मार दी।

अंग्रेज गिर गया।

इसके गिरते ही दूसरे सवार भी लड़ने को तैयार हो गये। सिपाहियों और सवारों में लड़ाई हो गई। थोड़ी ही देर में फैसला हो गया। सब सवार घायल हुए, गिरफ्तार हुए और उन सबको कैदखाने में डाल दिया गया।

दूसरे ही दिन अलीगढ़ के विद्रोह का समाचार पाते ही तमाम सिपाहियों और यूरोपियनों में बेचैनी फैल गई। अंग्रेज स्त्री बच्चे घबड़ाने लगे।

---

१ इन्हीं मिस्टर ह्यूम A. O. (Hume) ने कॉंग्रेस की स्थापना की थी।

ह्यूम ने स्थिति की गम्भीरता समझ अंग्रेज स्त्रियों और बच्चों को बरपुरा भेजने का भार सिपाहियों को दिया।

कुछ दूर तक तो सिपाही साथ गये, पर आगे जाकर अधिकांश सिपाही लौट आए। थोड़े से सिपाही और दो चार अफसर ही इन अंग्रेज स्त्री-बच्चों को अपने संरक्षण में बरपुरा ले गये।

लौटकर आए हुए सिपाही मेरठ में तोड़-फोड़ करने लगे। गुण्डे, बदमाश, लुटेरे इसके लिए तो एकदम तैयार बैठे थे। तुरन्त उनकी भी कार्रवाईयाँ शुरू हो गईं। सारा शहर अशान्त हो गया। खजाना तो पहिले ही आगरा से चला गया था। अतएव जेलखाना टूट गया।

अंग्रेज भाग गये। ह्यूम साहब भी हिन्दोस्तानी लिबास पहिन भाग गये।

❀

चाँदनी रात थी। हिन्दोस्तानी कपड़े पहिने, सिर पर साफा बाँधे, चादर डाले और देशी जूते पहिने ह्यूम अपने चपरासी गयादीन और एक नगरवासी के साथ बरपुरा की ओर चले जा रहे थे। ह्यूम दोनों आदमियों के बीच में थे। जोर-जोर से बातें करते जा रहे थे ताकि कोई शक न कर सके।

रातोंरात ह्यूम बरपुरा आये। वह आगे की योजना में व्यस्त ही थे कि उन्हें ग्वालियर से आने वाली सेना का समाचार मिला। ग्वालियर नरेश की ओर से यह सेना अंग्रेजों की मदद के लिए आगरा के सेनापति कालविन के अनुरोध पर चली आ रही थी। इस समाचार को पाकर सबमें नया जीवन आया। ह्यूम अपने साथियों के साथ सबेरे ही बरपुरा से इटावा चले आए। ग्वालियर की सेना इटावा आ गई थी।

इस सेना की सहायता से तीन ही दिन में ह्यूम ने इटावा पर अंग्रेजी राज कायम कर दिया। तमाम बागियों को मार भगाया। बहुत से मारे गये। छोटे-छोटे जमींदार, जिन्होंने जमीनों पर कब्जा कर लिया था, तुरन्त हटा दिए गये और उन्हें इसके लिए दंड दिया गया। ह्यूम ने इटावा में शान्ति स्थापित कर ली। अंग्रेज स्त्री बच्चे बरपुरा से वापस आ गये। सब कारबार पूर्ववत् होने लगा, पर विद्रोह की खबरों से सबके मन अशान्ति थी।

❀

कप्तान निक्सन भरतपुर की पलटन के साथ मथुरा आये। कप्तान के आगमन से शहर के अंग्रेजों की जान लौटी। हुडुल पर सेना ने डेरा डाला और कप्तान निक्सन ने शहर की आवश्यक व्यवस्था की। शहर के अधिकांश अंग्रेज स्त्री-बच्चे पहिले ही आगरा भेज दिये थे।

मथुरा के खजाने में छह लाख रुपया था। यह खजाना आगरा भेजने का विचार हुआ। कप्तान निक्सन के आगमन से सिपाहियों में असन्तोष था। अफवाह थी कि शीघ्र ही सबके हथियार वगैरह छीन लिये जायँगे और बहुतों को सजा दी जायगी, जैसा कि कई स्थानों पर हो चुका है।

खजाना हटाया जाने लगा तो सिपाही समझ गये। खजाना सुरक्षित कर सबको बाद में दंड दिया जायगा।

गाड़ियों में रुपया भरा गया। लेफ्टिनेंट बोल्ट के नेतृत्व में ये गाड़ियाँ आगरा जाने के लिए तैयार थीं। सिपाहियों की एक टुकड़ी तैयार खड़ी थी।

एक हिन्दोस्तानी अफसर ने आगे बढ़कर पूछा—"खजाना कहाँ जायगा?"

"आगरा!"

"नहीं दिल्ली!"

"तुम नमक हराम हो!"

ठाँय!

लेफ्टिनेंट बोल्ट ढेर हो गये। सिपाहियों ने खजाना लूट लिया। इसके साथ ही सिपाही शहर भर में फैल गये। नगर-निवासी अंग्रेजों से क्षुब्ध थे। दिल्ली-पतन का समाचार शहर भर में फैला ही था। देखते-देखते जेलखाना टूट गया और सरकारी इमारतों में आग लगा दी गई।

अंग्रेज, ईसाई हाहाकार करते हुए भागने लगे।

मारकाट का बाजार गर्म हो गया। सर्वत्र अराजकता फैल गई।

*

"कुरान की कसम मुसलमान को! रामायण की कसम हिन्दू को, जो इन अंग्रेजों का साथ दे!"

"......"

मथुरा के तमाम सिपाही जो तुम्हारे भाई है, खजाना लूटकर बादशाह दिल्ली की खिदमत मे जा रहे हैं। क्या तुम उनका रास्ता रोकोगे ?"

"नहीं ! नहीं !!"

"ख्याल रखना। अंग्रेजी अमलदारी उठकर रहेगी, जो साथ दे वो गद्दार !"

कप्तान निक्सन तुरन्त तैयार हुए। रास्ते मे तोपें लगा दीं। मथुरा के बागी सिपाही खजाना लूटकर दिल्ली जा रहे हैं। यहीं रोक लिया जायगा।

अपनी टुकड़ी के साथ कप्तान निक्सन बागियों के आने की प्रतीक्षा करने लगे।

शोर सुनाई पड़ा।

"होशियार !"

कप्तान निक्सन के इस आदेश के साथ एक हिन्दोस्तानी अफसर ने अपने सैनिकों को एक गुप्त संकेत किया।

शोर पास आया।

"तैयार ! जैसे ही बागी दीखें, गोली मारो। तोपों की बत्तियाँ जलाओ !"

निक्सन चौंक पड़े ! यह क्या ? किसी भी सैनिक ने बन्दूक नहीं उठायी। न गोलन्दाजों ने बत्तियाँ बालीं।

"यह क्या है ?"—निक्सन चीख पड़े।

"......"

"बन्दूकें तैयार करो। बत्तियाँ बालो !"

"......"

अंग्रेज आफीसर और कप्तान घबरा गये। एक भी सैनिक ने उनके आदेश का पालन न किया। दूसरे ही क्षण सब अंग्रेजों को घबराकर भाग जाना पड़ा, क्यों कि सिपाहियों के संकेत पर गोलन्दाजों ने तोपों का मुँह उनकी ओर कर दिया था।

भरतपुर की विद्रोही सेना शोर करती हुई शहर में आयी।

*

कालचिन अर्ध रात्रि में ही हड़बड़ाकर जाग गए। भरतपुर की खबरों ने उनका मन एकदम अशान्त कर दिया था। तुरन्त ही सारी व्यवस्था की।

भोर होते ही परेड के मैदान गोरी सेना तैयार हुई। गोलन्दाज तैयार हुए। हिन्दोस्तानी सिपाहियों को बुलाया गया।

कालविन साहब ने हुक्म दिया।

"तमाम हिन्दोस्तानी सिपाही अपने हथियार और वर्दियाँ रखकर अपने-अपने घर चले जाँय। जब तक बागियों को दबा नहीं दिया जाता, तब तक अंग्रेजी सेना की हुकूमत कायम रहेगी!"

सिपाहियों ने चुपचाप हथियार रख दिये। वर्दियाँ उतार दीं।

*

"यहाँ के तमाम मुसलमान आपस में षड्यंत्र कर रहे हैं। धनी मुसलमानों को इकट्ठा किया जा रहा है। एक स्थान से दूसरे स्थान को पत्र भेजे जा रहे हैं। दिल्ली में मुसलमान बादशाह की हुकूमत कायम होने से यहाँ के मुसलमानों का जोश बहुत बढ़ता जा रहा है!"

"राट्रे अभी आए?"

"जी नहीं, पर कल सुबह तक वह अपनी टुकड़ी के साथ आ जाँयगे!"

"वे कौन-कौन से मुसलमान हैं, जो ऐसी गन्दी हरकतें करते हैं!"

"वारिसअली!"

"और?"

"अलीकरीम!"

"दोनों को पकड़ लाओ।"

कमिश्नर टेलर के हुक्म से दोनों को गिरफ्तार करने के लिए एक अंग्रेज अफसर चल पड़ा। थोड़ी ही देर में वारिसअली का घर घेर लिया गया। वह पकड़ा गया। तलाशी लेने पर उसके यहाँ अनेक आपत्तिजनक पत्र निकले। उन पत्रों में विद्रोह की चर्चा, विद्रोह की प्रेरणा ही थी।

वारिसअली कैद करके टेलर के सामने लाया गया।

"यही है साहब!"

"इसे फाँसी पर लटका दो!"

"अलीकरीम का क्या हुआ?"

"वह तो भाग निकला है, शायद !"

"अच्छा ! उसकी गिरफ्तारी पर इनाम घोषित करो ! तुरन्त पकड़ने की कोशिश करो !"

टेलर के इस आदेश का तुरन्त कार्यान्वित किया गया। वारिसअली को फाँसी पर लटका दिया गया। अलीकरीम को जिन्दा या मुर्दा लाने पर दस हजार रुपये का इनाम घोषित किया गया।

※

हडसन चिंतामग्न अपने डेरे लौटा। आज रजब अली से बड़ी देर बात हुई। बहुत सी बातें हुईं। बख्तखाँ जैसा कदम उठा रहा है, उससे अंग्रेजों की नींव एकदम उखड़ जाने की पूरी आशंका है। दिल्ली की अगर सारी व्यवस्था संगठित हो जाती है, बादशाह के नाम पर जो अराजकता फैली हुई है, छोटी-छोटी टुकड़ियाँ जो इधर उधर पड़ी है, अगर सब एक हो हरे झंडे के नीचे आ जाती हैं, तो बड़ा मुश्किल है ! रजब अली अपने साथियों के साथ भरसक उनके निर्देश पर काम कर रहा है, पर इस बख्तखाँ ने तो एकदम नाकों चने भरने का जैसे बीड़ा ही उठा लिया है।

लगातार आक्रमण ! जब तब कोई न कोई टुकड़ी दौड़ पड़ती है। ऐसे कब तक इस पहाड़ी पर घिरे हुए आक्रमण झेलते रहेंगे ! पर्याप्त सहायता नहीं आ रही है। केवल अपने मान की रक्षा के लिए तमाम अंग्रेज हथेली पर जान लेकर पड़े हैं। अगर यहाँ से हटते हैं, तो सिपाहियों का हौसला बहुत बढ़ जायगा। चारों ओर खबर फैल जायगी। दिल्ली पूरे मुल्क की किल्ली है। अंग्रेजों के वहाँ से पीछे हटने का अर्थ है, सारे मुल्क से अंग्रेजों का हटना !

दो-दो सेनापति मारे जा चुके हैं !

सेनापति रीड बीमार पड़े हैं। उनकी दशा में शीघ्र सुधार होने की आशा नहीं। अभी तक तो गर्मी परीशान करती थी, पर अब इस बरसात ने तंग करना शुरू कर दिया है। कठिनाईयों का पहाड़ इस पहाड़ी पर टूट पड़ा है। विलसन चल पड़े हैं, पर अभी तक आए नहीं।

सिपाही आते हैं। छिट-फुट हमले कर परीशानकर भाग जाते हैं। इन हरकतों

से अंग्रेजों की बेहद हानि हो रही है। दिल्ली शहर में सिपाहियों की हुकूमत है। आस-पास उतना जोर नहीं, जितना दिल्ली में है। अगर शहर पर कब्जा कर लिया जाय तो सारा मामला ही ठंडा पड़ जाय, पर यही तो टेढ़ीखीर है।

एकदम से सामना करने में खतरा भी है। अगर कहीं सिपाहियों की ताकत के आगे इन मुट्ठी भर अंग्रेजों को समाप्त हो जाना पड़ा, तो फिर क्या होगा? जब तक कोई दूसरा तैयार न रहे, सीधे सामना करना भी हानिप्रद है। अंग्रेज दिल्ली के पास पड़े हैं। कम से कम इस कारण तो कुछ न कुछ आतंक बना रहेगा।

"कब आए भाई?"

"अभी आ रहा हूँ!"

"कोई खास बात?"—स्मिथ ने पूछा।

"न!"

"सेनापति रीड इस्तीफा देने का विचार कर रहे हैं?"—स्मिथ का स्वर गंभीर था।

"क्यों?"

"क्या कहा जाय! उनका स्वास्थ्य सचमुच दिन पर दिन गिरता जा रहा है। कार्य भार सँभाल नहीं सकते, इसलिए उनका इस्तीफा देना ठीक ही है!"

हडसन चुप रह गया।

"विलसन साहब के आने पर ही या अभी?"

"वे तो अभी सोच रहे हैं। कल उनकी हाल चिन्ताजनक थी। एक तो यहाँ इलाज का कुछ प्रबन्ध भी नहीं है। कहीं बर्नार्ड की तरह वह भी खाट पर दम न तोड़ दें। फिर भी एक दो दिन वे अभी ठहर सकते हैं!"

"सम्भव है, तब तक विलसन आ जाँय!"

"हुँ!"

हडसन चुप हो, गया। भविष्य के अंधकार की आशंका से उसका मन काँप रहा था।

❀

कमिश्नर टेलर की दुश्चिन्ताओं का ठिकाना न था!

बिहार के अनेक जिलों में नील की खेती होती है। इस खेती की देख-रेख अंग्रेजों के हाथ है। नील की कोठियाँ हैं। वहाँ भी अंग्रेज हैं! सरकार की ओर से अफीम की खेती होती है। पटना में अफीम का सरकारी गोदाम है। यहाँ भी अंग्रेज हैं। चारों तरफ से अशान्ति की सूचनाएँ आ रही हैं। वारिस अली की फाँसी से मुसलमान कुछ दहशत खाये हैं। यहाँ तो मुसलमानों की संख्या अधिक है। बादशाह के नाम पर यहाँ के मुसलमान ही पहिले उठेंगे।

तिरहुत के भी अंग्रेजों ने सहायता की माँग की है।

बक्सर और शाहाबाद के लोगों ने विद्रोह किया तो वे सब दानापुर की ओर ही बढ़ेंगे। दानापुर के सिपाही उठे तो सीधे पटना का खजाना और अफीम की कोठियाँ लुट जाँयगी और कहीं ये लोग तिरहुत की ओर बढ़ गये, तो पूरा बंगाल हिल उठेगा।

मुर्शिदाबाद का नवाब नाजिम फिर सिंहासन पर बैठ सकता है।

दानापुर के सिपाहियों के हथियार लेने की बात लिखी, पर गवर्नर जनरल अनुमति नहीं दे रहे हैं। उनका कहना है कि इससे सिपाही क्षुब्ध हो बगावत कर देंगे, सिपाहियों का विश्वास करना जरूरी है।

सिपाहियों का कहाँ तक विश्वास किया जाय?

❀

"कुछ मालूम है?"

"क्या हुआ? क्या और खजाना यहाँ से जायगा?"

"नहीं, खजाना तो आ रहा है। छपरा और आगरा से बीस लाख रुपये यहाँ आ चुके हैं? बात एक और है। बनारस के तमाम सिपाहियों के हथियार ले लिए गये!"

"......"

"अब यहाँ का नम्बर है। सुना है, कलकत्ते से गोरी सेना आ रही है। हम लोगों के हथियार ले लेगी उसके बाद हम सब कैद हो जाँयगे!"

"ऐसा होगा?"

"अरे! तुम अंग्रेजों को समझते क्या हो? देखना तो हम लोगों की कैसी दुर्गति होती है!"

सिपाहियों के मन आशंका घर कर गई। उनकी गति विधियाँ बढ़ गई। अंगरेज अफसरों में घबराहट फैली। सब अपने-अपने परिवार के साथ कमिश्नर की कोठी में आ गए। सिपाहियों से कुछ कहने का साहस किसी में न था। मेजर इरमेस अपने रिसाले के साथ यूरोपियनों की रक्षा पर आ गये।

राट्रे की सैनिक टुकड़ी आने पर ही यूरोपियनों ने अपने को सुरक्षित समझा।

❀

कचयार्ना के किले में पड़े अंग्रेज किसी तरह अपने दिन काट रहे थे। दूर जँगल में पड़े रहने के कारण उन्हें कुछ समाचार ही न मिल रहे थे। रक्षा के नाम पर जो सिपाही थे, उनका व्यवहार ऐसा रूखा था कि वे कुछ बतलाते ही न थे। मच्छरों के आक्रमण से कुछ लोग ज्वराक्रांत थे, पर उनकी दवा-दारू का कोई प्रबन्ध न था। केवल खाने के अतिरिक्त और कुछ भी प्रबंध न था। वस्त्रों के अभाव में सब बेहाल हो चले।

किले का अधिकांश भाग खुला था। जंगल में शेर और चीते दहाड़ते थे। सिपाही तो नाम-मात्र की व्यवस्था के लिए थे। वे इतने लापरवाह थे कि रात होते ही अपने तो सुरक्षित स्थान पर चले जाते, पर अंग्रेज खुले में पड़े रह जाते। लाचार होकर स्वय अपनी रक्षा करते थे।

आग जलाकर रात गुजार देते।

सिपाहियों से कई बार संदेश भिजवाये कि राजा साहब अब हम लोगों को छुट्टी दें या यहाँ से कहीं और भेज दें, पर सिपाही लौटकर आने पर कुछ बतलाते ही न थे। सिपाही प्रायः इकट्ठे होकर अंग्रेजों का मजाक उड़ाते अथवा स्त्रियों के साथ छेड़खानी करते।

किले में पड़े अंग्रेज बड़े दुःखी थे और किसी प्रकार अपने दिन काट रहे थे। जँगल की बीहड़ता के कारण उनमें इतना साहस न था कि वहाँ से निकल सकें।

किसी को रास्ता न मालूम था।

साथ ही भय भी था कि पता नहीं उस समय ये सब सिपाही क्या व्यवहार करें?

❀

पटना आतंक से भर गया। टेलर की नादिरशाही से तमाम मुसलमान बेतरह क्षुब्ध हो गये। कमिश्नर ने एक आर्डर निकाला। रात नौ बजे के बाद से सुबह छः बजे तक कोई भी अपने घरों से न निकले। जो बाहर दिखलायी पड़ेगा, उसे गोली मार दी जायगी।

इस आदेश के अलावा वारिसअली की फाँसी के बाद तो फाँसियों का जैसे ताँता लग गया! परेड मैदान में खड़ी तिकठी पर कोई न कोई फाँसी पर प्रायः चढ़ाया जाने लगा। तीन चार तिकठियाँ और खड़ी कर दी गईं। इस तरह से टेलर ने आतंक के बल पर अपना शासन प्रारंभ किया।

मुल्लाओं और मौलवियों पर विशेष नजर रखी जाने लगी। मुसलमानों के प्रति टेलर का मन एकदम शंका से भर गया था।

टेलर के आदमी चारों तरफ छुटे थे। पूरा शासन अपने हाथ ले टेलर हर हालत में अशान्ति दबा देना चाहते थे। अभी से कठोर कदम उठाकर ही यहाँ शान्ति रखी जा सकती। यह उनका दृढ़ विश्वास था।

"साहब..."

"हाँ सुनाओ।"

"आज कई दिन से मैं चार आदमियों को देख रहा हूँ। इन लोगों पर मुझे पक्का शक है!"

"कौन-कौन? बोलो?"

"तीन तो मौलवी हैं और एक किताब बेचने वाला?

"तीन मौलवी? महमूद, अब्दुल्ला, वाजुल तो नहीं?"

"महमूद, अहमदुल्ला और वाजुल हैं। अबदुल्ला नहीं।"

"हुँ। इन तीनों मौलवियों का मुसलमानों में जोर भी है। खैर, और ये किताब बेचने वाला कौन है?"

"पीरअली!"

"ठीक है। मैं देखता हूँ।"

गुप्तचर के जाने के बाद टेलर कुछ चिन्ता में पड़ गये। गुप्तचर की इस सूचना पर उन्हें विश्वास हो गया। इन तीनों मौलवियों को भली-भाँति जानते थे। पटना के तमाम मुसलमानों में इनका बड़ा जोर है। कौन जाने मसजिदों में

इकट्ठे मुसलमानों में ये क्या-क्या बातें न करते हों ? रात का प्रतिबंध यहाँ व्यर्थ है। ये लोग तो मसजिदों में बड़ी आसानी से तैयारियाँ कर सकते हैं। मसजिदों की नमाज पर तो नियंत्रण नहीं रखा जा सकता।

तब ?

इन तीनों को गिरफ्तार कर लिया जाय ! अपने इस आदेश को कार्यान्वित करने के लिए टेलर अपने मातहत किसी अफसर को बुलाना ही चाहते थे कि रुक गये। इस तरह से सरे-आम गिरफ्तारी से बड़ा वावेला हो सकता है। संभव है, तमाम मुसलमान भड़क जाँय !

अच्छा ! तब ?

सहसा टेलर ने युक्ति निकाल ली।

तुरन्त अपने मातहतों को आदेश दिया कि नगर के तमाम प्रमुख व्यक्तियों को मेरी कोठी पर निमंत्रित किया जाय। शहर की स्थिति के संबंध में उन सबसे आवश्यक विचार-विमर्श करना है।

❀

कमिश्नर के बँगले सभी आए। प्रमुख मुसलमान और हिन्दू इकट्ठे हुए। तीनों मौलवी भी आये। टेलर साहब ने बड़े अदब के साथ उन लोगों को अपने पास बैठाया।

"मैंने आपको इसलिए बुलाया है कि नगर की हालत पर हम सबका गौर रखना जरूरी है !"

"जी हाँ।"

"कई जगह लोग अंग्रेजी अमलदारी को खत्म कर सिर उठाए घूम रहे हैं।"—टेलर बोले—"पर उन सबके सिर कुचले जा रहे हैं ! मेरा ख्याल है कि इस काम में कुछ देर लग सकती है। तब तक इस बीच यह संभव है कि कुछ सिरफिरे लोग यहाँ भी आ जाँय और लोगों को भड़कने की कोशिश करें !"

"हम लोग अंग्रेजी अमलदारी के वास्ते वफादार हैं !"—कुछ लोग बोले।

"यह तो ठीक है। मैं भी आप लोगों के भरोसे ही बैठा हूँ। फिर भी आप सब पर यह जिम्मेदारी है कि नगर में शान्ति रखें। खास तौर से मैं यह अपील मुसलमानों से करूँगा।"

"मुसलमान तो शान्त हैं ही !"—मौलवी महमूद बोले—"मैं अपनी ओर से मैं आपको एकदम बेफिक्र कर देना चाहता हूँ !"

"शुक्रिया !"—टेलर बोले—"और जरा उन मुसलमानों पर भी नजर रखियेगा, जो पलटन में हैं !"

"सब लोग शान्त हैं ।"—मौलवी अहमदुल्ला ने कहा—"सिर्फ आपसे कहना यही है कि बेकुसूर लोगों को फाँसी पर चढ़ाया न जाय !"

टेलर अपना क्रोध दबाकर रह गए—" अच्छा ! इस ओर मैं भरसक प्रयास करूँगा । लेकिन अली करीम के गिरफ्तार न होने से मेरा मन साफ नहीं हुआ है !"

"आप विश्वास कीजिए । अली करीम यहाँ नहीं है । वह बहुत दूर भाग गया है ।"

"ठीक है । अब आप लोग अपने-अपने सुझाव दीजिए कि शहर की हिफाजत के लिए क्या-क्या किया जाय ?"

उपस्थित लोगों ने सुझाव दिए । दिखाने के लिए टेलर साहब ने उन सुझावों को लिखा भी । इस प्रकार सब लोगों को प्रसन्नतापूर्वक विदायी देने लगे । लोग कमिश्नर से मिलकर बहुत खुश हुए और दो-दो, चार-चार करके जाने लगे ।

"अच्छा । इजाजत हो !"

"अरे बैठिए ! मौलवी साब ! आप तीनों साहबानों से कुछ जरूरी बातें करना है ।"

तीनों मौलवी रुक गये ।

एक एक करके रहे-सहे लोग भी चले गए । सबके जाने के बाद कुछ हथियार बंद अंग्रेज सैनिक उस कमरे में आकर चुपचाप खड़े हो गए । इन लोगों के आने से मौलवियों के मन को कुछ खटका हुआ । तीनों ने एक दूसरे को संदेह की निगाहों देखा, पर टेलर साहब की उपस्थिति के कारण वे कुछ बोल न सके ।

"हाँ, तो बात यह है ।"—टेलर साहब बोले—"कि शहर के अमल के वास्ते सबसे पहिले यह जरूरी है कि आप लोगों को सरकार की हिफाजत में रखा जाय !"

"आपका मतलब ?"

"मतलब !"—टेलर साहब हँस पड़े—"अब तक भी आप लोग नहीं समझे ! आप लोग मसजिदों में मुसलमानों को इकट्ठाकर भड़का न सकें, इसलिए अब से आप लोग सरकारी मेहमान रहेंगे।"

"याने गिरफ्तार !"

"हाँ, जनाब।"

"यह तो धोखा है।"

"चुप रहो। तुम्हीं लोग आग फैला रहे हो। तुम लोगों ने मुझे क्या अन्धा समझ रक्खा है ! याद रक्खो, तुम लोगों के होश ठिकाने कर दूँगा। अंग्रेजी अमलदारी अगले हजार साल भी खत्म नहीं हो सकती क्योंकि इस मुल्क से बड़ा बेवकूफ मुल्क दुनिया में और नहीं।"

"यदि आपका ऐसा विश्वास है, तो शौक से हम लोगों को गिरफ्तार कर लीजिए !"

टेलर के संकेत पर तीनों मौलवियों को चुपके से जेलखाने की एक कोठरी में बंद कर दिया गया।

❀

मौलवियों की गिरफ्तारी का समाचार छुपा न रहा। मौलवी अहमदुल्ला के वालिद मौलवी इलाहीबक्श जिन्दा थे। जईफ़ आदमी। आँखों से कम दिखता था। जब रात भर अहमदुल्ला लौटकर न आया तो सबेरे ही वे शोर मचाने लगे। मुसलमान उनको टोह में गये। टेलर साहब ने कुछ न बतलाया। दूसरे दो मौलवियों का भी पता न था।

सबके मन शक हो गया।

मौलवियों को गिरफ्तार कर लिया गया है या उन सबको चुपके से फाँसी पर लटका दिया गया !

सनसनी फैल गई।

मुसलमानों के जोश का ठिकाना न रहा। कदमकुँआ की ओर से कुछ मुसलमानों का एक झुण्ड हरा झंडा फहराए, डंका पीटता शहर में आया।

"इस्लाम के नाम पर !"

"अंग्रेजी अमलदारी मुर्दाबाद !"

"मुसलमानों बाहर आओ ।"

"टेलर साहब ! हाय ! हाय !!"

"हमरे मौलवी ?"

"फाँसी लटके !"

"नामर्दो बाहर आओ !"

डंके का आवाज और नारों को सुन झुंड के झुंड मुसलमान इस जुलूस में इकट्ठे हो चले । देखते देखते बड़ी संख्या में ये मुसलमान छावनी की ओर बढ़े । नगर के और भी दूसरे तबके के बहुत से लोग इनके साथ हो गए । छावनी में यह समाचार आते ही सनसनी फैल गई । यूरोपियन घबड़ाकर भागने लगे ।

इस समाचार के पाते ही टेलर क्षण भर को विचलित हुए पर तुरन्त सिक्ख सेना को आदेश दिया कि भीड़ को भगा दिया जाय । एक अंग्रेज अफसर के नेतृत्व में सिक्ख टुकड़ी शहर की ओर दौड़ी । सेना को आते देख निहत्थे लोग तितर-बितर हो गये । कुछ लोगों को पकड़ भी लिया गया ।

भीड़ छँट गई ।

नगर का उपद्रव तत्काल थम गया । असंतोष न थमा । मौलवियों का कोई पता न रहने से मुसलमानों का असंतोष उग्र रूप धारण करता जा रहा था ।

❀

"मेरी बात एकदम पक्की मानो । मेजर हाल्मस रोज शाम को बीबी बच्चों के साथ गाड़ी पर बैठकर हवा खाने जाता है !"

"हुँ ठीक है । इसने तो एकदम गजब कर रक्खा है "

"देखो न ! चारों तरफ फौजी कानून लगा दिया है । तिरहुत, छपरा, आजमगढ़, चम्पारन, गोरखपुर पूरी कमिश्नरी में फौजी कानून । चाहे जिसको पकड़ लेते हैं । सरेआम बेंत लगाए जाते हैं । यह भी कोई बात है !"

"अरे भाई । यह क्यों नहीं सोचते कि इस समय अंग्रेजों की नानी मर रही । है चारों तरफ वे घबड़ाए हुए हैं !

"हुँ ! हरि मोहन ने कुछ खबर दी।"

"उसने खबर भेजी है। सब तैयार है !"

रात के अँधेरे में दो आदमियों ने आपस और न जाने क्या-क्या फुसफुसाया। इसके बाद दोनों आकृतियाँ अन्धकार में लोप हो गईं।

⁂

सुगौली की सड़क पर चहल-पहल थी। अशान्ति के समाचार चारों तरफ से आने पर भी कस्बे मे शान्ति थी। हाँ, लोग आपस में फुसफुसाकर इन खबरों की चर्चा करते और अंग्रजों की ओर घृणा से देखते। इसके बाद भी कोई संघटन न होने के कारण विद्रोह के कदम न उठ रहे थे। मेजर हाल्मस एकदम निश्चिन्त थे। अपने अधिकार-क्षेत्र में फौजी कानून लागू कर कड़े कदमों से अशान्ति को दबाने के लिए पूरा प्रबंध कर चुके थे। विश्वास था कि इस आतंक की सृष्टि के आगे किसी का भी साहस न होगा कि वह अंग्रेजी अमलदारी के खिलाफ कदम उठा सके।

अपनी-घोड़ा गाड़ी में बैठे स्त्री के साथ आनंदपूर्वक वार्ता करते हुए हवा खाते जा रहे थे। दो बच्चों को आज घर ही छोड़ आये थे। घोड़ा गाड़ी के पीछे सदा की तरह एक अंग्रेज के साथ छः घुड़सवार रक्षार्थ चल रहे थे। छहों घुड़सवार देशी थे। उन सबके चेहरे एकदम गंभीर थे। आँखों में वे एक दूसरे से कुछ बातचीत कर रहे थे। गोरा आगे होने से कुछ भी न देख पा रहा था, अन्यथा देशी घुड़-सवारों की भाव भंगिमाएँ देखकर कुछ न कुछ अवश्य समझ जाता।

सड़क की मोड़ पर घोड़ा गाड़ी के आते ही पीछे के तीन सवार उछलकर सामने आ गये।

गाड़ी रुक गई।

"क्या बात है ?"

हाल्मस बाहर आ गए। उनके बाहर आते ही एक घुड़सवार ने तलवार से उनका सिर धड़ से अलग कर दिया। रक्त के फुहारे उछले। धड़ तड़फने लगा। यह दृश्य देखते ही गोरा तो घबड़ाकर भाग गया। देखते ही देखते दूसरे घुड़सवार ने मेजर हाल्मस की पत्नी पर वार कर दिया। तलवार के दो ही हाथ में वह ढेर हो गई।

घुड़सवार तेजी से छावनी की ओर दौड़े ।

रक्त-रंजित नंगी तलवारें ऊपर उठाए हुए थे ।

"अंग्रेजी अमलदारी उठ गई ।"

"हाल्मस मार डाला गया !"

घुड़सवार पलटन के जवान सारे शहर में बिखर गये । अंग्रेजों की मार-काट शुरू हो गई । बहुत से अंग्रेज कुछ देशी आदमियों का सहारा पा भाग निकले । सरकारी इमारतें जल गईं । खजाना लुट गया । जेलखाने के कैदी बाहर निकाल दिए गए । नगर से अंग्रेजी अमलदारी समाप्त करते हुए बागी सिपाही आगे बढ़ गए ।

❀

"अब सब तैयार हो जाओ !"

"हम तो तैयार हैं, पर नजीब साथ नहीं !"

"एक चना क्या भाड़ फोड़ेगा ! अगर नजीब पलटनियाँ न भी साथ दें तो क्या कोई हमारा कुछ कर सकता है ! आज रात ठीक आठ बजे !"

"......"

"सुगौली से अंग्रेज भाग गए । बड़ा हाकिम टें कर दिया गया !"

विद्रोही नायक अपनी बात कह तेजी से आगे बढ़ गया । उसे कुछ देशी अफसरों से भी मिलना था । शहर में एक भी अंग्रेज न था । दो चार ईसाई ही थे । बाकी तमाम अंग्रेज पटना चले गए थे । कमिश्नर भी किसी आवश्यक कार्य से पटना गये थे । मौका अच्छा था ।

दानापुर से आए एक विद्रोही ने यहाँ भी सूत्र-संचालन सँभाला । रात के ठीक आठ बजे तोप की आवाज हुई और एक टुकड़ी बागी होकर निकली । रास्ते में खाली पड़ी अंग्रेजों की कोठियों में आग लगाने के बाद टुकड़ी आगे बढ़ती गई । उनका उद्देश्य खजाना लूट लेना था ।

जैसे ही यह टुकड़ी खजाने के पास पहुँची, दूसरी ओर से गोली चली । सिपाही चौंक पड़े । देखा नजीब पलटन एकदम तैयार खड़ी थी । खजाने की रक्षा के लिए वे लोग डटे थे । उनकी संख्या भी अधिक थी । अतएव मुट्ठी भर बागी सिपाही कुछ न कर सके । गालियाँ बकते हुए वे सब चले गए ।

खजाना सुरक्षित रह गया। तत्काल एक सैनिक पटना की ओर रवाना हुआ। मुजफ्फरपुर की इस स्थिति की पूरी रिपोर्ट लेकर वह चला गया।

❀

वृद्ध हो जाने पर भी चेहरे पर अजीब तेज था। राजपूती शान से भरी बड़ी-बड़ी आँखों में चमक थी। टेलर ने दो क्षण मुग्ध हो अपने सामने बैठे डुमराव-नरेश को देखा, फिर धीरे से बोले—"सरकार का आपने हमेशा साथ दिया है और सरकार ने भी हमेशा आपकी मदद की है। हम लोगों का आपसी व्यवहार बहुत दिनों से बना हुआ है। कानपुर में पूरबिये सिपाही ही ज्यादा हैं, वे आपकी बात मान लेंगे।"

"जो आप कहें, मैं उससे इन्कार नहीं करूँगा।"

"आप सिपाहियों को समझा दीजिए। आपकी बात मान जायेंगे। कारतूस और चर्बी की बात एकदम निराधार है। यह तो आप भी जानते हैं"

"......"

"शाहाबाद के कैदियों ने भी एक बार बखेड़ा किया था। वह मिट्टी के बर्तनों की बात को लेकर जो बखेड़ा मचा था। आखिर कैदियों ने आपकी बात मानकर मिट्टी के बर्तन मंजूर कर लिये थे। आपके इसी रुतबे के कारण सरकार को इस बात का विश्वास है कि सिपाही भी आपकी बात मान जायेंगे और यह जो व्यर्थ में एक तमाशा हो रहा है और हमें मजबूर होकर लोगों को दंड देना पड़ रहा है। खत्म हो जायगा।"

"मैं आपकी बात से सहमत हूँ! लेकिन मेरी भी एक शंका है। शाहाबाद और आरा के जितने भी रहने वाले पलटन में हैं, वे मेरी बात मान लेंगे, पर दूसरों की नहीं कह सकता। दानापुर में तो सभी तरफ के सिपाही हैं!"

"नहीं, सब आपकी बात मानेंगे!"

"मैं इसका कोई आश्वासन नहीं दे सकता। अपने क्षेत्र के लोगों को समझा सकता हूँ। जो मेरे क्षेत्र के बाहर हैं, उन पर मेरा क्या जोर?"

टेलर का मन शंका से भर गया। अपने सहयोगियों के द्वारा मिली खबरों पर उन्हें विश्वास हो गया। अवश्य ही वे तमाम खबरें सही हैं, तभी तो यह

नरेश इस तरह की बात कर रहा है। स्वभाव से परिचित रहने के कारण टेलर कुछ न कह सके। जानते थे, इस नरेश में आत्माभिमान बहुत है। इस समय छेड़ना उचित न होगा। पिछले साल जमींदारों का जो सम्मेलन हुआ था, उसमें सबसे आगे स्थान न रहने के कारण यह नरेश उठकर चला गया। यह उसका अपमान था। आखिर डुमराव वंश का प्रभाव है, मान है।

टेलर ने मन की बात मन में दबा ली। इस समय हर कदम सावधानी से ही उठना चाहिए। अगर ऐसा नहीं होता है तो यह होगा कि विद्रोह उमड़ पड़े। पूरी सख्ती के साथ संभल-संभलकर कदम उठाना होगा।

विशेष जोर देना उचित न समझ, टेलर इतना ही बोले—"ओके मैंने इसीलिए जगदीशपुर से याद किया था। आगे आपकी इच्छा!"

"जो ठीक है, मैंने निवेदन कर दिया!"

"ठीक है। आवश्यकता पड़ने पर सरकार को आपकी मदद का हमेशा भरोसा रहेगा!"

"यह कहने की बात नहीं!"

"धन्यवाद!"

टेलर उठकर अपने कमरे में आ गए। मन उद्विग्न हो गया। कुँवर सिंह विद्रोही हो सकते हैं, इसकी अब प्रबल संभावना है। वे कर्ज के बोझ से दबे हैं जमींदारी प्रायः नाम मात्र के लिए इनके अधिकार में है। खर्चे से भी इनका हाथ तंग है। यदि अंग्रेजी अमलदारी उठ जाती है, अपनी वंश मर्यादा और बिहार में फैली अपनी प्रतिष्ठा के बल यह व्यक्ति पुनः शक्तिशाली नरेश हो सकता है।

टेलर के मन यह बात जम गई। कुछ लोगों ने कुँवर सिंह के बारे में जो बातें अब तक उनसे बतलायी हैं, वे ठीक हैं।

इस खतरनाक शेर को पिंजड़े के बाहर रखना अच्छा नहीं।

इधर की कुछ स्थिति शान्त हो जाय, तो एक बार पुनः बुलवाकर गिरफ्तार कर लिया जाय। अजीमुद्दीन हुसैन इनका दोस्त भी है और अंग्रेजी सरकार का अपना खास आदमी भी। इस व्यक्ति के जरिए यह काम बड़ी आसानी से हो सकता है!

※

अफीम की कोठी का गोरा अफसर लायड घोड़े पर बैठकर अपने काम पर जा रहा था। राह सदा की भाँति चालू थी। सहसा जाने किस ओर से गोली छूटी और लायड की छाती में लगी। बंदूक की कड़क के साथ ही लायड भी जमीन पर लुढ़क गया। भगदड़ मच गई।

देखते-देखते सन्नाटा खिंच गया। खून के डबरे में लायड मरा पड़ा था घोड़े का पता न था। लायड के पास एक भी आदमी न था।

इस हत्या का समाचार टेलर को लगा। आग-बबूला हो, तुरन्त एक सैनिक टुकड़ी को भेजा। साथ ही आसपास के तमाम लोगों को पकड़कर छावनी लाने का हुक्म दिया। आदेशानुसार तुरन्त सारा काम हुआ। घोड़े पर सवार होकर टेलर स्वयं छावनी आए।

पचीसों आदमी सिपाहियों के घेरे में खड़े थे। भय से सब थर-थर काँप रहे थे। छावनी की हद से बाहर सिपाहियों द्वारा रोके गये परिजनों तथा मुहल्ले के लोगों का करुण क्रंदन सुनायी पड़ रहा था। विश्वास हो गया था सबको कहीं फाँसी न दे दी जाय। टेलर ने क्रोध से सबकी ओर देखा।

"रेडी! सबकोहन्टरों से मारो। मारते-मारते इन लोगों की खाल उधेड़ दो। जो अपराधी का नाम न बताए उसकी हड्डियाँ तोड़ दो!"

सामूहिक रूप से सब पर हन्टर पड़ने लगे। हन्टरों की मार से जवान और बूढ़े बिल-बिला उठे। उन लोगों को क्या मालूम कि हत्यारा कौन है? हाँ, कुछ लोगों ने यह बात जरूर कही कि पीर अली किताब वाला एक रोज बन्दूक लेकर मुहल्ले में आया था।

टेलर के लिए इतना ही पर्याप्त था।

अधमरा करके सबको छोड़ दिया। रक्त छल-छलाती देहें लिए, रोते सिसकते मुहल्ले के लोग अपने-अपने घरों आए। इस घटना से नगर का वातावरण क्षुब्ध हो चला। सिपाहियों के मन भी क्षुब्ध हो चले। यह तो जुल्म की पराकाष्ठा थी।

❀

पीर अली का घर घेर लिया गया।

"पीर अली है?"

दरवाजा खट-खटाया गया।

"कौन है ?"

सिपाहियों को देखकर मुहल्ले के तमाम लोग आतंकित हो गए। अधिकांश घरों के दरवाजे और खिड़कियाँ बन्द हो गईं। मकान के अन्दर खाना-खाते पीर अली को कुछ भी पता न था, कौन बुला रहा है ? क्या बात है ?

"दरवाजा खोलो !"

"खोलता हूँ भाई। जरा हाथ धो लूँ !"

पीर अली ने दरवाजा खोला। सिपाहियों को देखकर भी वह तनिक न घबड़ाया। बड़ी शान्ति के साथ उसने पूछा—"कहिए, क्या हुक्म है ?"

"हुक्म !"—गोरा बोला और दो घूँसे मार पीर अली को जमीन पर गिरा दिया। गिरते ही बूटों से बुरी तरह पीटना शुरू कर दिया। पीर अली के दाँत टूट गए। ओठ फट गये। हाथ पैर छिल गए। सिर भी फट गया। रक्त से सारे कपड़े भींग गये। फिर भी पीर अली ने उफ़ न किया।

खूब मरम्मत करने के बाद गोरा बोला—"इसके हाथ पैर बाँधकर ले चलो।"

पीर अली की मुश्कें कस दी गईं !

परेड मैदान पीर अली लाया गया। टेलर और अन्य अंग्रेज आफीसर पहिले से ही वहाँ थे। एक ओर गोरी पलटन के सैनिक एकदम तैयार खड़े थे।

"यही है पीर अली !"

"जी हाँ !"

पीर अली का चेहरा खून से भरा था। कपड़े रक्त भरे थे। बुरी तरह पस्त होने के बाद भी उसने गर्व से अपना सिर उठाकर कहा—"हाँ, मैं ही पीर अली हूँ। बोलिए..."

"तुमने डाक्टर को गोली मारी है ?"

"नहीं कह सकता।"

"देखो, साफ-साफ बतला दो। अगर तुम्हें यह मालूम है कि तुम्हारे सिवाय या तुम्हारे साथ किसी और आदमी ने इस काम को किया है, तो इसकी सूचना देने से तुम्हारी वफ़ादारी के सुबूत से मैं खुश होकर तुम्हे छोड़ दूँगा !"

"सुनिए साहब !"—पीर अली अपनी सारी शक्ति लगाकर जोर से बोला—

"कुछ बातें बतलाने लायक होती हैं और कुछ नहीं बतलायी जा सकती हैं। आपकी यह बात जवाब के काबिल नहीं।"

"फाँसी पर लटका दूँगा।"

"मुझे अकेले को ही न?"—पीर अली हँस पड़ा—"पर याद रखिए एक दिन आप सब लोगों को भी फाँसी पर लटकना पड़ेगा और मैं देख रहा हूँ कि वह दिन दूर नहीं है। अंग्रेजी हुकूमत इस मुल्क से उठकर रहेगी। जुल्मी हुकूमत चल नहीं सकती। इस सौ साल में न उठ सकी, तो अगले सौ साल में उठकर रहेगी। हिन्दोस्तान आजाद होकर रहेगा। अंग्रेजों को जाना पड़ेगा। खून हमारा बेकार नहीं जायगा। खून के ये बीज कभी न कभी पेड़ बनेंगे ही!"

"सुअर!"—टेलर गरज उठे—"लटका दो फाँसी पर!"

पीर अली को तिकठी की रस्सी से आँख ऊपर खींच दिया गया। क्षण भर में ही पीर अली का निर्जीव शरीर परेड मैदान की तिकठी पर अकेला झूलता रह गया।

❀

गवर्नर जनरल के सामने पटना से आए एक फौजी अफसर का पत्र पड़ा था और आँखों के सामने बिहार का नकशा था। बिहार के अनेक प्रमुख नगरों में मुसलमानों की संख्या काफी है। दिल्ली में मुसलमानी हुकूमत हो जाने के कारण बिहार का भी हाथ से निकल जाना असंभव नहीं। बिहार के मुसलमानों को हर तरह से खुश रखना आवश्यक है। अगर इस नीति से काम न लिया गया तो बिहार भड़क सकता है। कमिश्नर टेलर की कार्यवाहियों पर उनका मन क्षुब्ध था। मुसलमानों को सार्वजनिक ढंग से फाँसी दी जा रही है! तीन प्रमुख मुहल्लाओं को गिरफ्तार कर लिया गया है। यहाँ तक कि अपने व्यवहार से उन्होंने कुँवर सिंह जैसे बल शाली पुरुष को असंतुष्ट कर दिया है। साथ ही कुँवर सिंह को गिरफ्तार करने की योजना बना रखी है।

यह सब क्या मूर्खता है!

इस समय मुसलमानों को सम्मानित पदवियाँ, खिताब, नौकरी आदि देकर संतुष्ट रखना चाहिए। टेलर को तो आसपास की खबर है ही नहीं! भले ऐसी ताना-शाही से काम चलेगा!

आस-पास के तमाम अंग्रेजों को पटना बुला लिया है। मुजफ्फरपुर में नजीब पलटन राजभक्त बनी हुई है। काजी रमजान अली छपरा से अंग्रेजों के भाग जाने के बाद सारा काम संभाले हुए है। वहाँ भी शान्ति है। गया का खजाना लेकर कुछ हिन्दोस्तानी सैनिक पटना के इस फौजी अफसर के नेतृत्व में यहाँ आ गये हैं। उसने ही वहाँ की पूरी रिपोर्ट इस पत्र में लिखकर दी है। भला इस प्रकार शासन चला है!

टेलर जैसे व्यक्ति को अगर तुरन्त न हटाया गया, तो बिहार के इन तमाम शान्त क्षेत्रों में आग लग जायगी और अगर बिहार अंग्रेजी अमलदारी गया तो कलकत्ता जाते देर न लगेगी। कलकत्ता गया, तो अंग्रेजी राज हमेशा हमेश के लिए उठ जायगा।

"समझ में नहीं आता, ये कैसी चिनगारी है, जो चारों तरफ फैलती जा रही है?"

"यही तो विचित्र बात है, पर मेरा ख्याल है कि इस विद्रोह की मूल जड़ धार्मिक भावना ही है।"

"लेकिन बिना किसी संगठन के यह संभव नहीं!"

"संगठन!"—एक आफीसर ने चाय की चुस्की लेते हुए कहा—"अफवाहें ही इसका संगठन हैं। अगर संगठन होता तो हम लोग यहाँ देवघर में इतने आराम से अब तक बैठे न होते!"

मजिस्ट्रेट के बँगले की लॉन में कुछ गोरे अफसर चाय पी रहे थे।

"बात तो ठीक..."

ठाँय! ठाय! ठाँय!!

सहसा गोलियाँ छूटीं। दो आफीसर तो तुरन्त लुढ़क गए। शेष भाग गए। गोलियों की आवाज से आसपास आतंक फैल गया। पास ही कलक्टर का बँगला था। कुछ गोरे सैनिकों के साथ, वह आवाज सुनते ही दौड़ आए। आते ही देखा, दो अफसर मरे पड़े हैं और कुछ सिपाही भागे जा रहे हैं। समझते देर न लगी। यह काम विद्रोही-सिपाहियों का है।

तुरन्त छावनी दौड़े। वहाँ एकदम शान्ति देख उनके मन को धैर्य मिला। सिपाहियों की एक टुकड़ी भेजी। बागी सिपाही पकड़े गए। कुल सात सिपाही थे वे।

सबने अपना अपराध मंजूर किया।

कलक्टर उन्हें फाँसी का हुक्म देकर चले गए। सातों को फाँसी दे दी गई, पर देवधर में गड़बड़ी न हुई।

❀

दरवाजे पर आवाज होते ही लुफ्त अली खुद बाहर आया।

"कहिए ?"

"आपको कमिश्नर साहब ने बुलाया है!"

"चलिए!"

लुफ्त अली ने देखा—कोचवान न था। खुद गाड़ी हाँकने के स्थान पर बैठ गया। गोरे अफसर और सिपाहियों को बैठाया।

"कमिश्नर साहब का हुक्म है। मैं खुद चलाऊँगा!"

घोड़ागाड़ी हाँककर खुद लुफ्त अली कमिश्नर के बँगले आया। उसे इस तरह आया देख, और अफसर चपले में पड़ गये। उनकी समझ में कुछ न आ रहा था कि लुफ्त अली के साथ क्या व्यवहार करें? इतना धनी आदमी कलक्टर के हुक्म से तुरन्त खुद घोड़ागाड़ी हाँककर आ गया। लुफ्त अली धनी भी था और पटना के तमाम मुसलमानों पर उसका काफी प्रभाव था।

कलक्टर लुफ्त अली को टेलर के सामने ले गए।

"बैठिए!"

"आपका हुक्म मानकर चला आया। क्या मैं यह समझूँ कि मुझे गिरफ्तार कर लिया गया?"

"यह आपने कैसे जाना?"

"आखिर मेरे घर गोरे अफसर के साथ सिपाही क्यों गये थे?"

"इसलिए कि आप पर शक है! बनारस से भागे एक बागी मुसलमान को आपने अपने घर में छुपा रक्खा है!"

"आप तलाशी ले सकते हैं !"

"और आप रुपयों पैसों से बागियों की मदद करते हैं !"

"झूठ !"

"यह काम आपका नहीं है !"

"जी नहीं। अगर आपके पास सुबूत हैं, तो बाकायदा मुकदमा चलाइए। बात ठीक निकले तो सजा दीजिए। इसमें ऐतराज क्या ! पर इस वक्त आपने जो मनमानी धाँधली मचा रक्खी है, वह अच्छी नहीं !"

"......"

टेलर चुप हो गए।

लुफ्त अली का सुझाव पसन्द आ गया। ठीक है। लुफ्त अली को गिरफ्तार न कर उस पर मुकदमा चलाया जाय। इससे मुसलमानों को यह तो मालूम हो जायगा कि सरकार बड़े से बड़े हिन्दोस्तानी से भी डरती नहीं और उस पर मुकदमा भी चला सकती है। इससे अंग्रेजी हुकूमत का रोआब बढ़ेगा।

"ठीक है। आप पर मुकदमा ही चलेगा। आप एक लाख की जमानत का बंदोबस्त करें।"

लुफ्त अली मुस्कुराकर चला आया। जानता था। चींटी मरने को आती है, तो धरती छोड़ हवा में उड़ने लगती है।

बागियों के बढ़ते हुए दल की शक्ति का ठीक-ठीक पता न लगने के बाद भी लारेंस ने हिम्मत न हारी। अपने सैनिकों के साथ बढ़ते आए। कोकरैल की धारा तेजी पर न थी। आते ही लारेंस ने इस पुल पर अपना अधिकार कर सेना आगे बढ़ायी। चीनहाट के बाएँ किनारे विद्रोहियों का पड़ाव पड़ा था। विद्रोहियों को लारेंस के आने का पता न था। लखनऊ के पतन के समाचार के कारण उन सबको विश्वास था कि अंग्रेज तो अब गए। यहाँ मुकाबला किससे ? अतएव सब निश्चिन्त होकर पड़े थे।

सहसा इसमाइलपुर के कुछ ग्रामीणों ने दौड़कर खबर दी कि गोरी पलटन कोकरैल के पुल से इस तरफ चली आ रही है। इस समाचार से पहिले तो सब

घबड़ा गए कि यह गोरी पलटन कहाँ से आ रही है ? फिर भी तत्काल सब जुट गए। देखते-देखते तोपें रास्ते में खड़ी कर दी गईं। घुड़सवार और पैदल दोनों बाजुओं पर एकदम तैयार खड़े हो गये।

अंग्रेजी सेना पुल पार कर आगे आयी।

तोपें लगी देख समझ गये विद्रोही मुकाबले के लिए तैयार खड़े हैं।

लारेंस स्वयं आगे आये। कप्तान बनहम को तोपें छोड़ने का हुक्म दिया। जैसे ही अंग्रेजी सेना ने गोले बरसाये, विद्रोही सेना की भी तोपें गरजीं और एकबारगी ही दोनों बाजुओं पर खड़ी टुकड़ियाँ हल्ला बोल उठी।

तोपों की भयंकर मार सामने से।

अगल-बगल से बंदूकों की मार।

अंग्रेजी सेना तीन ओर से घिरकर बुरी तरह घबड़ा गई। अंग्रेज अफसर तो इस आक्रमण से घबड़ा गए। सिक्ख टुकड़ी भागकर एक टीले की आड़ हो गई। विद्रोहियों की करारी और भयंकर सुनियोजित मार ने अंग्रेजी सेना के छक्के छुड़ा दिए।

लारेंस स्वयं सेना का संचालन हाथ लिए थे।

बनहम को उन्होंने तुरन्त तोपें दोनों बाजू लगाने का आदेश दिया। तोपें खींचने के लिए आए हाथी जैसे ही सामने पड़े, विद्रोहियों ने उनको ही अपनी गोलियों का निशाना बनाकर धराशायी कर दिया। इस आक्रमण में बनहम भी ढेर हो गए।

अब तो अंग्रेजी पलटन घबड़ायी।

विद्रोहियों की संख्या भी अधिक थी।

देखते-देखते भगदड़ मच गई। लाख कोशिश करने पर भी लारेंस अपनी भागती सेना को न रोक सके। उन्हें भी भागना पड़ा। सेना गिरती-पड़ती लखनऊ भागी। घायलों को भी अपने साथ न ले जा सकी। घायलों और लाशों से रण-क्षेत्र पटा था। साहसकर कड़ी धूप में अंग्रेजी सेना के कुछ देशी सिपाही आए और कुछ घायलों को उठाकर ले गये।

कड़ाके की गर्मी, युद्ध के परिश्रम से रास्ते में अनेक गोरे सैनिक बेहोश हो गए।

प्यास के मारे भी कुछ अंग्रेज बेदम होकर गिर गए। हिन्दोस्तानी सिपाहियों ने उन सबको अपने कंधे लटका लिया।

❀

"हमारी हार बुरी रही!"

"विद्रोहियों की संख्या नहीं मालूम थी!"

"इससे क्या होता है?"

"......"

"हम फिर मुकाबला करेंगे!"

"......"

"ऐसे हारने से मरना अच्छा। बागियों को लखनऊ घुसने नहीं देंगे।"

"अवश्य!"

अंग्रेजी सेना फिर तैयार होने लगी। लारेंस ने अपनी टुकड़ी को नए जोश से भरा और फिर रातोंरात चीनहाट की ओर कूच कर दिया। इस तरह आसानी से अंग्रेज हारने वाले नहीं। जब तक एक भी अंग्रेज जिन्दा रहेगा, वह बागियों का मुकाबला करेगा।

सबेरे अंग्रेजी सेना कोकरैल के पुल से इस घाट आ गई।

विद्रोही दल बढ़ा आ रहा था।

लारेंस ने आदेश दिया। आदेश पाते ही सैनिक टूट पड़े पर इस बार भी वे शत्रुपंक्ति वेध न सके। विद्रोही पुनः दुगुने उत्साह से भिड़ गए। कल की विजय के कारण उनके मन उत्साह से भरे थे। अंग्रेजी सेना लाख प्रयत्न करने पर भी विद्रोहियों को मात न कर सकी।

फिर भगदड़ मची।

अंग्रेजी सेना के काफी लोग मरे। घायल हुये। लखनऊ लौटने का भी रास्ता घेरने के लिए बागी टुकड़ियाँ आगे बढ़ीं। वह स्थिति देखते ही लारेंस घबड़ाए। बड़ी मुश्किल और पग-पग पर कठिन मुकाबला करके लखनऊ वापिस आने के रास्ते पर कब्जा किया। पीछे लौटने के अतिरिक्त और कोई रास्ता न था।

पस्त सेनापति ने रिट्रीट का संकेत किया। सिपाहियों के प्राण लौटे। गोरों के

साथ अपनी जान बचाते हुए सब लखनऊ लौटे। रेजिडेंसी की ओर भागे। बागी सिपाहियों ने उनका पीछा किया।

बागियों के नगर में आते ही सर्वत्र एक नया उल्लास दौड़ गया। लखनऊ के अनेक भागों पर बागियों का अधिकार था ही। इन नए लोगों के साथ तो सारा नगर और जोश से भर गया। तोपों की गरजना, बन्दूकों की कड़-कड़ाहट से लखनऊ गूंज उठा। सिपाहियों के विजय-घोष से गगन काँपने लगा।

बागियों ने रेजीडेंसी और मच्छी भवन घेर लिया। तोपें खड़ी कर दी गईं और अंग्रेजों पर अनवरत गोलों की वर्षा प्रारम्भ हो गई। दोनों स्थानों पर घिरे हुए अंग्रेजों में हाहाकार मच गया। अब बचाव का कोई रास्ता न था। विकराल मृत्यु सबको तड़फा-तड़फाकर मारने के लिए चली आ रही थी।

*

"विश्वास तो नहीं होता!"

"यह सत्य बात है। तुम विश्वास करो या न करो! वे आज रात जाने वाले हैं!"

"अगर ऐसा हो गया तो अंग्रेजी अमलदारी उठते देर न लगेगी!"

"यह क्यों भूलते हो कि डुमराव नरेश पर अंग्रेजों ने बेहद जुल्म किये हैं। जमींदारी हड़प ली। अब उनका सम्मान मिटाने की दुश्चेष्टा की जा रही है और फिर एक ओर सबके धर्म पर आघात हो रहा है। ऐसी हालत में इस देश का रहने वाला कोई भी आदमी भला कैसे खामोश बैठ सकता है!"

"ठीक कहते हो भाई!"

"तो तुम सब तैयार रहना!"

"अवश्य!"

सूबेदार अपने मित्र की बातों पर आश्चर्य करता हुआ आया। अंग्रेजों की हरकतों से स्वयं उसका मन क्षुब्ध था। पटना में आज मुसलमानों पर जो जुल्म हो रहे हैं कल वही सब हिन्दुओं पर भी हो सकते हैं। पटना में चूंकि मुसलमानों की संख्या अधिक है, इसीलिए वे सताये जा रहे हैं। इसी प्रकार जहाँ हिन्दुओं की संख्या अधिक होगी, वहाँ उन्हें भी सताया जा रहा होगा।

अंग्रेजी राज में जैसे यहाँ के रहनेवालों को मक्खी या मच्छर समझा जाता है। चाहे जब जरा से भी शक पर फाँसी पर लटका दिया जाता है, जैसे आदमी की जान की कुछ कीमत ही नहीं। न्याय, कानून कुछ रह ही नहीं गया। न जाँच, न पड़ताल, सीधे परेड के मैदान में फाँसी! सरे आम फाँसी। और भी यह भी सुनते हैं कि पटना में रात नौ बजे के बाद सुबह छह बजे तक बाहर निकलना भी बन्द है।

पलटन के तमाम सिपाही अंग्रेजों से रुष्ट हैं। दिल्ली, कानपुर से अंग्रेजी राज उठ गया है। सुनते हैं, लखनऊ में भी अंग्रेज घिर गए हैं,। ऐसी हालत में यहाँ के लोग कब खामोश रह सकते हैं? विद्रोह की खबरें आयीं। यहाँ के लोगों से भी बात-चीत की गई। बहुत पहिले कानपुर का एक मुसलमान यहाँ इसी सिलसिले में आया था। यह सब तो ठीक रहा पर विद्रोह का संचालन कौन सँभालेगा? इसकी बात आज तक नहीं हुई। अंग्रेजों का मुकाबला करना आसान बात नहीं है। आज चारों तरफ अंग्रेज हैं। इनको पूरी ताकत से लड़ना होगा। अभी तक सब इसीलिए खामोश थे, पर अब तो स्वयं डुमराव-नरेश इस कार्य के लिये तैयार हो रहे हैं।

अब भय कैसा?

❀

कमरे में बैठे तमाम लोग हरेकृष्णसिंह के आते ही उठ खड़े हुए। कमरे में उपस्थित अधिकांश व्यक्ति पलटन के सिपाही या अफसर थे, जो सादी पोशाकों में वहाँ उपस्थित थे। हरेकृष्ण ने सबकी ओर पारी-पारी देखा। फिर बैठ गए। उनके बैठते ही और तमाम लोग बैठ गए।

"और कोई आने वाला है?"

"नहीं!"

"अच्छा!"—हरेकृष्ण बोले—"बाबू साहब ने हम लोगों की बात मंजूर कर ली है। गंगा पार के लिए नावों का भी प्रबंध शीघ्र हो जायगा।"

"......"

"आप लोगों को करना यह है कि ऐसे मौके पर बगावत हो जबकि तमाम

अंग्रेज एकदम असावधान रहें। मैंने सुना है कि इलाहाबाद, लखनऊ की मदद के लिए एक अंग्रेजी-सेना इस तरफ आ रही है। इस बात की संभावना है कि इसी फौज के बल पर आप लोगों को निरस्त्र कर दिया जाय, इसीलिए उस समय उत्तेजना दिखलाने की कोई आवश्यकता नहीं। यदि ऐसा होगा तो सिवाय पटना से भागने का और कोई रास्ता न रहेगा!"

"जी!"

"हमें बहुत ही सुनियोजित ढंग से काम करना है। बाबू साहब हमारी हर मदद के लिए हर तरह से तैयार हैं। अभी ऊपरी तौर से वे अंग्रेजों से जा मेल-मिलाप दिखला रहे हैं। इसलिए आप लोग भ्रम में न पड़ें कि वे हमारे साथ नहीं हैं!"

उपस्थित लोगों में हर्ष की लहर दौड़ गई।

&

सिपाहियों में सनसनी फैल गई। चूँबड़ा से गोरी फौज आने वाली है। कल वह आ रही है। इस फौज के आते ही हथियार ले लिए जाँयगे। वर्दियाँ छीन ली जाँयगी और सबको तोपों से उड़ा दिया जायगा। फाँसी पर लटका दिया जायगा। हर सिपाही के चेहरे पर हवाईयाँ उड़ने लगीं। हर सिपाही घबड़ा गया। रात भर बैरकों में लोग विचार-विमर्श करते रहे।

"ऐसा नहीं होगा!"

"भला हम अंग्रेजों को अपने हथियार देकर हाथ कटायेंगे!"

"देना पड़ेंगे।"

"हम हमला कर देंगे!"

"नहीं। अफसर लोग तैयार नहीं हैं। उनका कहना है कि गोरी फौज के जाने के बाद हम लोग गड़बड़ करें।"

"उस समय खाक गड़बड़ होगी, जब हम हथियारहीन रहेंगे!"

"और कौन जाने हम लोग बचते हैं या नहीं!"

"ताज्जुब! क्या सब हिन्दोस्तानी सिपाहियों को ये लोग मार डालेंगे!"

"हाँ! नहीं मारेंगे तो सबको कैद जरूर कर देंगे!"

"जो होगा, देखा जायगा। हम लोगों को आफीसरों के कहे मुताबिक काम करना चाहिए।"

"इसमें बहुत से आफीसर गद्दार हैं!"

"हम उनकी बात नहीं मानेंगे।"

सिपाहियों के मत अलग-अलग थे। कोई एक तान थी और न ही सब एक पथ पर थे।

*

गोरी पलटन के आते ही टेलर का उत्साह बढ़ गया। कुँवर सिंह उनकी बात मानकर अगर दानापुर के सिपाहियों को नहीं समझा सके हैं, तो इससे क्या बिगड़ा? अब गोरी सेना आ ही गई है। इसकी मदद से दानापुर के सिपाहियों के तमाम हथियार, वर्दियाँ छीनकर उन्हें हँकाया जा सकता है।

गोरी पलटन के अफसरों से सलाह कर टेलर अपनी योजना में लग गये।

गोरी पलटन दानापुर पहुँची। चारों तरफ घेरा डाल पलटन पड़ी रही। परेड के मैदान ढेर सी तोपें लगा दी गईं। इस कार्यवाही से सिपाहियों का यह विश्वास बढ़ गया कि अवश्य ही सबके हथियार लेने के बाद तोपों से उड़ाया जायगा। तभी तो इतनी तोपें खड़ी की जा रही हैं।

सनसनी के बीच सिपाहियों को परेड मैदान आने का हुक्म हुआ।

"फालेन!"

तमाम सिपाही एक पंक्ति में खड़े हुए। उनके चेहरे घबड़ाए हुए थे। सिपाहियों के पंक्तिबद्ध होते ही गोरी पलटन का घेरा और सिकुड़ गया। सेना के बराबर गोलन्दाज खड़े हो गए। गोरी पलटन भरी बन्दूकें लिए एकदम तैयार। सेनाध्यक्ष ने हथियार और वर्दी उतारने का आदेश दिया। आगे की एक टुकड़ी ने बिना आनाकानी के वर्दियाँ उतार दीं। पीछे की टुकड़ी के भी कुछ सिपाहियों ने भी ऐसा ही किया।

सात और आठ नम्बर की पलटन के सिपाहियों ने सेनाध्यक्ष के इस आदेश का उत्तर गोली चलाकर दिया।

ठाँय

इस एक ही कारतूस ने खलबली पैदाकर दी।

तमाम सिपाहियों ने हल्ला बोल दिया। इस घबड़ाहट में गोलन्दाज भाग खड़े हुए गोरे सैनिकों और सिपाहियों में मार होने लगी। परेड का मैदान रण क्षेत्र में बदल गया। बन्दूकों की कड़क और घायलों की चीख-पुकार से आसमान थर्रा उठा। बिगड़े हुए सिपाही बहुत ही जोश में थे। वे सब दुगुने वेग से गोरी सेना पर टूटे थे। अतएव गोरी सेना को भागना पड़ा। सब पास के अस्पताल में घिर गये। कुछ गोरे अस्पताल की छत पर चढ़ गए।

चालीस नम्बर की पलटन के सिपाही किंकर्त्तव्यविमूढ़ हो युद्ध का यह दृश्य देख रहे थे। पलटन के अफसर दूसरी टुकड़ी के इस कर्म से क्षुब्ध थे। कल की योजना के अनुसार काम न होने से वे घबड़ा गए। समय से पहिले मुठभेड़। क्या करें। क्या न करें।

सहसा इस पलटन पर गोलियाँ आयीं।

देखा—अस्पताल की छत से गोरे सैनिक उन पर गोलियाँ छोड़ रहे हैं। इस पर वह पलटन भी उत्तेजित हो गई और गोरों पर हमला बोल दिया।

*

जनरल हावेल तेजी से अपनी पलटन के साथ बढ़े जा रहे थे। उन्हें पता लग चुका था कि विपक्षियों का एक बड़ा दल फतहपुर डटा हुआ है। अगर यह दल रेनडे की टुकड़ी से भिड़ गया तो अंग्रेजों की करारी हार होगी। रेनडे की पलटन की शक्ति बहुत कम है।

समय पर अगर रेनडे को मदद नहीं मिलेगी तो करारी मात हो सकती है। हावेल बिना रुके बढ़ते जा रहे थे। राह में पड़ने वाले गावों को आतंकित करने का कार्यस्थगित कर दिया गया था, क्योंकि इससे विलम्ब हो जाने की संभावना थी।

हावेल रेनडे की टुकड़ी से जा मिले।

चाँदनी रात में उन्होंने दूर से ही रेनडे के दल को पहिचान लिया और उससे मिल गए।

फतहपुर अब थोड़ी ही दूर रह गया था। हावेल और रेनडे की टुकड़ियाँ मिलकर काफी शक्तिशाली हो गईं। हावेल ने संतोष की साँस ली। अकेले रेनडे से तो बागियों का हौसला और बढ़ जाता।

पूरा दल दुगुने वेग से फतहपुर की ओर बढ़ा।

डंके की आवाज के साथ सेना कूच करती जा रही थी और आगे कम्पनी का झंडा फहरा था अंग्रेजी पलटन को आते देख गाँव के लोग घर-घर छोड़ छोड़ भाग जाते। जिस स्थान से यह पलटन निकल जाती, उसी ओर आतंक फैल जाता। सारी रात सेना चलती रही और सुबह सात बजे फतहपुर से चार मील पीछे बेलिन्दा पर पलटन ने पड़ाव डाल दिया।

सैनिक विश्राम करने लगे।

❀

"आठ तोपों के अलावा!"—पालिसर बोला—"हमारे साथ चौदह सौ गोरे, छह सौ हिन्दोस्तानी सिपाही हैं। इतनी ताकत काफी है। ज्वालाप्रसाद तो नया-नया आदमी है। क्या लड़ेगा!"

"ठीक है!"—रेनडे बोला—"सब तो है, पर अपने साथ के इन हिन्दोस्तानी सिपाहियों का मुझे विश्वास नहीं!"

हावेल चौंक पड़े—"क्या मतलब?"

"हमारे साथ ये सिपाही हैं तो, पर बड़ा मुश्किल यह है कि इन लोगों में आपस में न जाने क्या क्या फुस-फुस होता है!"

"तो एकदम करो। हिन्दोस्तानी पलटन को सबसे आगे करो। अगर कुछ गड़बड़ करें तो हथियार लेकर विदा दो!"

"हाँ, इन लोगों की वफादारी का सुबूत तो लड़ाई के मैदान ही मिलेगा। हमारी योजना में इन लोगों पर निर्भर रहने का कोई भी काम नहीं है।"

"अवश्य!"

इसी विचार,विमर्श के समय दूतों ने आकर खबर दी कि नाना साहब की पलटन चली आ रही है। इस दल का नेतृत्व ज्वालाप्रसाद कर रहा है। सूचना पाते ही हावेल ने रण डंका बजवा दिया। सारी पलटन एकदम तैयार होकर आगे बढ़ी।

❀

जय घोष करती हुई ज्वालाप्रसाद की टुकड़ी सामने आयी। आगे तोपें थीं। गोरी पलटन देखते ही तोपों के मुँह खोल दिए गए। बंदूकें कड़कने लगीं। गोरी पलटन भी एकदम तैयार थी। उसने भी उत्तर दिया और युद्ध प्रारम्भ हो गया। गोलों और गोलियों की बौछारों के साथ दोनों पलटनें एक दूसरे को मात देने के लिए आगे बढ़ी।

ऊँचे टीले पर खड़े ज्वालाप्रसाद गोरी पलटन की सेना देख क्षण भर को घबड़ा गए। इतनी बड़ी संख्या में गोरे जाँयगे, इसकी तो कोई खबर ही न थी। संख्या की दृष्टि से ज्वाला प्रसाद की पलटन आधी भी न थी। उन्हें तो केवल रेनडे की छोटी सी टुकड़ी आने की सूचना थी। इस पर भी ज्वालाप्रसाद ने साहस न हारा और अपने खास रिसाले के साथ आक्रमण के लिए तैयार हो गए।

सिपाहियों के पास पुरानी बन्दूकें ही थीं, जिनकी मार अधिक दूर की न थी। गोरी पलटन के पास नई बन्दूकें थीं, जिनकी मार दूर तक जाती थी। गोरी पलटन के आक्रमण से सिपाहियों की शक्ति घबड़ा गई। गोरी पलटन में पहिले सबसे आगे हिन्दोस्तानी सिपाही ही आए। एक तो अपने ही भाईयों पर गोली चलाने के कारण उनका उत्साह ढीला पड़ गया था, दूसरे वे सब इसका ख्याल न कर दुगुने वेग से आक्रमण कर रहे थे।

सहसा हिन्दोस्तानी सिपाहियों को पीछे हटा गोरी पलटन सामने आ गयी।

बागी बड़े वेग से टूटे।

"आगे बढ़ो!"—मौलवी लियाकत अली की ललकार सुन मुसलमान सिपाही अंग्रेजी सेना के बीच घँस गये। इसी समय ज्वालाप्रसाद अपने खास रिसाले के साथ कूद पड़े। इस दुतरफा मार से अंग्रेज घबड़ा गए। भगदड़ मच गई पर तुरन्त हावेल कूद पड़े।

ज्वालाप्रसाद ने अपना घोड़ा बढ़ा हावेल को घेर लिया।

युद्ध ने भयंकर रूप धारण कर लिया। हावेल की रक्षा के लिए गोरे दौड़े। ज्वाला प्रसाद के तरफ से सभी घबड़ा रहे थे। सैनिकों को गिराते हुए वह हावेल पर ही वार करते, पर निशाना चूक जाता। सहसा रक्षक दल का नजीब खाँ अपने साथियों के साथ दौड़ा और हावेल को पीछे कर खुद भिड़ गया।

अंग्रेजी सेना ने अपनी तोपों का रुख मोड़ दिया जबकि बागियों की तोपें यथावत् रहीं।

गोलाबारी के कारण बागियों को पीछे हटना पड़ा।

ज्वालाप्रसाद के बहुत से सिपाही मारे गए। गोलों की मार के आगे हर कदम पीछे ही गया। गोरी सेना तोपों के साथ आगे बढ़ती हुई खदेड़ चली। इस भागदौड़ में तोपें न खींची जा सकीं। तोपों का प्रधान मारा जा चुका था। अतएव उधर की व्यवस्था करने वाला कोई न था। ज्वालाप्रसाद को तो कुछ युद्ध का अनुभव था नहीं। पहिली बार वह युद्ध में आए और वह भी नायक बनकर। इतना ही कर गुजरना उनके लिए बहुत था।

मैदान से तोपें छोड़ भागना पड़ा। कोई दो सौ आदमी उनके दल के मारे गये।

❀

अंग्रेजी सेना रण-वाद्यों की ध्वनि के साथ फतहपुर की ओर बढ़ी। अंग्रेजी सेना के आने का समाचार पाते ही शहर में भगदड़ मच गई। शीघ्रता से भागने वाले लोग ही भाग सके और बाकी सब अंग्रेजी सेना के आ जाने के कारण घिर गये।

फतहपुर पर कम्पनी का झंडा फहरा दिया गया। फतहपुर पर अंग्रेजों का अधिकार हो गया। हावेल ने सबसे पहिले यही काम किया कि अपनी पलटन के हिन्दोस्तानी सिपाहियों के हथियार वर्दियाँ ले लीं और उन्हें बिदाकर दिया। छह सौ देशी सैनिक अकारण ही संदेहवश निकाल दिए गए। इन लोगों ने चुपचाप अपनी राह पकड़ी।

दूसरे ही दिन प्रातः काल गोरी सेना सारे शहर में छा गई और लूटमार, गिरफ्तारी, हत्या का बाजार गर्म हो गया। कुछ गोरे अपने साथ तोपें लेकर चल रहे थे। बड़े-बड़े मकान उन तोपों से गिरा देते और उन मकानों में आश्रय लिए लोग कुत्ते बिल्ली की तरह दब कर मर जाते। सारे शहर में हाहाकार मच गया। अकारण ही नागरिकों के घरों में घुसकर तोड़-फोड़ की गई। उन्हें पीटा गया। स्त्रियों और बच्चों को सड़कों पर घसीटा गया। कन्याओं और युवतियों को गोरों ने भ्रष्ट किया।

नगर सिसक उठा।

ऐसा लग रहा था कि तैमूर खाँ, चंगेजखाँ के वंशज फतहपुर आ गए।

नगर तबाह कर डाला गया। बागियों का शासन स्वीकार करने के अपराध में किसी भी नागरिक को अछूता नहीं छोड़ा गया। नगर महाश्मशान सा हो गया। दिन में ही मेढ़कों और झिल्लियों की अवाज सुनायी देने लगी। मुर्दों के जलने की बू आने लगी।

❀

तात्या टोपे गम्भीर हो गया। अजीमुल्ला के होठों की मुस्कुराहट उड़ गई। नाना साहब कुछ सोच में पड़ गये। पट्टियाँ बाँधे बैठे ज्वाला प्रसाद तीनों की ओर देखकर सिर झुका चुप हो गए।

"हुँ!"—नाना साहब ने मौन भंग किया—"तो अंग्रेज आ गए। कहो तात्या, हमारी मदद के लिए बाहर से और कौन-कौन आ रहे हैं?"

"खबर प्रायः सबके पास जा चुकी है!"

"खबर से क्या मतलब? आ कौन-कौन रहा है?"

"नाना साहब, मनुष्य को हमेशा अपनी ही बाहुओं पर भरोसा रखना चाहिए। अंग्रेज आ गये हैं, तो हम उन्हें खदेड़ेंगे भी!"

"फतहपुर तो हाथ से गया!"

"जी नहीं!"—तात्या बोला—"बालाराव को फिर मुकाबले के लिए भेजिए। वह उनका रास्ता रोके और तब तक हम इधर अपनी तैयारियाँ पक्की कर लें। हम अंग्रेजों को परास्त करके ही दम लेंगे। यह तो असावधानीवश एक साधारण सी हार थी! हो गई!"

"तुम्हारी क्या राय है, अजीमुल्ला?"

"तात्या ठीक कहता है। बाला राव को आगे बढ़ रोकने दीजिए। तब तक हम भी तैयार!"

"तो ठीक है! यही होगा!"

अजीमुल्ला चुपचाप उठ गया। ज्वाला प्रसाद की पराजय से उसका मन खिन्न था। अजीमुल्ला को विश्वास हो गया कि अंग्रेज बड़े ही संगठित ढंग से नए

हथियारों के साथ आ रहे हैं। साथ ही हिन्दोस्तानी सिपाहियों की मदद पर वे तनिक भी निर्भर नहीं हैं। अब आसार अच्छे नजर नहीं आ रहे हैं। गत कई वर्षों से बनने वाली योजना आज मौके पर चूर-चूर हो रही है। बगावत हर तरफ है। संगठन कहीं नहीं। तात्या बार-बार पड़ोसी सूबों के बागियों को खबर पर खबर भेज रहा है कि सब संगठित हो कर इधर चले आँय, पर कोई भी आने का नाम नहीं ले रहा है। सब दो दो बित्ता जमीन के खुद-मुख्तार हो नवाब बन बैठे हैं। वे समझते हैं, अब उनका राज हो गया। अंग्रेजी अमलदारी उठ गई। अब किसी का राज नहीं रहा। वे भूल जाते हैं कि कलकत्ते में बैठा गवर्नर जनरल हाथी की शक्ति के साथ उसी गति से सबको कुचलने बढ़ा चला है और यहाँ सब तिनके की तरह उड़ रहे हैं। मिल-बँटकर रस्सा बन जाँय तो इस अंग्रेजी हाथी को बाँध खन्दक-गिराते देर न लगे, पर इस देश के भाग्य में अभी शायद गुलामी ही लिखी है।

सामने ही बीबी-घर दिखलायी पड़ा।

अंग्रेज स्त्री बच्चे......

हुँ। इन सबको अब कत्ल कर दिया जाय। इनकी लाशें ही यहाँ पड़ी रहना चाहिये। अगर कानपुर पर अंग्रेजों का अधिकार हो जाता है, तो कम से कम उन्हें यह तो मालूम ही हो जाना चाहिए कि खून का बदला खून लेने की ताकत, हिन्दोस्तानियों में अब भी है। ईंट का जवाब पत्थर से दे सकते हैं। यहाँ पड़ी ये लाशें हमेशा अंग्रेजों को सावधान करती रहेंगी कि तुम्हारी हुकूमत भी एक दिन इसी गति को प्राप्त होगी। अपनी इस कल्पना पर अजीमुल्ला हँस पड़ा।

इन लोगों को ठिकाने लगाने का इन्तजाम करना चाहिए। कदम बढ़ा, अजीमुल्ला बीबी घर आया।

"हुसैनी..."

"......"

हुसैनी हन्टर से एक छोटे बच्चे को पीट रही थी। बच्चा अपनी माँ को बचाने के लिए माँ से लिपट गया था। हुसैनी का हन्टर किसी पर रहम करना न जानता था।

"हुसैनी...!"

"जी !"

"इधर आओ !"

अजीमुल्ला उसे एकान्त में ले गए। मौत के डर से तमाम औरतों बच्चों के चेहरे भयानक हो गए। सब जिंदा लाशों से सहमे हुए थे।

"हुसैनी, अब इन सबको खत्म करो।"

"जो आपका हुक्म ?"

"बन्दूक, तोप जो भी ठीक समझो। खत्म करो और इनकी लाशें इसी घर में बंद कर दो।"

"अच्छा।"

हुसैनी को मन माँगी मुराद मिल गई। उसके अन्तर का क्रूर पिशाच अट्टहास कर उठा। अहा ! जिस तरह से उसके शौहर की गति हुई उसी गति को ये सब भी प्राप्त हों। बन्दूकों की गोलियों से तड़फ-तड़फकर मरेंगे या तोपों के मुँह से उड़ इनके शरीर छित्ती-बित्ती हो जाँयगे !

❀

कुँवर सिंह ने अपने स्थान से उठकर अपने मित्र का स्वागत किया। और तमाम लोग भी उठ खड़े हुए। आगे बढ़कर कुँवरसिंह अजीमुद्दीन हुसैन से गले मिले। फिर हाथ पकड़कर अपने पास बैठाया।

"बहुत दिनों बाद आए ?"

"हाँ भाई"—हुसैन बोले—"आजकल बहुत झंझटें बढ़ गई हैं। डिप्टी कलक्टरी तो सिर का बोझ बन गई है। सिपाही समझाने पर भी मान नहीं रहे हैं। उधर कलकत्ता से गोरी पलटन चली आ रही है। बेकार खून खराबी से क्या फायदा !"

कुँवरसिंह गंभीर हो गए। हुसैनी का रंग-ढंग देखकर उन्हें आभास हो गया। अवश्य ही किसी खास काम से वह आया है। पिछली बार टेलर के सामने वह अपनी स्थिति स्पष्ट कर चुके हैं, पर मालूम होता है कि टेलर उनसे संतुष्ट ही नहीं हुए।

"अंग्रेजी अमलदारी की ताकत बहुत है। सरकारी आफीसर होने की वजह

से मैं जानता हूँ कि उसकी ताकत क्या है ? इतनी आसानी से तो यह हुकूमत मिट नहीं सकती, जैसा कि सिपाहियों ने सोच रक्खा है !"

"हुँ ।"

"मैं इसीलिए आया था कि आप मेरे साथ पटना चलें । कमिश्नर साहब ने आपको याद फरमाया है !"

"हुँ ।"

"वे चाहते हैं कि इस समय आप उनकी कुछ मदद करें ।"

"हुँ ।"

"......"

"पटना के और सब हाल चाल ठीक हैं । हरेकृष्ण को मैंने उसी तरफ सिपाहियों के हाल चाल लेने भेजा है । मुलाकात तो होगी ।"

"जी हाँ, मिले थे कहा है, सिपाहियों के रंग-ढंग देखेंगे ! जैसी बात होगी आपको खबर देंगे । इसी बीच कमिश्नर साहब ने हुक्म दिया कि मैं आपको साथ लेकर उनके पास आऊँ । शायद कोई बहुत जरूरी काम आ पड़ा है, इसीलिए मैं दौड़ा चला आया !"

"अच्छी बात है !"—कुँवरसिंह बोले—"मैं अपने साथियों से मशविरा कर लूँ । आजकल जमींदारी का सारा कारोबार चौपट हो रहा है । जब से बेटा गया, तब से कुछ ध्यान ही नहीं गया । आप आराम करें । मैं आपको इत्तला दूँगा । हाँ !"—कहते-कहते कुँवरसिंह का गला भर आया । बुढ़ापे में बेटे की मौत उनके लिए बड़ी मँहगी सिद्ध हुई थी ।

हुसैन चुपचाप उठ गया ।

हुसैन के जाने के बाद कुँवरसिंह का मस्तिष्क चक्कर काटने लगा । टेलर के इस दुबारा निमन्त्रण में कुछ न कुछ रहस्य अवश्य है । हुसैन को यकायक भेज देना कुछ मायने रखता है । कहीं गिरफ्तार करने की योजना तो नहीं । शायद उनके पिछले उत्तर से टेलर के मन में संदेह घर कर गया हो । जमींदारी तो अंग्रेज खा ही गये । अब क्या रही सही प्रतिष्ठा भी खा जाना चाहते हैं ।

"आप किस सोच में पड़ गए ?"—रणदलनसिंह बोला ।

"सोच रहा हूँ, टेलर ने इस बार अब क्यों बुलाया ?"

"......"

"और वह भी हुसैन को भेजकर। इसका मतलब यह है कि कुछ दाल में काला है और मेरे एक गहरे दोस्त को भेजकर वह इस कालेपन को ढँकना चाहता है। याने उसने ऐसी चाल चली है कि मैं उसके पास जरूर जाऊँ !"

"अवश्य !"—रणदलनसिंह ने कहा–"बाबू साहब, मुझे भी शक है। पटना में तीन मौलवियों की गिरफ्तारी की बात तो आपको मालूम ही होगी। कैसा नाटक रचकर टेलर ने उन तीनों को गिरफ्तार कर लिया !"

"हाँ !"

"क्या वही बात आप पर लागू नहीं हो सकती ?"

"क्यों नहीं ! पता नहीं, मुझे भी धोखे से गिरफ्तार कर मेरे साथ न जाने क्या सलूक करें। बाप-दादे की इज्जत मिट्टी में मिल जाय। और साथ ही..."

"लेकिन काका जी !"—रिपुभंजनसिंह बोला—"आपको जाना चाहिए। इस समय शान्ति से जाना अच्छा है। कहीं ऐसा न हो कि आपको गोरी पलटन के पहरे में पटना जाना पड़े !"

रणदलन ने घूरकर बाबू साहब के भतीजे की ओर देखा। बाबू साहब के बेटे की मौत के बाद अब ये भाई-भतीजे यही तो चाहते हैं कि बाबू साहब किसी प्रकार आँखों से दूर हों और यह सारी सम्पत्ति हड़प ली जाय। अगर बाबू साहब पटना में पकड़ लिये जाते हैं, तो फिर इन लोगों की क्या पूछना पाँचों घी में हैं।

"मैं सोचूँगा। क्या करना चाहिए ?"

"सोचिएगा क्या ?"—रणदलन बोला—"अभी आप हुसैन से कह दीजिये कि वे चलें। आपकी तबीयत कुछ खराब है। ताकत आते ही ब्राह्मणों से मुहुर्त दिखवाकर आप पहुँचेंगे इसी बीच हरेकृष्ण आ जाता है। दानापुर की जैसी हालत हो वैसे काम किया जाय !"

"अच्छा !"

कुँवरसिंह ने अपने सलाहकार की बात स्वीकार कर ली।

❀

बालाराव अपने सिपाहियों के साथ बढ़ते आए। अवंग से छह मील दूर

पड़ाव डाला। अवंग में ही अंग्रेजी पलटन पड़ी हुई थी। फतहपुर तबाह कर गोरी सेना कानपुर के रास्ते थी। रात भर बालाराव ने अपनी सेना की पूरी व्यवस्था की। सारी तैयारियाँ और व्यूह रचना की बात अफसरों को समझाकर सबेरे पहर कुछ देर सोने के लिए चले गए।

तीन घंटे के आराम के उपरान्त बालाराव आगे बढ़े। तोप छोड़कर उन्होंने अपने आने की सूचना शत्रु को दी।

शत्रु पक्ष भला असावधान बैठ सकता था। उसे सबेरे ही बालाराव के आने का समाचार मिल गया था और पूरी पलटन के साथ हावेल बढ़े आ रहे थे। अवंग से चार मील की दूरी पर ही दोनों पक्षों का सामना हो गया। बालाराव अपनी सेना के साथ शत्रु पक्ष पर टूट पड़े।

गोलियाँ गड़गड़ा उठीं। तोपों के मुँह खुल गए। लाश पर लाश गिरने लगीं। क्षण भर में ही घमासान युद्ध शुरू हो गया। ज्वालाप्रसाद से छीनी गईं बारह तोपें बालाराव के सैनिकों पर गोलों की बरसाकर रही थीं। वीर सिपाही तनिक विचलित न हुए और शत्रु पक्ष को बुरी तरह हानि पहुँचाने लगे।

स्वयं बालाराय ने एक टुकड़ी के साथ अंग्रेजों की व्यूह पंक्ति को भेद उनके पीछे पहुँच आक्रमण शुरू कर दिया। शत्रुओं की सेना द्वारा दो ओर से घिरकर अंग्रेजों की शक्ति त्राहि-त्राहि कर उठी। इस कहर की मार से हावेल और रेनडे एकदम घबड़ा गए।

हावेल ने अपना घोड़ा बढ़ाया। रेनडे भी दौड़ा। दोनों ने तोपों की कमान सँभाली। एक कमान सामने के शत्रुओं पर और दूसरी कमान पीछे के शत्रुओं पर अन्धाधुंध गोलाबारी करने लगी। इस गोलाबारी से गोरे सैनिकों के पाँव जमे और बालाराव के पाँव इस मार के आगे लड़खड़ा गए। उन्हें पीछे हटना पड़ा।

अंग्रेजों की बंदूकों की लंबी मार से भी काफी हानि हो रही थी।

व्यूह टूट गया। बालाराव पीछे हट चले। अंग्रेजी सेना तोपों, बंदूकों की मार से बागियों की लाशों के ढेरों को कुचलती हुई आगे बढ़ने लगी।

❀

"रेनडे ! हरी अप ! तुरन्त दौड़ो ! पुल न टूटने पाये ! मैं भी आ रहा हूँ !" —हावेल ने आदेश दिया।

दूतों से सूचना मिल चुकी थी कि बालाराव की हारी हुई सेना कानपुर की ओर भागी जा रही है। रास्ते में पड़ने वाले पांडूनद के पुलों को तोड़ती जायगी। अगर ये पुल टूट जाँयगे तो अंग्रेजी सेना का आगे बढ़ना बड़ा मुश्किल हो जायगा। भारी भरकम तोपें कैसे पार जाँयगी !

आदेश पाते ही रेनडे अपनी टुकड़ी के साथ दौड़ा। कड़ाके की धूप में गिरती-पड़ती अंग्रेजी सेना दौड़ती चली। सब दौड़ते गए। पसीने से लथपथ। जो रास्ते में बेहोश गिर गये, उन्हें वैसे ही छोड़ दिया गया। पीछे से आनेवाली टुकड़ी उनकी देख भाल करेगी ही।

दौड़ते हुए रेनडे अपनी टुकड़ी के साथ पुल पर आ धमके। देखा। सच-मुच पुल उस पार से तोड़ा जा रहा था। एक पुल अभी बाकी बचा था। तुरन्त रेनडे ने हमला करने का आदेश दिया। बंदूकें गड़गड़ाने लगीं। फिर दोनों पक्ष जोर-शोर से लड़ने लगे। रेनडे अपने साथ एक ही तोप लाया था। यह तोप विपक्षियों को रोक न सकी। फिर भी उनकी पुल तोड़ने की कार्यवाही तो रुक ही गई।

शत्रु पक्ष की संख्या कम देख बालाराव द्रुत वेग से संहार करने लगे। घायल होने के बाद भी पीछे न हटे। इसी बीच रेनडे मारा गया। रेनडे के गिरते ही गोरे भागे। सिपाहियों ने जयघोष किया। अभी उनके जयघोष की ध्वनि गिरी भी न थी तोपें गड़गड़ा उठीं।

हावेल आ गये।

भगदड़ मच गई। पुल तोड़ा न जा सका। हावेल ने अपनी शक्ति के बल पुल पर अधिकार कर शत्रुओं को खदेड़ दिया।

घायल बालाराव डोली में अपने सैनिकों के साथ कानपुर लौट चले। हावेल को परास्त न कर सके। विश्राम न कर हावेल भी कानपुर की ओर बढ़ चले। फतहपुर के बाद कानपुर पर कंपनी का अधिकार अत्यावश्यक है। पता नहीं, वहाँ घिरे अंग्रेजों की क्या दुर्दशा होगी ?

❀

अंग्रेजों को मारने-काटने के बाद दानापुर के सिपाही गंगा तट की ओर बढ़े। नावें एकदम तैयार खड़ी थीं। तमाम सिपाही अपने हथियारों और हरबों के साथ गंगा पार उतर गये। जय-घोष करती हुई कई टुकड़ियाँ उस पार गईं। इधर-उधर गड़बड़ी करते हुए बहुत से बागी तथा अन्याय सिपाही भी खबर पाकर गंगा तट दौड़े। नावें बराबर चल रही थीं। चार पाँच घन्टे में सैकड़ों सिपाही उस पार इकट्ठे हो गए। डंका बजा। झंडा फहराया गया और कुँवर सिंह की जय के साथ बागी सिपाही आगे बढ़ गए। आरा की ओर तमाम बागी चल पड़े।

हरेकृष्ण भी इन सिपाहियों से आ मिले। रास्ते में पड़ने वाले गाँवों के लोग भी बाबू कुँवरसिंह का नाम सुनकर इस पलटन के साथ मिलते गए। संख्या बढ़ती गई और आरा आते-आते हजारों की सख्या में देश की आजादी के दीवाने आ मिले।

इन बागियों के आते ही आरा के तमाम अंग्रेजों में भय फैल गया। तमाम अंग्रेज कुछ हथियारों के साथ एक दुमंजिले पक्के मकान में शरण के लिए इकट्ठे हो गए। जल्दी-जल्दी में जो कुछ इकट्ठा कर सके, उतना ही उन लोगों ने बहुत समझा।

हरेकृष्ण के आदेश से आरा में बागियों ने किसी प्रकार की लूटमार, गड़बड़ी नहीं की। बाबू कुँवरसिंह को लाने के लिए आदमी भेजा गया। सिपाही कुँवर सिंह के आने की प्रतीक्षा करने लगे। हरेकृष्ण ने भी उन्हें तुरन्त आने के लिए लिखा था।

खबर पाते ही बाबू कुँवर सिंह जगदीशपुर से आ गए।

उनके आदेश से ही तमाम सिपाहियों ने अपने हथियार रोककर उन्हें सलामी दी। हरेकृष्ण ने बाबू कुँवरसिंह के सामने सिर झुकाकर कहा—"सिपाहियों को आज्ञा दीजिए कि वे अपने हथियार उठायें!"

"मैं आज्ञा देता हूँ।"

"आप भी अपने हथियार उठाइए!"

बाबू कुँवर सिंह के तलवार खींचते ही सिपाहियों ने अपनी बन्दूकें तान कर गगनभेदी जय घोष किया। बन्दूकों की सलामी दी गई। झंडा फहराया गया

और हरेकृष्णा ने बाबू कुँवरसिंह को अपना शासक घोषित किया। सिपाहियों का यह देश प्रेम देखकर बूढ़ा सिंह दहाड़ उठा।

"आज से हम अंग्रेजी अमलदारी के खिलाफ प्राण रहते युद्ध करेंगे। यह देश हमारा है। यह धरती हमारी है। हम गुलाम नहीं रह सकते।"

"बाबू कुँवरसिंह की जय!"

गगनभेदी जय जयकार से धरती थर्रा उठी। बाबू कुँवरसिंह ने विद्रोह का झंडा सँभाला। बूढ़े शरीर में मातृ-भूमि की स्वाधीनता के लिए युवकों सा जोश आ गया।

❀

चीनहाट की पराजय बड़ी मँहगी पड़ी। मच्छी भवन और रेजीडेंसी में तमाम अंग्रेज घिर गये। शेष लखनऊ पर बागियों का पूरा अधिकार हो गया। बागियों ने लखनऊ पर अपना शासन कर लिया और घिरे हुए अंग्रेजों को खत्म करने के लिए उनका योजनाएँ बनने लगीं। रेजीडेंसी और मच्छी भवन में थोड़ा ही फासला था। इस फासले के बीच भी बागी आ गए थे।

लारेंस बड़ी चिन्ता में पड़े। सहायता के लिए तुरन्त चारों ओर खबर भेज दी।

मच्छी भवन में लड़ाई का काफी समान था। दीवारों पर तीस तोपें चढ़ाकर घिरे हुए अंग्रेज अपनी रक्षा कर रहे थे। काफी तादाद में बारूद और गोले भी थे। मच्छी भवन की कमजोर हालत के कारण सबकी रक्षा कर सकना कठिन दीख पड़ रहा था।

लारेंस ने युक्ति निकाली।

मच्छी भवन के अंग्रेज गोलों और बारूद में आग लगाकर रेजीडेंसी में ही साथ आ जाँय। रेजीडेंसी की छतों पर चढ़कर मच्छी भवन के अंग्रेजों के पास संदेश भेजा गया लारेंस के आदेशानुसार काम हुआ।

रात के सन्नाटे में गगनभेदी धड़ाका हुआ। बारूद और गोलों के स्टाक में आग लगा दी गई। इस भयंकर धड़ाके के कारण आस-पास पड़े सिपाही भाग खड़े हुए और मच्छी भवन के तमाम अंग्रेज दौड़कर रेजीडेंसी म आ गए।

सवेरे घेरा डालने वाले सिपाहियों को इस चालाकी का पता चला। मच्छी भवन का घेरा उठ गया और अब रेजीडेंसी को ही चारों ओर से घेरकर अंग्रेजों

को खत्म करने के लिए बागी आ डटे। रेजीडेंसी में घिरे अंग्रेजों के पास तोपें थीं, हथियार थे। रेजीडेंसी की दीवारों पर तोपें चढ़ी थीं। गोले बराबर सिपाहियों पर छूटते और मौका देखकर गोलियाँ भी बरसतीं।

मच्छी भवन से अंग्रेजों के भाग जाने के कारण सिपाहियों का हौसला बढ़ गया। वे कब हिम्मत हारने वाले थे। अंग्रेजों की नाजुक हालत का उन्हें पूरा विश्वास हो गया। जोर-शोर से सब रेजीडेंसी को घेर हमला करने लगे। उनकी भी तोपें शान्त न रहीं।

लारेंस भी आवश्यक व्यवस्था करने में लग गये। दोनों ओर से आक्रमण जारी थे। लारेंस तोपों की देख-भाल का इन्तजाम ठीककर अपने कमरे में आये। उनके आते ही कोई चीज धड़ाके के साथ फटी और लारेंस चीखकर गिर पड़े। धुँआ साफ होने पर देखा गया। लारेंस की जाँघ में बहुत गहरा घाव था। गोले की चोट में उस अंग को बहुत क्षति पहुँच चुकी थी।

रेजीडेंसी में खलबली मच गई!

डाक्टर फरार ने सर हेनरी लारेंस की देख-भाल की। लारेंस पहिले से ही बहुत कमजोर थे और इस घाव के कारण काफी खून जाता रहा। सबेरा होते न होते लारेंस दुनिया से कूच कर गए।

कर्नल हेलिंग्स ने उनका कार्य भार सँभाला, पर अब अंग्रेजों के सामने स्थिति विकट थी।

❀

विलसन ने अपना कार्य भार सँभालते ही हडसन की राय के अनुसार सबसे अधिक ध्यान बागियों को रोकने की ओर दिया। बागी सिपाही बराबर दिल्ली में घँसते जा रहे थे और उनकी ताकत बढ़ती जा रही थी। इसलिए इनको रोकने की योजना बनाई गई।

विल्सन एक टुकड़ी और तोपों के साथ काश्मीरी दरवाजे को अपना लक्ष्य बना ठहर गये। काश्मीर दरवाजे से ही अधिकतर बाहर के बागी सिपाही दिल्ली में घँसते जा रहे थे। थोड़ा ही देर बाद खबर लगा कि कुछ बाहर के बागी दिल्ली आ रहे हैं।

विल्सन एकदम तैयार !

बागियों को देखते ही उनका रास्ता रोकने के लिए तोपों से धुँआधार गोलों की बरसा शुरू हुई। पहिले तो बागी घबड़ा गए पर दूसरे ही क्षण वे सब भी सँभल गये। दो बार बागी बचकर दिल्ली में पहुँच गये और इसकी सूचना वहाँ दी।

दिल्ली के सिपाही दौड़े !

इस तरह अंग्रेज दो तरफ से घिर गए। विल्सन को अपनी टुकड़ी और तोपों के साथ मैदान छोड़ भागना पड़ा। काफी क्षति उठानी पड़ी और बागियों को रोका भी न जा सका।

विल्सन को अपनी यह योजना त्याग देना पड़ी। बड़े पैमाने पर बागियों से मुकाबला करने की योजना बनने लगी।

ॐ

चार पाँच अंग्रेज बच्चों की उमर कुछ अधिक थी। उन सबको बाहर निकाला गया। बीबीघर के आँगन में खड़ा किया गया। हुसैनी ने बन्दूकधारी सिपाहियों को इशारा किया। उन बच्चों की माताएँ हाहाकार कर उठीं। अन्य स्त्रियों में भी चीख पुकार मच गई।

हुसैनी ने दूसरा संकेत किया।

ठाँय ! ठाँय ! ठाँय !!

हुसैनी अट्टहास कर उठी। गोली खा अंग्रेज बच्चे गिरे। तड़फ-तड़फकर उन सबने दम तोड़ दी। औरतों की दशा और बुरी हो गई। इस दृश्य से वे आतंकित हो अपने बाल नोंचने लगीं। वस्त्र फाड़ने लगीं और बहुतों ने दीवारों से अपना सिर धुनना प्रारम्भ कर दिया।

"ठहरो, कुतियो !"

हुसैनी हन्टर ले टूट पड़ी। सबको उसने पीटना शुरू कर दिया। पीटते-पीटते हाथ थक गए तो वह हाँफती हुई बाहर आयी।

"अब औरतों की पारी है !"

"......"

"अपनी बदूकें तैयार करो। अच्छा हो, अगर तुम लोग तलवार से इनके अंग-अंग काट काटकर इनको मारो।"—हुसैनी ने दाँत पीसकर कहा।

"हम औरतों पर हाथ नहीं उठा सकते!"

"क्या कहा कमीनो..."

"हुसैनी बीबी, जुबान सँभालकर बोलो। हम लोग औरतों पर हाथ नहीं उठा सकते हैं।"

"निकल जाओ! हट जाओ!"

क्रोध भरी हुसैनी पाँव पटकती हुई बीबी घर से निकली। उसे सिपाहियों और गोलन्दाजों पर बड़ा गुस्सा आ रहा था। औरतों को मारने के लिए तैयार ही नहीं होते! इन सबको खत्म करना जरूरी है। अजीमुल्ला का हुक्म उसे मिल चुका है। अच्छा! कमबख्तो! तुम मत साथ दो। अगर कोई साथ नहीं देगा, तो मैं खुद अपने हाथ से सबकी बोटी-बोटी पो लूँगी।

"अकरम..."

"......"

"ओ अकरम!"

"अहा! हुसैनी बीबी। क्या हुकम है।"–अकरम खानदानी जल्लाद था।

"तुम्हारे घर में कितने मर्द हैं?"

"मैं, और तीन बेटे!"

"सब चलो। मेमों का कत्ल करना है। मैं मुँह माँगा इनाम दूँगी।"

"अच्छा।"

अकरम अपने तीनों जवान बेटों के साथ हथियार लेकर चल पड़ा।

*

"अजीमुल्ला..."

"जी।"

"माताजी ने आज मुझे एक दर्दनाक बात बतलायी है"—नाना साहब का स्वर गंभीर था।

अजीमुल्ला बात ताड़ गया। मुस्कुराकर पूछा—"क्या बात है, कहिए?"

"उनका कहना है कि बीबी घर में कैद अंग्रेज स्त्री बच्चों की बड़ी दुर्दशा की जा रही है। आज कुछ बच्चों को गोली से मारा गया है और फिर तमाम मेमों को कत्ल करने की बात है।"

अजीमुल्ला ठठाकर हँस पड़ा।

"हुजूर। जरूर किसी दुश्मन ने माताजी के कान भरे हैं। यह सब गलत बात है। हाँ, मैंने एक काम जरूर किया है।"

"क्या?"

"अंग्रेज औरतें भी बड़ी खतरनाक होती हैं, नाना साहब! कुछ सिपाहियों को मिलाकर वे भागना चाहती थीं, इसलिए मैंने पहरे में सख्ती कर दी है। बस!"

"लेकिन..."

"और कोई बात नहीं है, नाना साहब! आप मेरा यकीन कीजिए। भला मैं यह सब नीच कर्म कैसे होने दे सकता हूँ!"

नाना साहब चुप हो गए।

"हाँ, यह बात जरूर है कि उनका खाना कुछ अच्छा नहीं है। भला, बढ़िया खाना कहाँ से दिया जाय। मामूली तकलीफों के सिवाय और कुछ बात नहीं है। आपकी आज्ञा के बिना कुछ नहीं होगा।"

"इसमें मेरी आज्ञा की कोई बात नहीं है। बात यही है कि औरतों बच्चों पर हाथ उठाना हमारा फर्ज नहीं है।"

"वह तो मैं जानता हूँ।

अजीमुल्ला हँस पड़ा। नाना साहब इस संबंध में कुछ और पूछने जा रहे थे कि हड़बड़ाए हुए तात्या टोपे को देख चौंक पड़े। तात्या पास आते ही फुसफुसाया—"बालाराव आ गए।"

"....."

सभी की निगाहें द्वार की ओर उठ गईं। शरीर के अनेक स्थानों पर पट्टियाँ बाँधे बालाराव दो सहायकों के सहारे नाना साहब के पास तक आए। उनकी चोटों से साफ जाहिर था कि वे काफी कमजोर पड़ गये हैं और साथ ही बहादुरी के साथ लड़े भी हैं।

"कुशल तो है ?"

"......"

"बालाराव..."

"नाना साहब, अफसोस है कि मैं पराजय का समाचार लेकर आया हूँ। हमे पीछे लौटना पड़ा इसलिए कि रेनडे के साथ हावेल भी है।"

"हावेल भी है ?"

"हाँ।"

नाना साहब ने घबड़ाकर अजीमुल्ला की ओर देखा—"ये कैसी बात हो गई अजीमुल्ला ?"

"नाना साहब, हमें तो रेनडे के ही बढ़ने की खबर दी थी। मेरे आदमी गलत समाचार नहीं ला सकते।"

"तब ?"

"हावेल तेजी से रेनडे की मदद के लिए दौड़कर साथ हो गया है।"—तात्या टोपे ने कहा—"और इसकी सूचना बालाराव न पा सके। शक्ति बहुत कम पड़ गई।"

"हुँ।"

"अंग्रेज बढ़े आ रहे हैं। कानपुर ही अब उनका लक्ष्य है।"

"तो अब क्या हो ?"

"हमें मुकाबला करना चाहिए। मैं खुद चलूँगा।" नाना बोले—"जब हमने विद्रोह का झंडा उठाया है, तो इसने झुकने न देंगे। कहो तात्या ?"

"अवश्य !"

"हावेल को आने दीजिए। हम मुकाबला करेंगे। आप लोग तुरन्त आवश्यक व्यस्था करें। अगर इसे आप लोग नहीं रोक सकते तो हम अपने बाहुबल से ही मुकाबला करेंगे।"

नाना साहब के स्वर में दृढ़ता थी।

अजीमुल्ला तात्या को नाना साहब के पास छोड़ चुपचाप चला गया। अंग्रेज बढ़ते आ रहे हैं। बालाराव भी घायल होकर आ गये हैं। अब समय नहीं है। मौत अपना पक्ष बदलने जा रही है। अब पाँसा पलटने वाला है। अपने एक

सेवक से उसने हुसैनी के पास खबर भिजवादी बस ! अब तमाम अंग्रेज स्त्री-बच्चों को इसी समय खत्म कर दिया जाय। इस शुभ कार्य में विलम्ब की आवश्यकता नहीं।

❀

"जयाजीराय की इस पलटन पर मुझे जरा भी भरोसा नहीं। ये लोग आपस में गंगा जल हाथ लेकर कसमें खाते देखे गये हैं।"

"काहे की?"

"हम लोगों के नाश की। ग्वालियर की इस सेना पर मैं विश्वास नहीं कर सकता हूँ। अंग्रेजों की रक्षा के लिए इस सेना का तैनात होना सर्वथा अहितकर होगा। आगे चलकर हम बड़ा धोखा खा सकते हैं!"

रेजीडेंट ने ब्रिगेडियर राम से बात की और विचार करते हुए कहा—"एक ही रास्ता है तब कि मैं सबको अपनी कोठी में बुला लूँ!"

"हाँ, मेरे विचार से यही एक ठीक रास्ता होगा!"

बात तय पा गई। ग्वालियर के तमाम अंग्रेज रेजीडेंट की कोठी में आ गए। आगरा, नीमच तथा जबलपुर से आने वाले समाचारों के कारण, जहाँ एक ओर अंग्रेजों के मन आतंक से डर रहे थे, वहीं दूसरी ओर देशी सिपाहियों में उत्तेजना बढ़ रही थी। ग्वालियर नरेश जयाजीराय अंग्रेजों की रक्षा का बचन दे चुके थे। अपनी शरीर रक्षक सेना भी अंग्रेजों की मदद के लिए भेज चुके थे पर इस पर भी अंग्रेजों को महाराज पर विश्वास न हो रहा था। अपने पुराने पापों के कारण उनके मन डर रहे थे कि संभव है, महाराज अपने जुल्मों का बदला लेने के लिए, इस समय अनुकूल स्थिति देखकर अंग्रेजों के खिलाफ खड़े हो जाँय।

मुरार छावनी में उत्तेजना थी। सिपाही एक दूसरे को तैयार कर रहे थे। आपस में गुप्त बैठकें चल रही थीं। बाहर से आने वाले सिपाहियों की बातें मनोयोग से सुनी जातीं तथा उनसे नाना प्रकार के प्रश्न किये जाते थे। उनकी इस गतिविधि पर अंग्रेजों की दृष्टि थी, पर इस पर वह रोक नहीं लगा पा रहे थे, कारण कि उन्हें स्वयं अपनी रक्षा का भय था।

सबेरे-सबेरे छावनी में बड़ी गड़बड़ी मच गई। अंग्रेज भाग-भागकर

रेजीडेंट कोठी में आ गए। घबराहट फैल गई कि सिपाहियों ने विद्रोह कर दिया है। ब्रिगेडियर रामसे और रेजीडेंट दौड़े, पर कहीं कुछ न था। सर्वत्र शान्ति थी। अंग्रेजों के मन राहत मिली, पर इस कायरता से सिपाहियों के हौसले बढ़ गए।

इस अफवाह को सुनकर महाराजा भी दौड़े आए। उन्होंने रेजीडेंट से अनुरोध किया कि अंग्रेज स्त्री-बच्चों को उनके राजमहल भेज दिया जाय, जहाँ वे पूर्ण सुरक्षित रहेंगे।

❀

जहाँगीरखाँ झुड़ककर बोला—"चुप रहो। मैं नामर्दों से बात करना पसन्द नहीं करता। अब तो सब अंग्रेज राजमहल में चले गए और हम लोग मुँह टापते रह गये!"

"महाराज भी तो अंग्रेजों का साथ दे रहे हैं! हम लोग महाराज के खिलाफ कैसे चल सकते हैं!"

"महाराज ऊपरी दिखावे के लिए साथ हैं दिनकर राव से मेरी बात हुई थी। उनका कहना है, सिपाही झंडा उठायें। महाराज साथ। बलदेवसिंह भी साथ हैं!"

"अच्छा!"

"कल तय रखो। अब देर करने की जरूरत नहीं है। चारों तरफ यही हाल है!"

जहाँगीरखाँ अपने घोड़े पर बैठकर चला गया। आज सवेरे से ही उसने बड़े जोर-शोर से प्रचार किया है कि दिल्ली में बादशाह की हुकूमत कायम हो गई है इसलिए आज से वह हमेशा हरे कपड़े पहिनेगा। जहाँगीरखाँ ने अपने को गाजी घोषित किया।

आसपास के क्षेत्र की भी सेना भड़क चुकी थी। अतएव ग्वालियर की सेना शान्त रह न सकी। रातोंरात तैयारियाँ पूरी कर ली गईं।

सवेरा होते ही पैदल सिपाहियों ने बन्दूकें भरीं। गोलन्दाजों ने तोपें सँभालीं और धड़ाका बोल दिया।

तोप की से कड़क खलबली मच गई। रविवार का दिन होने के कारण अधिकांश अंग्रेज राजमहल के बाहर थे और इस बात की आशंका न थी कि आज गड़बड़ी होगी, अतएव इस धड़ाके को सुनकर भगदड़ मच गई। सिपाही शोर करते हुए दौड़े। अंग्रेजों को कत्ल करना शुरू कर दिया।

अधिकांश अंग्रेज, स्त्री-बच्चे गिरते-पड़ते रेजोडेंसी या राजमहल की ओर भागे।

कुछ अंग्रेजों को मारा गया और उनकी स्त्रियों को शहर के बाहर खदेड़ दिया गया। कुछ अंग्रेज भी जान बचाकर शहर से बाहर चम्बल की ओर भागे।

रेजीडेंट मेकफर्सन यकायक इस गड़बड़ी से घबड़ा गए। तुरन्त बाहर निकले और महाराज के भवन की ओर चल पड़े। इस समय अंग्रेजों की रक्षा का प्रश्न उनके सामने था। इस कार्य को सम्पन्न करने के लिए उन्हें अपनी परवाह न थी।

रेजीडेंट घोड़े पर बैठ राजमहल की ओर बढ़े।

❀

"सिपाहियों ने विद्रोह कर दिया है। निरापराध अंग्रेजों की जान ली जा रही है। क्या करना चाहिए दिनकरराव?"

"महाराज!"—दिनकर राव ने कहा—"आप शान्त बैठिए। यदि इस समय आप अंग्रेजों का साथ देंगे तो सिपाही भी आपकी एक न सुनेंगे। साथ ही इस अवसर पर आँपको अपने प्राचीन गौरव का भी स्मरण करना चाहिए!"

जयाजी राव हँस पड़े—"तुम्हारी चालाकियाँ खूब समझता हूँ दिनकर राव। अपनी इन चालाकियों से ही तुमने मेरी प्रतिष्ठा अंग्रेजों के हाथ से सुरक्षित रक्खी है। अब इस मौके का लाभ उठाने की बात कहते हो! इसमें शक नहीं कि तुम हो बहुत खतरनाक। ठीक है। मेरे शरीर में अभी गर्म रक्त है। मैं चाहूँ तो बागियों का नेतृत्व कर सकता हूँ, पर अभी अंग्रेजों शक्ति इतनी क्षीण नहीं हुई कि हम मुट्ठी भर लोग उसे खत्म कर सकें!"

दिनकर राव चुप रह गया। वह दोनों पक्ष की बात सोच रहा था। अंग्रेजों से भी वह खुले आम दुश्मनी मोल नहीं लेना चाहता था और न ही अंग्रेजों का

साथ देकर वह सिपाहियों को महाराजा के प्रति असंतुष्ट रख सकता था। इन दोनों स्थितियों के बीच वह नये रास्ते को खोज रहा था।

राजमहल के चारों ओर बागी सिपाही इकट्ठे हो रहे थे। शहर में विशेष अशान्ति थी, पर सिपाही अंग्रेजी अमलदारी के विरुद्ध विद्रोह की घोषणा करते हुए राजमहल की ओर चले आ रहे थे। अंग्रेजों, ईसाईयों के मकानों में आग लगा दी गई थी।

बागियों के दलों के नेता, सिपाही-सेना के देशी अफसर राजमहल में इकट्ठे हो रहे थे।

"ठीक है!"—दिनकर राव ने कहा—"लेकिन एक काम तो आपको करना ही होगा कि तमाम अंग्रेजों को यहाँ से निकाल देना पड़ेगा!"

"यह हो सकता है। सुरक्षित उन्हें यहाँ से बाहर कर दिया जायगा!"

"हाँ! आज्ञा हो तो मैं अब सबको बुला लूँ!"

"हाँ!"

दिनकर राव ने संकेत किया। प्रतीक्षा करते हुए विद्रोही अफसर महाराजा के कक्ष में आए। सबने महाराज के चरणों अपने हथियार रख उनकी आधीनता स्वीकार की। महाराज ने उन सबको बैठाया। आगे की योजनाओं पर विचार-विमर्श होने लगा, पर किसी निर्णय पर पहुँचने से पहिले ही दूत ने खबर दी कि रेजीडेंट आए हुए हैं।

"रेजीडेंट मेकफर्सन?"

"जी हाँ!"

"मार दो साले को गोली! वहीं मर जाय!"

"यह हमारी परम्परा नहीं है!"—महाराज बोले—"उसे आने दो!"

दूत चला गया। कुछ ही देर में रेजीडेंट मेकफर्सन आ गए। रास्ते में कुछ सिपाहियों की कृपा से ही उनकी प्राण रक्षा हो सकी और उन्होंने रेजीडेंट को राजमहल तक पहुँचा दिया। विद्रोही पलटन के अधिकांश अफसरों को महाराजा के पास उपस्थित देखकर रेजीडेंट चौंक पड़े।

दिनकर राव मुस्कुराया—"आप किसी प्रकार की चिन्ता न करें। महाराज

ने इन सबको समझाने-बुझाने के लिए बुलाया है और यही कह रहे हैं कि इस बगावत से कोई फायदा नहीं। आप और कुछ बात न सोचे!"

मेकफर्सन को यकायक इस बात पर विश्वास न हुआ।

"तो पहिले कृपा कर उन अंग्रेजों के लिए, जो यहाँ से जान बचाकर भागे हैं, लाने के लिए घोड़ा गाड़ियाँ अभी रवाना कर दी जाँय!"

"अवश्य!"—दिनकर राव ने एक अधिकारी को तुरन्त इस काम का भार सौंप विदा किया।

इससे मेकफर्सन के दिल में कुछ विश्वास जमा। अफसरों के बीच बैठ गये। बोले—"आप लोग कहिए। क्या शिकायतें हैं। अच्छा हो। शान्ति के साथ हम लोग समझौता कर लें!"

"बात यह है!"—महाराजा बोल उठे—"ये लोग आपकी हुकूमत नहीं चाहते!"

"हाँ, हाँ!"—महाराजा की बात पर सभी बोल उठे।

"यही मैं बड़ी देर से समझा रहा हूँ। ये लोग मान नहीं रहे हैं!"

"अवश्य!"

"लेकिन मेरे विचार से आप लोगों का यह काम अच्छा नहीं होगा। इसका नतीजा बहुत बुरा हो सकता है!"—मेकफर्सन ने महाराज का शह पाकर स्वर कड़ाकर धमकी दी।

"सो तो मैं कह चुका हूँ!"—महाराजा ने हँसते हुए कहा!

"और सबसे बड़ी बात यह है कि हमारे सिपाही इस मामले में हम लोगों की कोई बात नहीं सुनना चाहते हैं।"—अफसर बोला।

"जी हाँ!"—बयाजी राम ने कहा—"सिपाहियों के इस प्रबल विरोध के कारण अपने महल में रखे अंग्रेजों की रक्षा का भार कर सकना मेरे लिए बड़ा मुश्किल पड़ रहा है। मैं तो आपको भी सलाह दूँगा कि मौका हो तो आप भी भाग निकलें। यह सब मैं आपको एक हितैषी के नाते कह रहा हूँ। तमाम सिपाही इतनी बुरी तरह बिगड़ गये हैं कि उन सबको रोक सकना बड़ा मुश्किल है।"

मेकफर्सन चिन्ताग्रस्त हो गए।

"हाँ साहब ! हम लोग आपके प्रति पूर्ण वफादार हैं, पर सिपाहियों का जैसा रुख है, उससे हम लोग मजबूर हैं !"

"महाराजा के महल में पड़े अंग्रेजों पर सिपाही बुरी तरह क्रुद्ध हैं। इसका कारण यह है कि एक दिन उन सब लोगों ने महल में ही गाय का कत्लकर उसका माँस खाया-पकाया। महाराजा के महल में मन्दिर भी है। इस वजह से और भी असन्तोष की बात है !"

"यह झूठा प्रचार है।"—रेजीडेंट बोले।

"हो सकता है, लेकिन इस समय तमाम सिपाही बिगड़े हुए हैं !"

मेकफर्सन को कोई रास्ता न सूझ रहा था। अन्ततः बोले—"यदि आप लोग ऐसा कहते हैं, तो मैं इस बात को मान लेता हूँ। हम लोगों को सुरक्षित यहाँ से चले जाने दिया जाय। इसकी व्यवस्था तो आप लोग कर सकते हैं।

"अवश्य !"

"तो हम लोगों के भेजने का प्रबंध कर दीजिए !"

❀

समाचार आते ही नसीराबाद की पैदल और गोलन्दाज टुकड़ी ने बगावत का झंडा खड़ा कर दिया। शोर सुनते ही अंग्रेज नायक दौड़कर परेड मैदान आया। देखा, दोनों टुकड़ियाँ शोर कर रही हैं और बम्बई सेना शान्त खड़ी है।

"इन लोगों के हथियार और तोपें छीन लो !"—उसने हुक्म दिया।

"ठाँय !"

अंग्रेज नायक लोट गया। बम्बई सेना ने आज्ञा का पालन किया। चुप-चाप अपने-अपने घर लौट गये सैनिक। पैदल और गोलन्दाज अपने हथियार और तोपों के साथ नसीराबाद से चल पड़े। दिल्ली बढ़ने का लक्ष्य सामने था। इस बगावत के होते ही नसीराबाद के तमाम अंग्रेज ब्यावर भाग गए। उनके बँगले और छावनियों में आग लगा पलटन नीमच की ओर बढ़ी।

❀

नसीराबाद के बागियों के आने की खबर पाते ही नीमच के सिपाहियों ने

बादशाह का जयघोष किया और अंग्रेजों के बँगले आग लगा फूँक दिए। डर के मारे तमाम अंग्रेज भाग खड़े हुए। इस भाग-दौड़ में सिर्फ एक ही मेम मारी गई। बाकी सब छू हो गए।

दोनों स्थान की सेनाएँ एक हो गईं। हथियार और तोपों के साथ आगे बढ़ीं। कोई दिल्ली चलने के पक्ष में था तो कोई इन्दौर चलने की बात करता था। सभी एकमत न थे।

❀

अकरम अपने बेटों के साथ बीबी घर आया।

"ये सब औरतें हैं। समझे?"—हुसैनी ने कहा—"इन सबको...समझे?"

"अच्छा!"

अकरम ने मेमों की ओर वैसे ही देखा, जैसे कोई भेड़-बकरी की ओर देखता है। इसके बाद वह हुसैनी से माल लेकर पीने चला गया। उतारा हुआ सड़ा महुआ उसने और उसके तीनों बेटों ने खूब छककर पिया। इसके बाद तनों आपस में खूब गाली-गलौज करते हुए बीबी घर आए।

हुसैनी बेचैनी से उनकी राह देख रही थी, क्योंकि अजीमुल्ला का हुक्म आ चुका था कि सबको अभी खत्म कर दिया जाय।

"तुम्हें मौत आए जल्दी आओ अकरम!"

"आयी मेरी बेगम!"

अकरम झूमता हुआ आया। उसके और उसके तीनों बेटे के हाथों नंगी तलवारें थीं। चारों आदमी जैसे ही बीबी घर के उस कमरे घुसे, जहाँ तमाम मेमें बन्द थीं, तो वहाँ हाहाकार मच गया। दो चार बूढ़ी मेमें भगवान की आराधना में लीन हो गई।

"मार साली को!"

"छिनाल है!"

"बकरी कटी! हः हः हः हः!!"

साग-भाजी की तरह, भेड़-बकरी की तरह चारों जल्लाद मेमों को काटने लगे। जिसके शरीर पर, चाहे जहाँ हाथ पड़ा, रक्त निकला। रक्त से सारी जमीन भर

गई। सिर अलग, धड़ अलग, हाथ पैर अलग कट-कट गिरे। नशे की झोंक में जिसके शरीर के जितने टुकड़े किये जा सके, किये गये। कुछ के तो शरीर कट जाने पर भी प्राण न निकले। एक मेम के हाथ पैर काट दिए गये। उसकी गरदन उतरने से रह गई। फलतः तड़फ-तड़फ मरी। इस मार-काट मे दो एक मेमें भाग ही निकलीं। इसका पता हत्यारों को न लगा।

"अरे! ये तो बड़ी सुन्दर है!"

"कर दस टुकड़े!"

"इसको बीबी बनाने का मन होता!"

"पहिले बीबी बना ले तो फिर तलवार से इसका निकाह कर!"

अकरम का बड़ा बेटा उस जवान मेम पर तलवार फेंक वहीं टूट पड़ा। रक्त की गन्ध, कटे शरीर के लोथड़ों के बीच सतीत्व अपहरण...उफ! इन्सानियत की मौत! हुसैनी ने देख लिया। दौड़ी। हन्टर मारे।

"कमीने, कुत्ते!"

और हुसैनी ने तलवार उठाकर दोनों को क़त्ल कर दिया। जोश में आकर हुसैनी ने बेहोश पड़ी कुछ मेमों के शरीर काट डाले।

अकरम और उसके दोनों बेटे रक्त से एकदम भीगे बाहर निकले। नशे मे तीनों बुरी तरह लड़खड़ाते हुए जा रहे थे। हुसैनी ने बाहर आकर एक क्रूर अट्ट-हास किया और बीबी घर में बाहर से ताला बन्दकर आगे बढ़ गई पर उसकी लगातार चलने वाली हँसी का उन्माद बढ़ता ही गया।

अट्टहास करती हुई, खून भींगी हुसैनी को देख राहगीर डरकर भागने लगे।

हुसैनी का अट्टहास रुक न रहा था। हँसती जा रही थी। हँसती जा रही थी। उसकी हँसी का वेग बढ़ता ही जा रहा था। पेट पकड़-पकड़ हँस रही थी। लगा-तार हँसी। हः हः हः हः हः हः!!! हुसैनी ने अपना प्रतिशोध ले लिया और इस प्रतिशोध के हर्ष में वह पागल हो गई।

हँसते-हँसते हुसैनी के पेट की नसें फट गईं और उसने खून फेंक दिया।

खून की दो तीन कै हुसैनी को हुईं और वह सड़क पर ढेर हो गिर गई।

❀

नाना धुंधुपन्त अपनी पैदल, सवार, गोलन्दाज सेना के साथ अंग्रेज सेनापति का मुकाबला करने चल पड़े। आगे-आगे रण का डंका और पेशवा का झंडा फहराता जा रहा था। पाँच हजार से अधिक सिपाही नाना साहब के साथ थे।

कानपुर से चार मील दूर दक्षिण में स्थित अहरवा पर डेरा डाला गया। अहरवा दिल्ली और कानपुर छावनी के रास्ते पर स्थित था। बाईं ओर गंगा थी। दाहिनी ओर गाँव और आमों का बाग था। युद्ध का व्यूह रचा जाने लगा।

बाईं ओर गंगा के करारों पर बड़ी-बड़ी तोपें लगाई गईं। दक्षिण ओर गाँव की सीमा और आमों के बाग में भी तोपें बैठाई गईं।

कानपुर और दिल्ली छावनी के रास्ते पर पैदल सेना और पैदलों के पीछे सवार अर्द्ध-चन्द्राकार व्यूह बनाकर खड़े हुए।

नाना साहब स्वयं सेना का संचालन हाथ में ले एकदम तैयार हो गये।

❀

सेनापति हावेल भी बढ़े चले आ रहे थे। गोरी सेना गिरती पड़ती, प्रचण्ड धूप का सामना करती आँधी-सी दौड़ी आ रही थी। अपना राज्य स्थापित करने में अंग्रेजों को जितने कष्ट नहीं उठाने पड़े; उससे कई गुने कष्टों और रक्तपात का सामना अब करना पड़ रहा है। हिन्दोस्तानियों को ही आपस में लड़ाकर अपना राज बिना किसी विशेष हानि के जमानेवाले अंग्रेजों को अब गहरी कीमत चुकाना पड़ रही है।

हावेल ने कुछ ही दूर से नाना धुंधुपन्त की सेना को देखा। इस बात का पता पहिले ही लग चुका था कि नाना साहब मुकाबला करने आ रहे हैं, पर इतनी बड़ी शक्ति का अनुमान भी न था और फिर नाना धुंधुपंत की व्यूह रचना देख उनके दाँतों-पसीना आ गया। हावेल की जिंदगी युद्ध-क्षेत्र में ही कटी थी, पर ऐसा कठिन व्यूह पहिली बार सामने था।

अपनी पलटन रोक दी। वह समझ गये ऐसे ही मुकाबला करते ही उनके यह एक हजार गोरे सैनिक और तीन सौ सिक्ख सिपाही काल के गाल चले जायगे। उनकी बुद्धि ही कुछ काम न कर रही थी। दोनों ओर तोपें और सामने पाँच हजार सैनिक!

अंग्रेजों को आया देख विपक्षी-दल जय-जयकार कर उठा। गोला छोड़कर युद्ध की चुनौती दी गई। पेशवा का झंडा ऊँचे उठा दिया गया। रण का डंका बजने लगा।

हावेल ने एक युक्ति निकाली। सबसे पहले स्वयंसेवक-सवारों को आगे बढ़ाया। पीछे तोपें रखीं और उसके बाद पैदल सेना। इस तरह हावेल आगे बढ़े। सारा नेतृत्व अपने हाथ रखा। पहिले स्वयंसेवक सवार सामने आये।

बंदूकों की मार शुरू हो गई। साथ ही नाना साहब की तोपों के मुँह खुल गये। हावेल ने अपनी तोपों के मुँह न खुलवाए। अपने ही नेतृत्व में ले चुपचाप बढ़ चले। सवारों ने पैदल सेना को उलझा लिया। गोलंदाजों का ध्यान भी इसी ओर गया। अंग्रेज सवारों पर वे भीषण गोलाबारी करने लगे।

तुरन्त हावेल ने अपनी पैदल सेना और तोपों को खेतों में ठेल दिया। तोपें कच्ची मिट्टी में कष्ट से बढ़ने लगीं, पर हावेल ने हिम्मत न हारी। केवल तोपें आगे बढ़ाई जा रही थीं। उनका उपयोग नहीं किया जा रहा था। तोपों की आड़ में बढ़ती हुई अपनी पैदल सेना की एक टुकड़ी को संगीनों के बल दुश्मन की तोपों पर कब्जा करने का हुक्म हावेल ने दिया।

युद्ध का रुख ही बदल गया।

आमों के बाग में लगी तोपों पर अंग्रेज अपने प्राण हथेली पर ले टूट पड़े। संगीनों की भयंकर मार के बल पर तोपों पर अधिकार करने दौड़े। उनमें मुठभेड़ हो गई। इसी समय अपनी तोपों का रुख तुरन्त मोड़ हावेल ने नाना साहब की सेना पर गोलाबारी का आदेश दिया। अब अंग्रेजी तोपों ने अपने मुँह खोले।

इस विचित्र आक्रमण से सिपाही घबरा गये। अर्धचन्द्राकार में खड़े सवार सैनिकों ने अपना घेरा बढ़ाया पर तब तक गोरी सेना ने छीनी तोपों पर अपना अधिकार कर हमला शुरू कर दिया। इस दुतरफा तोपों की मार से सिपाहियों में भगदड़ मच गई।

नाना साहब का सारा व्यूह लड़खड़ा गया। नाना साहब के कुछ संकेत युद्ध विद्या से अनभिज्ञ सेनानायक समझ न सके। केवल जोश में भर वे चाहे जहाँ

मार करने लगते जब कि हावेल का एक-एक सैनिक अपने सेनापति के हर संकेत को समझकर ही अपना हर कदम उठाता था।

❀

नाना साहब की सेना भागी। पीछे हटी। घबड़ाकर नाना साहब को हटना पड़ा। साथ ही तमाम तोपें भी जाती रहीं। कानपुर छावनी के रास्ते खड़ी की गई एक बड़ी तोप ही शेष रह गई थी। सिपाही इसी तोप के सहारे गोलाबारी कर गोरी सेना का बढ़ाव रोकने लगे।

हावेल ने एक टुकड़ी गाँव को घेरकर आगे बढ़ायी। दूसरी टुकड़ी दूसरी ओर से गई। इस प्रकार दुतरफा आक्रमणकर तोप पर अधिकार कर लिया गया। नाना साहब को पीछे लौटना पड़ा। करारी मात हुई। युद्ध क्षेत्र सिपाहियों की लाशों से पट गया। गोरे भी काफी मारे गये थे, पर उनकी चतुराई के कारण विजय नाना के हाथ से जाती रही।

❀

भूख-प्यास से तड़पती अंग्रेजी सेना को विश्राम की तनिक भी सलाह न दे हावेल ने तुरन्त कानपुर का रास्ता पकड़ा। यही मौका उचित है। पराजित को सँभलने का तनिक भी अवसर नहीं देना चाहिए। गोरी सेना छावनी की ओर चल पड़ी। नगर में अंग्रेजों के आने का समाचार बिजली की तरह फैल गया। अंग्रेजों ने तोपें छोड़कर अपने आगमन की सूचना दी।

"और जोर से तोपें छोड़ो!"

"......"

"और जोर से छोड़ो ताकि हमारे साथियों को मालूम हो जाय कि हम आ गए!"

"पर साहब..."

"क्या? बोलो?"

"आपके कोई साथी वहाँ नहीं हैं!"

"हैं!"

"हाँ!"

"आय।"

"हाँ साब ! सब थे। बीबी घर में कैद थे। अब उनके कटे सिर, लाशें, लोथड़े ही हैं!"

"औरतें, बच्चे..."

"सब इसी गति को प्राप्त हुए हैं।"

हावेल का खून खौल उठा। तुरन्त आगे-आगे दौड़े। देखते-देखते कानपुर शहर गोरी-सेना के कोलाहल से भर गया।

सहसा धड़ाके की आवाज हुई। बड़े जोर का धड़ाका हुआ। सिपाहियों ने गोले-बारूद उड़ा दिये। हावेल दौड़े हुए बीबी घर आए।

❀

नाना साहब उदास थे। एकदम गम्भीर। न अजीमुल्ला का पता था, न तात्या टोपे का। इस एक ही मुकाबले में उनका साहस छूट गया था। अपने चुने हुए साथियों के साथ वे एक नाव में बैठे। आदेश दिया जब चिराग बुझे तो नाव डुबो देना।

रात का अँधियारा। गंगा की छाती पर नाव आगे बढ़ी। किनारे खड़े कुछ सिपाही एकटक चिराग की ओर देख रहे थे। कुछ ही दूर पर चिराग बुझ गया और साथ ही एक छपाके की आवाज आयी।

किनारे खड़े सिपाही रो पड़े। नाना साहब ने गंगा में डूब आत्महत्या कर ली। इस पराजय की ग्लानि वह बर्दाश्त न कर सके। सिसकते सिपाही चुपचाप आगे बढ़ गए। गाँव के कुछ लोग भी आँसू बहा लौट गए।

एक वीर का कारुणिक अन्त हो गया?

❀

बीबी घर का ताला तोड़ अन्दर जाते ही हावेल थर्रा उठे। सारा कमरा स्त्रियों, बच्चों की कटी लाशों से भरा था। रक्त कीचड़ बन गया था। बच्चों की टोपियाँ, उनके जूते, मोजे, पुराने खिलौने पड़े थे। एक ओर खून से भीगी बाइबिल पड़ी थी। अत्यन्त वीभत्स और करुण-दृश्य।

बच्चों के नन्हें-नन्हें सिर कटे देखकर हावेल को गश-सा आ गया। दीवार का सहारा लेकर रह गये। दीवार पर गाढ़ा खून चिप-चिपा था। हथेलियों में लग गया। उफ !! घबड़ाकर वह बाहर भाग गए। मानो मरे हुए खून में प्राण हैं और वह चीख-चीखकर अभी भी सहायता की पुकार कर रहा है।

दुःखी हावेल तुरन्त बीबी घर से हट गये और इस सारे काण्ड की सूचना फ्रेंच में लिखकर कर्नल नील के पास एक दूत के हाथ इलाहाबाद रवाना कर दी। अपने कैम्प में आकर पड़ रहे। कानपुर अब उनके अधिकार में था। नगर पर उनके सैनिकों का राज्य था। सैनिकों का कोलाहल सुनाई पड़ रहा था। इधर-उधर मकान जल रहे थे। हावेल चुपचाप पड़े रहे। बहुत देर कर दी उन्होंने यहाँ आने में। किसी अँग्रेज को न बचा सके। स्त्रियाँ और बच्चे भी नहीं बचे। पुरुषों को पता नहीं कहाँ फेंका गया है! इतना तो अवश्य है, जीवित कोई नहीं बचा होगा।

हावेल अपना शरीर टूटता-सा महसूस कर रहे थे।

❀

अधिकांश नगरवासी भाग चुके थे। गंगा उतर आसपास के गाँवों में या अवध प्रदेश में। इस पर काफी लोग घिर गये थे। बीबी घर के हत्याकांड का पता लगते ही गोरे सैनिकों ने खूब छककर शराब पी और संगीनें लेकर नगर में दानव को नंगा नचाना शुरू कर दिया।

"हये...तोड़ो...खोलो..."

दरवाजा तोड़कर घर में घुसे। परिवार के लोग कोने में दुबके पड़े थे।

"ये है साला!"

"......"

"खच्च!"

एक चीख और बुढ़िया शान्त। पुरुषों को खींच संगीनें घुसेड़-घुसेड़ मार डाला। युवती को खींचा। नंगा किया।

"छोकरी सुन्दर हेय..."

और स्तनों पर संगीनें, युवती हाय-हायकर मर गई। संगीनों पर बच्चे की देह उठा, उछाल फेंक दी। चलते वक्त घर में आग लगा दी। हर ओर यही

दृश्य था। नगर चीखों से गूँज गया। मुहल्ले-मुहल्ले में अंग्रेजों ने जुल्म की इन्तहाँ कर दी।

अपने मुट्ठी भर साथियों की हत्या का प्रतिशोध हजारों व्यक्तियों के कत्ले-आम से लिया गया। कानपुर मुर्दों का शहर हो गया। लाशों और खून की बदबू से हवा खराब हो गई। गोरी चमड़ी वाले चंगेज खाँ के मुँह पर भी कालिख पोत गए।

❀

बार-बार सूचना देने पर भी बनारस से किसी प्रकार की सैनिक सहायता न आयी। नील ने अब और इलाहाबाद रुकना ठीक न समझ आगे की राह पकड़ने की बात सोची। कानपुर से हावेल का पत्र पाकर उनके क्रोध का ठिकाना न ा। रात भर ठीक से सो भी न सके। उन्हें ऐसा महसूस हो रहा था कि मृत स्त्री-बच्चों की आत्माएँ उन्हें कोंच-कोंचकर उठा रही हैं और अपने दारुण अंत की कथा कहने को उत्सुक हैं।

प्रातः ही कलकत्ता से प्रधान सेनापति का संदेश मिला। संदेश में कहा गया था कि हावेल कानपुर में बीमार हैं। इलाहाबाद का कार्य भार किसी सहायक पर सौंप उन्हें कानपुर जाना चाहिए। वहाँ की व्यवस्था ठीक कर लखनऊ की ओर ध्यान देना आवश्यक है।

पत्र पाते ही नील ने कूच का डंका बजवा दिया।

❀

हावेल की सेना के बिठूर आते ही नाना साहब के महल के तमाम नौकर भाग गए। अधिकांश बिठूरवासी भी डर के मारे भाग गये। बिना एक बार भी हथियार उठाए सेना ने बिठूर पर अपना अधिकार कर लिया।

नाना धुंधुपन्त के राजमहल कोई न था। सब खाली पड़ा था। महल में घुसते ही सैनिकों ने लूट शुरू कर दी। महल के कुएँ में चाँदी सोने के बर्तन मिले। पेशवा की हीरे मोती जड़ी तीन लाख की तलवार के अतिरिक्त तमाम बहुमूल्य सम्पत्ति सैनिकों ने हथिया ली।

महल के एक कोने में एक जीवित सम्पत्ति भी मिली। अंग्रेज उस बंदी को देख आश्चर्य में पड़े, पर बाद में पता चला कि वह रामचन्द्र राव है। सेनाध्यक्ष के सम्मुख उसे पेश किया गया।

"तुम यहाँ कैद थे?"

"जी हाँ!"

"क्यों?"

"क्योंकि मैंने नाना साहब के आदमियों को आप लोगों से सुलह करने की राय दी थी, पर इस पर वे सब इतने नाराज हुए कि मुझे कैद में डाल गये।"

"और वे सब कहाँ गए?"

"सब भाग गए!"

"नाना किधर है? इधर था?"

"जी नहीं!"—रामचन्द्र राव ने बतलाया—"वे इधर नहीं आए। ऐसा सुना है कि अपनी पराजय से खिन्न होकर उन्होंने गंगा में कूदकर आत्महत्या कर ली है। इस बात को बहुत से लोग कहते हैं।"

"ऐसा तो हमने भी सुना है, पर इस बात का यकीन नहीं होता।"

"......"

"अजीमुल्ला और तात्या टोपे का कुछ पता है?"

"अजीमुल्ला ने ही यहाँ आकर मुझे कैद किया था! तात्या टोपे का मुझे कोई पता नहीं है।"

अंग्रेजी टुकड़ी रामचन्द्र राव को अपने साथ लेकर कानपुर लौट आयी।

कानपुर की कोतवाली पर अंग्रेजी झंडा फहराने लगा। अंग्रेजी राज और अंग्रेजी कानून की घोषणा कर दी गई। गोरे सिपाहियों की मनमानी पर रोक लगा दी गई, हालाँकि फिर भी उनको सब कुछ कर गुजरने की छूट थी। कानपुर श्मशान हो गया।

गोरों को छोड़कर बहुत कम नागरिक नगर में थे। जिन्दा मुर्दों से वे शहर में पड़े थे। अंग्रेजों के नरमेध-यज्ञ में हजारों की बलि चढ़ चुकी थी। शत-प्रतिशत घरों में लाशें थीं। दीवारें खून के छींटों से भरी थीं। दिन में मेंढक बोलते। झिल्लियों की आवाज सुनायी पड़ती। अच्छे-अच्छे मकान धराशायी हो गये थे।

हावेल बहुत जाँच पड़ताल के बाद भी यह पता न लगा सके कि नाना साहब, तात्या टोपे और अजीमुल्ला का क्या हुआ ? नाना साहब के संबंध में फैली बात पर उन्हें यकायक विश्वास न हो रहा था कि वह गंगा में कूदकर आत्महत्या कर चुके हैं।

❀

हावेल ने आगे बढ़कर नील का स्वागत किया।

"आइए !"

दोनों सेनापति गले लगे।

"मैंने सुना था कि आप अस्वस्थ हैं ?"

"अब तो ठीक हूँ !"—हावेल ने ठंडी साँस लेकर कहा—"बीबी घर का दृश्य देखने के उपरान्त मैं अपना स्वास्थ खो बैठा। बहुत ही करुण दृश्य है, नील ! उफ़ ! हमारे देशवासी इस दशा को प्राप्त हुए हैं। मैंने तो उसमें ताला लगवा दिया है।"

"मैं देखूँगा !"

"......

"अच्छा। आपका स्वास्थ अच्छा जानकर प्रसन्नता हुई। इस समय विश्राम का अवकाश नहीं। मैं यहाँ का भार सँभालता हूँ। आप लखनऊ की यात्रा करें। वहाँ के भी समाचार बड़े चिन्ताजनक हैं।"

"अच्छा !"

"आप बढ़ जाइए। सम्पर्क बराबर बना रहेगा। हर हालत में इस उपद्रव को हमें जल्दी ही दबा देना है !"

हावेल ने नील की बात की सम्मति सिर हिलाकर दी।

❀

लाहौर आते ही निकल्सन ने गवर्नर की सहायता से जोर-शोर से तैयारियाँ शुरू कर दीं। दिल्ली से नित्य चिन्ताजनक समाचार आ रहे थे। सहायता के पत्र बराबर चले आ रहे थे। गोरी सेना के अतिरिक्त सिक्खों और बलूचियों की भी

भरती शुरू कर दी गई। सैनिक तैयारियाँ जोर-शोर से शुरू हो गईं और निकल्सन दिल्ली की ओर शीघ्र ही चल पड़े। विद्रोहियों की तमाम गति-विधियों के समाचार दूतों द्वारा मिल रहे थे।

सतलज पारकर निकल्सन आगे बढ़े। नजफगढ़ झील का पुल विद्रोहियों ने पुनः बना लिया था और उस पर कब्जा कर दोनों ओर से दिल्ली के अंग्रेजों को घेर रक्खा था। इस घेरे के कारण अंग्रेज बड़े संकट में थे। इसकी सूचना पाकर निकल्सन ने अपनी गति और तेज की। रास्ते में बिना किसी उत्पात के वह दिल्ली बढ़े जा रहे थे। शीघ्र से शीघ्र दिल्ली पहुँचना ही उनका लक्ष्य था।

❀

मियाँमीर में शान्ति हो चुकी थी। हिन्दोस्तानी सिपाही अपनी छावनी में चुपचाप पड़े थे। मन में असंतोष था, पर कर ही क्या सकते थे? अंग्रेजों की ताकत बढ़ी हुई थी। साथ ही तमाम सिक्ख सेना अंग्रेजों का साथ दे रही थी। कपूरथला के महाराज भी हर तरह से अंग्रेजों की मदद कर रहे थे। अतएव ऐसी दशा में अंग्रेजों के खिलाफ झंडा उठाकर दिल्ली की ओर बढ़ने वाली बात पस्त पड़ गई थी।

रात होते ही जोर की बारिश होने लगी। पानी के साथ-साथ आँधी भी। वर्षा की प्रबलता के कारण कुछ सैनिक अपने स्थान से हटकर दूसरों के पास सुरक्षित स्थान में आ गए। पास ही सिक्ख फौज की छावनी थी। उनका हाकिम अंग्रेज था।

अफवाह तो थी ही। नायक ने देखा। सिपाहियों के झुंड इस बैरक से उस बैरक जा रहे हैं। मन शंका से भर गया। मौसम की इस स्थिति का फायदा उठाकर ये सिपाही अब गड़बड़ी कर सकते हैं। शक के वशीभूत हो उसने गोली चलाने की आज्ञा दी।

गोली की आवाज वर्षा के कारण सुनाई तो न पड़ी पर खून से लथपथ सिपाहियों के आते ही हड़कम्प मच गया।

"गोलियाँ चल रही हैं!"

"सिक्ख चला रहे हैं!"

"हमने क्या बिगाड़ा है !"

"अरे ! ये लोग हम लोगों के हथियार छीनकर हम सबको मार डालना चाहते हैं !"

"मारो। ऐसे कुत्ते की तरह नहीं मरेंगे ! मारकर मरेंगे !"

सिपाही उत्तेजित हो गये। वर्षा के बीच ही युद्ध छिड़ गया। सिपाही गोलियों का जवाब देते हुए छावनी से निकल गए। सबने दिल्ली बढ़ने का निश्चय कर लिया। सिपाहियों का दल बागी होकर चल पड़ा।

काफी देर बाद पानी थमा तो इस बात का पता चला। सिक्ख पलटन के साथ गोरे अफसर दौड़े, पर तब तक बागी सिपाही दूर जा चुके थे। बाकी लोगों को वापिस कर केवल डिप्टी कमिश्नर कूपन सत्तर-अस्सी सिक्ख घुड़सवारों के साथ आगे बढ़े। उन्हें विश्वास था कि बागी रावी पार करने के लिए अवश्य ही अजनाला की ओर गये होंगे। इसी ख्याल से अजनाला की ओर दौड़े जा रहे थे। हर हालत में वह बागियों को रोक लेना चाहते थे। लाहौर तक यह समाचार पहुँचाकर कर्नल निकल्सन के जाते ही वह ऐसी अयोग्यता का परिचय देना नहीं चाहते थे।

❀

बागी दल अजनाला आया।

वर्षा के कारण तट कीचड़ भरा था। नावें दिखलायी न पड़ रही थीं। पास ही गाँव था। कुछ सिपाही नाव माँगने के लिए गाँव की ओर बढ़ गए और शेष नदी तट पर इधर-उधर होकर विचार-विमर्श करने लगे। सब एक मत थे कि दिल्ली ही चला जाय। रास्ते में जहाँ कहीं सम्भव हो, अंग्रेजों का नाश भी किया जाय। सभी सिपाहियों के मन अंग्रेजों की करतूतों से क्षुब्ध थे।

काफी देर हो गई। सिपाही गाँव से नहीं लौटे। कुछ लोग और गए तो पता चला कि नावों का प्रबन्ध हो रहा है। कुल दो ही नावें मिल सकी हैं। यही पर्याप्त था। पारी-पारी लोग पार उतरेंगे। ठेल-ठालकर किसी प्रकार नावें लायी जा रही थीं।

ठाँय !

बन्दूक कड़की। सिपाही चौंक पड़े। क्या अंग्रेजी सेना आ गई! सब इधर-उधर हो, तैयार हो गए। अंग्रेजी सेना न थी, पर सूचना पाकर अजनाला का तहसीलदार थाने के सिपाहियों के साथ आ गया था। तहसीलदार के हुक्म से सिपाही बागियों पर टूट पड़े।

सिपाहियों की मार से घबड़ाकर बागी भागे। कुछ वहीं ढेर हो गए। कुछ पानी में कूद-कूद भाग गये। कुछ लोग एक ऊँचे टीले पर चढ़ गए। तहसीलदार ने उन सबको घेर लिया। इसी समय कूपर अपनी टुकड़ी के साथ आ गये। बागियों के सामने मृत्यु या आत्मसमर्पण के और कोई रास्ता न था।

"हम लोग समर्पण करते हैं!"

"हथियार फेंक दो!"

घिरे हुए सिपाहियों ने हथियार फेंक दिये। बागियों को कस लिया गया। सबको अजनाला पुलिस स्टेशन लाया गया। दो सौ के लगभग बागी थे।

"बन्द करो!"

हवालात की कोठरी की ओर संकेत किया गया।

"साहब, जगह बहुत कम है। चालीस-पचास आदमी की जगह है......

"ठूँस दो!"

हुक्म पाते ही तमाम बागियों को उसमें बन्द करना शुरू किया गया। कोठरी में पचास-साठ आदमियों के घुसने के बाद ही भीतर गए लोगों ने चिल्लाना शुरू कर दिया।

"अब जगह नहीं है!"

"जगह नहीं है!"

"अरे! यहाँ कहाँ!"

"चुप रहो!"

जबर्दस्ती आदमियों को ठूँसा जा रहा था। एक दूसरे से एकदम चिपककर खड़े होना पड़ा सबको। इस तरह कि हाथ पैर भी न हिला सकें।

"हुँ! ठेलो!"

"हुँ! ठेलो। और ठेलो!"

भीतर खड़े बन्द बागी चिल्ला रहे थे—"बाप रे बाप! मर गये"

"हायरे ! जान गई !"

"एक बूँद पानी......"

"प्यास ! प्यास !!"

वहाँ सुनने वाला कोई न था। जब बहुत जोर लगाने पर भी एक भी आदमी न ठूँसा जा सका तो और लोगों को उन लोगों के ऊपर फेंकना शुरू किया गया। सिपाही आदमी को उठाते और ठसकर खड़े आदमियों के ऊपर लुढ़का देते।

"चल उस तरफ !"

इस कांड से बन्द लोग बिलबिलाने लगे पर वे इतने असमर्थ थे कि उनके लिए एक भी अंग हिलाना मुश्किल था। जिस तरह से अनाज के बोरों को गोदाम में एक के ऊपर एक रखा जाता है, उसी तरह उस छोटी सी कोठरी में दो सौ आदमियों की छल्ली लगा दी गई। बाहर से लोहे के दरवाजे पर ताला दिया गया।

"सब कैद हो गये ?"

"जी हाँ !"

"अच्छा ! सबेरे फैसला होगा !"

आफीसर विश्राम करने चले गए।

❀

सबेरे ताला खोल दरवाजा फैलाया गया। जो बाहरी हिस्से में थे वे तो निकल आए। बाकी कुछ अधमरी हालत में निकले। चीटियों से बिल-बिलाते हुए कुछ और निकले। जो दूसरों के शरीर पर पड़े थे, वे भी निकले, पर बाकी चालीस-पचास आदमी लद्-लद्कर गिर पड़े। वे आदमी नहीं, लाशें थीं। उनका दम घुट चुका था। वे होश होकर बेदम खड़े रहे। प्राण निकल गये। लाशें खड़ी रहीं। जिंदों के सहारे। जिंदों के हटते ही लद्-लद् गिर गयीं।

बागी घबराकर बाहर आ गए।

काल-कोठरी की यह दशा देख उनके चेहरे सूख गए। अब उन्हें अपने प्राणों की आशा न रही।

"सबको दस-दस के झुंड में बाँध दो।"

कूपर के आदेश से डेढ़ सौ आदमी पन्द्रह रस्सों से जकड़ दिये गये। थाने की इमारत के आँगन में एक ओर कुर्सियों पर तहसीलदार, कूपर साहब तथा अन्य अधिकारी बैठ गये और दूसरी ओर पन्द्रह बीस सिक्ख सिपाही तैयार बन्दूकों के साथ खड़े कर दिये गये।

"चलो!"

पहिला झुंड लाया गया।

ठाँय! ठाँय!!

गोली से सब मार दिये गये—जैसे शिकारी अपनी बन्दूकों से पक्षियों को मारते हैं।

"नेक्स्ट!"

दूसरा झुंड आया। अपने पहिले गये लोगों की दशा देखते ही चिल्लाने लगे, पर सुनता ही कौन था। उनको भी गोलियों से उड़ा दिया गया। एक एक करके शेष तमाम बागियों को इसी तरह उड़ा दिया गया और तमाम लाशों को चार छकड़ों पर लादकर रावी में बहा दिया गया।

※

दानापुर से कुछ और सिपाही आ गए। ये सिपाही दानापुरी के जेल को तोड़कर वहाँ के कैदियों के पास आए थे। साथ ही खजाना भी लूट लाए थे। हरेकृष्ण के सुझाव के अनुसार कलक्टरी में आग न लगाई गई थी क्योंकि इससे जमीदारों को अपनी जमीन का निर्णय करने से कठिनाई होती। कलक्टरी के अतिरिक्त और अन्य सरकारी इमारतें जलाकर तोड़-फोड़कर ये सिपाही आ गए।

आते ही इन लोगों ने अंग्रेजों को घेरा।

जिस मकान में अंग्रेज घिरे हुए थे, उसमें पचास सिक्ख सैनिक भी थे जो अंग्रेजों की मदद के लिए थे। पहिले ये सैनिक खजाने के रक्षक थे पर आरा के मजिस्ट्रेट के हुक्म से अंग्रेजों की रक्षा के लिए आ गए थे। इंजीनियर की बुद्धि के कारण कुछ खाद्य सामग्री इकट्ठी हो गई थी। अधिकांश खाद्य सामग्री सूखी थी।

अपनी रक्षा के लिए अंग्रेजों ने बालू भरे बोरे भी रख लिये थे। सिपाहियों से घिरकर अंग्रेज अपनी रक्षा करने लगे।

सिपाहियों का विशेष ध्यान अंग्रेजों की ओर न था। वे जानते थे, मुट्ठी भर अंग्रेज इसमें बन्द हैं। अतएव घेरा कमकर दिया और थोड़े से ही सिपाहियों को छिट फुट हमले कर अंग्रेजों को परीशान करने की योजना बन गई।

घेरा कम हो गया और ये सिपाही अंग्रेजों को परीशान करने लगे।

पहिले तो सिपाहियों ने लकड़ियों और फूसों के गट्ठरों में आग लगाकर उन्हें सामने के मकान से अंग्रेजों के मकान में फेंका। हवा के विपरीत रुख के कारण आग जोर न पकड़ सकी। मिर्चों के ढेर में आग लगाकर उसके धुँए से अंग्रेजों को परीशान किया गया, पर इस बार भी अंग्रेजों का साथ हवा ने दिया। घोड़े मारकर अंग्रेजों के घर पर फेंक दिये गये, पर उनकी बदबू भी हानि न पहुँचा सकी।

अंग्रेजों की गोलियाँ काम कर जाती थीं, पर सिपाहियों की गोलियाँ बालू के बोरों के कारण व्यर्थ जाती थीं।

एक तोप किसी प्रकार आ गई पर गोले बारूद के अभाव में उसका उपयोग ठीक से न हो सका। हाँ, मेज कुर्सी के टुकड़े, पीतल के टूटे बर्तन भर-भरकर तोप का उपयोग किया गया। सिपाहियों को इस नई सूझ से घिरे हुए अंग्रेज एकदम घबरा गये।

मेज कुर्सियों के टुकड़े, पीतल लोहे के टुकड़े उड़-उड़कर मकान की इमारत के साथ साथ उन्हें भी क्षति पहुँचाने लगे। सूखी खाद्य सामग्री के निरन्तर उपयोग से घिरे हुए अंगरेजों का स्वास्थ्य भी खराब हो चला। साथ ही खाद्य सामग्री भी समाप्त होने को आयी। घिरे हुए सिक्ख सैनिक बुरी तरह घबड़ाने लगे। प्राण रक्षा का कोई उपाय न सूझ रहा था।

अंग्रेजों की एक योजना के अनुसार रात के सन्नाटे में एक सिक्ख सिपाही मकान की छत से रस्सी के सहारे चुपचाप उतरकर भाग गया। अंग्रेजों की इस दुर्दशा का समाचार पटना पहुँचाने के लिए वह सकुशल निकल गया।

दिन होने पर उसने अपने को आरा से बहुत दूर पाया, पर चारों तरफ कुँवर सिंह के नेतृत्त्व में युद्ध की तैयारियाँ देख वह घबड़ा गया। आरा में घिरे हुए अंग्रेजों की समय पर सहायता हो सकेगी, इसमें उसे सन्देह हो गया।

उम्मेदसिंह के आते ही महाराज तुकोजीराव होल्कर उठकर खड़े हो गए। हाथ जोड़ सिर झुका उन्होंने गुरु का अभिवादन किया। इन्दौर के रेजीडेंट सर राबर्ट हैमिल्टन के निर्देशन में उम्मेदसिंह ने उन्हें अंग्रेजी की अच्छी शिक्षा दी थी। इस इक्कीस-बाइस की अवस्था के महाराज को उम्मेदसिंह ने अनेक भाषाओं का पंडित बना दिया था।

उम्मेदसिंह के बैठने के बाद महाराज भी बैठे।

"कहिए, डुराँट क्या बोले ?"

"वे रुष्ट हैं !"—उम्मेदसिंह ने कहा—"वे अपने आपको अंग्रेजी सरकार का प्रतिनिधि होने के कारण सर्व शक्तिमान समझते हैं। मुझे तो उनकी बेअदबी पर बड़ा गुस्सा आता है। इससे अच्छे रेजिडेंट तो राबर्ट साहब थे। अगर आज वे विलायत न होकर यहाँ होते तो हमारी बात अवश्य मानी जाती !"

"डुराँट के व्यवहार से मेरे मन में भी घृणा है, गुरुजी ! पिछली बार मैं उसके पास गया था तो उसने मुझे बैठने के लिए भी नहीं कहा। जब मैं बिना पूछे उसके सामने कुर्सी पर बैठ गया तो वह घूरकर देखने लगा"

"जानता हूँ !"

"इच्छा तो होती है कि ऐसे आदमी को गोली-मार दूँ पर आज समय के फेर ने हमें बाँध रखा है !"

"अवश्य महाराज ! नीमच और नसीराबाद के कुछ सिपाही बागी हो गये हैं, पर इससे अंग्रेजों को भगाया नहीं जा सकता है। मऊ में कर्नल प्लेटी पूरी ताकत के साथ एकदम तैयार हैं और मऊ की सैनिक शक्ति किसी से छुपी नहीं है !"

"हुँ !"

"इधर के भी सिपाही गड़बड़ी करने की सोच रहे हैं। सबके मन में आपके प्रति सम्मान है और सभी इन्दौर रियासत को स्वतन्त्र घोषित कर देना चाहते हैं फिर भी अभी स्थिति ऐसी नहीं है कि आप इनका साथ दे सकें। अंग्रेज बड़ी नीच कौम है। अगर हम असफल रहे तो हमारी यह मान मर्यादा भी जाती रहेगी।"

उम्मेदसिंह ने तात्या टोपे के पत्र की बात एकदम दबा ली। इस बात को उसने

महाराजा से कहा ही नहीं। क्योंकि कानपुर की पराजय का समाचार उसे विदित था। उम्मेदसिंह समय देखकर ही पाँसा फेंकने वाला आदमी था।

"कुछ अफसरों को मैंने समझा दिया है। फिर भी लक्षण ऐसे नहीं दिखलाई देते कि इनको शान्त रखा जा सके।"

"रेजीडेंसी की रक्षा के लिए आपने तोपें भेज ही दी हैं।"

"हाँ!"

"ठीक है। इससे अधिक हम कर ही क्या सकते हैं। अगर बेमौके कुछ सिपाही झगड़ा खड़ा कर देंगे, तो भरसक हमारी कोशिश यही होगी कि हम पर कलंक न लगे।"

"जी हाँ।"

❀

नीमच और नसीराबाद के समाचार से कर्नल हेनरी डुरॉंट परीशान थे। वहाँ की आग यहाँ भी आ सकती है। अपने क्षेत्र में वह तनिक भी अशान्ति न देख सकते थे। महाराज की तोपें कोठी की रक्षा लिए आ गई थीं। कोठी के पास ही खजाना, डाकखाना और तार घर था। सबकी रक्षा के लिए गोरों के मातहत सिपाही तैनात थे।

इतनी व्यवस्था के बाद भी उनका मन सन्तुष्ट न था। इन्दौर राज्य के शस्त्रागार में अस्त्र-शस्त्र पर्याप्त न थे। इन्दौर दरबार ने रेजीडेंट के मार्फत बम्बई के गवर्नर को एक हजार बन्दूक, दो सौ जोड़े पिस्तौल, चार लाख टोपी के लिए लिखा था, पर गवर्नर ने तार भेजकर इस माँग को रुकवा दिया। उन्हें विश्वास था कि समय पड़ने पर इन्दौर दरबार की ओर से यही हथियार गोरों के विरुद्ध काम में लाए जा सकते हैं।

कर्नल डुरॉंट कुछ और कड़ी व्यवस्था चाहते थे। कर्नल प्लेटी को जब-जब रक्षा की व्यवस्था मजबूत करते लिखा, तब-तब उसने हीला हवाला किया। प्लेटी का विश्वास था कि मवकी सेना समय पर इन्दौर के विद्रोह को भली-भाँति दबा सकती है।

डुरॉंट ने दूर की सोचकर मऊ तार भेज दिया कि सिपाहियों ने हमला कर

दिया है। तुरन्त आओ। उन्हें विश्वास था कि इस तार के पाते ही मऊ की सेना आ जायगी और तब वे उसे अपने अधिकार में रख यहाँ पर किसी भी दुष्ट विद्रोहियों को मज़ा चखा सकते हैं।

❀

इन्दौर के सिपाहियों के असंतोष में चिनगारी पड़ी। कर्नल डुराँट के इस तार भेजने की बात का भेद खुल गया। सिपाहियों में हल-चल मच गई। इस तरह का झूठा तार भेजने का अर्थ क्या है? अन्य स्थानों के सच झूठ समाचार सिपाहियों पर विदित थे। इससे सब में यह विश्वास फैला कि इस तरह का तार भेजकर रेजीडेंट डुराँट अंग्रजी फौज मऊ से बुलवाकर यहाँ के तमाम सिपाहियों के हथियार छीन लेना चाहते हैं अथवा उन सबको मार डालना चाहते हैं।

सूबेदार शहादत अली ने ललकारकर कहा—"अब जो चुप बैठे सो नामर्द। अभी तक हमला नहीं किया, तो अब करेंगे!"

"हाँ! हाँ!"

"महाराज होल्कर के नाम पर हम लोग मर मिटने को तैयार हैं!"

"हाँ, हाँ!"

उत्साह पाकर शहादत अली कुछ सिपाहियों के साथ रेजीडेंट की कोठी की तरफ बढ़ा और महाराजा होल्कर के नाम पर उसने गोलन्दाजों को भड़का दिया। बस! क्या था! तोपों के मुँह घूम गये। बन्दूकों की आवाज और तोपों के गोलों के धड़ाके से आसपास का क्षेत्र गूँज गया।

कर्नल डुराँट घबड़ा गए। जिस बात के लिए वे डर रहे थे, वही बात हुई।

गोलों और बन्दूकों की आवाज सुनकर और तमाम सिपाही उठ खड़े हुए। सब समझ गए कि विद्रोह प्रारम्भ हो गया है। देखते-देखते हुल्लड़ मच गई। अंग्रेज भागने लगे। कर्नल ट्रावर्स सिपाहियों को समझाने दौड़े, पर सिपाहियों ने उन्हें मार गिराया।

कर्नल डुराँट अपनी ही तोपों को अपने विरुद्ध देख घबड़ा गए। घुड़सवार रिसाले ने समय पर पहुँचकर उनकी सहायता की। बागियों को रेजीडेंसी के क्षेत्र से भगा दिया गया। विद्रोही सिपाहियों के उपद्रव अन्य स्थानों पर प्रारम्भ हो गए। अंग्रेजों के बँगलों, कोठियों में आग लगाई जाने लगी।

अधिकांश अंग्रेज हिन्दोस्तानी नौकरों की स्वामिभक्ति के कारण भाग-भाग कर रेजीडेंसी आ गए। कर्नल डुरॉंट ने अधिक ठहरना उचित न समझा। घुड़सवार रिसाले की मदद से भाग निकलना ही ठीक समझा। होल्कर की ओर से कुछ भी सहायता मिलने की आशा उन्हें न थी।

रातोंरात तमामा अंग्रेजों के साथ घुड़सवार रिसाले और भीलों की सहायता से कर्नल डुरॉंट भोपाल भाग गए।

❀

तार देखते ही हंगर फोर्ड का स्वर बिगड़ गया।

"मैं बार-बार आप से कहता हूँ कि कहीं के भी सिपाहियों का विश्वास नहीं करना चाहिए। आखिर इन्दौर में हो गया न !"

"......"

"इसीलिए मैं यहाँ के सिपाहियों पर विश्वास न कर सारी तोपें मैदान में अपने कब्जे में रखना चाहता हूँ पर आप सुनते ही हैं। अपने परिवार की रक्षा के लिए भी मैंने आपसे एक तोप माँगी वह भी नहीं मिली। आपके इस रवैये से तो मैं तंग आ गया !"

"शान्ति से काम लीजिए !"—कर्नल प्लेटी बोले—"सिपाहियों पर इतने अविश्वास से काम नहीं होने का है। उलटे हम अपनी मुसीबतें बढ़ा लेंगे !"

"इन्दौर के लिए आप क्या कहते हैं वहाँ भी न जायँ ?"

"मैं कब ऐसा कहता हूँ। तुरन्त आप जाइए। तोप और रिसाला ले जाइए। शीघ्रता से काम कीजिए !"

कर्नल प्लेटी की आज्ञा पा हंगर फोर्ड तत्क्षण इन्दौर रवाना हो गए। द्रुत गति से वह चले। शीघ्र ही इन्दौर पहुँचकर वह मदद देना चाहते थे।

दोपहर से पहिले ही रास्ते में कुछ घुड़सवार मिले। अंग्रेजी सेना को देखकर उनका नायक ठहरा और उसने हंगर फोर्ड के हाथ एक पत्र दिया। हंगरफोर्ड ने उस पत्र को पढ़कर सन्तोष की साँस ली। पत्र भोपाल से कर्नल डुरॉंट ने भेजा था कि वह तमाम अंग्रेजों के साथ सुरक्षित, भोपाल की बेगम के आश्रय में है। इन्दौर में अब शान्ति है। वह इन्दौर कल सुबह चल पड़ेंगे। कुछ गोरों की हत्या और आगजनी के कुछ कांड हुए हैं तथा बागी इन्दौर से भाग गए हैं।

हंगरफोर्ड लौट आए।

प्लेटी को रेजीडेंसी का सारा समाचार देकर बोले—"वहाँ का विद्रोह तो दब गया पर यहाँ के किले की रक्षा के लिए आपने क्या सोचा है ? वहाँ तोपें लगाना बहुत जरूरी है !"

"हूँ !"

"मैं पूरी तैयारी करके हमेशा रहना चाहता हूँ । इन्दौर के महाराजा के शस्त्रागार में अगर आज हथियार होते तो क्या वहाँ ऐसी शान्ति रहती ? यहाँ पर अगर कुछ हुआ तो मजा देखियेगा !"

"अच्छा ! आप किले में तोपें लगा लीजिए !"

❀

तोपें किले की ओर जाते देख छावनी के सैनिक चौंक पड़े ।

"इन्दौर में जमकर कुछ हुआ है ?"

"हाँ, मालूम तो कुछ ऐसा ही होता है ।"

"इदौर तरफ हंगरफोर्ड तो गया था । क्या आ गया ? सुना है, वहाँ शान्ति हो गई है ?"

"घुस ! मारे डर के हंगरफोर्ड लौट आया है । असल में इन्दौर के तमाम लोग इसी तरफ पूरी ताकत के साथ आ रहे हैं, इसीलिए किले में सब तैयारियाँ हो रही हैं ।"

"देखना थोड़ी देर में किले में सब अंग्रेज चले जाँयगे ।"

"हम लोगों का क्या होगा ?"

"होगा क्या ? महाराजा होल्कर खुद बागियों के साथ घोड़े पर बैठकर आ रहे हैं । इन्दौर दरबार की फिर हुकुमत होगी !"

इस आखिरी बात से बड़ी सनसनी फैली ।

सहसा रात नौ दस बजे गोली छूटी और सिपाहियों ने विद्रोह कर दिया । इस बीच हंगरफोर्ड तोपों के साथ किले में थे । विद्राह की आवाज सुनते ही तैयार हो गए । किले पर तोपें चढ़ा दी गईं ।

सिपाहियों ने लूटमार शुरू कर दी । अंग्रेजों के बँगले जले । गोरों को मारा जाने लगा । चारों तरफ अराजकता फैल गई । कर्नल प्लेटी तुरन्त सिपाहियों के

सामने आए। सिपाहियों को समझाने का प्रयास किया पर उनकी एक न सुनी गई और कर्नल प्लेटी को गोली मार दी गई। उनके साथ आया हुआ दूसरा अफसर भी मारा गया।

विद्रोह का समाचार पाते ही महाराज होल्कर बड़े चिन्तित हुए। उन्हें घबराहट हुई कि इस विद्रोह का समाचार पाते ही मऊ से शक्तिशाली सेना आ जायगी और इस प्रकार तमाम बागियों को इसका फल भोगना पड़ेगा। किस बूते पर वह मऊ की शक्ति का मुकाबला कर सकते हैं। शस्त्रागार एकदम खाली है। इस विद्रोह के कारण सम्भव है कि उन्हें भी दोषी समझा जाय। उनका राज सम्मान छिन सकता है।

नगर में सर्वत्र अशान्ति थी।

महल के पास शोर उठा।

"महाराजा होल्कर ..."

"जिन्दाबाद !"

महाराजा होल्कर की..."

"जय !"

महाराजा होल्कर बाहर आए। उनके सामने आते ही शहादतअली खाँ हाथ जोड़कर आया। उसके कपड़े खून से लथपथ थे।

"महाराज, अब आप हम लोगों का नेतृत्व करें। आपको यह जानकर खुशी होगी कि मैंने एक अंग्रेज का कत्ल किया है। साथ ही रेजीडेंट के साथ तमाम अंग्रेज भोपाल भाग गये हैं !"

"इसे गिरफ्तार कर लो !"

महाराज की आज्ञा से शहादतअली गिरफ्तार हो गया। बागी सिपाही घबड़ा गए। महाराज ने स्पष्ट घोषित किया कि इस विद्रोह में वह साथ नहीं दे सकते। बागियों से शान्त रहने को कहा। महाराज स्वयं हाथी पर चढ़कर नगर में घूमे और विद्रोह को दबाया। साथ ही भोपाल समाचार भेजकर कर्नल डुराँद से वापस आने की प्रार्थना की

महाराज के इस रुख से सिपाहियों का उत्साह टूट गया। बहुत से सिपाही चुपचाप अपने काम पर आ गये और कुछ खिन्न हो इधर-उधर चले गए।

इन्दौर के महाराज के इस रवैये से असन्तुष्ट हो एक टुकड़ी आमजीरा के महाराज के पास चली गई। साथ ही मऊ को यह खबर भेज दी गई कि जो लोग अंग्रेजी हुकूमत मिटाना चाहते हैं, वे आमजीरा आ जाँय।

महाराज होल्कर का आश्वासन पाकर मऊ को संदेश भेज कर्नल डुराँड इन्दौर वापस आ गये। आते ही उन्होंने सारा काम सँभाल लिया। शहादत खाँ तथा अन्य बागियों को मौत की सजा दे दी गई।

महाराज के इन कार्यों से कर्नल डुराँट के मन के अविश्वास उड़ गये और उन्होंने इस विद्रोह में महाराज का हाथ न होने की बात अपने तमाम उच्चाधिकारियों को लिख दी। महाराज होल्कर ने सन्तोष की साँस ली।

हँगरफोर्ड की तोपों की मार के आगे बागी ठहर न सके। तोपें हाथ से निकल जाने के कारण विजय की कोई आशा न रही। बागी सिपाही गोल बना कर इन्दौर की ओर बढ़े पर रास्ते में ही इन्दौर की वस्तुस्थिति का पता पा तब आमजीरा की ओर बढ़े। आमजीरा नरेश रेजीडेंसी पर आक्रमण कर अपना अधिकार कर चुके थे। आमजीरा इन्दौर स्टेट के ही अन्तर्गत एक छोटी सी जमींदारी थी। वहाँ भी एक रेजीडेंसी थी। इस स्थान पर भील सैनिकों की एक पलटन थी।

आमजीरा नरेश ने इस आशा से आक्रमण किया था कि इन्दौर महाराज का भी योग मिलेगा पर उनका प्रतिकूल रुख देख बड़ी निराशा हुई। इन सिपाहियों के आने से मन को उत्साह मिला।

आमजीरा का समाचार इन्दौर आया।

डुराँट ने बागियों को पकड़ने फौज भेजी। भारी तोपों और सैनिक तैयारियों के साथ आमजीरा पर आक्रमण हुआ।

आमजीरा का निर्णय दो ही घंटे में हो गया।

बागियों को हारना पड़ा। अधिकांश बागी दिल्ली की ओर भाग चले। आमजीरा पर अंग्रेजी हुकूमत हो गई।

❀

"...मेरे ख्याल से यहाँ किसी प्रकार की अशान्ति नहीं है। यहाँ के सिपाही

विश्वास के योग्य हैं । मेरठ और दिल्ली की घटनाओं पर यहाँ के सिपाहियों ने घृणा प्रकट की है। कप्तान डनलप के पति का यहाँ के सिपाहियों में बहुत आदर है। सब उनका आदेश मानते हैं। यहाँ पर किसी प्रकार का असंतोष नहीं है..."— कमिश्नर स्कीन ने पत्र समाप्त कर आगरा के लेफ्टिनेंट गवर्नर के पास भेजने के लिए अपने सहायक को दे दिया।

कर्नल डनलप की ओर देखकर बोले—"कहिए मैंने ठीक लिखा ?"

"जी हाँ! यहाँ तो ऐसे कोई लक्षण नहीं है !"

"मेरा ख्याल है कि हम लोग सिपाहियों को समझा भी दें !"

"ठीक है !"

कमिश्नर स्कीन कर्नल डनलप के साथ परेड मैदान में आए। कमिश्नर के आने का समाचार पाकर पूरी पलटन तुरन्त तैयार होकर आ गई। बिजली की तरह यह काम हुआ। सिपाहियों की ऐसी फूर्ति और आदर देखकर उन्हें और भरोसा हुआ।

"झाँसी के वीर सिपाहियो !"—कमिश्नर ने उन्हें संबोधित कर कहा—"तुम लोगों को मेरठ और दिल्ली के समाचार मालूम हैं। धार्मिक आवेश में आकर कुछ सिपाहियों ने गड़बड़ी शुरू कर दी है । मैं विश्वास करता हूँ कि इन तमाम अफवाहों का तुम लोगों पर कोई प्रभाव न होगा। सरकार किसी का भी धर्म नहीं लेना चाहती है। अगर तुम लोगों को यह विश्वास है कि इन नए कारतूसों और टोपियों से तुम्हारा धर्म नष्ट होगा तो ये तुम लोगों को, हम लोग कभी न देंगे। मैं विश्वास करता हूँ हम लोगों का आपसी सम्बन्ध बना रहेगा और ब्रिटिश शासन की स्थापना के इतिहास में झाँसी का महत्वपूर्ण योग रहेगा !"

"अवश्य !"—कुछ अफसरों ने अनुमोदन किया।

"इसीलिए मैंने तुम लोगों को समझा देना उचित समझा। अगर तुम लोगों को कुछ शिकायत है, तो मुझ से कहो। अपने अफसरों से मिलो। गड़बड़ी करने की जरूरत नहीं। मैं चेतावनी देना चाहता हूँ कि इस गड़बड़ी का फल अच्छा न होगा !"

सिपाहियों ने शान्तिपूर्वक कमिश्नर की बातें सुनी और राजभक्त बने रहने का आश्वासन दिया।

सिपाहियों में ऊपर से देखने में तो शान्ति मालूम पड़ती थी, पर उनकी बैठकों, बैरकों और छावनी में, इधर-उधर घूमते झुंडों में बगावत की चर्चा का ही प्राधान्य था। दिल्ली और मेरठ के समाचार के बाद ही जब कानपुर के नाना साहब का समाचार आया तो बड़ी खलबली मच गई। कानपुर में पेशवाई हुकूमत की स्थापना के समाचार से बड़ी उत्तेजना फैली और ठीक इसी समय तात्या टोपे के भेजे हुए गुप्तचर, सिपाहियों के इस असन्तोष को भड़काने लगे। नाना साहब के प्रति बड़ी श्रद्धा था। महारानी और नाना साहब के अटूट स्नेह सम्बन्ध के कारण सबको विश्वास हो गया कि नाना साहब अंग्रेजों के हाथ से झाँसी के उद्धार के लिए इस ओर अवश्य आयेंगे। इस विश्वास को बढ़ाने में गुप्तचरों ने बड़ी सहायता की। सिपाहियों की हलचलें बढ़ गई।

महारानी और सिपाहियों के बीच सन्देशों का आदान-प्रदान होने लगा।

ऊपरी तौर से एकदम शान्ति थी। भीतर ही भीतर विद्रोह का भयंकर गोला तैयार हो रहा था, जो किसी भी क्षण फूटने ही वाला था।

❀

बीबी घर का दृश्य देखते ही नील को मूर्च्छा आ गई। बड़ी कठिनाई से अपने को सँभाल वह बाहर आये। साथ ही जिस स्थान पर व्हीलर घिरे थे, उस स्थान पर बना कुँआ भी उन्होंने देख लिया। कुँआ अंग्रेजों की लाशों से भरा था। लाशें फूल गई थीं और बुरी तरह बदबू कर रही थीं।

अंग्रेज पुरुषों की दुर्गति और उनके कारुणिक अन्त की सभी बातें नील को मालूम हो गईं। इन सब दृश्यों ने नील के दानव को और भयंकर बना दिया। गोरी और सिक्ख सेना के सहारे तमाम नगरवासियों को एक तरफ से बुलवाकर पीट-पीटकर उन्होंने हत्यारों अथवा उन सिपाहियों का नाम जानना चाहा, जिन्होंने इस कांड को किया था।

हुसैनी और अजीमुल्ला के अतिरिक्त और किसी का नाम न मालूम हो सका। इस नए कदम से शेष नगरवासियों के कष्टों का ठिकाना न रहा। खाना-पीना मुश्किल हो गया। हर समय सैनिकों का डर मन में समाया रहने लगा। साथ ही बहुत से लोग सन्देह में गिरफ्तार भी कर लिए गये।

अजीमुल्ला, तात्या टोपे और नाना साहब की तलाश में बहुत से दूत छोड़े गए पर कुछ भी पता न चला। नील परीशान हुए—आखिर ये लोग कहाँ मर गये? नाना साहब के डूब मरने की बात पर उन्हें भरोसा था।

कर्नल हावेल लखनऊ के रास्ते बढ़े जा रहे थे।

लखनऊ से भागकर एक अंग्रेज ने बड़ा ही चिन्ताजनक समाचार दिया। नील ने तुरन्त और एक टुकड़ी हावेल का साथ देने के लिए रवाना कर दी।

❀

अँग्रेजों ने संतोष की साँस ली। इस जँगल से मुक्ति मिलने की आशा से मुरझाए चेहरे खिल गए। थोड़ी ही देर में खड़खड़ाती हुई गाड़ियाँ हथियार-बन्द सिपाहियों के साथ किले के सामने आयीं। कुल दो ही गाड़ियाँ थीं।

"इतने में सब आ जाँयगें!"

"चुप रहो!"

जहीरुद्दीन सिपाहियों का नायक था। उसने स्त्री बच्चों को तो गाड़ियों में ठूँस ठाँसकर बैठा दिया और पुरुषों को साँकल से बाँध पैदल ले चला। इस दृश्य से तमाम अंग्रेज घबराए। उन्हें विश्वास हो गया कि वे विपक्षी के हाथ पड़ गये। साँकल बँधे अंग्रेज, सिपाहियों के घेरे में गाड़ियों के पीछे पीछे चलने लगे।

सुबह के पहले पहर तक तो सब आराम से चलते रहे, पर बाद में जैसे धूप तेज होने लगी, वैसे-वैसे अंग्रेजों की दशा बिगड़ने लगी। नंगे पाँव और जलती धूप। पसीने से लथपथ अंग्रेजों की शक्ति आगे बढ़ने से जबाब देने लगी। कुछ मूर्छित होने लगे, पर सिपाही रुकने का नाम न ले रहे थे। वे लखनऊ के रास्ते बढ़े जा रहे थे।

पुरुषों की यह दशा देख स्त्रियाँ बिलखने लगीं। इस कष्ट से तो यह कच्च का जँगल का किला ही ठीक था।

❀

कानपुर की सरहद पर चारों ओर तोपें लगा दी गईं। शत्रु पक्ष के किसी भी प्रमुख नेता का पता न लगने के कारण, नील को संदेह था कि गुप्त रूप से

अपनी शक्ति संगठित कर कहीं पुनः हमला न कर दें, इसलिये सुरक्षा की तैयारियाँ पूरी कर नगर-व्यवस्था की ओर ध्यान दिया गया।

बीबी घर का दृश्य नील की आँखों के आगे से न हट रहा था। उस स्थान को उन्होंने साफ न करवा, एक दूसरा ही उपाय सोचा। इस हत्याकांड का भीषण प्रतिशोध लेने की भावना उनके मन बलवती होती जा रही थी। हत्याकारियों और नाना साहब के आदमियों की तलाश में उन्होंने अधिकांश व्यक्तियों को छोड़ दिया। आसपास के गाँवों तक दौड़ गई।

सामूहिक रूप से लोगों को पकड़कर बेतों से पिटाई हुई। लोग खूब पीटे गए। उनसे पूछा गया। मार से मुक्ति पाने अथवा किसी से पुराने बैर का बदला लेने के कारण जो नाम बताए गए, उन लोगों को पकड़ा गया। सामूहिक रूप मे फाँसी का बाजार गर्म हो गया। नगर में स्थान-स्थान पर फाँसी देकर लोगों की लाशों को पेड़ों से लटका दिया गया।

नील का मन इतने से भी सन्तुष्ट न हुआ। दंड देने का उन्होंने एक नया तरीका निकाला। सूबेदार अवधेशनारायण पास के एक गाँव से गिरफ्तार करके लाया गया। सिपाहियों का सूबेदार रहने के कारण उसका बागी होना स्वयंसिद्ध बात थी।

सड़ाक्! सड़ाक्!!

सूबेदार अवधेशनारायण को बेतों की मार से अधमरा करने के बाद बीबी घर घसीटकर ले जाया गया।

"खड़ा हो!"

"......"

"साफ कर!"

अंग्रेजों की लाशें और खून!

"साफ कर..."

"विधर्मी का रक्त साफ करना धर्म विरुद्ध..."

"बढ़ आगे!"

सड़ाक्!

गोरे सैनिक ने जमीन पर गिरा दिया। सहसा गोरे सैनिक की आँखें चमकीं।

एक नया विचार उसके मन में आया। चूतड़ पर बूट की ठोकर मार, कड़ककर बोला—"जीभ लगा। चाट!"

लिबलिबा लिबलिबा, गाढ़ा खून! अंग्रेजों का खून!!

"चल"

"......"

"नहीं। अच्छा तो ऐसे।"

गोरा पीठ पर बैठ गया। बाँया हाथ दोनों हाथों से फौलाद की तरह जकड़कर उमेठा। सूबेदार बड़ी जोर चिल्लाया—"हाय अप्पा! मर गया..."

"चाट! नहीं तो हाथ तोड़ दूँगा!"—हाथ और उमेठा। हड्डियाँ कड़कड़ायीं।

"हाय! मरा!!"

"चाट!"

सूबेदार की जीभ निकली। खून का स्पर्श मात्र होते ही कै हो गई और तभी गोरे ने हाथ मरोड़कर तोड़ भी दिया। चुट-पुट! कड़!! सूबेदार मूर्च्छित हो गिर गया। गोरा सैनिक अट्टहास कर उठा।

संदेह में पकड़े जाने वाले लोगों से अब यही काम लिया जाने लगा। बीबी घर का खून साफ करने का काम। लाशें हटाने का काम। इसके बाद उन लोगों को हाथ पैर तोड़कर जिन्दगी भर के लिए बेकार कर दिया जाता। कभी लाठी डालकर पैर तोड़े जाते। कभी हाथ उमेठकर तोड़े जाते। कुछ लोगों के नाक कान काटकर छोड़ दिये जाते। इन सब कामों में स्वयं कर्नल नील उपस्थित रहते और मुस्कुराते। इस प्रकार वह अपने मन का क्षोभ ठंडा कर रहे थे।

जिन्दा-मुर्दों के नगर पर कर्नल नील का शासन था।

घिर जाने पर भी लारेंस ने हिम्मत न हारी थी। मच्छी भवन के अंग्रेज भी रेजीडेंसी में आ गए। सब मिलकर आक्रमणकारियों से अपनी रक्षा करने लगे। सबके हाथों बंदूकें थीं और फसील पर तोपें चढ़ी थीं। तोपों की मार के आगे सिपाहियों का साहस छूट जाता। रह-रहकर सिपाहियों के दल आते और हमला

कर मात खा लौट जाते। रेजीडेंसी को छोड़ शेष नगर पर सिपाहियों का अधिकार था।

नगर का कोलाहल बराबर अंग्रेजों को सुनायी पड़ता। नवाब की जय के नारे उन्हें बतला देते कि लखनऊ अभी भी सिपाहियों के अधिकार में है। रेजीडेंसी की दीवारें अगर मजबूत न होतीं, भरकम तोपें फसीलों पर न खड़ी होतीं तो अंग्रेजों का बचना मुश्किल ही था।

बड़ी ही होशियारी के साथ अंग्रेज मोर्चाबंदी करके पड़े हुए थे। लारेंस के साथ कुछ हिन्दोस्तानी सिपाही भी आ गये थे। उन्हें अपने साथ न रख लारेंस ने चुपके से बाहर कर दिया और इस प्रकार उनकी बाहरी सहायता की भी व्यवस्था की। रसद का अभाव फिलहाल न था। यदि सहायता शीघ्र न मिले तो आगे के लिए संकट था।

लारेंस की मृत्यु का समाचार छुपाकर रखा गया, पर अन्ततः सबको मालूम हो ही गया। इस पर भी किसी की हिम्मत कम न हुई। संकट के समय सभी उत्साह से भर सामना कर रहे थे। सिपाहियों के आक्रमणों को नित झेलना अनिवार्य हो गया था। सिपाहियों ने भी कुछ कसर बाकी न रखी। सामने से आक्रमणों को व्यर्थ देख, उन्होंने आसपास के मकानों पर अपना अधिकार किया।

छतों और दीवारों पर चढ़कर गोलियाँ बरसाने लगे। इस नये आक्रमण से अंग्रेजों में घबराहट फैल गई। आसपास के मकानों से सिपाही सरलतापूर्वक निशाना साध लेते थे। साथ ही अपने बचाव के लिए उनके लिए पर्याप्त आड़ भी होती। इस नये संकट के कारण रेजीडेंसी के मैदान में अंग्रेजों का घूमना-फिरना मुश्किल हो गया। बारामदों में भी आना रुक चला। आसपास के किस मकान के, किस भाग से कब सिपाही बंदूकें दाग दें, इसका कोई ठिकाना न था!

पूरी रेजीडेंसी का जीवन विशृंखल हो गया।

एक दो मौत रोज होने लगी।

अंग्रेजों ने अपनी आड़ और रक्षा के लिए आलमारियों, कुर्सी, टेबिलें खड़ी करना शुरू कर दीं। इनकी आड़ से वह अपना काम चलाने लगे। किताबों से भरी आलमारियाँ भी लगा दी गईं। गोलियों की मार से बचने के लिए अनेक उपाय लगाने पर भी अंग्रेजों का संकट कम न हुआ। सिपाहियों का आक्रमण सबेरे से लेकर प्रायः रात दस बजे तक चलता था। दल के दल सिपाही उमड़ आते।

उनके आक्रमण की कोई एक निश्चित दिशा न थी। चाहे जिस ओर से आक्रमण प्रारंभ हो जाता। अगर एक ओर गंगा न होती तो अंग्रेजों की दुर्दशा का अन्त न था। गंगा का तट उनके लिए वरदान था। कभी-कभी जब तीनों ओर से लगातार आक्रमण प्रारंभ हो जाते तो बड़ी मुश्किल होती।

स्त्रियों और बच्चों की तो मुसीबत हो चली। घायलों की शुश्रूषा में फँसी स्त्रियाँ एकदम परीशान हो चलीं। बच्चों के लिए नित नए संकट बढ़ने लगे। दूध का मिलना मुश्किल हो गया। माँस के अभाव में माँस-प्रेमी अंग्रेज बैलों को मारकर खाने लगे। लगातार आक्रमणों के कारण रेजीडेंसी के क्षेत्र में एक अव्यवस्था सी फैल गई।

※

नाना साहब चिंतित थे। चिंता के भाव उनके चेहरे से स्पष्ट थे। नीले आकाश की ओर देखते हुए वह सोच रहे थे। पाँसा पलट गया। अधिक संख्या में सैनिकों के रहने पर भी इने-गिने अंग्रेजों को परास्त न किया जा सका। उनके सुव्यवस्थित सैन्य-संचालन के आगे मात खाकर पीछे हटना पड़ा।

पास ही खड़ा अजीमुल्ला सिगार पी रहा था। कुछ ही दूरी पर सैनिकों का पड़ाव पड़ा था। सब हारे-थके जँगल में विश्राम कर रहे थे। कुछ घायल भी उनके साथ थे। अजीमुल्ला के दिमाग में एक साथ बहुत सी बातें चक्कर काट रही थीं। अब तक तो अंग्रेज कानपुर पहुँच गये होंगे। मन ही मन वह हँस पड़ा। बीबीघर का दृश्य उन लोगों की विजय के रंग को फीका कर देने के लिए पर्याप्त है।

पराजय पर वह चिन्तित न था। आज भी अंग्रेजों को हराया जा सकता है, बशर्ते कि आसपास के जमींदार और नवाब इस ओर एक होकर बढ़ें। कुछ भी हो, अंग्रेजों को तो पता लग ही गया कि हिन्दोस्तानी कायर नहीं है और उनकी हुकूमत को पसन्द नहीं करते हैं। आज नहीं तो कल इस हुकूमत को बिदा होना पड़ेगा। क्रांति के जो बीज आज बोये गये हैं, वे कभी न कभी वृक्ष का रूप धारण करेंगे ही।

अजीमुल्ला की विचार धारा टूट गई।

"कहो अहमद...?"

अहमद घोड़े से उतर उसके सामने चुपचाप खड़ा था। विचारमग्न अजीमुल्ला उसे आते हुए देख न सका था।

"अंग्रेज कानपुर पहुँच गये?"

"यह तो मालूम ही था।"

"उनकी एक टुकड़ी बिठूर गई है।"

"हुँ!"

"सेनापति हॅवेल लखनऊ रवाना हो गये हैं। नील कानपुर में पहुँचकर जुल्म कर रहा है। कानपुर की ताकत का पता लगाने के लिए आदमी वहीं हैं। अंग्रेज, नाना साहब और आपकी खोज में पड़े हैं!"

"हुँ!"

"......"

"तुम तात्या से जाकर मिलो। अगर तोपों का इंतजाम हो गया हो, तो हम यहाँ से कूच कर दें!"

"जी!"

अहमद चला गया। अजीमुल्ला नाना साहब के पास आकर बैठ गया। इसके सुझाव पर रचा गया नाना साहब का नाटक अधिक नहीं तो कुछ देर तक तो अंग्रेजों को घपले में डाले ही रहा होगा। साथ ही बिठूर से नाना साहब को यहाँ लाकर उसने बुद्धिमानी ही की है। बिठूर में अंग्रेजों को रामचन्द्र राय के सिवाय और कौन मिलेगा? लाख सिर मारा करें। यहाँ नहीं आ सकते। इन घोर जंगल में चुने हुए सैनिकों के साथ नाना साहब के रहने की कल्पना कौन कर सकता है?...और जिस दिन सहसा नाना साहब का अंग्रेजों पर हमला होगा उस दिन मजा आयेगा। इन अंग्रेजों को ऐसे नहीं छोड़ा जा सकता है!

"अहमद आया था?"

"जी हाँ!"

"कोई खास बात?"

"कुछ नहीं।"

"झाँसी की तरफ से कुछ खबर आयी?"

"उधर तो तात्या के आदमी हैं वही बतलायगें । अगर तोपों का इंतजाम हो जाता है, तो हम लोग आगे चल देंगे। आसपास के गाँव वाले भी हमारे साथ चलने को तैयार हैं। मुखिया रामकिसुन आया था। वैसे सबके लिए तीस रोज के खाने पीने का इंतजाम वह कर गया है।"

"अधिक दिन पड़े रहना हमारे लिए अच्छा नहीं होगा। मैं बहुत ही जल्दी अंग्रेजों से मुकाबिला करना चाहता हूँ! तुम यकीन मानों। इस तरह छुपे रहने की बजाय मैं बहादुरी से लड़ते-लड़ते मर जाना अधिक पसन्द करता हूँ।"

"मुझे आपत्ति नहीं, पर मर कर अंग्रेजी राज ही कायम रहे, यह मैं बर्दाश्त नहीं कर सकता!"

नाना साहब मुस्कुराये—"तब क्या करोगे?"

"इसी तरह पड़े रहकर हम अपनी तैयारियाँ पूरी करेंगे और मौका आते ही ऐसा हमला करेंगे कि अंग्रेजों को भागते रास्ता न मिलेगा। कानपुर गया तो क्या हुआ! जंगल नहीं गए!"

"अजीमुल्ला, समय जोश का नहीं, हथियारों का है!"

"इसका भी इन्तजाम होगा, नाना साहब!"

"हूँ!"

नाना साहब चुप हो गए। उनके दिमाग में एक साथ बहुत सी बातें उठ रही थीं। कुछ समय पहिले तक वह अंग्रेजों के खिलाफ न थे और न ही इच्छा थी, पर समय ने, मन के विचारों को पलट दिया है। आज जब अंग्रेजों के खिलाफ झंडा उठाया है, तो उठा ही रहेगा। इसमें शक नहीं कि तात्या टोपे और अजीमुल्ला ने ही उन्हें अपने कर्त्तव्य के प्रति सचेष्ट किया है, पर इसका यह अर्थ नहीं कि वे अब भी अपने पैरों खड़े न हो सकें।

नाना साहब का मन नए जोश से भर गया।

❀

स्टीमर के सहारे गंगा पार करने में चार दिन लग गए। एक-एक करके सारा फौजी सामान, रसद, तोपें, हथियार और सैनिक गंगा पार उतरे। वर्षा के कारण एक नई परीशानी आ गई थी। फिर भी सब कुछ सकुशल उस पार पहुँच गया।

गंगा पारकर हावेल अपनी पूरी सेना साज-सज्जा के साथ लखनऊ के रास्ते पर आगे बढ़े। कच्ची सड़क के कँकरों के कारण रफ्तार धीमी रही। साथ ही वर्षा के कारण अधिकांश रास्ता पानी से भरा हुआ था। तमाम कठिनाईयों का सामना करते हुए हावेल बढ़े जा रहे थे।

रास्ते में ही उन्हें पता लगा कि उन्नाव के बागी सिपाही आगे एक गाँव में पड़े हुए हैं। हावेल के कुछ दूत आगे-आगे चल रहे थे, जो आगे के तमाम हालातों से सेनापति को परिचित कराते चल रहे थे। मंगलोया गाँव के पास पड़ाव डाल दिया गया।

गाँव के बीच से एक कच्चा रास्ता गया था। यही रास्ता लखनऊ जाने वाली सड़क का एक भाग था। इस कच्चे और सँकरे रास्ते से ही सारा सामान ले जाना था। साथ ही इसी गाँव में सिपाहियों के होने की सूचना भी थी। घुड़सवारों और तोपों को आगे कर सेनापति बढ़े, पर कच्चे कीचड़ भरे रास्ते से तोपों का निकलना बड़ा मुश्किल पड़ रहा था।

सहसा पीछे से सिपाहियों ने बड़े जोर का हमला कर दिया, जिसकी आशा किस. को न थी। इस अनायास आक्रमण से बड़ी गड़-बड़ी मच गई। तोपें कीचड़ में फँसी रहने के कारण घुमाई न जा सकीं। दूसरे पानी में बारूद का उपयोग व्यर्थ था।

दोनों पक्षों से गोली वर्षा प्रारम्भ हो गई।

बागियों ने गोरे सैनिकों को खदेड़ा और कीचड़ में फँसी तोपों पर अपना अधिकार कर लिया, पर वे भी इन तोपों को हटाने बढ़ाने में असमर्थ थे। अतएव और कुछ उपाय न देख, उन लोगों ने तोपों की तोड़-फोड़ शुरू कर दी। फन्दा, बारूद के ढक्कन वगैरह बुरी तरह से तोड़-ताड़कर अधिकांश तोपें बेकाबू कर दी गईं।

सिपाहियों के आक्रमण का प्रबल वेग आश्चर्यजनक था। हावेल को स्वतः सामने आना पड़ा। आते ही उन्होंने सिक्ख सेना को आगे बढ़ा घुड़सवारों को घेरा डालने का आदेश दिया। सिक्ख टुकड़ी से लड़ते हुए सैनिक घुड़सवारों की बाढ़ को रोक न सके।

घुड़सवारों ने उन्हें चपेटा और इस दुतरफा मार के आगे वे सिपाही ठहर न सके। अधिकांश मारे गये और बचे-खुचे भाग गये।

इस आक्रमण के कारण अंग्रेजों को बड़ी क्षति उठानी पड़ी। उनकी पन्द्रह तोपें एकदम बेकार हो गईं और उन्हें छोड़ देना पड़ा। मृत्यु संख्या कम होने पर भी घायलों की संख्या अधिक थी। बागियों को भगा देने के पश्चात् हावेल ने वहीं डेरा डाल दिया।

यह एक नया संकट उनके सामने था। अगर इसी प्रकार रास्ते-रास्ते बागियों से सामना होता गया तो क्रमशः शक्ति क्षीण होती जायगी और लखनऊ भी शीघ्र पहुँच सकना सम्भव नहीं है। लखनऊ के समाचार अत्यधिक चिन्ताजनक हैं और यहाँ पर हर ओर बागी हैं। जैसे एक बहुत बड़ा षड्यंत्र अंग्रेजों के खिलाफ चारों तरफ बिखर गया है। अगर यह षड्यंत्र बिखरा न रहकर एक सूत्र में आबद्ध रहता तो...हावेल काँप उठे तब शायद एक भी अंग्रेज इस धरती पर नजर न आता।

"साहब..."

"......"

"इन सिपाहियों के साथ तात्या टोपे भी था!"

"क्या कहा? तात्या टोपे?"

"हाँ साब!"

"किस ओर भागे सब?"

"अब तो बहुत दूर निकल गए!"

"ओफ्फ! तुमने पहिले क्यों नहीं बताया!"—हावेल की मुट्ठियाँ कस गईं। तात्या टोपे का चेहरा आँखों आगे घूम गया—"यह आदमी...अच्छा। अब पूरी तैयारी के साथ आगे बढ़ना होगा!"

❀

विजय का गहरा मूल्य चुकाकार सेनापति हावेल आगे बढ़े पर उनकी चिन्ताएँ बढ़ती गईं। कानपुर से लखनऊ तक का रास्ता साफ नहीं है। बिहार में भी विद्रोह फैल गया है। चारों ओर उठने वाली इस उत्तेजना के कारण गाँवों में

भी विद्रोह के अँगारे सुलग रहे हैं। मँगलोया पर जैसी मुसीबत उठानी पड़ी, वैसे ही आगे भी उठानी पड़ेगी। यह स्थिति खतरनाक है। इस तरह से शक्ति क्षीण होती जायगी। सम्भव है कि रास्ते में ही मारे जाँय अथवा अगर लखनऊ तक पहुँच भी गये, तो किस बूते वहाँ के उन बागियों का सामना कर सकेंगे, जिनकी शक्ति कई गुनी अधिक है।

रास्ते का वातावरण अच्छा न था। वर्षा के झोंके और कीचड़ भरे रास्ते गतिरोध उत्पन्न कर रहे थे। साथ ही सैनिक बीमार भी पड़ने लगी। कभी कड़ी धूप। कभी गहरी वर्षा। अंग्रेजों के लिए यह मौसमी स्थिति बर्दाश्त के बाहर थी। गोरे बीमार पड़ने लगे। बीमार सैनिकों को कैसे पीछे छोड़ा जा सकता है! उन्हें साथ ले चलना जरूरी था। बीमारों की परिचर्या में अनेक लोग लग गए। यह एक नई समस्या उठ खड़ी हुई।

दो पड़ाव के बाद तीसरा पड़ाव। सेनापति हावेल इसी चिन्ता में डूबे थे। सैनिक शक्ति तेजी से क्षीण हो रही थी। यही स्थिति खतरे का संकेत थी।

बशीरगंज के पास पड़ाव डाल देना पड़ा। गाँव के पास ही एक झील थी। पानी से लबालब। पार करने के लिए कच्चा पुल था। पुल की जाँच के लिए सैनिक गए हुए थे। लौटकर आए।

"पुल से तोपें जा सकती हैं!"

"ठीक है। इन्तजाम करो!"

सेना पुल पर से आगे बढ़ने की तैयारियाँ करने लगी, पर कुछ ही कदम के बाद सब चौंक पड़े। भगदड़ मच गई। तोपों की आवाज सुनाई पड़ी और साथ ही गोलियों की बौछार!

"कौन हैं?"

"सिपाही हैं!"

हावेल ने युद्ध का डंका बजा दिया। सेना के साथ वह सामना करने आगे बढ़े। सिपाही पुल से इस ओर आ गये। संख्या में कम होते हुए भी उनकी दो तोपों की मार के आगे अंग्रेजी टुकड़ी के छक्के छूट गए और बहुत से सैनिक मारे गये। हावेल ने पूरी ताकत के साथ मुकाबिला किया। सिपाही घिर गये मारे।

गये पर सहसा धड़ाके की आवाज के साथ पुल के उस पार खड़े सिपाहियों ने पुल तोड़ दिया।

हावेल की विजयी सेना इसी ओर रह गई।

युद्ध समाप्त हो गया, पर हावेल को काफी क्षति उठानी पड़ी। साथ ही साथ आगे बढ़ना एक समस्या बन गया। झील का पानी कई मील के घेरे में था। पानी का घेरा बचाने पर लम्बे चक्कर के साथ कच्चे रास्ते की कठिनाई के कारण तोपें ले चलना दुरूह था।

काफी सैनिक घायल हुए। काफी मात्रा में बारूद समाप्त हो गई। बशीरगंज के इस आक्रमण ने हावेल की कमर तोड़ दी। हिम्मत हार बैठे। यह निश्चित हो गया कि बागी उन्हें इसी तरह परीशान करते चलेंगे। आगे भी सामना करना पड़ेगा। ऐसी हालत में पूरी तैयारी के साथ बढ़ना अच्छा है। बीमार, घायल सैनिकों के साथ अल्प शक्ति के साथ बढ़ने से खतरा है।

सवेरे ही सेनापति हावेल ने अपने पाँव पीछे हटा लिए। बशीरगंज से मँगलोया लौट आए और कर्नल नील को पत्र लिखा कि एक हजार पैदल सैनिकों के साथ काफी संख्या में तोपें और गोलन्दाज टुकड़ी भेज दें। साथ ही सारी बातें विस्तार से लिख दीं। फ्रेंच भाषा में लिखा पत्र लेकर वाहक चला गया।

*

समाचार पाते ही कालविन ने बीमार रहते हुए भी तैयारियाँ शुरू कर दीं। नीमच और नसीराबाद के विद्रोह की खबर से सारा आगरा आतंकित हो उठा। ग्वालियर के भी अंग्रेज भागकर आगरा आ गये थे। विद्रोही सिपाही आगरा की ओर बढ़ रहे थे। इसकी सूचना आगरा में हलचल मचाए हुए थी।

आगरे के किले में ईसाईयों और अंग्रेजों के रहने की व्यवस्था की गई। आवश्यक खाद्य पदार्थ जुटाए गए। आगरा की रक्षा के लिए सैनिक तैयार हुए। कोटा की रक्षित सेना आगरा आ गई। करौली के छः सौ सैनिक, भरतपुर के तीन सौ सवार और दो तोपें आगरा आ गईं। इन सेना को भिन्न-भिन्न स्थानों पर तैनात किया गया। कोटा की सेना छावनी की रक्षा के लिए, करौली की सेना फतहपुर सीकरी के रास्ते शाहगंज में तैनात हुई। कालविन पूरी सैनिक तैयारियों के साथ बागियों का सामना करने के लिए तैयार हो गए।

इस भाग दौड़ के कारण स्वास्थ्य पर और प्रभाव पड़ा। कालविन ने खाट पकड़ ली। अपनी ओर से उन्होंने कुछ व्यक्तियों की समिति बनाकर अपना भार उस पर सौंप दिया।

सूचना मिली कि विद्रोही फतहपुर-सीकरी के पास आ गए हैं और शीघ्र ही आगरा पर चढ़ाई का प्रबन्ध कर रहे हैं।

❀

तात्या टोपे घुड़सवार सैनिकों के साथ घने जंगल में लौट आया। हावेल की सेना को किस तरह से उसने छकाया, उससे मन संतुष्ट था। मुट्ठी भर सिपाही उसने अंग्रेजों को भट्ठी में झोंक ऐन मौके पर पुल तोड़कर बहुत ही सामयिक कार्य किया। इस कार्य से अंग्रेजी सेना पंगु हो गई। और अब पता चला है कि हावेल वापस मँगलोया लौट गया। कानपुर से और शक्ति बटोरकर ही वह आगे बढ़ेगा। अच्छा हुआ। हावेल को गति रुक गई और वह लखनऊ शीघ्र पहुँच न सकेगा।

घुड़सवार साथियों को आगे बढ़ने का हुक्म दे तात्या टोपे ने दूसरे राह गही। वह बराबर अपना घोड़ा दौड़ाए चला गया। अनेक मील की दौड़ के उपरान्त एक गाँव में रुका वह। गाँव में एक बट वृक्ष तले धूनी रमाए बाबा के चरण छू वह पास ही बैठ गया। बाबा का भक्त समझकर गाँववालों ने तात्या टोपे पर विशेष ध्यान न दिया।

"बालराव, कोई आया था?"

"हाँ, अजीमुल्ला का आदमी!"

"......"

"तुम्हें बुलाया गया है!"

"हुँ। मैंने हावेल को लखनऊ के रास्ते आगे बढ़ने से एकदम रोक दिया है। छिट-फुट हमले करके ही हम इस समय कामयाब हो सकते हैं। जब तक पूरी फौज न तैयार कर लूँ, तब तक आक्रमण प्रत्यक्ष रूप से नहीं हो सकता। मैं तैयारियाँ कर रहा हूँ। गाँव-गाँव हमारे आदमी घूम रहे हैं। आशा है, शीघ्र ही मैं लम्बी फौज तैयार कर सकूँगा। नाना साहब का क्या समाचार है?"

"ठीक है !"

"फतेहपुर के युद्ध में तुम देख ही चुके हो बालराव, मुट्ठी भर अंग्रेज कैसा जुल्म करते हैं इसलिए कि उनमें अनुशासन है। एकता है। इधर लखनऊ वालों ने जानते हो क्या लिखा है ? लिखते हैं, मम्मूखाँ ने बेगम के अभिभावकत्व में छोटे नवाब को लखनऊ का शासक बना दिया है। ऐसी हालत में अगर हम लोग नवाब की आधीनता स्वीकार कर उनके पास जाँय, तो वे हमारी योजना पर विचार कर सकते हैं। कैसी मूर्खतापूर्ण बात है ! यह समय आपसी तकरार का है ! लखनऊ में जब उनकी ताकत बढ़ गई है, तो उन्हें सीधे इसी ओर बढ़ना था ! तमाशा कर रहे हैं सब ! लखनऊ पर अधिकार तो देश पर अधिकार, सोच वे सब मस्त हैं। रेजीडेंसी को घेर बैठे हैं। अंग्रेजों को तंग करते हुए आनन्द ले रहे हैं। बालराव, इसी स्थिति पर अफसोस करता हुआ मैं कल रात भर सो नहीं सका। हमारी बरसों की योजना पर पानी फिर गया। सबकी अपनी ढपली, अपना राग है !"

"......"

"अच्छा ! कह देना नाना से। शीघ्र ही मैं आऊँगा। जब ओखली में सिर चला गया है, तो मूसल से क्या डरूँ ! भोगना ही होगा। आखिरी दम तक अंग्रेजों से लड़ूँगा। वैसे झाँसी के जो समाचार हैं, वे काफी उत्साहवर्धक हैं। अगर बड़ी शक्ति हाथ लगी तो मैं वहीं जाकर अपनी विजय यात्रा इस ओर के लिए प्रारम्भ करूँगा !"

"मैं एक दिन और यहाँ हूँ !"

"ठीक है। इस बीच मैं आऊँगा !"

"कानपुर के समाचार अच्छे नहीं है। नील ने जुल्म मचा रक्खा है !"

"क्या करोगे ! जो किया है, सो भोगना पड़ेगा। अंग्रेज जीतेंगे तो बदला अवश्य लेंगे। बड़ी नीच कौम है यह ! इंग्लैंड में जब गिरजाघरों की लड़ाई हुई थी, तो इन लोगों ने अपने दुश्मनों को जिन्दा जलाया था। ऐसे हैं ये लोग। ऐसे लोगों से तुम और क्या उम्मीद कर सकते हो !"

तात्या सिर नवा हाथ जोड़ घोड़े पर बैठ आगे बढ़ गया।

*

"मुझे पूरी आशा है, कोटा के सैनिक ही पहले मोर्चे पर भेजे जायँगे ! इनके सिवाय और है कौन !"

"यह तो बड़ी गलत बात है कि हमारे भाई हम पर हथियार उठाएँ ।"

"तब क्या करियेगा ?"

"कोटा के सैनिकों में इस बात को समझाने को चेष्टा की जाय कि यह हमारी स्वतंत्रता का संग्राम है । इस देश में पैदा होने वाले हर आदमी का फर्ज है कि वह इस संग्राम मे भाग ले । कोटा के अधिकांश भाग में हमारा काम पहिले हो ही चुका है । संभव है कि वे सब इस भ्रम में हों कि किस बूते लड़ें ! उन्हें आश्वासन दिया जाय कि हम सब उनके लिए तैयार हैं ।"

"......"

"लेकिन आगरा तब जाय कौन ?"

"बलभद्र और राजकिशोर को भेज दो । वे लोग जाँय और इस ओर कोशिश करके देखें ।"

※

प्रतिनिधियों ने बड़ी बहस के बाद तय किया कि जेलखाने के तमाम हट्टे-कट्टे कैदियों को जमना पार भेज पुन तोड़ दिया जाय । रक्षा के लिए इतना करना आवश्यक है ।

आगरा के जेल में कैदियों की संख्या अधिक थी और इस बात का खतरा था कि शायद जेलखाना टूटने पर कैदी भी बागियों से मिलकर तमाशा खड़ा कर दें । इस घटना से निश्चय ही बागियों की शक्ति बढ़ जाने का खतरा था और ऐसी दशा में यह आवश्यक हो गया कि कैदियों की ओर से इस खतरे का निवारण किया जाय ।

"इसके बाद हमारा काम यह होना चाहिए कि बागियों पर हमला हो !"

"कौन जायगा ?"

"कोटा के सैनिक !"

"भाई मुझे इन लोगों का भरोसा नहीं है । मेरी राय से इन सैनिकों के हथियार छीन लेना अच्छा होगा !"

एकदम नई बात सुन सब लोग चौंक पड़े।

"इसका मतलब ?"

"आखिर क्यों ?"

"कोटा के सैनिकों की गतिविधियाँ आजकल बड़ी ही सन्देहजनक हैं। मुझे तो भरोसा नहीं !"

"मैं ऐसा काम नहीं कर सकता।"—कोटा की सेना के कमांडर ने कहा—"इससे हम सबके लिए खतरा हो सकता है। हाँ, मैं इनको लेकर शीघ्र ही सीकरी की तरफ बढ़ सकता हूँ।"

"तब ऐसा ही कीजिए !"

नवाब सैफुल्ला खाँ भी बुदबुदाए—"भई, ऐसे ही रंग-ढंग तो मुझे भी अपने करौली के सिपाहियों के भी नजर आते हैं। समझाने का काम मैं भरसक कर रहा हूँ, पर बड़ा मुश्किल तो यह है कि चारों तरफ फैली इस गरमी के कारण सिपाहियों का खून इतना गरम हो गया है कि वे अपने आफीसरों की बात सुनना गुनाह समझते हैं।"

प्रतिनिधियों में सन्नाटा फैल गया। अन्ततः यही तय हुआ कि सबसे पहिले कोटा के सैनिक बागियों को भगाने आगे बढ़ें।

ॐ

बिगुल बजा। अंग्रेज अफसर और कुछ अंग्रेज-सैनिकों के नेतृत्व में कोटा के सिपाही, विद्रोहियों का सामना करने फतहपुर-सीकरी के रास्ते बढ़े।

अंग्रेज अफसर इस टुकड़ी को लेकर पूरे उत्साह के साथ आगे बढ़ रहे थे। दोपहर से पहले ही फतेहपुर सीकरी के काफी निकट आ गए। पता चला कि बागियों की टुकड़ी अब थोड़ी ही दूर पर है। अफसर ने गोलंदाजों को अपनी बत्तियां बालने का हुक्म दिया। सैनिक भी तैयार हो गए।

सहसा दृश्य बदल गया।

तोपों का मुँह अंग्रेजों की ओर हो गया। साथ ही बंदूकें भी पलटकर बरस उठीं। आफीसर मारा गया। बचे अंग्रेज भाग खड़े हुए। सिपाहियों ने उन्हें काफी दूर तक खदेड़ा। फिर जयघोष करते हुए वे सब फतहपुर-सीकरी आए।

उनका शोरगुल सुन बागी सिपाही हड़बड़ाकर तैयार हो गए कि अंग्रेज अपनी सेना लेकर आ गये, पर सबसे आगे ही हरी पताका देख वे समझ गये, अंग्रेज नहीं, हमारे साथी हैं।

जयघोस से आकाश गूँज उठा।

❀

कोटा के कुछ सैनिक वापस लौट आए। आगरा शहर में धँसते ही उन सब ने लूटमार शुरू कर दी। देखते-देखते शान्त आगरा विद्रोह से भर गया। आगजनी, हत्या, लूटमार शुरू हो गई। यकायक करौली की सेना भी उठ खड़ी हुई। सैफुल्ला खाँ की एक न सुनी गई।

"गोली मार दो।"

नवाब की ओर सैनिक दौड़े। सैफुल्लाखाँ अपनी जान बचाकर भाग खड़ा हुआ। करौली के सिपाहियों के कारण बगावत और प्रबल हो गई। कालविन को खबर मिली। बीमारी हालत में ही उन्हें किले में भाग जाना पड़ा। देखते-देखते आगरा पर बागियों का अधिकार हो गया। फतेहपुर-सीकरी में पड़े तमाम बागी सिपाही भी आगरा की ओर बढ़े।

किले में क्षण-क्षण के समाचार आने लगे। कुछ अंग्रेजों ने इस तरह किले में पड़े रहने का विरोध किया और कालविन की इच्छा के विरुद्ध युद्ध के लिए आठ सौ गोरे सैनिक तैयार हो गये। तोपों और पूरी हथियारबंदी के साथ गोरे सैनिक ब्रिगेडियर के नेतृत्व में किले से निकल पड़े।

इस सेना के किले से बाहर आते ही बागियों के कान खड़े हुए। इनमें अधिकांश बदमाश और लुटेरे थे। वे भाग खड़े हुए। सेना शहर के बीच से होकर शाहगंज की ओर बढ़ी। बागी उसी ओर से आ रहे थे। शाहगंज पहुँच कर मोर्चेबंदी कर दी गई।

थोड़ी देर बाद ही बागी सिपाही आ गये। ब्रिगेडियर होवल के आश्चर्य का ठिकाना न रहा। आगरा का कोतवाल मुबारकअली बागियों का नायक था। उसने अंग्रेजी सेना देखते ही आक्रमण का हुक्म दिया। दोनों पक्ष भिड़ गये। शाहगंज का सूना मैदान लाशों और रक्त से भरने लगा। तोपों की मार से दोनों ओर के सैनिक गिरने लगे।

गोलंदाज टुकड़ी के नायक कप्तान डामली का घोड़ा मारा गया। कुछ ही क्षण बाद वे भी गोली खाकर गिर गये। गोरे सैनिकों की मुसीबत आ गई। बागी सिपाहियों ने उन्हें घेर लिया।

कप्तान हावेल ने तुरन्त सहायता के लिए किले में समाचार भेजा, पर रही-सही टुकड़ी को मदद के लिए न भेज किले की रक्षा के लिए ही रख छोड़ना कालविन ने अधिक पसंद किया। न ही सेना भेजी और न ही गोला बारूद।

इसके अभाव में अंग्रेज टुकड़ी को भारी क्षति उठाकर भागना पड़ा।

सिपाहियों ने पीछा किया। गिरते पड़ते गोरे सैनिक किले की ओर भागे।

❀

किले की ऊँची बुर्जियों पर खड़ी मेमों और बच्चों में हाहाकार मच गया। कुछ अफसर भी उस पर थे। यह दृश्य देखते ही वे सब घबड़ा गए। गोरे सैनिक प्राणपण से भागे आ रहे थे और बंदूकें उठाए, तलवार ताने सिपाही घुड़सवार उनको रगेद रहे थे। जहाँ जिसका दाँव पड़ता, वह वहीं ढेर हो जाता। मारते, खदेड़ते—सिपाही दौड़े आ रहे थे। किले में हाहाकार मच गया। स्त्रियाँ बिलखती हुई इधर से उधर दौड़ने लगीं। तुरन्त किले का फाटक खोल दिया गया। गिरते-पड़ते, खून से लथपथ, प्यासे सैनिक किले में आकर लोटने लगे। मेमों ने पानी और शराब की व्यवस्था की। हृदय कँपा देने वाला वीभत्स दृश्य उपस्थित हो गया। क्षतविक्षत अंग्रेज किले में गिरते-पड़ते आने लगे।

देखते-देखते अधिकांश लोग आ गए। सिपाही भागते आ रहे थे।

"मारो! मारो!"

"......"

"मारो! काटो!!"

किले का फाटक बन्द हो गया। कुछ अंग्रेज बाहर ही रह गये, पर अब इतना समय न था कि फाटक और खुला रखा जा सके, क्योंकि सिपाही एकदम निकट आ गये थे। जो अंग्रेज बाहर रह गये, वे मारे गये। सिपाहियों का कोलाहल किले की दीवार के चारों ओर सुनायी पड़ने लगा।

शान्त पड़े शहर की हालत फिर बदल गई। छुपे हुए पुर्तगाली और अंग्रेज

मारे जाने लगे। छावनी और कोठियों में आग लगा दी गई। जेलखाना तोड़ दिया गया। शहर में सर्वत्र अराजकता फैल गई।

मुबारक अली ने आगरा कोतवाली पर बादशाह सलामत का झंडा फहराकर बादशाह की हुकूमत की स्थापना की घोषणा की।

"शांहशाह बहादुरशाह..."

"जिंदाबाद!"

हथियारों और तोपों से सज्जित बागियों की भारी सेना ने सर्वसम्मति से दिल्ली चलने का प्रस्ताव पास किया। कोतवाली की इस सभा में बादशाह सलामत का संदेश पढ़कर सुनाया गया, जिसमें कहा गया था कि तमाम बागी लोग, तमाम वे लोग, जो अंग्रेजी अमलदारी नहीं चाहते हैं, दिल्ली आ जाँय।

रात भर शहर आगरा में मकान जलते रहे। सिपाहियों का जयघोष गूँजता रहा। कुछ टुकड़ियों ने किले पर भी हमला किया, पर उनको रोक दिया गया कि इसमें व्यर्थ शक्ति खर्च करने की आवश्यकता नहीं। दिल्ली में एक बहुत बड़े युद्ध की तैयारियाँ हो रही हैं, उसमें सबका योग देना आवश्यक है।

प्रातः की बेला में बागी दल अपने हथियारों और तोपों के साथ दिल्ली के रास्ते चल पड़ा। शासन-विहीन आगरा सूना हो गया।

ॐ

लखनऊ प्रवेश करते ही फर्नेण्डा की खुशी का ठिकाना न रहा। लम्बी यात्रा और लम्बे कष्ट का अन्त हुआ। किसी प्रकार वह अपनी जान बचाकर यहाँ तक आ सकी। यही उसके लिए बहुत था। अपने साथ के युवक मुसलमान सिपाही के प्रति उसका मन अत्यधिक कृतज्ञता से भर गया। उसी के कारण वह निरापद आ सकी। याकूब खाँ ने रास्ते में स्वयं कष्ट झेले पर फर्नेण्डा को अपने तईं कोई कष्ट न होने दिया। फर्नेण्डा की वेशभूषा बदल देने पर भी अपने रूप रंग और अपनी टूटी-फूटी हिन्दी के कारण उसका छिपना बड़ा मुश्किल पड़ता था। याकूब को अनेक स्थानों पर उसे अपनी पत्नी घोषित करना पड़ा। फर्नेण्डा को भी यह बात स्वीकार करना पड़ा। इस कारण ही उसके प्राण बचे और गाँव के लोगों ने या राह में मिलने वाले बागी सिपाहियों ने उन्हें बेदाग छोड़ दिया।

लखनऊ पहुँचने पर फर्नेण्डा को आशा थी कि वह अपने अंग्रेज साथियों से मिल सकेगी और इस प्रकार वह पुनः अपने वातावरण में स्वतंत्र हो सकेगी। याकूब खाँ को भी पुरस्कृत करने का उसने निश्चय कर लिया था, पर लखनऊ आते ही उसने शहर का जो दृश्य देखा, उससे मन बैठ गया।

शहर पर सिपाहियों का कब्जा था। रेजीडेंसी में अंग्रेज घिरे थे और सिपाहियों तथा अंग्रेजों के बीच युद्ध जारी था। फर्नेण्डा की सारी आशाओं पर पानी फिर गया।

याकूब खाँ लखनऊ में अपने एक रिश्तेदार के यहाँ ठहरा। उससे आगे जाने को उसका मन कत्तई न था। फर्नेण्डा को भी उसने वहीं ठहराया। फर्नेण्डा का सामने होते ही परिवार में हलचल मच गई।

"यह तो मेम है?"

"हाँ!"

"इसे नहीं रखेंगे!"

"यह तो मेरी बीवी है!"

"निकाह हो गया?"

"......"

"कलमा पढ़ाया?"

"......"

"अभी तो कुछ नहीं हुआ?"

इस पर परिवार के लोगों को बड़ी प्रसन्नता हुई। याकूब खाँ ने भी अपनी मन की बात अब अवसर देख खोली और अपना इरादा फर्नेण्डा पर व्यक्त किया। फर्नेण्डा खामोश रह गई। रात भर उसने इस प्रस्ताव पर विचार किया। अन्ततः स्वीकार कर लिया। इसके अतिरिक्त अब कोई रास्ता भी नहीं है। लखनऊ की जब यह दशा है, तो कानपुर के उद्धार की कोई आशा नहीं। माता पिता मारे जा चुके हैं। उनका दुःखद अन्त वह अपनी आँखों देख चुकी है। ऐसी हालत में किस बूते वह इस प्रस्ताव को ठुकरा सकती है और सच पूछा जाय तो उसका यह जीवन याकूब के कारण ही सुरक्षित रहा है। यदि याकूब ने उसकी रक्षा न की होती

तो कानपुर में उसके जीवन का भी अन्त हो गया होता। यह जीवन याकूब का ही दिया हुआ है।

सबेरे ही निकाह की तैयारियाँ हो गईं। मौलवी ने आकर फर्नेण्डा को कलमा पढ़ाकर मुसलमान बनाया और याकूब के साथ उसका निकाह कर दिया गया। याकूब और फर्नेण्डा मियाँ बीबी हो गए। याकूब ने नवाब की फौज में नौकरी कर ली।

❀

रेजीडेंसी पर पहरा था। सिपाही पड़े थे। दिन भर और काफी रात गये तक आक्रमण प्रत्याक्रमण होते। सैनिकों की टुकड़ियाँ रात अपने शिविरों में पड़ी रहतीं। पहरेदार सतर्क होकर पहरा दिया करते थे ताकि अंग्रेज गुप्त रूप से रेजीडेंसी से भाग न सकें। साथ ही उनके दूत वगैरह भी न आ जा सकें। उल्लास और उत्साह से भरा याकूब भी पहरे पर था। फर्नेण्डा की ही याद कर रहा था वह। फर्नेण्डा बिना किसी विरोध के उसकी बीबी हो गई है और बड़ी ही शान्ति और प्यार से उसने छोटी सी गृहस्थी सँभाल ली है। फर्नेण्डा की खूबसूरती के साथ-साथ उसके हृदय की भी यह खूबसूरती देखकर याकूब की प्रसन्नता का पारावार न था।

मम्मू खाँ तक इस विवाह का समाचार पहुँच चुका था और मम्मू खाँ ने खुश होकर याकूब को इनाम भी दिया। याकूब की इस शादी की चर्चा सिपाहियों में भी थी और अधिकांश सिपाही उसे पहिचानने भी लगे थे।

याकूब ठिठक गया।

रेजीडेंसी की दीवार से कोई आकृति सटी हुई दिखलायी पड़ रही थी।

"कौन ?"

"......"

याकूब दौड़कर पास गया।

"कौन ?"

"मैं !"

"उजेले में आओ !"

दीवार से सटा आदमी सामने आया। उसका रूप-रंग देख याकूब चौंक पड़ा। हिन्दोस्तानी वेश में यह तो कोई अंग्रेज मालूम पड़ता है। वेशभूषा से वह फेरी वाला मालूम पड़ रहा था। याकूब ने अपनी तलवार खींच ली।

"बोलो, कौन हो ?"

"......"

"सच बोलना ?"

"मुहम्मद अली !"

याकूब ठिठक गया। मुहम्मद अली का नाम उसने भी सुना था, पर देखा न था।

"इधर क्यों हो ?"

"रेजीडेंसी गया था। अंग्रेजों का भेद लेने !"

गुल गपाड़ा सुन एक दूसरा पहरेदार दौड़ा आया। उसने मुहम्मद अली को पहिचान लिया। याकूब को हटा लिया।

"तुम याकूब हो न !"—मुहम्मद अली ने हँसकर कहा—"जिसने ह्वीलर की लड़की से शादी की है ?"

"हाँ !"

"अब तो पहिचान लिया। अब मत रोकना ?"

"जी नहीं !"

मुहम्मद अली आगे बढ़ गया।

"आजकल ये बेगम की तरफ से जासूसी करते हैं।"—पहरेदार ने फुसफुसाकर कहा—"इन्हें अब मत रोकना !"

"मैंने तो सुना है, मुहम्मदअली बहुत बड़े आदमी हैं।"

"हाँ, बड़े आदमी हैं, पर मुल्क की खिदमत के लिए सब कुछ करना पड़ता है।"

❀

वृद्ध और बीमार सेनापति घबड़ा गए। अचानक दानापुर के तमाम सिपाही, जो कांड कर बैठे थे, वह अत्यधिक चिन्ताजनक था। दानापुर में केवल चार तोपें

और पाँच सौ गोरे सैनिकों को रखकर शेष शक्ति पटना की रक्षा के लिए भेज दी। संभव था कि पटना पर भी हमला हो जाय और इस स्थिति का लाभ उठाकर पटना में भी गड़बड़ी मच जाय।

कुछ ही देर में यह समाचार आया कि सिपाही आरा की ओर बढ़ रहे हैं।

"तब तो नाव से सोन पार करेंगे?"

"हाँ!"

"उनकी नावें डुबा दी जाँय!"

"ठीक है सेना भेजिए।

ब्रिगेडियर पैदल टुकड़ी लेकर सिपाहियों के फैलाव को रोकने के लिए दौड़ा। लगातार दौड़ के बाद वह तट के समीप आया। देखा, सिपाही नावों से पार जा रहे थे और उस पार झंडा फहरा रहा था। सिपाहियों की अधिक संख्या देख ब्रिगेडियर का साहस न हुआ कि रोकने के लिए आगे बढ़ सके। गोरे सैनिक भी घबड़ा गए थे। इस कारण सब बिना किसी छेड़-छाड़ के चुपचाप लौट आए।

❀

विद्रोह का समाचार पाते ही कमिश्नर टेलर एकदम बौखला गए। सेनापति को ही इसका जिम्मेदार ठहराकर उन्होंने उनकी खूब भर्त्सना की। पटना की रक्षा के लिए उन्होंने बहुत ही कड़ा प्रबंध किया। साथ ही कर्फ्यू का समय शाम छः बजे से प्रातः काल छः बजे तक कर दिया गया। शहर में गोरी पलटन और सिक्ख सैनिक बराबर तैनात हो गए। उन्हें स्पष्ट आदेश हो गया कि कर्फ्यू की अवधि में अथवा किसी भी संदेहजनक स्थिति में कोई भी व्यक्ति दीख पड़े, उसे गोली मार दो।

इस नए आदेश और दानापुर की बगावत से सारा पटना हिल गया। लोगों के हृदय एकदम जोश से भर गये, पर हथियारबंद सैनिकों के कारण कुछ कर सकने में असमर्थ थे। मसजिदों में गुप्त रूप से तैयारियाँ होतीं, पर शस्त्रों के अभाव में इच्छा रहते हुए भी लोग कुछ भी कर सकने में असमर्थ थे। सिपाहियों के प्रति सबकी सहानुभूति थी। टेलर के दमन के कारण सारा नगर रुष्ट था।

विद्रोही सिपाहियों के आरा की ओर चले जाने के कारण पटना के नागरिकों को बड़ी निराशा हुई। अगर सिपाही पटना पर आक्रमण करने आते तो यह तय था कि नगरवासी उनका साथ देते और पटना से भी अंग्रेजी अमलदारी उठ जाती, जिसका बहुत बड़ा प्रभाव आसपास के क्षेत्र पर पड़ता, पर हरेकृष्णा उन सबको आरा ले गए।

टेलर की उत्तेजना और अशान्ति की सीमा न थी। मुहम्मदअली के खाली हाथ लौट आने के कारण उन्हें डिप्टी कलक्टर के पद से बर्खास्त कर दिया कि वे अयोग्य हैं। कुँवर सिंह के न आने का पूरा विश्वास हो गया। साथ ही यह भी धारणा जम गई कि सिपाही कुँवर सिंह के ही इशारे पर आरा की ओर गए हैं। अब वह बागियों का नेता हो गया है।

आरा के अंग्रेजों के लिए टेलर की चिन्ता बढ़ गई।

※

क्षुब्ध टेलर कमरे में चहल-कदमी कर रहे थे। कुछ सूझ ही न पड़ रहा था। आरा का समाचार आ चुका था कि एक पक्के मकान में तमाम अंग्रेज आश्रय लिये पड़े हैं और किसी प्रकार अपनी रक्षा कर रहे हैं। अगर उनके बचाव के लिए शीघ्र प्रबंध न किया गया तो यह निश्चित है, सब के सब मारे जाँयगे।

आरा के अंग्रेजों की रक्षा अत्यावश्यक है। उस ओर सेना भेजना चाहिए। बागी भी उसी ओर हैं। मुकाबला करना जरूरी है।

"कोई है?"

"हाँ साब!"

ब्रिगेडियर को बुलाओ!"

"अभी साब!"

ब्रिगेडियर के साथ सेनापति भी आ गए। उनके आगमन से टेलर को प्रसन्नता हुई। बोले—"मैं आपको भी बुलाने का प्रबंध कर रहा था। अच्छा हुआ, जो आप आ गए!"

"......"

"आरा से दो आदमी जो समाचार लेकर आए हैं, वे काफी चिन्ताजनक हैं। हमारे साथी एक घर में घिर गए हैं और किसी प्रकार अपनी रक्षा कर रहे हैं। उनकी सहायता के लिए हमारा जाना जरूरी है। इस ओर बहुत ही शीघ्रता करना है!"

"आपने क्या सोचा?"

"जहाज से आदमियों को रवाना कीजिए। नहर के पास से नावें पकड़ें। वहाँ से आरा सात-आठ मील पड़ता है। यह देखिए।"—टेलर ने नक्शे पर अँगुली रखकर कहा।

"हमारे पास एक ही तो जहाज है।"

"वही काफी है।"

"ठीक है।"

"कृपया जल्दी कीजिये। इस बात का भी ख्याल रखिए कि वहाँ बागियों का सामना करते हुए आप सबको बढ़ना है और उन लोगों को छुड़ाकर लाना है। एक सिक्ख ने आकर जैसी खबर दी है, उससे साफ है कि वे लोग बहुत संकट में हैं।"

"अच्छा।"

टेलर के आदेशानुसार वृद्ध सेनापति ने तत्काल प्रबंध किया। एक जहाज पर गोरे सैनिकों की पलटन बैठी। जहाज पूरी तैयारियों के साथ रवाना हो गया, पर कुछ ही मील आगे जाकर पानी की गहराई कम होने के कारण फँस गया। उसका आगे बढ़ना मुश्किल था।

❀

"जहाज फँस गया?"

"जी हाँ!"

"तो दूसरा जहाज भेजो उसे घसीटकर ले जाए!"

"दूसरा जहाज मँगाना पड़ेगा। वैसे इस वक्त एक जहाज आकर रुका है। उसमें इलाहाबाद के लोग हैं। सब कलकत्ते जा रहे हैं!"

"बहुत ठीक!"—टेलर ने कहा—"उन सबको उतार लो। रोक दो।

जहाज के लौटकर आने पर सब चले जाँयगे। हम अपना काम निकाल लें। मेरा ख्याल है, अंग्रेज सैनिक भी इसमें होंगे।"

"जी हाँ!"

"ठीक! हिन्दोस्तानी सिपाहियों को और कम कर दो। उनके बदले इस जहाज के लोगों को ले जाओ। हम सिपाहियों को इस वक्त ज्यादा विश्वास नहीं दे सकते हैं!"

इलाहाबाद से कलकत्ता जाने वाले जहाज पर सवार अंग्रेज स्त्रियों और बच्चों को दानापुर रोक लिया गया। इस जहाज के सैनिक साथ ले जहाज चल पड़ा। आगे जाकर रुके हुए जहाज की पलटन को अपने साथ ले जहाज आगे बढ़ गया। कर्नल फ्रेडरिक के स्थान पर कप्तान डनबर इस टुकड़ी के नायक बने। आगे फिर जहाज फँसने की आशंका के कारण कर्नल फ्रेडरिक अपने कुछ साथियों के साथ वापिस आ गये ताकि जहाज का वजन कम हो जाय और जहाज फँस न सके।

अंग्रेजी पलटन आरा के अंग्रेजों के उद्धार के लिए चल पड़ी।

❀

हरेकृष्ण बाबू कुँवर सिंह के तमाम परिचितों एवं संबंधियों को खबर भेज चुके थे। स्वतंत्रता का बिगुल बाबू साहब ने फूँक दिया है। अब आवश्यकता है कि सब एक झंडे के नीचे आकर इकट्ठे हों और अंग्रेजी हुकूमत से टक्कर ले मातृभूमि को मुक्त करें। दक्षिण भारत के पूर्वांचल तथा गोंडवाना को इसकी यथावत् सूचना दे दी गई थी। हरेकृष्ण आसपास के तमाम क्षेत्रों से जनता का आह्वान कर रहे थे। बागी सिपाहियों का नेतृत्व ग्रहण करते ही कुँवर सिंह के नाम पर स्थान-स्थान से लोग आने लगे और कुँवर सिंह की फहरायी पताका तले इकट्ठे हो चले।

गाँव-गाँव में कुँवर सिंह की जय बोली जा रही थी और बाबू साहब के लिए अपनी जान देने के लिए लोगों के झुंड के झुंड चले आ रहे थे। समस्त बिहार का पश्चिमी भाग कुँवर सिंह की जय-जयकार से गूँज रहा था और बिहार का बूढ़ा शेर अंग्रेजी सत्ता के विरुद्ध दहाड़कर खड़ा हो गया। जेलखाने खुल

गये थे और तमाम बंदी कुँवर सिंह के पास आ चुके थे। आदमियों की शक्ति का अभाव न था। अभाव था—हथियारों का और गोला-बारूदों का।

इसी बीच सूचना मिली—दानापुर से अंग्रेज आ रहे हैं आरा की ओर।

युद्ध की तैयारियाँ शुरू हो गईं।

अंग्रेजी सेना की गतिविधि की सूचना देने के लिए गुप्तचर छूट गए और स्वयं हरेकृष्ण एक टुकड़ी के साथ नहर की ओर बढ़ गए क्योंकि उसी ओर से अंग्रेजों के आने की आशंका थी। रणदलन सिंह बाबू साहब के साथ अन्य तैयारियों में लग गए। आरा के पक्के मकान में घिरे अंग्रेजों की ओर विशेष ध्यान न था। इस ओर अपनी शक्ति व्यर्थ नष्ट न कर आने वाली अंग्रेजी टुकड़ी का मुकाबला ही आवश्यक था।

*

जहाज नहर के पास आकर रुका। सैनिक भूखे प्यासे थे। शाम हो गई थी, पर उन्हें अब तक खाना न मिला था। सब उतरे। नाव से आगे बढ़ने का प्रबंध होने लगा। इसी बीच सैनिक खाने पीने और आराम करने की तैयारियाँ करने लगे, पर दूसरे ही क्षण बिगुल बज गया।

सैनिक घबराए।

"सब तैयार हो जाँय।"

"......"

"हमें इसी वक्त आगे बढ़ना है। रात का यह समय ठीक है। चाँदनी रात में हम आसानी से बढ़ चलेंगे और इस समय हमारा दुश्मन भी असावधान होगा।"

"......"

सैनिकों ने अनुशासन के नाम पर कोई शिकायत न की। भूखे पेट, बिना विश्राम किए ही वे सब बढ़ चले। कप्तान डनवर उनका नेतृत्व कर रहे थे। रातों-रात वह हमलाकर आरा के साथियों को मुक्त करने के इरादे में थे। चाँदनी रात के कारण सैनिक टुकड़ी बिना किसी कठिनाई के कुछ दूर तक नावों पर गई। उसके बाद जमीन का रास्ता आरा के लिए पकड़ना था।

सैनिक बढ़ते जा रहे थे। खेतों को पार करते हुए वृक्षों की छाया में।

आगे आम का बगीचा था। पेड़ों की सघनता के कारण वहाँ चाँदनी की दाल न गल रही थी। कप्तान डनवर आगे थे। उत्साह से भरे। सैनिकों की सुख-सुविधा का कोई खयाल न था। अनुमान था, रात के कारण शत्रु असावधान होगा और वे आसानी से विजय हासिल कर सकते है।

धुड़म्! धाँय!

"आह!"—कप्तान डनवर की छाती में गोली लगी और वे लुढ़क गए। सैनिकों के सँभलने से पहिले ही बगीचे में युद्ध प्रारंभ हो गया। गोलियों की बौछार छूटी और एक साथ बहुत से गोरे ढेर हो गए।

दोनों ओर से बंदूकें चलने लगीं।

अँधकार के कारण गोरे सैनिक सिपाहियों को देख ही न पा रहे थे। गोली वर्षा चारों ओर से हो रही थी। अँधकार में गोरे सैनिकों की सफेद-वर्दियों पर अचूक निशाने पड़ रहे थे।

ठाँय! ठाँय! धड़!

हाहाकार और गोली की आवाज से निर्जन प्रदेश काँप गया। सिपाहियों के अचानक आक्रमण के कारण बहुत से गोरे सैनिक मारे गए। सिपाहियों की प्रबल गोली वर्षा के आगे उनके पाँव ठहर न सके।

भगदड़ मच गई।

सिपाही कब छोड़ने वाले थे।

"बाबू कुँवर सिंह की—"

"जय!"

और सिपाहियों ने गोरे सैनिकों को रगेदा। गोरे सैनिक गिरते-पड़ते, खून से लथपथ गोलियाँ खाकर मरते, घायल होते, अपने प्राण बचाकर नहर की ओर भागे, जहाँ उनकी नावें पड़ी थीं। सिपाही मार करते रगेदते चले आ रहे थे।

"बाबू कुँवर सिंह की—"

"जय!"

"ठाँय! ठाँय!

"आह!"

"मर गए! हाय!"

रास्ते में पड़े, मर, घायल गोरे सैनिकों का दौड़ते-सिपाही पीछा कर रहे थे। वे एक भी अंग्रेज को जिन्दा बचकर नहीं जाने देना चाहते थे।

बचे गोरे सैनिक गिरते-पड़ते नावों तक आए। तब तक सिपाही भी आ गए। गोरे सैनिक पानी में कूद-कूद नावों पर चढ़े। सिपाही भी कूदे। बंदूकों के कुंदों और हाथों से ही लड़ाई होने लगी। कुछ नावों में आग लगा दी गई। दो तीन नावें डुबो भी दी गई। कुछ गोरे सैनिक डूबकर मर गए। कुछ नावों की आग में झुलस कर मर गए।

कुछ ही लोग नाव लेकर भाग सके। शेष मारे गए।

जयघोष करते हुए विजयी सिपाही लौट गए।

*

घायल, खून से लथपथ, कराहते सैनिकों का दल जहाज पर चढ़ा। तुरन्त जहाज खुल गया और दानापुर की ओर चल पड़ा। अधिकांश गोरे सैनिकों की हालत चिन्ताजनक थी। प्राथमिक चिकित्सा करने वाला कोई न था। एक डाक्टर साथ था, पर शायद वह भी मारा जा चुका था। जहाज तेजी से दानापुर की ओर भागा। अंग्रेजों को बुरी मात खाना पड़ी।

दानापुर में जहाज को देखते ही स्त्री बच्चों और अंग्रेज पुरुषों में हर्ष फैल गया कि सैनिक विजयी होकर लौट आए सेनापति और कमिश्नर टेलर भी समाचार पाते ही सैनिकों को बधाई देने के लिए दौड़े आए। जहाज के निकट आने की सभी प्रतीक्षा करने लगे।

"आश्चर्य! जहाज से कोई हर्ष ध्वनि नहीं आ रही है।"

"जहाज हमारा ही है?"

"हाँ।"

जहाज जिस खामोशी के साथ चला आ रहा था, उस कारण अधिकारियों के मन कुछ शंका हुई। जहाज किनारे लगा और एक के बाद एक खून से लथपथ, बदहवास सैनिक उतर-उतरकर आने लगे। इस दृश्य को देखते ही स्त्रियों बच्चों में क्रंदन होने लगा। अधिकारी सकते में आ गए। पाँच सौ से अधिक अंग्रेजों में से केवल साठ ही वापिस आये। वापस आए लोगों में कोई भी ऐसा न था, जिसे चोट न लगी हो।

टेलर का खून खौल उठा, पर विद्रोहियों की ताकत के आगे वे कर ही क्या सकते थे ?

※

आगरा बागियों से खाली हो गया। मुबारक अली भी चला गया। आगरा पर किसी का अधिकार न रहा। नागरिक जीवन सर्वथा अस्त-व्यस्त हो गया। गुण्डों और उठाईगीरों की बन आयी। इसकी सूचना किले में पड़े अंग्रेजों को मिली। भय के मारे पहिले तो वे बाहर नहीं आए, पर जब राजाराम नामक एक व्यक्ति कुछ लोगों के साथ उनके पास किले में आया तो अंग्रेज बाहर निकले।

मजिस्ट्रेट कुछ सैनिकों के साथ बाहर निकले। शहर में घूमकर छिट-फुट बदमाशों को भगा दिया और आगरा बागियों से शून्य देख अपने अधिकार में कर अंग्रेजी शासन की घोषणा की। लेफ्टिनेंट गवर्नर कालविन भी किले से बाहर आए।

अस्वस्थता के कारण और शाहगंज की पराजय के दुःख से उनका शरीर टूट गया था, फिर भी उन्होंने अपना कार्य सँभाला। अस्त्र-शस्त्र और बारूद की बेहद कमी के कारण अपने आधीन लोगों को वे आस-पास के क्षेत्र में बिखरे बागियों के खिलाफ कार्यवाई करने में असमर्थ थे।

दिल्ली और लखनऊ से कोई समाचार न आ रहे थे। दोनों स्थानों पर सिपाहियों का आधिपत्य था। चिन्ताजनक समाचार ही सुनने मिलते। तमाम पश्चिमोत्तर प्रदेश अराजकता से भर गया था। स्थान-स्थान से फ्रेंच और ग्रीक भाषा में सहायता के लिए पत्र चले आ रहे थे। चारों ओर सहायता की पुकार था। आगरा में अंग्रेजों की अधिक शक्ति थी। इसी कारण सर्वत्र से सहायता की पुकार आगरा आ रही थी। कालविन लेफ्टिनेंट गर्वनर थे। इसीलिए सब उनसे सहायता माँग रहे थे, पर आगरा के कालविन खुद पंगु हो गए थे। वह कुछ भी सहायता कर सकने में असमर्थ थे। दुःख प्रकाश के अतिरिक्त और कोई चारा न था। अलीगढ़ में गाऊस खाँ ने अपने अधिकार की घोषणा कर अपने को नवाब घोषित कर दिया था। उधर ग्वालियर की सेना में भी विद्रोह उठने की खबर थी और यह आशंका हो रही थी कि ग्वालियर के बागी सैनिक आगरा पर अपना अधिकार करने आ रहे हैं।

कालविन की चिन्ताएँ दिन पर दिन बढ़ती जा रही थीं।

ॐ

लगातार घिरे रहने के कारण स्त्री-बच्चे घबड़ाने लगे। निरन्तर सूखे हुए खाद्य पदार्थों के ही उपयोग के कारण उनकी शक्ति भी क्षीण होने लगी। साथ ही पानी का विकट अभाव खड़ा हो गया। परिश्रमी सिक्ख सैनिकों ने साहस के साथ काम लिया और मकान में ही एक कोने में कुँआ खोदना शुरू कर दिया। दो दिन के कठोर परिश्रम के उपरान्त कच्चे कुँए का मैला गन्दा पानी पीने मिलने लगा और किसी प्रकार सब उसी पर अपनी गुजर करने लगे।

साहस कर एक सिक्ख सैनिक बाहर निकल गया था। इससे आशा थी कि पटना से सहायता आ जायगी, पर सहायता के कोई लक्षण दृष्टिगत न होने के कारण बेचैनी और बढ़ने लगी। सिपाहियों की गोलियों के आगे भाग निकलना भी मुश्किल हो रहा था। मकान की मजबूती के ही कारण सब किसी प्रकार सुरक्षित थे।

सिपाहियों की संख्या कुछ कम हो जाने के कारण गोली वर्षा के परिमाण में भी कमी आ गई पर इससे अंग्रेजों के कष्टों का अन्त न हुआ था। माँस और पके भोजन के अभाव में सब शक्तिहीन होते जा रहे थे।

दोपहर के समय एक परचा आकर गिरा। परचा ईंट के टुकड़े में लपेटकर भेजा गया था।

किसी सन्देश की आशा के नाम पर आया परचा खोला गया। सबको पढ़कर सुनाया गया। परचा सिपाहियों की ओर से था। परचे में लिखा था कि मकान में घिरे हुए तमाम अंग्रेज अपने हथियार समर्पित कर दें तो बाबू कुँवर सिंह की ओर से उन सबको अभय दान देकर पटना तक पहुँचा देने की व्यवस्था की जा सकती है।

"ठीक है। हम लोगों को मान लेना चाहिए!"

"......"

"हम लोग पटना तो सुरक्षित पहुँच जायँगे!"

"नहीं इसमें चाल है। इस तरह से हम लोगों के हथियार छीनकर ये लोग हम सबको मार डालेंगे!"

"कानपुर में ऐसा ही हुआ है !"

"अरे ! कानपुर की क्या बात है ! हर जगह के सिपाही ऐसा ही करते हैं। उनकी बातों का कोई ठिकाना नहीं। समझ गए सब लोग ? यह एक चाल है !"

पत्र पर गरमागरम बहस हुई।

"कुँवर सिंह वचन का पक्का है !"

"झूठा है।"

अन्त में सर्व सम्मति से यही निर्णय हुआ कि इस पत्र का कोई उत्तर न दिया जाय और सब चुपचाप पड़े रहें। जब तक कोई मदद नहीं आती, सब वीरता से मुकाबला करें। अगर मदद नहीं भी मिलती तो सब लड़ते-लड़ते मर जाँय, पर आत्म समर्पण की आवश्यकता नहीं।

अन्तिम समय में स्त्रियों-बच्चों को गोली मारकर शेष लोग लड़ते-लड़ते मर जाँयगे।

❀

प्रतिदिन लोगों को गिरफ्तार किया जाता। उन्हें कोड़ों से पीटा जाता। नए-नए तरीकों से उनके हाथ पैर तोड़े जाते। कुर्सी के पावों के नीचे लोगों की हथेलियाँ रख कुर्सियों पर चार-चार, पाँच-पाँच अंग्रेज सैनिक चढ़ जाते। पीठ पर घोड़ा चढ़ा दिया जाता। घोड़े की पूँछ से आदमी को बाँधकर परेड के मैदान में खूब घसीटा जाता। कभी-कभी नगर की सड़कों पर भी इसका प्रदर्शन होता। पैर या हाथ बाँधकर दूसरा छोर घोड़े की पूँछ से बाँध घोड़ा दौड़ा दिया जाता। बँधा आदमी कपड़े की गठरी की तरह घिसटता जाता। चीख-पुकार से लोग सिहर उठते। देखते-देखते उसका शरीर छलनी हो जाता। बेहोश हो जाता पर घसीटना बन्द न होता। अगर वह मर जाता तो भी उसकी लाश की यह दुर्गति होती ही रहती। इस सब यातनाओं के आतंक में कर्नल नील बीबी घर के खून को लोगों से चटवाते, बीबी घर की पड़ी लाशों को उठवाते, खून साफ करवाते। निर्दोष से निर्दोष व्यक्तियों को भी सन्देह में पकड़ लिए जाने पर यह काम करना पड़ता। नगर निवासी इस आंतक के कारण भाग न सकें, इसकी उचित व्यवस्था कर दी गई थी। नगर के सभी लोग घोर नरक में पड़े थे।

कर्नल नील के अत्याचार के तरीके रोज बदलते। पुजारी पंडित दीनानाथ चौबे ने हाथ बीबी घर का खून साफ करने से इन्कार किया, तो उनकी गुदा में मिर्चें भर दी गईं। साथ ही गाय का खून उनके चेहरे पर पोत दिया गया। इस नारकीय यंत्रणा के कारण पंडित दीनानाथ चौबे स्वर्ग सिधार गये।

कर्नल नील की दृष्टि में हर हिन्दोस्तानी उनका दुश्मन था।

सेनापति हावेल का पत्र पाते ही कर्नल नील क्रोध से आग बबूला हो गए। कायर, बुजदिल वापस लौट आया और सहायता माँगता है। कर्नल नील ने सेनापति हावेल की भर्त्सना करते हुए बहुत ही कठोर पत्र उन्हें लिखा। साथ ही आदेश दिया कि तुरन्त लखनऊ बढ़ें।

❀

मन मारकर थोड़ी सी सहायता कानपुर से पाकर हावेल आगे बढ़े पर चारों ओर विकराल स्थिति अपना मुँह बाए खड़ी थी।

ग्वालियर की सेना बागी होकर कालपी की ओर बढ़ रही थी। कालपी कानपुर से दक्षिण-पश्चिम छ्यालीस मील ही दूर था। इस बात की आशंका थी कि यह सेना कानपुर पर आक्रमण कर सकती है। इस सेना के इस ओर बढ़ने पर कानपुर और इलाहाबाद का रास्ता भी रुक सकता था।

फर्रुखाबाद का नवाब नन्हें खाँ भारी संख्या में बागी सिपाहियों के साथ आगे बढ़ रहा था।

बरसात के कारण रास्ता पानी से भरा था। तोपों को आगे बढ़ाना बड़ी धीमी गति से होता। साथ ही स्थान-स्थान पर छिट-फुट बागी सिपाही इकट्ठे थे।

हावेल इन्हीं सब स्थितियों के बीच आगे बढ़ रहे थे। मँगलोया से फिर आगे बढ़े। इस बार बशीरगंज से गंगा पार का रास्ता पकड़ना उन्होंने उचित समझा। बशीरगंज के निकट आते ही उन्हें पता लगा कि बागी सिपाही फिर लड़ने के लिए आमादा हैं। इस बार सिपाहियों ने अपनी रक्षा के लिए मिट्टी की दीवारें खड़ी कर ली थीं।

हावेल को आगे बढ़ना ही पड़ा।

पुनः आक्रमण हुआ। दोनों पक्षों में जमकर लड़ाई हुई पर हावेल के

आदेश के कारण और कर्नल नील की भर्त्सना से क्षुब्ध अंग्रेज सैनिकों ने जमकर लोहा लिया। सिपाहियों की मिट्टी की दीवारों पर अपना अधिकार कर सिपाहियों को मार भगाया पर यह विजय बड़ी महँगी पड़ी। काफी संख्या में सैनिकों के हत होने के साथ-साथ गोला बारूद भी गया।

दूसरे दिन फिर सिपाही आ टूटे। इससे बड़ी घबराहट फैली। फिर भी मुकाबला किया गया। बशीरगंज की इस तीसरी लड़ाई में फिर अंग्रेजों को भारी क्षति उठानी पड़ी। सिपाहियों के इस गुरिल्ला आक्रमण के कारण सेना का साहस छूट गया।

किसी प्रकार हावेल गंगा पार उतरे, पर आगे लखनऊ का रास्ता न पकड़ बिठूर की ओर रवाना हुए। वहाँ से कुछ शक्ति बटोरने के साथ-साथ कुछ आराम करने के बाद ही वह आगे बढ़ने से इरादे में थे। बिठूर पर अंग्रेजी अधिकार होने के कारण उन्हें निर्द्वंद्व आराम करने की पूरी आशा थी।

बिठूर के निकट आते ही तोपों की आवाज सुन वह चौंक पड़े।

बागियों की एक बड़ी सेना उनका मुकाबला करने के लिए तैयार थी।

कर्नल हावेल सकते में आ गए। यह सारी बातें जादू के समान मालूम पड़ रही थीं। जो बिठूर एकदम सूना था, वहाँ इतनी सेना...स्थान-स्थान पर बागी सिपाही प्रकट हो जाते हैं, जैसे कोई जादू का खेल हो रहा है।

सूने बिठूर में जिन्दगी लहरायी। स्थान-स्थान से दल के दल हथियारबंद सैनिक आने लगे। बागी सिपाहियों की बढ़ती संख्या देख बिठूर निवासी आश्चर्य में पड़े और उनके आश्चर्य का ठिकाना न रहा जब कि तात्या टोपे और अजीमुल्ला को भी बिठूर में देखा गया।

तात्या टोपे वीर वेश में घोड़े पर सवार होकर पूरी सेना का भार सँभाल रहा था। प्रति दिन छावनी के मैदान में युद्ध का अभिनय होता। बिठूर और आस-पास को गाँवों में सनसनी मच गई। अजीमुल्ला को एक दो बार ही लोगों ने देखा फिर वह दिखलाई न पड़ा, पर लोगों को यह विश्वास तो हो ही गया कि वह इसी जगह है। बिठूर की इन तैयारियों की खबर से सब लोग दंग थे। बराबर सिपाही

चले आ रहे थे और नाना साहब की जय के नारे गूँज रहे थे। बिठूर में पेशवा का झंडा फहरा रहा था।

तात्या टोपे बिठूर के राजमहल में नहीं, वरन छावनी में ही पड़ा था। सिपाहियों के सरदारों से उसका परामर्श बराबर चल रहा था। अजीमुल्ला तम्बू के दूसरे भाग में पड़ा था, पर वह बाहर न आता था। सैनिक तैयारियों के साथ तोपें भी आ गईं। चार हजार से अधिक सिपाही बिठूर में एकत्रित हो गए।

❀

"हावेल आ रहा है। वह इसी स्थान पर पड़ाव डालेगा। जैसा आपका अनुमान था, वह ठीक निकला!"

"हाँ!"—तात्या बोला—"मैं जानता था। शत्रु को इस ओर आना पड़ेगा। अतएव यही स्थान मैंने चुना है। इस बार फिर हमारी परीक्षा का अवसर आ गया है।"

"हावेल के पास सैनिक कम हैं, पर शस्त्र शक्ति बहुत अधिक है। लंबी मार वाली बंदूकें और तोपें ज्यादा हैं।"

"तुम्हारे कहने का मतलब क्या है?"

"......"

"शायद अंग्रेजों की यह शक्ति बतलाकर तुम यह कहना चाहते हो कि हमारी पराजय की संभावना है। ठीक है। हार जाना भी तो वीरता है बशर्ते कि हम मन से न हारें। हम हजार बार हार जाने पर भी लड़ेंगे। बराबर लड़ते रहेंगे, जब तक कि हमारे शरीर का एक बूँद भी रक्त जिन्दा है। समझे! जाओ, तैयारियाँ करो।"

तात्या टोपे अकेला रह गया तो मुस्कुराता हुआ अजीमुल्ला बाहर आया। तात्या की सारी बातें वह सुन चुका था। पास बैठता हुआ बोला—"हावेल कितनी दूर है?"

"यहीं! कल तक आ जायगा!"

"और नाना साहब!"

"नाना साहब दोपहर तक आ जाँयगे। सैनिकों के बीच खड़े होकर वे युद्ध

का आदेश दे हट जाँयगे। हमें और तुम्हें भी यही करना होगा, क्योंकि इस बार भी अंग्रेजों का पलड़ा भारी है। हम तीनों इन्हें हमेशा छकाए रखेंगे।"

"हार गये तो क्या होगा?"

"हम फिर नई ताकत इकट्ठी करेंगे। देखो, अपने अकेले बल पर गाँव गाँव घूम-घूम मैंने इतनी शक्ति बटोर ली। पग-पग पर हम अंग्रेजों के नाकों चने डाल देंगे। मजा यह रहेगा कि हम तीनों में से एक को भी वे पा न सकेंगे!"

अजीमुल्ला हँस पड़ा।

"अंग्रेज तो समझ बैठे, नाना साहब गंगा में डूब मरे!"

"नहीं, उन्हें इस बात का विश्वास नहीं है, फिर भी कुछ न कुछ भ्रम में तो वे रहेंगे ही।"—तात्या ने कुछ गंभीर होकर कहा—"हावेल का लखनऊ बढ़ना तो मैंने रोक दिया। तीन-तीन बार बशीरगंज के पास मुकाबला लिया, पर अफसोस लखनऊ वाले एक इंच भी इस तरफ नहीं बढ़े। नबाब बिर्जिस कादिर की माँ हजरत बेगम, मम्मू खाँ जैसे कानों तेल डालकर पड़े हैं। कहते हैं, जब तक रेजीडेंसी के अंग्रेज नहीं मार डाले जाँयगे, तब तक इस तरफ नहीं आ सकते।"

"लखनऊ की रेजीडेंसी तो काफी बढ़ी है?"

"हाँ, अंग्रेज पूरी तैयारी के साथ घिरे हैं। फैसला जल्दी नहीं होगा और तब तक इधर की ताकत अंग्रेज दबा देंगे। कलकत्ते में बैठा सेनापति अपने मोहरे बढ़ाता जा रहा है।"

"अच्छा! देखा जायगा।"—अजीमुल्ला हँसकर बोला—"तुम्हारे बाद मैं भी तो हूँ।"

तात्या ने अजीमुल्ला की ओर मुस्कुराकर देखा। तात्या संकटों में ही मुस्कुराना जानता है। उसकी मुस्कुराहट देखकर अजीमुल्ला समझ गया, तात्या इस युद्ध में विजय की आशा नहीं रखता है।

"कालपी के बारे में कुछ खबर आई?"

"नहीं। आज शायद कुछ मालूम हो।"

तात्या उठ गया। नाना साहब के ही आने की वह प्रतीक्षा कर रहा था। नाना साहब के लिए उसका मन बड़ा बेचैन था। नाना साहब से मनु के नाम लिखवाकर भेज दिया था, पर यदि वह पत्र दुश्मन के हाथ पड़ता है,

तो इससे नाना के जीवित होने का प्रमाण मिल जायगा। तब नाना साहब के लिए यह एक संकट की बात हो जायगी। नाना की तलाश में भेदिए छूटेंगे। क्योंकि नाना का अकेले भी जिन्दा रहना उनकी नींद हराम कर देगा, पर क्या उसके रहते ऐसा होगा? नहीं।

मुट्ठी बाँध, दाँत कस तात्या तंबू के बाहर आया।

मैदान में सिपाहियों की परेड हो रही थी। युद्ध के दाँव पेंच सिखलाए जा रहे थे। तात्या एकटक देखता रह गया। युद्ध का नारा, युद्ध का डंका अंग्रेजों के खिलाफ बज उठा है। क्या कभी इसकी गूँज मिट सकती है? नहीं। अंग्रेजी राज उठने तक यह गूँज न मिटेगी। अँग्रेजी अमलदारी चाहे आज उठे, चाहे कल, पर उठेगी अवश्य; क्योंकि गाँव-गाँव से आने वाले सिपाही, ग्रामीण इस बात के साक्षी हैं कि वे अपने देश में किसी की हुकूमत नहीं बर्दाश्त कर सकते? इतिहास का यह पहला व्यापक विद्रोह है, काश! यह सफल हो जाय!

❀

हावेल ने पैदल टुकड़ी आगे बढ़ा दी। पैदल सेना शत्रु पक्ष से भिड़ गई। अंग्रेजी बंदूकों की तेज संगीनों की मार से हाहाकार मच गया। तोपों की मार से गिरते, लाशों के ढेर रौंदते सिक्ख आगे बढ़ रहे थे। तभी दाहिनी ओर से एक टुकड़ी टूट पड़ी। इस टुकड़ी की मार से अंग्रेजी पलटन पीछे हट गई।

सेना के पिछले भाग में रुका तात्या युद्ध का दृश्य देख रहा था। रात नाना साहब के भाषण का सिपाहियों पर असर पड़ा है और आज वे जी जान से लड़ रहे हैं। अंग्रेजों के छक्के छूट रहे हैं। सिपाही पूरी वीरता दिखला रहे हैं, पर मुश्किल है इन तोपों और नई बंदूकों की मार से।

युद्ध भीषण रूप धारण करता जा रहा है। देखते-देखते दोनों पक्ष एक दूसरे की सीमा में धँस गये और चारों तरफ अव्यवस्था सी फैल गई। शत्रु मित्र का प्रश्न ही न रहा, जो सामने आया, उसीसे होने लगी। तोपों के गोले धरती कँपा रहे थे। सैनिकों के शरीर छितरा रहे थे। घायलों और मृतकों से रणस्थली पट रही थी।

हावेल प्रत्येक ओर देख रहे थे।

चारों ओर की अव्यवस्था के कारण उन्होंने गोलंदाजों की एक और टुकड़ी आगे बढ़ा दी। संकट के समय इस टुकड़ी को पीछे रख दिया गया था। इस टुकड़ी के आगे आते ही रणस्थली का नक्शा ही पलट गया। भीषण गोलाबारी के बीच घुड़सवार सैनिकों का दल टूट पड़ा।

सिपाहियों में भगदड़ मच गई।

तात्या धीरे से खिसक गया। युद्ध का अंतिम परिणाम वह समझ चुका था। अब उसे नाना साहब और अजीमुल्ला की चिन्ता थी।

अंग्रेजी सेना ने सिपाहियों को खदेड़ा। तोपों और संगीनों के आगे जो भी आए गिर गये। जीत मुश्किल थी। एक कदम भी सिपाही ठहर न पा रहे थे। तोपों की अधिकता के कारण सिपाहियों को भागना पड़ा। सेना ने बचे हुए सिपाहियों को काफी दूर तक खदेड़ा और जयघोष कर अपनी विजय घोषित की।

हावेल विजयी हुए पर पुनः यह विजय बड़ी मँहगी पड़ी। उनकी आधे से अधिक शक्ति इस युद्ध में नष्ट हो चुकी थी। बिठूर का विश्राम बड़ा मँहगा पड़ा। एक लंबी साँस ले, अपनी सेना के साथ बिठूर आए। अब आगे बढ़ना मुश्किल था। कानपुर लौटने के सिवाय कोई रास्ता न था। कानपुर से पुनः शक्ति एकत्र कर आगे बढ़ सकते हैं, अन्यथा नहीं। कर्नल नील धमकियों से काम लेते हैं। अगर वह भी यहाँ होते तो उन्हें मालूम पड़ता, विजय कितनी मँहगी होती है!

लखनऊ संकट में है। पता नहीं, वहाँ के लोगों की क्या दशा होगी?

लखनऊ शीघ्र पहुँचना भी तो बड़ा मुश्किल हो रहा है।

❀

किले में भाग जाने के सिवाय अंग्रेजों के पास और कोई रास्ता न था। गिरते-पड़ते सब किले में ही आ गये और तुरन्त किले का फाटक बंद कर दिया गया। मार्टिन को रह-रहकर क्रोध आ रहा था। गार्डन ने उचित नहीं किया। इस संकट के समय अगर तमाम अंग्रेज स्त्री-बच्चे रानी के ही राजमहल में रहते, तो क्या बुरा था! सिपाही उन पर हाथ न उठाते, पर गार्डन के आगे एक न चली। रानी के महल में पड़े अंग्रेज स्त्री व बच्चों को यहाँ ले ही आए। उन्हें रानी पर विश्वास रह ही नहीं गया है। यह अजीब बात है। रानी दयालु स्त्री है

तो इससे नाना के जीवित होने का प्रमाण मिल जायगा। तब नाना साहब के लिए यह एक संकट की बात हो जायगी। नाना को तलाश में भेदिए छूटेंगे। क्योंकि नाना का अकेले भी जिन्दा रहना उनकी नींद हराम कर देगा, पर क्या उसके रहते ऐसा होगा ? नहीं।

मुट्ठी बाँध, दाँत कस तात्या तंबू के बाहर आया।

मैदान में सिपाहियों की परेड हो रही थी। युद्ध के दाँव पेंच सिखलाए जा रहे थे। तात्या एकटक देखता रह गया। युद्ध का नारा, युद्ध का डंका अंग्रेजों के खिलाफ बज उठा है। क्या कभी इसकी गूँज मिट सकती है ? नहीं। अंग्रेजी राज उठने तक यह गूँज न मिटेगी। अँग्रेजी अमलदारी चाहे आज उठे, चाहे कल, पर उठेगी अवश्य; क्योंकि गाँव-गाँव से आने वाले सिपाही, ग्रामीण इस बात के साक्षी हैं कि वे अपने देश में किसी की हुकूमत नहीं बर्दाश्त कर सकते ? इतिहास का यह पहला व्यापक विद्रोह है, काश ! यह सफल हो जाय !

ॐ

हावेल ने पैदल टुकड़ी आगे बढ़ा दी। पैदल सेना शत्रु पक्ष से भिड़ गई। अंग्रेजी बंदूकों की तेज संगीनों की मार से हाहाकार मच गया। तोपों की मार से गिरते, लाशों के ढेर रौंदते सिक्ख आगे बढ़ रहे थे। तभी दाहिनी ओर से एक टुकड़ी टूट पड़ी। इस टुकड़ी की मार से अंग्रेजी पलटन पीछे हट गई।

सेना के पिछले भाग में रुका तात्या युद्ध का दृश्य देख रहा था। रात नाना साहब के भाषण का सिपाहियों पर असर पड़ा है और आज वे जी जान से लड़ रहे हैं। अंग्रेजों के छक्के छूट रहे हैं। सिपाही पूरी वीरता दिखला रहे हैं, पर मुश्किल है इन तोपों और नई बंदूकों की मार से।

युद्ध भीषण रूप धारण करता जा रहा है। देखते-देखते दोनों पक्ष एक दूसरे की सीमा में धँस गये और चारों तरफ अव्यवस्था सी फैल गई। शत्रु मित्र का प्रश्न ही न रहा, जो सामने आया, उसीसे होने लगी। तोपों के गोले धरती कँपा रहे थे। सैनिकों के शरीर छितरा रहे थे। घायलों और मृतकों से रणस्थली पट रही थी।

हावेल प्रत्येक ओर देख रहे थे।

चारों ओर की अव्यवस्था के कारण उन्होंने गोलंदाजों की एक और टुकड़ी आगे बढ़ा दी। संकट के समय इस टुकड़ी को पीछे रख दिया गया था। इस टुकड़ी के आगे आते ही रणस्थली का नक्शा ही पलट गया। भीषण गोलाबारी के बीच घुड़सवार सैनिकों का दल टूट पड़ा।

सिपाहियों में भगदड़ मच गई।

तात्या धीरे से खिसक गया। युद्ध का अंतिम परिणाम वह समझ चुका था। अब उसे नाना साहब और अजीमुल्ला की चिन्ता थी।

अंग्रेजी सेना ने सिपाहियों को खदेड़ा। तोपों और संगीनों के आगे जो भी आए, गिर गये। जीत मुश्किल थी। एक कदम भी सिपाही ठहर न पा रहे थे। तोपों की अधिकता के कारण सिपाहियों को भागना पड़ा। सेना ने बचे हुए सिपाहियों को काफी दूर तक खदेड़ा और जयघोष कर अपनी विजय घोषित की।

हावेल विजयी हुए पर पुनः यह विजय बड़ी मँहगी पड़ी। उनकी आधे से अधिक शक्ति इस युद्ध में नष्ट हो चुकी थी। बिठूर का विश्राम बड़ा मँहगा पड़ा। एक लंबी साँस ले, अपनी सेना के साथ बिठूर आए। अब आगे बढ़ना मुश्किल था। कानपुर लौटने के सिवाय कोई रास्ता न था। कानपुर से पुनः शक्ति एकत्र कर आगे बढ़ सकते हैं, अन्यथा नहीं। कर्नल नील धमकियों से काम लेते हैं। अगर वह भी यहाँ होते तो उन्हें मालूम पड़ता, विजय कितनी मँहगी होती है!

लखनऊ संकट में है। पता नहीं, वहाँ के लोगों की क्या दशा होगी?

लखनऊ शीघ्र पहुँचना भी तो बड़ा मुश्किल हो रहा है।

❀

किले में भाग जाने के सिवाय अंग्रेजों के पास और कोई रास्ता न था। गिरते-पड़ते सब किले में ही आ गये और तुरन्त किले का फाटक बंद कर दिया गया। मार्टिन को रह-रहकर क्रोध आ रहा था। गार्डन ने उचित नहीं किया। इस संकट के समय अगर तमाम अंग्रेज स्त्री-बच्चे रानी के ही राजमहल में रहते, तो क्या बुरा था! सिपाही उन पर हाथ न उठाते, पर गार्डन के आगे एक न चली। रानी के महल में पड़े अंग्रेज स्त्री व बच्चों को यहाँ ले ही आए। उन्हें रानी पर विश्वास रह ही नहीं गया है। यह अजीब बात है। रानी दयालु स्त्री है

वह स्त्री-बच्चों की जान लेने नहीं देगी। कम से कम स्त्री बच्चे तो बचे रहते, पर अब गार्डन ने जो किया है। सो भोगना ही पड़ेगा।

किले का फाटक बंद हो जाने के बाद भी शहर का शोरोगुल सुनाई पड़ रहा था। गोलियों की आवाज और सिपाहियों की हुँकार सुनाई पड़ रही थी। अँग्रेज घबड़ा गए। उस समय भी घबड़ाहट बढ़ गई जब यह मालूम हुआ कि किले में बहुत ही कम खाद्य-सामग्री है। हथियार भी पर्याप्त नहीं।

झाँसी में सिपाहियों की बगावत का झंडा फहरा उठा। चारों तरफ अंग्रेज ईसाइयों की मार-काट मची खजाना और जेलखाना टूट चुका था। छावनी और बँगलों में आग लग चुकी थी। शहर पर बागियों का अधिकार हो गया था।

"मिस्टर गार्डन, अब क्या होगा?"

"......"

"कहिए न। यहाँ तो खाने का भी ठिकाना नहीं है।"

"मैं रानी को पत्र लिखता हूँ।"

"वह सहायता करेगी? अगर रानी से ही आपको सहायता लेना था, तो आपके लिए यह जरूरी था, कि तमाम औरतों व बच्चों को उनके ही महल में रहने देते।"

"महल के आदमियों का क्या भरोसा! कब क्या कर बैठें।"

"तो अपराधी का क्या भरोसा?"

'बस! इतने ही मालूम हो जायगा कि रानी का मन साफ है या नहीं। इस समय यदि वह हम लोगों की सहायता नहीं करती है, तो समझ लो कि उस समय क्या करती?"

गार्डन के इस मत के आगे सभी चुप रह गए। गार्डन ने रानी के नाम पत्र लिखकर एक आदमी को किले से बाहर कर दिया। जैसे ही वह आदमी बाहर आया, कुछ लोगों ने घेर लिया। सिपाही किला घेरने बढ़े चले आ रहे थे। देखते-देखते सबने किला घेर लिया और बदूकों की गरजना कर युद्ध की ललकार दी।

"तेरे पास क्या है?"

"......"

"तलाशी लो।"

"......"

"चिट्ठी है!"

"......"

"चिट्ठी महारानी के नाम है। भेज दो। भेज दो। भेज दो!"

उस आदमी को छोड़ दिया गया। गार्डन दरवाजे की पास से यह सब दृश्य देख रहे थे! रानी के प्रति सिपाहियों के मन में इतना आदर देख उन्हें आश्चर्य हुआ। मन को विश्वास हो गया, आज का यह विद्रोह एक दिन का परिणाम नहीं, बहुत दिनों की सुनियोजित योजना है।

❀

सिपाहियों के आक्रमण से किले में घिरे अंग्रेज एकदम घबरा गये। तोपों की गड़गड़ाहट सुनकर उनके आश्चर्य का ठिकाना न रहा।

"अब क्या करें? कुछ रास्ता निकालिए रानी से कहिए कि हम लोगों को निकालकर सुरक्षित स्थान पर पहुँचा दें। क्या अब भी आपको रानी पर विश्वास नहीं हुआ?"

गार्डन चुप रह गए। रात में रानी के खास सैनिक किले में रोटियाँ पहुँचा गये स्त्रियों और बच्चों के लिए। इसका अर्थ साफ है कि रानी के मन में ममता है। पर आश्चर्य है, सिपाहियों के हमले क्यों नहीं रोके? ऐसी पहेली सामने खड़ी थी कि उनकी समझ में कुछ भी न आ रहा था। संभव है कि सिपाही रानी के कहने में न हों, तो क्यों नहीं रानी ने अपनी सेना से इन सिपाहियों को भगाया॥

"सीधी बात है। सफेद झंडा दिखलाइए!"

"......"

काफी विचार-विमर्श के बाद यही बात तय हुई। अंग्रेजों ने किले से सफेद झंडा दिखलाया। सफेद झंडा देखते ही किले के चारों ओर बिखरे सिपाहियों ने हर्षध्वनि की।

फाटक पर आवाज हुई।

"हम शरन आता है।"

"ठीक है। पहले तुम लोग अपने-अपने हथियार फेंक दो। तब बाहर आओ!"

हथियार फेंक दिए गए।

"किसी को मारा नहीं जायगा?"

"नहीं!"

फाटक खुला। एक के बाद एक सभी अंग्रेज बाहर आए। सभी घबराए हुए थे। स्त्रियाँ बच्चे तो एकदम काँप रहे थे। सबके बाहर आते ही एक सूबेदार ने ललकारकर कहा—"इन सबको महारानी के पास ले चलो!"

"नमकहरामों को महारानी के पास क्या ले चलना!"

"अरे! ये वही लोग हैं, जिन्होंने महारानी को खर्चा भी नहीं दिया!"

"सूबेदार अंग्रेज हैं।"

"सूबेदारों को मारने में कोई पाप नहीं है।"

आपस में ही सिपाहियों में इतनी गड़बड़ी फैली कि कोई किसी की बात सुनने वाला न रहा और कुछ उत्तेजित सिपाही उन पर टूट पड़े। देखते-देखते अंग्रेजों का कत्ल होने लगा। स्त्री बच्चे हाहाकार करते भागे, पर उनको भी मारा गया। मार्टिन किसी प्रकार भाग निकला। पूरी ताकत के साथ वह सिपाहियों के घेरे से दौड़कर निकल गया। शेष तमाम लोग कत्ल कर डाले गए। किसी को छोड़ा नहीं गया।

"महारानी लक्ष्मी बाई की"

"जय।"

"झाँसी की महारानी की"

"जय!"

जयघोष से किला गूँज उठा।

कर्नल नील के क्रोध का ठिकाना न रहा। हावेल को सामने देखते ही बरस पड़े—"आप एकदम बुजदिल आदमी हैं। दो-दो बार आप वापस आए। उधर

लखनऊ से बार-बार सहायता के लिए हाहाकार भरी याचनाएँ आ रही हैं और आप हैं कि नाटक करते हैं !"

"यह नाटक नहीं, मिस्टर नील !"—हावेल ने शान्ति के साथ कहा—"आप अगर मैदान में होते तो आपको मालूम पड़ता कि यह तात्या टोपे नाम का आदमी कितना खतरनाक है !"

"तात्या टोपे ! तात्या टोपे ! सुनते-सुनते मैं परेशान हो गया ! उसकी क्या हस्ती ! कानपुर की लड़ाई में हारकर भागा हुआ आदमी ! भगोड़ा !"

"उसकी ताकत तो आपको बिठूर में मालूम पड़ती, जब वह चार हजार सैनिकों के साथ मुकाबले के लिए तैयार था। आपके कुछ साथी और मैं जीवित लौट आया। यही बड़ी बात हुई। तात्या चारों ओर से हमारा रास्ता रोके बैठा है।"

"उसके साथ और कौन है ?"

"देखा नहीं। सिर्फ अफवाहें हैं कि नाना साहब और अजीमुल्ला साथ हैं।"

"अजीमुल्ला !"—नील ने दाँत पीसे—"हुँ। पर आपने वापस आकर अच्छा नहीं किया। कलकत्ता में प्रधान सेनापति पर इस बात का क्या असर पड़ेगा ? आपकी पहिली हार के ही कारण उन्होंने मिस्टर आउट्रम को हमारे ऊपर प्रधान बनाकर रवाना कर दिया है। यह हमारा भी अपमान है। यह नियुक्ति इस बात का प्रमाण है कि हम दोनों अयोग्य हैं। लखनऊ की रक्षा नहीं कर सकते। आपके ही कारण मेरी भी बेइज्जती हुई।"

"इसमें बेइज्जती की क्या बात है ! जनरल आउट्रम सब प्रकार योग्य हैं।"

"हुँ !"

"......"

"जनरल के साथ मुझे उनका सहायक बनकर जाना पड़ेगा। खैर, हम दोनों आदमी निबट लेंगे। देख लेंगे कि कौन रास्ता रोक सकता है ! तात्या को तो मैं कच्चा ही खा जाऊँगा। उफ् ! और वह अजीमुल्ला, दैट ह्वाइट इंडियन डाग... आ राट ! देखूँगा !"

विक्षुब्ध कर्नल नील उठ गए। हावेल ने तर्क देकर, व्यर्थ में बहसकर अपनी बातों की सत्यता प्रमाणित करना उचित न समझा। समय आने पर सब बातें

आइने की तरह साफ हो जाँयगी। मैदान में जाने पर कर्नल नील को स्वयं मालूम हो जायगा कि कानपुर के आस-पास बागियों की कितनी और कैसी शक्ति है।

रात को ही प्रधान सेनापति को कलकत्ता से सूचना आई कि जनरल आउट्रम को प्रधान बनाकर भेजा जा चुका है। कर्नल नील उसके सहायक रहेंगे। सेनापति हावेल भी दिवानी-विभाग के अध्यक्ष बनकर इस अभियान में भाग लेंगे। इन इन तीनों व्यक्तियों पर शासन का भरोसा है और विश्वास है कि शीघ्र ही बागियों को दबा अँग्रेजी अमलदारी का झंडा फहरा दिया जायगा।

कर्नल नील आउट्रम के आने की प्रतिक्षा करने लगे।

अब कठिन अवसर सामने था।

कश्मीरी दरवाजे से निकलकर सिपाहियों ने हमला बोल दिया। इस अनायास आक्रमण से तो अंग्रेजी सेना के छक्के छूट गए। हडसन भी दंग रह गए। पता नहीं, आजकल इस रजब अली को क्या हो गया है? किसी घटना की खबर ही नहीं मिलती।

सिपाहियों के तेज आक्रमण के आगे गोरों को क्षति उठाना पड़ी। फिर भी वे सब डटे रहे। मुकाबला करते रहे और सिपाहियों की चेष्टाओं को निष्फल कर दिया। हारकर सिपाही फसीलों की ओर चले गए। इस आक्रमण में सिपाहियों की कोई विशेष क्षति न हुई।

सेनापति विलसन युद्ध-क्षेत्र से लौट चिन्ता में पड़ गए। प्रकृति अथवा कुछ गोले बारूदों की ताकत पर कब तक डटा जा सकता है? यह प्रश्न बार-बार उनके दिमाग में चक्कर काट रहा था। फिर भी अंग्रेजी सेना का हर हालत में दिल्ली डटे रहना आवश्यक है। यदि आज अंग्रेजी सेना दिल्ली से अपना घेरा हटा लेती है, तो इसका अर्थ यह होगा कि सारे देश में आग लग जायगी। लोग समझ बैठेंगे कि दिल्ली गई। अंग्रेजी अमलदारी गई।

सेनापति निकल्सन के आने की खबर बराबर आ रही है। वे बढ़ते आ रहे हैं। उनके आने तक तो मुकाबले पर डटे रहना पड़ेगा। गनिमत यही है कि दिल्ली के इन बागियों का कोई योग्य संचालक नहीं। इस कारण संख्या अधिक रहते हुए निकट भविष्य में सिपाहियों की ओर से कोई खतरा नहीं।

ठीक-ठीक समाचार न मिलने के कारण कठिनाई हो रही थी। कई स्थानों के तार कट गये थे अतएव समाचार देर से पहुँचते। अफवाहें बड़ी जल्दी आ जातीं। कानपुर में अंग्रेजों की हत्या और लखनऊ के समाचार देर से आए, पर इन समाचारों के कारण सनसनी मच गई। अंग्रेज घबरा गये पर विलसन ने अपने प्रबन्ध में तनिक भी कमी न आने दी। वह मुस्तैदी के साथ डटे रहे। बार-बार उन्होंने इन बातों का खंडन किया।

हडसन अपनी पूरी शक्ति के साथ लगा हुआ था। भरसक चारों ओर उसका जाल फैल चुका था। पूरी शक्ति के साथ सिपाहियों और उनके सरदारों की गति-विधियों को देखता हुआ अपना काम कर रहा था। रजब अली के अलावा दिल्ली के और भी कई लोगों की सहायता उसे मिल रही थी। इस सहायता को प्राप्त करने के लिए कोष से उसे मनमाना रुपया खर्च करने का अधिकार था।

कानपुर के अंग्रेजों की हत्या का समाचार पाकर हडसन का मन बड़ा ही दुःखी हुआ। दिल्ली में भी तो इसी तरह अंग्रेज हैं। शाही महल में अंग्रेज छुपे हुए हैं। इनका भी कत्ल हो सकता है!

कत्ल!

बिजली की गति से एक युक्ति हडसन के दिमाग में कौंध गई। पहले तो वह घबड़ा गया। जान बूझकर अंग्रेजों का कत्ल! न उससे यह न होगा, पर...हाँ, यदि इतने अंग्रेजों का खून हो जाने से वह एक बड़े उद्देश्य को प्राप्त कर सकता है, तो इसमें हानि क्या! जैसे इतने अंग्रेज मारे गये, वैसे थोड़े और सही।

हडसन ने निर्णय कर लिया, पर अपना यह निर्णय किसी और पर खोलना या इस पर किसी और अधिकारी से राय लेना उसने अच्छा न समझा।

॥

पराजय को ही विजय समझने वाले तात्या टोपे ने कहा—"हावेल कानपुर लौट गया है। आउट्रम आ रहा है। हावेल, नील के साथ तीनों आदमी लखनऊ की राह बढ़ेंगे, तब हम कानपुर पर अपना कब्जा कर लेंगे। रास्ते में ही इन लोगों के छक्के छुड़ा देंगे!"

"किस बूते?"

"बूते की बात करते हो अजीमुल्ला। देखते नहीं हो, आज इस धरती का एक-एक पत्थर अंग्रेजों से लड़ने के लिए सजीव हो उठा है। मैं पुनः सिपाहियों को इकट्ठा करूँगा। कालपी, ग्वालियर के सिपाही इसी तरफ आ रहे हैं और उसके साथ साथ आज झाँसी पर भी सिपाहियों का झंडा फहरा रहा है। उधर बिहार में कुँवर सिंह गरज रहे हैं!"

नाना साहब चुप बैठे थे। अपनी बार-बार की पराजय के कारण उनके मन को ऐसा विश्वास हो रहा था कि जैसे भाग्य ही इस समय साथ नहीं दे रहा है। संख्या में अंग्रेजी सेना के मुकाबले अधिक होने पर भी हार! सिपाहियों की वीरता में कमी नहीं! हाँ सिपाहियों के हथियार पुराने और कमजोर हैं, जब कि अंग्रेज नये से नये हथियारों का प्रयोग कर रहे हैं। एक यही कमजोरी शायद सबसे बड़ी कमजोरी है। इस कमजोरी को दूर करने का तो कोई उपाय ही नहीं।

"सब हो रहा है!"—अजीमुल्ला ने निराश स्वर से कहा—"हमने सोचा था क्या और क्या हो गया! कोई हम लोगों को सुनता ही नहीं। उधर निकल्सन दिल्ली बढ़ा जा रहा है। दिल्ली अंग्रेजों ने पा ली तो कानपुर कब तक टिकेगा, कब तक बिहार टिकेगा और कब तक टिकेगी तुम्हारी झाँसी!"

"जब तक हम में से एक भी आदमी जिन्दा है!"

"आदर्श और जोश तो हमें खा गया!"

"तो और क्या करोगे? चले जाओ अंग्रेजों के पास। कुत्ते की तरह मार डाले जाओगे। अब तो लड़ते-लड़ते मरना अच्छा है!"

नाना साहब ने दोनों की बातें अनसुनी कर पूछा—"मान सिंह के आने की खबर थी। क्या हुआ!"

"आ रहा है। उसके आने पर हम एक बार और लड़ेंगे। बाबा भट्ट भी इस बार दूर-दूर तक गये हैं। देखें वे क्या लाते हैं?"

"हुँ!"

तात्या टोपे ने अजीमुल्ला की ओर देखा। बोला—"तुम्हारे लखनवी मौलवी तो तुम्हारी बात भी नहीं मानते। भला मैं क्या करूँ?"

"किस्मत का चक्कर टेढ़ा है!"—अजीमुल्ला ने अपने होंठ चाटते हुए कहा। इधर कई रोज से उसे सिगार पीने नहीं मिल रहा था। बिठूर के युद्ध में

फिर पराजय देख तात्या और नाना साहब के साथ उसे भागना पड़ा। कानपुर के बाद तो जैसे पाँसा ही पलट गया है। भागते दिन गुजर रहे हैं।

इधर एक नई मुसीबत और आ गई है। अंग्रेजों को कुछ यह विश्वास हो गया कि तीनों जिन्दा हैं, इसलिए तलाश में गुप्तचर छूट गये हैं और हर एक के सिर के लिए भारी-भारी इनाम घोषित कर दिये गये हैं। कौन जाने अंग्रेजों की बढ़ती हुई शक्ति देखकर, इनाम के लालच में आकर कोई विश्वासघात कर जाय, पर अभी ऐसी नौबत नहीं दीखती।

"आप लोगों की सुरक्षा का पूरा प्रबंध मैं किये देता हूँ।"—शायद एक दो रोज न आ सकूँ। तब तक अपने कोई आ जाँय, तो ठहराइयेगा।"

"भई, सिगार का इंतजाम करना।"

"अच्छा!"—तात्या मुस्कुराया।

❀

हडसन ने रज्जब अली को और अपने पास खींचकर कहा—"ध्यान से सुनो। चौंकना नहीं। और खबरदार मेरी यह बात किसी को मालूम न हो!"

"अच्छा। कहिए जी!"

"शाही महल में अंग्रेज हैं न?"

"हाँ। मजे में हैं।"

"तुम कोई ऐसा इंतजाम करो जिससे कि सिपाहियों को यह बात मालूम हो जाय कि शाही महल में बादशाह और बेगम ने अंग्रेजों को छुपा रखा है।"

हडसन की बात सुनते ही रज्जब अली चौंक पड़ा। पीछे हटते हुए उसने कहा—"यह आप कैसी बात कर रहे हैं!"

हडसन मुस्कुराए।

"सिपाहियों को मालूम हो जायगा तो..."

"तो क्या? कहो!"

"सब कत्ल हो जाँयगे।"

"जानता हूँ।"

"..."

रज्जब अली के पैरों तले की जमीन खिसकती मालूम पड़ रही थी। हडसन की मुस्कुराहट के कारण वह बड़े चक्कर में पड़ गया। आखिर इस बात का मतलब क्या है ? यह कैसा गोरखधंधा है ?

"सब कत्ल हो जायंगे।"

"इससे क्या ! मैं यही चाहता हूँ।"

"साहब ! आप यह क्या कह रहे हैं ! शाही महल में अंग्रेज हैं, इस बात को मैं एकदम छुपाए हुए हूँ। मैंने किसी पर खुलने नहीं दी यह बात और न ही जान रहते इस भेद को खोल सकता हूँ। साहब लोगों की प्राण रक्षा हमारा फर्ज है।"

"मैं जो कहता हूँ, सो करो !"

"सिपाहियों को खबर कर दूँ ?"

"हाँ।"

"एक भी अंग्रेज जिन्दा नहीं बचेगा और बाद में जब यह पता लगेगा कि मैंने इस भेद को खोला तो क्या होगा ? दिल्ली फतह करने के बाद आपके बड़े साहब हमको सीधे फाँसी पर लटका देंगे। इसका जुम्मेदार कौन होगा ?"

"देखो रज्जब अली !"—हडसन ने कहा—"तुम मेरी बात में दखल मत दो। जो कुछ मैं कर रहा हूँ, बहुत सोच समझ के बाद कर रहा हूँ। सिपाहियों को यह मालूम हो जाना चाहिए कि बादशाह और बेगम ने अंग्रेजों को शाही महल में छुपा रखा है। भले ही सिपाही अंग्रेजों को मार डालें, पर इसमें मेरा फायदा है !"

"......"

"समझ गए ?"

"जी !"—रज्जब अली काँपकर बोला—"आप कहते हैं तो कर दूँगा, पर पीछे आप मुकरियेगा नहीं !"

"नहीं। मैं पवित्र बाइबिल की सौगंध लेता हूँ।"

रज्जब अली ने हडसन की बात मान ली। इसमें हडसन का क्या स्वार्थ है, यह उसकी समझ में नहीं आया, पर इस बात को तो हडसन ही जानता था कि इस तरह से अंग्रेजों की शाहीमहल में बरामदगी से सिपाहियों में अपने बादशाह के प्रति कितना अविश्वास हो जायगा। आज जो बादशाह के पवित्र नाम पर

चारों तरफ शोर मचा है, उसको कितना बड़ा धक्का पहुँचेगा ! यह हानि मुट्ठी भर अंग्रेजों के कत्ल की हानि से, अंग्रेजी शासन के लिए अधिक लाभदायक और महत्त्वपूर्ण है।

❀

विसेंट आयर अपनी गोलंदाज सेना के साथ जलमार्ग द्वारा कलकत्ता से इलाहाबाद की ओर रवाना हो गए। इसके अतिरिक्त लार्ड कैनिंग ने और भी अन्य व्यवस्थाएँ कीं। सर जेम्स आउट्रम फारस की लड़ाई में विजयी होकर कलकत्ता आ गये थे। उनकी भी रवानगी की व्यवस्था हो गई। धीरे-धीरे लार्ड कैनिंग के मजबूत पाँव उठ रहे थे। दिल्ली की ओर कर्नल निकल्सन का मार्च जारी था। बागियों की शक्ति को चारों ओर से घेरकर उन्हें एकदम नेस्तनाबूद करने के उद्देश्य से लार्ड कैनिंग अपनी जीत की शतरंज के मोहरे चल रहे थे।

कलकत्ता की अशान्ति वाजिदअली की गिरफ्तारी के कारण भय में बदल गई थी। बारकपुर भी खामोश पड़ा था। नित्य नये अंग्रेज सेनापतियों के आगमन से और उनके चारों ओर सेना के साथ बढ़ने के कारण अंग्रेजों की शक्ति का अनुमानकर बँगाल में कोई सिर उठाने का साहस न कर रहा था। इसके साथ-साथ यह भी अफवाह बड़े जोर की थी कि विलायत से अंग्रेजी फौज जहाजों में चली आ रही है।

कलकत्ते के प्रायः सभी अंग्रेज इस पक्ष में थे कि बागियों के साथ कड़ी कार्रवाई की जाय। किसी भी हिन्दोस्तानी सिपाही का विश्वास न किया जाय। अपने देशवासियों के स्थान-स्थान पर कत्ल होने के समाचार से सभी घबराए हुए थे। उनके मन क्रोध से भरे थे।

लार्ड कैनिंग किसी की एक न सुनते। धैर्य और शान्ति के साथ स्थिति की गंभीरता को समझते हुए सब सँभाल रहे थे। समाचारों के शीघ्र प्राप्त न होने के कारण अफवाहें पहले आतीं, पर अफवाहों पर भरोसा न कर जो सत्य भास होती, उसके मुताबिक ही लार्ड कैनिंग अपने कदम उठाते। ऐसा करने में उन्हें विलम्ब हो जाता, पर इसकी परवाह न कर रहे थे। चतुर सेनापति अफवाहों पर भरोसा नहीं करता।

❀

सिपाहियों ने किला घेर लिया। जयघोष से किला गूँज उठा। सिपाहियों के सूबेदार और अफसर किले में गए। महारानी लक्ष्मीबाई की जय-जयकार के नारे बार बार उठ रहे थे। झाँसी स्थित अंग्रेजी छावनी और अंग्रेजों के बँगले धधक रहे थे। विद्रोह की खबर पाकर आसपास के बहुत से वीर और सिपाही दौड़े आए। सब में उत्साह था। सब में जोश था। सबके हृदय अंग्रेजों के प्रति विद्वेष से भरे थे। इसी झाँसी में अंग्रेजों ने क्या-क्या नहीं किया! वीर मरहठा की पत्नी को पुत्र गोद लेते समय कैसे षड्यंत्र किये और दामोदर राव के यज्ञोपवीत के लिए दी जाने वाली रकम के सूद में झाँसी ही हड़प लेने वाली चाल से कौन अपरिचित था।

झाँसी के राजपरिवार की वीरता, सच्चरित्रता और उच्चादर्श की धाक सारे मध्यभारत में थी। अंग्रेजों ने अपनी संगीनों के बल उन्हें अपमानित करने का प्रयास किया। विधवा रानी का राज्य हड़पने की कुचेष्टा की। इन सब घटनाओं का सारे मध्भारत के मन पर बुरा असर पड़ा था। सभी अंग्रजों को हिकारत की नजरों से देखते थे। अंग्रेजी संगीनों के कारण ही सब खामोश थे, पर जब गाँव-गाँव अंग्रेजों के खिलाफ लड़ाई होने की बातें आने लगीं। साधुओं और फकीरों की जमात, मेरठ, कानपुर, दिल्ली से आ-आकर धर्म नष्ट होने की बातें कह, धर्मयुद्ध की प्रेरणा देने लगीं, तो लोगों में नया उत्साह भर चला।

दिल्ली की खबर आयी।

कानपुर से अंग्रेजी अमलदारी गई।

लखनऊ पर नवाबी हुकूमत कायम होने की खबर आते ही चारों ओर से झाँसी में लोग आने लगे और सहसा विद्रोह हो गया। बगावत का झंडा खड़ा कर दिया गया। अंग्रेजों को किले में घेरकर मार डाला गया। अंग्रेजों के एक-एक अत्याचार का गिन-गिनकर बदला लेने के लिए लोग तैयार हो गए।

सिपाहियों ने राजमहल घेरकर रानी की दुहाई दी।

"महारानी की—"

"जय!"

सिपाहियों के हर्ष का उस समय ठिकाना न रहा, जब वीर वेश में घोड़े पर बैठी, हाथ में नंगी तलवार लिए रानी ने दर्शन दिए।

सिपाहियों ने हथियार उठाए। रानी का जयघोष कर हथियार सम्मान में झुका दिए।

लोगों ने देखा। रानी के चेहरे पर एक अपूर्व तेज है और रानी कह रही है—"साथियो, एक युग से हमारे मन में सञ्चित अभिलाषा के पूरे होने का दिन आ गया। हमने अपनी मातृभूमि को स्वतंत्र करने के लिए सिर उठाया है तो यह सिर आज़ाद दशा में ही कायम रहेगा, गुलाम बनकर रहने की अपेक्षा हम इस सिर को कटा देंगे। आज से मैं झाँसी की स्वतन्त्रता की घोषणा करती हूँ। आज से मैं अंग्रेजी राज्य के खिलाफ हथियार उठाती हूँ और यह हथियार उस समय तक उठा रहेगा जब तक कि इस देश में अंग्रेजी अमलदारी है!"

"......"

"हम आखिरी दम तक लड़ेंगे। हम दिखला देंगे कि इस देश के लोग आदमी हैं। और उनमें अपनी स्वतंत्रता का सम्मान है। सदियों से चली आयी हमारी स्वतंत्रता को कोई नहीं हड़प सकता!"

रानी ने झंडा फहरा दिया।

तोपें गरज उठीं। झंडे को सलामी दी गई और झाँसी में मरहठा-राज्य की घोषणा हो गई। शासन की सारी बागडोर अपने साथियों, सहयोगियों के बल पर रानी ने स्वयं सँभाली। राव साहब ने रानी को आशीर्वाद दे उसे झाँसी राज्य की वैधानिक महारानी का सम्मान दिया।

आकाश में केसरिया झंडा फहरा उठा। रण वाद्य बज उठे और झाँसी में भावी युद्ध की तैयारियाँ होने लगीं। आज़ादी का जो झंडा फहराया गया है, उसकी शान नहीं जायगी। भले ही जान चली जावे।

❀

दानापुर में विद्रोह की बात सुनते ही विंसेन्ट आयर ने जहाज रोक दिया। अपनी गोलंदाज टुकड़ी के साथ वे दानापुर उतर गए। सेनापति लायड के साथ तुरन्त परामर्श कर कुछ और सेना साथ ले विद्रोही सिपाहियों को घेरने वे दौड़ पड़े। उन्होंने बक्सर की ओर तेज़ी से प्रस्थान किया। इस बात की आशा थी कि बक्सर के सिपाहियों के साथ दानापुर के सिपाही मिलकर अपनी ताकत काफी बढ़ा सकते हैं।

विसेन्ट आयर बक्सर आने पर निराश हुए।

बक्सर में बागियों का जोर न था। दानापुर के सिपाही सोन नदी पार कर चले गए थे विसेन्ट आयर लौट पड़े। आरा की ओर उन्होंने अपना रुख कर दिया। शीघ्र से शीघ्र सिपाहियों को दबाकर वे अंग्रेजी अमलदारी की शांतिपूर्ण स्थापना के लिए प्रयत्नशील थे।

❀

लगातार वर्षा से चारों ओर पानी ही पानी था। फिर भी विसेन्ट आयर अपनी सेना बढ़ाए लिए जा रहे थे। वर्षा उनकी गति में बाधक न थी। पानी से भरे खेतों, रास्तों को हेलती हुई, तोपों को ठेलती हुई सेना सेनापति के उद्देश्य पर बढ़ती जा रही थी। सेनापति अपने रक्षकों साथ आगे-आगे थे।

"वह कौन है?"

दूर पर एक घुड़सवार दिखलायी पड़ा।

"शायद दुश्मन या भेदिया है!"

"इस ओर से जाकर घेरो!"

"वह तो इसी ओर आ रहा है!"

देखते-देखते वह आदमी निकट आ गया। सेनापति को देखते ही वह घोड़े से उतर गया। देखने में वह व्यापारी मालूम पड़ रहा था। अनाज, नमक के कुछ बोरे घोड़े पर लादे था। झुककर सेनापति को अभिवादन कर कहा—"एक समाचार लेकर आया हूँ।"

"......"

"कप्तान डनवर और उनके बहुत से साथी आपके पास ही मारे गये हैं। अंग्रेज सेना हारकर भाग गई है!"

"कब?"

"कल।"

"ओफ्ह! वर्षा के कारण हमें देर हो गई।"

"आरा के अंग्रेज बड़े कष्ट में हैं। आप शीघ्रता करें। आपके पथ प्रदर्शन के लिए मैं साथ हूँ। आप लोग मेरे साथ गजराजगंज की ओर से चलें।"

सेनापति ने उस आदमी को साथ लिया। शाहपुर से विसेन्ट आयर और तेजी के साथ आरा की ओर चल पड़े। बागियों के इस कांड से उनका मन और क्रोधित हो गया।

❀

सेनापति आउट्रम ने दानापुर आते ही बूढ़े लायड को कार्यमुक्त होने का आदेश लार्ड कैनिंग की ओर से दिया। लायड उसी दिन कलकत्ता रवाना हो गए। काफी बूढ़े हो गए थे। अब उनमें सेना का संचालन भार सँभालने की शक्ति न थी। पटना के कमिश्नर टेलर की भी बर्खास्तगी का हुक्म जनरल आउट्रम लाए थे। लार्ड कैनिंग का ऐसा विश्वास था कि कमिश्नर टेलर के ही क्रूरतापूर्ण कार्यों से बिहार में आग लगी है अन्यथा शान्ति के साथ काम लिया जाता तो ऐसा न होता। लार्ड कैनिंग कुँवर सिंह के विद्रोही होने के कारण ही सबसे अधिक चिन्तित हुए। कुँवर सिंह की शक्ति को वह जानते थे। इस बूढ़े शेर को मिलाकर रखने में ही बिहार में अंग्रेजी अमलदारी का कल्याण है, इस बात को वह भलीभाँति जानते थे।

कुंवर सिंह के विद्रोही हो जाने पर उनके इस प्रभाव के कारण मध्यप्रदेश तथा आसपास के और भी अनेक क्षेत्रों में आग लग जाने की पूरी सम्भावना थी। लार्ड कैनिंग ने आउट्रम को कानपुर जाते वक्त रास्ते में पटना की भी स्थिति सँभालने की बहुत सी हिदायतें दी थीं।

पटना आकर आउट्रम ने गिरफ्तार मुसलमानों और तीनों मौलवियों को ससम्मान रिहा कर दिया। साथ ही नगर के अनेक प्रतिष्ठित मुसलमानों को बुलाकर सम्मान किया। कर्फ्यू का आर्डर उठा लिया गया। इस प्रकार के कार्यों से पटना में शान्ति हो गई। लोग अंग्रेजी अमलदारी की तारीफ करने लगे।

दानापुर में बहुत से राजभक्त सिपाही थे। दानापुर के सिपाहियों के चले जाने के बाद वे लोग पटना से दानापुर वापस आ गए और अपना-अपना काम शान्तिपूर्वक करने लगे।

विसेंट आयर और कमिश्नर सैमुऊल पर पटना का भार छोड़कर जनरल आउट्रम कानपुर बढ़ गए। फिलहाल कुँवर सिंह से लड़ने के लिए यही लोग

पर्याप्त हैं। कानपुर तथा अन्य स्थानों में शान्ति हो जाने के बाद अगर कुँवर सिंह शान्त न हुए तो उनसे भी निपट लिया जायगा। इस समय लखनऊ और कानपुर का उद्धार विशेष महत्त्व रखता है।

❀

साँझ होने से पहिले विसेंट आयर गजगजगंज आ गए। इसी स्थान से उन्होंने आरा पर आक्रमण करने की योजना बनायी। गजगजगंज की ओर से ही आरा पर आक्रमण करने सुविधाजनक पड़ा। आयर ने रात्रि विश्राम के लिए डेरा डाल दिया। हालाँकि रात में खूब चाँदनी निकल आयी, पर कप्तान डनवर की तरह रात में ही बढ़ने का निर्णय उन्होंने न किया। रात में अपने सहयोगियों के साथ वे आक्रमण की योजना पर विचार करते रहे।

प्रातःकाल कूच की तैयारियाँ होने लगीं। इससे पहिले कि सेना कूच के लिए तैयार हो सके, आम के बगीचे से बिगुल बजने की आवाज आयी। विसेंट आयर समझ गए। शत्रु पक्ष आ गया। झट उन्होंने तोपें अपनी सेना के आगे रख दीं। इसी समय पेड़ों की आड़ से गोली वर्षा होने लगी।

"बाबू कुँवर सिंह की—"

"जय!"

और सैकड़ों की संख्या में बन्दूकधारी सिपाही कूदकर सामने मैदान में आ गए। बड़े वेग से गोली वर्षा करते हुए वे सब दौड़े। अंग्रेजी सेना में खलबली मच गई। दोनों ओर से घमासान युद्ध होने लगा। युद्ध तेजी पर आते ही विसेंट आयर ने गोलन्दाजों को संकेत किया। गोले फटने लगे।

देखते-देखते गोलों की मार से पचीसों सिपाही ढेर हो गए। उनका आगे बढ़ना रुक गया। साथ ही और भी छुपी टुकड़ी बगीचे से बाहर न आ सकी। सिपाहियों के पास तोपें न थीं। वे केवल पुरानी बन्दूकों से लड़ रहे थे। जबकि अंग्रेजी सेना के पास तोपें थीं और दूर तक मार करने वाली नई बन्दूकें भी थीं।

तोपों की मार के आगे सिपाही पीछे हटने लगे। लेकिन वे सब लड़ते हुए पीछे हटते जा रहे थे। तोपों की मार करती हुई अंग्रेजी सेना आगे बढ़ चली।

विसेंट बड़े चक्कर में थे । सिपाहियों का संचालन करने वाला कोई नजर न आ रहा था। बिना किसी सेनापति या संचालक के ही सिपाही बड़ी वीरता के साथ लड़ते हुए बड़े ही ढंग से पीछे हटते जा रहे थे। इससे अंग्रेज सेनानी के मन में कुछ खटका हुआ। कुँवर सिंह के रण कौशल और उनकी वीरता की कहानियाँ वह सुन चुका था। अतएव उसने संगीनधारी एक टुकड़ी अपने पास कर उसे चुपचाप पीछे-पीछे चलने का आदेश दिया । कुँवर सिंह के किसी अप्रत्याशित फन्दे से अपनी सेना की रक्षा के हेतु इस टुकड़ी को उसने एकदम तैयार रखा और उस समय ही आक्रमण करने कहा, जब कि वे संकेत करें।

क्षति उठाती हुई अंग्रेजी सेना आगे बढ़ती जा रही थी।

सहसा एक छोटी नदी सामने दिखलायी पड़ी। पुल पर अंग्रेजों को रोकते हुए सिपाही पीछे हटने लगे। सहसा पुल टूट गया। पुल टूटते ही बड़े जोर के जयघोष के साथ पास ही कहीं छुपे सिपाही टूट पड़े। अंग्रेजी सेना में भगदड़ मच गई। सामने सिपाही, पीछे सिपाही। पुल टूट ही चुका था।

सिपाहियों की मार के आगे अंग्रेज सैनिक नदी में कूद-कूद अपनी जान बचाने लगे। विसेंट आयर यकायक इस प्रकार घिर जाने से बड़े घबराए। उनकी घबराहट उस समय और बढ़ गई जब उन्होंने कुँवर सिंह को सिपाहियों का नेतृत्व करते देखा। पूरी युद्धभूषा धारण किए एक ऊँचे डीलडौल के अत्यधिक तेजस्वी बूढ़े को घोड़े पर देख समझ गए, वही कुँवर सिंह है। कुँवर सिंह की बड़ी-बड़ी आँखें पूरे युद्ध क्षेत्र का नक्शा देखती हुई संकेतों से सिपाहियों को निर्देशन दे रही थीं।

विसेंट आयर ने संगीनधारी टुकड़ी आगे बढ़ायी।

संगीनों की मार से सिपाहियों का वेग रुक गया। आयर के बिगुल पर भागते सैनिक रुके। फिर जमकर लड़ाई होने लगी यदि संगीनधारी सैनिक कुछ देर और रुक जाते तो सिपाही अंग्रेजों से तोपें छीन लेते। तोपों पर कब्जा करने के लिए भीषण संग्राम हो रहा था।

कुँवर सिंह पीछे हट रहे थे। अपने सिपाहियों के साथ वे किनारे-किनारे बढ़े और रेलवे के पुल पर से उस पार हो गये। उस पार जाते ही यह पुल तोड़ने के लिए सिपाही लग गए।

"साहब ! यह पुल टूटा तो हम लोग आरा नहीं जा सकते । देर हो जायगी!"

"......"

"देखिए सिपाही वहाँ हैं !"

विंसेंट आयर दौड़े पर तब तक पुल का कुछ भाग सिपाही तोड़ चुके थे । पुल की रक्षा के लिए अंग्रेजों को भीषण संग्राम करना पड़ा । बड़ी क्षति उठाने के बाद भी पुल न बचाया जा सका । कुँवर सिंह के नेतृत्व में सिपाही पुल तोड़ कर चले गए । अंग्रेजों की भारी हार हुई और उनका आगे बढ़ना रुक गया । उनकी तोपें, उनके बचे सैनिक इसी पार पड़े रह गए ।

सेनापति आउट्रम, नील और हावेल अपनी-अपनी टुकड़ियों को सँभालते हुए लखनऊ के उद्धार के लिए बढ़ चले । नावों के पुल से सेना और तोपें उस पार उतरीं और पूरी पलटन मंगलोया आयी । मँगलोया में सिपाही पड़े थे । इस बार भी उन्होंने हिम्मत न हारी । अपने से चौगुनी ताकत वाले लोगों से मुकाबला किया पर वे ठहर न सके । तीन-तीन कुशल सेनापतियों के नेतृत्व के कारण सिपाही ठहर न सके ।

मँगलोया से बरसात में ही सेना आगे बढ़ी । पानी की रुकावटों के बाद भी पलटन बढ़ती गई । बशीरगंज में पुनः सिपाहियों से लोहा लेना पड़ा और इस प्रकार बड़े कष्ट झेलती हुई सेना उन्नाव से आयी थी । लगातार बरसा और सिपाहियों के छिटपुट आक्रमण से सभी परीशान थे किन्तु पूरी तैयारियाँ रहने के कारण आगे बढ़ना रुक न सका । दूसरे दो बार हावेल इस रास्ते से वापस जाने के कारण मार्ग की कठिनाईयों से परिचित होने के कारण इस बार सावधान होकर आए थे ।

बशीरगंज से बरसते पानी में सोलह मील चलकर तीनों सेनापति बानों आए । बानों के पास बने सई-नदी के पुल को पार करके ही लखनऊ जाने का रास्ता था । नावों पर ही ईंटें बिछाकर सेना को पार उतारा गया । इसी ओर से अब तमाम सैनिक आलम बाग की ओर बढ़े ।

रास्ते भर गाँवों में आतंक फैलाती हुई सेना चली आ रही थी । अंग्रेजों के

इस अभियान के कारण चारों तरफ सनसनी फैल गई और लोगों को यह विश्वास करते देर न लगी कि विलायत से अंग्रेजी फौज आ गई।

※

अंग्रेजी फौज के आते ही लखनऊ में सनसनी फैल गई। सिपाहियों के दल के दल इकट्ठे होने लगे। मम्मूखाँ भी तैयारियाँ करने लगा, पर उसके सम्बन्ध में कुछ अफवाहें होने के कारण सिपाही उसका पूरा साथ देने को तैयार न थे। रेजीडेंसी में घिरे अंग्रेजों को भी अब तक परास्त न कर सकने के कारण सिपाही और भी चिन्तित हुए। लखनऊ के तमाम सिपाहियों में अव्यवस्था सी फैल गई और इस अव्यवस्था के बीच ही वे सब अंग्रेजों की सुसंगठित शक्ति का मुकाबला करने के लिए तैयार हुए।

आलम बाग के पास गोरी सेना के आने की खबर पाते ही सिपाहियों का एक दल रोकने बढ़ा, पर रोक न सका और हारकर लौट आया। शाम हो जाने के कारण गोरी पलटन ने आलम बाग में ही डेरा डाल दिया। सिपाहियों ने इस मौके का लाभ उठाया और रात को भी आक्रमण कर दिया।

इस आक्रमण से अंग्रेजों में बड़ी खलबली मची। इस बार सिपाही अपने साथ नई तोपें भी लाये थे। जनरल आउट्रम स्वयं बाहर आए और घुटने भर कीचड़ में एक दल गोरी सेना के साथ खड़े होकर उन्होंने सिपाहियों के बढ़ते हुए वेग को रोका। रात भर लड़ाई होती रही, पर सिपाही आगे न बढ़ सके।।

दिन के प्रकाश में अंग्रेजी सेना ने हल्ला बोल दिया और सिपाहियों को खदेड़ती हुई गोरी सेना तोपों की आवाज करती हुई रेजीडेंसी की ओर बढ़ी। अंग्रेजी सेना के प्रवेश करते ही लखनऊ थर्रा उठा। अंग्रेजी फौज पूरी ताकत के साथ बढ़ती जा रही थी। सिपाहियों में उसे रोक सकने की शक्ति न थी।

※

विसेंट आयर ने पुल टूट जाने पर भी हिम्मत न हारी। रेलवे का सामान किनारे ही पड़ा था। उसी की सहायता से टूटे हुए पुल का निर्माण कार्य करने में सारी शक्ति के साथ पूरी सेना लग गई। तीन दिन के कठोर परिश्रम के उपरान्त पुल खड़ा हो सका और जयघोष करती हुई सेना नदी पार हो गई

आरा के पास पहुँचते ही सिपाहियों ने फिर आक्रमण किया पर उनके पास तोपें न होने के कारण उन्हें पीछे हटना पड़ा। दूसरे संगीनधारी गोरी पलटन की मार भी कम भयानक न होती। पग-पग पर लड़ाई हुई और बड़ी ही वीरता के साथ सिपाही लड़े। विसेंट आयर के भी कई बार छक्के छूट गये पर हर बार तोपों की सुविधा ने उनके पैर सँभाले और आरा पर अंग्रेजी फौज का अधिकार शाम होने से पहिले ही हो गया। सिपाहियों को आरा छोड़कर भाग जाना पड़ा।

जयघोष की ध्वनि के साथ आरा के मकान में घिरे अंग्रेजों की रक्षा हुई और दूसरे ही दिन उन सबको पटना भेजने की व्यवस्था कर दी गई। आरा पर अंग्रेजी-अधिकार होते ही निवासियों पर जुल्मों की बौछार होने लगी।

✻

मौलवी अहमदुल्ला ने ललकारकर कहा—"अंग्रेज लखनऊ में घुस आए और हम बेगम हजरतमहल का मुँह ताक रहे हैं। अंग्रेज कहीं के हौआ हैं, जो खा जाँयगे। कहाँ गया मम्मू खाँ! उसकी मर्दानगी कहाँ गई? डूब मरे चुल्लू भर पानी में! अंग्रेजी फौज रेजीडेंसी की तरफ बढ़ रही है! क्या मम्मू खाँ अंग्रेजों से मिल गया?"

"......"

"मुहम्मद अली तुमने अब तक क्या किया?"

"मेरी पलटन तैयार है!"

"तो आगे बढ़ो। मुकाबले पर भेज दो!"

मौलवी अहमदुल्ला की ललकार सुन सिपाहियों की नसों में नया खून दौड़ा। लखनऊ भर में बिखरे हुए तमाम सिपाही एक झण्डे के नीचे आए। लड़ने के लिए पूरी ताकत के साथ रेजीडेंसी की ओर बढ़े। यह तयकर लिया गया था कि अब प्राण रहते अंग्रेजों को रेजीडेंसी से आगे न बढ़ने दिया जायगा। रेजीडेंसी के सामने सिपाहियों की भारी टुकड़ियाँ जुटने लगी। अंग्रेजों को रोकने के लिए सभी आ गए। मौलवी के अलावा मम्मू खाँ और उसके अनेक साथी जी जान से दौड़-धूपकर सिपाहियों को इकट्ठा कर रहे थे।

कलकत्ता में नवाब वाजिदअली शाह की गिरफ्तारी के कारण सिपाहियों में और भी उत्तेजना फैल गई। अपने नवाब के साथ हुए इस दुर्व्यवहार का बदला के लिए तमाम सिपाही मरने-मारने को तैयार हो गए। मौलवी अहमदुल्ला घूम-घूमकर जेहाद के लिए मुसलमानों का आह्वान करने लगे।

लखनऊ के आसपास के गाँवों से भी सिपाही-वेश धारण कर लोग आने लगे। अंग्रेजों के अनायास लखनऊ प्रवेश से लखनऊ का हर जवान आदमी कुत्ते की तरह मारे जाने की अपेक्षा लड़ते-लड़ते मरने के लिए तैयार हो गया। दूसरी ओर बेगम हजरतमहल ने सिपाहियों के नाम से एक अपील निकाली। इसका असर बिजली सा हुआ और रेजीडेंसी के पास अंग्रेजों को रोकने के लिए घोर संग्राम होने लगा। तीनों अंग्रेज सेनापतियों के छक्के छूट गए। आगे लखनऊ पर सहज में ही कब्जा करने के उपरान्त शेष लखनऊ पर अधिकार कर सकना उनके लिए लोहे का चना चबाना हो गया।

दो दिन तक घोर संग्राम करने के बाद भी अंग्रेज एक इंच आगे न बढ़ सके। रेजीडेंसी के पास सिपाहियों ने अपनी पूरी मोर्चेबंदी कर अंग्रेज का आगे बढ़ना रोक दिया। इस नई स्थिति के कारण चारों तरफ खलबली मच गई और अंग्रेजों में घबराहट फैल गई।

❀

जनरल आउट्रम बड़ी चिन्ता में थे। सिपाहियों के पास तोपों के साथ-साथ अन्य शस्त्रास्त्र भी बड़ी मात्रा थे। इस कारण कोई युक्ति सूझ न रही थी। रेजीडेंसी में घिरे अंग्रेज सुरक्षित तो थे, पर अधिक देर तक उन लोगों का घिरे रहना खतरे से खाली न था। किसी प्रकार उन अंग्रेजों को अपने संरक्षण में करने के लिए आउट्रम परीशान थे। युद्ध में जब दोनों पक्ष प्रबल हो जाते हैं, तो कूटनीति से सहारा लेना पड़ता है।

हावेल ने उनकी विचारधारा भंग की।

"कुछ अंग्रेज सिपाहियों के पास हैं।"

"कहाँ?"

"एक आदमी खबर लाया है!"

आरा के पास पहुँचते ही सिपाहियों ने फिर आक्रमण किया पर उनके पास तोपें न होने के कारण उन्हें पीछे हटना पड़ा। दूसरे संगीनधारी गोरी पलटन की मार भी कम भयानक न होती। पग-पग पर लड़ाई हुई और बड़ी ही वीरता के साथ सिपाही लड़े। विसेंट आयर के भी कई बार छक्के छूट गये पर हर बार तोपों की सुविधा ने उनके पैर सँभाले और आरा पर अंग्रेजी फौज का अधिकार शाम होने से पहिले ही हो गया। सिपाहियों को आरा छोड़कर भाग जाना पड़ा।

जयघोष की ध्वनि के साथ आरा के मकान में घिरे अंग्रेजों की रक्षा हुई और दूसरे ही दिन उन सबको पटना भेजने की व्यवस्था कर दी गई। आरा पर अंग्रेजी-अधिकार होते ही निवासियों पर जुल्मों की बौछार होने लगी।

❀

मौलवी अहमदुल्ला ने ललकारकर कहा—"अंग्रेज लखनऊ में घुस आए और हम बेगम हजरतमहल का मुँह ताक रहे हैं। अंग्रेज कहीं के हौआ हैं, जो खा जाँयगे। कहाँ गया मम्मू खाँ! उसकी मर्दानगी कहाँ गई? डूब मरे चुल्लू भर पानी में! अंग्रेजी फौज रेजीडेंसी की तरफ बढ़ रही है! क्या मम्मू खाँ अंग्रेजों से मिल गया?"

"......"

"मुहम्मद अली तुमने अब तक क्या किया?"

"मेरी पलटन तैयार है!"

"तो आगे बढ़ो। मुकाबले पर भेज दो!"

मौलवी अहमदुल्ला की ललकार सुन सिपाहियों की नसों में नया खून दौड़ा। लखनऊ भर में बिखरे हुए तमाम सिपाही एक झण्डे के नीचे आए। लड़ने के लिए पूरी ताकत के साथ रेजीडेंसी की ओर बढ़े। यह तयकर लिया गया था कि अब प्राण रहते अंग्रेजों को रेजीडेंसी से आगे न बढ़ने दिया जायगा। रेजीडेंसी के सामने सिपाहियों की भारी टुकड़ियाँ जुटने लगी। अंग्रेजों को रोकने के लिए सभी आ गए। मौलवी के अलावा मम्मू खाँ और उसके अनेक साथी जी जान से दौड़-धूपकर सिपाहियों को इकट्ठा कर रहे थे।

कलकत्ता में नवाब वाजिदअली शाह की गिरफ्तारी के कारण सिपाहियों में और भी उत्तेजना फैल गई। अपने नवाब के साथ हुए इस दुर्व्यवहार का बदला के लिए तमाम सिपाही मरने-मारने को तैयार हो गए। मौलवी अहमदुल्ला घूम-घूमकर जेहाद के लिए मुसलमानों का आह्वान करने लगे।

लखनऊ के आसपास के गाँवों से भी सिपाही-वेश धारण कर लोग आने लगे। अंग्रेजों के अनायास लखनऊ प्रवेश से लखनऊ का हर जवान आदमी कुत्ते की तरह मारे जाने की अपेक्षा लड़ते-लड़ते मरने के लिए तैयार हो गया। दूसरी ओर बेगम हजरतमहल ने सिपाहियों के नाम से एक अपील निकाली। इसका असर बिजली सा हुआ और रेजीडेंसी के पास अंग्रेजों को रोकने के लिए घोर संग्राम होने लगा। तीनों अंग्रेज सेनापतियों के छक्के छूट गए। आगे लखनऊ पर सहज में ही कब्जा करने के उपरान्त शेष लखनऊ पर अधिकार कर सकना उनके लिए लोहे का चना चबाना हो गया।

दो दिन तक घोर संग्राम करने के बाद भी अंग्रेज एक इंच आगे न बढ़ सके। रेजीडेंसी के पास सिपाहियों ने अपनी पूरी मोर्चेबंदी कर अंग्रेज का आगे बढ़ना रोक दिया। इस नई स्थिति के कारण चारों तरफ खलबली मच गई और अंग्रेजों में घबराहट फैल गई।

❀

जनरल आउट्रम बड़ी चिन्ता में थे। सिपाहियों के पास तोपों के साथ-साथ अन्य शस्त्रास्त्र भी बड़ी मात्रा थे। इस कारण कोई युक्ति सूझ न रही थी। रेजी-डेंसी में घिरे अंग्रेज सुरक्षित तो थे, पर अधिक देर तक उन लोगों का घिरे रहना खतरे से खाली न था। किसी प्रकार उन अंग्रेजों को अपने संरक्षण में करने के लिए आउट्रम परीशान थे। युद्ध में जब दोनों पक्ष प्रबल हो जाते हैं, तो कूट-नीति से सहारा लेना पड़ता है।

हावेल ने उनकी विचारधारा भंग की।

"कुछ अंग्रेज सिपाहियों के पास हैं।"

"कहाँ?"

"एक आदमी खबर लाया है!"

"वहाँ रुका है।"

"बुलाइए।"

हावेल के संकेत पर एक मुसलमान सिपाही आउट्रम के सामने आया और उसने झुककर अभिवादन किया। आउट्रम उसकी ओर देखते हुए पूछा—"तुम्हारा नाम ?"

"वाजिदअली !"

"वाह !"—आउट्रम बोले—"अच्छा। कहो, क्या बात है ?"

"साहब ! आप लोगों के ही आसरे हम लोग, याने मैं और मेरे कुछ साथी राजा मानसिंह के यहाँ से आए अंग्रेजों की रक्षा करते रहे हैं। कचयानी के किले से वे बागी सिपाहियों द्वारा जंजीरों में जकड़कर यहाँ लाए गए थे पर हम लोगों ने अपने कौशल से उन लोगों को और सिपाहियों से बचाकर रखा है।"

"शाबास !"

"साहब, मेम, बच्चे सबको हम लोग अब तक छुपाकर रखे रहे हैं। अब तो आप लोग आ गए हैं। हम लोग उन लोगों को आपके पास ले आना चाहते हैं। उन लोगों को यहाँ तक ले आने के सारे इन्तजाम हम लोगों ने कर लिए हैं। अब आगे जैसी आपकी इच्छा हो।"

"उन सबको ले जाओ।"

"अभी ?"

"हाँ !"

"......"

"तुम सब लोगों को भरपूर इनाम मिलेगा। तुम लोग जितने आदमी हो, सब के सब आना। तुम सब लोगों को हम इनाम देगा। समझे !"

"जी।"

जनरल आउट्रम की अनुमति पा वाजिदअली चला गया। उसके जाने के बाद जनरल आउट्रम इस बात पर विचार करने लगे कि वाजिदअली और उसके आनेवाले तमाम साथियों को अपनी ओर से सिपाहियों के बारे में पूरी खबरें देने और उनकी शक्ति क्षीण करने का प्रयास किया जाय तो क्या कामयाबी हासिल न होगी ?

सिपाहियों की इस बढ़ती शक्ति के आगे बिना छल-कपट किए अब कोई दूसरा रास्ता नहीं है।

अपना यह विचार उन्होंने हावेल पर प्रकट किया।

हावेल ने सहमति दी। किस तरह के हथकंडों का प्रयोग कर सिपाहियों में फूट डाली जाय जिससे उनकी शक्ति क्षीण हो जाय। इस पर विचार-विमर्श होने कर्नल नील ने भी घायलावस्था में इस गोष्ठी में भाग लिया। कल के युद्ध में उन्हें चोट आ गई थी।

❀

ऊँचा पूरा शरीर, गठी हुई देह, तेजस्वी पर कठोर चेहरा, चमकती हुई आँखें सादा वेश, सैनिक की भाँति नपे तुले कदमों से चलता हुआ एक व्यक्ति कुछ अंग्रेजों के साथ छावनी में आया। इस नए अंग्रेज को देखकर गोरे सैनिकों में कानाफूसी होने लगी। उसके बारे में लोग जिज्ञासा करने लगे। वह व्यक्ति सीधे सेनापति विलसन के डेरे तक गया। सेनापति विलसन जैसे उसकी ही प्रतीक्षा में थे। उसे देखते ही लपककर हाथ मिलाया।

"मैं आपका स्वागत करता हूँ मिस्टर निकल्सन।"

"धन्यवाद।"—उसने कहा—"अपने साथियों से पहले मैं आ गया हूँ ताकि यहाँ की कुछ व्यवस्था समझ सकूँ। बाकी पलटन और रसद भी आ रही है।"

"आपके प्रति हम लोग अपना आभार प्रकट करते हैं और विश्वास करते हैं कि आपके नेतृत्व में हम लोग यह पांडेपुरी जीत लेंगे।"

"पांडेपुरी ? हाँ, हाँ।"—और निकल्सन हँस पड़े।

निकल्सन के आने का समाचार पूरी छावनी में फैल गया। यह समाचार पाते ही पूरी अंग्रेजी छावनी में हर्ष की लहर दौड़ गई। आफीसर और सेना के अन्य उच्च कर्मचारी निकल्सन से भेंट करने आने लगे। परस्पर परिचय के उपरान्त सेनापति निकल्सन ने छावनी का निरीक्षण प्रारंभ किया। प्रत्येक स्थान और प्रत्येक सामग्री की सूक्ष्म जानकारी प्राप्त करने के उपरान्त उन्होंने दिल्ली स्थित सिपाहियों के संबंध में आवश्यक पूछताछ की।

इस कार्य में हडसन से बड़ी देर तक विचार-विमर्श होता रहा। हडसन के कार्यों से और उसके द्वारा दी गई सूचनाओं से सेनापति निकल्सन को बड़ी प्रसन्नता हुई।

आवश्यक जानकारी प्राप्त कर निकल्सन अपनी सेना के आने की प्रतीक्षा करने लगे।

५३

युद्ध में घायल सिपाही बंदी बनाकर विंसेंट आयर के सामने पेश किए गए। आयर ने उन्हें प्राण-दंड की सजा दी और इन सबको गोली मार दी गई। आरा इस प्रकार सिपाहियों से शून्य कर उस पर अंग्रेजी अमलदारी की स्थापना की घोषणा कर सेनानायक जगदीशपुर की तरफ बढ़े। पता लगा कि कुँवर सिंह जगदीशपुर की तरफ ही गये हैं। विंसेंट आयर पूरी तैयारियों के साथ कुँवर सिंह को पकड़ने के लिए चल पड़े। उनका इरादा था कि अब आरा की फतह के बाद वे कुँवर सिंह को भी जिन्दा या मुर्दा पकड़कर पटना ले चलें, इससे उनकी और वाहवाही होगी। आरा पर विजय प्राप्त कर लेने के कारण उनका हौसला बहुत बहुत बढ़ गया था।

सैनिक भी विजय के कारण उन्मत्त हो गए थे। सिपाहियों की शक्ति अब वे नगण्य समझ रहे थे। साथ ही आरा के बंदी अंग्रेजों ने मुक्त होने के बाद अपने दुःखों को खूब बढ़ा-चढ़ाकर वर्णन किया। इससे सिपाहियों और उनके मददगारों के प्रति सैनिक कठोर व्यवहार करने लगे।

आरा से जब सेना आगे बढ़ी तो रास्ते में पड़ने वाले गाँवों को तबाह करने का काम भी हो चला। गाँव में आग लगा देना। स्त्रियों को बेइज्जत कर देना और किसी को भी गोली मार देना अंग्रेजी-सैनिकों के लिए एक मनोरंजन का खेल हो गया। इन करतूतों से गाँवों में त्राहि-त्राहि मच गई। निःशस्त्र ग्रामीण कर ही क्या सकते थे! भागने के अतिरिक्त और कोई रास्ता न था।

विंसेंट आयर सैनिकों को खुली छूट देते हुए आगे बढ़ रहे थे।

जगदीशपुर के रास्ते में पड़ने वाले जँगल से गुजर रहे थे। सहसा सिपाहियों की एक टुकड़ी टूट पड़ी। केवल बंदूकों के भरोसे सिपाही रास्ता रोकने आ गए।

युद्ध होने लगा। विसेंट आयर की तोपें गरज उठी। सूना पड़ा डुलुर का जँगल रणघोष ने गूँज गया।

सिपाही बहुत ही कम संख्या में थे। पुराने ढंग की बंदूकें ही उनके पास थीं। वीरता से लड़ते हुए अधिकांश सिपाही मारे गए। शेष भाग गए।

जयघोष कर विसेंट आयर ने जगदीशपुर की सीमा में प्रवेश किया और अपने आगमन की सूचना तोपें छोड़कर दी। घुड़सवार टुकड़ी के पीछे पैदल टुकड़ी जगदीशपुर की सीमा को भेदती हुई बढ़ी, पर उसका बढ़ाव रुक गया। मुकाबले के लिए सिपाही उनके सामने एकदम तैयार खड़े थे।

❀

"डुलुर से भी हमारे सिपाहियों को भाग आना पड़ा है!"—हरेकृष्ण ने कहा—"शस्त्रों की हमारे पास बड़ी कमी पड़ रही है!"

"मध्यप्रदेश खबर गई है, अगर वे लोग आए भी तो विलंब तो होगा ही।"—रणदलन सिंह ने कहा—"यहाँ भी हार गये तो देखा जायगा। बाबू साहब में अभी इतनी शक्ति है कि कहीं भी सेना खड़ी कर सकते हैं। हम लोगों के साथ यहाँ से पीछे हटें। मध्यप्रदेश, मध्यभारत से पूरी तैयारी कर हम लोग दिल्ली की तरफ बढ़ेंगे।"

"शीघ्रता से सारा काम होना चाहिए!"

"बड़ी गड़बड़ी इधर चल रही है!"—हरेकृष्ण ने कहा—"समाचार कुछ ठीक से मिल ही नहीं रहे हैं!"

सहसा तोप की आवाज सुन दोनों चौंक पड़े। दोनों ने एक दूसरे की ओर देखा। समझ गये। अंग्रेज आ गये। दोनों उठकर चल दिए। कुछ दूर जाकर अलग अलग हो गए। सिपाहियों का जयघोष सुनायी पड़ा। सिपाही जगदीशपुर की रक्षा के लिए लड़ रहे हैं, पर शायद जगदीशपुर की रक्षा न हो सके। जगदीशपुर हाथ से जाता है। जाने दो। कभी न कभी इस अत्याचार का बदला लिया जायगा। सैन्य शक्ति बढ़ते ही इस प्रांत पर फिर अंग्रेजी राज न रहेगा।

बाबू कुँवरसिंह स्वयं रणक्षेत्र की ओर बढ़े। घोड़े पर सवार होकर वह रणक्षेत्र में आए। उनके साथ हरेकृष्ण और रणदलन सिंह भी आ गये थे।

दोनों सिपाहियों को टुकड़ियाँ लेकर आए थे। कुँवरसिंह का संकेत पाते ही टूट पड़े।

लड़ते हुए सिपाहियों ने जैसे ही कुँवरसिंह को देखा, उनमें जैसे जान आ गई। जयघोष कर ऐसे उत्साह में वे बढ़े कि अंग्रेजी सेना का व्यूह टूट गया। गोरे भागने लगे, गिरने लगे, स्वयं एक ओर से कुँवरसिंह गोरी सेना को गाजर-मूली की तरह साफ करते चले आ रहे थे।

युद्ध का निरीक्षण और संचालन करता विंसेंट आयर कुँवरसिंह की बूढ़ी भुजाओं का प्रलय देख घबड़ा गया। सिपाहियों के युद्ध को देख उसके भी छक्के छूट गये और ऐसा महसूस होने लगा कि उसे अपनी सेना पीछे हटा लेना पड़ेगी सिपाही अंग्रेजों को गिराते हुए तोपों की ओर बढ़ रहे थे। स्वयं कुँवरसिंह भी उसी दिशा में बढ़ते चले आ रहे थे। बाएँ दाएँ हरेकृष्ण और रणदलन सिंह दबाते चले आ रहे थे।

विंसेंट आयर ने सेना को पीछे हटाना शुरू किया। पीछे हटती हुई सेना के साथ उसने युक्ति से काम लिया। पीछे हटती सेना को थोड़ा घुमाव दे तोपों की तरफ बढ़ाना शुरू किया। गोलदाज टुकड़ी पराजित-प्रायः हो थी कि इस सहायता से सँभल चली। सैनिकों की संख्या अधिक होते ही विंसेंट ने उन सबको तोपों के आगे बढ़ा दिया। सैनिक सिपाहियों से जूझने लगे और तब तक विंसेंट ने तोपों की व्यवस्था की। नई गोलदाज टुकड़ी ने इन तोपों का भार बिना किसी क्षति के सँभाल लिया। विंसेंट ने तब तोपों के सामने लड़ते हुए अपने सैनिकों को एक दम पीछे हो जाने का हुक्म दिया। सैनिक भागे। सिपाहियों ने जयघोष किया कि अंग्रेज भागे पर तभी तोपें गोले उगलने लगीं और भीषण नर-संहार शुरू हो गया। इस संहार ने युद्ध का नक्शा ही बदल दिया।

सिपाही मरने लगे। भागने लगे। उनकी बड़ी क्षति हुई। पूर्ण अनुशासन और ढंग से लड़ती सेना ने सिपाहियों पर विजय प्राप्त की। कुँवर सिंह को पीछे हट जाना पड़ा। इसके अतिरिक्त और कोई रास्ता न था।

जयघोष करती अंग्रेजी सेना जगदीशपुर में घुसी, पर विंसेंट आयर के मुखड़े पर प्रसन्नता न थी। वह गंभीर थे कि अगर आज इन सिपाहियों के पास तोपें या अच्छी मार करने वाली नई बंदूकें होतीं, तो एक भी अंग्रेज यहाँ से जिन्दा लौट

कर न जाता। स्वयं कुँवरसिंह का रण-कौशल देख वह घबरा गया था। सोच रहा था, यहाँ से दानापुर लौट जाने में ही भलाई है। कुँवरसिंह को पकड़ना आसान नहीं है।

आरा में घिरे अंग्रेजों की मुक्ति का भार उस पर सौंपा गया था सो उसने कर ही लिया है। उसका कार्य पूरा हुआ। जगदीशपुर से दानापुर लौट जाने में ही भलाई है। सारी बातें वहाँ कह दी जाँयगी। अगर सिपाहियों ने किसी प्रकार तोपें या अन्य सहायता प्राप्त कर ली और फिर सामना किया तो जिंदा लौटकर जाना सपने की बात हो जायगी।

❀

सैनिकों के जगदीशपुर में घुसते ही हाहाकार मच गया। विंसेंट आयर ने निश्चय कर लिया जगदीशपुर तहस नहस कर दानापुर लौट जाने का। इसी कारण समय रहते वह जगदीशपुर नष्ट कर देना चाहते थे। इस कार्य में स्वयं उन्होंने भाग लिया। एक टुकड़ी सेना और तोपें लेकर सबसे पहले आयर कुँवरसिंह के पुराने और मजबूत मकान पर आया। मकान में कोई न था। किले से इस मकान को गोलों से धराशायी कर दिया। मकान में आग लगा दी गई। मकान में भरा हुआ मनों अनाज जलने लगा। पास ही कुँवरसिंह के दो भाइयों अमरसिंह और दयालसिंह के मकान थे। इन्हें भी आयर ने तोपों से उड़वा दिया।

जगदीशपुर में कुँवरसिंह ने बहुत सा धन खर्चकर एक प्राचीन मंदिर को पुनः भव्य रूप दिया था। आयर की दृष्टि उस मंदिर पर भी पड़ी। मंदिर की मूर्ति के स्वर्णाभूषण लूट और पुजारी को गोली मार, तोपों का मुख मंदिर की ओर कर दिया। देखते-देखते मंदिर गोलों के आघात से धराशायी हो गया।

इसके बाद जगदीशपुर के और भी अनेक मकान गोलों से गिरा दिए गए।

इसमें आयर का उद्देश्य यह था कि उसके दानापुर लौट जाने पर बागी सिपाही जगदीशपुर में मोर्चाबन्दी न कर सकें। इस दृष्टि से जगदीशपुर को एकदम निकम्मा कर दिया।

जगदीशपुर के अधिकांश निवासी कुँवरसिंह की पराजय के बाद पलायित हो गये थे। बहुतों ने तो युद्ध में भी भाग लिया था। फिर भी कुछ लोग रह गये

थे। जैसी कि हमेशा से परम्परा चली आयी है विजेता आप ने शासन की स्थापना की घोषणा करता है, नगरवासियों को तंग नहीं करना। इसी विश्वास पर वे सब रह गए थे, पर आयर ने उनका यह विश्वास झूठा साबित कर दिया।

प्रत्येक आदमी को पीटा गया। कुछ को सजा दी गई। कुछ को गोलियों से मार डाला गया और जिनके पास सम्पत्ति थी, उनकी सम्पत्ति लूट ली गई। अधिकांश स्त्रियों को बंदकर गोरों ने उनके साथ बलात्कार किया। लोग चगेज खाँ और नादिर खाँ को भूल गए। जगदीशपुर की हर तरह से दुर्गति की गई। रंग के साफ अंग्रेज मन के बड़े काले निकले।

जगदीशपुर को हाहाकर की ज्वाला में जलते छोड़ आयर ने दानापुर की ओर प्रस्थान किया।

❀

राजभक्त सिपाहियों की बुरी दशा थी। आरा विजय के समाचार से गोरे सैनिक उन्मत्त हो गए। राजभक्त सिपाहियों का अपमान करने लगे और भद्दी गालियाँ देने लगे। सिपाहियों का राजभक्त बने रहना कठिन हो गया। इस अपमान से ऊबकर अधिकांश सिपाही दानापुर छोड़कर चले गए। साथ ही जगदीशपुर के मन्दिर को तोड़े जाने के समाचार से क्षुब्ध होकर रहे-सहे सिपाही भी खिसक गये। सिक्ख सैनिकों के अतिरिक्त दानापुर में और कोई न रहा।

विसेंट आयर के दानापुर आते ही सैमुअल तथा अन्यान्य उच्चाधिकारियों ने उनका सम्मान किया। आरा के अंग्रेज अपने परिचितों, नातेदारों से मिलकर प्रसन्न हुए।

"कुँवर सिंह जगदीशपुर से भाग गया। मैंने जगदीशपुर इसीलिए तबाह कर दिया ताकि वह पुनः आकर मोर्चाबन्दी न कर सके!"—आयर ने अपनी सफाई दी।

"कुँवरसिंह भाग नहीं सकता!"—सैमुअल बोले—"लार्ड कैनिंग ने उसके बारे में जो कुछ बातें बतलायी है, वे आश्चर्यजनक है। कैनिंग महोदय दो आदमियों से और घबड़ाते हैं। नाना साहब और तात्या टोपे! अब न पता चला है कि ये लोग पहले से ही कितने खतरनाक थे। ऊपर राजभक्त पर अन्दर ही अन्दर आग लगा रहे थे!"

"हाँ, यह तो मैंने देखा है। बुड्ढा रणक्षेत्र का कुशल आदमी है।"

"मैंने कुँवरसिंह को जिन्दा या मुर्दा लाने के लिए इनाम की घोषणा कर दी है। इनाम की रकम इतनी लम्बी रखी गई है, जिससे कि हिन्दोस्तानियों का हृदय डोल सकता है!"

"......"

"पचास हजार रुपये का इनाम और पाँच गाँव की जमींदारी!"

"लेकिन कुँवरसिंह के प्रति तो इस क्षेत्र में अपार श्रद्धा है। मुझे विश्वास नहीं होता कि वह गिरफ्तार हो सकेगा। बहादुर आदमी है। लड़ते-लड़ते ही मरेगा। मैं तो पहले उसे अपना आदमी समझ रहा था, पर उसकी वीरता देख मुझे जगदीशपुर से ही लौट आना पड़ा।"

"......"

"अब आगे के लिए आप प्रबन्ध कीजिए!"

"मेरा ख्याल है कि कुँवरसिंह अपने रिश्तेदारों से सहायता प्राप्त कर दिल्ली की ओर बढ़ेगा। अगर दिल्ली पहुँच गया तो ईश्वर ही मालिक है। इस क्षेत्र में ही हम उसे रोकने की भरसक कोशिश करेंगे। विद्रोह का यह चौथा महीना भी समाप्त होने आया है, पर हम हर जगह लड़खड़ा ही रहे हैं। हमें अपना-अपना काम करना है!"

"कलकत्ता समाचार भेज दीजिए। आगे जैसा हुक्म आयगा, वैसा हम करें!"

"सो तो आज ही!"

सैमुअल ने सारे समाचार कलकत्ता भेज दिए और साथ ही साथ कुँवर सिंह के विरुद्ध उठने वाले प्रयत्नों की रूप-रेखा पर विचार करने लगे। उनके शासन-क्षेत्र में एक यही सबसे खतरनाक आदमी है। इसकी पराजय से ही अंग्रेजी अमलदारी कायम हो सकती है। वह जब तक बागी है, तब तक इस प्रदेश को सुरक्षित समझना मूर्खता होगी। गदर के बिखरे हुए अन्यान्य नेताओं का एक एक चित्र सैमुअल की आँखों के आगे झूल गया! बहुत दिनों से भारत में रहने तथा दूर दूर तक इस देश की यात्रा करने के कारण प्रायः सभी के नामों और चेहरों से परिचित थे। नाना साहब, अंग्रेज का बच्चा अजीमुल्ला, तात्या टोपे और इधर बहादुर शाह, कुँवरसिंह, उधर मध्यभारत की रानी बनने वाली लक्ष्मी बाई...

अगर ये सब एक स्थान पर हो जाँय तो...सैमुअल थर्रा उठे, अंग्रेजों को विलायत तक खदेड़कर मारें...उफ। इस देश की धरती पर पैदा होने वाले लोग कितने साहसी हैं। इन्हीं सिपाहियों के बल बर्मा जीता, फारस जीता और इस देश पर अधिकार किया। आज यही सिपाही बागी हो गए हैं। मान लो कि आज यह विद्रोह दब गया। अंग्रेजी अमलदारी जम गई, तो भी यह निश्चित है कि इस देश पर विदेशियों का शासन लम्बे काल तक नहीं चल सका। इस देश का अतीत इस की साक्षी है कि विदेशियों की गुलामी की तौक हमेशा पहने रहने वाले लोग इस धरती पर पैदा ही नहीं होते !

❀

निकल्सन के आने का समाचार दिल्ली से छुपा न रहा। अंग्रेज सेनापति के आने की खबर पाकर दिल्ली और पंजाब के बीच का रास्ता रोकने के लिए सिपाही दौड़े। नीमच, बरेली, नसीराबाद के सिपाही अठारह तोपों के साथ निकल्सन की आती हुई सेना को रोकने के लिए आगे बढ़े !

हडसन अपने छोटे से रिसाले के साथ पंजाब से आए हुए जिंदराजा के सहयोग से रास्ते की देखभाल कर रहे थे, पर सिपाहियों के आक्रमण से घबड़ाकर भाग जाना पड़ा। निकल्सन को यह समाचार दिया गया। सेनापति अपने साथ छावनी से सेना लेकर सिपाहियों को रोकने और अपनी सेना को लाने के लिए आगे बढ़े।

बहादुरगढ़ की ओर गए। सिपाहियों के उसी ओर जाने की खबर थी, पर बाद में सिपाहियों के नजफगढ़ की तरफ आ जाने से उन्होंने अपना रुख मोड़ा और नजफगढ़ आए।

नजफगढ़ की नहर की एक शाखा-नहर के उस पार सिपाहियों ने युद्ध की बन्दी कर रखी थी। तोपें लगी थीं और सिपाही, गोरी सेना का रास्ता रोके पड़े थे। सिपाहियों की व्यूह रचना देखकर निकल्सन ने अपनी सेना के साथ सराय पर आक्रमण किया।

बरसात के कारण चारों ओर कीचड़ ही कीचड़ था अतएव तोपें फँस जा रही थीं और बड़े कष्ट से आगे बढ़तीं। लड़ते हुए गोरे कीचड़ में फिसल-फिसल जाते पर निकल्सन अपने सैनिकों को बराबर उत्साहित करते जा रहे थे। अपनी

आने वाली सेना का रास्ता साफ कर देना चाहते थे, पर सिपाहियों की वीरता देखकर वह भी परेशान हो रहे थे।

विधि की क्या विडम्बना है। अंग्रेजों के दिए शस्त्र आज उन्हीं के विरुद्ध प्रयुक्त हो रहे हैं। उनके ही सिखाए हुए दाँव आज उन्हें ही मारने के लिए खेले जा रहे है।

सिपाहियों की तोपों के कारण गोरी सेना का बढ़ना मुश्किल हो रहा था। निकल्सन संगीनधारी फौज लेकर दौड़े और हुक्म दिया कि संगीनों के बल पर तोपों पर कब्जा करो। निकल्सन के इस आदेश का पालन करने में सैनिकों ने अपनी लाशों के ढेर बिछा दिए और बड़ी कुरबानी के बाद तोपों पर कब्जा कर लिया। यह विजय बड़ी मँहगी पड़ी।

तोपों पर अधिकार होते ही निकल्सन ने एक क्षण विश्राम न कर द्रुतवेग से सिपाहियों पर आक्रमण किया! कीचड़ के कारण सिपाहियों को भी असुविधा हो रही थी। उन्हें पीछे हटना पड़ा। इस प्रकार नजफगढ़ के रास्ते से उन्हें पीछे हटा सेनापति निकल्सन ने उस कीचड़ भरे-क्षेत्र में ही पड़ाव डाला और आने वाली अपनी सेना का मार्ग सुरक्षित रखा।

कीचड़ के कारण आने वाली सेना को भी कठिनाई हो रही थी। अतएव देर लगी। फिर भी निकल्सन अपने सैनिकों के साथ भूखे प्यासे पूरे दो दिन कीचड़ में पड़ाव डाले पड़े रहे और अपनी सेना को निर्विघ्न निकल जाने दिया।

हर्ष ध्वनि करती हुई गोरी सेना बड़ी-बड़ी तोपों, सिक्ख सैनिकों तथा अन्य राजभक्त सिपाहियों एवं पूरी शस्त्र शक्ति से लैस दिल्ली की छावनी में आ गई।

अब दिल्ली फतह होकर रहेगी। अंग्रेजों को इसका पूरा विश्वास हो गया।

❀

सिपाही चौंक पड़े। किसी को विश्वास न हो रहा था कि ऐसी बात हो सकती है। हर ओर इसी बात की चर्चा थी, यह एक आश्चर्यजनक और घबड़ा देने वाली बात थी कि शाही महल में अंग्रेज छुपे हैं। इस समाचार से शहर दिल्ली के तमाम सिपाहियों में बड़ा असंतोष, बड़ी सनसनी फैली।

छोटे-बड़े दलों में विभक्त सिपाही सारे शहर में अपने हथियार-हरबों के साथ पड़े थे। आने वाले बागी सिपाहियों का वे स्वागत करते। उल्लास और रागरंग में डूब जाते। छोटे बड़े सभी अपने को बादशाह से कम न समझते। जो जिसके मन आता, बादशाह के नाम हुक्म निकाल देता। दिल्ली के साधारण नागरिकों की तो बड़ी आफत था। न कोई शासन था और न कोई न्याय।

सभी सिपाहियों को ऐसा विश्वास था कि बादशाह के नाम का फरमान सारे हिन्दोस्तान में घूम गया है और तमाम शहरों के सिपाही दिल्ली आ रहे हैं। इस प्रकार सब के सब जब दिल्ली आ जाँयगे तो उस दिन बादशाह को फिर ससमारोह गद्दी पर बैठाया जायगा और तब सिपाही अपने-अपने स्थानों पर बादशाही हुकूमत की घोषणा कर देंगे। इस प्रकार हर एक सरदार किसी न किसी सूबे का शासक बना दिया जायगा। सिपाहियों में यह आम चर्चा थी कि बादशाह खुद उस शाही दरबार में अपनी ओर से अपने देश के विभिन्न भागों के शासकों का ऐलान करेंगे। यह काम वीरता और योग्यता के आधार पर होगा।

इस कारण सभी सरदार, सूबेदार, आदि सेना के पदाधिकारी अपना-अपना कौशल समय-समय पर अंग्रेजों पर आक्रमण कर दिखलाते थे। उनका विश्वास था कि उनके कामों की खबर चारों तरफ से बादशाह को मिल रही है।

सेनापति निकल्सन की सेना को रोकने के लिए किए गए तमाम प्रयास असफल होने के बाद भी सिपाहियों का जोश ठंडा न पड़ा। उनका विश्वास था देश के विभिन्न भागों से सिपाही चले आ रहे हैं और शीघ्र ही इन मुट्ठी भर अंग्रेजों को भागना पड़ेगा अथवा सब के सब कत्ल कर दिये जाँयगे।

सहसा इस नए समाचार ने सिपाहियों के मन में बादशाह के प्रति असंतोष को भर दिया। सिपाहियों में यह जोरदार चर्चा चल रही थी कि शाही महल में अंग्रेज छुपाकर रखे गए है। बादशाह ने ही ऐसा किया है। अव्वल तो सबको इस पर विश्वास न हो रहा था। बहुतों का कहना था अगर ऐसी बात होगी तो बादशाह को गद्दार समझा जायगा। जिनको विश्वास न था वे आपस में बहस कर उठते पर सभी को यह मान्य था कि अगर ऐसी बात होगी तो आयन्दा से बादशाह पर विश्वास नहीं किया जायेगा और बादशाह की कोई बात सुनी नहीं जायगी।

❀

बेगम जीनतमहल परीशान थी। बखतखाँ अन्यान्य सरदारों के साथ कुछ ही देर पहले गया है। उससे पता लगा है कि एक अंग्रेज बहुत सी पलटन लेकर आ गया है। जीनतमहल का मन इस समाचार को सुनते ही बैठ गया। सिपाही कुछ नहीं कर पा रहे हैं और इधर अंग्रेज अगर दिल्ली पर कब्जा कर लेंगे तो क्या बादशाह को, बादशाह के बेटों को, उसको जिंदा छोड़ेंगे। इस बार तो सब कुछ चला जायगा। मुबारकशाह और बादशाह की चिंता के प्रति उसका मन भर गया।

सिपाहियों को कितना समझाया गया, पर जैसे उनके कान ही नहीं। कुछ शाही महल में पड़े मौज मार रहे हैं और बाकी शहर में होहल्ला मचाते फिरते हैं। यह भी कुछ बात है। जौहराबी को उसने पचीसों सरदारों के पास भेजा होगा कि आओ, सब एक हो। बाहर से आने वाले सिपाहियों का इंतजाम न कर युद्ध की तैयारी करो। आगे बढ़ो और हिन्दूराव के बाड़े पर अपना अधिकार कर अंग्रेजों को मारकर राज्य विस्तार करो। जिस ओर भी बादशाह की सेना बढ़ जायगी, उसी ओर की जनता पलक-पाँवड़े बिछा स्वागत करेगी। आवश्यकता तो इस बात की है कि बादशाही सेना दिल्ली से आगे बढ़े। सिपाही तो संगठित रूप से दिल्ली से निकलने का नाम ही नहीं लेते हैं।

बना-बनाया सारा स्वप्न ढह रहा है। लखनऊ के सिपाही बादशाह के नाम पर उठे हैं। हर जगह बादशाह का शोर है। बेगम को बादशाह की विकट स्थिति पर भी तरस आ रहा था। अगर आज बादशाह बूढ़े न होते, तो शायद खुद निकल पड़ते, पर उनके लिए तो अब उठना बैठना मुश्किल है। उनका स्वास्थ दिन पर दिन गिरता जा रहा है। अवस्था का भी तो स्वास्थ पर प्रभाव पड़ता है।

बादशाह की बुद्धि भी जाने कैसी हो गई है? कई बार उसने कहा, शहजादे को वे अपनी ओर से दिल्ली का बादशाह घोषित कर दें। शहजादा बादशाह बनते ही उसकी बुद्धि के अनुसार अपने अभियान पर चल पड़ेगा, तो बादशाही अमलदारी जमते देर न लगेगी, पर बादशाह कुछ सुनते ही नहीं। अंग्रेजी हुकूमत का नाम सुनते ही घबड़ा जाते हैं। शहजादा भी कुछ कर सकने में असमर्थ है। जब तक उसे बादशाह की सनद नहीं मिल जाती, उसकी सुनेगा कौन!

बेगम जीनतमहल को ऐसा लगा कि जैसे विपत्ति के बादल मँडराते चले आ रहे हैं और उनकेदिल्ली पर बरसने में अब देर नहीं।

सहसा बेगम चौंक पड़ी।

शाही महल में सिपाहियों का बड़ा शोर सुनायी पड़ा। बेगम समझ न सकी। इतना शोर क्यों हो रहा है?

"तलाशी लो!"

"हाँ हम तलाशी लेंगे।"

"महल का कोना-कोना तलाश करो!"

स्वर पास आते जा रहे थे। बेगम इन बातों का कुछ भी अर्थ न समझ सकी। सिपाहियों का शोर और पास आ गया। वे सब खास महल में घुसे आ रहे थे।

रज्जब अली दौड़ा आया।

"मलिकए आलम! मलकए आलम···"

उसने दोनों हाथ जोड़कर दुहाई दी। उसे इतना घबड़ाया देख बेगम भी घबड़ा गईं। आखिर क्या बात है, जो सिपाही इतने उत्तेजित हैं?

"दुहाई मलिकए आलम! दुहाई···"

"क्या हुआ? यह शोर क्यों हो रहा है?

"मलिकए आलम! तमाम सिपाही खास महल में घुस आए हैं!"

"बाहर करो सबको! बादशाह के जनानखाने में बिना हुक्म सिपाहियों को घुसने की जुर्रत कैसे हुई?"

"वे महल की तलाशी लेंगे!"

"खुदा की मार पड़े कमबख्तों पर! क्या इन सबका सिर फिर गया है! सिपाही और महल की तलाशी!"—बेगम के अनारकली से होंठ कड़के।

"हाँ मलकए आलम। वे कहते हैं, शाही महल में अंग्रेज हैं।"

"अंग्रेज!"

"हाँ!"

"यहाँ कोई फिरंगी नहीं है। हम फिरंगियों के जानी दुश्मन हैं। सिपाहियों को ऐसा ख्याल क्यों कर पैदा हुआ?"

"नहीं जानता, पर सब कहते हैं, शाही महल में अंग्रेजों को छुपाकर रखा

गया है। वे महल में हैं। इसीलिए शोर हो रहा है। तलाशी लेंगे। सिपाही किसी की बात नहीं सुनते हैं।"

देखते देखते सिपाही टिड्डी दल की तरह महल में घुस आए और सब इधर उधर तलाशी लेने लगे। बेगम जीनतमहल ठगी सी खड़ी टुकुर-टुकुर देखती रह गई। सिपाही जोश में थे। उन्हें रोकना आसान न था। बादशाह की खास आरामगाह में भी वे घुस गए, जहाँ से बादशाह के झल्लाने, चीखने, चिल्लाने की आवाज आयी। बेगम कठपुतली की तरह खड़ी रह गई। उसके चारों ओर सिपाही घिरे हुए थे। हिन्दू और मुसलमान सिपाही। जो भी बेगम की ओर देखता अदब से बेगम को सिर झुका देता, पर फिर शोर करता हुआ इधर-उधर दौड़ने लगता।

शाही महल का चप्पा-चप्पा देखा जा रहा था।

"अरे। इसमें देखो।"

"इधर देखो।"

"यहाँ कुछ नहीं है।"

"आगे आओ।"

"हाँय। ये दरवाजा बंद क्यों है ?"

"हाँ, क्यों बंद है ?

"भीतर से बंद है !"

"कौन है इसमें ?"

"शाही महल की लौंडियाँ होगी। डर के मारे छुप गई होगी।"

"हाँ, हाँ, ठीक है आगे देखो।"

"ए, ठहरो सब !"

"......"

"इस कमरे को खुलवाकर देखा जाय।"

"अबे शाही महल की बाँदियाँ होगी !"

"देख लेने में हर्ज क्या है ?"

"हरामीपन करता है !"

"नहीं। हम देखेंगे ! इसमें है कौन ?"

"हाँ अंग्रेज होंगे !"

"अंग्रेज ! हाँ, हाँ !"

"दरवाजा खुलवाओ !"

ढेर से सिपाही उस बंद कमरे के सामने आ गए। दरवाजा खटखटाया गया। सिपाहियों ने शोर मचाया।

"ए इसके अंदर कौन है ?"

"......"

"शाही महल के लोग हों तो दरवाजा खोल दें। हम बाइज्जत जाने देंगे। हम लोग दुश्मन नहीं, अंग्रेजों की तलाश में आए हैं !"

"......"

"कोई बोलता नहीं !

"दरवाजा तोड़ दो !"

"दरवाजा तोड़ दिया जायगा। नहीं तो, खोलो !"

कोई उत्तर न आने से सिपाहियों का जोश और बढ़ा। सब दरवाजा तोड़ने पिल पड़े। अपना तीर निशाने पर देखकर रज्जबअली खिसक गया।

❀

देखते-देखते दरवाजा टूट गया। जैसे ही दरवाजा टूटा, सिपाही चौंक पड़े। कमरे में अंग्रेज थे। घबराए। कुछ अंग्रेज-औरतें भी थीं। बच्चे भी थे सिपाही शोरकर घुस गए। तलवारें खिंच गईं।

"मारो ! मारो !"

"अंग्रेज हैं !"

"अंग्रेज हैं।"

"मारो !"

"बादशाह गद्दार है !"

सिपाहियों में भयंकर खलबली मच गई। देखते-देखते अंग्रेज काट डाले गए। एक भी जिंदा न बचा। बच्चे, औरतें, पुरुष सभी एक सी दुर्गति को प्राप्त हुए। कमरा खून से भर गया। उनके शरीरों के टुकड़े बिखर गये। रक्तरंजित सिपाही और उनकी तलवारें बाहर निकल आयीं।

बेगम जीनतमहल घबड़ा गई। यह कैसा नाटक हो गया! इस महल में अंग्रेज कहाँ से आ गए? वह स्वयं क्रोध से भर गई। यह किसकी नमकहरामी है? सहसा बेगम का माथा ठनका। अवश्य ही इन अंग्रेजों को छुपाने में बादशाह का हाथ होना चाहिए। बिना उनके ऐसा होना संभव नहीं।...यह रहस्य उससे भी छुपाया गया?

बेगम ने घबड़ाकर सिपाहियों की ओर देखा। अंग्रेजों के टुकड़े कर तमाम सिपाही बाहर जा रहे थे। वे सब क्रोध से भरे हुए थे। बहुत से सिपाही क्रोध से उसकी ओर देख रहे थे। बेगम समझ गई। सिपाहियों पर इसका बुरा प्रभाव पड़ा है और इसी कारण वे सब रुष्ट हो गये हैं। इस घटना का सबसे बुरा प्रभाव यह पड़ेगा कि सिपाही बादशाह से घृणा करने लगेंगे।

बादशाह से घृणा!

बेगम काँप उठी। अब तो सिपाही बादशाह की इज्जत न करेंगे। बादशाह की कोई बात न सुनेंगे। या अल्लाह यह क्या हो गया? सचमुच दुर्दिन आ रहे हैं। बेगम ने घबड़ाकर रजबअली की ओर देखा पर रजबअली वहाँ नहीं था। वह जा चुका था।

ॐ

सेनापति निकल्सन प्रधान इंजीनियर बेयर्ड स्मिथ के साथ मिलकर युद्ध-आयोजना करने लगे। सारी पलटन और सब सामान सुरक्षित आ चुका था। गोरखे और सिक्ख सिपाही अंग्रेज सैनिकों से काफी घुल-मिल गये थे और सब कन्धे से कन्धा लड़ाकर युद्ध के लिए अभ्यास कर रहे थे।

दिल्ली शहर का पूरा नक्शा सामने था।

निकल्सन के साथ अन्य फौजी पदाधिकारी, बेयर्ड स्मिथ और हडसन बैठे थे। स्मिथ एक-एक स्थान निकल्सन को दिखला रहे थे। चारों ओर की स्थिति समझा रहे थे। इसके बाद हडसन उस स्थान की सैनिक शक्ति अन्य गति-विधियों से सेनापति को परिचित कराते। निकल्सन ध्यानपूर्वक सारी बातें सुनते रहे। दिल्ली की सिपाही शक्ति कुल मिलाकर उनकी अपनी शक्ति से चौगुनी थी। सिपाहियों ने जिस वीरता के साथ उनकी सेना की राह में रुकावट डाली थी, उसके

कारण वे दंग हो गए थे। बिना कुशल नेतृत्व के ही सिपाही इतनी वीरता से लड़ सकते हैं तो शहरपनाह की लड़ाई में क्या न होगा ! यही वे सोच रहे थे।

अंग्रेजों का इस धरती पर ऐसे विकट युद्धों से बहुत कम सामना पड़ा था। कुछ ही बड़े संग्राम हुए। बाकी शासन तो आपस में एक दूसरे राजा को लड़ाकर अथवा अन्य राजनीतिक चालों के बल पर जमाया गया। लार्ड डलहौजी ने तो केवल घातों के बल बड़े-बड़े राज्य हाल ही में अंग्रेजी हुकूमत में मिला लिए थे। शस्त्र के बल शायद ही अंग्रेजों का राज्य यहाँ जम सकता।

सौभाग्य यही कि सिक्ख और गोरखा सिपाही साथ दे रहे हैं, अन्यथा यदि ये लोग भी बागी होते तो न जाने क्या दशा होती !

पेशावर से यहाँ तक की लम्बी यात्रा में कितने कष्ट उठाने पड़े हैं ! निकल्सन को इसका अनुभव था। रास्ते में यदि थोड़ी-थोड़ी मदद न मिलती रहती, तो यहाँ न पहुँचकर वे अब तक स्वर्ग में होते। छोटे-मोटे सिपाहियों के दलों से सामना पड़ा है, पर वे जिस बहादुरी के साथ लड़ते हैं, वह दंग कर देने वाली बात है। फिर तो दिल्ली में उनसे चौगुनी शक्ति के सिपाही हैं। क्या इन सबको जीत सकना आसान है ?

"आप अब सब देख चुके !"—स्मिथ ने कहा—"यह शहरपनाह है और ये चार ही महत्त्व के दरवाजे हैं। यहाँ हमारी तोपें खड़ी हों !"—स्मिथ ने नक्शे पर हाथ रखकर बतलाया—"और इस प्रकार यहाँ से हमारी गोलाबारी हो। साथ ही यह दीवार तोड़ दी जाय। बस ! हमारे सैनिक शहर में घुस जाँय !"

"लेकिन सिपाहियों की ताकत हमसे ज्यादा है !"—निकल्सन बोले—"युद्ध के साथ-साथ यदि हम और भी अन्य तरीके नहीं अपनायेंगे तो जीत मुश्किल है !"

निकल्सन ने हडसन की ओर देखा। उनका आशय समझकर हडसन मुस्कुराया। बोला—"काम चल रहा है। बादशाह के प्रति सिपाहियों के मन में मैंने घृणा पैदा करवा दी है। हाँलाकि इसके लिए मुझे एक बलिदान देना पड़ा है, जो दिल्ली फतह होने पर आप जान सकेंगे और मैं आशा करता हूँ कि मैं इसके लिए क्षमाकर दिया जाऊँगा !"

"हिन्दू मुसलमान दोनों कौम के सिपाही सम्मिलित रूप से नगर में हैं। नगर में इनके बीच कुछ गड़बड़ हो सके तो हम सरलता से मैदान मार सकते हैं !"

हडसन बोला—"उसका भी मैंने उपाय कर लिया है !"

"तब ठीक है।"—निकल्सन ने आदेश दिया—"मिस्टर स्मिथ की योजना हमें मंजूर है। आज ही रात किसी प्रकार चारों दरवाजों पर तोपें खड़ी कर दी जाँय। चारों ओर के सेनाध्यक्षों को मैं आज ही चुन लूँगा। एक साथ चारों दरवाजों से शहर दिल्ली पर हमला हो !"

निकल्सन के आदेशानुसार काम होने लगा।

❀

सिपाहियों की तोपों की मार के आगे अंग्रेजी सेना का बढ़ना मुश्किल हो गया। कतार से लगी तोपों और उसके बाद खड़े—असंख्य सिपाही दल देखकर अंग्रेजों के तो छक्के छूट गए। आउट्रम की बुद्धि ही काम न कर सकी कि कैसे सिपाहियों के इस प्रलय को रोका जाय।

अपने दोनों सहयोगियों को परामर्श के लिए बुला आउट्रम इस स्थिति पर विचार करने लगे। बहुत देर के विचार-विमर्श के बाद आगे बढ़ना ही तय हुआ। सेना को तीन भागों में बाँट दिया गया। रेजीडेंसी तक सारी फौज का बढ़ना जरूरी था।

हावेल अपनी टुकड़ी लेकर चारबाग के पुल की तरफ बढ़े। इस पुल पर कब्जा करना बहुत ही जरूरी था। पुल पर बागी सिपाहियों ने तोपें लगा रखी थीं और भारी संख्या में वे सब यहाँ एकत्रित थे। हावेल की सेना के आते ही हमला बोल दिया।

सिपाहियों ने बड़े जोर की गोलाबारी की। आसपास के मकानों से भी गोलियाँ बरसने लगीं। लखनऊ की सड़क पर भयंकर युद्ध छिड़ गया। हावेल अपने सैनिकों के साथ पूरे जोश से चारबाग के पुल पर कब्जा करने बढ़े जा रहे थे। अंग्रेज सैनिक बड़ी वीरता के साथ लड़ रहे थे और अपनी संगीनों से लाशों के ढेर बिछा रहे थे।

इसी समय जनरल आउट्रम योजनानुसार दौड़ आए।

उन्होंने भी आक्रमण कर दिया। इस आक्रमण के कारण हावेल के सैनिक आगे बढ़ गए। जनरल आउट्रम की सेना को जब तक सिपाही घेरें, तब तक कर्नल नील दौड़ पड़े। जनरल आउट्रम के सैनिक आगे बढ़ गए।

सेनापति हावेल ने आगे बढ़कर चारबाग के पुल पर कब्जा कर लिया। सिपाहियों को तोपें छोड़कर भागना पड़ा। एक-एक इञ्च पुल पर अधिकार के लिये आठ-आठ दस-दस सैनिक मारे गये। फिर भी अपने पीछे आने वाले साथियों की मदद की आशा से गोरे वीरता के साथ लड़ रहे थे। थोड़ी ही देर में चारबाग पुल अधिकार में आ गया।

जनरल आउट्रम की बाँह में गोली लग गई थी! फिर भी इसकी परवाह न न कर वह बराबर युद्धरत थे। उनके इस कार्य से गोरे सैनिक और उत्साह से भर गये थे। सेनापति आउट्रम ने चारबाग पुल अधिकार में आते ही विश्राम न कर आगे बढ़ने की घोषणा की। तीनों सेनापति आगे बढ़े।

सिपाही कैसरबाग की ओर बढ़ गये थे। रेजीडेंसी जाने वाली मुख्य सड़क पर उनकी तोपें कतार से खड़ी थीं और वहाँ हजारों सिपाही रास्ता रोके खड़े थे। बाएँ ओर से हमला होने पर और चारबाग पुल हाथ से निकल जाने पर भी सिपाही निरुत्साहित न हुए थे। आखिर अंग्रेज रेजीडेंसी में इसी मुख्य सड़क से आँयगे। यहाँ आने पर तो उनको कच्चा ही चबा लिया जायगा। इसी विश्वास के साथ वे लड़ते-भिड़ते पीछे लौटते आ रहे थे।

कैसरबाग में भी भयंकर गोलाबारी शुरू हुई। इस गोलाबारी को भेदते हुए गोरी सेना फरीदबख्श और छतर मंजिल तक आ गई। इसके बाद ही खास बाजार था। गोरी सेना के आते ही आस-पास के मकानों को भीषण गोलीवर्षा शुरू हुई! सैनिक घबड़ा-घबड़ाकर भागने लगे, पर कर्नल नील ने स्थिति सँभाली।

तीनों सेनापतियों ने मुख्य रास्ते से रेजीडेंसी में प्रवेश न कर छतर मजिल के पास के पतले रास्ते से जाने का निर्णय किया। रास्ता पतला और कई स्थानों पर घुमावदार था। यही रास्ता चुना गया। सिपाहियों को इस ओर का ख्याल ही न था। वे मुख्य रास्ते पर थे।

बड़े वेग के साथ गोरी सेना दौड़ी और पतले रास्ते में घुसने लगी।

इससे चारों ओर बड़ी गड़बड़ी मची। खास बाजार को भीषण गोलीवर्षा में काफी अंग्रेज मारे गये और कर्नल नील भी गोलियों से छिद ढेर हो गए। इस भागम-भाग में गोरे सैनिकों को उनका कुछ ध्यान न रहा और कर्नल नील की लाश रौंदते हुए गोरे सैनिक पतले रास्ते में घुसते गए।

एक सैनिक ने कर्नल नील को पहिचानकर उठा लिया। उनके शरीर की ढाल बनाकर गोलियों से अपने को बचाता हुआ वह भी पतले रास्ते में घुस गया।

कर्नल नील की मृत्यु के उपरान्त भी जनरल आउट्रम तनिक भी विचलित न हुए। पतले रास्ते को चुनकर उन्होंने बहुत बड़ा खतरा मोल लिया था। रास्ता कई स्थानों पर घूमा हुआ था और अगर सिपाहियों ने इस रास्ते पर अपनी तैयारी की होती तो शायद ही एक कदम आगे बढ़ पाते। स्वयं सिपाहियों ने इस बात की कल्पना न की थी कि अंग्रेज सेनापति इस तरह के खतरनाक रास्ते को चुन सकते हैं। इसका उन्हें कभी विश्वास न था। इसीलिए इस रास्ते पर बड़ी कम रुकावटें पड़ीं। तैयारी बहुत कम थी।

रास्ते में छिट पुट फैले सिपाहियों को मारते-काटते जनरल आउट्रम रेजीडेंसी में आ गए।

रेजीडेंसी के सैनिकों, अंग्रेजों ने हर्ष-ध्वनि के साथ सेनापति का स्वागत किया पर अंग्रेजी सेना काफी हानि उठाकर रेजीडेंसी में आ सकी। सिपाहियों की शक्ति दूसरी ओर अभी भी बहुत प्रबल थी। शहर के दक्षिणी भाग पर उनका पूर्ण आधिपत्य था। भारी तैयारी से थे वे।

जनरल आउट्रम के आते ही सिपाही भी तोपों के साथ रेजीडेंसी की ओर दौड़े पर तब तक अंग्रेजों की नाकेबंदी हो गई थी। दोनों ओर से गोलाबारी होने लगी। जनरल आउट्रम भी रेजीडेंसी में घिर गए। बिना कुमक के अब वे कुछ नहीं कर सकते थे। क्योंकि उनकी तीन चौथाई शक्ति रेजीडेंसी तक आने में खत्म हो गई थी।

भारी हानि उठाकर अंग्रेज रेजीडेंसी में घिर गये। सिपाहियों से उनका युद्ध होने लगा!

जनरल आउट्रम सहायता के लिए उपाय सोचने लगे।

❀

रात के अँधेरे में रज्जब अली शहरपनाह से बाहर आ गया। उसे बाहर आने की अब पूर्ण सुविधा प्राप्त हो गई थी। उसने अपने को बादशाह का जासूस बतलाना शुरू कर दिया था और यह प्रचार कर रखा था कि अंग्रेजों के भेद लेने

के लिए वह नियुक्त हुआ है। सेनापति बख्तखाँ से अपनी सिफ़ारिश कर उसने अपने इस पेशे को पुख्ता बनवा लिया था। बेगम की ही सिफ़ारिश पर ऐसा हुआ था। उसके आने-जाने पर अब कोई रोक टोक न थी।

शहरपनाह के बाद बड़ी ही सावधानी के साथ उसने अपने कदम उठाए। सतर्कता के साथ यहाँ वहाँ देखता हुआ वह अंग्रेजो पड़ाव के पास आया। उसे यह देखकर आश्चर्य हुआ कि रात के अँधेरे में गोरे सिक्ख-सैनिकों की सहायता से तोपें शहरफसील के दरवाजों की ओर बढ़ा रहे हैं। समझ गया अंग्रेज युद्ध की तैयारियाँ कर रहे हैं और अब इनके व्यापक आक्रमण में देर नहीं।

सन्तरी को संकेत दिया रज्जब अली ने।

सन्तरी उसे अपने साथ आगे ले गया। फिर उसे अंग्रेजी-छावनी में जाने की अनुमति मिल गई।

हडसन के सामने होते ही रज्जब अली ने आँखों में आँसू भरकर कहा—"हुजूर, सब साहब...कत्ल हो गए!"

"जानता हूँ!"—हडसन का स्वर गंभीर था। दुःख से भरा था।

"बच्चे, मेमें भी!"

"मालूम है!"

"......"

"जान-बूझकर मैंने अपने साथियों का बलिदान किया है!"—हडसन ने कहा—"दिल्ली फतह के लिए। इतने अंग्रेज यदि और मारे जाते हैं तो हमारा दिल्ली पर अधिकार हो जाता है। इसमें हानि क्या है! वे सब अपने देश की हुकूमत बढ़ाने के लिए शहीद हुए हैं। अंग्रेजी राज के इतिहास में उनका नाम स्वर्णाक्षरों में लिखा जायगा।"

"......"

"इसका नतीजा क्या हुआ?"

"नतीजा!"—रज्जब अली ने कहा—"इस कारण बहुत से सिपाही बादशाह पर अविश्वास करने लगे हैं। बादशाह के लिए उनके मन में जो अदब था, वह जाता रहा!"

"बस! मैं यही चाहता था!"—हडसन की आँखें प्रसन्नता से चमक उठीं—"अब तुम्हें एक काम और करना है!

"कहिए!"

-"पास आओ!"

हडसन उसके कान में कुछ देर तक कुछ कहते रहे। रज्जब अली बड़ी होशियारी के साथ सुनता रहा। हडसन ने अपनी बात पूरी कर जरा हटकर पूछा—"समझ गए?"

"हाँ साब! यह तो बहुत ही नायाब तरकीब है!"

"बस! आज ही रात यह काम हो जाना चाहिए!"

"जरूर! जरूर!!

"कल हमारा हमला होगा और उधर तुम यह काम कर डालोगे। फूट बहुत बड़ी चीज है रज्जब अली। मैं देख रहा हूँ कि हिन्दोस्तान में बिना इसके हमारी हुकूमत कायम नहीं हो सकती। हिन्दू मुसलमान दोनों का एक साथ रहना बड़ा ही खतरनाक है! समझे?"

"जी!"

"जाओ! यह काम करो रज्जब अली! दिल्ली पर हमारा कब्जा होने के बाद अमन के बाद हम लोग तुम्हें ढेर सा इनाम देंगे और तुम्हारे खानदान को हमेशा पेंशन दी जायगी!"

रज्जब अली अदब के साथ सिर झुकाकर चला गया।

❀

सबेरे-सबेरे राजधानी के तमाम हिन्दू सिपाहियों के चेहरे सूख गए। खलबली मच गई। यह कैसी बात हो गई? उन में रोष फैलने लगा। मुसलमानों को अब तक उन्होंने अपना सहोदर समझा। बादशाह को उन्होंने अपना राजा माना है और इसके बाद भी मुसलमानों का यह कुकृत्य!

मुसलमानी-खेमों से निकल-निकलकर तमाम हिन्दू सिपाही इकट्ठे होने लगे। नगर के हिन्दू नागरिकों में भी सनसनी फैल गई। यह कैसा कुकर्म हुआ है? लोगों को भरोसा होने लगा कि यह सब मुसलमानों की मदान्धता का परिणाम

है। बादशाही हुकूमत कायम होते ही वे हिन्दुओं पर जुल्म करने लगे हैं। जिस बादशाह के लिए हिन्दू सिपाही लड़ मर रहे थे, उसी बादशाह की कौम के लोगों का यह कर्म इस बात की घोषणा करता है कि आगे चलकर हिन्दुओं पर जुल्म होंगे।

हिन्दुओं को औरंगजेब के जमाने की बातें याद आने लगीं। इस घटना ने हिन्दू सिपाहियों को कुछ और ही सोचने को विवश किया। अब तक जिन बातों पर वे स्वप्न में भी नहीं सोच सकते थे। उन्हीं बातों पर वे खुलकर चर्चा करने लगे। बादशाह के नाम पर वे सब बगावत कर सीधे दिल्ली चले आए थे और बादशाही हुकूमत कायम करने के लिए वे सब एक साथ थे।

बगावत की यह योजना दोनों कौमों के प्रमुख व्यक्तियों की ही है। फिर यह भेदभाव और दूसरी कौम पर जुल्म कैसा! इस घटना ने जैसे हिन्दू सिपाहियों की आँखें खोल दीं। वे सब सोचने लगे कि जिस बादशाही हुकूमत के लिए वे सब मर-खप रहे हैं, वही बादशाही हुकूमत आगे चलकर उनके साथ पुख्ता होने पर जाने क्या व्यवहार करेगी?

"यही होगा। आगे भी!"

"अभी ये हाल हैं तो अंग्रेजों का नाश होने पर हम लोगों से जज़िया कर लिया जायगा।"

"कोई ताज्जुब की बात नहीं।"

"हम क्यों साथ दें?"

"मुसलमानों का हम साथ नहीं दे सकते।"

"कभी नहीं।"

हिन्दू सिपाहियों को अनुभव हुआ कि जैसे अब तक मुसलमानों का साथ देकर उन सबने बड़ी भूल की है और अब तक वे भ्रम में थे। मुसलमानों के इस रूप पर और इस बात पर कि वे विधर्मी हैं, अभी तक सोचा ही नहीं गया था। अब भी समय है। अभी बादशाही, मुसलमानी हुकूमत कायम नहीं हुई है। अभी भी चेत जाने से काम चल सकता है। सुबह का भटका शाम को आ जाता है, तो वह भूला नहीं कहलाता।

दल के दल हिन्दू सिपाही एक स्थान पर इकट्ठे होने लगे। सेनापति बख्त

खाँ तक यह समाचार गया। अनायास हिन्दू सिपाहियों के इस अलगाव से वे भी घबड़ा गए। यकायक उनको क्या हो गया ? यह बखत खाँ की समझ में न आया।

"क्या बात है रजब अली ?"

रजब अली ने अपनी एक आँख मटकाकर कहा—"हुजूर, किसी मुसलमान के हरामीपन से यह सब हुआ है ?"

"क्या हुआ है ?"

"वैसे खास बात नहीं है। हुआ यह है कि किसी ने चार-पाँच गायों को काटकर सरे आम सड़क पर फेंक दिया है। वहाँ बड़ी भीड़ लगी है। अभी खून ताजा है। मालूम पड़ता है कुछ मुसलमान सिपाहियों ने शराब के नशे में तलवारों से काट डाला है। चार-पाँच गायें हैं। उनके सिर धड़ से जुदा हैं। मतलब हरामीपन है। एक तो उसके हगने के रास्ते में ही तलवार घुसेड़कर छोड़ गया है !"

"रजब अली, यह तो बहुत बुरा हुआ। हिन्दू हमारे भाई हैं। हमारा उनका ऐसा समझौता है कि एक दूसरे के मजहब पर कभी कुछ बात न करेंगे !"

रजब अली चुप रह गया। उसने व्यंग दृष्टि से बखत खाँ की ओर देखा। बखत खाँ की अब क्या ताकत है, जो स्थिति सँभाल सकें। उसे जो करना था सो तो वह हडसन के इशारे पर सबेरे ही कर चुका। चार-पाँच गायें काटकर उसने सरे आम डाल दीं।

बखत खाँ अपने घोड़े पर बैठे। कुछ साथियों के साथ घटनास्थल पर गए। जिस बेरहमी के साथ उन गायों का कत्ल किया गया था। यह देखकर वे बड़े दुःखी हुए सिवाय अफसोस प्रकट करने के और चारा क्या था ! हिन्दू सिपाहियों के दल उत्तेजित होते गए।

बखत खाँ को सबने घेर लिया।

"भाइयो !"—बखत खाँ ने कहा—"अभी जो कुछ मैंने देखा है, सुना है, उससे मेरे मन को बड़ा दुःख हुआ। इस समय मुसीबत के बादल हम पर हैं। भाई-भाई के झगड़ने से कुछ फायदा न होगा। जरूर यह किसी मुसलमान की शरारत

है। मैं पता लगाऊँगा और जिसने यह काम किया है, उसे फाँसी की सजा दी जायगी। इस वक्त आप सब लोग हमारा साथ दें।"

"किस आशा पर?"

"क्या इसी गोकुशी के लिए?"

"क्या इसीलिए कि फिर हम लोगों पर जज़िया लगाया जाय?"

"क्या यही मुसलमानों का फर्ज है?"

"अरे बादशाह भी गद्दार और मुसलमान भी नमकहराम!"

"भाइयो!"—बखत खाँ ने समझाने की फिर कोशिश की—"एक पागल मुसलमान अगर ऐसा करता है तो क्या सब मुसलमान ऐसे जाँयगे!"

"हंडी का एक चाँवल देखा जाता है!"

"इस समय अगर हम लोग आपस में दुश्मनी रखेंगे तो बरबाद हो जाँयगे। आपसी मतभेद भुलाकर हम सबको इस वक्त एक होकर लड़ना है। मेरा आप यकीन करें। मैं आप लोगों से माफी चाहता हूँ और इस बात का वायदा करता हूँ कि जिस भी मुसलमान ने ऐसा किया होगा, मैं उसे फाँसी की सजा दूँगा। आप लोग भी उस आदमी को पकड़ने में हमारी मदद करें!"

"......"

"मुझे उम्मीद है, आप सब लोग साथ रहेंगे।"

सेनापति बखत खाँ सिपाहियों को समझा-बुझाकर चले गए पर इसका कोई विशेष असर सिपाहियों पर न पड़ा। अधिकांश सिपाही मुसलमानों का साथ छोड़ कृष्णगंज में आ गए।

❀

तोपें लग गईं। सेना बिगुल की आवाज पर तैयार हुई। सेनापति निकल्सन ने पूरी सेना को पाँच भागों में बाँटा। एक भाग कुमुक के रूप में रखकर रोक लिया गया कि यह टुकड़ी एकदम तैयार रहे और संकेत मिलते ही सहायता के लिये दौड़ पड़े। बाकी चार भाग चारों मुख्य दरवाजों की ओर बढ़ गए।

दिन के उजाले में सिपाहियों को इनकी तैयारियाँ का आभास मिल गया और वे भी मुकाबले के लिए आ डटे।

तोपों ने युद्ध घोषणा की। तोपों की मार से दीवार कई जगह से टूट गई। इसी समय चारों दल अपने-अपने स्थान पर जाकर भिड़ गये। सिपाही बरसाती बूँदों की तरह गोलियाँ और ईंट-पत्थर बरसाने लगे पर पहला दल रस्से बाँधकर फसील के पार उतर गया। साथ ही दीवार टूट जाने से यह टुकड़ी भीतर चली गई। घोर युद्ध प्रारम्भ हो गया।

काश्मीरी दरवाजे से भी सैनिक घुस गये और मेन गार्ड तक जा पहुँचे। इस स्थान पर बहुत से सिपाही मारे गये और उनमें भगदड़ मच गई।

इसी समय काबुली दरवाजे पर भी अधिकार हो गया। इस टुकड़ी का नेतृत्व स्वयं सेनापति निकल्सन कर रहे थे। काबुली दरवाजे पर अपना अधिकार कर सेनापति निकल्सन लाहौर दरवाजे की ओर बढ़े। इसी क्षण चारों ओर के युद्ध ने भयंकर रूप धारण कर लिया। टिड्डी दल की तरह सिपाही उमड़ आये और जूझ-जूझकर युद्ध करने लगे। इनके रण-तांडव के आगे गोरी सेना के छक्के छूट चले। तोपों की भयंकर मार और बन्दूकों की गरजना से साक्षात प्रलय का दृश्य हो गया। युद्ध की सूचना पाकर शहर के भीतरी भाग के सिपाही भी आ गये और चारों ओर से अंग्रेजों को रोकने लगे।

लाहौरी दरवाजे पर सेनापति निकल्सन के आते ही युद्ध का भयंकर रूप हो गया था। लाहौरी दरवाजे के पास से ही मकानों की कतार थी और मकानों पर सिपाहियों का अधिकार था। निकल्सन की टुकड़ी के आते ही मकानों से भीषण गोली वर्षा होने लगी।

गोरे सैनिक उन्हें धड़ाधड़ मारने लगे और इसी समय निकल्सन भी गोली खाकर गिर गये। उन्हें गहरा घाव लगा।

गोरे सैनिक उन्हें उठाकर तत्काल भाग गए।

सेनापति रीड अपनी टुकड़ी के साथ लाहौरी दरवाजे की ओर दौड़े। उनके साथ नैपाल के राजा जंगबहादुर की सहायता से आए हुए गोर्खा सैनिक भी थे। इन्हीं सैनिकों और तोपों के बल पर सेनापति रीड लाहौरी दरवाजे से काफी दूर तक आ गये पर तब तक सिपाहियों ने भी जोर मारा और सेनापति रीड घायल हो भाग गए।

सिपाहियों की असीम वीरता के कारण युद्ध पल-पल पर रंग पलट रहा था।

काश्मीरी दरवाजे से भी अंग्रेजों को हटाकर सिपाहियों ने अपना अधिकार कर लिया और रास्ता रोक दिया गया। अंग्रेजी सेना पीछे खदेड़ दी गई।

"बारूद से उड़ा दो!"

"हाँ"

बारूद की पेटियाँ लगा दी गईं पर सिपाहियों की गोलियों के आगे कौन बढ़े। एक-एक कर कई व्यक्ति बारूद में आग लगाने के प्रयास में मारे गये पर बारूद में आग न लग सकी और सिपाहियों की बन्दूकें खुली रह गईं। काश्मीरी दरवाजा उड़ाया न जा सका।

इसी समय कर्नल होपग्रांट सेना का पाँचवा भाग लेकर सहायता के लिए दौड़े। साथ ही आसपास की टुकड़ियों को इकट्ठा कर एक साथ टूटी दीवारों से सैनिक शहर में घुस पड़े। सिपाहियों के पैर अब ठहर न सके। अंग्रेजों के पल-पल के पैंतरों को समझने के लिए कोई योग्य सेनापति न था। साथ ही हजार पाँच सौ सिपाही चाहे जिस तरफ दौड़ जाते। यह उनकी इच्छा पर था। इधर-उधर आक्रमण करना। कोई नियंत्रित ढंग नहीं। जिधर ही ज्यादा शोर सुनाई पड़ता, उधर ही सिपाही दौड़ जाते।

सिपाहियों को पीछे हटना पड़ा और अंग्रेजों ने शहर के कुछ भाग पर अपना अधिकार कर लिया। स्किनर के मकान में तमाम अंग्रेज सैनिक अधिकारी आ गए। रात्रि के कारण युद्ध स्थगित हो गया। विजय की भी आशा बलवती हो गई।

❀

दूसरे दिन युद्ध नहीं हुआ। आवश्यक तैयारियों में सभी अधिकारी लग गए और सैनिकों ने अपने अधिकार में आए शहर के भाग में तबाही शुरू कर दी। दिल्ली का मालखजाना लूटने के लोभ में अनेक मकानों पर धावा किया गया पर कुछ हाथ न लगा। हाँ, पीलो शराब की दूकानों पर सिपाही टूट पड़े। खूब छककर शराब पी गई। विजय की खुशी में जो न पीने वाले थे, वे भी दो-दो बोतल भर गए।

दोपहर तक सारा नकशा बदल गया। गोरे, सिक्ख, गोरखे सभी सैनिक

शराब के नशे में चूर हुल्लड़बाजी करने लगे। शराब के इस चस्के के कारण गोरों ने भी अपने सेनापति की बात न सुनी। अन्त में सेनाधिकारियों ने खुद दौड़-दौड़ कर शराब के पीपों को सड़कों पर लुढ़का दिया।

सेनाधिकारी घबड़ा गए। अगर इस स्थिति में सिपाही हमला कर देते हैं, तो गजब हो जायगा। सबको भागना पड़ेगा। कृष्णगंज में सिपाही पड़े थे। लाहौरी दरवाजा और उस ओर के तमाम मकानों पर उनका अधिकार था। पहाड़ की ओर अंग्रेजी छावनी में बहुत थोड़े लोग थे। वहाँ रोगी और घायल ही अधिक थे। उस ओर से भी सैन्याधिकारी चिन्तित हो उठे।

सारा दिन इसी चिन्ता में कट गया। सैन्याधिकारी शराब के नशे में चूर सैनिकों की हुल्लड़बाजी देखकर दंग थे। सर्वत्र सैनिक नशे में हो-हो, ही ही कर रहे थे और तोड़-फोड़ मचाते फिर रहे थे। दल के दल आपस में भद्दे मजाक कर रहे थे। ऐसी स्थिति में सिपाहियों के हमले का स्पष्ट अर्थ था—सिपाहियों की विजय। बड़ी ही आसानी से वे सब अंग्रेजों को भगा सकते थे।

ऐसा न हुआ।

दिन गुजर गया। कहीं कोई घटना न घटी।

रात आ गई।

अंग्रेज सेनापतियों ने संतोष की साँस ली। कल प्रातःकाल से ही आगे बढ़ने की घोषणा के साथ वे अगले कार्यक्रम पर विचार करने लगे।

❀

जबलपुर के सिपाहियों में सनसनी फैल गई। कुँवरसिंह के बाद यह एक नया और रोमांचकारी समाचार था। गोंडवन प्रदेश के बूढ़े बादशाह की यह गति!" साठ पीढ़ियों से शासन करते हुए एक राजसी-वंश का इस नीचतापूर्वक अन्त! छावनी में आपस में चर्चा चल ही रही थी कि कुछ सिपाहियों का शोर सुनायी पड़ा।

दस-पन्द्रह सिपाही एक आदमी को घेरे चले आ रहे थे।

"सबके सामने सुनाओ!"

"हाँ, हम सब सुनना चाहेंगे!"

"क्या बात है भाई ?"

"इसने सब अपनी आँखों देखा है ! वहीं से भगाकर आ रहा है !"

"हाँ, हम सब सुनना चाहेंगे !"

"सब बैठ जाओ ! बैठ जाओ !"

तमाम सिपाही बैठ गये। मैले कपड़े और धूल भरे शरीर वाला प्रौढ़ उठा। कुछ कहने के पहले ही उसकी आँखों से आँसू आ गये। आँसू पोंछकर उसने गला साफ किया।

बोला—"महाराज शंकरशाह मार डाले गए। तोप से..."

"सो तो मालूम है। पर मारे कैसे गये ?"

रुँधे गले से उस प्रौढ़ व्यक्ति ने कहा—"नागपुर से कुछ गोरे और मदरासी सिपाही तोपें लेकर आए। आते ही शंकरशाह का मकान घेर लिया। सबको बाहर निकाल तलाशी ली। जो जिसके मन में आया, उठाकर चला गया। वे लोग महाराज और उनके बेटे को भी गिरफ्तार कर ले गये !"

"क्यों ?"

"इसलिए कि वे बागी हैं और अंग्रेजी अमलदारी के खिलाफ सिपाहियों को भड़का रहे थे। ऐसा अंग्रेजों ने कहा। महाराज की गिरफ्तारी का समाचार सुनकर वहाँ के थोड़े से सिपाहियों ने महाराज को छुड़ाने की कोशिश की, पर वे तोपों की वजह से इस काम में नाकामयाब रहे। इससे अंग्रेजों को और विश्वास हो गया कि महाराज बागी हैं। उन लोगों ने महाराजा को तोप से उड़ा देने का ऐलान किया !"

"हाय ! हाय !!"

"दूसरे दिन सवेरे मैदान में तोपें लगीं। सैकड़ों आदमियों की भीड़ वहाँ लग गई। सभी रो रहे थे। थोड़ी देर में महाराज और उनके बेटे को बाँधकर लाया गया। लोग फूट-फूटकर रोने लगे। महाराजा और उनके बेटे को तोप के मुँह से बाँध दिया गया !"

"हे भगवान !"

"हाय !"—उस आदमी की आँखों से झर-झर आँसू बह रहे थे—"अंग्रेजों

की बन्दूकों और तोपों से खाली हाथ सेना डर रही थी वरना इन अंग्रेजों को हम कच्चा चबा जाते ! हाय !"—वह आदमी फूट-फूटकर रोने लगा।

"आगे कहो ! ! आगे कहो !"

"नामर्दों के आगे क्या कहूँ ?"

"नहीं !"—अनेक सिपाही चिल्ला पड़े—"हम महाराज की हत्या का बदला लेंगे। तुम सुनाओ !"

"तो सुनो !"—उस प्रौढ़ ने गरजकर कहा—"सुनो, कान खोलकर सुनो नामर्दों ! अंग्रेजों ने तोपें दगवादीं और बूढ़े महाराज, उनका बेटा छित्ती-बित्ती हो उड़ गए। विलाप करती हुई महाराजा की प्रजा उनके शरीरों के टुकड़े बीन-बीन कर इकट्ठे करने लगी और अंग्रेज खड़े हँस रहे थे। हः हः हः हः हः हः !! नामर्दों ! अब भी उठो। तुम्हारे इस मुल्क पर जो भी विदेशी रहे उसे मारो, हुकूमत जमाओ। गुलाम इन्सान से एक कुत्ता अच्छा है !"

सिपाही संयम न रख सके। बूढ़े शंकरशाह की इस रोमांचकारी हत्या के समाचार से वे बागी हो गये। कुँवरसिंह का समाचार उनके पास आ चुका था। कुँवरसिंह के नेतृत्व में रहने के लिए वे तैयार हो गए। उसी रात छावनी पर हल्ला बोल दिया गया।

"बाबू कुँवरसिंह की—"

"जय !"

अपने सेनाध्यक्ष मेक ग्रेगरी को उन लोगों ने गिरफ्तार कर लिया और तोपों हथियारों के साथ आगे बढ़ गए।

· ❀

गोरखे सैनिकों के दिल्ली पहुँचने का समाचार पाकर लार्ड कैनिंग को कुछ आशा बँधी। उन्हें अपनी पहली गलती पर अफसोस हुआ। हिन्दोस्तान की इस गड़बड़ी का समाचार पाकर नेपाल के राणा जंगबहादुर अंग्रेजों की मदद के लिए गोरखा सेना लेकर आ रहे थे। गोरखा सैनिक अंग्रेजों की कई विदेशी लड़ाइयों में अपना योग दे चुके थे। उनके आने का समाचार पाने पर लार्ड कैनिंग ने कहला भेजा, आवश्यकता पड़ने पर आपकी सहायता लेंगे, फिलहाल नहीं।

लार्ड कैनिंग उस समय यह समझ बैठे थे कि यह विद्रोह मामूली है और शीघ्र ही दब जायगा, पर अनायास ही उसका भयंकर रूप देखकर राणा जंगबहादुर की सहायता लेना ही पड़ी। राणा को समाचार भेजा गया और गोर्खा सेना चल पड़ी। अपनी बुद्धि के अनुसार लार्ड कैनिंग ने उन सैनिकों को भिन्न-भिन्न स्थानों पर अंग्रेजों की मदद करने भेज दिया।

गोरखा पलटन के दिल्ली पहुँच जाने के समाचार से आशा की किरण बँधी। कलकत्ते का वातावरण शान्त था। दिल हिला देने वाली अफवाहें और रोंगटे खड़े कर देने वाले समाचार आ रहे थे। एक से एक धुरंधुर सेना नायकों के मारे जाने से कलकत्ते के तमाम अंग्रेज विचलित थे।

इंग्लैंड की ईस्ट इंडिया कम्पनी के डायरेक्टर्स आफ बोर्ड को प्रतिदिन देश की स्थिति के समाचार भेजे जा रहे थे। कुछ पत्रों के संवाददाता कलकत्ते में थे और कुछ अन्य स्थानों पर। वे सब अतिरंजित समाचार भेज रहे थे। उन पत्रों की प्रतियाँ कलकत्ता आने पर तहलका मचा रही थीं। कुछ देशी पत्र भी इन्हीं पत्रों का उद्धरण देकर समाचार छाप रहे थे।

बँगाल अशान्त होने पर भी कलकत्ते में निरन्तर फौजी जमघट के कारण चुप था। नवाब वाजिदअली शाह किले में कैद थे। किले के चारों ओर सख्त पहरा था। बीच-बीच में आने वाले सैनिकों की टुकड़ियाँ कलकत्ता शहर की मुख्य सड़कों से घूम जाती थीं। इसका प्रभाव पड़ता! भय और आतंक का वातावरण बना रहता।

लार्ड कैनिंग सतत उद्योग कर रहे थे। निरन्तर परामर्श और सैन्य संचालन में व्यस्त थे। मद्रास से भी बगावत का समाचार पाकर वह स्तब्ध रह गये और उन्हें गम्भीरता के साथ सारी स्थिति को लेना पड़ा। देशव्यापी इस चिनगारी को बुझाने के लिए काफी रक्त देना पड़ेगा। लार्ड डलहौजी ने अपनी कूटनीतियों और धूर्त-चालों से रियासतें हड़प लीं। रुई के लोभ ने निजाम को हड़प लिया। रुई ने अन्यान्य के प्रतिकार की आवाज के प्रति उनके कान बहरे कर दिए और आज उसी हैदराबाद, मद्रास, विशाखापट्टन में आग लग गई है।

सारी स्थिति सँभालना मुश्किल हो रहा है। दिल्ली-पतन का समाचार अभी तक न आया था। दिल्ली, कानपुर और झाँसी के लिए परीशान थे। नाना

अजीमुल्ला, तात्या टोपे, कुँवरसिंह, लक्ष्मीबाई, मौलवी अहमदुल्ला, बहादुरशाह, बख्त खाँ, अर्जुनसिंह, आदि पचीसों व्यक्तियों के सम्बन्ध में शिकायतें चली आ रही थीं। नित्य आने वाले सन्देशों से अपने मन को सन्तुलित बनाए रखना बड़ा मुश्किल हो रहा था।

सौभाग्य कि सारी शक्तियाँ बिखरी हुई हैं।

कुँवरसिंह अगर रानीगंज की रेलवे पर अधिकार कर कलकत्ता आ गया तो...? आसाम का बहुत सा भाग कुँवरसिंह का समर्थक है। यहाँ भी उसका प्रभाव है...पर कुँवरसिंह, नहीं ऐसा नहीं हो सकता! फिर भी इस ओर ध्यान जाना आवश्यक है। जगदीशपुर के आक्रमण के उपरान्त तो कुँवर सिंह का पता ही नहीं लग रहा।

झाँसी पर लक्ष्मीबाई अपना झंडा फहरा चुकी है। अपने को स्वतंत्र घोषित कर उसने सारा राज-काज सँभाल लिया है!

चारों तरफ परीशानी ही परीशानी है।

अपने सलाहकारों पर कम, पर अपनी सुदृढ़ योजनाओं पर ही विश्वास कर लार्ड कैनिंग हर स्थिति सँभाल रहे थे।

❀

अंग्रेजी पलटन ने बागी सिपाहियों का पीछा किया। मेकग्रेगरी को मुक्त करने के लिए रुपयों का लालच भी दिया गया, पर सिपाही न माने। जबलपुर से पच्चीस मील दूर एक जंगल में सिपाहियों को गोरी सेना ने घेर लिया। लड़ाई होने लगी, पर सिपाहियों की संख्या कम थी और शस्त्र भी न थे। अतएव थोड़ी ही देर लड़ने के बाद वे भाग गए, पर मेकग्रेगरी को कत्ल कर वहीं छोड़ गए।

बागी सिपाही नागोद पहुँचे।

नागोद के सिपाही इनके आते ही बागी हो गए। खजाना लूट लिया गया। छावनी जला दी गई। अंग्रेज भाग खड़े हुए। बागियों ने अपने को कुँवरसिंह के आधीन घोषित किया और कुँवरसिंह को आने का सन्देसा दिया गया। कुछ सिपाही रीवाँ की ओर बढ़ गए।

रीवाँ नरेश कुँवरसिंह के रिश्तेदार होते हुए भी किसी प्रकार की सहायता न

कर सके। न तो उनके पास विशेष सैन्य शक्ति थी और न ही हथियार। सिपाही गाँवों को लूट-पाटकर लौट आए।

कुँवरसिंह के नागौद आते ही सिपाहियों में हर्ष की लहर दौड़ गई। कुँवर सिंह का राजा की भाँति सम्मान किया गया। बूढ़े क्षत्रिय ने सिपाहियों की बागडोर सँभाली। अभी भी सिपाहियों की संख्या पर्याप्त न थी और न ही शस्त्रसज्जा सन्तोषजनक थी।

कुँवरसिंह रीवाँ न आकर बाँदा की ओर बढ़े। पूरी शक्ति के साथ दिल्ली की ओर बढ़ने का इरादा किया, पर दिल्ली की चिन्ताजनक स्थिति का समाचार पाकर लौटना पड़ा। उन्हें अपने विलम्ब पर अफसोस हुआ। फिर भी बहादुर ने हिम्मत न हारी।

अपने साथियों, परिचितों को मध्यभारत, उत्तरभारत में सैन्य शक्ति बटोरने के लिए भेज दिया। स्थान-स्थान पर कुँवरसिंह के आह्वान सुनाई देने लगे।

कुँवरसिंह आजमगढ़ की ओर चले। इलाहाबाद, बनारस पर आक्रमण करते हुए जगदीशपुर बढ़ने की योजना बनाई गई।

जगदीशपुर!

याद आते ही कुँवरसिंह की आँखें भर आयीं। उनकी पितृ-भू जगदीशपुर को अंग्रेजों ने तबाह कर दिया। पुश्तैनी मकान तोड़ डाले। प्यारा मंदिर भी ध्वंस कर दिया। इस अत्याचार का प्रतिशोध अवश्य लिया जायगा। जब तक इस कुँवरसिंह के शरीर में एक बूँद भी रक्त है, तब तक वह अंग्रेजों से लड़ेगा। देश की स्वाधीनता के लिए लड़ेगा। उसकी इन बूढ़ी भुजाओं में काफी ताकत है!

❀

निकल्सन को अपने घाव की कोई चिन्ता न थी। मामूली पट्टी से ही उन्होंने अपने को पर्याप्त सुरक्षित समझ लिया था। सबसे पहले कृष्णगंज की ओर अपनी सेना को बढ़ाया पर सहज ही कृष्णगंज हाथ आ गया। वहाँ एक भी सिपाही न था। हथियार और बारूद काफी संख्या में छोड़कर सिपाही चले गए थे। इसका रहस्य कुछ समझ में न आया। निकल्सन ने हडसन की ओर देखा।

हडसन मुस्कुरा रहा था। उसकी योजना ने अपना फल दिखलाया।

"इसमें क्या कुछ घायल हैं ?"—निकल्सन ने पूछा।

"जी नहीं !"

"तब ? सिपाही इस तरह क्यों चले गए ?"

" यहाँ हिन्दू सिपाही थे। आप अपना अभियान जारी रखें। सिपाहियों में मतभेद हो गया है। हिन्दू और मुसलमान का झगड़ा। इधर सिक्ख सैनिक आपके साथ हैं। बस ! उन्हें गुरु गोविंदसिंह के बेटों की याद दिला दीजिए। दिल्ली फतह है। काँटे से काँटा निकलता है।"

निकल्सन हडसन की बात सुन मुस्कुरा उठे।

"मजहब के नाम पर बग़ावत उठी और मजहब की आग में जला भी दी जायगी !"

अंग्रेजी सेना शाहजहानी हवेली की ओर बढ़ी। यहाँ सिपाहियों से मुकाबला करना पड़ा। दोनों ओर के मकानों और छज्जों से गोलियों की बौछार आने लगी, फिर भी अंग्रेजी सेना बढ़ती गई।

लाहौरी दरवाजे पर फिर अंग्रेजी सेना ने हमला किया, पर सिपाहियों के प्रबल आक्रमण के आगे अंग्रेजों को पीछे हटना पड़ा। दिल्ली में खलबली मची थी। चारों तरफ युद्ध चल रहा था। दिल्ली का निर्णय होने में अब विलम्ब न था।

✿

बेगम जीनतमहल की आँखों आँसू थे। विक्षिप्त की तरह बहादुरशाह अपने कक्ष में अपने-आप बड़बड़ा रहे थे। तीनों शाहजादे घबराए हुए अपनी माँ के पास गुम-सुम बैठे थे। बख्त खाँ के चेहरे पर चिन्ता की रेखायें थीं।

"सिपाही सुनते नहीं। इधर अधिकांश हिन्दू सिपाही मुसलमानों के खिलाफ होकर भाग रहे हैं। किशनगंज खाली कर ये चले गए।"

"कोशिश करो बख्त खाँ। कोशिश करो।"

"अब कुछ नहीं हो सकता। ऐन मौके पर यह हिन्दू मुसलमान का झगड़ा खड़ा हो गया है। साथ ही तमाम सिपाही बादशाह के नाम को कुछ भी नहीं समझते। उनका कहना है कि बादशाह अंग्रेजों के दोस्त हैं। उनके शाही महल में अंग्रेज छुपाकर रखे गये थे।"

"उफ़ !"

"मैं आपसे आखिरी बार मुलाकात करने आया हूँ !"—बखत खाँ बोला—"और अबकी बार मैं लड़ाई के मैदान में गया तो मरकर ही रहूँगा। जिन्दा उसी हालत में लौटूँगा, जब कि दिल्ली से अंग्रेजों को खदेड़ दिया जायगा।"

शाही महल तक तोपों और गोलियों की आवाज आ रही थी। बेगम जीनत-महल को विजय की आशा कम थी। क्या तूफान की तरह आती हुई इस अंग्रेजी फौज को रोका जा सकता है! अंग्रेजों को रोकना मुश्किल है। दिल्ली तबाह होगी और ये सब...

"बखत खाँ, हम लोगों का क्या होगा!"

"अल्लाह मालिक है, मलिका!"—बखत खाँ ने लंबी साँस लेकर कहा—"शायद अल्लाह को यही मंजूर है कि मुगलिया खानदान का चिराग हमेशा के लिए फ़ना हो जाय।"

"हाय! मेरे बेटे..."

"अल्लाह पर यकीन रखो, मलिका! इस जनम में नहीं तो अगली बार पैदा होने पर हम अंग्रेजों को इस मुल्क के भगाकर रहेंगे। यह खून बेकार नहीं जायगा। इसी तमन्ना के साथ मैं लड़ाई में शहीद होने जा रहा हूँ। अब से मैं गाज़ी हूँ।"—बखत खाँ उठ खड़ा हुआ।

बेगम ने अपने को सँभाला। दूर से तोपों की आवाज फिर सुनायी पड़ी। सिपाही लड़ रहे हैं। खूब लड़ रहे हैं, पर अलग होकर लड़ रहे हैं। एक साथ लड़ाई न होकर अब यह हिन्दू मुसलमान की अलग-अलग लड़ाई हो गई है। अब फैसला होकर ही रहेगा। दिल्ली का फैसला मुल्क का फैसला है।

"मैं बादशाह सलामत से भी आखिरी बार मिलने जा रहा हूँ। मिर्जा इलाही बक्स जैसा कहें, वैसा आप लोग करें। खुदा हाफिज़!"

बखत खाँ सिर झुकाकर चला गया।

बेगम जीनतमहल की आँखें बरसने लगीं। एक सुनहला सपना चूर होकर काला नाग बन डँसने आ रहा है। इस जिंदगी से मौत बेहतर है। मिर्जा इलाही बक्स भाग जाने की सलाह दे रहे हैं। इसका पूरा इंतजाम भी करने जा रहे हैं।

ओफ्ह ! कैसे दिन आ गये हैं। मुगलिया खानदान अपनी बाप-दादों की दिल्ली छोड़कर भागें !

आशा की एक किरण थी। बाहर भागकर दूसरे सूबों की ताकत से दिल्ली फिर फतह करने की, पर बादशाह...एक तो बुढ़ापा, दूसरे कमजोर दिमाग... काश ! आज बादशाह सलामत सिपाहियों के बीच जाकर अपना एक हाथ उठा देते तो...तो...

❀

बख्त खाँ ने अदब से सिर झुकाया। बोला—"बादशाह की खिदमत में बन्दा हाजिर है।"

"कौन बख्त खाँ ? तुम यहाँ क्यों आए हो ? जाओ ! निकल जाओ ! अकेले क्यों आए हो ? अंग्रेजों को लेकर आओ !"

"बादशाह सलामत ! आँखें खोलकर देखिए। आज आपके चारों तरफ कितनी ताकत बिखरी पड़ी है ! सिर्फ एक बार आप बाहर निकलिए। सिपाहियों के मन में जो शक है, वह आपके बाहर आते ही दूर हो जायगा। आपके एक इशारे पर तमाम अंग्रेज खत्म कर दिये जाँयगे ? अभी भी वक्त है !"

"वक्त ? कैसा वक्त ?"

"आपकी हुकूमत के लिए आखिरी वक्त है। अभी भी वक्त है, पर यह आखिरी है अंग्रेज शहर में आ गए हैं और शाही महल में पहुँचते उनको देर न लगेगी !"

"आने दो। यह दिल्ली उनकी ही है।"

"लेकिन आपका क्या होगा ?"

"मैं भाग जाऊँगा।"

"......"

"मिर्जा इलाहीबक्स मुझे यही सलाह दे गए हैं। मैं भाग जाऊँगा। तुम जाओ। मेरा...। मतलब नहीं।"

बख्त खाँ एकटक बादशाह की ओर देखता रह गया। यह अंग्रेजों की ताकत का नहीं, बल्कि किस्मत का ही खेल है वरना मुल्क का नक्शा ही बदल जाय... पर किस्मत का खेल...

बादशाह भागने की बात कर रहा है। बादशाह का समधी इलाहीबक्स जैसा डरपोक, वैसा ही बादशाह! इलाहीबक्स ने बादशाह को भी डरपोक बना दिया है। अंग्रेजों को फरिश्ता बतलाकर रखा है

दिल्ली की किस्मत ही खराब है, तो इसमें किसी का क्या जोर!

बख्त खाँ सिर झुकाकर चला गया।

❀

दोनों सेनापतियों ने कुशलतापूर्वक छिन्न सिपाही शक्ति पर जोर से आक्रमण किया। तोपों और संगीनों की भयानक मार के आगे सिपाही ठहर न सके। लाहौरी दरवाजा, जुमा मसजिद और अजमेरी दरवाजे पर अंग्रेजी कब्जा हो गया। मेजर रीड अपनी टुकड़ी के साथ शहर में घँस आए।

चारों तरफ से अंग्रेजी फौज शहर दिल्ली में एकदम प्रवेश पा गई। देखते-देखते युद्ध की आग में सारा शहर जल उठा। सड़कों, मकानों, सीढ़ियों और चप्पे-चप्पे में लड़ाई होने लगी। मुसलमानों ने मसजिदों में शरण ली। मसजिदों से हमले हुए। गोरी सेना ने मसजिदों को तोपों से उड़ा दिया।

सिक्ख और गोरखा पलटन ने हाहाकार मचा दिया। मुसलमानों पर सिक्ख प्रबल वेग से आक्रमण कर रहे थे। तेगबहादुर और गुरु गोविंदसिंह के नाम पर मुसलमानों के खिलाफ सिक्खों को भर दिया गया था। अंग्रेज सैन्याधिकारियों ने उन्हें मुसलमानों को कत्ल करने और लूट-पाट करने का स्पष्ट आदेश दे दिया था। उन्मत्त सिक्ख सैनिकों ने दिल्ली में तबाही ढा दी।

भगदड़, कत्ल, लूटमार का बाजार गर्म हो उठा। दिल्ली पर एक बार फिर एक नादिरशाह, एक तैमूरलंग का हमला हुआ। मकान जलने लगे। तोपों की गरजना और बंदूकों की कड़क के बीच खून के नाले, लाशों के ढेर सर्वत्र दृष्टिगत होने लगे। दिल्ली के नागरिकों, विद्रोही सिपाहियों के बीच पग-पग पर युद्ध होने लगा। सर्वत्र लोग लड़ रहे थे।

चाँदनी चौक तोपों की आवाज से थर्रा रहा था।

भागते, निहत्थे नागरिकों, बच्चों, औरतों को गोलियाँ मारी जा रही थीं। तलवार से काटा जा रहा था। अधिकांश नगरवासियों ने अपने परिवार की स्त्रियों को मार डाला और खुद लड़ते हुए मरने के लिए चले गए। बहुत सी औरतों ने अपनी इज्जत जाने के भय से कुँए में कूद-कूदकर मरना शुरू कर

दिया। कुएँ लाशों से भर गये। सारे नगर में यम का, मौत का राज हो गया। ताजे खू की गंध, जिंदा आदमियों के जलने की बू, लोगों का दारुण क्रंदन आकाश में गूँज उठा। सिक्खों, गोरखों सैनिकों का भीषण हत्याकांड, लूट-पाट जारी थी। यह लूट-पाट इस कदर मची कि अंग्रेज सेनापति निकल्सन के घाव की पट्टी टूट जाने और उनके फिर घायल हो जाने पर उन्हें अस्पताल पहुँचाने वाला भी कोई न रहा।

हडसन स्वयं एक दल टुकड़ी के साथ दनादन स्त्रियों और पुरुषों को मार रहे थे। शाही महल में कत्ल किए अंग्रेजों का वह पूर्ण प्रतिशोध लेने पर उतारू हो गए थे।

दिल्ली को राक्षसों के पैर रौंदे डाल रहे थे। अबोध बालिकाओं और स्त्रियों पर बलात्कार प्रारंभ हो गए। अंग्रेजों ने तड़फा-तड़फाकर उनके प्राण लेना शुरू कर दिए। संगीनों ने निर्दोष कन्याओं की देह के साथ राक्षसी खिलवाड़ किये। दिल्ली के इतिहास ने फिर नादिरशाही से भी बढ़कर दिन देखे।

सेनापति विलसन शाही महल की ओर बढ़ रहे थे। शाही महल पर अधिकार करने के लिए पग-पग पर युद्ध हो रहा था। एक एक खिड़की और दरवाजे से सिपाही बढ़ रहे थे। बंदूकों के अलावा जो भी वस्तु उनके हाथ आती, उससे ही आक्रमण हो रहा था पर अंग्रेजों का वेग रोके न रुक रहा था।

"खबरदार!"

एक औरत बिजली सी कड़की। उसके हाथ नंगी तलवार थी। अंग्रेजों पर टूट पड़ी और शाही महल में घुसते हुए अंग्रेजों को उसने गाजर-मूली की तरह काटना शुरू कर दिया। एक औरत को इस तरह युद्ध करते देख अंग्रेज भागे पर तभी सेनापति विलसन ने एक खंभे की ओट से उसे गोली मारकर गिरा दिया।

गोरे सैनिक फिर शाहीमहल में घुस गए।

❀

बेगम जीनतमहल के सामने अब भागने के अतिरिक्त और कोई रास्ता न। था क्षण-क्षण शाही महल में शोर बढ़ता जा रहा था। गोलियों की आवाज,

खंभे टूट गिरने के स्वर और घायल सिपाहियों का चीत्कार सुनायी पड़ रहा था। बेगम के लाख मना करने पर जौहरा न रुकी और अंग्रेजों पर हमला करने तलवार निकालकर वह दौड़ ही गई।

पर बेगम...

क्या कर सकती है वह ?

सहसा मिर्ज़ा इलाहीबक्स दिखलायी पड़ा। हाँफता हुआ वह दौड़ा आया।

"चलिए..."

"......"

"बादशाह सलामत कहाँ हैं ?"

"वह अपना कमरा बंद करके छुपे हैं !"

इलाहीबक्स ने दरवाजा खुलवाकर बादशाह को निकाला। तीनों शहजादे और बेगमों को साथ लेकर मिर्ज़ा इलाहीबक्स शाही महल के गुप्त रास्ते से भाग निकला। उसमें इतना साहस न था कि शाही खानदान के महलों से आदमियों को निकालकर अपने घर रख सके। अंग्रेजों से उसे बेहद डर लगता था।

बादशाह, बेगम और तीनों शहजादों को उसने हुमायूँ के मकबरे में छुपा दिया और जल्दी से जल्दी उन सबको वह दिल्ली से भगा देने का दिखाऊ इन्तजाम करने लगा।

हुमायूँ के मकबरे में जब शाही खानदान के लोगों को छुपाकर वह बाहर निकला, तो उसने देखा, दिल्ली एकदम तबाह है। शाही महल पर अंग्रेजी झंडा फहरा रहा है और अंग्रेज तोपें छोड़कर अपनी विजय की सूचना दे रहे हैं और अंग्रेजी बिगुल जीत की खुशी में बज रहा है। धत्तर धत्तर धत्तर धुत्त !!

❀

निकल्सन अस्वस्थ हो चारपायी पर थे। निरन्तर आक्रमण और सैन्य-संचालन के कारण एवं गोली की चोट से वे अशक्त पड़ गये थे। उनका शरीर काफी कमजोर पड़ गया था। डाक्टर निरन्तर उनकी देख-भाल कर रहे थे, पर वीर अंग्रेज की हालत गिरती ही जा रही थी।

हडसन से शाहीमहल पर अधिकार होने की सूचना पा उनके सूखे होंठों पर क्षीण मुस्कान आयी।

"मेरा कार्य समाप्त हुआ...जिस कार्य के लिए नियुक्त हुआ था, वह मैंने किया। पूरा हुआ...भगवान को लाख-लाख धन्यवाद..."

"......"

"आज ही कलकत्ता समाचार भेज दीजिए!"

"अवश्य!"—हडसन ने प्रसन्नता से अपनी आँखें नचाते हुए कहा—"कलकत्ता ही क्यों चारों ओर मैं यह खबर पहुँचाऊँगा। दिल्ली पर अंग्रेजी कब्जा होने का अर्थ है, सिपाहियों की आधी बगावत का ठंडा पड़ जाना! दिल्ली इस मुल्क की किल्ली है!"

"बाद...बादशाह...गिरफ्तार हुआ?"

"नहीं..."

"यह तो..."

"शाही महल में वह नहीं मिला। कहीं भागकर छुप गया है। दिल्ली से भागकर वह नहीं जा सकता। चारों तरफ घेरा पड़ा है। मैं उसे खोज निकालूँगा!"—हडसन ने अपने ओंठ काटे।

"बादशाह के साथ उसके और लोग..."

"तीन बेटे और बेगम हैं!"

"सबको गिरफ्तार करो।"

"जिंदा या मुर्दा!"

"हाँ!"

"बादशाह को तो मैं जिंदा ही पकड़कर लाना मंजूर करूँगा पर और को नहीं..."

सेनाध्यक्ष कुछ न बोले। पीड़ा के कारण उन्होंने अपनी आँखें बंदकर लीं। उन्हें काफी कमजोरी महसूस हो रही थी। साथ ही जी भी न जाने कैसा लग रहा था!

❀

दिल्ली में अंग्रेजों के आने के कारण यदि कोई सबसे ज्यादा खुश था तो वह था काना रज्जबअली। उसके पाँव तो खुशी के मारे जमीन पर पड़ ही न रहे

थे। बख्तखाँ से वह अपनी पुरानी दुश्मनी का बदला लेना चाहता था, पर न ले सका। बख्त खाँ की लाश हडसन ने मिट्टी का तेल छोड़कर फुँकवा दी। गायों को कत्ल कर जब रज्जब अली ने सड़क पर फेंका था, तो बख्तखाँ ने ऐसा करने वाले को फाँसी की सजा देने की घोषणा की थी।

रज्जब अली की इच्छा थी, बख्तखाँ को वह खुद अपने हाथ से फाँसी दे।

पूछे—"कहो खाँ साहब! आज किसे फाँसी लगी! गायें मैंने मारी थीं!"—और वह अट्टहास करना चाहता था।

मन की इच्छा पूरी न हो सकी, पर फिर भी रज्जब खुश था। अंग्रेज आ गए हैं। उसे ढेर सा इनाम मिलेगा। अंग्रेजी खिताब मिलेगा और यह भी संभव है कि आस-पास के कुछ गाँवों की जागीरदारी इनाम में मिल जाय! शहर दिल्ली का कोतवाल भी तो वह बनाया जा सकता है!

बादशाह कहाँ गया?

उसके खानदान के लोग कहाँ गये?

हडसन से खबर पाकर उनकी तलाश में वह कई जगह गया, पर कुछ भी पता न लगा। शाही खान-दान के लोग इतनी जल्दी भाग नहीं सकते। कहीं न कहीं छुपे होंगे। बेगम जीनतमहल! हये! बेगम!! अभी भी लाजबाब खूबसूरत है। क्या बूढ़े बादशाह के पल्ले पड़ी है। रज्जब अली के मन का कलुष जोर मारने लगा।

मिर्जा इलाहीबक्श बादशाह के समधी हैं। शायद इस बाबत उन्हें कुछ मालूम हो!

❀

मिर्जा इलाहीबख्श जनानखाने से बाहर निकलकर आए। असल में वह जनानखाने में कुछ आदमियों को छुपाकर उनसे बादशाह को दिल्ली से भगाने की योजना पर दिखाऊ विचार कर रहे थे। रज्जब अली को उन्होंने बैठाया। रज्जब अली पर कुछ-कुछ शक था क्योंकि हडसन के साथ वह उसे देख चुके थे।

"शाही महल तो गया!"—रज्जब अली बोला—"अंग्रेज काबिज़ हो गए!"

"हाँ।"—मिर्जा बोले—"सारा शहर मुर्दा हो गया है!"

"जो जैसा करता है, उसे वैसा भोगना पड़ता है।"—रज्जब अली ने हँसकर कहा—"बादशाह सलामत भी चोर की तरह छिप गए!"

"......"

"पर अंग्रेज चोर के बाप हैं। वे बादशाह को खोज निकालेंगे और उन्हें गोली मार दी जायगी।"

इलाही बक्श काँप उठे।

"इस वक्त बादशाह की गिरफ्तारी पर बहुत लंबा इनाम है!"—रज्जब अली बोला—"दिल्ली तो अब अंग्रेजों के हाथ से जाने से रही। बादशाह का अगर पता लगाया जाय तो यह इनाम मिल सकता है। आखिर बादशाह बचेंगे तो नहीं ही! फिर क्यों न फायदा उठाया जाय!"

"......"

"आप तो बादशाह के खास आदमी हैं!"—काने ने अपना तीर चलाया—"आपको तो कुछ मालूम होगा कि बादशाह इस वक्त कहाँ हैं?"

"मुझे...मुझे...मुझे...कु...कु...कुछ नहीं मालूम।"

रज्जब अली खिलखिलाकर हँस पड़ा!

"अरे! अगर कुछ मालूम हो तो बतला दो यार मिर्जा! लंबी रकम के साथ-साथ खिताब, ओहदा, जागीरदारी भी है। खुदा के फजल से हाथ आए इस नायाब मौके को क्यों जाने देते हो!"

मिर्जा इलाहीबक्श का चेहरा सफेद पड़ गया। वह भय से थर-थर काँप उठा। कहीं रज्जब अली को यह भेद मालूम तो नहीं हो गया और उसका भेद लेने आया है! मिर्जा इलाहीबक्स को आँखों के आगे फाँसी की तिकठी और तनी हुई बन्दूक झूल गई।

"इसमें घबड़ाने की क्या बात है, मिर्जा!"

"......"

"कुछ मालूम हो तो बतलाओ! माल चीरा जाय! बादशाहत तो गई! कँगाल रहने से फायदा?"

"......"

"बोलो...!"

"लेकिन...लेकिन..."

"तुम पर कोई खतरा नहीं आयेगा, इसकी पूरी जिम्मेदारी मेरी है और साथ ही साथ मैं तुम्हें इनाम में हिस्सा दूँगा। शेर मारा ही गया है। क्यों न तीस,मार शिकारियों में हम अपना नाम लिखा लें !"

"मुझे कुछ मालूम है !"

"कुछ कि पक्का ?"

"रजब तुम्हारे पाँव पकड़ता हूँ। मेरी जान बचा दो !"

रजब हँसकर बोला—"बेकार घबड़ाते हो मिर्जा ! बतला दो यार ! जिम्मा मेरा रहा !"

"बादशाह हुमायूँ के मकबरे में हैं !"

"सब लोग ?"

"हाँ !"

"......"

"वे भागने की तैयारी में हैं !"

"तुम रोक रखो। मैं तुम्हें मुबारकबाद देता हूँ इस बात के लिए। इसमें शक नहीं तुमने इस वक्त अक्लमन्दी से काम लिया है !"

"मेरी खैर तुम्हारे हाथ है !"—मिर्जा थर-थर काँप रहे थे।

"इसकी फिक्र न करो !"

हँसता हुआ रजब अली चला गया।

॥

हडसन कुछ गोरे सैनिकों के साथ हुमायूँ मकबरे पर जा धमका। आसपास के बचे हुए नागरिक भय त्रस्त हो गये पर बादशाह के मकबरे में होने की खबर पाते चँचल हुए और बादशाह की गिरफ्तारी का दृश्य देखने के लिए कुछ लोग साहसकर आ गए। दिल्ली के अन्तिम बादशाह की दुर्गति के स्मरण से बहुतों की आँखें भर आयीं।

हडसन बाहर रुक गये।

गोरे सैनिक संगीनें सँभालकर खड़े हो गए। पूरी दिल्ली में अब अंग्रेजों का

दबदबा था और अब किसी में चूँ करने का भी साहस न था ! सब दूर-दूर खड़े हो अंग्रेजों का तमाशा देखने लगे ।

हडसन के आदेशानुसार सबसे पहले कुछ सिक्ख सिपाहियों के साथ रजब अली मकबरे में गया । इधर-उधर देखता हुआ वह जा रहा था । कुछ कमरे बाद ही हुमायूँ की समाधि पर सिर रखे बादशाह बहादुरशाह 'जफर' दिखलायी पड़े । उनके कपड़े मैले और फटे थे । आँखों से आँसुओं की धार बह रही थी । पास ही बेगम जीनतमहल गुमसुम खड़ी थी ।

क्षण भर को रजब अली दिल्ली के आखिरी बादशाह की यह हालत देखकर स्तब्ध रह गया, पर दूसरे ही क्षण उसकी पैशाचिकता जाग उठी । वह मुस्कुराया । रजब अली को देखते ही बेगम चौंक पड़ी ।

"रजब...तुम..."

"......"

"तुम कहाँ थे ? क्या तुमने बाहर निकलने का पूरा इन्तजाम कर लिया । देखो, देखो अपने बादशाह की हालत देखो, रजब ! हाय ! जिस खानदान का सितारा आफताब की तरह आसमान पर चमकता था, आज उसीकी क्या हालत हालत है ! या खुदा !"—बेगम रो पड़ी !

"हाँ, बाहर जाने का पूरा इंतजाम है !"

"चलूँ ?"

"जरूर ! अंग्रेज कप्तान हडसन आपका इंतजार कर रहे हैं !"

"रजब !"

"हाँ बेगम !"

"रजब..."

रजब मुस्कुराया—"दिल्ली गई । बादशाह को भी जाना चाहिए । तुम्हारे लिये मैंने इंतजाम कर लिया है !"

"क्या...क्या..."

"तुम मेरे पास रहोगी ! बेगम...बहुत दिनों की तमन्ना..."

"कुत्ते !"—बेगम ने चिल्लाकर कहा—"कोई है ! इसे पकड़कर ले जाओ ! कमीने..."

रजब अट्टहास कर उठा—"अब कोई नहीं है। सीधे से मेरे साथ चलो! नहीं तो घसीटकर ले जाऊँगा!"

"कौन है? कौन है?"—बादशाह ने आँसुओं से भरा चेहरा ऊपर उठाया।

"मैं...रजब!"

"क्या करने आये हो?"

"आपको लेने!"

"क्यों?"

"अंग्रेज आपको बुलाते हैं!"

"नहीं, नहीं, मैं नहीं जाऊँगा। बादशाह को वे मार डालना चाहते हैं!"

"आपको मारा नहीं जायगा। आप चलिये!"

"नहीं जाऊँगा!"

"तो ये सिपाही आपको घसीटकर ले जायेंगे। होश में आ बुड्ढे!"

बहादुरशाह दीन, पागल की भाँति रजब अली के साथ चलने को तैयार हो गए। उनकी कमर में अभी भी दो तलवारें थीं। एक नादिरशाह की और एक बादशाह जहाँगीर की। बादशाह के पीछे-पीछे बेगम भी आयी। बेगम की हालत भी खराब थी। रजब बाहर आकर बोला—"आ गए वे सब!"

"कहाँ?"

"दरवाजे के पास खड़े हैं। बादशाह डरता है कि आप लोग उसे मार न डालें।"

"कह दो। हम मारेंगे नहीं। वो अपने हथियार हमें दे दें।"

रज्जब ने यह बात सुनायी। बादशाह ने दोनों तलवारें देदीं। हडसन ने उन तलवारों को अपने पास रखा। बादशाह के लिए बैलगाड़ी आकर खड़ी थी। बादशाह बाहर निकले। बूढ़ा, काँपता बादशाह, एकदम अशक्त, फटी हालत में और उसके बाद ही बेगम जीनतमहल...साथ में पन्द्रह साल का बेटा...देखनेवालों की आँखों से आँसू झर पड़े।

हाय! बादशाहे दिल्ली का आज यह दिन!

रज्जब अली बेगम की ओर देखता हुआ हँस रहा था।

गोरे सैनिक अपने पहरे में बैल गाड़ी आगे बढ़ा ले गये। बन्दी बादशाह अंग्रेज सैन्याधिकारियों के पास भेज दिया गया।

*

"बादशाह के तीन बेटे और हैं ?"

"हाँ !"—रज्जब बोला—"वे शायद और कहीं छुपे हैं। ले आऊँ क्या ?"

"हाँ !"—हडसन ने कहा—"बादशाह के खानदान का एक भी आदमी जिन्दा नहीं बचना चाहिए !"

"तीनों कम उम्र हैं और वे सब बेगुनाह हैं!"

"इससे क्या ? लाओ"

"जी !"

रज्जब अली फिर मकबरे में घुसा और छिपे हुए तीनों शाहजादों को ले आया। मिर्जा मुगल अपने बाप की गिरफ्तारी का समाचार पाकर क्रोध से आग हो गया।

"मैं अंग्रेज को मार डालूँगा !"—उसने तलवार खींच ली।

"जाओ शहजादे !"—रज्जब बोला—"कुत्ते की मौत मरोगे।"

सिक्ख सैनिकों के पहरे में तीनों शाहजादे आ गए। हडसन ने उनको भी एक बैलगाड़ी में बैठाया और ले चला। पीछे-पीछे लोगों की भीड़ चली। रास्ते में जिसने भी सुना उसने दौड़कर आगे खबर दी। शाहजादों की गिरफ्तारी देखने के लिए नागरिकों की भीड़ लग गई।

गाड़ी छावनी के पास आयी। भीड़ अब भी साथ थी।

"शाहजादे कुत्ते हैं !"—हडसन ने कहा।

सहसा न जाने हडसन के मन में क्या विचार आया अथवा उसने दिल्ली के रहे-सहे नागरिकों पर अपना और आतंक जमाना चाहा—एक झटके से उसने एक गोरे सैनिक की पिस्तौल छीन ली।

"कुत्तो !"

ठाँय !

मिर्जा मुगल गिर गया।

ठाँय !

मिर्जा ख्वाजे सुलतान चीख मारकर ढेर हो गया।

ठाँय !

मिर्जा अब्दुल बकर खून का फव्वारा छोड़ ठंडा पड़ गया।

नागरिक-दर्शकों में भगदड़ मच गई। सरे आम हडसन ने तीनों शाहजादों को गोली से उड़ा दिया। उसकी आँखों में खून भरा था। पिस्तौल फेंककर उसने कड़क कर हुक्म दिया।

"तीनों की लाशें कोतवाली में ले जाकर लटका दो। दिल्ली में रहने वाले देख और तमाम मुल्क के काले कुत्ते देखें कि गोरे आदमियों के खिलाफ भौंकने वालों की क्या हालत होती है!"

❀

"तुम क्या चाहते हो?"

"अंग्रेजों की मौत! एक भी अंग्रेज जिंदा न बचे!"

"लेकिन यह कैसे हो सकता है?"

"और जगहों पर कैसे हुआ है! अंग्रेजी राज उठने के दिन आ गए। अगर आप हमारा साथ नहीं देंगे, तो भी हम लोग उठेंगे ही। हम अपना धर्म नहीं दे सकते हैं। जान दे देंगे!"

हिन्दोस्तानी अफसर अपने मातहत सिपाही की बात सुनकर चुप रह गया। कुछ बोल न सका। परेड के मैदान में बिखरे सिपाही उत्तेजित नजर आ रहे थे। रोकना मुश्किल था। अफसर चुप-चाप रह गया।

परेड मैदान में सिपाहियों में खलबली मची थी। अपनी बंदूकों को एकदम तैयार किये वे सब आपस में जोर-जोर से बहसकर रहे थे। छोटे छोटे झुंडों में बँटी हुई चौंतीस नंबर की पलटन परेड मैदान में अनुशासनहीन खड़ी थी। परेड मैदान में सहसा कुछ घुड़सवार अंग्रेज आफीसर दिखलाई पड़े

"कलक्टर साहब आ गये!"

"कलक्टर साहब आ गये!"

"आने दो!"

कलक्टर को देखते ही सिपाहियों ने उन्हें घेर लिया। कलक्टर ने उनकी इस उत्तेजना का कारण पूछा और समझाने लगे पर सिपाहियों ने एक न सुनी।

एक ने ललकारकर कहा—"इस सफेद कुत्ते को गोली मार दो!"

"नहीं, नहीं!"

"साहब आप भाग जाइए।"

"भाग जाइए!"

कलक्टर सिपाहियों का बिगड़ा रुख देखकर चुप चाप लौट गया।

सिपाहियों की इस उत्तेजना की खबर शहर में पहुँचते ही यूरोपियनों, ईसाइयों ने भागना शुरू कर दिया। परेड मैदान से सिपाही उठे। छावनी जला दी। जेलखाना तोड़ दिया और उसके बाद तोपखाना उड़ा दिया। फिर चटगाँव खजाने पर हमला कर तीन लाख रुपये लूट लिए।

लूट-पाटकर सिपाही सीताकुंड की ओर बढ़ गए।

चटगाँव के कमिश्नर को इस बात की सूचना मिली। उन्होंने त्रिपुरा महाराज तथा अन्य दो बड़े जमींदारों को तत्काल आदेश दिया कि इन बागियों को मारें, गिरफ्तार करें। लूटा हुआ खजाना छीना जाय।

❀

"नहीं अब देर का काम नहीं। चटगाँव में उपद्रव हो गया यहाँ के सिपाहियों का कोई भरोसा नहीं!"

"लेकिन..."

"आप लोगों की किसी आपत्ति पर विचार नहीं किया जा सकता। सिपाहियों पर रत्ती भर विश्वास नहीं। उनके हथियार ले लेना बहुत जरूरी है।"

लेफ्टिनेंट ल्यूस अपनी बात पर एकदम दृढ़ रहे। तत्काल दो तोपें तैयार कर गोरी सेना खड़ी कर दी गई और तमाम सिपाहियों को फालेन का हुक्म बिगुल बजाकर दिया गया। सभी सिपाहियों ने इस आज्ञा का पालन किया।

लेफ्टिनेंट ल्यूस ने अपना हुक्म सुनाया।

सिपाहियों ने उनकी आज्ञा का पालन किया। चुप-चाप हथियार रख, वर्दियाँ देकर चले गए।

"लालबाग की भी पलटन देख ली जाय !"

लेफ्टिनेंट ल्यूस लालबाग गए। सिपाहियों को बुलाकर एक लाइन से खड़ा किया गया। ढाका में चटगाँव के विद्रोह का समाचार आ चुका था। अतएव सुरक्षा की दृष्टि से ढाका के तमाम सिपाहियों को निःशस्त्र करने का आदेश कलकत्ता से लेफ्निेंट ल्यूस को मिल चुका था।

"आप लोग हथियार रख दें। वर्दियाँ उतार दें।"—ल्यूस ने आर्डर दिया।

ठाँय !

सिपाही बंदूकें दागते हुए गोरी पलटन पर टूट पड़े। गोरी सेना घबड़ा गई पर उसने भी आक्रमण का जवाब दिया। परेड मैदान में लड़ाई होने लगी। सहसा तोपें छूटीं। सिपाही भाग खड़े हुए। इस लड़ाई में चालीस सिपाही मारे गये। गोरी सेना के भी साठ आदमी मारे गए।

भागे हुए सिपाही शहर में शोर करते और गोलियाँ चलाते गए। पूरे शहर में गड़बड़ी मच गई पर कोई मरा नहीं और न ही लूटपाट हुई।

भागे हुए सिपाही शहर के बाहर इकट्ठे हुए और उनका दल जलपाईगुड़ी की ओर चल पड़ा।

❀

बलवाइयों का जोर कम न हुआ था। ह्यूम परेशान थे। चारों तरफ विद्रोही सिपाही घूम रहे थे। गाँवों के जलने, लूटे जाने के समाचार प्रतिदिन आ रहे थे। अंग्रेज स्त्रियों और बच्चों की सुरक्षा से मुक्त हो गये थे। राजा लक्ष्मणसिंह ने अपने भाइयों के साथ इन लोगों को आगरा भेज दिया था। इस तरह अंग्रेज स्त्री और बच्चे आगरा सुरक्षित पहुँच गए पर इटावा के आस पास का विद्रोह न दब रहा था।

ह्यूम इन्हीं चिन्ताओं में विकल थे। चपरासी ने खबर दी राजा आए हैं।

"बैठाओ उन्हें ! अभी आया।"

ह्यूम अपना पाइप सुलगाकर आए। राजा लक्ष्मणसिंह ने उठकर उनका स्वागत किया। ह्यूम ने राजा का हाथ अपने हाथ में लेकर कुशल क्षेम पूछी।

"आपकी कृपा से सब आनंद है।"

"मुझे तो चिन्ताओं से अवकाश नहीं। रोज बागियों के ऊधम के समाचार आ रहे हैं।"

"असल बात यह है कि अंग्रेजी अमलदारी से लोग चिढ़ रहे हैं।"

"समझ में नहीं आता मैं क्या करूँ?"

"एक उपाय मैंने सोचा है!"—लक्ष्मणसिंह ने कहा—"और इसी संबंध में मैं आपसे मिलने आया हूँ। इस उपाय से विद्रोह अपने आप ठंडा हो सकता है!"

"कहिए!"

"असल में यह सारी लड़ाई अंग्रेजी अमलदारी के खिलाफ है। मेरे विचार से यदि आप कुछ समय तक के लिए हट जाँय और अपने स्थान पर कुछ विश्वासी व्यक्तियों को, हिन्दोस्तानियों को नियुक्त कर दें तो यह विद्रोह दब जायगा। कम से कम इस क्षेत्र का उपद्रव तो शान्त पड़ जायगा। जब चारों ओर की हालत सुधर जाय तो आप अपना शासन ले लीजिएगा।"

राजा लक्ष्मणसिंह की यह बात ह्यूम को भा गई।

"ठीक है। मुझे मंजूर है।"

"चारों वर्णों के लोग आप लगा दें। ब्राह्मण, क्षत्रीय, वैश्य, कायस्थ...क्या ख्याल है आपका?"

"हाँ!"

"जोरावरसिंह, जसवन्त राज, चौधरी गंगाप्रसाद, लाला लायकसिंह...ये चारों आपके अपने जाने-पहिचाने भी हैं। आप जानते ही हैं!"

"लाला लायक तो बूढ़ा है?"

"सँभाल लेगा।"

"ठीक है। मैं ऐसा ही करूँगा।"

दूसरे ही दिन ह्यूम ने इटावा को तहसीलों में बाँट दिया और चारों व्यक्तियों को अपनी-अपनी तहसीलों का शासक घोषित कर दिया।

❀

झाँसी के विद्रोह की खबर पाते ही लाला लायकसिंह ने अपनी तहसील के

सरकारी रुपयों का खजाना आगरा भेज दिया। तीसरे ही दिन बागी तहसील में घुस आए। तहसील के गुण्डे और लुटेरे लाला लायकसिंह के घर पर टूट पड़े। सिपाहियों के पास पकड़कर ले गए।

खजाना पूछा गया, पर लाला लायकसिंह ने न बतलाया। इस संबंध में कुछ भी कहने से इंकार कर दिया।

सिपाहियों ने लाला को गोली मार दी।

तहसील में लूटकर सिपाही आगे बढ़े। बहुत से लोग उनके साथ हो गए थे। ह्यूम की सोची हुई योजना भी नाकामयाब रही। तहसीलदारों को पकड़-पकड़कर मारा गया। घोड़ों से बाँधकर उन्हें घसीटा गया। इस प्रकार इटावा में चारों तरफ हुल्लड़ होती रही।

सिपाहियों ने आरा की ओर बढ़कर हमला करने का प्रयत्न किया। इस हमले में एक साधु भी उन सबका साथ दे रहा था, पर आगरा के पास आते ही अधिकांश सिपाही पकड़ लिए गये। कुछ भाग गए। सिपाहियों की यह हार साधु के कारण हुई।

यह साधु नहीं था। साधु वेश में राजा लक्ष्मणसिंह थे जो अंग्रेजों की मदद कर रहे थे।

इस षड्यंत्र से सिपाहियों की शक्ति छिन्न हो गई। आस-पास के क्षेत्रों में ठगों, लुटेरों से मिलकर असंगठित रूप से उनके छिट-पुट उपद्रव होने लगे। आगरा शान्त और निरुद्वेग रहा। शहर में सनसनी अवश्य थी। बागी सिपाहियों के आने की अफवाहें रह-रहकर उड़ती थीं, पर आगरा पर प्रत्यक्ष आक्रमण नहीं हो रहा था। आस-पास के क्षेत्र में बागियों के छिट-पुट उपद्रव ही थे।

कोतवाली में तीनों शाहजादों की लाशें लटक रही थीं। लाशें फूल गई थीं। और उनसे बदबू आ रही थी। नगरवासी आते और दूर-दूर से देख आँसू बहा चले जाते। सारी दिल्ली अंग्रेजों के इस कर्म से आतंक से भर गई थी। दिन में भी शहर श्मशान सा मालूम पड़ता। बहुत सी लाशें शहर की नहरों और यमुना में बहा दी गई थीं। फिर भी लाशें नालियों और मोरियों में अटकी सड़ रही थीं।

दीवारों, सड़कों पर रक्त सूखकर जम गया था। दिन में भी गिद्ध आकाश में मँडराते दृष्टिगत होते। दिल्ली मुर्दों की नगरी हो गई थी। स्त्रियाँ और बच्चे घर से बाहर ही न निकलते थे। दिल्ली के हर घर में, हर परिवार में कोई न कोई किसी के मारे जाने से दुःख था। भय सर्वत्र था। दिन में चाहे जहाँ अंग्रेजी सेना दिखलायी पड़ जाती। सन्देह में भी बहुत से लोगों की गिरफ्तारियाँ हो रहीं थीं।

हडसन की नाक के बाल रजब अली का शहर में बड़ा दबदबा था। कानें के दिन आ गए थे। गिरफ्तार कराने की धमकी देकर वह लोगों से रुपया ऐंठता और उनकी बहू-बेटियों को बुलाकर भ्रष्ट करता।

शहजादों की जब बदबू करती हुई लाशें सड़ने लगीं तो हटा दी गईं और रजब अली एक बैलगाड़ी में रखकर उनको यमुना में फेंक आया।

सेनापति निकल्सन अच्छे होते नजर न आ रहे थे। उनकी हालत दिन पर दिन गिरती जा रही थी। सेनापति विलसन भी अस्वस्थ हो गए और छुट्टी लेकर शिमला चले गए।

दिल्ली का शासन भार प्रत्यक्ष रूप से हडसन ने सँभाला। बादशाह, बेगम को दो दिन छावनी में रख शाही महल के एक कमरे में कैदकर दिया और चारों तरफ सख्त पहरा बैठ गया। बादशाह को साधारण भोजन-पानी दिया जाने लगा। कमरे से बाहर आने की इजाजत बिलकुल न थी।

एक छोटे से तंग कमरे में बादशाह और बेगम कैद थे। बादशाह के आँसू न थमते और सिसकता हुआ वह फारसी के शेर बनाता, गम भुलाने की कोशिश करता।

दिल्ली की गोरी पलटन में शोक छा गया।

अंग्रेजी झंडा आधा झुका दिया गया।

और बड़े धूमधाम से एक शव-यात्रा निकली। सैनिक सम्मान के साथ उस शव को दफन किया गया।

सेनापति निकल्सन का देहान्त हो गया। दिल्ली फतह के समाचार के साथ साथ यह समाचार भी चारों ओर भेज दिया गया। शोक और हर्ष की लहर चारों तरफ दौड़ गई।

दिल्ली शान्त थी, फिर भी आस-पास के क्षेत्र में बागी सिपाही भाग गये थे। अधिकांश सिपाही मारे गए पर बचे हुए इधर-उधर भाग गए। शिमला जाने से पहिले अपने सहायक कर्नल थिग्रेड को साढ़े सात सौ गोरे, दो हजार गोरखों और सैनिकों तथा तोपों के साथ सेनापति बनाकर उन्होंने आसपास के क्षेत्रों में बढ़कर शान्ति स्थापना के लिए रवाना कर दिया था।

चौबीस सितम्बर अठारह सौ सत्तावन के प्रातः काल यह सेना दिल्ली के आस-पास तथा आवश्यक क्षेत्रों में अंग्रेजी अमलदारी कायम करने के लिए सेनापति थिग्रेड के नेतृत्व में चली। अंग्रेजी झंडा लहरा रहा था और युद्ध का डंका बजता जा रहा था।

दिल्ली और आसपास के गाँव श्मशान हो गए थे। घर मकान खंडहर हो गए थे। जगह-जगह मुर्दे ही दिखलायी पड़ते थे। कहीं आदमी की शक्ल दृष्टिगत न होती थी। मुर्दों के सड़ने की बू हर जगह से आ रही थी। चील कौवे लाशें नोंच रहे थे और कुत्ते भी बच्चों की लाशें नोंचते दिखलायी पड़ रहे थे। दिल्ली के आस-पास की यह हालत देख गोरे सैनिक और उनके साथी भी दंग रह गए।

श्मशान के-से इस दृश्य को पारकर थिग्रेड की सेना गाजीउद्दीन आयी।

यहाँ कुछ सिपाही थे।

अंग्रेजी सेना की खबर पाकर वे भाग गए। अपने रास्ते के तमाम समाचारों को प्राप्त करते हुए सेनापति थिग्रेड बढ़े जा रहे थे।

खबर लगी कि बुलन्दशहर में सिपाही इकट्ठा हैं। मिस्टर लायल डर के मारे दिल्ली के रास्ते भागे आ रहे थे। अनेक कष्ट भोगने के उपरान्त वे थिग्रेड से मिले। उनके साथ थिग्रेड बुलन्दशहर की ओर चल पड़े। उन्होंने अपनी रफ्तार तेज की। बुलन्दशहर के विषय में लायल ने जो कुछ भी बतलाया, वह चिन्ताजनक था। सेनापति थिग्रेड शीघ्रातिशीघ्र बुलन्दशहर धावाकर सिपाहियों को नेस्तनाबूद कर देना चाहते थे।

❀

नाना साहब और अजीमुल्ला के हर्ष का ठिकाना न रहा। तात्या टोपे सिपाहियों

की एक बड़ी पलटन और तोपों के साथ जंगल में आया। सारा वन-प्रदेश नाना साहब की जय-जयकार से गूँज उठा। नाना घोड़े पर बैठे और उन्होंने सिपाहियों की सलामी स्वीकार की।

परास्त हृदयों में एक बार पुनः नया जीवन आया। नाना साहब की रगों का खून फिर फड़का। तात्या टोपे की संगठन शक्ति और कार्य क्षमता से वे अत्यधिक प्रभावित हुए। इसलिए तात्या टोपे को ही उन्होंने इस सेना का प्रधान सेनापति घोषित किया।

तात्या टोपे रात दिन भागा-दौड़ा। ग्वालियर, कालपी, झाँसी तक उसने दौड़ की। वह आदमी नहीं, आदमी के रूप में तूफान था और सचमुच उसने आस-पास बिखरे हुए सिपाहियों को एक किया। भागते, दम तोड़ते, लूट-खसोट करते सिपाहियों को रोका और उन्हें संगठित रूप से आक्रमण करने के लिए इकट्ठा किया।

कानपुर पर पुनः अपना अधिकार करने की घोषणा तात्या टोपे ने की।

कानपुर के सभी सैन्याधिकारी लखनऊ जा चुके थे। कानपुर गोरी सैनिक शक्ति से प्रायः शून्य ही था।

सिपाहियों, तोपों के साथ तात्या टोपे कानपुर की ओर बढ़ा।

दिल्ली पतन का समाचार पाकर तात्या का मन दुःखित हुआ, पर उसने हार नहीं मानी। न ही पाँव पीछे हटाए। पुरुषार्थी कभी हारना नहीं जानता। अपनी पराजय को भी वह जय समझता है। रण-डंका बजाता हुआ, पेशवा-झंडा फहराए, तात्या टोपे कानपुर विजय के लिए बढ़ा जा रहा था।

हिन्दोस्तान के सिपाही बार-बार देश की आजादी के लिए जूझ रहे थे। बार बार मात खाकर भी वे उठ रहे थे। लगता था कि प्राण रहते कोई भी अंग्रेजी अमलदारी में जिंदा रहना नहीं चाहता। भाग्य चाहे साथ दे, न दे। एक बार जब यह विद्रोह का झंडा खड़ा हुआ है, तो खड़ा ही रहेगा। जब तक एक भी बागी जिन्दा है, लड़ाई होगी। अंग्रेजों से बराबर युद्ध होगा।

कानपुर के निकट लखनऊ के समाचार पाकर तात्या टोपे बड़ा प्रसन्न हुआ।

''जनरल आउट्रम रेजीडेंसी में घिरे हैं। अभी भी आधा लखनऊ बागियों के

हाथ में हैं। मौलवी अहमदुल्ला, मम्मू खाँ वगैरह लड़ रहे हैं। रोज मुकाबला हो रहा है।"

"......"

"लखनऊ की मदद के लिए सेनापति काम्पवेल भी रवाना हो गए हैं। कानपुर से गये सेनापति भारी हानि उठाकर वहाँ घिरे हुए हैं!"

"शाबास!"—तात्या टोपे ने ऐलान किया—"कानपुर पर अधिकार कर हम जल्दी ही लखनऊ की ओर अपने साथियों की मदद वास्ते बढ़ेंगे। अगर हम लोग लखनऊ पहुँच गये तो हमें दुनिया की कोई ताकत इस सूबे से हटा नहीं सकती और तब दिल्ली हमारी है!"

परास्त तात्या टोपे ने देश का नया नक्शा देखा। एक बार फिर हिन्दोस्तान का सितारा बुलंद होने जा रहा है।

जयघोष के साथ उसने कानपुर पर हमला कर दिया।

❀

सेनापति विण्ढम की सेना चौराहे पर रुक गई।

बायीं ओर मालघर जाने वाले रास्ते पर सिपाही इकट्ठे थे। तोप छोड़कर उन लोगों ने अंग्रेजी सेना से युद्ध करने की घोषणा की।

सेनापति विण्ढम ने अंग्रेज सवारों और गोलंदाज टुकड़ी को आगे बढ़ाया।

सिपाही एकदम तैयार थे। उनकी स्वाधीनता का भगवा-झंडा फहरा रहा था। गोलियों की वर्षा के बीच युद्ध शुरू हो गया। बड़ी तेजी के साथ सिपाही गोरी सेना पर टूट पड़े। गोलदाजों और घुड़सवार गोरों पर जोर का हमला हुआ। जयघोष के साथ बिना किसी सेनापति के नेतृत्व में ही सिपाही ऐसे टूटे कि घुड़सवारों की संगीनें काम न दे सकीं और उनमें भगदड़ मच गई।

लाशें बिछाते, लड़ते-मरते, घायल होते, जयघोष करते सिपाही गोलंदाज टुकड़ी पर टूट पड़े यह स्थिति देख सेनापति विण्ढम दंग रह गए। तोपें हाथ से जाती दिखीं। मुट्ठी भर सिपाहियों को रोकने के लिए खुद आगे बढ़े। गोरखों और सिक्खों को आगे बढ़ना पड़ा।

अंग्रेजों की आधीनता में रहने वाली यह टुकड़ी सागर की लहरों की भाँति सिपाहियों पर टूट पड़ी। अब सिपाहियों के पैर उखड़े। काफी संख्या में सिपाही मारे गए। बहुत थोड़े बचे सिपाही भाग खड़े हुए। विजय सेनापति थिग्रेड के हाथ रही।

❀

घिर जाने के अतिरिक्त जनरल आउट्रम के पास और कोई रास्ता न था। रेजीडेंसी में इस प्रकार घिर जाने से वे अत्यधिक चिन्तित हुए। अगर इस स्थिति की सूचना सहायक सेनाओं को अथवा आसपास के शहरों के अंग्रेज सेनानायकों को नहीं दी जाती है और उनसे तत्काल सहायता करने का अनुरोध नहीं किया जाता है, तो सिपाहियों की बढ़ती हुई शक्ति के आगे उन्हें खत्म हो जाना पड़ेगा।

सिपाहियों के आक्रमण जारी थे। पूरा लखनऊ युद्धरत था। लगातार रेजीडेंसी पर हमले हो रहे थे। अंग्रेज बराबर उन आक्रमणों का मुकाबला कर रहे थे। विद्रोही सिपाही रेजीडेंसी की दीवार के पास सुरंग खोदकर रेजीडेंसी उड़ा देने के फेर में थे। सुरंग खोदी जा रही थी और उस में बारूद भरकर रेजीडेंसी का घेरा तोड़ डालने की तैयारियाँ जोर-शोर से चल रही थीं। घिरे हुए सेनापति आउट्रम की परीशानियाँ बढ़ती जा रही थीं।

समाचार भेजने का भी कोई साधन न था। सिपाहियों के घेरे से बचकर किसी दूत का निकल भागना बहुत मुश्किल था। फिर भी समाचार भेजना अत्यावश्यक था। जनरल आउट्रम ने अपनी यह परीशानी अपने साथियों पर व्यक्त की। अन्ततः कावोना नाम का एक गोरा आदमी इस काम के लिए तैयार हो गया।

"मैं जाऊँगा साहब!"

"कैसे? तुम तो सहज ही पकड़ लिए जाओगे!"

"मैं कोशिश करूँगा! आप ग्रीक में पत्र लिखिए ताकि मेरे पकड़े जाने पर सिपाही उसका मर्म न समझ सकें और उससे कोई लाभ न उठा सकें!"

जनरल आउट्रम ने उसकी बात मंजूर कर ली।

कावोना जाने की तैयारियाँ करने लगा। तेल में हलका काला रँग मिलाकर

उसने अपने गाल पर पट्टियाँ बाँध लीं। इस वेश में जब वह आउट्रम के सामने गया तो आउट्रम भी उसे पहिचान न सके।

उसका स्वर समझ ही उन्होंने उसे पहिचाना। हँस पड़े—"वाह! खूब! क्या वेश बनाया है, पर गाल पर पट्टियाँ कैसी?"

"यही तो बचाव रहेगा!" कावोना ने कहा—"मैं इशारे से बात करूँगा कि यहाँ चोट लग जाने से बोल नहीं सकता अन्यथा मेरी आवाज से क्या वे मुझे पहिचान नहीं सकते!"

"शाबास!"

कावोना की इस बुद्धि को देखकर आउट्रम को विश्वास हो गया कि वह सिपाहियों के घेरे से निकलकर उनका सन्देशा ले जाने में सफल होगा!

कावोना जनरल आउट्रम का पत्र लेकर चल पड़ा। रेजीडेंसी से निकलते ही वह सिपाहियों की भीड़ में मिल गया और रेजीडेंसी पर होने वाले आक्रमण में भी उसने थोड़ी देर तक भाग लिया। उसके इस कार्य के कारण इर्द-गिर्द के सिपाही उसे तनिक भी न भाँप सके।

"ए, तुमको चोट लग गई है, अब हटो!"

कावोना ने संकेत से कहा, अभी वह और लड़ेगा।

"अरे! आरामकर। कल लड़ना घसकट्टे। साले कितने रोज से नहाया नहीं, जो तेरी देह महकती है!"

कावोना चुपचाप खिसक गया।

लखनऊ शहर की हालत देखकर वह दंग रह गया। हर जगह सिपाही, तोपें और हथियार, सर्वत्र अंग्रेजों के प्रति रोष और युद्ध के लिए अपार उत्साह! सिपाहियों की इस स्थिति से कावोना का मन काँप गया। लखनऊ पर मामूली ताकत से कब्जा नहीं हो सकता। लखनऊ पर कब्जा करने के लिए काफी अंग्रेजी ताकत लगेगी।

*

अंग्रेजी पलटन ने मालघर पर हमला किया। बादशाह के नाम पर बैठा हुआ मालघर का शासक वालिद खाँ भाग गया। मुट्ठी भर सिपाही मालघर के मिट्टी के किले में मोर्चाबन्दी कर भारी अंग्रेजी फौज का मुकाबला करने लगे।

सेनापति थिग्रेड को सिपाहियों के इस उत्साह पर हँसी आयी। उन्होंने आत्म-समर्पण करने का अवसर उन सिपाहियों को दिया, पर सिपाहियों ने आत्म-समर्पण की अपेक्षा लड़ते हुए मरना पसन्द किया।

किले के पास सुरंग खोदी गई।

बारूद भरी गई।

रात ग्यारह बजे आग लगा दी गई।

जोर के धड़ाके के साथ किले की दीवार ढह गई। अंग्रेजी पलटन घुस गई और तमाम सिपाहियों को घंटे भर में मार डाला गया। एक सिपाही भी जिन्दा न पकड़ा जा सका। सब लड़ते-लड़ते मर गये।

प्रातःकाल सेनापति थिग्रेड बुलन्दशहर आ गए।

मिस्टर लायल के हाथों बुलन्दशहर का शासन सौंप दिया गया। मेरठ से सहायता के लिए गोरे अफसरों की आधीनता में सैनिक आ गए। बुलन्दशहर से ही रुहेलखण्ड की सीमा थी। शहर के पश्चिम रुहेलखण्ड का बड़ा सूबा था।

सूबे पर विद्रोहियों का ही अधिकार था। इनके आक्रमण से बुलन्दशहर की रक्षा करने का भार मेरठ से आयी सेना पर छोड़कर सेनापति थिग्रेड आगे बढ़े। रुहेलखण्ड की सिपाही-शक्ति के समक्ष उन्होंने अभी आक्रमण करना ठीक न समझा और खुर्जा की ओर बढ़ गए।

८३

दिल्ली पतन का समाचार आग की तरह चारों ओर फैला। बादशाह की गिरफ्तारी और शाहजादों की सरे-आम हत्या का समाचार, जहाँ कहीं भी सिपाहियों को मिला, उनका जोश ठंडा पड़ने लगा और गोरी सेना के प्रभुत्व की धाक बैठने लगी।

दिल्ली-पतन के समाचारों से अंग्रेजों के मन को बड़ा बल मिला। अब उन्हें इस बात की पूर्ण आशा हो गई कि देशव्यापी विद्रोह का शीघ्र अन्त होकर रहेगा। कलकत्ता में बैठे लार्ड कैनिंग ने दिल्ली के इस समाचार को पाकर सन्तोष की साँस ली। चारों ओर सैन्याधिकारियों को आदेश प्रसारित किये गये कि अब पूरी शक्ति के साथ वे अपने-अपने क्षेत्र में बागियों का दमन करें।

दिल्ली विजय अंग्रेजों के लिए किसी वरदान से कम न थी। हारे, थके गोरे सैनिक और प्राणों की रक्षा में चिन्तित उनके आधीन सिपाहियों में नया जोश आया। जगह-जगह गोरी पलटन के गोरे आगे बढ़े और बागियों को कुचला जाने लगा। शान्ति-स्थापन का कार्य तेजी से प्रारम्भ हो गया।

दिल्ली से भागे सिपाही अपनी जान बचाकर इधर-उधर भागने लगे। उनमें से बहुत से लोग मथुरा और मैनपुरी आ गए। छिट-फूट लूटमार या फिर चुप-चाप अपने-अपने गाँव लौट जाने के अतिरिक्त उनके पास कोई रास्ता न था। कुँवरसिंह, झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई, तात्या टोपे और लखनऊ के सिपाहियों का ही झंडा अंग्रेजों के खिलाफ लहरा रहा था।

इनके भी दमन के लिए लार्ड कैनिंग कलकत्ता से योजनानुसार आदेश भेजने लगे।

ॐ

कावोना से समाचार पाते ही प्रधान सेनापति तेजी के साथ बढ़े। आते ही उन्होंने आलमबाग और दिलकुशा के बीच खड़े जलालाबाग के मिट्टी के किले पर अपना अधिकार कर लिया। यह तो कावोना के लिए सौभाग्य की बात थी कि अधिक यात्रा नहीं करना पड़ी और प्रधान सेनापति काम्पबेल उसे लखनऊ के रास्ते ही मिल गए।

दूसरे ही दिन इनकी सेना दिल कुशाबाग, मार्टिनिंटयन कालेज पर अपना अधिकार करती हुई सिकंदराबाद की ओर बढ़ी।

सहायक अंग्रेजी सेना के आने की खबर से सिपाहियों पर बिजली सी गिरी। तमाम सिपाही दौड़ पड़े। सिकन्दराबाग में अंग्रेजी सेना पर आक्रमण कर दिया। जमकर लड़ाई होने लगी। सिपाहियों की गोलो-वर्षा के आगे अंग्रेजों का टिकना मुश्किल हो गया।

यह हालत देख प्रधान सेनापति ने गोरखों और सिक्खों को आगे बढ़ाया। बड़ी वीरता के साथ लड़ते-मरते सिक्खों ने सिपाहियों को पीछे हटाना शुरू कर दिया। सिकन्दराबाग पर कब्जा करने के लिए दोनों पक्ष प्राण छोड़कर लड़ने लगे। घोड़े पर सवार मम्मू खाँ और मौलवी अहमदुल्ला सिपाहियों को ललकार रहे थे।

"बेगम हजरत महल..."

"जिंदाबाद !"

"नबाब बिजिस कादिर !"

"जिंदाबाद !"

रह-रहकर गगन गूँज उठता। सिपाहियों की इस वीरता के आगे प्रधान सेनापति भी घबड़ा गए। खुद मैदान में आए और सिक्खों गोरखों को ललकार कर बन्दूक हाथ ले मैदान में कूदे। पलटन नए जोश में आयी। युद्ध का पाँसा पलटा।

सिपाही पीछे हटने लगे।

अंग्रेजी पलटन भारी क्षति उठाकर आगे बढ़ने लगी। सिपाही बाग में घुस गए और लोहे का फाटक बन्द होने आया।

"मारो...मारो..."

"फाटक बंद न हो !"

सिपाही पूरी ताकत के साथ फाटक बंद कर रहे थे। चूँ चर्र ! चूँ चर्र !!

मुबारक खाँ नामक एक मुसलमान सिपाही दौड़ा और फाटक बंद होने ही वाला था कि उसने अपना एक हाथ अंदर डाल दिया।

"खच्च !"

अंदर के सिपाहियों ने उसका हाथ काट दिया। मुबारक जरा भी न घबराया और उसने दूसरा हाथ डाल दिया। वह हाथ कटने के पहिले ही पचीसों बंदूकें फँसा दी गईं। दूसरा हाथ भी कट जाने के कारण मुबारक लुढ़क गया पर फाटक बंद न हो सका।

फाटक ठेल दिया गया।

ब्रिटिश वाहिनी बाग में घुस गयी। सर कालविन कैम्पबेल ने विजय का झंडा फहराया। उनके चेहरे पर चिन्ता की तीव्र रेखाएँ स्पष्ट थीं। लार्ड कैनिंग की चिट्ठियों के कारण वे प्रधान सेनापति होकर सत्ताइस अक्तूबर को रवाना हुए। दिन-रात घोड़ा गाड़ी से यात्राकर इलाहाबाद आए और तब सेना लेकर लखनऊ की ओर बढ़े। इतनी दूर तक की इस यात्रा में उन्होंने कभी भी यह कल्पना न

की थी कि एक दिन उनके भी दाँत इस तरह खट्टे होंगे। सिपाहियों की बिना नेतृत्व की वीरता ने उनके छक्के छुड़ा दिए।

❀

आहट सुन बेगम जीनतमहल उठ खड़ी हुईं। देखा। सामने था—रज्जब अली। मुस्कुरा रहा था। बेगम उसकी ओर देखती रह गईं। रज्जब अली उन्हें आदमी नहीं, बल्कि फन काढ़े काला नाग दिखलायी पड़ा, जो डँसने को तैयार है। वह चुप रहीं।

रज्जब अली ने मुस्कुराकर कहा—"कोई तकलीफ तो नहीं बेगम?"

"......"

"बोलो!"

जीनतमहल की आँखों से सहसा आँसू झरझरा पड़े। सिसकती हुई रुँधे गले से बोलीं—"रज्जब अली, बादशाह की हालत पर कुछ तो रहम कर! देख इस तंग कमरे में उनकी क्या हालत हुई जा रही है! बादशाह का किसी को इतना भी ख्याल नहीं। आज मुल्क का बादशाह पच्चीस कदम के कमरे के लिए भी मुँहताज़ हो गया। अरे! रज्जब अली, तूने भी तो हम लोगों का नमक खाया है!"

"हाँ!"

"इतना भी करम तू नहीं कर सकता! देख! देख! देख! अपने इस बादशाह को देख! आज रो-रोकर बादशाह की क्या हालत हुई जा रही है! अपने तीनों बेटों के लिए इस मुल्क का बादशाह छाती पीट-पीटकर रो रहा है! हाय! बादशाह पागल होते जा रहे हैं। रहम रहम-रज्जब अली! मैं तेरे आगे बादशाह के लिए रहम का दामन फैलाती हूँ! बादशाह के लिए!"

"बादशाह अंग्रेजों के बंदी हैं। उन पर बाकायदा मुकदमा चलेगा।"

"इस तरह तड़फा-तड़फाकर बादशाह को मारने से अच्छा तो यह है कि उसे फाँसी दे दो, कुत्तो!"

"तुझे बादशाह से, बूढ़े से इतनी मुहब्बत है!"

"......"

"अगर तू मेरी बात मान, तो मैं तुझे आजाद कर दूँ और बादशाह के आराम का भी इंतजार कर दूँ।"

"......"

"कहूँ ?"

"कह..."

"तू मुझसे निकाहकर। अपना ये इरादा तू हडसन पर भी जतला दे। बोल, मंजूर हो तो कहूँ सब !"

"रजब !"

"अरे ! इस बूढ़े के फेर में क्या पड़ी है ! मेरी गोद मे आ। देख जल्दी ही मैं शहर दिल्ली का कोतवाल बनने वाला हूँ !"

"अच्छा ! हडसन को आने दो।"

रजब अली खुशी से फूला न समाया। उसके पाँव धरती से उठ गए। अपने से बड़ा भाग्यवान उसे कोई और नजर न आया। खुशी-खुशी वह चला गया।

❀

दरवाजा फिर खुला।

इस बार हडसन सामने थे। बादशाह की बीमारी की खबर पाकर वह डाक्टर लेकर आया था। डाक्टर ने बादशाह को देखा। दवा वगैरह दी। तब तक हडसन चुपचाप खड़ा बादशाह की ओर देखता रहा। बेगम बादशाह का सिर अपनी गोद में रखे सिसक रही थी। बादशाह की आँखें बंद थीं और वे बड़बड़ा रहे थे।

बादशाह की देख-भालकर डाक्टर वापस जाने लगा। हडसन भी वापस जाने के लिए मुड़े।

"सुनिए !"

"....."

हडसन रुक गया। उसने बेगम की ओर घूरकर देखा। क्या फिर बादशाह के लिए वह कुछ सहूलियतों की माँगकर रही है ? यदि अबकी बार ऐसा कहेगी तो बुरी तरह फटकार दिया जायगा। बेगम को हडसन का एहसानमंद होना चाहिए कि उसके शाहजादों की तरह उसने बादशाह को गोली नहीं मारी। अन्यथा हडसन का तो यह विचार था कि बादशाह को गोली मार उसके शरीर के टुकड़े कर कुत्तों के आगे फेंक दिए जाँय और दिल्ली की तमाम रियाया यह नजारा देखे !

कलकत्ते से गवर्नर जनरल की आज्ञा के आगे हडसन विवश था—जिसमें कहा गया था कि बादशाह को अभी सिर्फ बंदी बनाकर रखो। उसे अगला हुक्म मिलने तक किसी प्रकार का कष्ट न हो।

"क्या है?"

"......"

"बोलो।"

"क्या तेरे राज में यही होता है! जिस दिन हमारा हुकूमत थी, क्या उस दिन भी हम लोगों ने तुम लोगों के साथ ऐसा कमीना बरताव किया था?"

"तुम्हारा मकसद क्या है?"

"तेरी औरत की इज्जत अगर कोई तेरे गिरफ्तार हो जाने पर ले तो...?"

"खामोश!"

बेगम जीनतमहल क्रोध से थर-थर काँपती हुई उठ खड़ी हुई।

"हुँ। खामोश! जानता है, तेरा काना कुत्ता रजब अली मुझसे क्या कहता है?"

"......"

"सुनेगा?

"क्या?"

"मुझसे निकाह करने की बात करता है। थू!"

हडसन के दिमाग में बिजली कौंध गई। वह मुस्कुरा उठा—"क्या कहता है?"

"निकाह की बात करता है?"

"हाँ!"

"अच्छा! उसकी ये जुर्रत! मैं इसकी सजा दूँगा उसे!"—हडसन चला गया।

&

हडसन ने अपने सेनाध्यक्ष को खबर की कि रज्जब अली बेगम के साथ छेड़खानी करता है। हडसन की इस बात की पुष्टि सैन्याधिकारियों ने स्वयं बेगम

से मिलकर की। बेगम ने साफ कह दिया। हडसन की चाल काम कर गई। हडसन रज्जब अली से अपना काम ले चुका था। अब उसकी कोई जरूरत न थी और दूसरे जो आदमी जिसका नमक खाकर हरामीपन कर सकता है, वह अंग्रेजों का भी कब हो सकता है? हडसन का षड्यंत्र सफल हुआ।

रज्जब अली सैनिक अदालत के सामने पेश हुआ। अदालत के सामने आते ही रज्जब के होश उड़ गये थे।

"तुमने बेगम के साथ छेड़खानी की?"

"जी...जी...जी...न...न...न...नहीं!"

"इस अदालत के सामने इस बात के सुबूत हैं।"

"जी सरकार...दुहाई, माँ बाप!"

"चूँकि तुमने अंग्रेजी सरकार का भला किया है, इसलिए तुम्हारी सेवाओं का ख्याल कर तुमको फाँसी की सजा नहीं दी जाती!"

रज्जब अली का मुँह सूख गया।

"तुमको दिल्ली से निकल जाने का हुक्म दिया जाता है। तुम्हारी जान बख्श दी जाती है। यही बहुत है। तुम चौबीस घंटे के अन्दर दिल्ली छोड़कर चले जाओ!"

रज्जब अली रोता, सिर पीटता निकल गया। उसे अपनी करनी का फल मिल गया। उसके सारे सपने मिट्टी में मिल गए। अपना बराना-बोरिया बाँधकर जब वह शहर दिल्ली से बाहर निकला, तो हडसन के भेजे कुछ सिक्ख-सैनिकों ने उसका माल असबाब लूट लिया और उसको काटकर फेंक दिया।

रज्जब अली के शरीर के कटे टुकड़े गिद्ध, कौवे और कुत्ते नोंचने लगे।

दो दिन बाद उन टुकड़ों में कीड़े भी लग गए।

❀

बढ़ती हुई सेना रुक गई। आगे चलनेवाले रिसाला-सरदार की दृष्टि सड़क किनारे पड़ी एक लाश पर गई। लाश का सिर न था। किसी स्त्री की लाश थी।

"क्या हुआ?"—ब्रिगेड आगे आए।

"साहब, लाश!"—लाश रूप-रंग से किसी अंग्रेज-स्त्री की मालूम पड़ रही थी।

डाक्टर ने लाश का परीक्षणकर उसे अंग्रेज-युवती की लाश घोषित किया। गोरे सैनिकों और थिग्रेड का पारा चढ़ गया। उनके देशवासी की यह दशा! सामने ही खुर्जा के मकान दिखलायी पड़ रहे थे। सेनापति थिग्रेड ने खुर्जा लूट लेने का हुक्म दिया। पलटन द्रुतगति से बढ़ी।

खुर्जा पर क़हर टूट पड़ा। नगरवासियों को गोली से उड़ाया जाने लगा। मकानों में आग लगा दी गई। स्त्री-बच्चों को बुरी तरह सड़कों पर घसीट घसीटकर पीटा गया। युवतियों की दुर्दशा की गई। सरे आम सड़कों पर अत्याचार हुआ। खुर्जा नष्ट-भ्रष्टकर सेना आगे बढ़ गई। एक अंग्रेज स्त्री की हत्या का भीषण प्रतिशोध एक नगर से लिया गया। सेना अलीगढ़ की ओर बढ़ी।

❀

"देखो क्या मौनी बनकर बैठा है!"

"एकदम साधु!"

"कहीं बागियों का दूत तो नहीं।"—आगेवाला घुड़सवार बोला।

"तलाशी लो।"

"हाँ, आजकल बहुत से बागी सिपाही साधु फकीर बनकर आग लगाते घूम रहे हैं।"

"ऐ साधु! उठ!"

घुड़सवार ने नीचे उतरकर उसकी दाढ़ी खींची। साधु मुस्कुराया। फिर उसने पास रखे त्रिशूल को उठाया। घुड़सवार भय से पीछे हट गया। कहीं वार न कर दें, पर उस साधु ने त्रिशूल में बँधे डमरू को फोड़ दिया और एक कागज निकालकर घुड़सवार के आगे फेंक दिया।

"अपने सेनापति को दो।"

घुड़सवार ने उस कागज को उठाकर देखा। पत्र की भाषा ही वह समझ नहीं सका।

साधु ने दपटकर कहा—"अपने सेनापति को दे आओ।"

पत्र थिग्रेड के हाथ गया। पत्र ग्रीक भाषा में था। पढ़ते ही वह चौंक पड़े। पत्र में लखनऊ की सहायता के लिए अविलंब आने का अनुरोध था। पत्र किसी

भी अंग्रेज सेनापति के लिए था। पढ़ते ही थिग्रेड उस साधु के पास गए। पूछ-ताछ करने पर साधु इतना ही कह सका कि एक तड़फते हुए अंग्रेज ने ईश्वर के नाम पर इस पत्र को किसी भी अंग्रेज सेनापति को देने का अनुरोध किया था। इतना कहकर वह अंग्रेज मर गया था। पता नहीं, वह कहाँ से आ रहा था। इससे अधिक वह साधु कुछ न कह सका।

सेनापति थिग्रेड ने साधु को पुरस्कृत करना चाहा, पर उसने पुरस्कार लेने से इंकार किया।

"यह तो मेरा धर्म था! पुरस्कार कैसा! उपकार कैसा!"

पत्र पढ़कर सेनापति थिग्रेड चिन्तित हुए। लखनऊ की सहायता के लिए शीघ्र बढ़ जाने का फैसला किया।

❀

अलीगढ़ से विद्रोही-सिपाही जा चुके थे। हुल्लड़बाजों का ही राज्य था, जो दिन रात नगरवासियों को तंग करते थे। सेनापति थिग्रेड की सेना के आने का समाचार पाकर ये लोग बिगुल बजाते, ढोल पीटते, असभ्य भाषा में गालियाँ बकते मुकाबला करने आए। इनके पास दो तोपें भी थीं।

सैनिकों के एक ही आक्रमण से घबड़ाकर वे तोपें छोड़ भाग खड़े हुए। सेना के शहर में आते ही नागरिकों ने हर्ष ध्वनि की। उनका स्वागत किया और भोजन दिया। सेनापति ने रात रुक सबेरे ही अकबराबाद के लिए प्रस्थान किया। देहली पर अंग्रेजों के अधिकार हो जाने के समाचार से बागी सिपाहियों में सर्वत्र निराशा व्याप्त हो गई थी। भेड़ों की तरह बागी इधर से उधर भाग रहे थे। अंग्रेजी सेना का मुकाबला करने की ताकत उनमें न थी। सिपाहियों की हिम्मत पस्त हो चली।

अकबराबाद में सिपाहियों के सहयोग से मँगलसिंह, मेहताबसिंह दो भाइयों ने अपना शासन चला रक्खा था। गोरी सेना के आने की खबर पाते ही सिपाही भाग खड़े हुए और दोनों भाई भी। घुड़सवारों ने घेरा डाला, पर कोई पकड़ा न जा सका। सिपाहियों का छोड़ा हुआ फौजी सामान हाथ आया।

अकबराबाद के सैनिकों को दंड देकर गोरी सेना थोड़े से विश्राम के बाद आगे बढ़ गई। कुछ ही दूर आने पर थिग्रेड को आगरा के संबंध में सनसनीखेज समाचार मिले। कई पत्र भी उन्हें प्राप्त हुए।

कार्लाबिन के देहान्त के उपरान्त यह आशा थी कि ग्वालियर के बागी सिपाही मेंहदीपुर, मालवा और भूपाल के सिपाहियों से मिलकर आगरा पर आक्रमण करेंगे। महाराजा सिंधिया और दिनकरराव के प्रयास विफल रहे। बागी सिपाही आगे बढ़े, पर दिल्ली-पतन का समाचार पाते ही अधिकांश सिपाही मध्यभारत की ओर भाग गए। जहाँ तात्या के आदमी उन्हें अपने साथ ले गए।

दिल्ली से भागे सिपाही फीरोजशाह के नेतृत्व में मथुरा पहुँच चुके थे। मथुरा में सूबेदार हीरासिंह भी अपने सिपाहियों के साथ इनसे मिल गया था। मध्यभारत से भी सिपाही मथुरा आ रहे थे। आगरा का संकट इसी कारण गुरुतर हो गया था। आगरा के अंग्रेजों में घबराहट फैल रही थी। थिग्रेड ने इस संकट को महसूस किया।

❀

बिना रुके थिग्रेड बढ़ते गए। विजयगढ़ आते ही आधी रात के बाद कूच कर दिया। यमुना पर नावों का पुल पारकर आगरा आ धमके। निरन्तर भाग-दौड़ और धूप के कारण अंग्रेजों के चेहरे झुलस गए थे। धूल-कीचड़ से उनके वस्त्रों की विचित्र दशा हो गई थी।

किले के पास इन्हें आते देख अंग्रेज घबड़ा गए। बहुत से समझ बैठे आने वाले लोग अफगान हैं। बाद में यह मालूम होने पर कि सेनापति थिग्रेड आए हैं, अंग्रेजों में प्रसन्नता की लहर दौड़ गई। सेना का स्वागत हुआ। अंग्रेजी सेना के आने का समाचार पाते ही नागरिकों में भी खलबली मच गई।

दिल्ली की विजय और दिल्ली बादशाह को कैद करने वाली सेना को देखने के लिए नगरवासियों की भीड़ लग गई। अधिकारी सेना को ठहराने की आवश्यक व्यवस्था में लग गए। थके सैनिक हथियार वगैरह उतारकर आराम करने लगे।

लोगों को सेना से दूर हटाया गया। दर्शक नागरिकों की भीड़ के कारण कार्य में विघ्न पड़ रहा था।

चार आदमी फिर भी न माने। नाचते गाते ताली बजाते वे सेना के पड़ाव में घुस आए।

"बाहर निकालो।"

"अरे साब ! हम लोग आपका वेलकम करता है !"

"इन पागलों को बाहर निकालो।"

यह सुनते ही वे चारों आदमी अपनी छुपी तलवारें निकालकर गोरों पर टूट पड़े। देखते-देखते आठ दस सैनिक लोढ़ गए। इस दृश्य से भगदड़ मच गई। अधिकारियों को कुछ खबर न हुई। स्त्री पुरुष अभी मिलने-जुलने में ही लगे थे। सभी एकदम निश्चिन्त थे

चार आदमी अकेले न रहे ! भीड़ में से अनेक लोग हर-हर महादेव कहकर टूट पड़े और सभी तोपें गरजीं। पड़ाव पर गोले गिरने लगे। अधिकारी चौंक पड़े। यह कैसा अप्रत्याशित आक्रमण ? युद्ध का बिगुल बजा। पीछे के सैनिक घबड़ाकर सँभले। तब तक तो आक्रमण की भयानकता बढ़ गई।

सिपाहियों के इस अचानक आक्रमण से अंग्रेजी पलटन को भारी क्षति उठाना पड़ी। इस आक्रमण के कारण हुई भगदड़ और खलबली से आक्रमण-कारियों ने काफी लाभ उठाया। सेनापति थिग्रेड अपना संगठित दल लेकर मुकाबले पर आए !

दोनों ओर से आक्रमण होता रहा। सिपाहियों का बढ़ाव रुक गया। तब तक अस्त-व्यस्त टुकड़ियाँ सँभलकर आ गईं। इस नई शक्ति के आगे सिपाही ठहर न सके और भाग खड़े हुए। अंग्रेजी पलटन ने उन्हें दूर तक खदेड़ा। सिपाही भाग गए, पर अंग्रेजों का काफी नुकसान कर गए।

❀

"यकायक हमला कैसे हो गया ?"

"अंग्रेजों पर यह हमला पूर्व आयोजित था। असल में नागरिक वेश में सिपाही आ गए थे।"

"हुँ। इसका अर्थ है आगरा के आस-पास सिपाही हैं ?"

"जी हाँ !"

"तो पहिले इन सबका सफाया करना जरूरी है। मथुरा के सिपाहियों के आने से पहिले इन सबको खत्म कर दिया जाय !"

"अवश्य !"

सेनापति थिग्रेड ने अपनी सैनिक टुकड़ियों को आगरा के आस पास के क्षेत्र में कार्यवाही करने का हुक्म दिया। अंग्रेजी सैन्य टुकड़ियों के आगे छिटफुट सिपाही ठहर न सके। अधिकांश मारे गए। बचे हुए काली नदी के उस पार भाग गए। आगरा में शांति हो गई।

※

ब्रिटिश-कंपनी के शासन की दृष्टि से आगरा एक महत्व का क्षेत्र था। अतएव किसी योग्य व्यक्ति का वहाँ तैनात रहना जरूरी था। इसी दृष्टि से लार्ड कैनिंग ने थिग्रेड को आगरा में अगला आदेश न मिलने तक रोकना उचित समझा और उनके स्थान पर होपग्रान्ट को सेनाध्यक्ष बनाकर भेज दिया। थिग्रेड की चुनी हुई पलटन की कमान सँभालकर सेनापति होपग्रांट इसी स्थान से आगे बढ़े।

मैनपुरी धमकते ही मैनपुरी का राजा भाग निकला। अंग्रेजी सेना ने मैनपुरी का किला बारूद से उड़ा दिया। मैनपुरी का शासन भाग आगरा से साथ आए अंग्रेजों की देख-भाल में छोड़ होपग्रांट आगे बढ़े। दियारे में रुक जाना पड़ा। दियारे का चौराहा एक समस्या बन गया। कानपुर, आगरा, फतहपुर, मेरठ के रास्ते सामने थे। होपग्रांट अपने साथियों से सलाह करने लगे कौन सा रास्ता उनके लिए ठीक होगा। विचार-विमर्श प्रारंभ करते ही सूत्र मिल गया।

"साब! एक आदमी मिलने आया है। देखने में हिन्दोस्तानी है पर अंग्रेजी आप लोगों जैसी बोलता है!"

होपग्रांड का माथा ठनका। स्वयं बाहर आए। हिन्दोस्तानी लिबास में वैसे ही रूप रंग का एक युवक उनसे तपाक से मिला। उसका अंग्रेजी तौर-तरीका देखकर होपग्रांट आश्चर्य में पड़ गए।

"तुम अंग्रेज हो?"

"हाँ साब!"—उसने कहा—"मेरा नाम कानोवा!"

"लेकिन..."

"मैंने अपना सारा रूप-रंग बदल लिया है।"—उसने बतलाया—"बड़ी मुश्किल से बचता हुआ चला आ रहा हूँ। भगवान को धन्यवाद कि मैं आपसे मिल सका। यह जनरल आउट्रम का पत्र है। उन्होंने आपको तत्काल सहायता के लिए बुलाया है।"

जनरल आउट्रम का पत्र पाते ही होपग्रांट ने अपने कदम आगे बढ़ा दिए।

❀

गुरसागंज, मीरा की सराय पार करती हुई गोरी पलटन निर्विघ्न आगे बढ़ी। कानपुर से पहले सिपाहियों की एक छोटी से टुकड़ी से मुठभेड़ हुई पर सिपाही हथियार छोड़कर भाग गए। होपग्रांट निर्विघ्न लखनऊ के रास्ते बढ़े और जितनी जल्दी हो सका आलमबाग आ गए। लखनऊ पर अंग्रेजी अमलदारी की स्थापना का अभियान प्रारंभ हो गया।

❀

सिकन्दराबाद पर अपना कब्जा कर अंग्रेजी पलटन रेजीडेंसी की ओर बढ़ी। बायीं ओर लगभग ग्यारह बारह सौ गज खुला मैदान था। मैदान के किनारे एक ओर बस्ती थी। दाहिनी ओर थोड़ी दूर तक मैदान और उसके बाद झाड़ियाँ थीं इसके बाद नवाब गाजीउद्दीन हैदर का मकबरा खड़ा था। शाहनजीफ से कुछ दूर आगे कदम-रसूल की मसजिद थी।

गोलंदाज शाहनजीफ और कदम-रसूल की मसजिद पर गोले फेंकने लगे। सिक्ख सैनिकों ने प्राणों की बाजी लगा मसजिद पर कब्जा कर लिया पर शाहन-जीफ के लिए भयंकर युद्ध होने लगा।

मकबरे से आती हुई गोलियों की बौछार में अंग्रेजी पलटन का बढ़ना मुश्किल हो गया। कई घंटों के अनवरत प्रयत्न के उपरान्त भी सैनिक बढ़ न सके। सिपाहियों ने मकबरे के पास विकट व्यूह-रचना कर रखी थी। सिपाहियों की तोपों और बंदूकों से अंग्रेजों को भारी क्षति उठाना पड़ रही थी।

प्रधान सेनापति चकराए।

मकबरे की दीवारों को गोलों की मार से तोड़ने का प्रयास किया, पर सफेद संगमर्मर की मजबूत दीवारें टूट न सकीं। कोई क्षति न पहुँची।

प्रधान सेनापति ने पीछे हटने का निर्णय किया कि यह स्थान छोड़कर किसी और रास्ते से आगे बढ़ना चाहिए।

❀

"बड़े साहब कहते हैं, पीछे हटना ठीक होगा !"

सेनापति होपग्रांट ने आदेश मान लिया, पर पीछे हटने की कोई तैयारी उन्होंने न की। स्थिति एक बार और देख लेना चाहते थे। हटने से पहिले अन्तिम बार प्रयास करना उन्होंने जरूरी समझा। शाम हो गई थी। रात का अँधेरा बढ़ता जा रहा था। थके माँदे सैनिक पस्त पड़े थे। लाशों को ठिकाने लगाया जा रहा था। घायलों की मरहम-पट्टी की जा रही थी और टूटी-फूटी वस्तुओं को कल के युद्ध के लिए सँवारा जा रहा था।

अपने कुछ साथियों के साथ सेनापति होपग्रांट रात के अंधेरे में निकट से मकबरे की स्थिति देखने के लिए आगे बढ़े। मकबरे में जगह-जगह छोटे झरोखे बने थे। इन्हीं झरोखों से आनेवाली गोलियों की बौछार अंग्रेजी पलटन को भारी नुकसान देती थी और सिपाही मकबरे में अछूते रह जाते थे।

एक झरोखे के पास पहुँचकर सेनापति होपग्रांट रुक गये। घोड़े की पीठ पर खड़े होकर उन्होंने झरोखे से देखा।

भीतर दीपक जल रहे थे। बारामदे और अहाते में चूल्हे चढ़े थे। सिपाही खाने की तैयारियाँ कर रहे थे। सब प्रसन्न चित्त थे और आपस में ठिठोली करते दिखलायी पड़े। मकबरे के मैदान में बहुत बड़ी संख्या में सिपाही एकत्रित थे।

होपग्रांट दूसरे झरोखे के पास बढ़े। झाँका। भीतर का दृश्य देखते ही उनकी आँखों में प्रसन्नता की एक चमक कौंध गई। झरोखे से एक कोठरी का दृश्य दिखलायी दे रहा था। कोठरी का दरवाजा भीतर से बंद था। शराब के नशे में में एक हिन्दोस्तानी सिपाही झूम रहा था और उसके पास ही सत्रह-अठारह साल की एक छोकरी सहमी हुई बैठी थी। सिपाही उसे छेड़ रहा था और वह सहम रही थी।

लड़की की दृष्टि होपग्रांट पर पड़ी, पर होपग्रांट ने साहसकर उसे चुप रहने का संकेत किया और उस लड़की को पास बुलाया। शराब के नशे में बुत सिपाही को चकमा देकर वह लड़की झरोखे के पास आ खड़ी हुई !

"बाहर निकलना माँगता !"—होपग्रांट ने पूछा।

"......"

"तुम किसी तरह दरवाजा खोल देगा तो हम तुमको लाख रुपया इनाम देगा !"

"......"

होपग्रांट ने गले में पड़ा स्वर्णक्रास उस लड़की के हाथ पर रख दिया।

"तुम दरवाजा खोल रखना। खाली डंडा अलग कर देना। हम आना माँगता। लाख रुपया। अंग्रेज का बात पक्का !"

होपग्रांट हट गए। स्थिति अनिश्चित रहने पर भी वे पूरी तैयारियों के साथ सदर दरवाजे पर आकर रुक गये। रात के अँधेरे में अंग्रेजी सेना सदर दरवाजे के सामने एकदम तैयार खड़ी थी। होपग्रांट का आदेश था, जैसे ही फाटक खुले सब तूफान की तरह टूटकर हाहाकार मचा दें, पर ख्याल रहे किसी औरत को न मारा जाय !

सेना साँस रोके एकदम चुपचाप खड़ी थी।

*

दो तीन घंटे बाद दरवाजा धीरे से खड़का।

"टूटो !"

होपग्रांट ने बिगुल फूँका और उसी समय सारी पलटन वायु-वेग से सदर दरवाजा एक झटके से खोल भीतर धँस गई। इस षड्यंत्र से सिपाही एकदम अपरिचित थे। रात के अँधेरे में अधिकांश निश्चिन्त होकर पड़े थे। वे अपने हथियारों को सँभाल सकें, इससे पहिले ही सिक्खों और गोरखों ने अंग्रेजों की आधीनता में उन्हें घर दबोचा।

रात के अन्धकार में भीषण नर-संहार प्रारंभ हो गया।

असावधान सिपाहियों का बुरी तरह संहार हुआ। बहुत कम सिपाही अपनी जान बचाकर भाग सके। होपग्रांट ने दो घंटे में ही मकबरे पर कब्जा कर लिया। प्रधान सेनापति की टुकड़ी भी सहायतार्थ आ गई। सिपाही भागे, पर मकबरा हाथ से गया।

युद्ध रुक गया।

सैनिक रात में मकबरे में ही पड़े रहे।

सबेरा होने पर सर्वत्र लाशों के ढेर देखे गए। खून के डबरे, खून के पनाले मकबरे के मैदान में, बारामदे में, कमरों में बिखरे थे।

होपग्रांट ने रात वाली लड़की की तलाश की। वे उसे पुरस्कृत करना चाहते थे। स्वयं उन्होंने मकबरे में एक तरफ से खोजना शुरू किया।

लड़की उसी कोठरी में थी, पर उसकी लाश ही थी। नंगी लाश, जिसके पेट में छूरा भौंका हुआ पड़ा था और उसके पास ही एक सिपाही मरा पड़ा था। होपग्रांट का हृदय भर आया।

चुपचाप उस स्थान से हट गए।

ॐ

रेजीडेंसी में घिरे अंग्रेज चुप न बैठे थे। सिपाहियों से संख्या में कम होते हुए भी उनसे मुकाबला कर रहे थे। कष्टों की सीमा बढ़ जाने पर भी हिम्मत न हारना अंग्रेजों का अपना एक गुण है। सहायक सेना के आने का समाचार पाकर अंग्रेज प्रसन्न हुए

सहायक सेना के आने में वे भी मदद देने लगे।

सेनापति हावेल ने आगे बढ़कर बारूद की सुरंगें लगा दीं और फरीदबक्स महल की चहारदीवारी तोड़कर तोपें खड़ी कर दीं और यहीं से सिपाहियों पर गोलाबारी करने लगे।

पैदल सेना ने भी आगे बढ़कर फरीदबक्स महल और मोती महल की इमारतों पर अपना कब्जा कर लिया। सिपाही इतने पर भी हतोत्साहित नहीं हुए और वे बराबर लड़ते रहे। लखनऊ में एक-एक इञ्च भूमि लेने में अंग्रेजों को कड़ा मुकाबला करना पड़ रहा था। अंग्रेजी सेनाएँ भारी हानि उठाकर लड़ रही थीं।

प्रधान सेनापति और होपग्रांट शक्ति-क्षीण होने पर भी लड़ रहे थे। किसी प्रकार रेजीडेंसी में घिरे अंग्रेजों को निकाल लेना ही उनका उद्देश्य था। सिपाहियों को पराजित कर लखनऊ पर अंग्रेजी अमलदारी कायम करने की बात पीछे की थी। इस वक्त एक ही समस्या थी, किसी प्रकार घिरे अंग्रेजों को मुक्त किया जाय। कानपुर-कांड की पुनरावृत्ति न हो।

ॐ

मुहम्मद अली बेचैन था। उसकी समझ में न आ रहा था क्या करे? बेगम हजरतमहल एकदम निराश हो गई थीं। किसी प्रकार वह लखनऊ से भाग जाना चाहती थीं। बहुत समझाने-बुझाने पर ही मुहम्मद अली उन्हें कुछ दिलासा दे सका। अंग्रेजी फौजें बढ़ती चली आ रही हैं। चारों तरफ से इकट्ठी होती हुई चली आ रही हैं। कई बार मुहम्मद अली रेजीडेंसी में भेष बदलकर गया और उसे अंग्रेजों की इस कार्रवाई का पूरा पता था। लखनऊ पर वे अपना अधिकार जमाने के लिए कटिबद्ध हैं।

मम्मू खाँ तथा अन्यान्य सिपाही पूरी ताकत के साथ अंग्रेजों का मुकाबला कर रहे हैं। रात दिन लखनऊ में तोपों की गर्जना और बन्दूकों की कड़क सुनायी पड़ती है। बहुत ही बहादुरी के साथ सिपाही लड़ रहे हैं और अंग्रेजों को काफी हानि पहुँचा रहे हैं।

लेकिन कब तक...? कब तक?

कानपुर का कोई समाचार नहीं आया। आगरा में कुछ हुआ या नहीं? पता नहीं लग रहा है।

दिल्ली पर अंग्रेजों का फिर अधिकार हो जाने से सिपाही मुरदा हो गए हैं। सारा जोश जैसे ठंडा पड़ गया है, पर लखनऊ आखिरी साँस तक लड़ेगा! कानपुर लड़ेगा और झाँसी लड़ेगा! मुहम्मद अली का मन उत्साह से भर गया। दिल्ली ही इस देश का भाग्य निर्णय नहीं। अभी अंग्रेजों का भाग्य निर्णय होना बाकी है।

"मम्मू खाँ आपको याद कर रहे हैं?"

"अभी आया!"

मुहम्मद अली तुरन्त नीचे आया। खून से लथपथ मम्मू खाँ सामने था। मुहम्मद अली घबड़ा गया। क्या अंग्रेज रेजीडेंसी तक आ गए? क्या मम्मू खां पराजित होकर आ गया।

"मुहम्मद अली...मुहम्मद अली, तुम बेगम और नवाब को बाहर ले जाने की कोशिश करो। वे अंग्रेजों के हाथ न पड़ें!"

"क्यों...?"

"अंग्रेज जीत गए!"

"मम्मू खाँ!"

"हाँ, वे रेजीडेंसी पहुँच गए !"

मुहम्मद अली को अपने पाँव तले की जमीन खिसकती मालूम पड़ी, फिर भी उसने अपने को सँभालकर कहा—"तब तक एक भी सिपाही जब तक जिंदा है, लखनऊ में लड़ाई होगी !"

"......"

"उठो ! चलो !"—मुहम्मद अली ने हाथ का सहारा देते हुए मम्मू खाँ को उठाया—"मरहम पट्टी करके फिर मैदान में चलो ! देखते हैं, हम लोगों के जिंदा रहते अंग्रेज कैसे लखनऊ पर अधिकार कर सकते हैं ?"

❀

नक्कारों की गगनभेदी ध्वनि के साथ खुर्शीद मंजिल पर कब्जा करने के लिए गोरे सैनिक बढ़े। सिपाही मुकाबले के लिए खड़े थे। अंग्रेजी सेना के आते ही लड़ाई शुरू हो गई। शाहनजीफ पर अपना आक्रमण करने के बाद अंग्रेजी सेना की ताकत काफी टूट गई थी, फिर भी उत्साह की कमी न थी। चुने हुए सैनिकों के सधे आक्रमणों से सिपाहियों की ताकत घबरा गई।

कुछ ही देर में खुर्शीद मंजिल पर अंगरेजी सेना ने कब्जा कर लिया। सिपाही मोती महल की तरफ बढ़े, पर मोती महल के पास अंगरेजी सेना का स्वागत करने के लिए रेजीडेंसी तक रास्ता साफ कर सेनापति हावेल जमे हुए थे। सिपाही दु-तरफा मार में बुरी तरह फँस गए।

सहसा सिपाहियों में नया जोश आया।

उनकी संख्या के साथ साथ तोपें भी बढ़ गई। मम्मू खाँ पुनः युद्ध के मैदान में आ गया। उसकी ललकार पर सिपाही मरने लगे। घोर संग्राम प्रारम्भ हो गया। अंगरेजी सेना भी जी जान से लड़ रही थी क्योंकि यही आखिरी मोर्चा था। इस स्थान से सिपाहियों को हटा दिया जाता है, तो रेजीडेंसी धमकने में कोई बाधा नहीं।

अंगरेजी सैनिकों की एक टुकड़ी बढ़ती जा रही थी।

मोती महल के सिपाहियों की रक्षा पंक्ति को भेदकर वह रेजीडेंसी की ओर बढ़ गई। इस टुकड़ी ने रेजीडेंसी के सैनिकों के साथ लौटकर मोती महल पर आक्रमण किया।

इस दु-तरफा मार से सिपाहियों को मोती महल से हटना पड़ा। सिपाही कैसर बाग की ओर हट गए और वहीं से मोती महल तथा खुर्शीद मंजिल पर गोले बरसाने लगे, पर अंगरेजी सेना का रास्ता साफ था। प्रधान सेनापति और होपग्रांट की सेनाओं ने रेजीडेंसी तक का रास्ता पा लिया।

खुर्शीद मंजिल पर अंग्रेजों ने अपना झंडा खड़ा किया।

"धड़ाम ! धड़ !"

कैसर बाग से तोप का गोला झंडे पर लगा। झंडा गिर गया।

फिर झंडा खड़ा किया गया। फिर गिर गया। तब झंडा दूसरे स्थान पर फहराया गया। इस झंडे को देखते ही रेजीडेंसी में घिरे अंग्रेजों में हर्ष की लहर दौड़ गई और वे हर्ष ध्वनि के साथ अपनी पलटन का स्वागत करने लगे। कैसर बाग की ओर से सिपाहियों की गोलाबारी जारी थी।

प्रधान सेनापति से मिलने के लिए हावेल आए।

खुले मैदान में दोनों मिले। आस-पास में कैसर बाग की तोपों से गोले छूट-छूटकर गिर रहे थे। सिपाहियों का शोर गुल सुनाई पड़ रहा था। ऐसा मालूम हो रहा था कि सिपाही फिर आगे बढ़ने की कोशिश में हैं।

❀

आउट्रम, हावेल, होपग्रांट और प्रधान सेनापति खुले मैदान में मिले। गोला बारी हो रही थी। कैसरबाग की ओर से बराबर आक्रमण हो रहा था। अंग्रेजों की शक्ति काफी क्षीण हो गई थी। रेजीडेंसी के अंग्रेजों के पास तक वे पहुँच गये थे, यही बहुत था।

"हम लोगों को रेजीडेंसी छोड़ देना चाहिए !"

"क्यों ?"

"इसके अतिरिक्त कोई रास्ता नहीं। अगर हम लोग भी आप लोगों के साथ रेजीडेंसी में रहकर सिपाहियों से मुकाबला करेंगे तो हम लोग भी घिर जाँयगे !"

"आपकी क्या राय है ?"

"मैं इस प्रस्ताव को ठीक समझता हूँ। कानपुर का कोई समाचार नहीं आया है। हम लोग किस आधार पर रेजीडेंसी में रहें ?"

"ऐसा सुना है कि तात्या कानपुर की ओर आ रहा है !"

"हाँ !"

"तब ?"

"तब क्या ? रेजीडेंसी छोड़कर हम लोगों को पीछे हट आना चाहिए। रेजीडेंसी में फिर घिर जाने की पूरी संभावना है। सभी लोगों को, स्त्री-बच्चों को रेजीडेंसी से निकालकर इसे खाली कर देना ही ठीक होगा। रेजीडेंसी से अलग हटकर सिपाहियों को लखनऊ से हटाने का प्रयत्न होना चाहिए। अगर कानपुर की ओर से कोई संकट आया तो हम रेजीडेंसी में रहकर सामना नहीं कर सकते हैं।"

"आपकी यह बात मैं मानता हूँ। ऐसा करना ठीक है।"

"लेकिन रेजीडेंसी में सिपाही धमक गये तो ?"

"यह तो अच्छा होगा। हम उन्हें आसानी से घेरकर समाप्त कर सकेंगे !"

हावेल का विचार अमान्य ठहरा दिया गया। रेजीडेंसी खाली कर देने का ही निर्णय किया गया ; सिपाहियों की बढ़ती हुई ताकत के कारण अंग्रेज अब रेजीडेंसी में घिरने का खतरा मोल न ले सकते थे। दो बार रेजीडेंसी में घिरकर वे इसका नतीजा भोग चुके थे।

"इस बमबारी के बीच लोगों को कैसे हटाया जायगा ?"

"मिट्टी की दीवार उठवा दीजिए !"

"दिलकुशा बाग ही हम लोगों के लिए सुरक्षित है। वहीं से हम मुकाबला करेंगे। दिलकुशा बाग से इतना फायदा तो है ही कि हारने पर हम सकुशल पीछे हटने का रास्ता तो पा जाँयगे !"

&

योजनानुसार कार्य प्रारंभ हो गया। मिट्टी की दीवार खड़ी कर दी गई और कैसरबाग की तोपों के गोलों को रोकने की इस हलकी आड़ के सहारे रेजीडेंसी के अंग्रेज-स्त्री, बच्चे निकलकर आगे बढ़ने लगे। रात को ही यह कार्य प्रारंभ रहा। सिपाहियों का उत्पात बढ़ रहा था। अंग्रेजी सेना को बराबर लड़ते और अपने स्थान पर तैनात देख उन्हें इस बात का पता ही न चला कि अंग्रेज रेजीडेंसी खाली कर रहे हैं।

पहिले अंग्रेज, स्त्री-बच्चे सिकन्दराबाग में ठहराए गए पर वहाँ बदबू के मारे उनका ठहरना मुश्किल हो गया। कोई दो हजार से ऊपर सिपाहियों की लाशें वहाँ पड़ी सड़ रही थीं। इतनी भारी संख्या में मरे हुए सिपाहियों को देखकर अंग्रेजों में उनकी वीरता के कारण भय फैलने लगा। शीघ्र ही सबको सिकन्दराबाग से हटा दिया गया !

सेनापति हावेल ने चारपाई पकड़ ली। उनका बड़ा लड़का युद्ध में घायल हो गया था और स्वयं उन्हें हैजा हो गया था। वे डोली में ले जाए गए। सेनापति हावेल की इस बीमारी का इलाज न हो सका और उनके प्राण-पखेरू उड़ गए।

उन्हें आलमबाग में समाधिस्थ कर दिया गया।

रेजीडेंसी से तमाम लोग दिलकुशा बाग में आ गए। रेजीडेंसी एकदम खाली कर दी गई। सेना भी दिलकुशा बाग की ओर हट आयी।

❀

प्रधान सेनापति और जनरल आउट्रम गंभीर मुद्रा में बैठे थे। सिपाहियों से अभी भी युद्ध जारी था। कानपुर से चिंताजनक समाचार आ रहे थे।

"मैं कानपुर जाना चाहता हूँ !"

"......"

"कानपुर जाना अब आवश्यक है।"—प्रधान सेनापति आउट्रम से बोले—आप चार हजार सैनिक और पचीस तोपों के साथ आलमबाग में रहिए। सिपाहियों को भरसक रोकिए और लखनऊ पर कब्जा करने की कोशिश कीजिए। बाकी लोगों के साथ मैं कानपुर रवाना होता हूँ।"

"जैसा आप ठीक समझें।"

"सेनापति वाइंडहम को वैसे कानपुर का भार सौंपा गया था। कानपुर न छोड़ने की ही सलाह उन्हें थी। वे उसी मिट्टी के किले में पड़े होंगे। ग्वालियर की सेना न पहुँचने के कारण संभवतः वे संकट में हैं।"

"वाइंडहम कानपुर से भागे न होंगे।"

"ऐसा कभी नहीं हो सकता। आदेश का पालन करने में वाइंडहम अपनी जान दे देंगे। जरूरत है कि शीघ्र ही उनकी सहायता के लिए पहुँचा जाय !"

"ठीक है !"

प्रधान सेनापति कानपुर की ओर चल पड़े। चार हजार सैनिकों और पच्चीस तोपों के साथ जनरल आउट्रम सिपाहियों के मुकाबले आलमबाग आ डटे।

❀

मुहम्मदअली की प्रसन्नता का ठिकाना न रहा। उसने चीखकर कहा—"अंग्रेज रेजीडेंसी से भाग गए !"

"आँय !"

"हाँ !"—मुहम्मदअली ने विजयोल्लास से घूँसा तानकर कहा—"रेजीडेंसी एकदम खाली पड़ी है। हमारे सिपाहियों के आगे अंग्रेजों का ठहरना मुश्किल है।"

मम्मू खाँ चुने हुए सैनिकों के साथ रेजीडेंसी आया। रेजीडेंसी एकदम खाली पड़ी थी। अंग्रेजों द्वारा छोड़ी गई टूटी-फूटी वस्तुएँ वहाँ थीं। रेजीडेंसी में एक ओर माटी की कब्रें बनी थीं। वहाँ मारे गए अंग्रेज दफन थे। मम्मू खाँ ने सिपाहियों को रेजीडेंसी में आने का आदेश दिया।

अंग्रेजों के रेजीडेंसी छोड़कर भागने के समाचार से सिपाहियों में हर्ष की लहर दौड़ गई। अधिकांश सिपाही रेजीडेंसी में आ गए। इस घटना से उनमें नया उल्लास आ गया। एक बार फिर अंग्रेज लखनऊ से मारकर भगा दिए गए। लखनऊ शहर के बाहर उन्हें खदेड़ दिया गया।

लखनऊ पर सिपाहियों का शासन फिर कायम हो गया। शहर के बाहर पड़े जनरल आउट्रम छिट-फुट आक्रमण ही कर सकने की स्थिति में थे।

लखनऊ पर सिपाहियों का झंडा फहराने लगा।

आस-पास के क्षेत्रों से भी सिपाही लखनऊ में इकट्ठे हो रहे थे। अन्यत्र स्थानों से अंग्रेजों द्वारा खदेड़े गए सिपाही लखनऊ ही भाग-भागकर आ रहे थे। दिल्ली पर अंग्रेजों के अधिकार हो जाने के बाद भी लखनऊ पर बागी सिपाहियों की हुकूमत उनमें नया जीवन फूँक रही थी।

❀

मुहम्मदअली सलामकर मम्मू खाँ के पास बैठ गया।

बोला—"आपसे मैं एक मशविरा लेने के लिए आया हूँ।"

"कहो!"

"अभी-अभी खबर आयी है कि कानपुर पर तात्या का अधिकार हो गया है। यहाँ से जो अंग्रेजों की पलटन गई है, उससे मुकाबला होगा।"

"वहाँ भी अंग्रेज हारेंगे।"

"मेरे मन में कुछ और विचार है!"—मुहम्मदअली ने अपनी बात स्पष्ट की—"इस समय आउट्रम में इतनी शक्ति नहीं कि वह हमारा रास्ता रोक सके। मेरा विचार है कि आप जनरल आउट्रम को खदेड़ते हुए कानपुर बढ़ें। इस तरह आप अगर तात्या के साथ मिल जाते हैं, तो कानपुर से लखनऊ तक हमारी हुकूमत हो सकती है। और फिर हम लोग दिल्ली पर हमलाकर फिर से अंग्रेजों को भगा दें तो कैसा रहे!"

मम्मू खाँ हँस पड़ा।

"ऊँचा ख्वाब हमेशा नीचे गिराता है। अवध के इस सूबे पर हमारा कब्जा है, यही हम लोगों के लिए एक बड़ी चीज है।"

"अंग्रेजों को हमें किसी तरह भी ताकतवर नहीं होने देना चाहिए। इस समय वे कमजोर हैं और उनकी इस कमजोरी का फायदा अवश्य उठाना चाहिए वरना अंग्रेजों के ताकतवर होते ही हम लोग भी नेस्तनाबूद हो जाँयगे। क्या अंग्रेज लखनऊ ऐसे ही छोड़ देंगे?"

"तुम्हारे मकसद की मैं तारीफ कर सकता हूँ, मुहम्मदअली।"—मम्मू खाँ ने कहा—"पर मुझे इस बात का अफसोस है कि इस पर अमल नहीं हो सकता। कम से कम मैं तात्या की मदद तो नहीं कर सकता!"

"क्यों?"

"वह एक महाराष्ट्री है!"

"इससे क्या?"

"हमारा उसका मेल नहीं हो सकता। अगर हमने उसको ताकतवर बना दिया तो इसका क्या सुबूत कि वह कानपुर पर हमारी अमलदारी मानेगा।"

"लेकिन..."

"इस बाबत में तुम्हारी कोई बात नहीं सुन सकता !"—मम्मूखाँ ने कहा—"और न मैं उस पर कोई अमल ही कर सकता हूँ ।"

मुहम्मद अली आश्चर्य से मम्मूखाँ की ओर देखकर रह गया। मम्मू खाँ का दृढ़ निश्चय देख उसके मन का साहस टूट गया। साथ ही मन में निराशा छा गई। कानपुर से जैसे उत्साहजनक समाचार आए थे, उन समाचारों की छाया में मुहम्मद अली ने अंग्रेजों को अवध, रुहेलखंड और कानपुर से मिटते देखा। देखा वे दिल्ली भाग रहे हैं और वहाँ से भी खदेड़े जा रहे हैं।

मुहम्मद अली का यह स्वप्न टूट गिरा। अंग्रेजों जैसी एकता इस देश में कायम न होना ही अंग्रेजी राज की स्थापना का मूल कारण है।

मम्मूखाँ पर कुछ भी जोर न डाल मुहम्मदअली चुप-चाप उठ गया।

लखनऊ पर सिपाहियों का अधिकार था। लखनऊ में वे इधर-उधर पड़े हर्ष से मगन थे। आलमबाग के पास गोरी सेना चुप-चाप पड़ी थी। सिपाहियों का सितारा बुलंद था। हारते वे हैं, जो जीत की खुशी में मगन हो जाते हैं।

मुहम्मदअली दीर्घ निःश्वास लेकर रह गया।

*

बादशाह बहादुरशाह का बूढ़ा शरीर तीनों बेटों की नृशंस हत्या से एकदम विदीर्ण हो गया था। तीन-तीन जवान बेटे सरे-आम गोली से मार दिए गए और उनकी लाशें कोतवाली में लटकी रहीं। बदबू फैली तब हटायी गईं। दिल्ली-बादशाह के लिए यह घटना विक्षिप्त कर देने के लिए पर्याप्त थी। बूढ़े बादशाह का सिर हिलने लगा था। हरदम आँखों से आँसुओं के पनाले बहते रहते और हरदम या खुदा कह दोनों हाथ ऊपर उठा परवर दिगार से दुआएँ माँगा करते।

राजमहल के ही एक कमरे में बंदी बादशाह की हालत गिरती जा रही थी।

रूप की रानी बेगम जीनतमहल पीपल के पत्ते की तरह पीली होकर मुरझा रही थी। जीवन के अंतिम दिन इतने दुःखद होंगे, इसकी स्वप्न तक में कल्पना न थी। बादशाह की शुश्रूषा में लगी बेगम दिन-रात मौत की पुकार कर रही थी। मौत का कोई साधन भी दृष्टिगत न हो रहा था। गोरे सैनिकों का कड़ा पहरा एक क्षण को भी ढीला न पड़ता।

दिल्ली मुर्दा थी। जो जिन्दा बचे भी थे, वे चलती लाशों के ही प्रतिरूप थे। इस विद्रोह का बहुत बड़ा मूल्य दिल्ली को चुकाना पड़ा। व्यापारियों की रही-सही पूँजी भी अंग्रेजी सेना के खर्च के नाम पर जब्त कर ली गई। बाजारों में मनहूसियत छा गई। लोग किसी प्रकार दिन में एक बार भोजन प्राप्त कर लेते यही बहुत था। आस-पास के गाँवों में बढ़ेरियों का धुआँ उठता ही दिखायी न देता।

सिपाहियों के कोलाहल से भरी दिल्ली एकदम शान्त थी। कभी-कभी गोरी सेनाओं का मार्च पास्ट वातावरण की शान्ति को तोड़ आतंक फैला जाता था।

दिल्ली की सेना के अधिकारी आसपास के तमाम समाचारों को पा रहे थे। कलकत्ता से भी संबंध बन गया था और स्थिति के अनुकूल दिल्ली से सेना के प्रस्थान करने पर विचार-विमर्श हो रहा था। योजनाएँ बन रही थीं।

❀

गठा हुआ विशाल शरीर, उन्नत मस्तक, गौर वर्ण वाला घुड़सवार उतरा और नाना साहब के सामने झुककर अभिवादन किया। पास ही बैठा अजीमुल्ला आगन्तुक को देख चौंककर उठ खड़ा हुआ।

"आ गए, तात्या ?"

"हाँ !"

"....."

तात्या मुस्कुराया। गम्भीर मुस्कुराहट—"ग्वालियर की तमाम सेना हमारे नेतृत्व में आकर तैयार है। मैं बढ़ रहा हूँ आगे।"

"बढ़ो, विजयी हो।"

"इस वक्त मैं आपसे प्रार्थना करूँगा कि आप इस सेना का संचालन भार सँभालें !"

"नहीं, नहीं तात्या !"—नाना साहब बोले—"अब तुम्हीं सारा काम करो। मैं तुम्हारी शक्ति बढ़ाने के लिए प्रयास करूँगा। मैं लखनऊ जाना चाहता हूँ। अजीमुल्ला भी मेरे साथ रहेगा !"

"नाना साहब..."

"हाँ तात्या ! अब हाथ पर हाथ रखकर बैठने या जंगल-जंगल इस तरह छुपने से काम न होगा । मुझे भी आगे बढ़ने दो । तुम लड़ो । अंग्रेजों का मुकाबला करो और मैं सूबे सूबे चक्कर लगाकर भागे, निराश सिपाहियों को तुम्हारे पास भेजूँगा !"

"......"

"हमारी एकता के सारे सूत्र टूटकर बिखर चुके हैं । इन सबको जोड़ना बहुत जरूरी है और इसके बिना हमारी जीत में शंका है !"

"लेकिन नाना साहब आपकी गिरफ्तारी पर एक लंबा इनाम है । अगर किसी ने..."

नाना साहब मुस्कुराए—"अभी इस देश में जयचंदो की संतान में इतनी अधिक वृद्धि नहीं हुई है !"

"......"

"अब निष्क्रिय बैठने का समय नहीं । तुम जाओ तात्या ! अपने अभियान में सफल हो !"

तात्या टोपे एक बार फिर गरज उठा । ग्वालियर की सेना को बागी बना, सेनापति की बागडोर हाथ ले वह पूरी तैयारियों के साथ बढ़ा । सेनापति वाइंडहम पांडु की ओर उसका रास्ता रोकने बढ़े ।

तात्या टोपे कैम्पबेल और वाइंडहम की सैनिक शक्ति का अन्दाजा अपने दूतों से पा चुका था । व्यूह रचता हुआ वह कालपी से बढ़ा । तीन हजार सिपाही, बीस तोपें कालपी पर भोगिनीपुर में बारह सौ सिपाही और चार तोपें, अकबरपुर में दो हजार सिपाही छः तोपें, शिवली में बाइस सौ सिपाही और चार तोपें, शिवराजपुर में एक हजार सिपाही और चार तोपें । भयानक व्यूह के साथ सारे रास्ते में तात्या टोपे ने अपनी किले बंदी कर ली और अंग्रेजी फौजों की रसद का रास्ता रोक लिया ।

अपने चुने हुए सैनिकों के साथ जिस ओर तात्या बढ़ता, उसी ओर मालूम पड़ता कि अंग्रजों का काल आ रहा है । एक बार फिर इस क्षेत्र में एक ताकतवर इंसान पैदा हुआ जिसने गुलामी की तौक पहिनानेवालों को ललकारा ।

सेनापति वाइंडहम इन समाचारों को पाकर चिन्ता में पड़े। उन्होंने लखनऊ समाचार भेजा पर रास्ता बन्द हो चुका था। वाइंडहम को अपनी बुद्धि के अनुसार युद्ध के लिए आगे आना पड़ा। वह कालपी के रास्ते आगे बढ़े और गंगा की नहर के पुल के पास डेरा डाला।

कालपी कानपुर से छियालीस मील दक्षिण-पश्चिम। कानपुर कालपी के रास्ते में भगनीपुर और सुचंडी गाँव हैं। सुचंडी से कानपुर चौदह मील है। यहीं से पांडु नदी और गंगा नदी की नहरें निकली हैं। सुचंडी से . चार मील पांडु और उससे चार मील आगे गंगा नहर है। कानपुर कालपी का एक और रास्ता फूटता है। कालपी से अकबरापुर, कुछ उत्तर शिवली गाँव है और चार मील गंगा नहर के पार शिवराजपुर है। बड़ी सड़क पर गंगा के सरायघाट से तीन मील दूर और कानपुर से इक्कीस मील दूर शिवराजपुर व्यूह का केन्द्र था।

॥

तात्या टोपे की अकबरपुर स्थित सेना सुचंडी की ओर बढ़ते ही वाइंडहम आगे बढ़े और पांडु नदी के किनारे दोनों सेनाएँ आमने सामने आ गईं। वाइंडहम ने तात्या का व्यूह देखा! करीब-करीब सूखी पड़ी पांडु नदी के किनारे किनारे ढाई हजार पैदल सिपाही, पाँच सौ घुड़सवार और छह बड़ी तोपें अंग्रेजों को पीसने के लिये तैयार खड़ी थीं!

वाइंडहम ने हमला करने का बिगुल फूँका और उधर तात्या टोपे ने तोप का एक गोला अपने हाथ से दागकर अपने सिपाहियों को ललकार कर कहा—"वीरो, दिखला दो। इस देश में फिरंगी नहीं रह सकते। इस देश-माता की लाज तुम्हारे हाथों है!"

तात्या की इस ललकार के साथ ही सिपाही दुश्मन से टकरा गए।

तोपें गरज उठीं। बन्दूकें गड़गड़ने लगीं। सिपाहियों के सामने घने पेड़ों की कतारें थीं। इनकी आड़ में तात्या एक टुकड़ी लेकर दाहिनी ओर खिसकता गया, खिसकता गया और सहसा दाहिनी ओर से भीषण वेग के साथ अंगरेजी सेना पर टूट पड़ा।

वाइंडहम तात्या का युद्ध-कौशल देख घबरा गए। तात्या का यह अचानक

आक्रमण कोई भीषण क्षति कर सके इससे पूर्व ही उन्होंने दाहिने भाग की अपनी सेना पीछे हटा ली।

अंग्रेजी तोपें भी शान्त न थीं। गोरी पलटन पूरी ताकत के साथ लड़ रही थी। किन्तु तात्या की बड़ी तोपों के गोले उसे पीछे ढकेल रहे थे। दाहिनी भाग की गोरी सेना को तेजी से पीछे हटते देख तात्या टोपे ने घुड़सवारों को संकेत किया।

कुछ ही देर की घमासान मार-काट के बाद गोरी पलटन भागी और पास ही खड़े ईटों के भट्ठों की आड़ में रुक गई। तात्या ने खदेड़ा। ईटों के भट्ठों की आड़ का सहारा ले गोरी पलटन ने सिपाहियों का आक्रमण झेला, पर अधिक देर टिक सकने का साहस न था।

सेनापति वाइंडहम ने अपनी सेना पीछे हटा ली। भागने के अतिरिक्त दूसरा चारा न था।

❀

चिन्तित सेनापति वाइंडहम को सहारा मिला। लखनऊ से आने वाली फौज ने उन्हें आश्वासन बँधाया। समाचार मिला कि लखनऊ से अंग्रेजी सेना सहायतार्थ चल पड़ी है। इस समाचार से सेनापति को प्रसन्नता हुई, पर साथ ही साथ यह चिन्ता भी हुई कि क्या इस सेना के आने तक वे कानपुर बचाए रखेंगे। कुछ भी हो, तात्या का बढ़ाव रोकना है।

तात्या का रण-कौशल अपनी आँखों देख दंग थे वे। अगर तात्या इसी चतुराई के साथ लड़ता रहा तो उसे जीत सकना मुश्किल है। उसकी सिपाही शक्ति, उसकी तोपें देखकर वे दंग थे कि कानपुर की पहिली लड़ाई में हारकर भागने वाला तात्या कहाँ से इतना बलशाली होकर आ गया!

दूसरे दिन आक्रमण की आशा कम थी। सेनापति को यह विश्वास हुआ कि जीत की खुशी में सिपाही सेना आज आनन्द मनावेगी, पर तात्या कमजोर खिलाड़ी न था। शत्रु के कमजोर पड़ने पर एक क्षण भी गँवाना उसने सीखा न था।

शिवली और शिवराजपुर की सिपाही सेनाओं को बायें-दायें आक्रमण करने का आदेश दे सामने से स्वयं आक्रमण करने वह पौ फटते ही आ कूदा। उसके

साथ चलने वाली भारी तोप ने फिर एक बार गरजकर अंग्रेजों को उनके काल के आने की सूचना दी ।

तोप की आवज सुन सेनापति वाइंडहम सँभले और मुकाबले के लिए तैयार हुए । तोपें आगे बढ़ीं और उसके बाद सिपाही सेना को रोकने अंग्रेजी पलटन बढ़ी । तात्या ने तोपों की ही सीध में अपनी टुकड़ी के साथ मुकाबला कर गोरी पलटन को उलझाए रखा । इसी वक्त शिवराजपुर और शिवली की टुकड़ियाँ बाँए-दाएँ से टूट पड़ी । गोरी पलटन बुरी तरह घिर गई । वाइंडहम घबड़ा गए । उन्हें कुछ न सूझ पड़ा । काफी सँभालने की कोशिश करने पर भी जब उन्होंने पीछे की ओर से भी एक सिपाही टुकड़ी को तोपों से लैस बढ़ते देखा तो अपनी सेना को भागने का हुक्म दिया ।

अंग्रेजी पलटन गिरती-पड़ती भागी । तात्या के सिपाहियों ने पीछा किया । एक क्षण के लिए भी गोरी सेना को खदेड़ना बंद न कर तात्या बढ़ता गया और उसने कानपुर शहर में प्रवेश पा लिया । गोरी सेना भीषण हानि उठाकर गिरती-पड़ती, हथियारों, तोपों को छोड़ किसी प्रकार बहुत थोड़ी युद्ध सामग्री के साथ मिट्टी के किले में आश्रय लेकर आत्मरक्षा के लिए तैयार होने लगी ।

गोरी सेना की युद्ध सामग्री तथा पड़ाव पर उनकी छोड़ी अन्य वस्तुएँ सिपाहियों के हाथ लगीं । आवश्यक वस्तुओं पर कब्जा कर शेष वस्तुएँ फूँक दी गईं । तात्या टोपे की सेना ने बीबीगंज से लेकर गंगा किनारे तक कानपुर पर अपना अधिकार कर लिया । गंगा किनारे तात्या टोपे ने मोर्चाबंदी कर ली ।

मिट्टी के किले पर भी उसका आक्रमण प्रारंभ हो गया । सेनापति वाइंडहम को विश्वास हो गया अब जीत सकना मुश्किल है ।

मुहम्मद अली के आश्वासन के अनुसार तात्या टोपे ने न गंगा की नहर पार की और न ही नावों का पुल तोड़ा, क्योंकि इसी रास्ते से लखनऊ की सिपाही सेना उसकी मदद के लिए आ सकती थी । भाग्य में कुछ और ही था ।

❀

वाइंडहम अन्तिम युद्ध की तैयारियाँ कर रहे थे और उधर गंगा तीरे अपनी मोर्चाबंदी किए तात्या टोपे लखनऊ से अपने साथियों के आने की प्रतीक्षा कर

रहा था। सहसा गंगा के उस पार उसने धूल उड़ती देखी। सेना आते देखकर तात्या टोपे की प्रसन्नता का ठिकाना न रहा। एक नया नक्शा उसकी आँखों के आगे झूल गया पर यह नक्शा अधिक देर ठहर न सका।

दूत ने खबर दी।

"अंग्रेजी सेना है!"

"अंग्रेजी सेना?"

"हाँ!"

तात्या टोपे के माथे पर सिकुड़नें पड़ गईं। अंग्रेजी सेना के लखनऊ से आने की आशा कदापि न थी। इस पर भी तात्या ने साहस न छोड़ा और वह युद्ध के लिए तैयार हो गया। नावों के पुल के पास उसने तोपें खड़ी कर दीं। अंग्रेजी सेना के आने की तैयारियों के अनुसार व्यूह रचा जाने लगा।

सेनापति कैम्पवेल के नेतृत्व में कप्तान पील अपनी तोपों के साथ नावों के पुल से बढ़े। कप्तान पील की बड़ी-बड़ी तोपों की गोलाबारी के आगे तात्या की तोपें बेकार होने लगीं। तात्या ने नावों के पुल पर आक्रमण कर दिया। पुल टूट न सका। सेना आगे बढ़ती आई। दूसरे तट से भी डोंगियाँ छूटीं और गोरे सैनिकों ने बंदूकों की बौछार से तात्या टोपे के गोलंदाजों को परेशान करना शुरू कर दिया। तात्या को विवश होकर अपनी तोपें पीछे हटा लेना पड़ीं।

❀

सेनापति कैम्पवेल रात के अन्धकार में कुछ चुने हुए सैनिकों के साथ मिट्टी के किले की ओर बढ़ गए। सेनापति वाइंडहम से मिलने के लिए उन्होंने अपने प्राण हथेली पर रख लिए। रात के अँधियारे में वे किले के निकट आए और रस्सी के सहारे किले में उतर गए।

सेनापति वाइंडहम स्नेहाश्रु भर सेनापति कैम्पवेल से मिले। बड़े ही मौके पर पहुँचकर कैम्पवेल ने सेनापति वाइंडहम को बचाया अन्यथा सेनापति ह्वीलर का भाग्य उनके भी सिर पर लटक रहा था। वाइंडहम कैम्पवेल के साथ बात करने में लग गए।

युद्ध की स्थिति की अब तक की सारी कार्यवाही उन्होंने कैम्पवेल के सामने

पेश की और दोनों ने मिलकर युद्ध की योजना बनाई। तय हुआ कि सेनापति वाइंडहम किले से निकलकर हमला करें और उस तरफ से वे भी आगे बढ़ें।

योजना बनाकर सेनापति कैम्पबेल चुपचाप किले से खिसक गए।

*

लखनऊ से आयी अंग्रेजी सेना को देख स्वयं तात्या टोपे के साथ-साथ सिपाही भी चिन्ता में पड़ गए। लखनऊ से यकायक यह सेना कैसे आ गई? इसका अर्थ स्पष्ट है कि लखनऊ पर अंग्रेजी सेना का अधिकार हो गया है। लखनऊ में अंग्रेजी-अमलदारी कायम हो गई है। तभी तो यह सेना कानपुर की ओर आई। अंग्रेजी सेना के इस हठात् आगमन से सिपाहियों में निराशा की लहर दौड़ गई। उत्साह क्षीण सा हो गया। स्वयं तात्या टोपे की समझ में न आ रहा था कि हठात् यह दृश्य परिवर्तन कैसे हो गया? अब तक के समाचारों से उसे यही मालूम था कि लखनऊ में सिपाहियों का ही कब्जा है और गोरी सेना भारी हानि उठा रही है। इस पर भी लखनऊ से यह गोरी पलटन कैसे आ गई?

तात्या टोपे मुकाबले पर डट गया। उसने बड़ी ही चतुरायी और कुशलता के साथ व्यूह रचना की। मिट्टी के किले में घिरी अंग्रेजी सेना का भी उसने पूर्ण ध्यान रक्खा। क्योंकि उसे इस बात का पूरा भरोसा था कि ये अंग्रेज किले से निकलकर अवश्य ही हमला करते हुए आने वाली अंग्रेजी सेना से मिलने का प्रयास करेंगे।

अपने अधिकृत क्षेत्र में उसने एक क्षण भी विश्राम न कर अपना कार्य जारी रखा।

अंग्रेजी सेना बढ़ी आ रही थी!

तात्या फिर मुकाबले आया।

एक बार फिर निर्णय की बेला आयी।

*

भारत के सेनापति कैम्पबेल ने रोगियों, घायलों और स्त्रियों बच्चों को कानपुर रोकना ठीक न समझा। रक्षित सेना के साथ उन सबको इलाहाबाद भेज दिया।

युद्ध की तैयारी कर सामने आए। कानपुर का शहर और गंगा-किनारा सिपाहियों के कब्जे में था। उनकी संख्या भी अधिक थी। सेनापति वाइंडहम को परास्तकर भगा देने के कारण उन सबके मन में उत्साह भरा था। सारी परिस्थिति को ध्यान में रखते हुए प्रधान सेनापति ने अपना व्यूह बनाया।

अंग्रेजी पलटन के बाँए, शहर का किनारा और गंगा थी। बीच में ऊँचे पेड़ और खंडहर थे। पीछे शहर की बस्ती थी। सिपाहियों की टुकड़ी का बाँया हिस्सा और बीच का भाग मजबूत था। दाँया भाग जान-बूझकर सिपाहियों ने कमजोर ही रक्खा था। उस ओर घने वृक्ष और गंगा का किनारा बचाव के लिए काफी था। बीच के हिस्से में शहर था। दाहिनी ओर खुला मैदान।

प्रधान सेनापति ने अनुमान लगाया, जो इस दाएँ बाजू जोर का हमला किया जाय तो बीच दायीं ओर से जब तक सेना बढ़ेगी तब तक इस ओर के सिपाहियों को हराया जा सकता है। इस भाग पर अधिकार होने से कालपी की दिशा में खड़ी सेना कानपुर की सेना से न मिल सकेगी।

प्रधान सेनापति ने अपनी पाँच हजार पैदल सेना, छः सौ सवार और पैंतीस तोपें तात्या के पच्चीस हजार सिपाही, चालीस तोपों के मुकाबले खड़ी की। ग्वालियर की चारों गोलंदाज टुकड़ियाँ भी बागियों के साथ थीं। प्रधान सेनापति ने युद्ध का आदेश दिया।

दोनों पक्ष भिड़ गए।

अंग्रेजी सेना ने पूरे जोर के साथ तात्या टोपे की सेना की दायीं बाजू पर हमला किया। कप्तान पील ने अपनी सारी तोपों का रुख इसी ओर रखा। दायीं बाजू पर ही तोपों की भयंकर मार के आगे सिपाही ठहर न सके और थोड़ी ही देर में उनको भाग जाना पड़ा। दायीं बाजू की सेना की मदद के लिए बढ़ने वाली अन्य टुकड़ियों को शेष अंग्रेजी पलटन ने रोक रखा।

दायीं बाजू प्रधान सेनापति अपना अधिकारकर तात्या टोपे की सेना के ठीक बीचों-बीच आ गए। ऐसा करके उन्होंने बड़ा भारी खतरा मोल लिया था। चक्की के दो पाटों में गेहूँ की तरह पिस जाने की बात थी। चतुर सेनापति ने दूर की ही सोचकर ऐसा व्यूह चला था।

इस स्थिति में आते ही कप्तान पील ने अपनी तोपों को, संकेत पाते ही दो

भागों में बाँट दिया। तोपों से दो विपरीत दिशाओं में भयंकर गोलाबारी होने लगी और अंग्रेजी पलटन सुरक्षित खड़ी रही। इसी क्षण प्रधान सेनापति का एक और संकेत था, घुड़सवार टुकड़ी पूरे वेग के साथ टूट पड़ी। एक दिशा के सिपाही जैसे ही भागे, खड़ी सेना ने पीछा किया। गंगा तट की ओर का यह आक्रमण बड़ा खतरनाक हुआ। जैसा सेनापति ने सोचा था, वैसा ही हुआ।

इस दिशा के सिपाहियों के पास भागने के लिए मैदान न था। गंगा पीछे थी। फलतः वे दूसरी ओर भागने लगे। कुछ गंगा में जान बचाकर भागने लगे। देखते-देखते सेना एक ही दिशा में हो गई। प्रधान सेनापति ने यह चाल चलकर अपना स्थान सिपाहियों को दे दिया और सिपाहियों का स्थान स्वयं ले लिया। इस अचानक दिशा परिवर्तन से तात्या टोपे का सारा व्यूह बिगड़ गया। सिपाही की संख्या कई गुनी अधिक रहने पर भी उनके पाँव जम ही न रहे थे।

❀

तात्या टोपे तुरन्त मैदान से हट गया। उसने यह खूब समझ लिया था कि अगर अबकी इस युद्ध में विजय हाथ से गई, तो फिर कभी न आवेगी। एक प्रकार से यह सिपाहियों के भाग्य का अंतिम निर्णय था। अगर अब भी अंग्रेजों को न हटाया जा सका, तो फिर कभी न हटाया जा सकेगा। हमेशा के लिए सिपाहियों का और उनके नेताओं का सितारा डूब जायगा।

तात्या दौड़ता गया। लगातार दौड़ के बाद वह गन्तव्य स्थान पर रुका। घोड़े से कूदा और दौड़ पड़ा।

"नाना साहब..."

नाना साहब चौंक पड़े। अजीमुल्ला ने भी घबड़ाकर तात्या की ओर देखा। तात्या कभी इतना निराश दृष्टिगत न हुआ था।

नाना साहब जाने के लिए एकदम तैयार थे। अगर तात्या ने थोड़ी देर और कर दी होती, तो जाने कहाँ और किस दिशा में नाना साहब चले गए होते?

"क्या है तात्या?"

"नाना साहब इस वक्त आपको चलना होगा!"

"कहाँ?"

"युद्ध के मैदान में। आज का युद्ध हमारे भाग्य का निर्णायक है। इस युद्ध में आपको भी भाग लेना पड़ेगा।"

"तात्या..."

"नाना साहब यह जीवन-मरण का प्रश्न है। हमारी विशाल सेना थोड़ी सी अंग्रेजी पलटन के आगे घबड़ा गई है। उनके सेनापति ने एक विचित्र ढंग से हमारा व्यूह नष्ट कर दिया है।"

"अंग्रेज रण-कौशल में अकेले हैं तात्या!"—नाना साहब बोले—"यह कौम अपनी पैदायश से लड़ाकू है। हम आदमी के ईमान पर चलते हैं। ये तलवार पर चलते हैं। ईमान और तलवार की लड़ाई में देर होती ही है। हमारे भाग्य का फैसला आज नहीं, जरा देर से होगा, पर विश्वास रखो, फैसला हमारे ही पक्ष में होगा।"

"पर इस वक्त नाना साहब..."

"अच्छा! तुम कहते हो तो एक बार और सही। आओ अजीमुल्ला! एक बार फिर शतरंज खेलें।"

❀

पीछे हटते सिपाहियों को अनायास फुर्ती से बढ़ते देख प्रधान सेनापति चौंक पड़े। इससे पहिले कि वह इसका कारण समझ सकें, सिपाहियों की ओर से गगन-भेदी जयघोष गूँज उठा।

"नाना साहब की..."

"जय!"

"नाना साहब की..."

"जय!"

और प्रधान सेनापति ने देखा, एक घोड़े पर बैठा एक बूढ़ा महाराष्ट्र-वीर चला आ रहा है, तूफान सा। उसके तेज को क्षण भर गौर से देख कैम्पबेल ने सैनिकों को पीछे हटने का संकेत किया। अंग्रेजी पलटन पूरी शक्ति के साथ डट गई।

नाना साहब की अचानक उपस्थिति के कारण सिपाहियों में जैसे नया जीवन

आ गया। भयकर बंदूकबारी कर वह वेग से आगे बढ़े और अंग्रेजी सेना का पीछे हटना शुरू हो गया। अंग्रेजी फौज कालपी की दिशा में हट रही थी। कैम्पवेल ने परिस्थिति की गंभीरता को समझ गोलंदाज टुकड़ी को पेड़ों की आड़ में जाने का संकेत किया और पैदल टुकड़ी को पीछे हटने का ही इशारा किया।

जोश में भरे सिपाही पेड़ों की आड़ से भी आगे गोरी पलटन को खदेड़ लेते गए। अंग्रेजी पलटन के यकायक तेजी से हटने का कारण वे समझ ही न सके। जैसे ही वे आगे बढ़े पेड़ों की आड़ से तोपें बाहर आ गईं। इधर तोपें निकलीं, उधर पीछे हटती गोरी पलटन अनायास पीछे हटनाबंद कर प्रबल वेग से आगे दौड़ी। सिपाही घबड़ा गए। अनायास पीछे से तोपों के गोले फटने लगे।

सिपाही घबड़ा गए। कहीं उनकी ही तोपें तो उन पर हमला नहीं कर रही हैं? कुछ तो इस गड़बड़ी में और कुछ तोपों की मार की भयानकता के कारण सिपाहियों में उथल-पुथल मच गई। भारी संख्या में सिपाही काम आए। हताहत हुए और भगदड़ मच गई।

ब्रिटेन के माहिर प्रधान सेनापति कैम्पवेल के व्यूह-चक्र सिपाहियों की समझ से परे थे।

आक्रमण की गति-विधि न समझ सकने के कारण उनमें भगदड़ मची। युद्ध में केवल जोश ही काम नहीं देता। कौशल भी देखा जाता है। सिपाही जोश से लड़ते थे। अंग्रेज कौशल से। जोश पर कौशल की ही विजय होती है।

सिपाही सेना ठहर न पा रही थी। इसी समय नाना साहब को मैदान से हट जाना पड़ा। अजीमुल्ला घायल होकर गिर गया था। उसे मूर्छा अवस्था में उठाकर नाना साहब मैदान से हट गए। नाना साहब को न देख सकने के कारण सिपाहियों का जोश ठंढा पड़ गया।

शाम हो जाने पर भी युद्ध चलता रहा। अन्ततः सिपाही सेना तितर-बितर होकर भागी। ब्रिटिश सेना ने चौदह मील तक सिपाहियों को खदेड़ दिया।

❀

नाना साहब की गोद में अजीमुल्ला का सिर था। घायल अजीमुल्ला साँस तोड़ रहा था। नाना साहब ने चुप-चाप उसकी ओर देखा और मन ही मन ईश्वर

से उसकी आत्मा के लिए शान्ति की प्रार्थना कर उसका सिर जमीन पर रख खड़े हो गए।

नाना साहब की आँखें भर आयी थी। उनका हृदय करुण हो गया था। देखते-देखते अजीमुल्ला ने आखिरी हिचकी ली और उसके सुन्दर शरीर ने अपनी नश्वरता सिद्ध कर दी। नाना साहब ने इस स्थिति को पहले ही समझ लिया था। अतएव सारा बन्दोबस्त कर लिया था।

अजीमुल्ला का शव उठा और चुप-चाप गंगा में बहा दिया। नाना साहब ने उसे स्वयं अपने हाथ का सहारा दिया और तब उनकी आँखों के आँसू और न थम सके। वह ही गए। चुप-चाप वह लौटे और बिठूर के रास्ते बढ़े, पर बिठूर का रास्ता रुका हुआ था।

चुने हुए सैनिकों के साथ उन्होंने अपना रास्ता बदल दिया।

❀

सिपाहियों को भागते रास्ता न सूझा। जो जिस ओर भाग सका, उसी ओर भाग गया, कोई इधर गया, कोई उधर। अधिकांश सिपाही गंगा पार कर भागे पर इन सिपाहियों को बुरी तरह हानि उठानी पड़ी। अधिकांश गंगा पार करनेवाले सिपाही मारे गए। उस ओर से सेनापति होपग्रांट की पलटन चली आ रही थी। इस पलटन से मुठ-भेड़ हो गई और इस प्रकार एक और करारा धक्का खाकर सिपाही छिन्न-भिन्न हो गए।

❀

कलकत्ता में बैठे लार्ड कैनिंग अपनी पूरी बुद्धिमता के साथ देश की स्थिति सँभाल रहे थे। उसके सहयोगियों की प्रायः रोज बैठकें होतीं, जिनमें प्रतिदिन के आने वाले समाचारों पर विचार विमर्श होता और सलाह-मशविरे के बाद स्थिति के अनुसार लार्ड कैनिंग भिन्न-भिन्न स्थानों को उचित निर्देश भेजते।

दिल्ली पर अंग्रेज अधिकार हो जाने के कारण एक बार पुनः सबके मन में इस बात का पक्का विश्वास हो गया कि हिन्दोस्तान से अंग्रेजी-अमलदारी अब नहीं उठेगी। इसी समाचार के अनुसार लार्ड कैनिंग ने विलायत भी सूचना भेज दी

और लिख दिया कि विलायत से अब अंग्रेजी-सेना भेजने की आवश्यकता नहीं। यहाँ की ही सेना के बल पर स्थिति सँभाल ली जायगी।

कानपुर से तात्या टोपे के हारकर भाग जाने के समाचार से लार्ड कैनिंग और कलकत्ता के अंग्रेजों को प्रसन्नता हुई। लखनऊ से हटकर अंग्रेजी सेना ने ठीक ही किया। आस-पास का विद्रोह दबा देने के बाद लखनऊ पर कब्जा करते कितनी देर! विद्रोह एक बिन्दु से फैलता है और विद्रोह के फैलाव को चारों ओर से घेर कर एक बिन्दु के पास समाप्त कर दिया जाता है।

दिल्ली से होपग्रांट, थिग्रेड बढ़ ही चुके थे। हडसन को भी लखनऊ की ओर बढ़ने का आदेश दिया गया। दिल्ली फतह के बाद लखनऊ कानपुर दमन और उसके बाद झाँसी, जगदीशपुर से निपटा जायगा। एक के बाद एक का दमन। चारों ओर से एक साथ मुकाबला ठीक न पड़ता। साथ ही लार्ड कैनिंग अंग्रेजी टुकड़ियों को इस ढंग से बढ़ा रहे थे कि बागियों के बड़े-बड़े नेता अपनी सिपाही शक्ति के साथ एक दूसरे न मिल पायें। अगर ऐसा होता है, तो इस सम्मिलित शक्ति का मुकाबला मँहगा पड़ेगा।

लार्ड कैनिंग का हर कदम मजबूती से पड़ रहा था। देश का मानचित्र हर समय उनकी आँखों के सामने होता और उस मुताबिक उनका हर कदम उठ रहा था। एक शक्तिशाली संगठन सुनियोजित योजना के साथ इस विद्रोह का दमन कर रहा था, तो इधर-उधर बिखरे सिपाही इस शक्ति का मुकाबला कर रहे थे। इस कारण उनका जोश, उनकी शक्ति अधिक होने पर भी उनके कदम पीछे ही हट रहे थे। बड़ी संख्या में बिखरी सिपाही-शक्ति, छिन्न-भिन्न हो थी।

❀

कानपुर सिपाहियों के हाथ से जाता रहा। फिर अंग्रेजी अमलदारी कायम हो गई। कानपुर का शासन सिविलियन अंग्रेजों के हाथ ठीक-ठाककर प्रधान सेनापति ने तत्काल अपने सहायकों को इकट्ठा किया। सेनापति थिग्रेड, होपग्रांट, वालपोल, सीटन उपस्थित थे।

सेनापति होपग्रांट फतेहगढ़ और मैनपुर से सिपाहियों को खदेड़ आए थे, पर वहाँ के शासन भार की कोई उचित व्यवस्था न होने के कारण वहाँ फिर सिपाही

आ गए थे। इसका समाचार प्रधान सेनापति तक आ चुका था। फर्रुखाबाद का भी नबाब सिर उठाए हुए था।

"मिस्टर सीटन और आप मिस्टर वालपोल मैनपुरी फतेहगढ़ की ओर बढ़ें। इस प्रकार आप दोनों पुनः फतेहगढ़ में मिलें और फर्रुखाबाद के लिए..."

"दिल्ली से कैप्टन हडसन भी सेना लेकर आ रहे हैं। वे फर्रुखाबाद सँभाल लेंगे!"

"यह भी ठीक है!"

"आप लोग यहाँ सँभालिए। मैं लखनऊ देखता हूँ। कानपुर के इस समाचार से वहाँ घबराहट अवश्य फैली होगी और इस का फायदा हम लोगों को उठा लेना चाहिए!"

"अवश्य...लेकिन लखनऊ में आपको काफी फौज लेकर बढ़ना होगा!"

"मैं वहाँ पहुँचता हूँ तब तक आप लोग भी अपने-अपने क्षेत्र का विद्रोह दबाकर शीघ्रातिशीघ्र उस ओर आइए। हम लोगों की सम्मिलित शक्ति इस बार लखनऊ पर कब्जा कर लेने के लिए पर्याप्त होगी!"

योजनानुसार कार्य प्रारम्भ हो गया।

❀

मौलवी अहमदुल्ला ने हाथ उठाकर उच्च स्वर से कहा—"लखनऊ में जब तक एक भी सिपाही जिंदा है, अंग्रेजी झंडा फहराने नहीं पायेगा। तुम भी किस फेर में पड़े हो, मुहम्मद अली!"

"वह तो ठीक है!"—मुहम्मद अली ने कहा—"मर जाना और बात है। मकसद पूरा न होना और बात है!"

"मरना हमारे हाथ है और करम अल्लाह के हाथ!"

"लेकिन..."

"तुम कहना क्या चाहते हो? खुलकर कहो न!"

"मम्मू खाँ से मैंने जो कहा था, वही मैं आपसे कहूँगा। अंग्रेजी सेना इस वक्त दो हिस्से में बँटी हुई है। एक कानपुर गई है, दूसरी यहाँ पड़ी है। बाकी यहाँ से कानपुर तक का रास्ता साफ है। इस पलटन का सफाया कर क्यों न हम कानपुर

के बागियों से मिलें और उनके साथ मिलकर कानपुर के पास पहुँचती [बाकी] गोरी सेना का सफाया कर दें !"

"...... .."

"इस तरह से अंग्रेजी राज उठ जाता है। हम सब मिलकर आगरा पर कब्जा करते हुए दिल्ली बढ़ें। दिल्ली पर हम फिर कामयाब हो सकते हैं !"

मौलवी हँस पड़े—"लखनऊ के नबाब को तुम दिल्ली का बादशाह बनाना चाहते हो ! तुम्हारी इस वफादारी से हम लोगों को खुशी होगी !"

"लखनऊ के नवाब को दिल्ली का बादशाह बनाने की बात नहीं है बल्कि बादशाह को अंग्रेजों की कैद से छुड़ाकर उन्हें फिर दिल्ली के तख्त पर बैठाना।"

"तुम्हारा दिमाग खराब है !"

"......"

"सुनो। दिल्ली बादशाह को दुनिया की कोई ताकत सिवाय एक उस परवर दिगार के गिरफ्तार नहीं कर सकती। यह सब अंगरेजों की फैलाई बातें हैं ! हमें इन सब पर यकीन नहीं करना चाहिए। यह अंगरेजों का फैलाया जाल है, ताकि हम सब लोग इस जाल में उलझकर अपनी हिम्मत खो बैठें !"

"मौलवी साहब, मैं आपसे अर्ज करूँगा कि दिल्ली की खबर एक दम सही है। अगर इस..."

मौलवी अहमदुल्ला ने हँसकर कहा—"तुम अपने ये जासूसी हथकंडे अपने पास रखो। असलियत क्या है, इसको एक-एक सिपाही जानता है !"

मुहम्मद अली का मन निराशा से भर गया। उसका दिल एकदम टूट गया। भविष्य का अन्धकार उसकी आँखों के आगे झूल उठा।

६३

कानपुर के युद्ध की विजय के समाचार ने आस-पास बिखरे सिपाहियों की हिम्मत तोड़ दी। अंग्रेजी पलटन का दबदबा चारों ओर फैलने लगा। सिपाहियों की एकत्रित शक्ति को बड़ा धक्का लगा। छोटी-छोटी टुकड़ियों में बँटकर केवल लूट-खसोट को ही अपना उद्देश्य बनाकर सिपाही भागते फिरने लगे। अधिकांश सिपाही लूट-पाटकर अपने-अपने घरों की ओर भागने लगे। शीघ्र ही मजबूत होने वाली

अंग्रेजी अमलदारी में वह अपने को निर्दोष बनाने का षड़यंत्र करने लगे। बगावत की बातों ने दबना शुरू किया और सबको अपनी-अपनी जान बचाने की फिक्र सताने लगी।

कर्नल सीटन जब अपनी छोटी सी टुकड़ी के साथ आगे बढ़े, तो इन्हीं सब कारणों से सिपाही भागने लगे। उनकी वही हालत होने लगी, जो हालत चोर-डाकुओं के एक गिरोह की पुलिस-दल सामने देखने पर होती है। सिपाही भागने लगे। कुछ मुकाबले पर हुए भी तो मामूली सी लड़ाई के बाद कान-पूँछ उठाकर भाग गए।

कर्नल सीटन आगे बढ़ते गए।

अकबरपुर पर बड़ी सरलता से उनका अधिकार हो गया। इटावा के आस-पास के भी बागी भाग गए। इटावा में अंग्रेज परोक्ष रूप में मजबूत थे ही। इटावा से कर्नल सीटन मैनपुरी बढ़े।

*

"तात्या टोपे हार गया?"

"हाँ!"

सन्नाटा छा गया। सूबेदार एक दूसरे का मुँह ताकने लगे। यह समाचार उन सबके लिए खतरे की सूचना थी।

"लखनऊ भी हाथ से जायेगा!"

"कैसे?"

"अब अंग्रेजी पलटनें लखनऊ की तरफ बढ़ रही हैं। कानपुर जब अंग्रेजों के आगे नहीं टिका, तो लखनऊ क्या टिकेगा?"

"पर..."

"इस समय सोचने का अवकाश नहीं है। अंग्रेजी पलटनें भी इस तरफ आ रही हैं। जो फैसला करना हो, जल्दी करिये!"

"हम लड़ेंगे!"—तेजसिंह ने गंभीर स्वर में कहा।

"....."

"कायरों की तरह भागने या अंग्रेजों की कैद में पड़ने से अच्छा है—लड़ते-लड़ते मर जाना!"

सब खामोश रह गए। राजा तेजसिंह की बात काटने का साहस किसी में न था। लड़ने की तैयारियाँ होने लगीं। गोरों के आने का समाचार पाकर बहुत से सिपाही तो भाग ही गए, फिर भी कुछ लोग लड़ने के लिये तैयार हुआ।

हडसन की सैनिक टुकड़ी ने मैनपुरी की सीमा में प्रवेश करते ही युद्ध की चुनौती सुनी। तोपें आगे बढ़ा दी गईं। बड़े वेग से मुट्ठी भर सिपाही सामने आए। गोरखा-सैनिक जूझे और कुछ ही घंटों में बहुत से सिपाही मारे गए अथवा भाग गए। युद्ध का निर्णय हो गया। राजा तेजसिंह भी मारे गए।

मैनपुरी पर अपना कब्जा कर हडसन रुक गए।

दो दिन बाद ही कर्नल सीटन की टुकड़ी भी मैनपुरी आ गई।

दोनों की सेना मिलकर फतेहगढ़ की ओर बढ़ी।

"किसकी पलटन है?"

"गोरी पलटन! बड़ा हाकिम कैम्पवेल आया!"

"बड़ा हाकिम! सबसे बड़ा?"

"हाँ, काली नदी के उस पार है!"

"तो सबसे पहिले हमें पुल तोड़ देना चाहिए। जल्दी..."

रात में ही सिपाहियों की एक टुकड़ी पुल तोड़ने आगे बढ़ी पर अंगरेजी पलटन इसके लिए पहिले से ही सावधान थी! सिपाही पुल का एक ही खम्भा तोड़ सके और उन सब पर हमला हो गया। सिपाही भाग खड़े हुए।

सवेरा होते ही गुरसागंज के मीरा सराय नामक स्थान से प्रधान सेनापति ने अपनी पलटन आगे बढ़ाई। पुल के टूटे भाग की मरम्मत कर सेना काली नदी पारकर फतेहगढ़ की सीमा में आयी। इसी समय कर्नल सीटन, कर्नल हडसन भी आ गए। अंग्रेजों की सम्मिलित शक्ति फतेहगढ़ पर कब्जा करने बढ़ी।

नदी पार के उस किनारे खुदरगंज के मैदान में सिपाही मुकाबले के लिए तैयार खड़े थे। फर्रुखाबाद के नवाब की पलटन भी आ गई थी। सिपाहियों के पास एक तोप थी और वह भी एक ऊँचे टूहे पर बड़े निशाने से रखी थी। जैसे ही अंग्रेजी पलटन सामने आयी उस तोप का मुँह खुला और अंगरेजी सेना को क्षति पहुँचाने लगी।

कप्तान पील ने अपनी तोपें इस तोप की सीध में कीं। कई तोपों की एक साथ मार के आगे एक अकेली तोप कहाँ तक टिकती! निकम्मी हो गई। तोप के निकम्मी होते ही सिक्ख घुड़सवार अपनी तलवारें खींचकर सिपाहियों पर टूट पड़े। भागे सिपाही कट-कटकर गिरने लगे।

सिपाही प्राण बचाकर फतेहगढ़ से रुहेलखण्ड की ओर भागे।

अंग्रेजी पलटन किले के सामने आ गयी। किले का दरवाजा बन्द था और किले में एकदम सन्नाटा छाया था। कैम्पबेल ने दरवाजा तोड़ने का हुक्म दिया। दरवाजा तोड़ दिया गया। किले में कोई न था। सिपाहियों की छोड़ी हुई सम्पत्ति पर अंगरेजी पलटन का अधिकार हुआ।

*

सिपाहियों के हारकर भागने और अंगरेजी पलटन के आने से नगर में सन-सनी मच गई। सिपाहियों की टुकड़ियाँ शहर में घूमने लगीं और फर्रुखाबाद के नबाब की खोज करने लगीं, क्योंकि बन्दी सिपाहियों ने कहा था कि अब नबाब शहर में ही कहीं घिर गया होगा। वह भाग नहीं सकता।

तलाशी लेने के साथ-साथ नगर में डौंड़ी पीट दी गई कि अगर शहर में छुपे हुए नबाब का पता न लगेगा, तो पूरा शहर लूटा जायगा। किले में रुकी हुई अङ्ग-रेजी पलटन शहर को बरबाद कर देगी। इस घोषणा से घबड़ाकर नबाब का पता लोगों ने बतला दिया।

एक मकान में नबाब पकड़े गए।

पलटन के आदमी घसीटकर ले गए। नबाब को हडसन के सामने पेश किया गया। अधेड़ उम्र का घबड़ाया हुआ एक मुसलमान।

"इसे चारपायी से बाँध दो!"

नबाब को चारपायी से बाँधने और एक सुअर को काटने का हुक्म दे कर्नल हडसन ने एक भंगी को भी बुलाया।

नबाब को कसकर चारपायी से बाँधा गया। सुअर का खून उसके सारे शरीर पर पोतने के साथ-साथ जबर्दस्ती उसका जबड़ा खोल उसे रक्त पिलाया गया। अधेड़ नबाब बेहोश हो गया। इस पर भी उसे बेंत मारने का हुक्म भंगी को दिया गया। भंगी ने बेंतों की मार से नबाब की चमड़ी उधेड़ दी।

"इसे शहर के चौराहे पर रख आओ!"

अधमरा नवाब शहर के चौराहे पर उसी खाट पर रख दिया गया। नगर के सैकड़ों नागरिकों ने नवाब की इस अन्तिम दशा को देखा और सारा शहर भय से, आतंक से मुर्दा बन गया। रात भर की कष्टप्रद पीड़ा के उपरान्त नवाब ने साँस तोड़ दी।

❀

नवाब के महल में अंग्रेजी फौज घँस गई। वैभव से इठलाने वाले महल में दो-तीन बूढ़ी औरतों के अतिरिक्त और कोई न था। वैभव और विलास के चिन्ह ही अवशेष थे। मैना, तोते, बिल्ली, कुत्ते भूखे पड़े थे। जंजीर से बँधा हाथी भूख के कारण रह रहकर चिंग्घाड़ उठता था। भूखे घोड़े बार-बार टापों से जमीन खोदने का प्रयत्न करते थे। नीलगाय, बारहसिंगे, बन्दर, बतखें सभी की दुर्दशा हो रही थी। उनकी खबर लेने वाला कोई न था। सब जहाँ के तहाँ बंद पड़े थे। महल की देखभाल करने वाला कोई न था। अंग्रेजी पलटन के घँसते ही महल की तोड़-फोड़ और लूट-पाट शुरू हो गई।

पलटन के सिपाही बहुमूल्य वस्तुएँ उठा ले गए। खाने योग्य जानवर, पक्षी भून दिए गए और बाकी छोड़ दिए गए। महल कई स्थानों पर तोड़-फोड़ दिया गया। अंग्रेजी पलटन ने दीवारों और कला को भी अपना दुश्मन माना।

❀

रामगंगा के पुल से रुहेलखंड का रास्ता था। फतेहगढ़ में प्रधान सेनापति का शिविर पड़ गया और पुल पर कड़ी नजर रखी जाने लगी ताकि इधर के बागी रुहेलखंड न भाग सकें और उस ओर के बागी इस ओर न आ सकें।

चारों ओर से मोर्चेबन्दी जारी थी। प्रधान सेनापति अपने सहयोगियों के साथ जी तोड़कर बागियों को कुचल देने की योजना में लगे थे। चिंगारियाँ एक ओर दबतीं तो दूसरी ओर भड़क उठतीं। प्रधान सेनापति अपने सहयोगियों के साथ बड़ी ही धैर्यता से सारी स्थितियों का सामना कर रहे थे।

शमसाबाद और पालामऊ की ओर बागियों की हलचल जारी थी। पालामऊ

का तहसीलदार अपने को स्वतंत्र घोषित कर राज्य कर रहा था। पालामऊ पर उसने अपना अधिकार जमा रखा था। उसकी शक्ति प्रायः नहीं के बराबर थी। फिर भी सेनापति रामगंगा के पुल पर ही दृष्टि रखे थे। पालामऊ के तहसीलदार को तो वे चाहे जब दबा सकते थे, पर उसके साथ साथ वे किसी और बड़े शिकार की टोह में थे।

*

पालामऊ का तहसीलदार निकट ही अंग्रेजी फौजों का पड़ाव देख घबड़ा गया। लखनऊ के घिर जाने के समाचार से भी उसकी हिम्मत टूट गई। रुहेलखंड के सिपाहियों के भरोसे ही उसने अपना झंडा फहरा रखा था। अंग्रेजी पलटन का समाचार रुहेलखंड के सिपाहियों को भेज दिया गया! पालामऊ के तहसीलदार की सहायता के लिए और साथ ही अंग्रेजों को खदेड़ भगाने के उद्देश्य से भारी संख्या में रुहेलखंड से सिपाही आगे बढ़े।

कूच का डंका बजा और लगभग पाँच हजार सिपाही तोपों और हथियारों के साथ शमसाबाद आ गए। प्रधान सेनापति को खबर लगी। वह इसी मौके को उचित समझ सिपाहियों का सामना करने आगे बढ़े।

*

"अंग्रेज आ रहे हैं!"

"अल्लाहो अकबर।"

"हर हर महादेव!"

हिन्दू और मुसलमान सिपाही हरे झंडे के नीचे तैयार हो गए। शमसाबाद का शान्त वातावरण युद्ध की ललकार से काँप उठा।

सिपाही बड़े वेग से आक्रमण करने बढ़े। अंग्रेजी पलटन से टकरा गए। देखते-देखते युद्ध ने घमासान रूप धारण कर लिया। सिपाही बड़ी वीरता और जोश से दौड़े, पर अंग्रेजी पलटन ने उनका वार झेल लिया। चतुर प्रधान सेनापति की व्यूह-रचना में सिपाही बड़ी आसानी से फँस गए। अंग्रेजों की सैन्य शक्ति का भी सिपाहियों को कोई अनुमान न था। फलतः कुछ ही में देर युद्ध का

निर्णय हो गया। हाईलैंडरों की सहायता से प्रधान सेनापति ने शत्रुपक्ष की तोपों पर अधिकार कर लिया। बड़ी संख्या में सिपाही मारे गए, पकड़े गए और शेष भाग गए।

प्रधान सेनापति ने एक क्षण का भी विलम्ब न कर अपनी पलटन का रुख पालामऊ की ओर मोड़ दिया। विजय वाहिनी-पालामऊ आ धमकी और शाम होते होते पालामऊ पर भी अंग्रेजी झंडा फहराने लगा। प्रधान सेनापति ने संतोष की साँस ली।

तहसीलदार जीवित ही पकड़ लिया गया। प्रधान सेनापति ने उसे बागी घोषित किया और रात में ही उसको फाँसी दे पालामऊ की कोतवाली में लटका दिया। अंग्रेजी पलटन के आने के समाचार से नागरिक संत्रस्त हो गए। विजयोन्मत्त अंग्रेजी पलटन के सिपाहियों ने रात भर नगरवासियों की खूब दुर्दशा की। रात भर नगर में गुंडई, कत्ल, लूट का बाजार गर्म रहा। रात भर नगर में इंसानियत अपना सिर धुनती रही और हैवानियत का अट्टहास होता रहा।

सवेरा होते ही घटना का दौर ही बदल गया। हडसन सामने आया और सामूहिक फाँसियों का बाजार गर्म हो गया। पालामऊ की कोतवाली में लगे पेड़ पर फाँसियाँ दी जाने लगीं। लाशों को लटकाया जाने लगा। देखते-देखते एक सौ तीस आदमियों को फाँसी लगाकर उस दरख्त से लटका दिया गया।

नगर कराह उठा।

परिजनों, परिचितों की लाशों को दरख्त से झूलते देख नागरिक सिर धुन-धुनकर रोने लगे। कोतवाली के सामने कीड़ों मकोड़ों की तरह बिलबिलाती हुई नागरिकों की बड़ी भीड़ विलाप करने लगी। चारों ओर गोरे सैनिक संगीनें तान कर खड़े थे। आँसुओं के अतिरिक्त निहत्थे नगरवासियों के पास और कोई चारा न था।

जरा-जरा से अपराध के नाम पर लोगों की गिरफ्तारियाँ हो रही थीं और हडसन के निर्देशन पर क्षण-क्षण में मुकदमे का फैसला होता और एक ही सजा सबको दी जा रही थी।

फाँसी!

फाँसी!

दरख्त पर फाँसी देकर लाश लटकाने की जगह न रहने पर भी फाँसी की सजा देकर पेड़ पर लटकाने का हुक्म जारी थी। जल्लादों की कमी के कारण हडसन ने हाइलैंडरों की एक टुकड़ी को यह काम सौंपा।

"हर एक सैनिक को इस कार्य के लिए एक-एक स्वर्ण मुद्रा पुरस्कारस्वरूप दी जायगी।"

हाइलैंडरों की टुकड़ी कोतवाली आयी।

कार्य की रूपरेखा ज्ञात होते ही हाइलैंडरों के चेहरे सूख गए। हडसन के इस आदेश को मानने के लिए कोई तैयार नहीं हुआ।

"हम लोग फाँसी देने का काम नहीं करेंगे।"

"क्यों?"

"यह काम केवल जल्लाद का है।

हाइलैंडरों का मन दरख्त पर लटकती लाशों को देखकर क्षुब्ध हो गया था। जिस तरह से एक-एक मिनिट में फाँसी की सजा का क्रम चल रहा था और कोतवाली के बाहर खड़े लोग जिस तरह से छाती पीट-पीटकर रो रहे थे, वह सब करुणोत्पादक दृश्य था। फलतः एक भी हाईलैंडर इस काम के लिए तैयार नहीं हुआ।

❀

लखनऊ पर अपना पूर्णाधिकार स्थापित करने के लिए जी-तोड़ परिश्रम जारी था। कानपुर में सैन्य संग्रह का कार्य जारी था। जहाँ से जैसी भी सेना मिल रही थी, एकत्रित की जा रही थी। गोरे, सिक्ख, गोरखे फौज में आ रहे थे। भिन्न भिन्न स्थानों से सेना की टुकड़ियाँ आ रही थीं और लखनऊ पर आक्रमण करने के उद्देश्य से कानपुर में एकत्रित हो रही थीं।

युद्ध के नक्शे का रंग बदल रहा था।

उन्नाव में भी अंग्रेजी सरकार के तत्त्वावधान में सेना इकट्ठी हो रही थी। भारी भारी तोपों को तैयार किया जा रहा था। जैसे दिल्ली पर सबकी नजर थी, वैसे ही अवध की राजधानी लखनऊ की स्थिति थी। दिल्ली के मोर्चे के बाद अब लखनऊ का दूसरा कठिन मोर्चा था और इस मोर्चे में अपनी विजय पताका फहराने लिए तमाम अंग्रेजी ताकत पूरी तैयारियों के साथ खड़ी की जा रही थी।

कानपुर, उन्नाव के अतिरिक्त आस-पास के और भी अनेक क्षेत्रों में अंग्रेजी तैयारियाँ चल रही थीं और उन सबका लक्ष्य लखनऊ ही था। शतरंज के सारे मोहरे लखनऊ की ओर मोड़े जा रहे थे।

*

"अंगूर किसमिस, बेदाना, मिठाई वाला!"

"......"

"अंगूर किसमिस बेदाना।"

जोर का स्वर गूँजा। फेरीवाला सुन्दर डील-डौल का, काली मूछों वाला युवक आदमी था और सिर पर टोकरी रखे हुए एक ही नजर में बदमाश मालूम पड़ने वाला एक अधेड़ आदमी साथ था।

"अंगूर किसमिस, बेदाना!"

"ऐ फेरीवाला!"

"जी!"

"पास दिखलाओ!"

उसने पास दिखलाया। ब्रिगेडियर होप के दस्तखत से पास जारी किया गया था। ऐसे कई पास कई फेरीवालों को दिए गए थे जो उन्नाव के सैनिक पड़ाव में आकर अपनी वस्तुएँ बेचा करते थे। पास दिखलाकर फेरीवाला पड़ाव में चला गया।

आवाज लगा-लगाकर वह अपना सामान बेचने लगा। साथ ही उसकी पैनी निगाहें प्रत्येक वस्तु का बड़ी बारीकी से निरीक्षण भी करती जाती थीं।

"अंगूर किसमिस, बेदाना!"

"......"

"मिठाईवाला!"

आवाज सुनकर तम्बू से एक अंग्रेज बाहर आया। फेरी वाले को उसने आश्चर्य से देखा। सूरत-शकल से वह व्यापारी न मालूम पड़ता था। अंग्रेज के हाथ में एक अखबार था। सैनिक ने संकेत से उस फेरीवाले को पास आने कहा।

सामने आने पर उससे पूछा—"क्या बेचते हो ?"

"मिठाई, किसमिस, अंगूर, बेदाना !"—उसने स्पष्ट अंग्रेजी में उत्तर दिया।

"क्या नाम है तुम्हारा ?"

"जिमी ग्रीन !"

"तुम्हारा पास ?"

"यह रहा !"

पास देखकर उस सैनिक को विश्वास हो गया, पर उसकी शुद्ध अंग्रेजी पर आश्चर्य था। इसी बीच वह फेरीवाला बोल उठा—"क्या मैं आपके हाथ का अखबार देख सकता हूँ ?"

"क्यों ?"

"मैं गदर के संबंध में अंग्रेजी अखबारों की सम्मति जानने का इच्छुक हूँ !"—जिमी ग्रीन बोला।

अंग्रेज सैनिक ने अपने हाथ का अखबार उसे दे दिया। जिमी ग्रीन ध्यान-पूर्वक उस अखबार को देखता रहा। गदर से सम्बन्धित समाचारों को उसने ध्यान से देखा। फिर एक लम्बी साँस लेकर उसने अखबार वापस कर दिया।

"क्या देखा ?"

"यहाँ के बारे में कैसे झूठ समाचार छपे हैं !"

"तुम्हें कैसे मालूम ?"

"मैं जानता हूँ साब ! मैं बहुत दिन लखनऊ रहा। नाना साहब का कानपुर पर जब अधिकार था, मैं भी उस समय वहीं था !"

"क्या करते थे ?"

"मैं साहब का खानसामा था। मेरे पिता भी फौज में थे और मेरी माँ आया का काम करती थीं। हम लोग ईसाई हैं। गदर के समय मैं वहाँ था। इस अखबार में जो सब झूठ लिखा है !"

"तुम फेरी का काम क्यों करते हो ?"

"इस नाजुक हालत में पेट भरने के लिए सब कुछ करना पड़ता है, साब !"—उसने कहा—"कहिए आपको क्या चाहिए ?"

सैनिक ने अंगूर खरीदे। पैसे लेकर फेरीवाला आगे चला गया। उसके जाने

के बाद भी वह सैनिक उसे खड़ा हुआ देखता रह गया। उसके दूसरे साथी ने उसके कन्धे पर हाथ रखकर पूछा।

"क्या सोच रहे हो मिचल ?"

"यह फेरी वाला कितना अजीब है !"

"अरे ! वह तो ईसाई है। जिमी ग्रीन !"

"तुम उसे जानते हो ?"

"हाँ, बड़ा होशियार है !"

मिचल ने सन्तोष की साँस ली। फिर भी उसके मन में एक संदेह बना ही रह गया।

❀

कानपुर से उन्नाव आकर मुहम्मद अली ने अंगरेजी हलचलों की पूरी जानकारी हासिल कर ली। सैन्य शक्ति के भी पूरे-पूरे आँकड़े उसने इकट्ठे कर लिए और शीघ्र ही वह लखनऊ लौटने की सोच रहा था। उसके पास ऐसी अनेक उपयोगी सूचनाएँ थीं, जिनके बल पर वह सिपाहियों को सदा विजयी बनाए रख सकता था। अंगरेजी योजनाओं के सम्बन्ध में उसने प्रत्येक प्रकार के छल-कौशल से जानकारी हासिल कर ली। लखनऊ से कानपुर और कानपुर से उन्नाव। एक माह की इस लम्बी दौड़ में उसे अनेक कष्ट भोगने पड़े। अनेक रूप धारण करने पड़े, पर उसने हिम्मत न हारी और अपना कार्य पूरा करके ही छोड़ा। इस सिलसिले में उसे काफी रुपया व्यय करना पड़ा। उसके पास जो कुछ था, वह सब शेष हो गया था। अपने सहयोगी को देने के लिए अब उसके पास कुछ भी शेष न था। ऐसा कोई परिचित भी न था, जिससे वह कुछ प्राप्त कर सकता।

मुहम्मद अली इसी चिन्ता में निमग्न था। रहमान को वह अनेक बार आश्वासन दे चुका था। समझा चुका था कि लखनऊ से वह उसके लिए रुपया भेजेगा अथवा वह उसके साथ लखनऊ चला चले, पर रहमान चलने के लिए तैयार न था। अपनी एक रखैल को छोड़कर वह लखनऊ नहीं जाना चाहता था। दूसरे लखनऊ का रास्ता कम संकटग्रस्त न था !

परीशान मुहम्मद अली को कोई उपाय न सूझ रहा था।

"अन्दर आ सकता हूँ ?"

"आओ।"

रहमान ने अन्दर आकर सलाम किया और एक ओर रखी खाट पर बैठ गया।

"रुपयों का इन्तजाम हुआ ?"

"नहीं !"

"......"

"मैं तुमसे कुछ कह चुका हूँ कि मैं यहाँ तुम्हारे लिए कुछ भी कर सकने में असमर्थ हूँ भाई !"

रहमान की भवों पर बल पड़ गए।

बोला—"मैंने आपके लिए क्या-क्या नहीं किया ! मैंने आपके लिए टोकरी भी ढोयी है !"

"वतन के लिए सब कुछ करना पड़ता है, रहमान !"

"और बीबी-बच्चे भूखों मरें !"

"मैं इस वक्त बहुत मजबूर हूँ रहमान ! तुम चाहो तो मुझसे दस्तावेज लिखा लो और सीधी बात है तुम मेरे साथ लखनऊ चले चलो। फकीर के बाने में हम दोनों कुछ ही दिनों में लखनऊ पहुँच जायँगे, वहाँ मैं तुम्हें माला-माल कर दूँगा !"

"दाता से सूम भला, जो खड़ा दे जबाब !"—रहमान ने मुँह बनाकर कहा—"लखनऊ मैं नहीं जा सकता। अगर आपको रुपए देना है, तो यहीं पर दीजिए। वैसे मैं अपनी रकम किसी न किसी हालत में आपके जरिए वसूल कर ही लूँगा !"

"रहमान !"

"दो घंटे की मुहलत है, आपको।"

"रहमान !"

"......"

"सुनो रहमान !"

रहमान ने सुनकर भी अनसुनी प्रदर्शित की और वह चुप-चाप चला गया। मुहम्मद अली घबड़ा गया। उसकी समझ में न आ रहा था। क्या करे वह ?

छोटी रकम होती तो अब तक उसने कुछ प्रबन्ध कर ही दिया होता, पर एक मुश्त पाँच हजार की रकम का प्रबंध करना फिलहाल असम्भव था। क्या पाँच हजार रुपयों के लिए रहमान...? विश्वास तो नहीं।

❀

"मिचल ! मिचल !! तुमने कुछ सुना ?"

"क्या ?"

"अरे वह फेरीवाला जिमी ग्रीन...?"

"हाँ ! हाँ !',

"वह तो लखनऊ का जासूस निकला भाई। आज वह पकड़ लिया गया है। ब्रिग्रेडियर होप ने स्वयं उसे गिरफ्तार किया है। वह लखनऊ के सिपाहियों का जासूस था !"

"कमाल !"—मिचल बोला—"उसे देखकर मेरे मन में एक जो सन्देह हुआ था, वह ठीक निकला !"

"क्या तुम्हें शक हुआ था ?"

"हाँ !"

"ठीक है। इसी तम्बू में तुम्हारी हिफ़ाजत में रहेगा। रात हो जाने के कारण उसे आज फाँसी न होगी। उसे कल फाँसी दी जायगी !"

मिचल गम्भीर हो गया। जिमी ग्रीन को देखकर उसके मन में यकायक जो विचार आया था, वह एकदम सत्य निकला ! मिचल के आश्चर्य का ठिकाना न था। लखनऊ के सिपाहियों का दूत होने के कारण मिचल क्रोध से भर गया। सिपाहियों ने अंगरेजों की जिस तरह दुर्दशा की है, वह मिचल से छुपा न था और दूसरे जिमी ग्रीन नाना साहब के शासनकाल में कानपुर में ही था। जिमी ग्रीन ने भी अंगरेजों की दुर्दशा में हाथ बँटाया होगा।

थोड़ी ही देर में जिमी ग्रीन सैनिकों के पहरे में तंबू में लाया गया। तंबू में उसे छोड़ दिया गया और तबू के चारों ओर कड़ा पहरा बैठा दिया गया। रात भर उसे सँभालने की जिम्मेदारी मिचल पर सौंपी गई। मिचल जिमी ग्रीन के सामने आया।

एक बार उसे ऊपर से नीचे तक देखा ।

"कहो, कुशल से हो जिमी ग्रीन ?"—मिचल ने व्यंग्य से पूछा ।

"जी हाँ !"

"तुम तो ईसाई हो ?"

"था !"

मिचल हँस पड़ा। इस संकट में भी जिमी ग्रीन के धैर्य और संयम को देख कर उसके प्रति घृणा नहीं आदर, सहानुभूति उमड़ पड़ी । मिचल की इस हँसी में जिमी ग्रीन ने भी योग दिया। मौत को एकदम निकट देखकर भी, कैदी रहने पर भी वह तंबू में एक निर्भय व्यक्ति की तरह था। मानो उसकी और मिचल की स्थिति में कोई अन्तर नहीं ।

"अच्छा। सच कहो, तुम्हारा नाम क्या जिमी ग्रीन है ?"

"नहीं।"

"तब ?"

"मुझे मुहम्मद अली कहते हैं। मैं लखनऊ के नवाब का जासूस हूँ। क्या बताऊँ ? एक मित्र की गद्दारी के कारण मैं यहाँ पकड़ लिया गया अन्यथा लखनऊ आने पर मैं आप लोगों का बहुत ही भव्य स्वागत करता !"

"......"

"मेरे साथ जो टोकरी लेकर आता था, उसीने मुझे गिरफ्तार करवा दिया। मैं उसे रुपये नहीं दे सका। आप जानते हैं, कभी-कभी रुपयों पर ईश्वर भी बिक जाता है !"—मुहम्मद अली हँस पड़ा।

रहमान की गद्दारी से सहसा वह गिरफ्तार कर लिया गया। इस पर भी मुहम्मद अली तनिक भी न घबराया। मुक्त रहने पर प्रसन्नता कैसी और गिरफ्तार हो जाने पर दुःख कैसा ! देश के लिए जब मरने की ठान ली है, तो सारी स्थिति एक बराबर है। वतन के वास्ते जब सिर पर कफन बँधा है, तो मौत से डर काहे लागे ?

"एक सिगरेट देंगे आप ?"

मिचल ने एक सिगरेट दे दी उसे। मुहम्मद अली कुर्सी पर बैठकर चुप-चाप सिगरेट पीने लगा। मिचल ने भी सिगरेट सुलगा ली और वह एकटक उस

रहस्यमय व्यक्ति की ओर देखने लगा। मिचल को विश्वास हो गया। उसके सामने बैठा हुआ आदमी अवश्य ही किसी बड़े खान-दान का है, जहाँ से उसे शराफत और निर्भीकता के गुण विरासत में मिले हैं।

तंबू में सन्नाटा छा गया। बाहर सैनिकों का कड़ा पहरा लगा था कि एक चुहिया भी आँख बचाकर भाग नहीं सकती थी।

"तुम खास लखनऊ के हो?"

"जी नहीं!"

"तब?"

"मैं खास हिन्दोस्तान का हूँ, जहाँ आपलोग डंडे के बल पर राजा बन गए हैं। समझ गए आप? आप इस विद्रोह को सिपाहियों का ही विद्रोह न समझियेगा, यह जनता का विद्रोह है। क्या आप आसानी से हमें हरा देंगे?"

"आसानी से नहीं, पर कठिनाई से ही सही, हुकूमत हम लोगों की रहेगी, क्योंकि हिन्दोस्तानी बेवकूफ हैं!"

"हाँ, यदि बेवकूफ न होते तो आप लोग अपनी मुट्ठी भर ताकत से हम लोगों पर काबिज कैसे होते? लेकिन क्या आप यह समझते हैं कि यह मूर्खता अधिक दिन तक कायम रहेगी!"

"जिस दिन आप लोग बुद्धिमान हो जाँयगे, उसी दिन हम लोग चले जाँयगे।"

"धन्यवाद!"

मुहम्मद अली के इस उत्तर से तिलमिलाकर मिचल ने मुँह फेर लिया। मुहम्मद अली ने सिगरेट का आखिरी कश लेकर उसे फेंका और पैर के बूट से रगड़कर बुझा दिया। उसके पेट में कुलबुलाहट हो रही थी। रुपयों की चिन्ता के कारण वह सारे दिन भोजन कर सका था। और भोजन करने जा ही रहा था कि सहसा ब्रिगेडियर होपग्रांट उसके मकान पर टूट पड़े और उसकी मुश्कें कस दी गईं।

"सुनिए!"

"क्या है?"

"आप मेरे लिए भोजन का प्रबंध कर दें। मुझे बड़ी भूख लगी है।"

"अच्छा !"

मिचल ने सैनिक को आदेश दिया, कैदी के लिए खाना लाया जाय। आदेश देने के बाद मिचल लंबी कुर्सी खींचकर उठंग पड़ रहा। आज उसे रात भर इस व्यक्ति की रखवाली करना है। कल भोर से पहिले, सूरज की रोशनी फूटने से पहिले उसे फाँसी दे दी जायगी।

मिचल के मन पर मुहम्मद अली का गहरा प्रभाव पड़ा। नमाज के वक्त मिचल ने उसकी अलग व्यवस्था कर दी और उसके हाथ खोल दिए। मुहम्मद अली नमाज पढ़कर मिचल के सामने आकर बैठ गया। खाने का इन्तजार था। थोड़ी ही देर में एक मुसलमान कपड़े से ढँकी थाली लेकर हाजिर हुआ।

"खाना !"

"रख दो।"

"साहब ने कहा है, कैदी को यही खाना जरूर खिलाया जाय !"

"अच्छा !"

मुसलमान सैनिक खाना रखकर चला गया। मुहम्मद ने थाली उठाकर अपने सामने रखी। कपड़ा हटाया गर्म गोश्त और गर्म-गर्म रोटियाँ। महक से मुँह में पानी आ गया, पर गोश्त की गंध अटपटी सी लगी। गौर से देखा। गोश्त तो किसी और जानवर का मालूम पड़ता है।

"साहब ने कहा है, कैदी को यही खाना जरूर खिलाया जाय !"—मुहम्मद अली को खाना लाने वाले सैनिक की बात याद आ गई। इस खाने में ऐसी कौन सी बात है, जिसके लिए ब्रिगेडियर होपग्रांट ने ऐसा आदेश दिया है। मुहम्मद अली को कुछ शक मालूम हुआ।

गर्म गोश्त को गौर से देखा।

ओः ! समझ गया। सुअर का माँस पकाकर लाया गया है। एक मुसलमान को इस तरह धोखे से सुअर का माँस खिलाकर उसका धर्म नष्ट किया जा रहा है ! मुहम्मद अली उठ खड़ा हुआ।

"क्या हुआ ?"

"......"

"खाना क्यों नहीं खाया ?"

मुहम्मद अली मुस्कुराया—"खाना ? अंग्रेज जैसी नीच कौम दुनिया में और नहीं !"

"तुम्हारा मतलब ?"—मिचल गुर्राया !

"एक कैदी को धोखे से उसका धर्म नष्ट करना क्या इंसानियत है ?"

"......"

"मेरे लिए सुअर का माँस पकाकर लाया गया है। क्या यही आप लोगों की वीरता है ? हम स्वेच्छा से अपना धर्म नहीं छोड़ सकते। वैसे मैं आपका कैदी हूँ। आप चाहें तो जबर्दस्ती मेरे मुँह में ठूँस सकते हैं, पर मैं एक पाक मुसलमान होने के नाते इस खाने से इंकार करता हूँ।"

"......"

"आइए। आप मुझे ज़बरिया खिलाइए !"

मिचल चुप रह गया। सचमुच यह अन्याय है। किसी का धर्म इस प्रकार नष्ट करना मनुष्यता नहीं और फिर एक कैदी का धर्म क्यों नष्ट करना, उस कैदी का जिसे कल फाँसी लगाने वाली है। यह मानवता नहीं। मिचल के हृदय ने उसका साथ दिया।

"ठीक है। मत खाओ।"

"......"

"मैं तुम्हारे लिए खाने का और इन्तजाम करता हूँ !"

मिचल ने अपने पास से पैसे देकर मुहम्मद अली के लिए बाजार से खाना मँगवाया। मुहम्मद अली ने भर पेट भोजन किया। फिर मिचल से एक सिगरेट माँगकर पी।

*

मुहम्मद अली के रहस्यमय पर निर्भीक व्यवहारों से मिचल अत्यधिक प्रभावित हुआ। मुहम्मद अली के पास बैठ गया वह।

बोला—"मेरी एक बात मानोगे ?"

'आपने मेरे साथ जो एहसान किया है, उसे देखते हुए मैं आपकी हर उचित बात मानने को तैयार हूँ।"

"मैं तुम्हारे बारे में कुछ जानना चाहता हूँ।"

"शौक से पूछिए।"

"तुम्हीं कहो!"

"तो सुनिए।"—मुहम्मद अली बोला—"मेरा नाम मुहम्मद अली है। रुहेलखंड के एक ऊँचे मुसलमान घराने में मेरा जन्म हुआ। बरेली कालेज में मैंने शिक्षा प्राप्त की। एफ० ए० में सभी विषयों में अव्वल रहा। वहाँ से मैं इंजीनियरिंग सीखने के लिए रुड़की कालेज गया। वहाँ भी मैंने सबसे ज्यादा नंबर पाए।"

"शाबास।"

"पर आप नहीं जानते, इस पर भी मेरे साथ क्या हुआ! एक अंग्रेज इंजिनियर जो एकदम गधा था, मेरे काम का हेड बना और मुझे सिर्फ पैमाइश का जमादार बनाया गया। क्या आपके इंग्लैंड में भी ऐसा होता है?"

"नहीं।"

"इसी कारण हम लोग आपकी उदारता और समवेदना को धुष्टता तथा धोखेबाजी कहते हैं। इसीलिए मैंने कंपनी की नौकरी छोड़ दी। मैंने अवध के तत्कालीन नवाब नासिरुद्दीन के यहाँ नौकरी कर ली। जब नेपाल के महाराणा जँगबहादुर विलायत गए तो मैं उनका सेक्रेटरी बनकर विलायत गया।"

"अच्छा!"

"जी हाँ, मैं दो बार लंदन और एडिनबरा हो आया हूँ। मेरे वहाँ अनेक मित्र हैं। एक भाग्य की बात और सुनिए।"

"......"

"आज मैं इस सेना का कैदी हूँ!"—मुहम्मद अली ने मुस्कुराकर कहा—"और जब मैं महाराजा के साथ लंदन गया था, तो यही हाईलेंडरों की सेना नबर तैरानबे हम लोगों के सम्मान में सलामी देने के लिए खड़ी थी।"

मिचल का चेहरा गंभीर पड़ गया, पर मुहम्मद अली खिलखिलाकर हँस पड़ा। सिगरेट का एक कश लेकर पूछा—"आपने अजीमुल्ला का नाम सुना है?"

"हाँ नाना साहब की नाक का बाल !"

"जी हाँ। वही। पेशवा बाजीराव के मरने के बाद जब लार्ड डलहौजी ने पेंशन बंद कर दी, तब नाना साहब ने अजीमुल्ला को अपना एजेंट बनाकर विलायत भेजा। मेरी तरह अजीमुल्ला ने कोई शिक्षा न पायी थी, पर मास्टर गंगादीन की शिक्षा से उसकी अंग्रेजी काफी अच्छी हो गई थी। मैं भी अजीमुल्ला के साथ विलायत गया।"

"सुना है।"

"इंग्लैंड में हम लोगों का सम्मान हुआ, पर कामयाबी हासिल न हुई। पाँच लाख से अधिक रुपया भी खर्च हो गया। अठारा सौ पचपन में लंदन से हम लोग वापस लौटे। रास्ते में हम लोगों ने क्रिमिया संग्राम देखा। अंग्रेजों का हारना-भागना देखा। वापस कुस्तुन्तूनिया आने पर हम लोगों का परिचय कई लोगों से हुआ। कुछ रूसी अफसरों से भी हम लोगों की मुलाकात हुई। वहीं पर हम लोगों ने गदर की बात सोची।"

"अच्छा।"

"और हम लोग इसमें कामयाब हो गए !"

मिचल को हँसी आ गई, पर मुहम्मद अली गंभीर बना रहा। उसने कहा—"हाँ, यह कामयाबी है, क्योंकि अब कंपनी के हाथ से हुकूमत चली गई। कल आपसे अखबार लेकर उसमें यही देखा है कि अंग्रेजी सरकार कंपनी के हाथ से हिन्दोस्तान का राज ले लेगी।"

"......"

"मैं खुशी से मरूँगा, क्योंकि कंपनी के गंदे आदमियों के हाथ से हुकूमत न जाती रहेगी। आप जानते हैं कि किसी का धर्म बिगाड़ना कितना बड़ा पाप है !"

"हाँ यह पाप है !"

"आपकी कंपनी के आदमियों ने यही किया है। कानपुर की बात कहूँ। कर्नल नेपियर ने घाट के तमाम मंदिरों को तोपों से उड़ा देने का हुक्म दिया। एक इशारे पर मंदिर ध्वंस कर दिए गए। मैंने अपनी आँखों देखा है।"

"उसी घाट के पास हमारे देश के स्त्री बच्चे काटे गए थे।"

"ठीक है, आदमी का बदला आदमी से लिया जाता है, उसके धर्म से नहीं, मिचल साहब !"

"तुम कानपुर विद्रोह के समय वहाँ थे ?"

"नहीं !"

"तब ?"

"मैं अपने घर था। घर पर ही मैंने मेरठ और बरेली के विद्रोह का समाचार सुना था। मैं फौरन बरेली गया और वहाँ से सेना के साथ दिल्ली गया।"

"दिल्ली भी गए थे ?"

"जी हाँ मेरे दिल्ली पहुँचते ही दूसरे दिन ही अंग्रेजों ने वहाँ कब्जा कर लिया। मुझे फौज के साथ भागना पड़ा। कुछ सिपाहियों को बटोरकर मैं किसी प्रकार लखनऊ पहुँचा। पहले हम सब मथुरा गए। सेना उतारने के लिए मैंने यमुना पर पुल बनाया। लखनऊ पहुँचा !"

"तुमने कानपुर हत्याकांड देखा है ?"

"हाँ !"

"क्या हत्याकांड से पूर्व अंग्रेज लड़कियों का सतीत्व हरण हुआ था ?"

"कह नहीं सकता !"—मुहम्मद अली की भवों बल पड़ गए—"हिन्दोस्तानी ऐसे नहीं होते हैं। संभव है, एक दो ऐसी घटनाएँ हुई हों ! नर-राक्षस कहाँ नहीं रहते ?"

"नाना साहब को इस हत्याकांड से क्या लाभ हुआ ?"

"लाभ ! इसमें नाना साहब का हाथ कहाँ था ! उन्हें तो इस घटना का पता बहुत बाद में लगा, जब कि वे कुछ भी कर न सकते थे। असल में यह सब उसी अजीमुल्ला का काम हो सकता है। अजीमुल्ला के संग जैसी बीती है, उसे देखते हुए मैं इस हत्याकांड की बुरायी नहीं कर सकता !"

"और सेनापति ह्वीलर की लड़की का क्या हुआ ?"

मुहम्मद अली हँसकर बोला—"सचमुच आपके देश के अखबार बड़े बेहूदे हैं। हिन्दोस्तान की इस घटना के बारे में वे बड़ी मनगढ़न्त खबरें छाप रहे हैं। मैंने आपके देश के एक अखबार में पढ़ा कि सेनापति ह्वीलर की लड़की ने वीरता क

साथ बागियों का सामना किया और चार-पाँच को मारकर खुद कुएँ में कूदकर आत्म हत्या कर ली !"

"क्या यह सच नहीं है ?"

"एकदम झूठ है। सेनापति ह्वीलर की लड़की आज भी लखनऊ में है और उसने उस मुसलमान सिपाही से विवाह कर लिया है, जो उसे कानपुर से भगा लाया था। लखनऊ में आप उससे मुलाकात कर सकते हैं।

मुहम्मद अली की बात सुनकर मिचल चुप रह गया। आगे कुछ भी पूछने का साहस उसमें न रहा। मुहम्मद अली भी कुछ देर तक खामोश बैठा रहा। शायद अतीत की बहुत सी बातें को वह याद कर रहा था। उसकी मृत्यु भी निकट थी। अंग्रेज सैनिकों के कड़े पहरे से उसका छूट सकना मुश्किल था और कल सूरज उगने के पहिले ही उसे फाँसी दी जाने वाली थी।

"साहब की इजाजत हो ! मैं सोना चाहता हूँ।"

मिचल ने सम्मति-सूचक सिर हिलाया। मुहम्मद अली खाट पर जाकर लंबा हो गया। मिचल बराबर जाग रहा था। बाहर सैनिकों का कठिन पहरा था। पता नहीं मुहम्मद अली रात सो सका या नहीं, पर वह मुर्दे की तरह अवश्य पड़ा रहा।

*

जैसे ही मुर्गे ने बाँग दी मिचल ने मुहमम्द अली को झिंझोड़ा। ब्रिगेडियर हापग्रांट शिविर के बाहर थे।

"ए उठो !"

मुहम्मद अली आँखें मलता हुआ उठ खड़ा हुआ। देखा। सबेरा होने में कुछ देर है। उनका अंतिम समय निकट आ गया। हाथ मुँह धोकर उसने वजू की। नमाज पढ़ी।

नमाज समाप्त कर वह मिचल के सामने आकर खड़ा हो गया।

एक सैनिक ने उसकी मुश्कें कस दीं। बाहर ले गया। सैनिकों की पहरे में मुहम्मद अली को ले जाया गया। मुहम्मद अली के चेहरे पर जरा भी शिकन न थी। उसका चेहरा एकदम शान्त, गंभीर था और होठों पर मुस्कान की एक क्षीण रेखा था।

पड़ाव के पास एक पेड़ से रस्सी का फाँसी फंदा झूल रहा था।

मुहम्मद अली को उसी पेड़ के नीचे खड़ा किया गया।

मुहम्मद अली ने दोनों हाथ खुलने पर ऊपर उठाए। ईश्वर से कुछ प्रार्थना की और फिर पत्थर की मूर्ति-सा खड़ा रह गया। जल्लाद आगे बढ़ा। फाँसी-फंदा उसके गले में अटका दिया।

"तैयार!"

मुहम्मद अली के होंठ कुछ बुदबुदा रहे थे। जल्लाद ने रस्सा खींची। मुहम्मद अली के गले का फंदा कड़ा पड़ते ही एक जोर की हिचकी निकली और ऊपर खिंचते-खिंचते उसके प्राण पखेरू उड़ गए। जल्लाद ने उसे ऊपर वैसे ही पेड़ पर लटका रहने दिया। बड़े साहब का ऐसा ही हुक्म था।

सैनिक और ब्रिगेडियर होपग्रांट चुपचाप लौट आए। जल्लाद भी वहां से चला गया। मुहम्मद अली की लाश झूलती रह गई।

*

आलमबाग में पड़ाव डाले हुए सेनापति आउट्रम और और उनके साथी यकायक घबड़ा गए। उनकी समझ में ही न आया कि यकायक उनसे युद्ध करने कौन लोग आ धमके! पौ फटते ही लालरंग से आपाद मस्तक पुते कुछ लोगों के एक झुंड ने उन पर अनायास आक्रमण कर दिया। सावधान रहने पर भी सैनिक इस विचित्र रूप-रंग के लोगों को देखकर घबड़ा गए।

सेनापति आउट्रम की भी समझ में कुछ न आया। लालरंग से पुते हुए वे आदमी बंदरों की तरह उछल-कूदकर विचित्र ढंग से लड़ रहे थे।

"ये लखनऊ के सिपाही हैं!"—एक ने ललकार दी—"स्वाँग बनाकर डराने आए हैं!"

आउट्रम ने सैनिकों को आगे बढ़ाया। मुट्ठी भर लंगूर घिर गए। अधिकांश मारे गए और शेष भाग गए। इन विचित्रों सैनिकों के बारे में तरह-तरह की चर्चा पड़ाव में शुरू हो गई। इस तरह का नाटक देखकर बाद में सेनापति आउट्रम को भी हँसी आ गई, पर उनकी यह हँसी अधिक देर तक कायम न रह सकी, क्योंकि लखनऊ पर अभी भी सिपाहियों का अधिकार था और एक बड़ी

संख्या में वे उनके सामने बिखरे पड़े थे। किसी भी समय उनके आक्रमण की आशंका थी।

सेनापति आउट्रम काफी अल्प सैन्य-शक्ति के नाम पर आलमबाग में पड़े थे। सहायकों के आने की प्रतिक्षण प्रतीक्षा थी। चारों ओर से लखनऊ पर अधिकार करने का अंग्रेजी-प्रयत्न चल रहा था। उन्नाव और कानपुर में सैन्य संग्रह हो रहा था। इन सभी समाचारों से उनके मन को बड़ा बल मिल रहा था और इसी विश्वास पर टिके हुए थे।

लखनऊ के अंदरुनी समाचार भी उन्हें मिल रहे थे। बेगम हजरतमहल स्वयं युद्ध की तैयारियाँ कर रही हैं। मेंहदी हुसेन, मुहम्मद हुसैन और फैजाबाद के महाराजा मानसिंह इस वक्त भी उनके साथ हैं। लखनऊ बीस मील के घेरे में फैला एक बड़ा शहर है और इस बड़े शहर पर इतनी आसानी से थोड़ी सी सेना के बल पर अपना अधिकार नहीं किया जा सकता है। जैसा कि उनके अधिकांश सहयोगी सोचा करते हैं।

लखनऊ का यह मुकाबला दिल्ली के मुकाबले से भी कुछ अर्थों में कठिन है।

ॐ

उत्तेजित सिपाहियों के बीच जैसे ही बेगम हजरतमहल हाथी पर बैठकर आयीं, बेगम की जय-जय-कार से आकाश काँप उठा। बेगम के साथ ही एक और हाथी पर आए हुए मानसिंह ने खड़े होकर सिपाहियों को ललकार दी।

"आज बेगम खुद हमारे साथ लड़ाई के मैदान में चलेंगी। आज आलमबाग में पड़ी अंग्रेजी सेना को हमें भगा देना है।"

"अल्लाहो अकबर।"

"बेगम हजरतमहल।"

"जिन्दाबाद!"

मौलवी अहमदुल्ला ने भी ललकार दी। भारी संख्या में शस्त्र-सज्जित सिपाही आलमबाग की ओर बढ़े। तोपों का रुख उसी ओर मोड़ा गया। बेगम हजरत-महल स्वयं सिपाहियों के साथ युद्ध-क्षेत्र में जा रही थीं। मानसिंह और मौलवी अहमदुल्ला उनके साथ थे। तीनों के क्रोध का ठिकाना न रहा। उन्नाव और

कानपुर के सारे समाचार उन तक आ चुके थे और यह भी ज्ञात हो चुका था कि अंग्रेजी सेनाएं दोनों स्थान से आक्रमण के लिए प्रस्थान कर चुकी हैं। साथ ही उन्नाव में महम्मद अली को फाँसी दी जा चुकी है। जासूसी करने के आरोप में ब्रिगेडियर होपग्रांट ने उसे फाँसी पर लटका दिया और उसकी लाश को सियार, कौवे, कुत्ते नोंचकर खा गए। इस समाचार ने पूरे लखनऊ को उत्तेजना से भर दिया।

अब समय आ गया है। अंग्रेजों से अब पूरी तरह मुकाबला करके फैसला कर ही लिया जाय!

देखते देखते सिपाहियों ने आलमबाग घेर लिया। दूसरी ओर सेनापति आउट्रम भी असावधान न थे। सिपाहियों के आने की खबर उन्हें लग चुकी थी और वे पूरी तैयारी के साथ मुकाबले के लिए खड़े थे। सिपाहियों के साथ बेगम हजरतमहल को भी देखकर वह दंग रह गए।

युद्ध-ललकार दी गई और दोनों पक्ष के सैनिक भिड़ गए। तोपें गरजने लगीं। बंदूकें कड़कने लगीं। दोनों पक्ष और नजदीक आए। देखते देखते दोनों पक्षों में घमासान युद्ध प्रारंभ हो गया। बेगम हजरतमहल की उपस्थिति के कारण सिपाहियों का जोश बहुत बढ़ गया था और सिपाही सिर हथेली पर रखकर लड़ रहे थे। सिपाहियों के इस जोश के आगे अंग्रेज सैनिक टिक न पा रहे थे।

सिपाही आगे बढ़ते गए।

सेनापति आउट्रम के सामने पीछे हटने के अतिरिक्त और कोई रास्ता न था। फलतः भारी क्षति उठाते हुए उन्हें अपनी फौज पीछे हटाना पड़ी। सिपाही खदेड़ चले। अंग्रेजी फौज आलमबाग से उठ गई और दिन छिपते छिपते उसे आलमबाग से काफी दूर तक खदेड़ दिया गया।

सिपाहियों की शक्ति के आगे गोरी पलटन के पाँव एकदम उखड़ गए। भारी संख्या में गोरे मारे गए और उनकी अनेक तोपें छीन ली गईं। सेनापति आउट्रम बुरी तरह घबड़ा गए। अगर अब शीघ्र सहायता नहीं मिलती, तो बुरी मौत निश्चित है। लखनऊ पर अगर शीघ्र अंग्रेजी अधिकार नहीं होता, तो आस-पास के क्षेत्रों में बुझती हुई विद्रोह की चिनगारियाँ पुनः शोले बन धधकने लगेंगी!

❀

झंडा फहराती हुई अंग्रेजी पलटन तेजी के साथ लखनऊ की ओर बढ़ रही थी। प्रधान सेनापति केम्पवैल की अध्यक्षता में कानपुर और उन्नाव में संग्रहीत सैन्य-शक्ति नागिन सी लहराती चली आ रही थी। तेजी के साथ केम्पवैल बढ़ रहे थे। सेनापति आउट्रम की पुकार उन तक पहुँच चुकी थी और वे शीघ्रातिशीघ्र उनकी सहायता के लिए पहुँच जाना चाहते थे।

सेनापति केम्पवैल ने दूरदर्शिता से काम लिया। लखनऊ प्रवेश का रास्ता बदल दिया था उन्होंने। सेनापति आउट्रम, हावेल और वे स्वयं पहली बार जिस रास्ते से लखनऊ आए थे, वह रास्ता उन्होंने न पकड़ा था, इसलिए कि उन्हें इस बात का पूरा विश्वास था कि उस रास्ते पर सिपाहियों ने घेराबंदी कर रखी होगी। इस आशय के समाचार भी उन्हें मिल चुके थे। अतएव उन्होंने अपना रास्ता बदल दिया था। गोमती के दोनों किनारे से वे अपनी सेना के साथ बढ़ रहे थे।

प्रातः होने से पहिले इस सेना ने शहर पर पूरे वेग से धावा कर दिया। इस धावे के सामने सिपाही टिक न सके। सिपाहियों ने तो पुराने रास्ते पर ही अपनी नाकाबंदी की थी। इस धावे के कारण पूरी योजना तत्क्षण बदल देना पड़ी और बड़ी गड़बड़ी मची।

इस गड़बड़ी का लाभ अंग्रेजों ने उठाया। दो घंटे में ही शाहनजीफ और सिकन्दराबाग पर अंग्रेज काबिज हो गए। कैसरबाग और उसके पास बने बेगम महल में भी सिपाही थे। ये सब गोरी पलटन के घुड़सवारों के आगे ठहर न सके। कैसरबाग और बेगममहल में सिक्ख-सैनिक घुस गए।

दूसरी ओर से सेनापति आउट्रम अपनी तोपों के साथ बढ़ रहे थे। ऐन मौके पर सेनापति केम्पवैल के आ जाने से उनकी सैनिक टुकड़ी की प्रसन्नता का ठिकाना न था। बड़े वेग से तोपों की मार करती उनकी टुकड़ी आगे बढ़ रही थी।

लखनऊ युद्ध की आग में सुलगने लगा।

बेगममहल में सिक्ख सैनिकों ने गोरे सैनिकों के साथ मिलकर अत्याचार की पराकाष्ठा कर दी। कैसरबाग में रखे पशुओं के भूसों में आग लगा दी और उस आग में तीस-चालीस बंदी सिपाहियों तथा कुछ घायलों को जीते जी उठाकर फेंक दिया।

जिन्दा मनुष्यों के जलने की गंध से आसपास का वातावरण थर्रा उठा।

❀

पग पग पर निराशा जनक समाचार मिलने के बाद भी बाबू कुँवरसिंह और उनके साथियों ने हिम्मत न हारी थी। सबने यह निश्चय कर लिया था कि चाहे कुछ भी हो, जब तक इस दल का एक भी आदमी जिन्दा है। वह अंग्रेजों से टक्कर लेगा। अंग्रेजी सरकार का बागी बना रहेगा।

अनेक स्थानों का भ्रमण करते हुए केवल निराशा और भगदड़ का सामना करते हुए भी कुँवरसिंह की हिम्मत न टूटी थी। अपने मुट्ठी भर साथियों और सैनिकों के भरोसे सैकड़ों मील का चक्कर काटने के बाद वह पुनः अपनी जन्म-भूमि की ओर बढ़ रहे थे।

एक बार फिर आरा से स्वतंत्रता का बिगुल बजेगा। इस बूढ़े सिंह में जब तक शक्ति है, तब तक वह लड़ेगा। नाना साहब और झाँसी की रानी के पास तक पहुँचने का बहुतेरा प्रयास करने के बाद भी अपने इस उद्देश्य में कुँवरसिंह असफल ही रहे। हर ओर के रास्ते संकट से भरे थे। लखनऊ का रास्ता भी खतरे से खाली न था। साथ ही उनको जिंदा या मुर्दा लाने के लिए अंग्रेजी शासन ने एक बहुत बड़ी रकम पुरस्कार के लिए घोषित की थी।

सभी विघ्न बाधाओं को पार करते हुए कुँवरसिंह आजमगढ़ की ओर बढ़ रहे थे।

❀

राणा जँगबहादुर नेपाल की तराई से उतरकर गोरखपुर में अंग्रेजी शासन मजबूत कर फूलपुर होते हुए अवध की ओर बढ़े। कलकत्ता के प्रधान कार्यालय के आदेशानुसार उन्होंने भी हिन्दोस्तान में अंग्रेजी राज की स्थापना में अपना योग दिया और इस कार्य को उन्होंने अंग्रेजों के प्रति अपनी मित्रता का प्रमाण माना।

गोरखा सैनिकों की प्रबल मार और उनके युद्ध-कौशल तथा कठिन श्रम के आगे असंगठित बागियों का टिकना मुश्किल था। बड़ी आसानी से बागी-सिपाहियों

को खदेड़ते हुए, तत्संबंधी अंग्रेजों के हाथ उनके शासन की बागडोर सौंपते हुए राणा जँगबहादुर अवध की सीमा पार कर लखनऊ आए।

सेनापति केम्पबैल उनके आगमन के समाचार से बड़े प्रसन्न हुए। कैसरबाग में एक विशेष समारोह का आयोजन हुआ और उसमें प्रधान सेनापति केम्पबैल ने राणा जँगबहादुर की वीरता की प्रशंसा करते हुए उन्हें एक अभिनंदन पत्र दिया। सेनापति ने सैनिकों की भूरि-भूरि प्रशंसा की।

***

बेगम महल पर अधिकार करने के उपरान्त सेना आगे बढ़ी। मिचल और हडसन के अधीन भी एक सैनिक टुकड़ी थी। हडसन म्यान से तलवार बाहर किए मिचल के आगे जा रहे थे। सहसा एक मकान पर उनकी दृष्टि पड़ी। रुक गए।

"शायद यहाँ सिपाही छुपे हों।"

"देखा जाय।"

हडसन उस मकान में सबसे पहिले घुसे। पूरे मकान की तलाशी लेने पर पाँच सिपाही पकड़े गए। हडसन ने उनको स्वयं तलवार के घाट उतार दिया। मकान काफी बड़ा और आलीशान था। हडसन ने उसे तोड़ने का आदेश दिया ताकि भविष्य में सिपाहियों के काम न आ सके।

हडसन आगे बढ़े। उनका मन भीषण प्रतिशोध से भरा था। एक-एक सिपाही को वह स्वयं दंड देना चाहते थे। बेगम हजरतमहल को वह जीते जी, जिंदा जिला देने की बात किया करते थे और अपना यह इरादा कई बार मिचल पर प्रकट कर चुके थे।

कुछ आगे बढ़ने पर एक घर और दिखलायी पड़ा।

"इसमें देखो?"

"हाँ, आइए।"

हडसन फिर सबसे पहिले उस मकान में घुसे। अभी वे कुछ ही सीढ़ियाँ चढ़ पाए थे कि सहसा तलवार चमकी और हडसन का सिर कटकर दूर जा गिरा। मिचल घबड़ाकर भागा। हडसन का धड़ सीढ़ियों से नीचे आ गिरा।

सैनिकों ने मकान घेर लिया। उस मकान में आठ-दस सिपाही थे। उनमें से किसी ने भी आत्मसमर्पण नहीं किया। सभी लड़ते-लड़ते मारे गए। सैनिक टुकड़ी हडसन का धड़ और सिर उठाकर आगे बढ़ गई। दिल्ली बादशाह को नरक की यंत्रणा देने वाला, शाहजादों को गोली से उड़ा देने वाला हडसन भी उसी दुर्दशा को प्राप्त हुआ, जैसी कि दूसरों को उसके हाथों मिली थी।

*

अंग्रेजी सेना के निरन्तर बढ़ाव को रोक सकने में सिपाही सर्वथा असमर्थ थे। गोरखों के साथ के कारण अंग्रेजी पलटन की ताकत बहुत बढ़ गई थी। क्षण-क्षण पर सिपाही भारी नुकसान उठा रहे थे। गोमती तट से उठी हुई गोरी सेना तूफान की भाँति सारे लखनऊ को घेर रही थी। सिपाही किसी भी मूल्य पर टिक न पा रहे थे।

बेगम हजरतमहल, मौलवी अहमदुल्ला परीशान थे।

समझ में न आ रहा था, क्या किया जाय ?

राजा मानसिंह के साथ दस हजार हथियारबंद सिपाही थे, पर अंग्रेजों की इस प्रबल शक्ति के आगे वे अपने सिपाहियों को झोंकना ठीक न समझ रहे थे। उनका मन झिझक रहा था। बार-बार जोर देने पर भी वे अपने सिपाहियों को रण-क्षेत्र में न भेज रहे थे।

"आखिर आप चाहते क्या हैं ?"—मौलवी अहमदुल्ला का स्वर क्षोभ से भर गया—"आपके सिपाही खड़े-खड़े मुँह ताकते रहेंगे और लखनऊ पर अंग्रेज काबिज हो जाँयगे।"

"मैं आपसे कुछ नहीं कहना चाहता !"—मानसिंह ने कहा—"मुझे जो कहना था, सो आपसे अर्ज कर चुका।"

"हम भागेंगे नहीं !"

"इसके सिवाय और कोई चारा नहीं है, मौलवी साहब !"—मानसिंह ने अपनी बात फिर दुहरायी—"अंग्रेजों को हाथों कैद या कत्ल होने से यह अच्छा है कि हम लोग कहीं और चलकर कुछ उपाय करें। राणा जंगबहादुर सिंह के आने से उनकी ताकत और बढ़ गई है !"

बेगम हजरतमहल खामोश बैठी थीं। सेनापति आउट्रम की सेना जब भागी तो उन्हें इस बात का पक्का विश्वास हो गया कि अवध पर नवाबी हुकूमत अब हमेशा के लिए कायम हो जायगी, पर रातों-रात पाँसा पलट गया। प्रधान सेनापति की फौजें आ टूटीं और उनके सिपाहियों को मैदान से भागना पड़ा। सबेरा होते ही स्वप्न महल ढह गया।

तोपें गरज रही थीं। बंदूकें कड़क रही थीं। लखनऊ में चारों ओर युद्ध हो रहा था। सिपाही लड़ रहे थे, मर रहे थे। अंग्रेजी टुकड़ियाँ पानी की लहरों सी बढ़ी चली आ रहीं थीं। लखनऊ अंग्रेजी सेना की बाढ़ में डूब रहा था।

"राजा साहब!"—हजरतमहल ने अपना मौन भंग किया—"आपका फैसला मुझे अच्छा नहीं लगा। इस वक्त मैं पूरी ताकत के साथ लड़ना अधिक पसंद करती हूँ।"

"फतह नामुमकिन है!"

"नाउम्मीदी से फायदा?"

"आसार सामने हैं।"

"आपका फैसला क्या है?"

"मैं अपने सिपाहियों के साथ किसी और जगह अंग्रेजों का मुकाबला करूँगा।"

"......"

राजा मानसिंह बेगम हजरतमहल को आदाब बजाकर चुपचाप चले गए। बेगम और मौलवी गहरी चिन्ता में डूब गए। आसार अब सचमुच अच्छे नहीं।

❀

"यहाँ पर सिर्फ कर्नल मिल्सन रखवाली के लिए हैं।"

"उनकी ताकत कितनी है?"

"हमसे आधी!"—दूत ने कहा—"और कर्नल मिल्सन को हमारे आने की खबर मिल चुकी है। वह अपनी सेना के साथ इसी तरफ आ रहा है!"

"ठीक है!"

दूत अभिवादन कर चला गया।

कुँवरसिंह ने आत्रालिया के किले पर अपना अधिकार न किया था। मिट्टी के उस छोटे से किले पर अपना अधिकार जमा वह कर ही क्या सकते थे! वह किला उनकी दृष्टि से किसी उपयोग का न था। अतएव अपनी सेना के साथ वह आमों के बाग में पड़े थे।

चुने हुए सरदारों को बुलाकर उन्होंने मंत्रणा की और युद्ध के नए तरीकों से काम लेने की योजना बनायी। दुश्मन को भुलावे में डालकर उसका नाश करना चाहिए। कुँवरसिंह की सैन्य शक्ति अधिक थी। अतएव छल कपट से ही सहारा लेना अच्छा समझा गया। योजना बनी कि जैसे ही कर्नल मिल्सन की सेना दिखलायी पड़े, सैनिकों को हलका मुकाबला करने का आदेश हो और उसके तुरन्त बाद ही सब भाग खड़े हों। इससे कर्नल मिल्सन की सेना को बढ़ावा मिलेगा। विजयी की खुशी में वे फूल जाँयगे। इस प्रकार के युद्ध के उपरान्त जब वे विश्राम निमग्न रहें, उसी समय पूरी ताकत के साथ हमला बोलकर उनको खत्म कर दिया जाय।

योजना इसी प्रकार चली।

जैसे ही कर्नल मिल्सन की सेना आमों के बाग के पास आयी, कुँवरसिंह हलका सा मुकाबला कर भाग खड़े हुए। मिल्सन ने उन्हें दूर तक खदेड़ा। मिल्सन और उसके सैनिक बड़े प्रसन्न हुए। कुँवरसिंह को आसानी से समाप्त कर सकने का उनका विश्वास प्रबल हो गया।

सेना का बढ़ना रोक दिया गया।

साँझ हो गई थी। मिल्सन की सेना विश्राम और भोजन-पानी की व्यवस्था में लग गई। इसी समय कुँवरसिंह लौटे और बड़े वेग से हमला कर दिया। बूढ़ा शेर पूरी ताकत के साथ टूट पड़ा। इस अप्रत्याशित आक्रमण का परिणाम बड़ा ही भयंकर हुआ। मिल्सन की सेना के सँभल सकने के पहिले ही, उसकी बुरी तरह क्षति हुई। कुछ ही देर में मिल्सन को भागना पड़ा।

दूर तक मिल्सन को खदेड़ा गया। इस आक्रमण के कारण मिल्सन को बुरी तरह क्षति उठानी पड़ी और अब वह इस योग्य न रहा कि कुँवरसिंह का सामना कर सके। बहुत ही थोड़े सैनिक उसके साथ अपने प्राण बचाकर भाग सके। पराजित मिल्सन ने आजमगढ़ की राह पकड़ी। इसके अतिरिक्त उसके पास और

कोई चारा न था। बिना सहायता के अब वह कुछ कर भी न सकता था। सहायता के लिए बनारस, इलाहाबाद और लखनऊ पत्र लिखने के लिए मिल्सन को विवश होना पड़ा।

❀

गवर्नर जनरल लखनऊ के समाचार जानने के लिए अत्यन्त व्याकुल थे। लखनऊ विजय के लिए सम्मिलित अभियान का समाचार आ चुका था, पर लखनऊ विजय की सूचना के लिए वे बुरी तरह उत्सुक थे। लखनऊ पर अंग्रेजी अधिकार न होने के कारण कलकत्ता तथा आस-पास के क्षेत्रों में बड़ी बेचैनी थी। अंग्रेज अफसरों की कटु आलोचना के बाद भी गवर्नर जनरल धैर्य के साथ सारा कार्य कर रहे थे।

झाँसी के आने वालों के समाचारों से भी सिर-दर्द हो रहा था। झाँसी पर महारानी लक्ष्मीबाई की स्वतंत्र सत्ता हो गई थी। इसकी पूरी खबर मिलने के बाद भी गवर्नर जनरल उस ओर से उदासीन से थे। एक-एक मोर्चे को समाप्त करना ही उनका उद्देश्य था। लखनऊ के अधिकारी होने के बाद ही उनकी झाँसी विजय की भी योजना थी और इस काम के लिए सर ह्यू रोज को नियुक्त भी कर चुके थे।

कुँवरसिंह का कुछ भी पता न लग रहा था। यही हाल नाना साहब और तात्या टोपे का था। गवर्नर जनरल को यह विश्वास हो गया था कि निकट भविष्य में वे इनको भी समाप्त करने में सफल होंगे। एक ही बेचैनी थी उन्हें और वह थी लन्दन के समाचार पत्रों की टिप्पणी और ईस्ट इन्डिया कम्पनी के बोर्ड के डायरेक्टरों की कटु आलोचना।

अखबारों के समाचारों और इस विद्रोह के फलस्वरूप लन्दन में उत्पन्न प्रतिक्रिया के कारण उन्हें ऐसा विश्वास हो चला था कि ब्रिटिश सरकार कम्पनी के हाथ से भारत की हुकूमत छीन लेगी। महारानी विक्टोरिया भी इस ओर उत्सुक दीख रही थीं।

यह भी एक प्रकार से अच्छा ही होगा। क्योंकि राज्य बदल जाने से भी

अंग्रेजों के प्रति जो एक असन्तोष हिन्दोस्तानियों के मन में है, वह बहुत कुछ दब जायगा।

*

समाचार आते ही सनसनी फैल गई। सभी अधिकारी चिन्तित हो गए। मिल्सन के हारने का अर्थ था कि कुँवरसिंह का आतंक फैल रहा है। मिल्सन जैसा योग्य व्यक्ति आजमगढ़ में शरण लिए हुए है। कुँवरसिंह साधारण व्यक्ति नहीं ही होगा।

अधिकारियों की बैठक हुई।

सेनाध्यक्ष ने कर्नल मिल्सन का पत्र पढ़कर सुनाया।

"कर्नल मिल्सन ने हमसे सहायता की प्रार्थना की है!"

"सहायता! अधिक सहायता हम कैसे दे सकते हैं। इतना बड़ा शहर बनारस भी हमें देखना है! उपद्रव कैसे एकदम समाप्त मान लिया जाय!"

"कुछ सहायता अवश्य भेजना चाहिए!"

"कुछ गाजीपुर से ले लिये जाँय।"

"हाँ यही ठीक होगा!"

सैनिक-समिति ने बनारस से छियालीस और गाजीपुर से एक सौ बीस गोरे सैनिक आजमगढ़ भेजने का निश्चय पास कर दिया।

*

मिल्सन के चेहरे पर हवाईयाँ उड़ रही थीं। बहुत थोड़े साथियों के संग किसी प्रकार वह आजमगढ़ तक सुरक्षित आ चुका था। बार-बार कुँवरसिंह का चित्र उसकी आँखों के आगे नाच उठता था। बूढ़ा होने पर कैसा ऊँचा पूरा आदमी है और कैसे भयंकर वार करता है! अपनी विजय पर प्रसन्न जब सब सैनिक आराम कर रहे थे, उस समय वह शेर की तरह कैसे झपटा था! इसका मुकाबला कठिन दीखता है।

कर्नल डेम्स ने मौन भंग किया।

"कुँवरसिंह इसी ओर आ रहा है। इस भेड़िए को मैं रोकूँगा!"

"बहुत होशियारी से काम लेना होगा!"

"मैं तैयार हूँ। उसे आने दो।"

कर्नल डेम्स को समाचार मिल चुका था कि कुँवरसिंह आजमगढ़ पर अपना अधिकार करने आ रहा है। आजमगढ़ पर यदि कुँवरसिंह का अधिकार हो जाता है, तो इलाहाबाद से लखनऊ और कलकत्ता का रास्ता एकदम रुक जायगा। आजमगढ़ पर कुँवर सिंह के अधिकार से लखनऊ के बागियों की ताकत बढ़ जायगी।

कर्नल डेम्स आजमगढ़ से निकल पड़े। उनके साथ कई सौ गोरे सिपाही और मदरासी घुड़सवार भी थे। दो बड़ी-बड़ी तोपें थीं। कुँवरसिंह को आजमगढ़ में घुसने से पहिले ही वह मार भगा देना चाहते थे। कर्नल मिल्सन आजमगढ़ की देख-भाल के लिए रुक गए।

⁂

कर्नल मिल्सन की पराजय का समाचार और सहायता का पत्र जब इलाहाबाद पहुँचा तो सभी चिन्ता में पड़ गए। इस नए पर दुर्धष वीर को रोकना एक समस्या हो गई। कुँवरसिंह का आजमगढ़ की ओर बढ़ना आसपास की अंग्रेज अमलदारी के लिए खतरनाक बात है।

लार्ड मार्ककार को गवर्नर जनरल का हुक्म मिला। वह कुँवरसिंह का मुकाबला करें। इलाहाबाद की तेरह नम्बर गोरी पैदल सेना लेकर लार्ड मार्ककार बनारस की तमाम सेना को भी अपने साथ कर कुँवरसिंह का सामना करने के लिए आजमगढ़ की ओर बढ़े।

⁂

आजमगढ़ से कुछ ही मील दूर पर कर्नल डेम्स को रुक जाना पड़ा। पता चला कि पास ही कुँवरसिंह की फौज पड़ी हुई है। कर्नल डेम्स अपने सैनिकों को तैयार कर आक्रमण करने आगे बढ़े। तोपों ने गोले उगले। मदरासी घुड़सवार दौड़े। संगीनें चमकीं। बंदूकें कड़कीं।

सहसा कुँवरसिंह के भी सैनिक सामने आ गए। एक तेजस्वी प्रौढ़ घोड़े पर नजर आया। उसकी आँखें अँगारों सी चमक रही थीं। उसकी दाहिनी बलिष्ठ भुजा का भाला चमका। कुछ संकेत हुआ।

"कुँवरसिंह की..."

"बाबू कुँवरसिंह की..."

"जय !"

सैनिक टूट पड़े बाँध की लहरों से, जैसे बाँध टूटा हो। हहराकर सिपाही दौड़े और कर्नल डेम्स की रक्षा पंक्ति में धँस गए। तोपों के सामने ऐसे डटे कि सैकड़ों के गिरने के बाद भी न हटे और तोपों को छीन लिया। बायीं ओर से स्वयं बाबू साहब मार कर रहे थे।

कुछ ही घंटों में मैदान खून से तर हो गया। लाशों से पट गया और सिपाहियों की जोशीली मार के आगे न घुड़सवार टिके और न पैदल सैनिक। कुँवरसिंह को मार भगाने के लिए आए कर्नल डेम्स को स्वयं भागना पड़ा। घोड़े पर बैठे तथा अंगरक्षकों के साथ प्राण बचाकर भागे। सिपाहियों ने उन्हें दूर तक खुलुआया। गोरी सेना की बुरी हार हुई। मैदान कुँवरसिंह के हाथ रहा।

वह आजमगढ़ की ओर बढ़े।

विद्रोह के इस सागर को अब कोई नहीं रोक सकता। बाबू कुँवरसिंह का लहराता निशान आगे बढ़ा। आजादी का निशान। जिसे मातृ भूमि की स्वतन्त्रता प्यारी हो, वह आगे आए। जो देश भक्त है, वह आगे आए। जयचंदों का अब जमाना नहीं। अब जमाना आया है अपने देश पर—अपना राज। जिसे गुलामी प्यारी हो वह घर में रहे, जिसे आजादी प्यारी हो, वह कुँवरसिंह के साथ आए।

बाबू कुँवरसिंह के आने का समाचार बिजली की तरह चारों ओर फैलता जा रहा था। गाँव-गाँव से लोग उनके दर्शन को आते। बूढ़े और जवान उनकी सेना में मिल जाते। हमें मातृ-भूमि प्यारी है। हमें देश की आजादी प्यारी है। इसके लिए शीश हमारा हाजिर है।

कुँवरसिंह घोड़े पर बैठे बढ़े जा रहे थे। आगे-आगे निशान लहराता चला रहा था और वीरों को जगाता हुआ डंका बजता चला जा रहा था। रक्त से लथ-पथ बूढ़ा हिन्दोस्तानी फिरंगियों को हटाने, अपनी जन्म-भूमि को मुक्त करने चला जा रहा था। हमें गुलामी नहीं, मौत प्यारी है।

गाँव-गाँव में कुँवरसिंह का स्वागत होता और वीर सेनानी, माताओं का आशीश ले अपनी सेना के साथ आगे बढ़ रहा था।

❋

सरसाना में लार्ड मार्ककार का पड़ाव। दूत ने आकर एक पत्र उन्हें दिया। पत्र कर्नल डेम्स का था, जिसमें तत्काल आजमगढ़ आने की प्रार्थना थी। कहा गया था कि यदि आजमगढ़ आने में तनिक भी विलंब होगा, तो आजमगढ़ हाथ से जाता रहेगा। कुँवरसिंह बड़ी तेजी के साथ आजमगढ़ की ओर बढ़ रहा है। दूसरी ओर अमरसिंह का भी उत्पात प्रारंभ हो गया है। दोनों भाई अंग्रेजी हुकूमत के लिए आफत के परकाले हैं। इन दोनों को तुरन्त समाप्त किया जाय।

पत्र मिला। साँझ हो गई थी। लार्ड मार्ककार ने अब तक कुँवरसिंह के बारे में जो कुछ सुना था, उससे उन्हें साहस न हुआ कि वह रात में अपनी फौज के साथ आगे बढ़ सकें। ऐसा करना खतरे से खाली न था। अतएव रात में कूच करना स्थगित रहा।

बड़ी बेचैनी से रात काटने के बाद प्रातः काल ही लार्ड मार्ककार ने आजमगढ़ की ओर तेजी से प्रस्थान किया। सेनापति मार्ककार स्वयं पथ प्रदर्शक बने। आँधी की गति से सेना दौड़ती हुई चली। आजमगढ़ में कुँवरसिंह से पहिले पहुँचना जरूरी है वरना बाद में बड़ी मुश्किल हो जायगी।

दो घंटे बाद यकायक लार्ड मार्ककार को अपनी सेना रोक देना पड़ी।

देखा। बायीं ओर कुछ मकान और आमों का बगीचा है। दाहिनी ओर खेतों के नाले पर छोटा सा पुल बँधा है और इसी के आस पास सिपाही बिखरे हैं। लार्ड मार्ककार को कुछ देर रुकना पड़ा। पूरी सेना आ जाने पर कुछ पैदल सैनिकों को बायीं ओर से सिपाहियों पर आक्रमण करने का आदेश दिया। मकानों के पास जैसे ही पैदल सेना पहुँची, गोली वर्षा शुरू हो गई।

तोपों को तैयार कर उस दिशा में गोले दागे गए किन्तु तभी बड़ी गड़बड़ी हो गई। बंदूकों की मार करते हुए सैकड़ों सिपाही उन मकानों से निकलकर बाहर आ गये और प्रबल वेग से पैदल सेना में धँसते हुए तोपों के पास आ गए। गोलियों की बुरी मार हुई और हाथियों पर गोलियाँ बरसीं। हाथी बिगड़ गए। साथ ही बैलगाड़ियों में भी अव्यवस्था फैल गई।

सिपाहियों ने गाड़ियों में आग लगा दी। उधर हाथी बिगड़कर अपनी ही सेना का नाश करने लगे। कुछ सिपाही हाथियों को हुदकार-हुदकारकर अंग्रेजी सिपा-

हियों पर दौड़ाने लगे। लार्ड मार्ककार की सारी युद्ध-व्यवस्था भंग हो गई। हत् बुद्धि हो खड़े रह गए।

सिपाहियों के प्रबल संग्राम के आगे लार्ड मार्ककार को भीषण क्षति उठानी पड़ी। उनकी तोपें भी कारगर न हुईं। स्वयं उनके लिए संकट आ गया। बचे हुए सैनिकों को उन्होंने मकान की आड़ में जाने का संकेत किया। सैनिक उसी ओर भागे पर तोपों की मार से मकानों की दीवारें गिर गई थीं। आश्रय निरापद न था। सहसा लार्ड मार्ककार ने बारूद में आग लगा दी।

बारूद भड़की और इस भयंकर धड़ाके से सिपाही घबराकर भागे। इसी समय लार्ड मार्ककार रास्ता साफ पा आमों के बाग में आ गए। बचे हुए सैनिक भी उसी ओर आ गए। बारूद की चिनगारियों का छिटकना बंद हुआ तो सिपाही आगे बढ़े। पुल से आगे आए सिपाही। एक गोरा अफसर कुछ सैनिकों के साथ पुल की ओर दौड़ा, पर सिपाहियों ने उन सबको समाप्त कर दिया। इससे एक लाभ हुआ कि धान के खेतों से होकर लार्ड मार्ककार को आजमगढ़ की ओर भागने का रास्ता मिल गया। जब तक सिपाही उस टुकड़ी से निपटें-निपटें, तब तक लार्ड मार्ककार उस ओर भाग गए और बड़े वेग से आजमगढ़ की ओर बढ़े।

कुँवरसिंह से मुकाबला करने की अपेक्षा आजमगढ़ पहुँच जाना उनके लिए अधिक लाभप्रद था। लार्ड मार्ककार भागे। सिपाहियों ने पीछा किया। विजेता विजित की यह दौड़ कई मील तक चली। आगे फिर एक पुल था। पुल खराब था। तुरन्त पुल ठीक करने का कोई उपाय न था। बड़ी कठिनाई से पुल पारकर गोरी सेना भागी। कुँवरसिंह बराबर पीछा कर रहे थे।

❀

दौड़ बराबर जारी थी।

सामने ही आजमगढ़ था। बिना रुके बाबू कुँवरसिंह पीछा कर रहे थे। यही सुनहला अवसर था कि वे आजमगढ़ पर कब्जा कर लें। भागती हुई गोरी सेना शहर में आयी और कुँवरसिंह भी शहर में धँसे। कुँवरसिंह का निशान फहराते देख और गोरों को भागते देख पूरा कस्बा सनसना गया।

"बाबू कुँवरसिंह की..."

"जय !"

नगर में भगदड़ मच गई। आ गए कुँवरसिंह। सड़कों पर मार-काट शुरू हो गई। कुँवरसिंह और उनके सिपाही लार्ड मार्ककार और उनके सैनिकों को खदेड़-खदेड़कर मार रहे थे। लार्ड मार्ककार भागे जा रहे थे और प्राण-रक्षा का कोई उपाय उनके सामने न था।

लार्ड मार्ककार को युक्ति सूझ गई। अपने साथियों सहित वह जेलखाने में धँस गए। चारों ओर के फाटक बंद कर दिए गए। लार्ड मार्ककार और उनके शेष साथियों ने जेलखाने में शरण ली। सिपाहियों ने जेलखाना घेर लिया और आजमगढ़ पर कुँवरसिंह का अधिकार हो गया।

जेलखाने में घिरी हुई अंग्रेजी सेना निराश हो मौत की प्रतीक्षा करने लगी।

*

"मिस्टर लुगार्ड..."

"यस सर !"

"आप इसी वक्त कुछ सेना साथ लेकर आजमगढ़ की ओर बढ़िए। कर्नल मिल्सन का पत्र आया है।"—सेनापति कैम्पबैल बोले—"उसके मुताबिक आजमगढ़ की हालत बहुत खराब है। तमाम बचे साथी जेलखाने में घिरे हुए हैं। कुँनरसिंह को तुरन्त खत्म करो !"

"......"

"इसका थोड़ा भी आगे बढ़ना हमारे लिए खतरनाक हो सकता है !"

कर्नल लुगार्ड ने अपने सेनापति के आदेश का तत्काल पालन किया। कैम्पबैल परेशान थे। अभी लखनऊ पर भी पूरी तौर से कब्जा नहीं हुआ है। इधर कुँनरसिंह उठ गया है। उधर झाँसी की रानी का झंडा फहरा रहा है। अभी-अभी खबर आती है कि तात्या टोपे, नाना साहब और बाला साहब फिर एक बड़ी फौज के साथ आगे बढ़ रहे हैं। समझ में नहीं आता। कमबख्त यह कैसा जादू है ! देखते देखते सिपाहियों का पता नहीं चलता, कहाँ गए ! सैकड़ों मारे जाते हैं। और फिर जाने कहाँ से हजार-हजार सिपाही आ जाते हैं। इस तात्या टोपे ने तो नाकों दमकर रखा है। जादू का पुतला मालूम होता है। बुरी तरह हारकर भागता है और फिर जाने कहाँ से हजार-हजार सिपाहियों के साथ फिर-फिर चढ़ बैठता है।

कर्नल लुगार्ड ने अपनी सेना तैयार कर ली। कूच का बिगुल बजा तो केम्पबैल के मन को कुछ शान्ति मिली। इस ओर से कुँवरसिंह का बढ़ना कुछ रुक जाय तो संकट कम हो वरना तीनों तरफ से घिर जाने पर अवध, रुहेलखंड, बिहार, मध्य भारत स्वतंत्र हो एक हुए नहीं कि अंग्रेजी अमलदारी हमेशा के लिए उठ जायगी।

कर्नल लुगार्ड आजमगढ़ की सहायता के लिए पूरे वेग से बढ़े।

४३

सुलतानपुर से जैसे ही गोमती का पुल पार करते हुए आजमगढ़ बढ़ने के लिए कर्नल लुगार्ड ने अपनी सेना तैयार की जैसे ही उन्हें रुक जाना पड़ा।

"साहब रास्ता बन्द है।"

"कैसे?"

"गोमती का पुल तोड़ दिया गया है!"

"अवश्य ही यह उस बदमाश कुँवरसिंह की कार्रवाई है, ताकि हम आजमगढ़ न पहुँच सकें।"—कर्नल लुगार्ड ने अपने होंठ काटे—"अच्छा! देखें कब तक बकरी की अम्माँ खैर मनाती है!"

कर्नल लुगार्ड ने अपना रास्ता बदला। नदी किनारे-किनारे उन्होंने अपनी फौज आगे बढ़ायी। अब एक ही चक्करदार रास्ता था। जौनपुर होते हुए आजमगढ़। भरसक अपनी गति तीव्र करते हुए कर्नल लुगार्ड जौनपुर आए। जौनपुर आते ही उन्हें तोप की आवाज सुनायी दी।

साथ ही गुप्तचर ने संदेशा दिया।

"सिपाही लड़ने के लिए खड़े हैं।"

"ये कहाँ से आ गए?"

"यह सब न पूछिए साहब! इस इलाके की हालत अजब है। यहाँ पर हर कदम पर लोग लड़ने को तैयार हैं। नए-नए लोग मैदान में आ जाते हैं।"

"यहाँ कौन है?'

"गुलाम हुसैन!"

"यह कौन आदमी है?"

"इसके बारे में कुछ नहीं मालूम हो सका। सुना है, इसी जौनपुर का एक छोटा सा सरदार है, जो आपके आने की खबर पाकर मुकाबले के लिए तैयार है।"

"कितने सिपाही हैं?"

"कोई ढाई तीन हजार।"

"अच्छा! हम लड़ेंगे। बढ़ाओ, फौज आगे! हाथी देखकर कुत्ते भौंकते ही हैं!"

कर्नल लुगार्ड आक्रमण के लिए आगे बढ़े। कुछ ही दूरी पर टिड्डियों की तरह बिखरे हुए सिपाही दिखायी पड़े। उनके पास तोपें भी थीं। गोरी पलटन देखते ही गोलाबारी शुरू हो गई। साथ ही बंदूकें चलने लगीं। कर्नल लुगार्ड ने अपनी सेना को तेजी के साथ आक्रमण करने का आदेश दिया। गोरी सेना सिपाहियों पर टूट पड़ी। घमासान युद्ध शुरू हो गया।

गुलाम हुसैन अपने साथियों के साथ प्राण-पण से लड़ता हुआ गोरी सेना के वेग को रोक रहा था। सिपाहियों में जोश था, पर उनका युद्ध सुनियोजित न था। लुगार्ड ने चतुराई से काम लिया। सेना को कई टुकड़ी में बाँट घेरा फिंकवा दिया। तिहरी मार के आगे सिपाही ठहर न सके। युद्ध का रंग पलट गया और गोरी सेना के पक्ष में युद्ध का फैसला हुआ।

गुलाम हुसैन पकड़ा गया। बहुत से सिपाही मारे गए। लुगार्ड विजयी हुए। गुलाम हुसैन सामने लाया गया। रक्त से लथ-पथ मुसलमान सरदार के चेहरे पर तनिक भी घबराहट न थी। बंदी दशा में भी वह लुगार्ड के सामने तनकर खड़ा हो गया।

"तुम्हारा क्या नाम है?"

"गुलाम मुहम्मद!"

"जानते हो, तुमने हुकूमत के खिलाफ बग़ावत की है?"

"हाँ, उनके खिलाफ, जो इस देश पर हुकूमत करने के काबिल नहीं। जो चोर और लुटेरे हैं।"

"इसे गोली मार दो!"

आदेश का पालन हुआ। बंदूक का एक धड़ाका और गुलाम हुसैन के प्राण उड़ गए।

*

सर ह्यू रोज चंचलपुर तो आ गए पर अब उनमें आगे बढ़ने का साहस न था, हालाँकि झाँसी चौदह मील ही दूर थी। झाँसी के संबंध में अब तक जैसे समाचार उनके पास आ रहे थे, वे बहुत ही चिंताजनक थे। लक्ष्मीबाई ने अल्प काल में ही बड़ी योग्यता के साथ शासन सँभाल लिया है और सभी रानी के प्रशंसक हैं। दूसरी ओर उसने युद्ध की भी पूरी तैयारियाँ कर ली हैं। झाँसी पर अंग्रेजी अमलदारी की पुनर्स्थापना के लिए मँहगा मूल्य चुकाना पड़ेगा।

गवर्नर जनरल लार्ड कैनिंग, बंबई के गवर्नर लार्ड एलफिनस्टन झाँसी से अंग्रेजी सत्ता उठ जाने के कारण बेचैन हैं। अंग्रेज स्त्री-बच्चों का भी कत्ल किया जा चुका है और झाँसी पर रानी का स्वतन्त्र झंडा फहरा रहा है। यह झंडा सारे देश में बिखरी अंग्रेजी सत्ता को चुनौती दे रहा है। यह एक ललकार है। बग़ावत का शोला है, जिसे बुझा देना बहुत जरूरी है।

सहायक सेनाध्यक्ष भीतर आया।

अभिवादन किया।

"क्या समाचार है ?"

"झाँसी में लड़ाई की विकट तैयारियाँ पूरी हो चुकी हैं !"

"कितनी सेना है ?"

"कोई तेरह हजार !"

"तेरह हजार !"

"जी हाँ !"—सेनाध्यक्ष ने कहा—"अभी-अभी हमारे समाचार आए हैं। मोर्चेबंदी पूरी है। रानी स्वयं लड़ेगी। औरतों की भी एक फौज है।"

"रानी स्वयं लड़ेगी ?"

"हाँ, आजकल मरदाने लिबास में वह खुद गद्दी पर बैठती है। जब हम लोग हमला करने चलेंगे, तो वह स्वयं लड़ने आयेगी।"

"हूँ।"

"......"

"......"

"आगे चलने की तैयारी करो !"

सर ह्यू रोज के माथे पर बल पड़ गये। एक औरत से उनका मुकाबला है। इतनी

बड़ी अंग्रेजी हुकूमत से टकराने के लिए एक औरत सामने आ रही है। यह देश मानों आफत के परकालों का देश है। यहाँ औरतें भी लड़ती हैं। भला ऐसे देश को अपनी मुट्ठी में दबाकर कब तक रखा जा सकता है!

सर ह्यू रोज को महसूस हुआ। शासन की अपनी ही गलतियों का परिणाम आज भुगतना पड़ रहा है। अगर इससे पहिले रानी की बात मान ली गई होती। गोद लेने का अधिकार न छीना गया होता अथवा कर्ज के नाम पर जो चौगुना रुपया चढ़ाकर झाँसी हड़पने का प्रयास न किया गया होता, तो वे देशी नरेश आज भला क्यों अंग्रेजी अमलदारी के खिलाफ सिर उठाते। टेहरी की रानी और महाराजा सिंधिया की तरह अथवा राजपूताने के अन्य देशी नरेशों की तरह आज ये लोग भी अंग्रेजों का साथ देते, पर...

खैर, जो होना था सो हो गया। अब स्थिति का सामना करना ही पड़ेगा। झाँसी पर जो स्वतंत्रता का झंडा फहरा रहा है, उसे गिराना ही पड़ेगा।

फौज आगे चल पड़ी।

*

अंग्रेजी पड़ाव के दक्षिण की ओर बहुत दूर तक पहाड़ ही फैले थे। पहाड़ों के बीच से कालपी का रास्ता था। बायीं ओर पहाड़ तथा दतिया का राज्य था। उत्तर की ओर गर्व से सिर उठाए पहाड़ी पर किला था। प्रकृति की शक्ति ने मनुष्य के शिल्प के हाथों बन-संवरकर अपने को लोहे सा दृढ़ बना लिया था। चारों ओर ऊँची मजबूत दीवारें थीं। किले के पश्चिम और दक्षिण को छोड़कर बाकी और दिशाओं में शहर बसा था। झाँसी की परिधि साढ़े चार मील थी। चारों ओर अठारह से तीस मील ऊँची दीवारें थीं। फसीलों में गोलियाँ चलाने के छेद और तोपों के रखने के स्थान भी थे। किला दुर्भेद्य था। एक ऊँचे टीले पर खड़े होकर सर ह्यू रोज ने किले को भली-भाँति देखा।

अपने सहायकों के साथ मिलकर सर ह्यू रोज ने आक्रमण की एक विस्तृत योजना बनायी।

"पहले पैदल सेना आगे बढ़े।"

"पर तोपों और बंदूकों की मार..."

"उसे रोकते हुए आगे बढ़ना होगा !"

"......"

"हमारा सारा कार्य शीघ्र होना चाहिए। क्योंकि इस बात का पता चला है कि रानी ने नाना साहब को पत्र लिखा है। अगर ऐसा हुआ। नाना या तात्या कोई भी आया, तो हम बड़ी मुश्किल में पड़ जाँयगे।',

"ठीक है। आज ही आक्रमण होगा !"

मारू-डंका बज गया।

❀

किले में मारू डंका बाजा।

रानी कूदकर घोड़े पर सवार हुई।

"महारानी लक्ष्मीबाई की—"

"जय !"

गगनभेदी नारा उठा और रानी ने स्वयं आगे बढ़कर अपनी अफगान और बुन्देला सेनाओं का संचालन भार सँभाला। आक्रमण के लिए रानी स्वयं आगे बढ़ी। पहिला वार रानी का ही होगा। अंग्रेजी अमलदारी के अत्याचारों से पीड़ित रानी का हृदय प्रतिशोध की अग्नि से भभक रहा था। इन अंग्रेजों को हमारी सत्ता हड़पने का क्या अधिकार है ? हमारे देश पर शासन करने की हिम्मत इनमें कैसे बढ़ती जा रही है ? हमने सदा इनके साथ मित्रों का सा व्यवहार किया, पर इन सबने सदा छल-कपट का व्यवहार किया। हमारा शासन छीनकर हमें गुलाम बनाना चाहते हैं और अब हमारी ओर भी वक्र-दृष्टि फेरी है। आँखें निकाल ली जाँयगी। हिन्दोस्तान पर फिरंगी हुकूमत करें। यह कोई आसान बात नहीं।

सिपाहियों के उठते ही रानी ने स्वयं शासन भार सँभाला। युद्ध की तैयारियाँ पूरी कीं। किले की मरम्मत कराई और पूरी मोर्चेबंदी के साथ उसने स्वतन्त्र सत्ता की घोषणा कर दी।

और अब अंग्रेज आए हैं।

आने दो। कोई भी, जो हमारी स्वतन्त्रता का हरण करेगा, हम उससे युद्ध करेंगे।

सर ह्यू रोज सेना के निकट आते ही रानी ने युद्ध का डंका बजने का आदेश दिया।

"तैयार!"

किले के मुख्य स्थानों पर सेना फैल गई। आक्रमण का उत्तर देने के लिए। तोपें सध गईं। झंडा हिला। तोपें गरज उठीं। रानी स्वयं घोड़े पर सवार थी। उसके हाथ नंगी तलवार थी। तोपें दोनों ओर से गरजीं। अंग्रेजी तोपें किले की दीवार तोड़ने का भरसक प्रयास कर रही थीं। साथ ही पैदल सेना भी किले की दीवार के निकट तक पहुँच जाने का प्रयास कर रही थी।

रानी सारी स्थिति का निरीक्षण स्वयं कर रही थी। किले की दीवार से उसने देखा, गोरी पलटन के सैनिक साँपों से लहराते चले आ रहे हैं और उनकी तोपों की भयंकर मार दीवारों से टकरा रही थीं। रानी ने झटके से संकेत किया। इस संकेत के होते ही किले की तोपों ने एक बारगी प्रलय-दृश्य ही उपस्थित कर दिया। सैनिक लोटने लगे और अंग्रेजी तोपों के मुँह टूटने लगे। इस भयंकर गोलाबारी से घबराकर किले की दीवार के निकट आने का प्रयास करती हुई पैदल टुकड़ियाँ चने की तरह भूँज दी गईं। अंग्रेजी पलटन में भगदड़ मच गई। झाँसी का झंडा गर्व से फहराता रहा।

साँझ हुई। किले की दीवारों पर मशालें जल उठीं। झाँसी के सैनिक पूर्ण सतर्क थे। रानी भी एकदम तैयार। अगर रात में अंग्रेज कुछ कार्यवाही करें, तो उसका मुकाबला करने के लिए सभी तैयार रहें।

ॐ

रात का सन्नाटा चारों ओर खिंचा था। अधजली झाड़ियों और घास को रौंदती हुई एक सैनिक टुकड़ी पूरी सतर्कता के साथ किले की दीवार की ओर बढ़ रही थी। दूर खड़े सर ह्यू रोज साँस रोककर दृश्य देख रहे थे। एक-एक क्षण उन्हें पहाड़ सदृश लग रहा था। ऐसा लग रहा था कि काल सिर मँडरा रहा है। इस किले पर यदि शीघ्र अधिकार नहीं होता तो मृत्यु निकट है। आज दिन में किले की तोपों ने जो तबाही की है, वह बड़ी भयंकर रही है। इस तरह के युद्ध में टिकना मुश्किल है।

सहसा तोप गरज उठी।

फिर गरजी।

फिर गरजी।

उफ़! सर ह्यू रोज निराश हो गए। रात गए भी किले के सैनिक पूर्ण सतर्क हैं। वह शिविर में लौट आए। थोड़ी देर में समाचार आया, उनकी टुकड़ी भारी क्षति उठाकर वापस आ गई। किले की दीवार तक पहुँच पाना बड़ा मुश्किल है। तोपों की मार से बचते हुए अगर किले की दीवार के निकट पहुँच भी गए तो बारूद आने-आने तक गोलियों की मार से रक्षा कर सकना असंभव है।

"कुछ समझ नहीं आता, क्या करें?"

"......"

"कोई उपाय निकालना जरूरी है।"

"एक उपाय है?"

"क्या?"

"कल युद्ध रोक दिया जाय।"

"क्यों? क्या...?"

"जी नहीं। ऊँची मचानें बनाकर तोपों को उन पर चढ़ाकर बमबारी की जाय। तभी हम शत्रु का कुछ नुकसान कर सकते हैं। जब कि इनकी तोपों और गोलंदाजों को कुछ नुकसान होगा तभी हम लोग लड़ाई जीत सकेंगे!"

"हुँ!"

"योजना कैसी है?"

"ठीक है। तैयारियाँ करो।"

युद्ध रोक दिया गया और मचानों को बनाकर उन पर तोपें रखने का कार्य पूरी शक्ति से शुरू हो गया।

*

लखनऊ के चारों ओर अंग्रेजी सेना का दबाव बढ़ता जा रहा था। सिपाही भी संघर्षरत थे। प्राणपण से अँग्रेजी सेना को हटाने का प्रयास कर रहे थे, पर अंग्रेजी सेना का दबाव न रुकता था। गोरखे और सिक्ख सैनिकों की प्रबल मार से पैर उखड़ जाते थे।

केम्पवैल के कुशल निर्देशन में सैनिक बढ़ते और उनका हर कदम मजबूती से उठ रहा था। दोनों पक्षों की ओर से रोज प्रबल आक्रमण होते। एक-एक इंच भूमि के लिये लाशें बिछ जाती थीं सिपाहियों के दल के दल आते, लड़ते मरते और लौट जाते। अंग्रेजी सेना को पीछे खदेड़ न पा रहे थे।

मौलवी अहमदुल्ला, बेगम हजरतमहल, राजा मानसिंह के जाने के बाद भी हिम्मत न हारे थे। युद्ध रत थे और दोनों मिलकर युद्ध संचालन कर रहे थे। बाहर से किसी प्रकार की मदद की आशा न थी। बेगम हजरतमहल ने एक दो बार तात्या टोपे और नाना साहब की सहायता या सहयोग लेने की बात चलायी तो मौलवी अहमदुल्ला ने फटकार दिया। मौलवी के मन में नाना साहब के प्रति अविश्वास की जड़ें बहुत गहरी जम चुकी थीं। अतएव किसी भी मूल्य पर वह सहयोग को तैयार न था।

लखनऊ युद्ध की आग में जल रहा था। रात दिन तोपों और बन्दूकों की आवाजें सुनते-सुनते नागरियों और सिपाहियों के कान फट गए थे। एक प्रकार से नागरिक जीवन ठप्प ही था। यदाकदा छिटपुट दूकानें खुलतीं और बन्द हो जातीं! शासन की कोई व्यवस्था न थी। छोटे-छोटे हाकिमों की खूब बन आयी थी। सिपाहियों के वेतन या भोजन आदि की कोई व्यवस्था शासन की ओर से न थी। महज़ देश के नाम, मुल्क के नाम पर सिपाही लड़ रहे थे। चील झपट्टा प्रवृत्ति सर्वत्र व्याप्त थी।

इस अराजकता में भी एक एकता थी और वह एकता थी, साथ युद्ध करने की। सबके मन में एक यही भावना थी कि उन्हें अंग्रेजों से लड़ना है और उन्हें निकाल बाहर करना है। युद्ध जारी था। लखनऊ के इस युद्ध के निर्णय की ओर सभी की आँखें लगी थीं।

*

"चटगाँव के सिपाही हैं?"

"जी हाँ!"

"तुरन्त सबको गिरफ्तार किया जाय!"—त्रिपुरा नरेश ने आदेश दिया।

आदेश मिलते ही तत्काल त्रिपुरा राज्य की सैनिक टुकड़ी विद्रोही सिपाहियों को पकड़ने के लिए निकल पड़ी।

चटगाँव में विद्रोह कर भागे सिपाहियों के कष्टों का अन्त न था। कमिल्ला पारकर वे सब ब्रिटिश राज की सीमा से बाहर निकल जाना चाहते थे। दस हजार रुपये और तीन ही हाथी उनके पास थे। त्रिपुरा से थोड़ी दूर पर वे सब पड़ाव डाले थे।

धूल उड़ती देख सब चौकन्ने हुए।

"पलटन आ रही है!"

"मालूम तो ऐसा ही पड़ता है!"

थोड़ी ही देर में त्रिपुराराज की सैनिक टुकड़ी दिखलायी दी। अपने शस्त्र सँभाल सिपाही पीछे हटने लगे। त्रिपुराराज के सैनिकों ने घेर ही लिया। सिपाहियों ने मुकाबला किया। थके माँदे सिपाही आक्रमण का सामना न कर सके। हाथी और खजाना छिन गए। कुछ मारे गए। कुछ पकड़े गए। शेष भाग गए।

*

सौ से भी कम सैनिक किसी प्रकार भागकर अपनी जान बचा सके। आस-पास के जमींदार भी उनको तंग करने लगे। दिन-रात की भागदौड़ के बाद ये सब श्रीहट्ट की सीमा पर आए। हरवंस इन सबका मुखिया बना। चटगाँव के विद्रोह में भी इसका प्रमुख हाथ था। हरवंस को पता चला कि श्रीहट्ट में मेजर बाइंग के आधीन एक देशी सेना है।

अपने साथियों को विश्राम की सलाह दे, रात के अँधेरे में हरवंस चादर ओढ़ नगर की ओर चल पड़ा। सारी शक्ति नष्ट हो चुकी है। आगे बढ़ने में लिए धन चाहिए। यदि किसी प्रकार की सहायता नहीं मिलती है, तो सब बेमौत मरेंगे।

चिन्ता में डूब हरवंस श्रीहट्ट आया। फौजी पड़ाव के आस-पास के स्थान को जाँचकर वह भीतर गया। कुछ सैनिक एक चारपाई पर बैठे थे। हुक्का चल रहा था। इधर-उधर की गपशप हो रही थी। हरवंस पास जाकर खड़ा हो गया।

"कौन हो?"

"मैं!"

"परदेशी?"

"हाँ !"

"क्या काम है ? अंदर कैसे आए ?"

हरवंस ने अपनी मुद्रा दयनीय बनाकर कहा—"मेरा छोटा भाई बागी होकर इसी तरफ लापता है। मैं उसी की खोज कर रहा हूँ। अगर आप लोगों को मालूम हो, तो बतलाइए। उसके बिना हम लोग दुःखी हैं। हमारे खानदान का चिराग गुल समझिए।"

"तुम्हारा छोटा भाई सिपाही था ?"

"हाँ !"

"बागी होकर भागा है ?"

"हाँ !"

"अगर वह इधर आयगा, तो हम लोग उसे गोली मार देंगे। बागियों के लिए यहाँ कोई जगह नहीं है।"

"मेरी तरह अगर वह तुम लोगों का भी छोटा भाई हो तो ?"

"गोली मार देंगे !"

"यहाँ बागियों को कोई जगह नहीं है।"

"हम बागियों का सिर काट लेंगे।"

"वह बागी नहीं। उसने आजादी के लिए सिर उठाया है। आप लोग क्या सिपाहियों को बागी समझते हैं ? क्या यह बगावत है। यह तो देश की आजादी की लड़ाई है। सात समुन्दर पार से आए लोग हमारे मुल्क पर हुकूमत करें। क्या यह हम लोग बरदास्त कर सकते हैं ?"

"फालतू बातें मत करो !"

"ये भी बागी मालूम होता है, भाइयो !"

"इसकी बातें मत सुनो !"

"इसका दिमाग खराब हो गया है !"

"तुम यहाँ से चले जावो।"

हरवंस चुपचाप सुनता रहा। उसने समझ लिया। यहाँ के सिपाहियों को कुछ भी समझाना व्यर्थ है। ये हथियार नहीं उठा सकते। यहाँ सिर खपाना व्यर्थ

है। निराश हरवंस चुपचाप चला आया। अपनी इस असफलता का समाचार उसने अपने साथियों को दिया।

"इसका अर्थ यह है कि हम लोगों की मौत निश्चित है।"

"हाँ!"

"इससे बेहतर हम सब लड़ते-लड़ते मर जाँय।"

"अवश्य!"

"यहाँ पर पुलिस थाना है?"

"हाँ!"

"चलो फूँक दो उसे!"

*

सवेरा होते ही श्रीहट्ट में सनसनी फैल गयी। पुलिस थाना फूँक दिया गया है। बाहर के बागी सिपाही यहाँ आ गए हैं। साथ ही नगर में यह भी अफवाह फैली कि यहाँ के सिपाही भी बगावत करने वाले हैं। इस अफवाह से सनसनी मची। बाजार हाट बन्द हो गए। लोगों में सनसनी फैल गई। भगदड़ मच गई। थाने की इमारत जल रही थी। मेजर वाइंग को समाचार मिला। तुरन्त दौड़े। परेड के मैदान में आए, पर वहाँ के सिपाहियों में शान्ति देख वह निश्चिन्त हुए।

थाने में आग लगाने के समाचार से सिपाहियों में घबराहट फैल गई। उन्हें इस बात का विश्वास होने लगा कि अब औरों के साथ जैसा व्यवहार हुआ है, उनके साथ भी ऐसा होगा। उनकी वर्दियाँ छीन ली जाँयगी। हथियार ले लिए जाँयगे।

मेजर वाइंग ने परेड के मैदान में आकर शान्ति देखी। तुरन्त सिपाहियों को आने कहा। आदेश पाते ही सभी सिपाही बड़ी तत्परता के साथ उनके सामने आ गए। सभी ने अपने हथियार मेजर वाइंग के सामने झुका दिया। उनकी फुर्ती और इतनी वफादारी देखकर मेजर वाइंग प्रभावित हुए।

"मेरा ऐसा ख्याल है कि बाहर से कुछ बागी सिपाही यहाँ गए हैं!"

"जी हाँ!"

"हम उन्हें इसकी सजा देंगे। सब तैयार हैं?"

"हाँ।"

मेजर वाइंग सैनिक टुकड़ी के साथ बागी सिपाहियों की खोज में निकले। कुछ ही दूरी पर उन्हें बागी सिपाहियों का पता चला। मेजर वाइंग तेजी के साथ दौड़े। सिपाहियों को घेर लिया। बागियों की टुकड़ी बड़ी वीरता के साथ लड़ी। बहुत से लड़ते-लड़ते मरे। मुट्ठी भर लोग जँगल में भाग गए।

उनके भय की आशंका पुनः थी। अतएव वाइंग ने कलकत्ता समाचार भेजा कि कुछ गोरी पलटन यहाँ मदद के लिए भेजी जाय।

*

चटगाँव, ढाका, श्रीहट्ट, आदि स्थानों के समाचारों से छोटा नागपुर भी डोल उठा। छोटे-छोटे गोंड़ राजाओं ने अपने को स्वतन्त्र घोषित कर दिया। उनके स्वतंत्र राज्य जबर्दस्ती अंग्रेज हड़प चुके थे और उनके हाथ के तमाम अधिकार छीन लिए थे, पर जनता में उनकी प्रतिष्ठा पूर्ववत् थी। अतएव गोंड़ प्रदेश के छोटे-छोटे राजा स्वतंत्र हो, शासन करने लगे। सब अपने-अपने क्षेत्र में स्वतंत्र बन बैठे। इस स्वतंत्रता के स्थायित्व के लिए उन लोगों ने आपस में एका नहीं किया। उनको एक सूत्र में बाँध रखने का विचार किसी के मन में न आया। सब अपनी-अपनी अल्प शक्ति के भरोसे सत्तारूढ़ हो गए।

*

हजारीबाग का समाचार पाते ही कप्तान डाल्टन चौंक पड़े। विद्रोह की आग यहाँ तक फैल गई। राँची में वे अपनी छुट्टियाँ बिताने आए थे, पर चैन से दो रोज भी न रह सके और आज यह समाचार सुनने को मिला है कि हजारीबाग की आठ नंबर पैदल सेना ने बगावत कर दी है। रिसाले वालों ने अभी उनका साथ नहीं दिया है। चिनगारियाँ अभी छिटकी ही हैं।

कप्तान डाल्टन हजारीबाग चल पड़े।

हजारीबाग की आठ नंबर पैदल सेना ने गोलों, बारूदों और खजानों पर कब्जा कर लिया था। इस कांड से हजारीबाग सनसना गया था। हजारीबाग आते-आते कप्तान डाल्टन को समाचार मिला कि विद्रोह पूरे शहर में फैल गया है।

जेलखाना तोड़ दिया गया है और सारा शहर जल रहा है। ऐसी स्थिति में शहर में जाना उचित न समझ कप्तान डाल्टन लौट पड़े।

रामगढ़ की ओर बढ़ गए। हजारीबाग के इस विद्रोह को रामगढ़ की सेना के सहारे ही दबाया जा सकता है। रामगढ़ नरेश अंग्रेजों के पक्के मित्र हैं।

पौ फटते ही परेड के मैदान में बड़ी गड़बड़ी मची। पैदल सेना के एक सूबेदार ने अपने अफसर को गोली मार दी। अंग्रेज गोली खाते ही गिर गया। रिसाले और दूसरी फौजों में भगदड़ मच गई। देखते-देखते पैदल सेना परेड मैदान से निकली और लूटमार करने लगी।

अंग्रेजों के बँगलों में आग लगा दी गई। खजाना लूट लिया। जेल के फाटक टूट गए। सारे पुरुलिया शहर में अराजकता फैल गई। अंग्रेज, ईसाईयों में भगदड़ मच गई, पर उनमें से बहुत कम लोग भाग सके अधिकांश मार डाले गए। छावनी के आस-पास और गिरिजाघर के पास अंग्रेज स्त्री बच्चों की लाशें नजर आने लगीं।

सिपाही मार-काट करते हुए पुरुलिया से चले गए। शहर में गुण्डों, बदमाशों की बन आयी।

*

"मुँह क्या देखते हो! अंग्रजों ने हमें बहुत दुःख दिया है। मार दो इन सबको।"

"......"

"इनको मारने में अब कोई पाप नहीं।"

"अंग्रेजों की हुकूमत अब गई।"

अभी सिपाहियों की यही राय हो गई और थोड़ी ही देर बाद चाई बासा के तमाम अंग्रेज अधिकारियों, ईसाईयों के घरों में सिपाही घुस गए। मार-काट और अग्निकांड की घटनाएँ होने लगीं। रातों-रात सारा कांड हो गया। जेल के फाटक तोड़, खजाना लूटकर सिपाही भाग गए। शहर से अंग्रेजी शासन उठ गया।

*

कप्तान डाल्टन रामगढ़ की सेना लेकर हजारीबाग आए। उस वक्त हजारीबाग में एक भी सिपाही न था। नगर में उनका मुकाबला करने वाला कोई और न था। कप्तान डाल्टन के आने का समाचार सुनते ही गुण्डे, बदमाशों के जहाँ सींग समाए वहीं लुप्त हो गए। बड़ी ही आसानी से कप्तान डाल्टन ने हजारीबाग पर अपना अधिकार कर लिया।

हजारीबाग पर अंग्रेजी झंडा फहराने लगा। शासन की व्यवस्था का प्रबंध किया जाने लगा, पर पुरुलिया, चाईबासा, छोटा नागपुर से आने वाले समाचारों को पाकर कप्तान डाल्टन चिंतित हो गए। इस सारे क्षेत्र का विद्रोह दबा सकने के लिए रामगढ़ की सेना पर्याप्त है। साथ ही अभी विद्रोहियों की शक्ति का कोई पता नहीं है। न जाने ये कब क्या कर बैठें? अतएव कलकत्ता की सहायता अत्यावश्यक है। मदद के लिए कप्तान डाल्टन ने कलकत्ता पत्र भेज दिया और हजारीबाग में ही कलकत्ता की सहायता की प्रतीक्षा में अपनी स्थिति दृढ़ करने लगे।

❀

मचानें तैयार की गईं। पैदल सेना की सारी शक्ति इनके निर्माण में लगी और तीन दिन के कठोर परिश्रम के उपरान्त तोपें चढ़ा दी गईं। इस नयी योजना के पूरा होने पर सर ह्यू रोज को कुछ आशा बँधी कि वे विजयी हो सकते हैं।

तोपों के तैयार होते ही अंग्रेजी गोलंदाजों ने शहर के सामने भाग की ओर गोले बरसाए पर इससे कुछ विशेष हानि न हुई। हाँ, तोपों के ऐसे निशाने के कारण किले के कुछ लोग घबड़ा अवश्य गए। इस गोलाबारी का जवाब किले की तोपों ने भी दिया और अंधाधुंध गोलाबारी शत्रु पक्ष पर की गई।

सर ह्यू रोज बराबर निर्देश दे रहे थे। दूसरी ओर रानी भी उनके मुकाबिले खड़ी थीं। शत्रु पक्ष का हर बार वह असफल कर देती थी। उसकी इस चातुरी के कारण बारबार सर ह्यू रोज खिजला उठते थे। दिन भर की भीषण गोला बारी के बाद भी न शहर को नुकसान पहुँचा और न ही दीवारों को कुछ नुकसान पहुँचा। काफी रात गए तक दूसरे दिन के युद्ध की योजना बनती रही। किले को हर सम्भव उपाय से ध्वंस करने की योजना चलती रही। अन्ततः निर्णय हुआ। तोपों का रुख पलटा जाय। पश्चिम की ओर से शहर पर हमला

हो। गोलों के स्थान पर शेल फेंक जाँय। शेलों के फूटने पर, उनसे निकली हुई नुकीली वस्तुओं से अवश्य ही लोगों को हानि होगी और इससे किले में रहने वालों में भय फैलेगा।

सवेरा होते ही योजना कार्यान्वित हुई। पश्चिम की ओर से किले पर गोला बारी हुई। गोलों के स्थान पर शेल फेंके जाने लगे। इन शेलों के फटने पर पचीसों लोग मरने लगे। छूरिया, काँच के टुकड़े, नुकीले कीले, अन्य लोहे की नुकीली वस्तुएँ। यह एक नए प्रकार की मार थी।

❀

रानी सामने आयी! उसने देखा, शहर का पश्चिमी भाग जल रहा है। लोग बिलख रहे हैं। गोले फट रहे हैं। बासिन्दे भाग रहे हैं। शहर के पश्चिमी भाग में हाहाकार मचा हुआ है। रानी के आते ही लोगों को सांत्वना मिली! रानी ने वहाँ के लोगों को हटाकर तत्काल दूसरे स्थान की व्यवस्था की। सबके रहने और भोजन के प्रबन्ध का आदेश दे, वह तुरन्त अपनी सेना की ओर मुड़ी।

"गौस खाँ..."

"जी!"

"इस गोला बारी का मुँह तोड़ जवाब दो।"

"बहुत अच्छा!"

"मैं यहाँ खुद हाजिर हूँ!"

रानी गोलंदाजों के पास खड़ी हो गई। उसका चेहरा अपूर्व तेज से चमक रहा था। रानी को देखते ही हारे थके गोलंदाजों में नया जोश आया। जो गोलंदाज मर चुके थे, उनके स्थान पर नए लोग आए। गौस खाँ ने सबसे बड़ी तोप सँभाली। घन गर्जन तोप में उसने पहिली बारूद दी और जैसे ही पलीता दिया कि खंड प्रलय सी आवाज आयी और गोले फटे। गौस खाँ की तोप दनादन प्रहार करने लगी। गौस खाँ बहुत ही कुशल गोलंदाज था। उसका एक भी निशाना खाली न जाता था।

"अभी और गौस खाँ! इन फिरंगियों को दिखला दो, हम क्या हैं!"

"अच्छा हुजूर!"—गौस खाँ ने सिर झुकाया। बूढ़े गौस खाँ की आँखें नए

जोश से चमक उठीं। दैत्य की तरह वह तोप पर पिल गया। उसके सहायक मशीन की तरह काम करने लगे। देखते-देखते गौस खाँ के जौहर ने अपना रंग दिखलाया।

तोपों की इस भीषण मार के आगे अंग्रेजी तोपों के छक्के छूट गए। उनकी तोपों को भारी हानि पहुँची और साथ ही बहुत से गोलंदाज धराशायी हो गए। अंग्रेजी तोपों से शेल छूट ही न पाते थे और गौस खाँ के नेतृत्व में चलती तोपें अपना कमाल दिखला जातीं। गौस खाँ की अपनी तोप के निशाने और कहर ढा रहे थे। उसका हर गोला निशाने पर गिरता और हाहाकार मचा देता।

अंग्रेजी तोपों के गोलंदाज घबरा गए और तोपें छोड़कर भाग खड़े हुए।

"तोप चलाओ!"

"साहब, चार-चार गोलंदाज टुकड़ियाँ खत्म हो चुकी हैं। तोपें इतनी गरम हो गई हैं कि उन पर हाथ नहीं रखा जाता!"

"......"

"हम लोग मजबूर हैं, साहब!"

तोपें बन्दकर देने के अतिरिक्त अब और कोई रास्ता न था। हाथ मलते हुए सर ह्यू रोज ने गोला बारी बन्दकर देने का आदेश दिया। उनका मन बुरी तरह तिलमिला रहा था। असफलता की हर चोट उनके हृदय पर घूँसे की तरह प्रहार करती। लगातार कई रोज के युद्ध से वह परीशान हो गए थे। खिजला देने वाली सबसे बड़ी बात यह थी कि इतनी हानि उठाने पर भी अंग्रेजी सेना अपने शत्रु पक्ष का बाल भी बाँका न कर सकी थी।

अपने इतने दिन के युद्ध का क्या विवरण वह भेजें? किस मुँह से लिखें कि इतनी भीषण गोला बारी करने और नुकसान उठाने के बाद भी वह शत्रु पक्ष की कोई ईंट भी नहीं खिसका सके।

अब क्या हो?

एक ही उपाय है। अब दिन रात गोलाबारी की जाय। रात में भी गोले बरसाए जावें ताकि किले में रहने वालों का आराम हराम हो जाय। इनकी नाकों दम कर दिया जाय।

सर ह्यू रोज ने तत्काल अपनी इस भावना को कार्यरूप दिया। रात के गहरे

सन्नाटे को चीरती हुई तोपें आग उगलने लगीं और केवल अनुमान से ही किले में गोलाबारी की जाने लगी। क्षुब्ध सर ह्यू रोज एकदम पाशविकता पर उतर गए।

*

तोप का धड़ाका सुनते ही रात के सन्नाटे में सभी घबड़ाकर उठ गए। सँभल सकने के पहिले ही गोले फटने लगे। सेना चौंकी। गोलन्दाज चौंके। रात में भी गोलाबारी। पराजित अँग्रेज अब नैतिकता को नाक पर रखकर युद्ध कर रहे हैं! अच्छा! इसका भी सामना किया जायगा। गौस खाँ ने अपनी टुकड़ी सँभाली और वह भी तोप का उत्तर तोप से देने लगा। रात में भी तोपें गरजने लगीं।

रानी भी तैयार होकर आ गईं। उसके चारों ओर मशालें जल रही थीं। मशालों के प्रकाश में रानी का चेहरा दमक रहा था। उसने एक बार घूरकर दूर से लाल-लाल धधकते हुए गोले को अपनी ओर आते देखा। क्रोध से चेहरा तम-तमा गया। ऐसे-ऐसे हजार गोले भी झाँसी को डरा नहीं सकते हैं।

रानी ने तलवार ऊपर उठाकर चमकायी।

तोपें और तेजी से दगने लगीं।

रात के अँधेरे में तोपों से निकले गोले लाल लाल धधकते अग्नि पिंड से दिखलायी पड़ते और किले की जमीन से टकराकर भयंकर गर्जना के साथ फूट पड़ते। रात में गोलों के धड़ाकों से लोगों का सोना हराम हो गया। स्त्रियाँ और बच्चे घबराने लगे। रानी तनिक भी विचलित न हुईं। वह अपने स्थान पर अडिग खड़ी रही।

दोनों पक्षों से रातभर जमकर गोलाबारी हुई। रात के अँधेरे में एक दूसरे पक्ष की हानि का पता न लग सका, पर भोर से कुछ पहिले अँग्रेजी तोपों का धधकना बंद हो गया।

दिन का उजियारा फैला। रानी ने घायलों को देखा। मृतकों के परिवारों के प्रति सहानुभूति प्रकट की। किले का पूरा निरीक्षण कर महल में लौटकर आयी। रानी का मन चिन्ता से भर गया। महल की खिड़की से किले के स्तंभ पर फहराते पेशवा ध्वज को देखा। पेशवा ध्वज गर्व से फहरा रहा था। स्वतंत्रता का बिगुल बज रहा था...पर यह स्थिति कब तक रह सकती है! अंग्रेज आ गये हैं।

उनका युद्ध जारी रहेगा । अंग्रेजों का जीवट सभी जानते हैं । दिल्ली गयी । लखनऊ अपनी दम तोड़ रहा है । झाँसी मेहमान कितने दिन का ?

झाँसी कितने भी दिन का मेहमान क्यों न हो, झाँसी अपनी आखिरी दम तक लड़ेगा । युद्ध करेगा । झाँसी अभी उन वीरों से शेष नहीं है, जो स्वतंत्रता को ही अपना जीवन समझते हैं ।

"राव साहब को बुलाओ !"

"......"

दासी चली गई । कुछ देर बाद लौटकर आयी । उसने बतलाया कि राव साहब अभी विश्राम कर रहे हैं ।

"विश्राम कर रहे हैं ?"

"जी हाँ ।"

"इतने दिन चढ़े विश्राम ?"

"जी, सो रहे हैं !"

रानी चुप रह गई । उनकी भवों पर बल पड़ गए ।

※

शहादतगंज की सड़कें सिपाहियों से भर गईं । हाथी पर बैठे एक मौलवी का गगनभेदी नारों से स्वागत किया गया । फूल मालाओं से लदे मौलवी ने सबको अपना आशीर्वाद दिया ।

"मौलवी लश्कर शाह !"

"ज़िन्दाबाद !"

दूसरी ओर से एक सजे हुए हाथी पर मौलवी अहमदुल्ला चले आ रहे थे । अहमदुल्ला के होंठों पर मुस्कुराहट थी । हाथी पास-पास आए । मौलवी लश्कर शाह का स्वागत हुआ और उनको जब मौलवी अहमदुल्ला ने अपने हाथी पर बैठाया तो फिर गगनभेदी जय-जयकार हुआ । पुष्प वर्षा हुई । सिपाहियों से सड़कें खचाखच भरी थीं । जुलूस के साथ दोनों मौलवी शाही महल के सामने आए ।

हाथी से उतरकर मौलवी लश्कर शाह ने सिपाहियों को पुनः आशीश दी और

घोषणा की कि इस युद्ध में सिपाहियों की ही विजय होगी। हर्षोन्मत्त सिपाही अपने-अपने हथियार सँभालकर फिर मोर्चे पर चले आए। अहमदुल्ला लश्कर शाह का हाथ पकड़कर शाही महल में ले गए।

बेगम हजरतमहल ने आगे बढ़कर मौलवी का स्वागत किया।

"खुश रहो बेटी !"

मौलवी लश्कर शाह बैठ गए। अहमदुल्ला उनके पास बैठ गया और बेगम हजरतमहल उन दोनों के सामने एक छोटे आसन पर बैठ गईं।

"दुआ पूरी करें मौलवी साब !"

"जरूर बेटी !"—मौलवी लश्कर शाह ने कहा—"जरूर ! हम जरूर कामयाब होंगे। पिछले चार साल से हम जिस काम में लगे हैं, उसमें जरूर कामयाबी को हासिल होंगे। अल्लाताला का शुक्र है कि नवाब साहब कलकत्ते में अच्छी तरह हैं !"

"वो तो बन्दी हैं ?"

"हाँ ! उम्मीद है, हम जल्दी ही अपनी हुकूमत कायम कर उनको अपने बीच में पा लेंगे !"

"अल्लाह ! वो दिन कब आयेगा।"

"आयेगा बेटी जरूर आयेगा ! इस बगावत को तुम क्या कम समझ रही हो ? यह बगावत रजवाड़ों या रियासतों की नहीं, आम रियाया की है। यह बगावत खुद मुख्तारी की बगावत है बेटी ! हम जरूर कामयाब होंगे !"

"......"

"लखनऊ पर इस वक्त तमाम अंग्रेजी फौजें टूट रही हैं। इतना ही नहीं, दिल्ली पर फिर अंग्रेजों की हुकूमत हो गई है, पर इससे क्या होता है, बेटी ! हम कामयाब होंगे जरूर !"

"आमीन !"...बेगम हजरतमहल ने एक लम्बी साँस लेकर कहा।

✿

मौलवी लश्कर शाह के आने के समाचार से सिपाहियों में और जोश बढ़ गया। उस समय तो सिपाहियों के उत्साह का ठिकाना न रहा, जब कि मौलवी

अहमदुल्ला और मौलवी लश्कर शाह दोनों लड़ाई के मैदान में आए और स्वयं मौलवी अहमदुल्ला ने अपने हाथ का कोड़ा फटकारकर सिपाहियों को ललकारा। घन गर्जन जयघोष के साथ सिपाही टूट पड़े।

अंग्रेजी पलटन भी तैयार खड़ी थी!

दोनों पक्ष भिड़ गए।

गोरे, गोरखे और पंजाबी एक तरफ, लखनऊ के बहुसंख्यक मुस्लिम सिपाही एक तरफ। एक ओर हरित ध्वज फहरा रहा था, दूसरी ओर अंग्रेजी कम्पनी का झंडा फहरा रहा था। तोपें गरज रही थीं बन्दूकें कड़क रही थीं। लखनऊ की सड़कों पर एक सेना बढ़ने का प्रयास करती, दूसरी उसे खदेड़ने के लिए प्राण-प्रण से प्रयास करती। सड़कें खून से नहा रही थीं। लाशों से पट रही थीं। युद्ध ध्वनियों के बीच दोनों पक्ष के लोग अपने-अपने प्राण हथेली पर रखकर लड़ रहे थे।

मौलवी लश्कर शाह हाथी पर बैठे ललकार रहे थे।

"बढ़ो जवानो।"

दूसरी ओर मौलवी अहमदुल्ला अपने हाथ का कोड़ा फड़काते हुए सिपाहियों को जोश दिला रहे थे। इस कारण आज युद्ध का रंग कुछ और ही था। अंग्रेज सेनापतियों को आशा थी कि आज के युद्ध में वे अवश्य ही शहादतगंज पर कब्जा कर लेंगे पर इस मोर्चे पर उन्हें बड़ा मूल्य चुकाना पड़ रहा था। सिपाहियों की मार के आगे अंग्रेजी सेना के पैर ठहर न रहे थे। जिस ओर मौलवी लश्कर शाह या मौलवी अहमदुल्ला निकल जाते, उसी ओर के सिपाहियों में नयी जान आ जाती थी और वे ऐसे वेग से अपने शत्रु पर टूट पड़ते थे कि उनका ठहरना मुश्किल हो जाता था। इस स्थिति के कारण अंग्रेजी सेना को काफी क्षति उठानी पड़ रही थी

देखने-देखते युद्ध का रंग बदला। अंग्रेजी सेना पीछे हटने लगी पर उसी समय उसकी मदद के लिए और भी टुकड़ियाँ आ गई जो इसी समय के लिए रखी गई थीं। बस। फिर स्थिति जोर पकड़ गई। हारी थकी सेना का स्थान नई टुकड़ियों ने ले लिया। सिपाहियों में ऐसी कोई व्यवस्था न थी। वही सिपाही लड़ रहे थे। फिर भी वे सब खूब लड़े। इतना लड़े कि शाम हो गई, पर युद्ध का कुछ

निर्णय न हो सका। सब अपने-अपने स्थान पर खड़े रहे कोई किसी को पीछे न हटा सका। युद्ध की मोर्चा बन्दी में तनिक भी हेर फेर न हुआ।

❀

"अलख निरंजन!"

"......"

"अलख निरंजन!"

चिमटा झंकारता हुआ एक संन्यासी चला जा रहा था। वह लगातार अलख निरंजन कहता चला जा रहा था। अंग्रेजी सेना के पड़ाव के पास से वह इसी ढंग से गुजरा। उसने आँख उठाकर भी अंग्रेजी पलटन की ओर न देखा। अपनी धुन में मगन वह चला गया। पड़ाव के आस-पास घूमते घुड़ सवारों को उस पर तनिक भी शक न हुआ। वह आगे बढ़ता गया।

बहुत आगे जाने पर उसने एक आम के बाग में प्रवेश किया। बाग में एक आम के पेड़ के तले एक और साधू धूनी रमाए बैठा था।

"अलख निरंजन!"

"......"

"अलख निरंजन!"

"अलख कुँवर सिंह!"

उस साधु ने अपनी आँखें खोलीं। मुस्कुराया और अपनी दाहिनी ओर उसने संकेत कर दिया। संकेत पाते ही वह साधु उसी ओर मुड़ गया और उसने वहाँ बँधा घोड़ा खोला। फुर्ती से उस पर बैठा और हवा के वेग से दौड़ गया। सात मील पार करने में उसे कोई विशेष समय न लगा।

वह आरा आ गया।

सीधे रणदलन सिंह के सामने। रणदलन उसे देखते ही मुस्कुराए।

"कहो?"

"लुगार्ड आ रहा है!"

"कहाँ है?"

"पुल के पास ही समझिए!"

"ठीक है! बाबू साहब इस समय जगदीशपुर गए हैं। मैं व्यवस्था कर दूँगा। और तो सब ठीक है? गुलाम हुसैन का क्या हुआ?"

"हारने पर उसे गोली मार दी गई!"

"अच्छा है!"—रणदलनसिंह ने हँसकर कहा—"आजादी लाशों के पहाड़ और खून के तलाव भरने पर ही मिलती है। गुलामी की मोटी बेड़ियाँ आसानी से नहीं काटी जा सकती हैं, शिवराम!"

"......"

"रात रहोगे?"

"जी हाँ!"

"मैं व्यवस्था किए देता हूँ और देखो कहीं भी जरा भी ढिलाई न हो। तुम्हारा हर काम मुस्तैदी से होना चाहिए।"

"हम पूर्णतः होशियार हैं!"

"शाबास!"

❀

रोज रात को किले तथा नगर पर गोले बरसते। अंग्रेजी तोपों से निकला पचास-पचास साठ-साठ सेर का गोला जब रात के अँधियारे में उड़ता तो लाल-लाल अग्नि-पिंड सा दमकता दिखलाई पड़ता था। लाल-लाल बड़ी गेंद की तरह सन्नाटे को चीरते हुए भयानक आवाज के साथ गोले फटते। निरन्तर युद्ध प्रारंभ हो गया। अँग्रेज अपनी पूरी ताकत के साथ झाँसी पर टूट पड़े। युद्ध का विकराल नृत्य प्रारंभ हो गया। किले के चारों ओर खड़ी अडिग सेनाएँ लोहे की दीवार सी दृढ़ खड़ी रहने लगीं। अँग्रेजों के हर आक्रमण का करारा उत्तर दिया जाने लगा। दोनों पक्ष एकदम मर मिटने के लिए तैयार हो गए।

सैनिक वेश से सज्जित रानी अपने घोड़े पर मोर्चे पर प्रतिक्षण दिखलायी पड़ने लगी। जहाँ की भी रक्षा पंक्ति तनिक भी कमजोर पड़ती अथवा सैनिक या नागरिक भय से भीत होते दिखलाई पड़े वहीं रानी जा पहुँचती और अपने उत्साह से उनमें नया जोश भर देती। रानी की इस प्रवृत्ति के कारण नगर के तमाम लोग भी युद्ध क्षेत्र में आकर कार्य सँभालने लगे। स्त्रियों बच्चों ने भी अपने कदम आगे

बढ़ाए। घायलों की शुश्रूषा और उनकी देख-भाल, सैनिकों के भोजन पानी की व्यवस्था का भार स्त्रियों और बच्चों ने सँभाल लिया। झाँसी का बच्चा-बच्चा युद्ध क्षेत्र में आ गया। पूरी झाँसी लड़ाई के मैदान में बदल गई। अँग्रेजों के लिए एक मुँह तोड़ शक्ति झाँसी में पैदा हो गई।

अंग्रेजी तोपों के गोलों में अब दहलाने की शक्ति न रही। युद्ध में जो मरते उन्हें चुपचाप समाधि दे दी जाती और बिना किसी व्यवधान के युद्ध चलता रहा। रानी बराबर युद्ध क्षेत्र में उपस्थित रहती। राव साहब यदाकदा आकर निरीक्षणकर जाते थे। रानी ने किसी पर निर्भर न रहकर अपने पैरों खड़ा होना सीखा था और इसीलिए वह किसी का विश्वास न कर स्वयं सारा कार्य भार सँभाले हुए थी।

झाँसी झुकेगी नहीं, मिटकर रहेगी।

❀

सर ह्यू रोज ने किले के पश्चिमी भाग पर सारी ताकत से वार करने का हुक्म दिया। तोपों की सारी शक्ति पश्चिमी भाग पर लग गई। सर ह्यू रोज अब समझ चुके थे कि पश्चिमी भाग में ही किले की शक्ति है, इसे ही नष्ट करना होगा।

तोपों की भयंकर मार से किले का पश्चिमी भाग डोल उठा। क्षण-क्षण पर गिरने वाले गोलों ने तबाही मचा दी। अँग्रेजी तोपों ने ऐसी प्रबल मार की कि उस भाग में कोई ठहर न सका। पश्चिमी भाग में घबराहट मच गई। लोग भाग आए। तोपें बंद हो गईं। गोलों की प्रबल मार के कारण उन तोपों को क्षति पहुँचने लगी।

राव साहब को खबर दी गई।

"पश्चिमी भाग कमजोर पड़ गया है।"

"रानी को खबर दो। मैं इस ओर ही रहूँगा।"

रानी सूचना मिलते ही दौड़ी आयी। ठिठककर उसने स्वयं सारा दृश्य देखा। बात सच थी। गोलों की मार बड़ी प्रबल थी और ऐसी मार में जान-बूझकर कौन कूदता! रानी देखती रही। दिन भर का थका-माँदा सूर्य पश्चिम में डूबने जा रहा था। क्या झाँसी का भी सूर्य डूबेगा? कदापि नहीं।

धड़ाम! धड़धड़ धड़र धड़र !!!

बुर्ज और दीवार का कुछ भाग गोलों के आगे घुटने टेककर बैठ गया। यह तो बुरा हुआ।

"इसकी तत्काल मरम्मत हो!"

"जी!"

"अँधेरा होते ही काम शुरू हो। सबको बुलाओ। उस वक्त मैं स्वयं यहाँ हाजिर रहूँगी।"

बुर्ज और दीवार का कुछ भाग टूटकर गिरते देख अँग्रेजी सेना हर्ष ध्वनि कर उठी। रात हो जाने से आक्रमण रोक दिया गया पर सब तोपों का निशाना उसी ओर था। किले की दीवार का कुछ भाग टूटकर गिरा है। बस! कुछ और टूटे तो सेना और तोपों को जाने का रास्ता बने!

अँधेरा होते ही तमाम कारीगर इकट्ठे हुए। अंग्रेजी तोपों का रुख बदला न था। वे पूर्ववत् थीं। कुछ ही देर में रानी भी आ गईं।

"काम शुरू करो!"

मशालों की रोशनी में जैसे ही काम शुरू हुआ कि तोप गरज उठी। गोला आया। धड़ाका हुआ और आगे की पंक्ति में काम करने वाले कई लोग छितरा गए। गिरी हुई दीवार और बुर्ज की मरम्मत असंभव दिखलायी पड़ने लगी, पर रानी थी कि उसने परिस्थितियों के आगे झुकना नहीं, उठना सीखा था। बचपन से ही उसने यही पाठ पढ़ा था। काशी की पवित्र भूमि में उत्पन्न, झाँसी की मिट्टी से सुहाग भरे, बिठूर की माटी में बढ़ी हुई रानी में सभी गुण थे। छत्रपति शिवाजी की तरह वह भी अपनी खुद मुख्तारी कायम कर जीना चाहती थी। गुलामी से बेहतर मौत।

रानी के आदेशानुसार पुनः कार्य शुरू हो गया।

*

बुर्ज और दीवार का एक भाग गिरने के समाचार से सर ह्यू रोज बहुत प्रसन्न हुए। अपने सहायकों के साथ वह किले में प्रवेश करने की योजना बनाने लगे साथ ही उस दीवार पर बराबर निगाह रखने और कुछ भी हलचल दिखलाई पड़ने पर गोलाबारी करने का आदेश दे चुके थे। उन्हें इस बात की पूरी आशा थी कि कल

उनकी तोपें दीवार और तोड़ने में सफल हो जाँयगी। ऐसा होते ही सेना और तोपों के प्रवेश लायक जहाँ रास्ता बना नहीं कि सारी सेना झाँसी में टूट पड़ेगी और फिर एक-एक को अच्छी खबर ली जायगी। अपनी वीरता के घमंड में फूले इन झाँसी वालों को और उस जरा सी छोकरी रानी को गहरा मजा चखाया जायगा!

रानी !!!

सर ह्यू रोज की आँखों के आगे लक्ष्मीबाई का चित्र झूल गया। उम्र में इतनी कच्ची और है ऐसी तेज की अंग्रेजों के छक्के छुड़ा रक्खे हैं। यह छोकरी नहीं, आफत का परकाला है। एक बार नहीं, अनेक बार वे उसे देख चुके हैं। स्त्री के वेश में ऐसा मालूम पड़ती है, जैसे साक्षात काल चला आ रहा हो! कितना तेज और कितनी फुर्ती है उसमें। देखते-देखते गायब और दूसरे ही क्षण किले के और किसी भाग में दिखलायी पड़ती है।

किले में प्रवेश करने की योजना पर काफी रात गए तक विचार विमर्श होता रहा। योजना पूरी होने पर सरह्यू रोज विश्राम करने के लिए चले गए।

रात में यदा-कदा तोपें गरजतीं रहीं। किले के पश्चिमी भाग के उस टूटे हुए अंश पर दृष्टि रखी गई। रात के अंधेरे में चलने वाले काम को गोलंदाज देख न सके। मशालों का प्रकाश भी न था। वे न देख सके कि कम्बल लपेटे हुए राजगिर और मिस्त्री, मजदूर तेजी के साथ उस टूटे हुए भाग की मरम्मत कर रहे हैं।

सबेरा हुआ।

सेना के उच्चाधिकारी मैदान में आए। अब उनका इरादा था कि भयंकर गोलाबारी कर दीवार को और तोड़ दिया जाय, पर सबके सब अवाक् रह गए। टूटा हुआ कोई भाग दीवार में दिखलायी न दे रहा था। गिरी हुई बुर्ज फिर तन कर खड़ी थी और उस पर दो तोपें रखी थीं। यह क्या जादू हो गया! रातों रात सब कुछ ठीक हो गया। रातों-रात फिर पुख्ता मरम्मत कर दी गई।

सहसा बुर्ज पर रखी तोपें गरज उठीं और अंग्रेजों को युद्ध के लिए ललकारा गया। किले में प्रवेश करने का सह्यू रोज का स्वप्न टूट गिरा।

ॐ

तमसा का पुल दीख पड़ा। सेनापति लूगार्ड ने अपनी सेना तेजी से दौड़ायी।

देखते देखते सब पुल के पास आ गए। इस पर भी सेनापति लूगार्ड को विश्वास न हुआ। ऐसे महत्व के पुल के आस-पास सिपाही अवश्य होंगे। अभी वह सावधानी के साथ अपनी सेना को पुल पार करने का आदेश देने का विचार कर ही रहे थे कि सहसा सिपाही टूट पड़े। आस-पास छिपे हुए तमाम सिपाही मधु मक्खियों की भाँति बरस पड़े। बंदूकों की धड़ाधड़ गोलियाँ छूटीं और गोरी पलटन में हड़बड़ी मच गई।

"मारो!"

"इधर से!"

"हाँय!"

दनादन गोली वर्षा से सेना छितरा गई। इस अनायास आक्रमण से सेनापति लुगार्ड तनिक भी नहीं घबड़ाए। अपने आसपास के सैनिकों को तुरन्त बटोरकर बड़े वेग से सिपाहियों पर टूट पड़े। इस झपट्टे में सबसे आगे वे ही बढ़े। सेनापति का साहस देखकर सेना का रुख भी विकराल हुआ। अपने साथियों को धड़ाधड़ गिरते देख जो घबराकर भागे थे, वे सब लौटे और पुल के नीचे ही घमासान युद्ध होने लगा।

सिपाहियों ने सेना को घेरना शुरू किया। बड़े ढंग से घेरा पड़ा था। घेरा डालकर सिपाही गोरी पलटन को तमसा के किनारे ठेलते लिए जा रहे थे कि या तो गोरी सेना मरेगी अथवा जान बचाने के लिए उठी तमसा में कूदना पड़ेगा। इसी योजनानुसार धावा हुआ था।

सेनापति लुगार्ड सिपाहियों की इस चालाकी को समझ गए। तमसा की ओर हटने की बजाय वह दाएँ-बाएँ विभाजित कर अपनी सेना का संचालन करने लगे। जोश में भरे सिपाही बीच में आते जा रहे थे। पैंतरे का युद्ध हो रहा था। चतुर लुगार्ड ने फिर एक दाँव मारा। सेना को पराजित होने का भाव दिखलाया। सिपाही झोंके में आ गए। जैसे ही सब निकट आए हाईफायरिंग का आदेश जारी कर लुगार्ड ने सिपाहियों को भूनने का आदेश दिया।

विकट मार हुई। अंग्रेजी बंदूकों की लंबी मार के आगे सिपाही ठहर न सके। सारा वन प्रान्त, बंदूकों की कड़क, गिरते-मरते दोनों पक्षों के मनुष्यों की कराहों से भर गया। तमसा के पुल के नीचे चारों ओर लाशें छितरा गईं। अंग्रेजी सेना

की नई बंदूकों की मार के आगे सिपाही ठहर न सके। भागने लगे। अधिकांश मारे जा चुके थे। भागते सिपाहियों का पुल पर पीछा करती हुई गोरी सेना पुल पर चढ़ आयी और सहज ही में तमसा के पार सारी पलटन उतर गई।

बचे खुचे सिपाही आजमगढ़ खबर देने के लिए भाग गए।

*

"नाना साहब यह मनु की चिट्ठी है।"

"......"

नाना साहब ने उस पत्र को हाथ में ले लिया। उनके होठों पर मन्द मुस्कुराहट खेल गई। मनु के संबंध में अब तक उन्होंने जो कुछ सुना था, उससे उनका मन बड़ा ही प्रसन्न था। मनु के वीरोचित कार्यों से उनके टूटे मन को साहस मिला था। गंगाधर राव के न रहने पर भी मनु ने जो कमाल दिखलाया है, वह शायद गंगाधर राव भी न दिखला सकते थे। मनु ने बिठूर की लाज रख ली। झाँसी का नाम अमर कर दिया। अंग्रेजों से एक औरत होकर भी वह टक्कर ले रही है।

मनु का पत्र पढ़ा नाना साहब ने। उनके होठों पर फिर मुस्कुराहट खेल गई। पत्र लपेटते हुए तात्या से पूछा--"तुमने पढ़ लिया है ?"

"मेरे नाम भी एक पत्र है!"

"क्या लिखा है उसमें ?"

"झाँसी की अब तक की सारी बातों का परिचय है और उसने बुलाया है।"

"यही बात मेरे पत्र में भी है। ठीक है। हम सब चलेंगे। मनु के साथ मिल जाने से हमारी ताकत अवश्य बढ़ेगी। लखनऊ वाले बड़े कायर निकले। उनमें अब क्या धरा है ?"

"हाँ, मनु न भी बुलाती तो मैं उस ओर जरूर जाता।"

"......"

तात्या ने कुछ सोचकर कहा—"पहिले मैं ही उस ओर बढ़ता हूँ। अभी जितने लोग मेरे साथ हैं, उनको लेकर मैं तुरन्त आगे बढ़ता हूँ। तब तक आप भी सैन्य संग्रह करते हुए आइए। संभव है कि कहीं राह में ही अंग्रेजों से मुकाबला

हो जाय, उस समय ऐन मौके पर आपकी मदद मिल सके। एक साथ चलना अच्छा नहीं होगा।"

"ठीक।"

तात्या नाना साहब को अभिवादन कर उठ गया। झाँसी की ओर चढ़ने का निर्णय तात्या ने पहिले ही कर लिया था। झाँसी के जो कुछ समाचार उसे दूतों के माध्यम से मिले, उससे उसका मन अत्यन्त उत्साह से भर गया और उसने उसी ओर बढ़ने का निर्णय कर लिया। लखनऊ की ओर पैर बढ़ाने का प्रयास अनेक बार तात्या ने किया, पर कौन जाने हजरतमहल बेगम या उनके मौलवी की वजह से बार-बार लखनऊ संदेशा भेजने पर भी माकूल उत्तर न मिल सका। तात्या का मन टूट चला। लखनऊ की अपार सिपाही शक्ति से समझौता करने की उसकी बड़ी तीव्र इच्छा थी, पर कुछ समझौता होता ही न था। क्रमशः लखनऊ से निराशाजनक समाचार आने शुरू हो गए। लखनऊ से अंग्रेजी विजय की खबरों ने तात्या का मन खट्टा होने पर भी उसने देश के नाम पर मुसलमानों से समझौता करने का प्रयास किया, पर वह असफल रहा। जहाँ तक देश का प्रश्न है, उसके सामने कौम का प्रश्न बहुत बाद में आता है। मुसलमानों का संग साथ, उनकी मदद देश की स्वाधीनता के लिए स्वीकार करना तात्या बहुत पसंद करता था, पर शायद भाग्य को यह मंजूर नहीं था। तात्या को लखनऊ की ओर से अपना मुँह मोड़ लेना पड़ा।

तात्या झाँसी की ओर बढ़ने की तैयारियाँ करने लगा। अपनी सेना लेकर नाना साहब को पीछे छोड़ वह आगे बढ़ चला। अभी कुछ ही मील गया था कि रानी के मंत्री लक्ष्मण राव का पत्र उसे मिला। पत्र में कहा गया था कि शीघ्र आने की वैसी आवश्यकता नहीं है, जैसे कि पहिले पत्र में लिखा गया है। इस समय अंग्रेज पस्त हैं। आप आराम से सैन्य संग्रह करते हुए आवें।

इस पत्र को पाकर तात्या ने अपनी गति धीमी कर दी। सेना बटोरने के काम पर उसने अधिक ध्यान दिया। जितनी बड़ी शक्ति के साथ फिर भविष्य में गोरों से मुकाबला करेगा। इसी आत्म-विश्वास के साथ तात्या आगे बढ़ा, पर उसने अपनी गति धीमी कर दी।

❀

बेगम जीनतमहल की आँखों के आँसू सूख चुके थे। बहादुर शाह की दिन पर दिन गिरती हुई दशा देखकर उसका मन एकदम बैठता जा रहा था। शोक और कष्ट से वह दुर्बल हो गई थी। शरीर पीला पड़ गया था। खाँसी आती थी और सीने में बड़ा कष्ट होता था। उसका बैठना उठना भी मुश्किल था। निरन्तर बंदी दशा ने दोनों की दशा बिगाड़ दी।

बादशाह बहादुर शाह अपने बेटों की याद कर अक्सर घंटों रोया करते थे और लंबी लंबी साँसें भरा करते थे। जब कभी ऐसा न होता तो वे मन ही मन शेर गुन गुनाया करते थे। दुःख दर्द से डूबे शेर। दशा विक्षिप्त सी थी। बेगम जीनतमहल उनकी देख-भाल ठीक उसी प्रकार करती थी, जैसे एक माँ अपने नन्हें बच्चे की देख-भाल करती थी।

हिन्दोस्तान का बादशाह अपने ही शाही महल की एक कोठरी में कैद था। साधारण मनुष्यों की तरह उसके शरीर पर कपड़े रहते और वैसा ही खाना मिलता था। बेगम जीनतमहल की भी यही दशा थी। ऐसी कैद की जिन्दगी से दोनों ऊब गए थे। ऐसे कष्ट में बेगम जीनतमहल और अधिक नहीं जीना चाहती थी। वह दिन रात अपनी मृत्यु की कामना करती थी। बादशाह का मुँह देख-देख कर ही बेगम जीनत महल जिन्दा थी। अक्सर बादशाह बेगम की गोद में अपना मुँह छिपा लेता और बच्चों की तरह फूट फूटकर रोया करता था। उस समय बेगम के भी आँसू न थमते थे। वह भी रोने लगती और तब पहरे पर तैनात सिपाही भी चुपके-चुपके ठंडी आहें भरने लगते, पर अपने सामने खड़े गोरे सैनिकों के आगे वे कुछ भी कर सकने में असमर्थ थे।

दिल्ली पर पूर्णतः अंग्रेजी शासन था पर शहर मुर्दा सा ही था। अंग्रेजी सेना ने कठोरता के साथ बदमाशों और गुण्डों का दमन कर दिया था। सामूहिक फाँसी देकर बगावत करने वाले सभी तत्वों को एक बारगी मिटा दिया था, पर नागरिकों के मन से भय दूर न हुआ था। शहर के बाजार प्रायः अधखुले रहते। सड़कें सुनसान रहतीं। राग रंग और रौनक का कहीं पता न था। दिल्ली का इठलाता सौन्दर्य हमेशा के लिए उजड़ गया सा मालूम पड़ता था। शहर में तबाही थी। खाने-पीने की चीजों के भाव बहुत ज्यादा बढ़ गए थे। लोग भीख माँगते अथवा मजदूरी की तलाश में टहला करते थे। अन्नाभाव के कारण बहुत से नागरिक

दिल्ली से जा चुके थे। उच्च वर्ग के लोगों के घर के सामान कौड़ियों के मोल बिक रहे थे। उनके घरों की महिलाओं को अपनी लाज ढँकने तक का साधन था। बच्चे नंगे-धड़ंगे भूखे बिल-बिलाया करते थे।

दुःख दारिद्रय, अन्नाभाव से पीड़ित दिल्ली में एक और नई विपत्ति आ रही थी और वह थी महामारी। उसका प्रकोप क्रमशः बढ़ता जा रहा था। प्रतीत हो रहा था कि शासन का साथ प्रकृति भी दे रही है और वह भी दिल्ली से अपना प्रतिशोध ले लेना चाहती है। दिल्ली को बरबाद करने के लिए जैसे मनुष्य और ईश्वर ने समझौता कर लिया है।

शासन की कठोरता के कारण लूट-मार का स्थान चोरियों ने ले लिया। चोरियाँ बढ़ने लगीं। लोगों के घरों से मामूली चीजें चोरी जाने लगीं। टूटे-फूटे बर्तन और फटे-पुराने कपड़े भी चोरी जाने लगे। गाय बैल भैंस बकरी जैसे खाने योग्य पशुओं का बाहर निकलना मुश्किल हो गया। दिल्ली में पड़ी सेना की आवश्यक व्यवस्था की पूर्ति के लिए शासन हर मूल्य पर सचेष्ट था, पर उसे नागरिकों के जीवन की कोई परवाह न था।

दिल्ली की यह तबाही अपनी चरम सीमा पर आ गई।

सैनिक पड़ाव के आस पास रात के अँधेरे में भले घर की बहुएँ बेटियाँ मँडराने लगीं। अपने दुध-मुँहे बच्चों के लिए, अपने परिवार के वास्ते दो रोटियों के लिए वे अस्मतफरोशी करने लगीं। अस्मत फरोशी का यह बाजार गर्म होने लगा। दो रोटियाँ देकर या गज भर कपड़ा अथवा मुट्ठी भर खाद्य पदार्थ देकर कोई भी सैनिक इन महिलाओं के शरीर से खेल सकता था!

दिल्ली खून के आँसू बहा रही थी! स्वतंत्रता संग्राम का बहुत बड़ा मूल्य पराजित दिल्ली को चुकाना पड़ रहा था। माताओं बहिनों की सर्द आहें, बड़े बूढ़ों के आँसू और भूख से तड़पते, दूध के लिए छटपटाते बच्चों की कराहें ईश्वर से फरियाद कर रही थीं, पर ईश्वर इस फरियाद के बदले उन्हें महामारी का वरदान दे रहा था!

 ॐ

सिपाही विद्रोह के कारण सारे देश में अव्यवस्था व्याप्त हो गई। कलकत्ता में

बैठे लार्ड कैनिंग यह समाचार विलायत भेज चुके थे कि हिन्दोस्तान में अब सब शान्ति है और स्थिति पर पूर्णतः काबू कर लिया गया है, पर वास्तव में बात ऐसी न थी। लार्ड कैनिंग ने अपनी कमजोरी प्रकट न होने देने के लिए ऐसा किया था। स्थिति विपरीत थी। यह सच था कि दिल्ली पर अँग्रेजी अधिकार हो गया था। लखनऊ जीत लेने में संदेह न था। कुँवरसिंह को ठिकाने लगाने का प्रबंध पूरा हो चुका था। तात्या टोपे, नाना साहब को जँगलों में खदेड़ा जा चुका था। और झाँसी को भी घेर लिया गया था। इस पर भी स्थिति शान्त न थी। सारे देश में अराजकता व्याप्त थी। गोरी पलटन की कुशल टुकड़ियाँ विद्रोह दबाने में व्यस्त थीं और छोटे-छोटे राज्यों में बदमाशों का उत्पात अपनी चरम सीमा पर था।

बिहार शान्त था। रुहेलखंड शान्त था। गोंडवाने के राजा चुप थे और दक्षिण की ओर कर्नाटक आदि शान्ति थी। कोई प्रबल शक्ति उस ओर न थी पर चोरों डाकुओं का उत्पात अपनी चरम सीमा पर था। ऊपर से शान्त दिखलाई पड़ने वाले क्षेत्रों के नागरिक संत्रस्त थे। दक्षिण में आए दिन गोरों की हत्या की जा रही थी। हालाँकि कोई बड़ी ताकत मुकाबले के लिए न थी। कुछ छोटे-छोटे संगठित गिरोह नगरों पर धावा करते और खास तौर से अंग्रेजों को लूट-पाटकर उनका कत्ल कर भाग जाते थे। इससे दुगुने अनुपात में नागरिकों पर आक्रमण होते थे।

न कहीं कानून था और न कहीं शासन की व्यवस्था थी। जिसके पास शक्ति थी, वही सुरक्षित था। सारे देश में भय की एक लहर, एक सनसनी लहरा रही थी। जीवनोपयोगी वस्तुओं के भाव आकाश छू रहे थे। दुःख-दारिद्र्य से भरी साधारण जनता के कष्टों का ठिकाना न था। नगरों की अपेक्षा गाँवों की दशा और गिरती जा रही थी। लोग साग पात, घास, कन्द-मूल आदि खाकर जीवन बिता रहे थे। नित नाना प्रकार की अफवाहें आतीं। नगरों और गाँवों में साधु और फकीर दिखलायी पड़ जाते जो अंग्रेजी अमलदारी के खिलाफ लोगों को भड़काते, पर दिल्ली पतन और लखनऊ के दुःखमय समचारों के आगे अब लोगों में इतना साहस न था कि वे उठें और अंग्रेजी अमलदारी का शासन छीनकर अपने हाथों ले सकें।

वास्तव में अंग्रेजी राज्य का विस्तार बहुत कुछ टूट चुका था। केवल अंग्रेजी पलटन के भय, आतंक के कारण लोग अपने को अंग्रेजी सरकार के आधीन कहते थे। जब कि ऐसी कोई बात न थी। अधिकांश नगरों में न अंग्रेजों का पता था और न ही अंग्रेजी सेना थी। आतंक के कारण लोग चुप-चाप पड़े थे। पराजित क्षेत्रों से भागे हुए सिपाही इधर-उधर निश्चेष्ट पड़े थे, क्योंकि वे विद्रोह करने का परिणाम भुगत चुके थे। प्राण-भय से वे शान्त-नागरिक की भाँति रहते। वे देख चुके थे कि विद्रोह का परिमाण क्या है ! अतएव जब कभी उनके सामने ऐसी बात आती तो इसका विरोध करते और लोगों से शान्त रहने के लिए कहते।

देश की एक बहुत बड़ी ताकत केवल भय और आतंक के कारण चुप-चाप पड़ी थी। अंग्रेजी रौआब का दबदबा इस प्रकार फैल चुका था कि कोई चूँ-चपट करने का भी इरादा नहीं रखता था। विद्रोहियों का किसी भी प्रकार का साथ देने में लोग बुरी तरह डरने लगे थे।

समाचार देर से पहुँचते थे। अफवाहें पहिले आ जाती थीं। अतएव लोगों को वास्तविक स्थिति का पता न लग पाता था। लोग भ्रम में ही रह जाते थे। सत्यासत्य का कुछ भी ज्ञान न रहने के कारण भी अँग्रेज की शान बढ़ती जा रही थी।

देश अँग्रेजी-हुकूमत के नाम से काँप रहा था।

५३

तमसा के पुल के पास के युद्ध में सिपाहियों की पराजय के समाचार से आजमगढ़ में बेचैनी फैल गई। अंग्रेजी सेना के आ टपकने की आशंका से नगर काँपने लगा। कुँवरसिंह युद्ध की तैयारियों में तत्पर हो गए। अपने सहायकों के के साथ उन्होंने मोर्चेबंदी की। पूरी तैयारियाँ की, पर जिस प्रमाण में अँग्रेजी सेना आ रही थी, उसके मुकाबले उनके पास अस्त्र-शस्त्र न थे। अधिकांश अस्त्र-शस्त्र और सैनिक उन्होंने जगदीशपुर भेज दिए थे, जहाँ जाने के लिए वे स्वयं तैयारियाँ कर रहे थे। अमरसिंह ने जगदीशपुर का भार सँभाल लिया था।

कुँवरसिंह दूरदर्शी व्यक्ति थे। आजमगढ़ के बल पर आती हुई अंग्रेज सेना को हरा सकने में उन्हें संदेह था। अतएव उन्होंने अपना विचार बदल दिया।

इससे तो अच्छा यही होगा कि जगदीशपुर पहुँचकर युद्ध की भारी तैयारियाँ की जाँय और अँग्रेजों को दूर तक खदेड़ा जाय।

जगदीशपुर का रास्ता साफ नहीं है। अँग्रेजी सेना से लड़ते भिड़ते उसे क्षति पहुँचाते हुए वे जगदीशपुर निकल जाँय। यही विचार उन्हें उचित जान पड़ा और इसी योजना के अनुसार उन्होंने अपने साथियों को सज्जित किया।

अँग्रेजी सेना तमसा का पुल पार करती हुई बिना रुके चली आ रही थी। आजमगढ़ कुछ ही दूरी पर था। सेना बढ़ती आयी और आजमगढ़ के निकट आ गई। अँग्रेजी सेना के निकट आते ही कुँवरसिंह अपनी पूरी शक्ति के साथ आजमगढ़ से निकलकर टूट पड़े।

कुँवरसिंह के सामने आते ही लुगार्ड की सेना भी टूट पड़ी। दोनों ओर के सैनिक भिड़ गए और युद्ध शुरू हो गया। दोनों पक्ष में भयंकर मार-काट मची। बंदूकों और तोपों ने खुलकर नर-संहार किया। रक्त की धारें धरती पर फूट निकलीं। लाशों के लोथड़े छितराने लगे। मरे हुए लोगों को रौंदते हुए कुँवर-सिंह ने बड़े वेग से अँग्रेजों की रक्षा-पंक्ति पर प्रहार किया और उसे भेदते हुए उस ओर निकल गए।

कुँवरसिंह के इस कदम से अँग्रेजी सेना कुछ अचंभे में पड़ गई। उसे आशा थी, कुँवरसिंह आजमगढ़ में लौटकर अपनी नयी मोर्चेबंदी के साथ युद्ध करेंगे, पर इधर दृश्य कुछ और हो गया। वे यह न समझ सके कि कुँवरसिंह आजमगढ़ में घिरकर उस गति को प्राप्त नहीं होना चाहते हैं, जिस गति को अनेक अँग्रेज-सेनापति प्राप्त हो चुके हैं। कुँवरसिंह निकल गए। अँग्रेजी सेना हक्की-बक्की खड़ी रह गई। स्वयं सेनापति लुगार्ड इस माजरे को समझ न सके।

कुँवरसिंह के दूर निकल जाने पर उनकी समझ में आया कि वे भाग रहे हैं। तत्काल ब्रिगेडियर डगलस को पीछा करने का आदेश दिया। ब्रिगेडियर डगलस कुँवरसिंह के पीछे दौड़े।

सेनापति लुगार्ड अपनी शेष सैनिक टुकड़ी के साथ आजमगढ़ में घुसे। उनका मुकाबला करने वाला कोई न था। आसानी से वे शहर में आ गए। शहर आने पर उन्हें एक भी सिपाही न दिखलाई पड़ा। और न ही कोई अस्त्र शस्त्र दीख पड़ा। भयभीत नागरिक ही सर्वत्र दृष्टिगत हुए। आजमगढ़ में प्रवेश कर

सेनापति लुगार्ड ने अँग्रेजी झंडा फहराया और अँग्रेजी अमलदारी की स्थापना की घोषणा कर थके-सैनिकों को विश्राम की सलाह दी।

आजमगढ़ की सुरक्षा की ठीक-ठीक व्यवस्था कर सेना विश्राम के लिए विलम गई।

❀

कुँवरसिंह बढ़े चले जा रहे थे। इस बात की उन्हें आशंका थी कि अँग्रेजों की रक्षा-पंक्ति भेदकर निकलने के बाद अँग्रेज टुकड़ी उनका पीछा अवश्य करेगी। वह आशंका ठीक निकली। उन्हें पीछे सेना आती दिखलाई पड़ी। द्रुत गति से वे बढ़े। शीघ्र ही आगे पहुँचकर पीछा करने वाली टुकड़ी को वे कुछ हानि पहुँचा देना चाहते थे।

पास ही नघाई गाँव था। गाँव की सीमा पर घने पेड़ कतार से खड़े थे। शीघ्र इस स्थानपर पहुँच कर कुँवरसिंह ने अपनी सेना को कई भागों में विभक्त कर एकदम तैयार कर खड़ा कर दिया। साथ आई तोपों को भी ठीक-ठिकाने से लगा दिया। साँझ का सूरज पीला पड़ रहा था, फिर भी कुँवरसिंह एकदम तैयार थे।

सेना के तैयार होने पर कुछ साथियों को लेकर कुँवरसिंह आगे निकल गए। जब तक यह सेना पीछे आने वाली टुकड़ी को रोकेगी तब तक वे बहुत दूर निकल जाँयगे। इसी उद्देश्य से कुँवरसिंह आगे बढ़ गए। शीघ्रातिशीघ्र जगदीशपुर पहुँचकर वे युद्ध की भारी तैयारियाँ कर अंग्रेजी सेना से सदा के लिए निर्णय कर लेना चाहते थे।

नघाई के निकट रुकी, गोरी सेना की प्रतीक्षा करती हुई सिपाही टुकड़ी को संघर्ष की नौबत नहीं आई वरन् रात्र भर प्रतीक्षा में जागना पड़ा। ब्रिगेडियर डगलस की फौज रात निकट आते देख रुक गई। डगलस ने रात में अपनी यात्रा जारी रखना उचित नहीं समझा। कुँवरसिंह के अब तक के विवरण से उसे इसका ज्ञान था कि रात में इस क्षेत्र में चलना निरापद नहीं। कुँवरसिंह एक कुशल छापामार-युद्ध करने वाला व्यक्ति है। इसी आशंका से खुले आकाश के नीचे उसने अपना पड़ाव डाल दिया।

रात भर कुँवरसिंह के सैनिक अंग्रेजी सेना के आने की प्रतीक्षा में जागते रहे और उधर रातोंरात कुँवरसिंह बहुत दूर निकल गए।

❀

सूर्योदय होने पर भी अँग्रेजी सेना दिखलाई न पड़ी। कुछ ही देर में समाचार आया कि गोरी पलटन तीन चार मील पीछे रात भर पड़ी रही और अब आगे बढ़ने की तैयारियाँ कर रही है।

"रात भर में तो बाबू साहब काफी दूर निकल गए होंगे!"

"अवश्य!"

"तब इस सेना का रास्ता रोकने की आवश्यकता क्या है? हमारा उद्देश्य तो वैसे ही हल हो गया।"

"रास्ता न रोका जाय, कुछ नुकसान पहुँचाया जाय!"

"हाँ, कुछ मजा चखाकर हम लोग भी बाबू साहब की मदद के लिए चले चलें।"

यही तय हुआ। सिपाहियों की यह टुकड़ी कई भागों में बँटकर गोरी पलटन की राह जोहने लगी। कुछ ही देर में गोरी पलटन आती दिखलायी पड़ी। नजदीक आने पर कई स्थानों में छुपी सिपाहियों की टुकड़ियाँ बाहर निकलीं और द्रुत वेग से टूट पड़ीं।

गोरी पलटन असावधान न थी। युद्ध शुरू हो गया। दोनों दल टकरा गए। सिपाहियों ने बड़े वेग से कई दिशाओं से वार किया। सहसा किए गए इस आक्रमण के आगे गोरी पलटन को क्षति उठानी पड़ी। और जब तक कप्तान डगलास युद्ध की घेरा बंदी पूरी कर सकें तमाम सिपाही मैदान से भाग खड़े हुए।

पलटन पीछे दौड़ी। कई मील तक यह दौड़ जारी रही।

❀

आजमगढ़ में पाँव जमाते ही सेनापति लुगार्ड को खबर मिली कि कुँवरसिंह जगदीशपुर की ओर भाग रहा है। इस समाचार से यह स्पष्ट हो गया कि आजमगढ़ से कुँवरसिंह क्यों भागा? कुँवरसिंह को एक क्षण के लिए भी चैन न लेने

देने की बात सेनापति लुगार्ड ने ठान ली थी। दुश्मन को तैयारी करने का कोई भी अवसर न देना शुरू में विजय प्राप्त करने का एक बड़ा मंत्र है।

सेनापति लुगार्ड ने अपनी सेना में से योग्य व्यक्तियों को छाँटा और उनकी एक टुकड़ी बनाकर उसे जगदीशपुर की ओर बढ़ने का आदेश दिया। यह टुकड़ी जब तक कुँवरसिंह को घेरे रहेगी, तब तक बड़ी शक्ति के साथ वे भी पहुँच जाँयगे। आजमगढ़ से रवाना इस टुकड़ी को सीधे जगदीशपुर बढ़ने का आदेश था। जितने शीघ्र यह टुकड़ी पहुँच सके, उतना ही अच्छा है।

आजमगढ़ से रवाना हुई यह नई सैनिक टुकड़ी बिना रुके बढ़ती गई। दो दिन में ही यह टुकड़ी नाग्रा जा धमकी। पता लगा कि कुँवरसिंह का भी पड़ाव यहीं पर है। इस समाचार से सब प्रसन्न हो आगे बढ़े और कुछ दूरी पर खेतों में सिपाहियों की टोलियाँ देख आक्रमण बोल दिया। जितने वेग से यह आक्रमण किया गया था, उतने वेग से हमले का जवाब सिपाहियों की ओर से नहीं मिला वरन् सभी आगे को भागते नजर आए। इस टुकड़ी ने कुँवरसिंह का पीछा किया।

काफी दूर निकल आने पर कुँवरसिंह ने सोचा था कि अब वे निर्विघ्न जगदीशपुर पहुँच जाँयगे, पर ऐसा न हो सका। आशा के विपरीत एक नई अंग्रेजी टुकड़ी आ टपकी। इस समय युद्ध करना व्यर्थ समझ कुँवरसिंह आगे बढ़ गए।

सिकन्दरपुर पहुँचकर घाघरा पार उतर गए।

घाघरा पारकर कुँवरसिंह ने गाजीपुर की सीमा में प्रवेश किया। फुर्ती से वे मान्नाहार आए। अभी भी गोरी सेना पीछा कर रही थी।

❀

सेनापति लुगार्ड के द्वारा भेजी गई टुकड़ी ब्रिगेडियर डगलस की टुकड़ी से राह में मिल गई। इस सेना के कूच की खबर पाकर ब्रिगेडियर डनलप भी तेजी से धमके और जा मिले। दोनों टुकड़ियों का सम्मिलित अभियान प्रारंभ हो गया। सिकन्दरपुर से ये सेनाएँ तेजी के साथ घाघरा की ओर बढ़ी। कुँवर सिंह की भाँति यह सेना भी बिना विघ्न के पार उतर गई।

ब्रिगेडियर डगलसको तो यह ज्ञात ही था कि कुँवर सिंह जगदीशपुर की ओर बढ़ना चाहता है। जगदीशपुर न पहुँचने देने के लिए ब्रिगेडियर डगलस कटि-

बद्ध थे। अगर ऐसा हो जाता है, तो फिर कुँवरसिंह को पकड़ सकना मुश्किल है।

ब्रिगेडियर डगलस ने अन्य उपायों से भी काम लिया। गाजीपुर में गंगा पार कर ही कुँवरसिंह आगे बढ़ेगा। अतएव क्यों न नावों को डुबो दिया जाय और कुँवरसिंह के दल को रुकने के लिए विवश कर दिया जाय। इस कार्य के लिए खास तौर से कुछ लोग तैनात हुए और उनको तत्काल भेज दिया गया। दो दो, चार-चार के दलों में विभक्त होकर कुछ ऐसे लोग गाजीपुर की ओर बढ़े और गंगा तट की तमाम नावों को डुबो देने का काम शुरू हो गया। दूसरी ओर ब्रिगेडियर डगलस ने कुँवरसिंह का पीछा जारी रखा। मान्नाहार से सात-आठ मील आगे बढ़कर कुँवरसिंह को घेर लिया। निरन्तर भाग दौड़ के कारण भूखी प्यासी सेना को कुछ विश्राम देना उचित समझ कुँवरसिंह रुक गए थे।

ऐसे ही समय ब्रिगेडियर डगलस ने घेरा डाल दिया। कुँवरसिंह जानते थे, ऐसा होगा। अतएव इसके लिए तैयार ही थे। डगलस के आते ही भिड़ गए। इस बार स्वयं कुँवरसिंह सबसे आगे थे। अपने साथियों को दो दलों में विभक्त कर वह खड़े थे। सामना होते ही गोरी पलटन को धर दबोचा। थोड़ी देर युद्ध के पश्चात् एक ओर की टुकड़ी भागी। गोरी पलटन दौड़ी। दूसरी ओर की भी टुकड़ी भागी। उस ओर भी गोरी पलटन गई। मैदान खाली देख शेष लोगों के साथ कुँवरसिंह गंगा तट की ओर बढ़ गए। उधर पूर्व योजनानुसार दोनों भागी हुई टुकड़ियाँ हेर-फेर कर गोरी पलटन को चकमा देती हुई निकल गईं। दो भागों में बँटी गोरी पलटन एक न हो सकी। और उन्हें दबा दिया गया। गोरी पलटन की एक टुकड़ी भारी क्षति उठाकर भाग खड़ी हुई। इस प्रकार शेष सेना कुँवरसिंह के आदेशानुसार गंगा तट की ओर बढ़ी।

तट पर नावों का पता नहीं था। कुँवरसिंह जब पहुँचे तो एक भी नाव न दिखलायी पड़ी। सब बड़ी हैरानी में पड़े। मल्लाहों को बटोरा गया।

"नावें कहाँ गईं"

"......"

सब चुप।

"नावों का क्या हुआ ?"

"......"

"जवाब दो क्या हुआ ? बाबू कुँवरसिंह आए हुए हैं। पार उतरना है।"

"बाबू साहब ?"

"हाँ।"

"सरकार नावें अंग्रेज सिपाही आकर डुबो गए हैं। कह गए हैं आप को नावें न मिलें। अगर ऐसा होगा तो हम सबकी जान मार दी जायगी।"

"हूँ।"

"पर सरकार आप हमारे अन्नदाता हैं। आपको हम पार जरूर उतारेंगे। डूबी नावें अभी हम लोग बाहर करते हैं। आइए।"

मल्लाह और सिपाहियों ने मिलकर डूबी हुई नावों को बाहर किया और कुँवरसिंह तथा उनके साथी पार उतरने लगे।

*

डगलस पूरी पल्टन के साथ गंगा तट पर आए। आश्चर्य से उन्होंने देखा कि कुँवरसिंह अपने साथियों सहित गंगा पार जा रहा है। नावें कहाँ से मिलीं ? डगलस क्रोध से आग बबूला हो गया। तुरन्त सैनिकों को आदेश दिया कि तमाम मल्लाहों को पकड़कर लाया जाय। अंग्रेजी पलटन के आने का समाचार पाकर अधिकांश मल्लाह भाग निकले थे। जो कुछ रह गये थे, उन्हें सैनिक पकड़ लाए।

"नावें किसने दीं ?"

"......"

"नावें डुबो दी गई थीं ?"

"जी हाँ।"

"तब कुँवरसिंह को कैसे मालुम हुआ कि नावें कहाँ-कहाँ डूबी हैं ?"

"......"

"बोलो !"

सारे मल्लाह चुप। ब्रिगेडियर डगलस ने उन सबको गोली से उड़ा देने का

आदेश दिया। इस आदेश का पालन हुआ और तमाम मल्लाहों को एक पंक्ति से खड़ाकर गोली मार दी गई। क्रोध से डगलस एकदम उन्मत्त थे। गंगा तट पर आते आते अंधेरा हो गया था अतएव रुक जाना पड़ा अन्यथा उसी रात वे भी पार उतर जाते। कुछ ही देर पहिले कुँवरसिंह पार उतर गए थे।

सवेरे डगलस सभी अपनी सेना के साथ गंगा पार हुए। तेजी से उन्होंने पीछा किया। कई मील पर कुँवरसिंह को भागते देखा। ब्रिगेडियर डगलस ने भागती टुकड़ी पर भी आक्रमण करने का आदेश दिया। देखा गया कि कुँवरसिंह एक हाथी पर बैठे चले जा रहे हैं और एक नौकर राजछत्र उठाए हुए है। कुँवरसिंह के साथ उसी हाथी पर एक और आदमी भी बैठा है।

तत्काल तोप भरी गई और कुँवरसिंह को निशाना बनाकर गोला दागा दिया गया। भीषण ध्वनि के साथ गोला तेजी से निशाने की ओर उड़ा।

❀

गंगा पार होते ही कुँवरसिंह की प्रसन्नता का ठिकाना न रहा। गंगा के पार रणदलनसिंह एक हाथी और कुछ सिपाहियों के साथ खड़े थे। कुँवरसिंह को देखकर रणदलनसिंह दौड़ा और उसने आगे बढ़कर स्वागत किया।

"कैसे आ गये, रणु?"

"आपकी ही टोह में चला था कि शीघ्र ही आपको जगदीशपुर ले चलें।"

"मैं आ ही रहा था।"

"अमरसिंह ने वहाँ भारी सेना जुटा ली है और अब सभी आपकी बाट जोह रहे हैं!"

"चल ही रहे हैं।"

कुँवरसिंह रणदलनसिंह के साथ हाथी पर बैठ गए। नौकर ने राजछत्र तान दिया। कुँवरसिंह आगे बढ़ चले।

"आजमगढ़ की खबर पाते ही मैं आपकी खोज में निकल पड़ा। अमरसिंह आपके लिए बहुत परीशान हैं।"

"हाँ, अमरसिंह तो..."

कुँवरसिंह अपनी बात खत्म भी न कर पाए थे कि तोप का गोला आया और

एक धड़ाके के साथ फूटा। धुआँ और हड़कम्प! गोले की चोट से राजछत्र टूट गिरा। रणदलनसिंह और नौकर का शरीर चिथड़े-चिथड़े होकर उड़ गया। कुँवरसिंह की दाहिनी भुजा चोट खा गई। नाम मात्र को वह शरीर से चिपकी रह गई। कुँवरसिंह बेहोश होकर हौदे में लुढ़क गए।

फीलवान घबड़ाया और हाथी लेकर भागा। कुँवरसिंह के साथ के लोग भी घबड़ाकर भागे। यह तो अनर्थ हो गया। सब भागे। कुछ आगे जाकर फीलवान रुका। कुँवरसिंह को होश आया। रक्त से लथ-पथ शरीर, झूलता दाहिना हाथ।

"कोई है?"

"जी!"

"मेरा यह हाथ काटकर अलग कर दो।"

"...."

"देखते क्या हो! खाली लटक रहा है। काटकर गंगा-मैय्या की भेंट चढ़ा दो।"

कुँवरसिंह के इस आदेश का पालन किसी ने न किया। सब मुँह ताकते गए। कुँवर सिंह ने स्वयं तलवार उठायी।

"जै गंगा मैय्या।

"......"

और एक झटके से दाहिना हाथ अपने शरीर से अलग कर दिया। रक्त का एक फ़ुहारा छलका और तत्काल उस स्थान पर अँगौछा लपेटकर कुँवरसिंह ने कहाँ—'भुजा गंगा मैय्या की भेंट कर दो और अब सब आगे बढ़ें।"

आज्ञा का पालन हुआ। आँखों में आँसू भर एक सिपाही ने जमीन पर कट कर गिरी भुजा को उठा लिया और उसे गंगा में प्रवाहित करने चला गया। शेष साथियों के साथ कुँवरसिंह आगे बढ़े। दाहिनी भुजा कट जाने पर भी उनके चेहरे पर एक भी शिकन न थी। मन में एक कसक थी और वह कसक अपने दर्द की न थी। रणदलनसिंह के लिए थी। रणदलनसिंह दाहिना हाथ था। उसके साथ साथ उनका भी दाहिना हाथ चला गया।

हाथी से उतारकर कुँवरसिंह को पालकी पर लिटाया गया और उन्हें लेकर सब फुर्ती से जगदीशपुर की ओर दौड़े।

*

"बाबू कुँवरसिंह की..."

"जय !"

गगनभेदी नारा उठा और अमरसिंह हजारों सैनिकों के साथ कुँवरसिंह का स्वागत करने आगे बढ़े। कुँवरसिंह पालकी में लिटाकर लाए गए थे। अमरसिंह को इस पर आश्चर्य हुआ। सम्भव है, बाबू साहब छुपते-छिपते आएँ हों हालाँकि ऐसा हो नहीं सकता। अमरसिंह उनका स्वागत करने जैसे ही पालकी के पास गए और उनकी नजर बाबू साहब पर पड़ी तो वे दंग रह गए। कुँवरसिंह पालकी में घायलावस्था में पड़े हुए थे। उनकी दाहिनी भुजा न थी। जाँघ में भी एक स्थान का माँस निकल गया था।

अमरसिंह उनकी ओर एकटक देखते रह गए। अमरसिंह को देखकर कुँवरसिंह मुस्कुराए पर उसका घबराया हुआ चेहरा देखकर समझ गए कि उनकी दशा देखकर वह दुःखी है।

"तुम्हें यह शोभा नहीं देता, अमरसिंह !"

"भैया !"—अमरसिंह का गला भर आया। आगे वे कुछ न कह सके।

"क्षत्रिय के अंगों पर चोट उसकी वीरता के पुरस्कार हैं, अमरसिंह। आओ बैठो !"—कुँवरसिंह ने उनका हाथ पकड़कर अपने पास बैठा लिया।

जै-जैकार करती हुई सिपाहियों की टुकड़ियों के बीच से पालकी चली। अपने हथियार झुकाकर, तलवारें सम्मान में ऊँची उठाकर सिपाहियों ने कुँवरसिंह का सम्मान किया। जगदीशपुर सिपाहियों से भरा था। घायल और अस्वस्थ रहने पर भी कुँवरसिंह ने सिपाहियों की बागडोर सँभाली। जगदीशपुर आने की इच्छा पूरी हुई।

जगदीशपुर की अवस्था देखकर उनका मन बड़ा दुःखित हुआ। उनका अपना मकान खण्डहर हो गया था। उनके जाने के उपरान्त गोरों ने जगदीशपुर को जी भरकर तबाह किया था। उनका पुश्तैनी मकान खण्डहर करने के साथ-साथ मन्दिर भी तोड़-फोड़ दिया था। अपनी जन्मभूमि की यह दशा देख कुँवरसिंह के मन को बड़ा दुःख हुआ। साथ ही उनका हृदय क्रोध से भी छलक आया। अंग्रेजों

से इस अत्याचार का बदला अवश्य लेंगे । जब तक शरीर में साँस है, इन फिरंगियों से कुँवरसिंह हमेशा लड़ता रहेगा । हमेशा लड़ता रहेगा ।

कुँवरसिंह के जगदीशपुर आते ही आसपास के क्षेत्रों के ग्रामीण उनके दर्शन के लिए नित्य आने लगे । उनमें से अधिकांश उनकी सेना में भारती भी होने लगे । कुँवरसिंह के आगमन का समाचार चारों ओर फैल गया । ऐसा मालूम पड़ने लगा जैसे मुर्दे में प्राण आ गये हैं । जगदीशपुर और उसके आसपास का सारा क्षेत्र हलचल से भर गया ।

साथियों, सहयोगियों और अमरसिंह के मना करने पर भी कुँवरसिंह ने विश्राम नहीं किया । अपने घावों की उन्होंने चिन्ता नहीं की । इसे ईश्वर का एक वरदान समझा और बराबर सिपाही सेना का भार सँभाला । उन्होंने घोषणा की—जब तक उनके शरीर में जरा भी साँस है, तब तक वे निष्क्रिय न बैठेंगे और फिरंगियों से उनकी लड़ाई बराबर जारी रहेगी ।

अंग्रेजी सेना की गति-विधियों के समाचार देने के लिए कुँवरसिंह के अपने खास आदमी चारों तरफ जाने लगे और गोरी पलटन की गति-विधि की पूरी सूचनाएँ उन्हें मिलने लगीं । जगदीपुर की मोर्चाबन्दी कर कुँवरसिंह ने अपने पाँव बाहर निकाले । इस प्रदेश से अँग्रेजों को खदेड़े बिना चैन नहीं । पास ही आरा है । आरा में अंग्रेज पुनः काबिज हो गए हैं । उनको खदेड़ना आवश्यक है । कुँवरसिंह के कदम आरा की ओर बढ़े ।

*

कप्तान ग्राण्ड के सामने एक आदमी आया । अभिवादन कर उसने एक पत्र उसके हाथ पर रख दिया । वह चला गया । कप्तान ग्राण्ड ने उस पत्र को खोलकर पढ़ा । पढ़ते ही चौंक-पड़े । यह कल्पना से परे की बात थी । सेनापति डगलस के आगमन के समाचार से वे अवगत थे । साथ ही उन्हें यह भी मालूम था कि सेनापति डगलस कुँवरसिंह का पीछा कर रहे हैं । इस युद्ध में कुँवरसिंह का विजयी होना असम्भव है । सेनापति डगलस के आगमन के समाचार और उनकी कुँवरसिंह से भिड़न्त की खबरें पाकर वे आरा में निश्चिन्त पड़े थे । कुँवरसिंह को भगाकर सेनापति आयर आरा का भार कप्तान ग्राण्ड पर छोड़कर चले गए थे ।

पत्र कुँवरसिंह के सम्बन्ध में था और उसमें कहा गया था कि कुँवरसिंह निरापद जगदीशपुर पहुँच चुका है और अब वह आरा की ओर बढ़ रहा है। यह चौंका देने वाला आश्चर्यजनक समाचार था। सेनापति डगलस के रहते कुँवरसिंह जगदीशपुर कैसे पहुँच गया? अब आरा पर चढ़ने आ रहा है। यह बात एकदम जादू के खेल सी मालूम पड़ती थी।

पत्र विश्वसनीय व्यक्ति का लिखा हुआ था, अतएव अविश्वास का कोई प्रश्न ही न था। कप्तान ग्रांड ने तत्काल अपने सहकारियों और सेना के अफसरों को एकत्रित किया। पत्र में लिखी बातों पर विचार हुआ। कुँवरसिंह के आरा की ओर बढ़ने का समाचार पाकर सभी घबड़ा गए पर संकट का मुकाबला करना ही पड़ता है। योजना बनी और यह तय हुआ कि कुँवरसिंह को आरा तक आने ही न दिया जाय वरन उसे रास्ते में ही रोक दिया जाय।

दूसरे दिन आरा से कप्तान ग्रांड की आधीनता में गोरी पलटन कुँवरसिंह को रोकने के लिए आगे बढ़ी।

❀

"इस तरह के युद्ध में हमें महीनों लग जाँयगे, तब कहीं हम विजयी होंगे। टिड्डियों की भाँति बिखरे हुए इन सिपाहियों से कब तक हम लड़ेंगे?"

"रोज सिपाही मरते हैं, कटते हैं और जाने फिर कहाँ से सैकड़ों आ टपकते हैं!"

"यह सब उस मौलवी की करतूत है।"

"इस देश का तमाशा तो अजब है भाई! मौलवी कोड़ा चमकाता है और सिपाही लड़-लड़ मरते हैं!"

"बिना कुछ चाल बाजी किए काम चलेगा नहीं!"

"कैप्टन रिंगवर्ड से कुछ राय ली गई है। मेरा ख्याल है कि उनके विभाग को इस काम में लगाया जाय तो कुछ कामयाबी मिले!"

कैप्टन रिंगवर्ड पास ही बैठा था। मुस्कुराकर बोला—"मुझे जैसा हुक्म दिया जाय, मैं वैसा काम करने को तैयार हूँ।"

"आप लखनऊ के सिपाहियों की इस भीड़-भाड़ को खत्म कीजिए जिससे हमारा रास्ता साफ हो!"

कैप्टन रिंगवर्ड ने मुस्कुराकर अपने सेनाध्यक्ष के आदेश को स्वीकार कर लिया। कैप्टन रिंगवर्ड गुप्तचरों के दल का प्रधान था। उसकी आधीनता में अनेक चतुर दूत काम करते थे, जिनका कार्य था लखनऊ और उसके आसपास की तमाम गति-विधियों की सूचना देना। कैप्टन रिंगवर्ड की सलाह के अनुसार ही सैन्याधिकारियों का काम होता था।

कैप्टन रिंगवर्ड ने अपने कुछ विश्वस्त साथियों को बुलाकर इस विषय पर मंत्रणा की। तय हुआ कि सिपाहियों के दल में जाकर कुछ लोग मिल जाँय और भीतर ही भीतर कार्यवाही कर उनको छिन्न भिन्न किया। इस योजना को काम में लाया गया। कैप्टन रिंगवर्ड सावधानी के साथ अपनी नई चाल खेलने लगे

*

कुँवरसिंह अपने कष्ट की तनिक भी चिन्ता न करते हुए आरा की ओर बढ़े जा रहे थे। आगे-आगे निशान लहरा रहा था और डंका बजता जा रहा था। कुँवरसिंह की विजय वाहिनी उल्लास से भरी हुई बढ़ती जा रही। आरा के समीप के घने जंगल में उन्होंने अपना पड़ाव डाला। आरा अब थोड़ी ही दूर रह गया था। थकी हुई सेना को आराम करने देने के बाद स्वस्थ हो आरा पर आक्रमण करने की योजना थी। अपने घावों की तनिक भी चिन्ता न कर कुँवरसिंह मोर्चेबंदी में लगे थे। बूढ़े क्षत्रिय के इस जोश से सैनिकों में बहुत ही जोश थे। सभी के अंग रह-रहकर युद्ध के लिए फड़क रहे थे।

दोपहर के कुछ पहिले आसमान में धूल उड़ती दिखलाई पड़ी। कुँवरसिंह और उनके साथी समझ गए कि कोई अँग्रेज टुकड़ी मुकाबले के लिए आ रही है। अतएव फुर्ती से व्यूह रचा दिया गया है और दुश्मन के आने की प्रतीक्षा की जाने लगी। कैप्टन ग्राण्ड अपनी टुकड़ी के साथ चले आ रहे थे। सिपाहियों को सामने देखकर वे ठिठके और युद्ध का संकेत किया। अँग्रेज-सैनिकों ने अपना घेरा फैलाया। दोनों पक्षों में मार होने लगी। देखते-देखते अँग्रेज सैनिक कुँवरसिंह के व्यूह में फँस गए। अस्सी वर्ष का विख्यात बूढ़ा क्षत्रिय जब मैदान में गरजा तो अंग्रेजों के छक्के छूट गए। सिपाहियों ने ऐसे भयंकर वार किए कि गोरी सेना

का ठहरना मुश्किल हो गया। बहुत से मारे गए। अधिकांश घायल हुए और शेष लोगों के पैर उखड़ने लगे। कैप्टन आयर ने अपनी सेना को सँभालने की बहुत कोशिश की, पर ऐसा न हो सका। कुँवरसिंह के नेतृत्व में सिपाहियों की विकट मार के आगे उसका ठहरना असंभव था। बची हुई अँग्रेज-पलटन भागने लगी। सिपाहियों ने खदेड़ना शुरू किया। सिपाही आयर के पास तक भी आ धमके। स्वयं कैप्टन आयर को अपने बचने की कोई सूरत दिखलायी न पड़ रही थी। अतएव उन्हें भी हटना पड़ा। सिपाही फिर दौड़े। कैप्टन आयर की रक्षा-पंक्ति भहरा गई। भागने के अतिरिक्त अब और कोई रास्ता शेष न था।

कैप्टन आयर भागे। उनके बचे हुए साथी भी भागे। सिपाहियों ने उन्हें बहुत दूर तक खदेड़ा। और इसके पश्चात् वे रुक गये। व्यवस्थित ढंग से आरा की ओर बढ़ने के लिए तैयार होने लगे। इस बात का अब पूरा विश्वास हो गया कि आरा पर उनका अधिकार होकर रहेगा।

कैप्टन आयर अपने बचे हुए साथियों के साथ भागकर आरा आए। अँग्रेजों की पराजय के इस समाचार से आरा में बेचैनी फैल गई। गोरे और उनके स्त्री-बच्चे अपने प्राणों के आसन्न संकट के कारण इधर-उधर भागने लगे। आरा में एक अराजकता सी व्याप्त हो गई। कैप्टन आयर को आरा की रक्षा में संदेह होने लगा। थोड़े से साथियों के साथ उन्होंने आरा में इस प्रकार टिके रहने की योजना बनाई कि अगर कुँवरसिंह मदद से पहिले आरा आ जाता था, तो वे भागने में सफल हों अथवा कुँवरसिंह के आने से पहिले मदद आ जाती है। तो वे मुकाबला कर सकें। इस प्रकार की नीति से काम लेकर कैप्टन आयर आरा में रुके। मदद के लिए उन्होंने तत्काल सेनापति डगलस के पास समाचार भेजा।

❀

विकट समस्या थी। लाख उपाय करने पर भी कामयाबी बड़ी दूर थी। रानी के किले पर तनिक भी चोट नहीं पहुँच रही थी। घेरा डाले पड़ी अँग्रेजी सेना अपने को विवश पा रही थी। दूसरी ओर यह अफवाह बड़े जोर पर थी कि तात्या टोपे वगैरह एक बड़ी फौज लेकर रानी की मदद के लिए आ रहे हैं। अगर यह अफवाह सच निकली तो अँग्रेजी सेना को दो पाटों के बीच पिस जाना पड़ेगा। सर ह्यू रोज को इस संभावना के कारण एक क्षण के लिए भी चैन न था।

किले की गतिविधि देखने के लिए जो बुर्ज बनी थी, उस पर सर ह्यू रोज पुनः गये और दूरबीन की सहायता से किले का दृश्य देखने लगे। किले में सैनिक सज्जित खड़े थे। तोपों के पास गोलदाज जलती मशालें लिए खड़े थे। अंग्रेजों के आक्रमण का उत्तर देने के लिए पूरी तैयारियाँ थीं। क्षण भर बाद ही सर ह्यू रोज ने घोड़े पर सवार दौड़ती रानी को देखा। उसकी फुर्तीली दौड़ वे मुग्ध होकर देखते रहे। मन ही मन उन्होंने रानी के इस वीर रूप के प्रति श्रद्धा प्रकट की, पर दूसरे ही क्षण वे क्रोध से भर गए। एक औरत अंग्रेजी ताकत के नाकों चने दे रही है। यह कितनी लज्जा की बात है कि इतिहास में लिखा जाय कि सर ह्यू रोज एक औरत के मुकाबले हार गए। एक हिन्दोस्तानी औरत ने उनकी सारी वीरता को धूल मिला दिया।

क्रोध से क्षुब्ध सर ह्यू रोज की दृष्टि किले के और भागों पर पड़ी। पानी से भरे बड़े-बड़े हौज दिखलायी पड़े।

पानी !!!

झाँसी की जल व्यवस्था नष्ट कर दी जाय। प्यास से तड़पकर शायद किले के फाटक खुलें। अब बिना पक्की धूर्तता के गुजारा नहीं है। सर ह्यू रोज के मन यह बात आ गई। गोलंदाज टुकड़ी के अध्यक्ष को उपस्थित होने का आदेश दिया गया।

"सुनो, किले में तुम्हें पानी की हौजें दिखलायी पड़ती हैं ?"

गोलंदाज टुकड़ी के प्रधान ने दूरबीन से देखा।

"जी हाँ! हैं।"

"तुम इस ढंग से गोले बरसाओ कि वे सब नष्ट हो जाँय। किले की जल-व्यवस्था नष्ट करो।"

"जी!"

गोलंदाज टुकड़ी का प्रधान अभिवादन कर चला गया। उसने तत्काल सेनापति के आदेश का पालन किया और किले पर गोले बरसने लगे। इन गोलों का लक्ष्य पानी से भरी हौजें थीं।

"आप आराम करिए बाबू साहब !"

"......

"क्या आप चाहते हैं कि हम लोग आपके बाद भी जिंदा रहें !"

"अवश्य। मेरे बाद इस धरती का बच्चा-बच्चा अँग्रेजों से लड़ने के लिए तैयार रहे।"

"पर आपके बिना कुछ नहीं हो सकता !"

"मैं क्या हूँ।"

"आप हमारे सर्वस्व हैं। आप अपने स्वास्थ की ओर ध्यान दें। आपको इस समय पूर्ण विश्राम की आवश्यकता है। अगर आप बचे रहेंगे, तो हम कभी न कभी अँग्रेजों को निकाल कर रहेंगे। बाबू साहब आपके प्राण हम लोगों के लिए बड़े कीमती हैं।"

"मातृ भूमि के लिए न्यौछावर हैं।"

"इसीलिए तो आपसे प्रार्थना है कि आप आराम करें। अभी तक आपका दाहिना घाव भरा नहीं है, वह ज्यों का त्यों है। आपकी जाँघ में जो घाव है वह भी और फिर आज इस लड़ाई में..."

"नहीं, नहीं, मैं आराम नहीं करूँगा। मुझे दो ही बातों में आराम मिल सकता है। अँग्रेजों के निकल जाने पर अथवा मेरे मरने पर !"

"बाबू साहब !"...

"बस ! मैंने कह दिया। आगे बढ़ने की तैयारियाँ करो।"

कुँवरसिंह की बात काटने का साहस किसमें ! उनके आदेशानुसार सेना आगे बढ़ी, पर सभी कुँवरसिंह के स्वास्थ्य को देखकर चिन्तित थे ! दाहिनी भुजा कट चुकी थी। घाव एकदम हरा था। जाँघ के घाव की भी यही दशा थी। इसके साथ-साथ आज के युद्ध में पिंडलियों में दो गोलियाँ लगी थीं। इस सबका कुँवरसिंह को तनिक भी चिन्ता न थी। वैसे उनका शरीर काफी दुर्बल हो गया था। स्वास्थ और विश्राम की तनिक भी परवाह न कर कुँवरसिंह सारा नेतृत्व अपने हाथों सँभाले थे। उनके इस रवैये से उनके तमाम सहयोगी चिन्तित थे। बार-बार समझाने पर भी कुँवरसिंह किसी की एक न सुनते थे। वे अपनी धुन में थे।

सेना के साथ बराबर बढ़ते आए। उनके आरा आते ही कैप्टन ग्राण्ड अपने साथियों के साथ भाग निकला सिपाहियों ने दूर तक कैप्टन ग्राण्ड को खदेड़ दिया। थोड़ी देर की मुठ भेड़ के बाद सिपाही लौट आए। आरा पर कुँवरसिंह का अधिकार हो गया। जब निशान फहराया गया तो कुँवरसिंह के होंठो पर क्षीण मुस्कुराहट खेल गई। आरा पर पुनः अपना अधिकार देख उनके मन को बड़ी प्रसन्नता हुई।

इस प्रसन्नता में एक गहरी पीड़ा भी थी, जिसे वे अब तक छुपाते आए थे, पर अब उसका छुपाना मुश्किल था। मनुष्य का आत्मबल और बात है। उसकी शरीर-रचना और बात। आत्मबल के आगे शरीर-रचना अब तक घुटने टेकती चलती।

कुँवरसिंह का शरीर श्लथ पड़ गया।

कई घाव खाकर, दाहिनी भुजा खोकर आखिर कब तक उठे बैठे रहते। बहुत अपने को रोकने की कोशिश करने के बाद भी वे बिस्तर पर गिर गए। उन्हें अपना शरीर टूटता मालूम पड़ा और साथ ही आँखों के आगे अँधेरा छाने लगा अपनी इस स्थिति से कुँवरसिंह घबड़ा गए। उनकी समझ में ही न आ रहा था कि यह क्या हो रहा है!

कुँवरसिंह की इस दशा की खबर पा सभी लोग दौड़ आए।

एक-एक करके अपने सभी परिचितों का मुख कुँवरसिंह ने देखा। शान्ति की एक साँस छोड़कर उन्होंने अपनी आँखें बन्द कर आगे की योजना पर विचार करना शुरू किया पर यकायक उनकी नसें ऐंठने लगीं और फिर अपनी बंद आँखों को वे खोल न सकें।

उनकी आँखें सदा के लिए बंद हो गईं।

शरीर ठंडा पड़ गया।

कुँवरसिंह अपना पार्थिव शरीर छोड़कर चल बसे।

❀

अँग्रेजी सेना के गोलंदाजों ने दूरबीनों का प्रयोग कर निशाने पर गोलें फेंकना शुरू किया। सभी गोले बड़े सटीक निशाने पर पड़ते थे। फलतः इस भयंकर गोलाबारी के फलस्वरूप किले में तबाही का एक नया दौड़ शुरू हो गया। पानी

की हौजों पर आकर गोले दनादन गिरते थे और तबाही मच पड़ती थी। सटीक निशाने लगाकर गोलाबारी की जाती। कोई भी निशाना चूक न रहा था। हर एक हौज पर पड़ता। भयंकर धड़ाके के साथ हौज चकना-चूर हो जाती और टूटी दीवारों के टुकड़ों से आस-पास के लोग आहत हो जाते।

इस गोलाबारी से लोग घबरा गए। कुछ ही घंटों की देर के बाद पानी के लिए हाहाकार मचने लगा। पानी लाने का जो प्रयास करते, वे मारे जाते। देखते-देखते इस प्रयास में कई लोग मारे गए। किले की इस जल-व्यवस्था पर आघात का कारण सभी समझ गए। रानी पूरी मुस्तैदी के साथ इस प्रकार की गोलाबारी रोकने के लिए तैयार हो गई। किले के दक्षिण और पश्चिम में बने बुर्ज पर रखी तोपों को सजग किया गया। और अँग्रेजी गोलाबारी का मुँह तोड़ उत्तर दिया गया। गौस खाँ ने एक बार फिर इस मैदान में आकर अपना जौहर दिखलाया और अँग्रेजी तोपों को उसकी कुशल गोलन्दाजी के आगे पनाह माँग जाना पड़ा। अँग्रेजी तोपें दोपहर के बाद बंद हो गईं।

अँग्रेजी तोपों के बंद हो जाने के बाद जैसे तैसे शीघ्रातिशीघ्र किले की जल-व्यवस्था सुधारी गई। इतनी ही देर में पानी के लिए हाहाकार मच गया था। युद्ध में अँग्रेजों ने अपनी नैतिकता को ताक पर रख दिया था। युद्ध के नियमों को तिलाजलि दे दी थी। शहर के किसी भी भाग के निरीह नागरिकों पर उनका आक्रमण हो जाता था। सर ह्यू रोज मानवता को ताक पर रखकर युद्ध के लिए एकदम पिल गए थे। पूरी शक्ति के साथ किसी भी मूल्य पर किला फतह करने के लिए वे कटिबद्ध हो गए थे।

तोपों के बंद होने के बाद सर ह्यू रोज ने अपनी सेना के तमाम अधिकारियों को बुलाया और अंतिम निर्णय के लिए योजना बनाने में व्यस्त हो गए। कल या तो झाँसी ही रहेगी अथवा सर ह्यू और उनकी सेना ही रहेगी। दो में से किसी एक के भाग्य का कल निर्णय होकर रहेगा। अवश्य निर्णय होगा।

*

बाबू साहब की मृत्यु के समाचार से शोक छा गया। हजारों सैनिक इस समाचार को सुनते ही दौड़ पड़े। कुँवरसिंह की मृत्यु का समाचार सुनते कितने ही

बिलख-बिलख रोने लगे। नगरवासी इस समाचार को सुनकर स्तब्ध रह गए। शोकाकुल सिपाहियों और नागरिकों की बड़ी भीड़ एकत्रित हो गई। मृत्यु पर किसी का क्या वश ? पर कुँवरसिंह एक वीर की मौत मरे थे।

अमरसिंह ने इस स्थिति में भी अपने को सँभाला। बड़े भाई की मृत्यु हो गई। मृत्यु तो सभी की होती है। मृत्यु के उपरान्त आत्मा की शान्ति आवश्यक रहती है। कुँवरसिंह की आत्मा को शान्ति तभी मिल सकती है, जब कि उनके द्वारा छोड़ा गया कार्य पुनः प्रारंभ किया जाय।

अमरसिंह की आँखों में आँसू थे, फिर भी उसने अपने को संयम किया। उपस्थित जन-समूह को संबोधित करते हुए उसने कहा—"बाबू साहब, नहीं रहे। मृत्यु सभी को होती है। हम भी मरेंगे, पर जिस काम को करते हुए बाबू साहब मरे हैं, वही कार्य हम लोग जारी रखेंगे और इसी कार्य में मरेंगे। अँग्रेजों से हमारा युद्ध बराबर जारी रहेगा।"

सिपाहियों ने अपने हथियार उठाए।

"हम अँग्रेजों से लड़ते रहेंगे।"

"हम उनको भगाकर ही दम लेंगे!"

"बाबू साहब के प्रति सच्ची शोक वेदना यही होगी। जिसे वास्तव में बाबू साहब की मृत्यु से दुःख है, वह अवश्य ही इस संग्राम में भाग लेगा।"

"हम सब लड़ेंगे।"

"ठीक है। बाबू साहब के न रहने पर भी हमारा यह संग्राम जारी रहेगा।"

अमरसिंह ने कुँवरसिंह की मृत्यु के उपरान्त सारा कार्य भार सँभाला। कुँवरसिंह की शानदार अर्थी निकली। उनके सम्मान में तोपें दागी गईं। निशाना झुका दिया गया। कुँवरसिंह की शव-यात्रा में हजारों व्यक्ति थे। बाबू साहब की मृत्यु के समाचार से आस-पास के गाँवों में शोक छा गया। मृत्यु का समाचार जिस दिन आया, उस दिन किसी गाँव में चूल्हे का धुआँ नहीं उठा। ग्रामीणों को ऐसा लगा जैसे उनका कोई परिजन चल बसा है। बाबू साहब की इस मृत्यु की समाचार से ग्रामों में और उत्तेजना फैली। बाबू साहब इन अँग्रेजों के खिलाफ लड़ते हुए मरे हैं। अँग्रेज बाबू साहब के शत्रु हैं। अँग्रेजों को मिटा देना सबका कर्त्तव्य है। गाँव-गाँव में इस उत्तेजना ने अपना जौहर दिखलाया और गाँव-गाँव से लोग

अमरसिंह का साथ देने के लिए आने लगे। अमरसिंह की सेना में ग्रामीणों की संख्या बढ़ती गई।

भाई की मृत्यु के उपरान्त अमरसिंह चुप नहीं बैठा। उसने अपनी सेना का मजबूत संगठन किया। अँग्रेजी सेना के मुकाबले खड़े होने के लिए ग्रामीणों को युद्ध की शिक्षा दी गई। अमरसिंह पूरी तरह मुकाबले के लिए तैयार होने लगा। सैन्य सामग्रियाँ बड़े पैमाने पर इकट्ठी होने लगीं। अमरसिंह को बाहरी सहायता की आशा कम थी। अतएव अपने ही भरोसे वह सब तैयारियाँ करने में जी-जान से जुट गया।

❀

ब्रिगेडियर ग्राण्ड ने भयभीत होकर कहा—"कुँवरसिंह के आगे हमारा ठहरना मुश्किल हो गया। उसकी मार बड़ी कठिन होती। आरा छोड़कर भागने के सिवाय और कोई रास्ता नहीं है। इसीलिए हम लोग भाग आए।"

"हूँ!"

ब्रिगेडियर ग्रांड से सब समाचार सुनकर सेनापति लुगार्ड के माथे पर बल पड़ गए। उसकी अपनी सारी योजनाएँ मिट्टी में मिल गईं। किसी भी योजनामें कामयाबी मिल न सकी। कुँवरसिंह का अधिकार जगदीशपुर और आरा पर हो गया। असफलताओं की कतार देखकर भी सेनापति लुगार्ड ने आशा का दामन न छोड़ा। अपनी सेना को दो से अधिक भागों में विभाजित कर उन्होंने बड़ी भूल की। सम्मिलित शक्ति से आक्रमण होता, तो शायद कुँवरसिंह को इतनी अधिक कामयाबी न मिलती।

ब्रिगेडियर ग्रांड से सब समाचार पाने के बाद सेनापति लुगार्ड ने तुरन्त चलने की तैयारियाँ कीं और ग्रांड के आने के दूसरे दिन ही सेनापति लुगार्ड अपनी भारी फौज के साथ आगे बढ़े। आरा और जगदीशपुर पर एक साथ आक्रमण करने की योजना बनाते चले। उन्होंने यही उचित समझा कि सेना को दो भागों में बाँट दिया जाय। एक जगदीशपुर से आरा की ओर बढ़े और दूसरी आरा से जगदीशपुर की ओर बढ़े। इस प्रकार दोनों सेनाएँ पास-पास भी रहेंगी और आक्रमण के मैदान में जहाँ जैसी स्थिति रहेगी, वहाँ वैसा कदम उठाया जायगा।

❀

"कुँवरसिंह मर गए ?"

"क्या कहा !"

"हाँ साहब, कुँवरसिंह मर गए। मैं अपनी आँखों देखकर आ रहा हूँ।"

"तुम्हारा दिमाग खराब हो गया है।"

"नहीं साहब। गंगा माता की सौगंध! बाबू साहब मर गए। मैंने अपनी इन्हीं आँखों से उन्हें चिर-निद्रा में देखा है और उनकी अंतिम क्रिया भी देखी है। बाबू साहब के मरने के बाद उनके छोटे भाई ने सारा कारबार सँभाल लिया है। अब वह आप से लड़ने की तैयारियाँ कर रहा है।"

"......"

"आरा और जगदीशपुर के बीच में हजारों की संख्या में सिपाही फैले हैं। सब मारने काटने को तैयार हैं।"

दूत अपनी बात कहकर चला गया। सेनापति लुगार्ड को उसकी सब बातों पर विश्वास हो गया, पर उसकी एक बात पर विश्वास न हुआ। कुँवरसिंह की मृत्यु के समाचार पर उन्हें विश्वास न हो रहा था। शत्रु-पक्ष की किसी बात का क्या ठिकाना ? संभव है, यह प्रचार कुँवरसिंह की ओर से हुआ हो, ताकि अँग्रेजी सेना धोखे में रहे और इस मौके का फायदा उठा लिया जाय। नाना साहब ने भी अपनी मृत्यु की अफवाह उड़ाया थी, संभव है, ऐसा प्रचार कुँवरसिंह की एक चाल हो। अतएव उन्हें इस बात पर विश्वास न हुआ।

कुछ आगे बढ़ने पर तीन-चार दूतों ने पुनः यही समाचार दिया। इस बार सेनापति लुगार्ड ने अपने खास आदमी भेजे। उन्होंने भी यही समाचार दिया। तब उन्हें विश्वास हुआ और उनकी प्रसन्नता का ठिकाना न रहा। तत्काल कलकत्ता गवर्नर जनरल के पास यह समाचार भेजने की व्यवस्था की। सेनापति लुगार्ड ने संतोष की साँस ली। उनका एक बड़ा शत्रु चल बसा। उसके जीवित रहने तक बड़ा खतरा था। अगर आज कुँवरसिंह जिंदा रहता, तो क्या वे इतना रास्ता निर्विघ्न पार कर लेते।

मन ही मन कुँवरसिंह की मृत्यु के समाचार से दुःख भी हुआ। आज कुँवरसिंह रहता और यदि वह अँग्रेजी सरकार का आदमी होता तो...? क्या

मजाल कि सारे बिहार में एक भी सिपाही अँग्रेजी अमलदारी के खिलाफ अँगुली भी उठा पाता। बुरा हो टेलर का।

सेनापति लुगार्ड ने एक जोश में भरकर सेना को कूच की सलाह दी। कुँवरसिंह का भय अब न था। अँग्रेजी सेना निर्विघ्न, कूच का डंका बजाती हुई आरा और जगदीशपुर की ओर बढ़ रही थी। इस बार सेनापति लुगार्ड को विजय में तनिक भी संदेह न था।

※

रिंगवर्ड ने अपना कमाल दिखलाया। सिपाहियों के वेश में उसने अपने चुने हुए दूतों को लखनऊ के सिपाहियों के बीच भेज दिया। तीस चालीस आदमियों का यह दल जिसमें कुशल गोलंदाज ही अधिक थे, वे अंग्रेजी पड़ाव से अलग हो, मीलों का चक्कर काटते हुए लखनऊ में घुसे और इस बात का प्रचार किया कि वे सब रुहेलखंड से आ रहे हैं और अंग्रेजों को भगाने में सिपाहियों की मदद करना चाहते हैं। लखनऊ के सिपाहियों ने उनकी इस बात का विश्वास कर लिया और वे सब सिपाहियों के साथ युद्ध में शामिल हो गए।

इन लोगों ने आकर पहिले ही दिन युद्ध में बड़ा उत्साह दिखलाया और सबसे आगे बढ़कर इन लोगों ने मार की। इनकी वीरता से सिपाही बड़े प्रभावित हुए। रिंगवर्ड के आदेशानुसार इन लोगों ने एक और चाल खेली। सिपाहियों के बड़े अफसरों से मिलकर इन लोगों ने तोपों का भार सँभालने की प्रार्थना की और कहा कि वे लोग कुशल गोलंदाज हैं।

तीन चार लोगों को तोपों भार सौंपा गया और दूसरे दिन के युद्ध में इन लोगों ने तोपों पर भी अपना कमाल दिखलाया। इस प्रकार रिंगवर्ड द्वारा भेजे गए ये तमाम लोग लखनऊ के सिपाहियों के विश्वासी बन गए।

मौलवी अहमदुल्ला और मौलवी लश्कर शाह के नेतृत्व में लखनऊके सिपाही बराबर युद्ध रत थे। दिन पर दिन लगातार युद्ध होता था और बराबर मात खाने पर भी सिपाही लखनऊ न छोड़ रहे थे। अंग्रेजी सेना क्षति उठाकर भी पीछे न हट रही थी। प्रत्येक दिन ऐसा लगता कि अब लखनऊ के युद्ध का निर्णय हो जायगा, पर हर रोज युद्ध अनिर्णीत रह जाता था।

※

तात्या के मन में अनेक विचार उठा रहे थे। चरखारी से कालपी होते हुए झाँसी पहूँचने के बाद मनु के सहयोग से वह न केवल सर ह्यू रोज को खदेड़ने की सोच रहा था वरन झाँसी से आगे बढ़कर पुनः कानपुर पर अपना अधिकार करने का स्वप्न देख रहा था। दो-दो बार की विफलताओं ने उसे हतोत्साहित न किया था वरन वह पूरे जोर से फिर अपनी इच्छाओं को साकार रूप देने का प्रयास कर रहा था। इस बार उसे विश्वास था कि अबकी बेर उसके कदम उखड़ नहीं सकते हैं। अपने गत तीन चार बरसों के प्रयास में क्या वह इस तरह आसानी से पानी आने देगा?

अपनी पलटन के साथ तात्या बढ़ा जा रहा था। आगे-आगे पेशवा झंडा फहरा रहा था और धूल उड़ाती हुई पलटन चरखारी की ओर बढ़ी जा रही थी। वह शीघ्र से शीघ्र झाँसी पहुँच जाना चाहता था। रानी का पत्र मिलते ही उसने तेजी से अपने कदम बढ़ा भी दिए थे, पर लक्ष्मण राव के पत्र से उसके मन को शान्ति मिली। अपनी गति धीमी कर वह सैन्य संग्रह करता हुआ चला। लक्ष्मण राव ने अपने पत्र में लिखा था कि झाँसी के लिए अभी कोई विशेष चिन्ता की आवश्यकता नहीं है। इस पत्र से तात्या आश्वस्त था।

चरखारी आते ही तात्या की धूम मच गई। चरखारी में उसका मुकाबला करने वाला कोई न था। अगर कोई मुकाबले पर आता भी तो तात्या की सेना के आगे उसका ठहर सकना मुश्किल था। तात्या के साथ भारी तोपें थीं और बीस हजार से अधिक सिपाही थे। इसके अतिरिक्त वह अकेला न था। उसके पीछे नाना साहब भी आ रहे थे।

चरखारी पर तात्या ने अपना झंडा फहरा दिया और कालपी के समाचार लेने के लिए उसने अपने दूत भेज दिए।

ॐ

बेतवा के तट पर धूनी रमाए हुए एक साधु ने तात्या की सेना को ध्यान पूर्वक देखा। उसकी तोपों को गिना और सेना एक अन्दाज लिया। इसके बाद वह अपना कमण्डल और चिमटा सँभालकर उठ खड़ा हुआ। बेतवा के किनारे किनारे वह दूर तक चला गया। आगे जाकर उसे एक गाँव मिला। छोटा सा गाँव था नदी तट

पर बसा और उसके ही सामने कुछ नावें थीं। एक नाव पर बैठा मल्लाह अपना जाल बुन रहा था।

"शिवबदन !"

साधु के मुँह से अपना नाम सुनकर शिवबदन चौंक पड़ा जाल का बुनना छोड़कर वह नाव से उतरा और साधु के सामने आया।

"कहिए महाराज ?"

साधु मुस्कुराया—"पहिचाना नहीं, शिवबदन !"

दाढ़ी और बालों से घिरे चेहरे को शिवबदन ने गौर से देखा और फिर खिलखिलाकर हँस पड़ा—"पहिचान गया महाराज ! आप वेश बदलने में पटु हैं। इसलिए कभी-कभी धोखा हो जाता है !"

"अब तो पहिचाना ?"

"हाँ, महाराज !"

"बताओ, राम गुलाम आया था ?"

"अभी तो नहीं आया, शायद शाम को आवे !"

"हूँ। सुनो, जैसे ही रामगुलाम आवे !"—साधु ने अपने चारों ओर देख कर जब इतमीनान कर लिया कि कोई नहीं सुन रहा है, तो उसने आगे कहा—"रामगुलाम आवे तो उससे कहना कि तात्या कालपी जा रहा है। इसकी खबर बड़े साहब को तुरन्त दी जावे !"

"ऐसी बात है !"

"हाँ, इस समय बहुत खतरा है ! मैंने ऐसा भी सुना है कि नाना साहब भी इसी तरफ आ रहे हैं। अगर साहब लोग हार गए तो हम लोग कहीं के न रहेंगे। न इनाम बख्शीश मिलेगी और न जागीरदारी !"

"झाँसी की खबर से तो मेरा मन बैठा जा रहा है !"—शिवबदन गम्भीर हो गया—

"भगवान मालिक है। आगे देखो क्या होता है, पर ख्याल रखना ! राम गुलाम के आते ही इस खबर को तुरन्त बड़े साहब के पास भेजो। जल्दी खबर पहुँच जायगी तो बड़ा अच्छा रहेगा। नहीं तो उधर से झाँसी और इधर से तात्या, साहब का बचना मुश्किल होगा और हम लोगों की तमाम मेहनत पर पानी फिर जायगा।"

"जरूर ! जरूर !! आप निश्चिन्त रहिए !"

"ठीक है। मैं चलता हूँ।"

"कुछ भोजन पानी...?"

"नहीं, इस वक्त मुझे बहुत से काम करने हैं !"

साधु डुमराव जाता आगे बढ़ गया। कुछ गाँव वालों को देखकर वह जय सियाराम जय सियाराम करता हुआ आगे निकल आ गया।

६३

सर ह्यू रोज के माथे पर चिन्ता की रेखाएँ खिंच गईं। तात्या टोपे अपनी पलटन के साथ चरखारी से कालपी की ओर तेजी से आ रहा है।

"तात्या को अगर रास्ते में ही नहीं रोका जाता है, तो हम लोगों के लिए अनर्थ हो जायगा ?"

"यही तो समझ में नहीं आ रहा, क्या करूँ ?"

"कुछ न कुछ अवश्य करना होगा !"

"क्या किया जा सकता है। उसके साथ भारी-भारी तोपें हैं और बीस हजार से अधिक सिपाही हैं। मुट्ठी भर आदमी भेजकर हम उसका कर क्या सकते हैं ? सुना है, नाना धुंधुपंत भी उसकी मदद के लिए पीछे-पीछे आ रहा है।"

"इसका यह अर्थ है कि हम निष्क्रिय पड़े रहें और दुतरफा मार खाकर नष्ट हो जाँय।"

"नहीं। कुछ न कुछ उपाय करेंगे ही !"

"भले ही हमारे सैनिक तात्या से हार जाँय पर उसका मुकाबला करने के लिए यह कदम उठाना आवश्यक है। हार जीत का प्रश्न क्या ! इतना तो तय है कि जो लोग जाँयगे वे कुछ समय के लिए उसे रोक सकने में समर्थ होंगे ही। संभव है, तब तक हमारा और झाँसी का फैसला हो जाय !"

"यही करना ही होगा।"

सर ह्यू रोज ने इस सुझाव को स्वीकार कर लिया और अपनी सेना का एक भाग छाँटकर कालपी की ओर तात्या को रोकने के उद्देश्य से बढ़ा दिया तात्या टोपे को रोकना अत्यावश्यक था। रातों रात यह कार्यवाही कर सर ह्यू रोज प्रातः

से ही झाँसी के युद्ध में लग गए। लगातार गोलाबारी और मोर्चेबंदी के बाद भी वे झाँसी का बाल भी बाँका न कर सके थे। झाँसी अविजित ही था और दूसरी ओर तात्या टोपे बढ़ रहा है। ऐसे—दुतरफा संकट में फँसे सर ह्यू रोज के लिए यह संकट का अवसर था और यह स्थिति उनकी सैन्य कुशलता का परिचय ले रही थी।

गोलाबारी के साथ सर ह्यू रोज ने अपनी सेना को किले की दीवारों की ओर बढ़ाने का प्रयत्न किया! जैसे-जैसे दिन चढ़ता गया, वैसे-वैसे युद्ध की भयंकरता बढ़ती गई। झाँसी की तोपें भी कम कुशल न थीं। वे बराबर गोले उगल रही थीं और दीवारों के पास झाँसी के सैनिक शत्रु पक्ष के सैनिकों को भून देने के लिए एक दम तैयार खड़े थे।

दोपहर होते-होते युद्ध और उग्र हो गया। अंग्रेजी तोपों की भयंकर गोलाबारी से झाँसी थर्रा उठी। अंग्रेजी तोपों ने तबाही मचा दी। झाँसी के अनेक गोलन्दाज इस युद्ध में मारे गए। गोलन्दाज टुकड़ी का प्रधान और कुशल संचालक गौस खाँ बुरी तरह घायल हो गया। अंग्रेजी तोपों ने एक साथ उसे और उसकी तोप को ही अपना निशाना बनाया। लुकाछिपी का खेल खेलकर गौस खाँ कुछ देर तक बराबर मुकाबले पर डटा रहा पर कई तोपों के आगे कब तक ठहरता। एक शैल उसके ही पास आकर फटा। फलतः अनेक व्यक्तियों के साथ वह भी बुरी तरह घायल हो गया। शैल फटकर निकले हुए अनेक नुकीले पदार्थ उसके शरीर में धँस गए और वह बेहोश हो गया।

सर ह्यू रोज दूरबीन से क्षण-क्षण किले का दृश्य देखते हुए बराबर गोलंदाजों और अपने सैनिकों का संचालन कर रहे थे। गोरी सेना भी जी जान से युद्ध कर रही थी। तीसरे पहर भारी हानि उठाने के बाद भी गोरी सेना दीवारों के पास पहुँच गई। दीवारों के पास धमकते ही युद्ध अपनी चरम अवस्था पर पहुँच गया। किले के सिपाहियों की बंदूकें अंधाधुंध चलने लगीं। दीवार के पास के सैनिक भी अपनी बंदूकों की मार से उनको भारी हानि पहुँचाने लगे।

बंदूकों की इस लड़ाई में किले के सिपाही कमजोर पड़ रहे थे। उनकी बंदूकें पुरानी और कम दूरी तक मार करने वाली थीं, पर अंग्रेजी सैनिकों की बंदूकें एक दम नयी और दूर तक मार करने वाली थीं। इस कारण किले के सिपाही

काफी संख्या में मारे जा रहे थे। इस पर भी किले के सिपाही जिस उत्साह और जोश के साथ लड़ रहे थे। वह गोरी सेना में न था।

*

रानी, लक्ष्मण राव और मोरेपन्त तीनों गंभीर पड़ गए। एक दूसरे का मुँह देखते हुए चुप रह गए। चारों ओर मारो काटो की ध्वनि के साथ तोपें गरज रही थीं। बंदूकें कड़क रही थीं। गौस खाँ की मृत्यु का समाचार आ चुका था और साथ ही यह भी खबर आ चुकी थी कि गोरी सेना दीवारों से आ लगी है।

रानी ने ही मौन भंग किया।

"राव साहब, आप ने क्या सोचा है?"

"मैंने?"

"जी हाँ!"

"जैसा आप लोग समझें। इस विषय में मैं क्या कह सकता हूँ। आप प्रधान हैं। सारी सेना की मालकिन हैं। जैसा आप कहेंगी, वैसा मैं करूँगा।"—लक्ष्मण राव के स्वर में रूखापन अधिक था।

रानी ने लक्ष्मण राव को गौर से देखा। इस संकट के समय भी राव साहब के मन की कलुषता नहीं मिटी है। उन्हें सर्व प्रकार से योग्य समझ रानी ने दीवान का पद सौंपा। फिर भी वे अपने इस कार्य का निर्वाह उस तत्परता, ईमानदारी और योग्यता से नहीं कर रहे हैं, जैसा कि उन्हें करना चाहिए था। रानी उनके मन का मूल कारण समझ गई थी। लक्ष्मण राव कभी नहीं चाहते थे कि स्त्री झाँसी की शासिका बने और अंग्रेजों से युद्ध करे। उनका कहना था कि इस युद्ध में स्त्री मति से काम लेना अनुचित होगा। इस बात की शिकायत लक्ष्मण राव मोरेपन्त से कर चुके थे, पर मोरेपन्त जानते थे कि उनकी बेटी से अधिक योग्यता और किसी में नहीं है। एक वही झाँसी का शासन सँभाल सकती है। मनु से अधिक योग्य झाँसी में और कोई नहीं। लक्ष्मण राव स्त्री के इस अधिकार के मन ही मन घोर विरोधी थे।

"ठीक है।"—रानी ने कहा—"आज मैं पूरी ताकत से लड़ूँगी। जो होगा, देखा जायगा। तात्या साहब को अब तक आ जाना चाहिए था। खैर, अब उनके आने की मैं प्रतीक्षा नहीं कर सकती!"

"ठीक है, बेटी !"—मोरोपन्त ने समर्थन किया—"उत्तर की ओर का भार आज मैं स्वयं सँभालूँगा। लक्ष्मण राव भी दक्षिण के मोर्चे पर रहेंगे।"

"दक्षिण का रास्ता अभी निरापद है।"—लक्ष्मण राव बोले—"आप लोगों की राय हो तो मैं यहाँ से बाहर निकल जाऊँ। तात्या साहब शायद इस वक्त कालपी की तरफ हैं। मैं आगे बढ़कर तुरन्त उनको यहाँ ले आऊँ। क्योंकि आज के युद्ध में अंग्रेजों का जैसा रंग-ढंग है, उससे मुझे विजय होने की उम्मीद कम है।"

"यह भी ठीक होगा।"

"आपकी क्या आज्ञा है ?"

"जैसा आप समझें !"—रानी ने उठते हुए कहा—"मातृभूमि पर किसी एक व्यक्ति का अधिकार नहीं। वह सब की होती है। मातृभूमि के प्रति हरेक का अपना कर्त्तव्य होता है। इस ख्याल से आप जो भी उचित समझें, करें। मुझे मंजूर होगा।"

"मैं यही ठीक समझता हूँ कि तात्या को लेकर तुरन्त आ जाऊँ।"

"यही कीजिए !"

लक्ष्मण राव उठकर चले गए। रानी ने भी पिता से विदा ली और वह युद्ध क्षेत्र की ओर बढ़ गई। मैदान में आते ही उसने देखा कि अंग्रेजी तोपों ने झाँसी पर कहर बरसा रखा है। भीषण युद्ध हो रहा है। झाँसी एकदम तबाह हो रहा है। लाशों के अंबार पड़े हैं। सिपाही लगातार लड़ रहे हैं और भारी संख्या में मर रहे हैं।

रानी के रणक्षेत्र में आते ही युद्ध का दृश्य बदल गया। रानी ने सिपाहियों का नेतृत्व सँभाला और बड़ी वीरता के साथ अंग्रेजी सेना पर आक्रमण प्रारंभ हो गया।

❀

लक्ष्मण राव ओड़छा दरवाजे के पास आकर रुके। उन्हें देखते ही बुंदेला ठाकुर डल्लाजी पास आया। लक्ष्मण राव मुस्कुराते हुए घोड़े से उतरे।

"बोले—"मुझे कालपी जाना है।"

"सो क्यों ?"

"सारा किया कराया चौपट हुआ चाहता है। तात्या को मैंने पत्र में लिख भी दिया था कि झाँसी जल्दी आने की जरूरत नहीं, फिर भी सुना है कि वह बड़ी तेजी से आ रहा है। अगर झाँसी की हार से पहिले तात्या यहाँ आ जायगा तो रोज की क्या दुर्गति होगी!"

"सो तो है!"

"अगर रोज हार जाता है, तो फिर हम लोगों को एक औरत की गुलामी बर्दाश्त करना पड़ेगी!"

"हुँ!"

"मैं कालपी जाकर तात्या को रोकता हूँ और तुम इधर इस दरवाजे से गोरी सेना को भीतर आने दो। अब बहुत हो गया। झाँसी मरघट हुआ जा रहा है। क्या हम लोग श्मशान पर राज्य करेंगे?"

"जैसी आपकी आज्ञा!"

"बस! तुम यही करो। अब इसके सिवाय और कोई रास्ता नहीं है। लेकिन खबरदार, सारा काम बहुत ही होशियारी से हो।"

"आप इससे निश्चिन्त रहें!"

"अभी मेरे अकेले जाने की व्यवस्था करो। ऐसी व्यवस्था हो कि मेरे अंग रक्षक अंग्रजी पड़ाव के बाहर मुझसे मिलें।"

"जी!"

बुंदेला ठाकुर ने लक्ष्मण राव के आदेशानुसार कार्य किया। बड़ी ही सावधानी से ओड़छा दरवाजे से अकेले लक्ष्मण राव को बाहर कर दिया गया।

❀

सर ह्यू रोज दूरबीन से क्षण-क्षण का दृश्य देख रहे थे। झाँसी में जैसी भागदौड़ और हाहाकार दिखलायी पड़ रहा था, उससे उनके मन को बड़ी प्रसन्नता थी। अब उन्हें इस बात की पूरी आशा हो चली थी कि वे झाँसी पर अपना अधिकार करके रहेंगे। साँझ बढ़ती जा रही थी। दिन भर के इस भारी युद्ध में भारी क्षति उठाने के बाद भी अँग्रेजों ने अब तक जितनी सफलता प्राप्त कर ली थी वह सबसे अधिक और संतोषजनक थी।

"साहब, एक मराठा आपसे मिलने की जिद कर रहा है!"

"कौन है?"

"उसने अपना नाम नहीं बतलाया, पर वह आपसे मिलना अवश्य चाहता है।"

"बुलाओ!"

"वह एकदम एकान्त में आपसे मिलने का इच्छुक है।"

"अच्छा। मैं तंबू में जाता हूँ। उसकी तलाशी लेकर मेरे पास भेज दो।"

"बहुत अच्छा!"

सर ह्यू रोज अपने तंबू में जाकर उस अज्ञात मराठे के आने की प्रतीक्षा करने लगे। युद्ध का नक्शा ही उनके दिमाग में झूल रहा था। साथ ही वह रानी के बारे में भी सोच रहे थे। क्या इस वीरांगना को वे जीवित पकड़ सकते हैं? अगर रानी को वे जिंदा पकड़ सकें, तो यह उनकी एक बहुत बड़ी सफलता होगी। रानी की वीरता से वे मुग्ध थे। ऐसी वीर स्त्री को मार डालने के पक्ष में वे न थे। उनकी हार्दिक इच्छा थी कि रानी को जिंदा पकड़कर विलायत ले जाँय। रानी उनके लिए एक कौतूहल थी।

"साहब, वह मराठा आ गया है!"

"आने दो।"

दो क्षण में ही एक मराठा उनके सामने आ खड़ा हुआ। चेहरे मोहरे से वह ऊँचे खानदान का मालूम पड़ रहा था। सर ह्यू रोज ने उसे गौर से देखकर पूछा—"कहिए, क्या काम है?"

"झाँसी के इस युद्ध में मैं आपकी मदद कर सकता हूँ।"

"आपका परिचय?"

"कुछ नहीं।"

सर ह्यू रोज ने कुछ सोचकर कहा—"अच्छा। अगर बिना परिचय दिए भी तुम मदद करना चाहते हो तो कर सकते हो। हम तुम्हारे शुक्रगुजार रहेंगे।"

"मैं केवल मदद ही नहीं करना चाहता हूँ वरन् आपको निश्चित रूप से विजयी बना सकता हूँ लेकिन इसके साथ एक पक्की शर्त रहेगी।"

"क्या?"

"झाँसी पर कंपनी का कब्जा होने के बाद मुझे झाँसी का शासक बनाया जाय।"

सर ह्यू रोज चौंक पड़े।

"किस आधार पर ?"

"मैं आपके लिए ऐसा इंतजाम कर सकता हूँ कि कल सुबह ही आपकी सेनाएँ झाँसी में प्रवेश कर जाँय और साथ ही जब तक आपका झाँसी पर पूरा कब्जा न हो जाय, तब तक मैं तात्या टोपे को रोक सकता हूँ।"

सर ह्यू रोज ने उसकी ओर आश्चर्य से देखते हुए कहा—"अगर तुम इतना कर सकते हो तो हमें तुम्हारी शर्त्त मंजूर है। कंपनी की सरकार से मैं सालाना पेंशन के साथ-साथ झाँसी का शासन तुम्हें देने की सिफारिश कर सकता हूँ।"

"शपथ पूर्वक कहिए ?"

"मैं शपथ पूर्वक इस बात को कहता हूँ, पर तुम्हारी ओर से भी तो वफादारी साबित होना चाहिए !

हाँ, कल ही..."

"......"

"यह लीजिए। कल अपनी सेना लेकर ओड़छा दरवाजे पर जाइए। वहाँ बुंदेला ठाकुर दुल्हाजी हैं। वह इस झंडे को लहराता देखकर फाटक खोल देगा। आप झाँसी पर अपना कब्जा करें। मैं तात्या को रोकता हूँ। मैं उस समय तक आपके सामने खुले रूप में नहीं आ सकता जब तक कि झाँसी की रानी जिंदा है। उसके समाप्त होने के बाद ही मैं आप से मिलूँगा। जब तक वह जिंदा है, तब तक मेरे लिए बहुत खतरा है।"

"ठीक है। तुम्हारी बातें सच निकलने पर मेरा भी वायदा अवश्य पूरा होगा!"

"धन्यवाद!"

वह मराठा तेजी से बाहर निकल गया। सर ह्यू रोज आश्चर्य से उसे देखते रहे। उसके जाने के बाद वह उसे झंडे को देखने लगे, जो वह उन्हें दे गया था। अच्छा! कल यह भी एक प्रयोग सही। हो सकता है कि इस मराठे की कही हुई बात सच निकले। हिन्दोस्तान में घर के भेदियों की फसल बड़ी अच्छी है और

इसी कारण कम्पनी का राज्य रक्तपात के बल पर नहीं बढ़ा है, बल्कि रुपये पैसल के बल पर बढ़ा है।

❀

सेनापति लुगार्ड ने अपनी कार्यवाही स्थगित कर दी थी। अमरसिंह का मुकाबला अच्छी तरह करने के लिए उन्होंने सासाराम के सेनापति कारफील्ड के पास पत्र भेजकर उनसे तत्काल सहायतार्थ आने का अनुरोध किया था। सेनापति लुगार्ड उन्हीं के आने की प्रतीक्षा में चुप-चाप पड़े थे, पर यह स्थिति दो दिन से अधिक कायम न रह सकी।

उनके आगे गई हुई टुकड़ी की मुठ भेड़ अमरसिंह से हो गई और खबर पाते ही सेनापति लुगार्ड को आगे बढ़ना पड़ना पड़ा क्योंकि अमरसिंह के मुकाबले उस टुकड़ी के हार जाने की पूरी आशा थी। सेनापति लुगार्ड तेजी के साथ आगे बढ़े।

लगातार भाग दौड़ के उपरान्त जब वे युद्ध स्थल पर आए तो उन्होंने बड़ा वीभत्स दृश्य देखा। अमरसिंह के नेतृत्व में गोरी पलटन के आधे से अधिक सिपाही मारे जा चुके थे। युद्ध का मैदान लाशों से भर गया था। सेनापति लुगार्ड ने एक क्षण का भी विश्राम न ले अपनी पलटन को भिड़ा दिया। इस प्रकार युद्ध में नया जोश आ गया।

जगदीशपुर से कुछ ही दूर यह युद्ध हो रहा था। अमरसिंह बड़ी वीरता के साथ लड़ रहा था। सिपाहियों की मार के आगे गोरी पलटन के छक्के छूट रहे थे। अगर सेनापति लूगार्ड ठीक समय पर न पहुँचते तो यह निश्चित था कि गोरी पलटन की इस टुकड़ी का एक भी आदमी जिंदा न लौटता, पर ठीक मौके पर सेनापति लूगार्ड के आ पहुँचने से युद्ध का रंग ही बदल गया। अपनी सारी शक्ति के साथ सेनापति लुगार्ड भिड़ गए और सिपाहियों को गिराने लगे। अँग्रेजों की इस नई सेना के आगे अमरसिंह के सिपाहियों का टिकना मुश्किल हो गया।

अमरसिंह से यह नया परिवर्तन छुपा न रह सका। उसने भाँप लिया कि अब इस मुकाबले में उसकी सेना का ठहरना असंभव है। उसे आशा थी कि इस टुकड़ी

की मदद के लिए कोई न आ सकेगा, पर उसकी यह आशा निर्मूल निकली। जिस उद्देश्य से उसने इस टुकड़ी पर हमला किया था, उसमें वह असफल रहा।

अमरसिंह ने धीरे धीरे पीछे हटना शुरू किया।

सेनापति लुगार्ड को यह स्थिति भाँपते देर न लगी और तत्काल अपनी सारी तोपों को आगे कर उसने सिपाहियों को खदेड़ते हुए अपनी सेना को जगदीशपुर की ओर बढ़ाना शुरू कर दिया। तोपों की मार के कारण सिपाही दाँए-बाँए हटने लगे। जगदीशपुर के रास्ते उनका ठहरना मुश्किल हो गया। तीन चार घंटे की गोलाबारी के बाद जगदीशपुर का रास्ता साफ हो गया।

सेनापति लुगार्ड ने एक टुकड़ी को सिपाहियों से भिड़ाए रखा और दूसरी को जगदीशपुर के रास्ते बढ़ा दिया। जगदीशपुर के रास्ते यह टुकड़ी निर्विघ्न बढ़ती गई और दूसरी टुकड़ी ने सिपाहियों को रोके रक्खा। अमरसिंह ने इस टुकड़ी को भेदकर जगदीशपुर के रास्ते में अवरोध उत्पन्न करने का बहुतेरा जी-तोड़ प्रयास किया, पर वह इसमें हर बार असफल रहा।

सिपाहियों को बड़ी क्षति उठानी पड़ी।

अमरसिंह के सामने सतवरपुर की ओर जाने के सिवाय और कोई चारा न रहा। उसने अपनी सिपाही सेना को उसी ओर हटा लिया।

अँग्रेजी पलटन की दूसरी टुकड़ी जगदीशपुर में निर्विघ्न घुस गई और अपने प्रवेश की सूचना उसने तोपें दागकर दी। गोलों की आवाज सुनकर सेनापति लुगार्ड का चेहरा प्रसन्न हो गया। जगदीशपुर पर फिर अँग्रेजों का अधिकार हो गया और अमरसिंह को सतवरपुर में आश्रय ग्रहण करना पड़ा।

❀

कालपी में प्रवेश करते ही तात्या टोपे को युद्ध की आज्ञा देना पड़ी। अंग्रेजी-सेना का एक दस्ता मुकाबले में आ गया था। तात्या इसके लिए एकदम तैयार था। अंग्रेजी सेना का दस्ता देखते ही वह भिड़ गया। तात्या तो इसी अवसर की बाट जोह रहा था। उसे इस बात का पक्का विश्वास था कि उसकी गतिविधि का विवरण अंग्रेजी सैन्याधिकारियों से छुपा न होगा और वे उसे रानी की मदद के लिए बढ़ते देख रास्ते में अड़ंगा डालने का प्रयास अवश्य करेंगे ताकि वह रानी

की मदद के लिए झाँसी न पहुँच सके, पर क्या तात्या को इस तरह रोका जा सकता है !

तात्या टूट पड़ा ।

उसे रोकने के लिए आयी हुई अंग्रेजी-टुकड़ी भी पूरी शक्ति से भिड़ गई। कालपी का शान्त वातावरण युद्ध के कोलाहल से थर्रा गया। दोनों ओर की भयंकर गोलाबारी के साथ-साथ जब दोनों पक्षों की बन्दूकें भी कड़कने लगीं तो मनुष्य मक्खी, मच्छर की तरह मारे जाने लगे। देखते-देखते लाशें पट गईं। घायलों की कराह और उसकी घिसटन के साथ-साथ सर्वत्र मनुष्य का लाल रक्त बहने लगा। एक अपने अधिकारों की रक्षा के लिए लड़ रहा था, तो दूसरा अपना राज्य जमाने के लिए लड़ रहा था।

तात्या के कुशल नेतृत्व में अंग्रेजी सेना पर जो आक्रमण हुआ, वह बड़ा भयंकर था और पहिले तो गोरी पलटन को पीछे हटाना पड़ा, पर बाद में व्यूह रचना कर गोरी पलटन ने सिपाही सेना को बुरी तरह तोड़ना शुरू किया। सिपाही सेना की अग्रिम रक्षा-पंक्ति लड़खड़ा गई, पर तात्या ने फिर एक बार रण-चातुरी का परिचय दिया और दोनों बाजुओं से आगे बढ़कर उसने गोरी सेना को कालपी के ऊबड़-खाबड़ मैदान में इस तरह चपेट दिया कि उससे पनाह माँगते ही बनी।

इस प्रत्यक्ष आक्रमण के साथ-साथ तात्या की कुशल गोलंदाज टुकड़ी ने ऐन मौके पर अपना कमाल दिखलाया और गोरी पलटन भारी क्षति उठाकर भाग गई। तात्या ने कुछ दूर तक खदेड़ा और फिर अपनी विजय घोषणा की। विजयी तात्या ने अपने सैनिकों को विश्राम करने की आज्ञा दी। मुर्दे ठिकाने लगाए जाने लगे। घायलों की मरहम-पट्टी शुरू हुई। युद्ध के अस्त्र-शस्त्र पुनः सँवारे जाने लगे। शेष सिपाही अपने भोजन-पानी की व्यवस्था में लग गए। अंग्रेजों को मारकर भगा देने के कारण सभी प्रसन्न थे। साथ ही सभी इस बात को जानते थे कि आगे चलकर फिर मुकाबला करना पड़ेगा। कारण कि अंग्रेज इतनी आसानी से हार मानने वाले नहीं हैं और वे हर संभव उपाय से इस सेना को रोकने का प्रयत्न करेंगे ताकि वह रानी की मदद के लिए झाँसी न पहुँच सके।

तात्या भी पूर्ण सचेष्ट था और वह हर मूल्य पर झाँसी पहुँचने के लिए कटिबद्ध था। इस स्वर्ण अवसर को वह कभी नहीं खोना चाहता था। वह जानता था

कि मनु, नाना साहब और स्वयं वह, इन तीनों की सम्मिलित शक्ति का महत्त्व क्या है! यह तीनों शक्तियाँ एक होकर मध्य-भारत और उत्तर-भारत से अंग्रेज़ी अमलदारी उठा सकती हैं और इसका अर्थ है, सारे देश से फिरंगियों का उठ जाना। स्वर्ण अवसर बार-बार नहीं आते। काल की लगाम उनके ही हाथ रहती है, जो स्वर्ण अवसरों के आने पर उनका उपयोग करना जानते हैं।

विश्राम के उपरान्त तात्या पुनः आगे बढ़ने का निश्चय कर चुका था।

❀

दूत ने अभिवादन किया।

"राव साहब आए हैं!"

"झाँसी वाले?"

"जी हाँ!"

"ससम्मान आने दो!"

तात्या राव साहब के आने के समाचार से बड़ा प्रसन्न हुआ। राव साहब के आते ही वह स्वयं आगे बढ़ा और उनके गले लगा। बड़े आदर के साथ अपनी बराबरी से राव साहब को बैठाया। राव साहब के आने से उसे जितनी प्रसन्नता थी, उतना ही आश्चर्य था। साथ ही उसका मन संशय से भी भर गया था, पर राव साहब को प्रसन्न चित्त देख उसके मन का संशय मिट गया।

"कहिए सब कुशल है?"

"हाँ, श्रीबिठोबा की दया है।"

"आपको देखकर बड़ी प्रसन्नता हुई। आपका पत्र भी संतोष देने में सफल हुआ था वरना मैं तो सीधा भागता आ रहा था।"

राव साहब ने तात्या का हाथ अपने हाथ में लेकर कहा—"सब आपकी स्नेह दया का प्रताप है। वैसे रानी अभी भी अंग्रेजों को नाकों पानी पिला रही है!"

"शाबाश!"

"सर ह्यू रोज अभी तक किले का एक भी बाल बाँका नहीं कर सके हैं उन्होंने और फौजी मदद के लिए चारों तरफ खबर भेजी है। फिलहाल उन्होंने हमले की गति धीमी कर दी है। और फौज आ मिलने पर बड़े जोर का हमला करने की उनकी योजना है।"

"कलकत्ता खबर भेजी है ?"

"हाँ, रोज ने चारों तरफ खबर भेजी है। अभी तक वह कुछ भी नहीं कर सके हैं। झाँसी की ताकत के आगे ठहर नहीं सके लेकिन अब बड़ा खतरा है, क्योंकि जब उनकी मदद के लिए चारों तरफ से फौजी ताकत आ जायगी, तब हमारा ठहरना मुश्किल हो जायगा।"

"आप ठीक कहते हैं, राव साहब !"—तात्या ने कहा—"यही मेरा भी अनुमान है। इन फिरंगियों को मैंने खूब पहिचाना है। झाँसी के लिए वे अपनी पूरी ताकत लगा देंगे।"

"इसका अर्थ यह है कि अब हम लोगों को भी इस बड़े मुकाबले के लिए जल्दी तैयार होना चाहिए। रोज से फिलहाल खतरा नहीं है। खतरा तो उस समय है, जब उसकी मदद के लिए चारों तरफ से फौजी ताकत आ जायगी।"

"......"

"और उसी वक्त आपकी, नाना साहब की सहायता ही हमें बचा सकेगी। आप अपनी फौजी ताकत और बढ़ायें। अभी तो हम पूर्ण समर्थ हैं कि रोज से निपट सकें, पर उस समय जब वह और ताकत लेकर टूटेगा तब हमारा अकेले ठहरना मुश्किल है !"

"आप ठीक कहते हैं।"

"दूरदर्शी वही जो समय का संकेत देखकर काम करे। इसीलिए मैं आपसे भी मिलने चला आया और साथ ही मैं भी आस-पास से सिपाहियों को जुटाकर अपनी फौजी ताकत बढ़ाने के लिए निकल पड़ा हूँ, क्योंकि मुकाबला आज नहीं कल है।"

"हाँ।"

"आपको झाँसी शीघ्र पहुँचने की आवश्यकता से अधिक महत्त्व तो इस बात का है कि आपकी फौजी ताकत क्या है ? जितनी अधिक ताकत से आप झाँसी पहुँचेंगे, उतनी ही अधिक ताकत हमारे लिए उपयोगी होगी।"

"हाँ, सो तो है।"

"इसीलिए मैं रानी की आज्ञानुसार बाहर निकल पड़ा हूँ।"

"अच्छी बात है।"—तात्या ने कहा—"मैं यहीं रुकता हूँ। अपनी ताकत

ओर बढ़ाने की कोशिश करता हूँ। तब तक नाना साहब भी आए जाते हैं। हम दोनों अपनी भारी ताकत के साथ झाँसी आवेंगे और फिर रोज की मदद के लिए आधी ताकत से भी निपट लेंगे।"

"हाँ, हाँ, अवश्य !

तात्या लक्ष्मण राव की सलाह पर कालपी में रुककर नाना साहब की प्रतीक्षा के साथ साथ सैन्य-संग्रह में भी जुट गया ताकि आने वाली अंग्रजी-ताकत का मुकाबला एक बड़े पैमाने पर किया जा सके।

*

प्रातः काल ही सर ह्यू रोज ने अपनी फौज का शक्तिशाली अंश ओड़छा दरवाजे की ओर बढ़ा दिया। फसीलों पर लगी तोपें और झरोखों से कड़कती बंदूकों की मार बर्दाश्त करने पर भी गोरी-पलटन को कठिनाई से पाला पड़ा। लगातार तीन-चार घंटों की लुका छिपी से भरी लड़ाई के बाद यह टुकड़ी ओड़छा दरवाजे के पास गई।

इस टुकड़ी के नायक के पास एक झंडा था, जो सर ह्यू रोज ने दिया था। आदेश था कि अगर झंडा फहराते ही दरवाजा खुल जाय तो तोप दागकर इसकी सूचना देकर पूरे वेग के साथ सब किले में घुस जाँय। अगर दरवाजा नहीं खुलता है, तो नसैनियाँ लगाकर भीतर घुसने का प्रयास किया जाय।

सर ह्यू रोज गौर से इस टुकड़ी को देख रहे थे। साथ ही वे इस चतुराई के साथ आज अपनी सेनाओं का संचालन कर रहे थे कि अगर ओड़छा दरवाजा भाग्य से खुल जाय, तो अपनी सेना के शेष भाग को भी बड़ी तेजी से किले में भेज सकें। इसी कारण अँग्रेजी फौजें ओड़छा दरवाजे के आस-पास ही लड़ रही थीं। पूरी अंग्रेजी फौज को इस तरह का बेढंगा युद्ध करते देख किले के सभी सिपाही आश्चर्य में थे। अपनी योजनानुसार सर ह्यू रोज तीसरे पहर तक इस तरह की योजना चला रहे थे। अगर झंडा दिखलाने पर ओड़छा दरवाजा नहीं खुलता है, तो वे अपना पैंतरा बदलने की भी योजना बना चुके थे।

अंग्रेजी टुकड़ी ओड़छा दरवाजे से जा लगी। सेना नायक ने सर ह्यू रोज का दिया हुआ झंडा ऊँचे फहराया। किले के सिपाही इस झंडे का फहराना देखने

पर भी उसका अर्थ न समझ सके। उन्होंने समझा कि यह अंग्रेजी सेना का अपना कोई संकेत है, पर वास्तव में यह विश्वासघात की पराकाष्ठा की विजय थी।

ओड़छा दरवाजा खुल गया।

दरवाजा खुलते ही आँधी की गति से अंग्रेजी टुकड़ी किले में घुस गई और साथ ही तोप गरज उठी। इसी की प्रतीक्षा में थे सर ह्यू रोज। तोप की आवाज सुनते ही वे प्रसन्नता से उछल पड़े और सारी सेना को ओड़छा दरवाजे की ओर दौड़ा दिया।

पूरी ताकत से अंग्रेज किले में घुस गए।

युद्ध का नक्शा पलट गया। फसीलों के चारों ओर बिखरे सिपाही दंग रह गए। समुद्र की लहरों सी हिलोरें मारती हुई अंग्रेजी-फौज किले में आ गई। इसकी किसी को भी आशा न थी। कोई न जान सका कि बुन्देला ठाकुर दूल्हाजी ने ओड़छा दरवाजा खोलकर अंग्रेजी सेना को किले में घुस आने दिया है। दूल्हाजी ने ओड़छा दरवाजा नहीं खोला, वरन देश का वह फाटक खोल दिया जहाँ से एक बार फिर अंग्रेज इस में आ गए। दूल्हाजी ने वही काम किया, जो जहाँगीर ने अंग्रेजों को एक कोठी खोलने की आज्ञा देकर किया था अथवा वही काम किया जो जयचन्द ने पृथ्वीराज के लिए किया था या रजब अली ने हडसन के लिए किया या राजा लक्ष्मण सिंह सितारे हिन्द ने इटावा के लिए किया था।

अंग्रेजी पलटन किले में आ गई और भयंकर मार-काट शुरू हो गई। एक बार फिर हलदीघाटी का दृश्य सजीव हो उठा। एक बार फिर अशोक का कलिंग साकार हो उठा। सिपाहियों ने समझा कि ओड़छा दरवाजा टूट गया। और वे अपने रक्त की अन्तिम-बूँद तक लड़ने लगे। निकराल काल की तरह आती हुई अंग्रेजी पलटन से वीर सिपाही जूझने लगे। महाकाल की दाढ़ में क्षुद्र मानव पिच्ची होने लगे। भयंकर नर-हत्या शुरू हुई। घोर-युद्ध प्रारम्भ हो गया।

सब ओर के सिपाही दौड़े। अंग्रेजी-पलटन के किले में घुस आने की खबर बिजली की तरह फैल गई। किले में हाहाकार मच गया। मार-काट का भयंकर बाजार गर्म हो गया।

❀

स्वर कड़क उठा।

"ओड़छा दरवाजा टूट गया!"

"......"

"हम एक बूँद खून रहते भी लड़ेंगे।"—और रानी की तलवार लपकी। वायु-वेग से वह रणस्थल की ओर दौड़ी।

रानी के आते ही खून-खराबी अपनी पराकाष्ठा पर पहुँच गई। रानी की तलवार रण क्षेत्र में चमकने लगी। उसका विकराल रूप देखकर गोरी-पलटन घबड़ा गई। रानी ने दोनों हाथों से तलवार चलानी शुरू कर दी। घोड़े की लगाम मुँह में थी। घोड़े की टापें भी तलवार का काम कर रही थीं। रानी के दोनों हाथों की तलवारों से अंग्रेजी पलटन के सैनिक गाजर मूली की तरह कटकर गिर रहे थे।

रानी की जै-जैकार कर सिपाही ऐसे जूझने लगे कि अंग्रेजी-सेना का बढ़ना रुक गया। रानी अकेली ही नहीं, हजारों सिपाहियों के साथ थी। रानी की तरह और भी स्त्रियाँ रण-क्षेत्र में कूद पड़ी थीं। लग रहा था कि भगवती भवानी स्वयं सिपाहियों की सहायता के लिए धरती पर उतर आयी हैं।

सर ह्यू रोज ने जैसे ही किले में प्रवेश किया, वे इस दृश्य को देखकर दंग रह गए। मंत्र मुग्ध से वह खड़े रहे। रानी की रण-कुशलता के दृश्य देखकर उनके होश उड़ गए। उसके नेतृत्व में लड़ते हुए सिपाहियों का रौद्र रूप देखकर उन्हें पसीना छूट गया।

ओड़छा दरवाजा खुलते ही उन्होंने कल्पना की थी कि बस अब किले पर कब्जा हो गया, पर यहाँ तो दृश्य ही कुछ और था। किले के बाहर से भी भयंकर मुकाबला यहाँ था। अपने को सँभाल उन्होंने भागते-गिरते सैनिकों को रोका और व्यूह बना आगे बढ़ने का प्रयास किया, पर फिर सिंहनी की तरह रानी उनकी ओर झपटी रक्त से लथपथ, दोनों हाथों से तलवार चमकाती रानी ने इस बार सर ह्यू रोज को अपना लक्ष्य बनाया। गोरे सैनिकों को काटती गिराती वह सिंहनी की तरह झपटी, पर सर ह्यू रोज बेवकूफ न थे। न ही वीरता के प्रदर्शन में रहने वाले थे। अपने अंग रक्षकों के साथ, सैनिकों को आगे करके पीछे खिसक गए। ओड़छा दरवाजे से शहर मार्ग तक की भूमि लाशों से पट गई।

दिन भर भयंकर युद्ध होता रहा।

गोरी पलटन किले में आ गई, पर उसका आगे बढ़ना एकदम रुक गया। रानी की अपूर्व वीरता और सिपाहियों, नागरिकों तथा अन्य स्त्रियों की रण-कुशलता से गोरी-पलटन एक इंच आगे न बढ़ सकी। सिपाहियों ने उसे भयंकर रूप से घेर लिया।

किले में युद्ध की स्थिति अब ऐसे स्थान पर आ गई कि यह तय हो गया कि अब दोनों में से कोई एक पक्ष ही रहेगा। अंग्रेज या सिपाही। अब दो में से कोई एक ही रहेगा। रात्रि के अंधकार की सघनता के कारण युद्ध रुक गया। गोरी पलटन और सिपाही सेना आमने सामने पड़ी रह गई कि अब कल प्रातः इसका निर्णय होगा कि कौन बलवान है ?

❀

क्षत-विक्षत रानी राजमहल में आयी। अपनी पुत्री को मोरोपन्त ने साश्रु नयनों से देखा।

"बेटी......"

"......"

मनु ने पिता की ओर देखा और मुस्कुरा उठी—"कहिए ?"

"अब हमारे बचने की आशा नहीं !"

"पिताजी, इस नश्वर-शरीर की इतनी चिन्ता क्यों !"

"......"

"मैं जानती हूँ कि किले में अंग्रेजी फौज घुस आयी है, पर इससे क्या हम हिम्मत हार सकते हैं। हमने गोरी-पलटन को शहर की सीमा पर ही रोक रखा है। संभव है, नाना साहब या तात्या साहब कल तक आ जाँय। राव साहब उन्हें लेने गये ही हैं !"

"अगर न आए तो ?"

"हम लड़ते लड़ते मरेंगे !"

"लेकिन दामोदर...?"

रानी क्षण भर चुप रह गई। दामोदर की ममता ने जोर मारा, पर रानी ने तुरन्त अपने को सँभाल लिया।

"दामोदर, हम उसकी चिन्ता क्यों करें !

"चिन्ता का प्रश्न नहीं है बेटी ! प्रश्न है झाँसी की प्रतिष्ठा का !"

"झाँसी की प्रतिष्ठा ?"

"हाँ !"

"......"

"अंग्रेज हमेशा छल कपट से काम लेते हैं। हम लोगों को भी इसी नीति से काम लेना चाहिए। यदि ये वीर होते तो हम भी सामने से लड़ते, पर इन अंग्रेजों ने तो पीठ में छूरा भोंकना सीखा है ! तुम्हें भी इसी नीति से काम लेना चाहिए।"

"आप क्या चाहते हैं ?"

"तात्या कालपी आ गया है। राव साहब भी वहीं हैं। नाना साहब के भी वहीं पहुँचने की सम्भावना है, तो ऐसी दशा में हम भी क्यों न कालपी जा धमकें ताकि उन सबके साथ हम फिर झाँसी लौटकर इन अंग्रेजों को भगा सकें। इस वक्त जैसी स्थिति है, उसको देखते हुए हमारा कल तक टिकना असम्भव है।"

"आप भाग निकलने के पक्ष में हैं ?"

"हाँ।"

"यह कायरता होगी।"

"कायरता तब होती जब हमारा दुश्मन भी वीर होता। इसे मैं रण-चातुरी कहूँगा। तुम एक बार फिर इस पर विचार कर लो। महत्त्व शरीर का नहीं, देश का है। झाँसी की प्रतिष्ठा है। मान लो, तुम रण में आयीं। क्या तुम्हारी आत्मा को इससे शान्ति मिलेगी कि तुम्हारे मरने के बाद झाँसी पर अंग्रेजी झंडा फहराता रहे !"

"नहीं !"

"तो सोच लो !"

मोरेपन्त अपनी बात कहकर चले गए। रक्त-रंजित रानी ने अपने कक्ष में जाकर वेश बदला। नया सैनिक वेश धारण किया और वह मोरेपन्त की बातों पर सोचने लगी। झाँसी पर रात का काला अँधेरा छाया हुआ था। मानों, उसके भविष्य पर भी ऐसा ही काला परदा पड़ गया है। बीच-बीच में सिपाहियों की ललकार से रात की मौत की सी शान्ति भंग होती दीख रही थी।

रानी सारी स्थितियों पर गम्भीरता से विचार करती रही। अन्ततः उसने अपना निर्णय कर लिया।

ॐ

रात का सन्नाटा।

दोनों पक्ष आमने सामने पड़े थे। छिट-फुट हमले हो जाते थे। सहसा एक काला घोड़ा मैदान में आया। उस घोड़े पर वीर वेश में एक नारी मूर्ति थी। उसकी पीठ पर दो वर्ष का एक बालक बँधा हुआ था। उसके साथ कुछ अश्वारोही सैनिक भी थे। क्षण भर को वह सिपाहियों से कुछ कहती रही। फिर अनायास उसका घोड़ा तीर के वेग से दौड़ गया। उसके साथ साथ उसके साथी अश्वारोही भी उसी गति से दौड़े। पड़ाव वाले पड़ी गोरी पलटन में हलचल मच गई।

"पकड़ो! मारो!!"

"......"

"वो है!"

"मारो! मारो"

रात के सन्नाटे में बिगुल बजा। चुपचाप पड़े सैनिक हड़बड़ाकर दौड़े। अश्वारोहियों के एक दल को देखकर सब दौड़े। उस दल को घेरने का बहुतेरा प्रयास किया, पर उस दल के घुड़सवारों के तीखे भालों और धारदार तलवारों की मार के आगे कोई ठहर न सका। तीर के वेग से जाती हुई आगे वाली नारी आकृति को तो छू भी सकने की ताकत किसी में न थी। दरवाजे के पास साठ सत्तर सैनिकों का एक दल भहराकर उस घोड़े के सामने आ गया, पर कुछ टापों मरे, कुछ तलवारों के घाट उतरे और कुछ घबड़ाकर हट गए। उसको कोई न रोक सका।

तमाम अँग्रेजी पलटन मुँह ताकती खड़ी रही और अश्वारोहियों की वह टुकड़ी उनको भेदकर निकल गई।

ॐ

"कौन था?"

"कुछ लोग भागे हैं।"

"कुछ लोग कौन ?"

"दुश्मन के पक्ष के आदमी भागकर गये हैं।"

"साहब, आगे-आगे एक औरत थी।"

"औरत ?"

"उसकी पीठ पर एक बच्चा भी बँधा था।"

सर ह्यू रोज चीख पड़े—"तुम सब नामर्द हो। वह रानी थी। वह लक्ष्मीबाई थी। वह तुम लोगों की आँखों में धूल झोंककर भाग गई।"

"......"

"तुम लोग मुँह ताकते खड़े रह गये और वह निकल गई।"

"साहब, हम लोगों ने उसे बहुत रोका, पर उसके आगे कोई ठहरता ही नहीं..."

"चुप रहो।"

"......"

"यू मिस्टर बोकर...रानी को पकड़ो। अभी। तुरन्त जाओ।"

"जी !"

विद्युत वेग से बोकर तैयार हुआ। चुने हुए घुड़सवारों के साथ वह उसी दिशा की ओर दौड़ा, जिस दिशा में रानी गई थी। बड़ी तेजी से वह दौड़ा। घोड़ों की टापों से निर्जन प्रान्त थर्रा गया। रात के अँधेरे में घोड़े भूत की तरह भाग रहे थे। लेफ्टिनेंट बोकर अपनी पूरी ताकत के साथ भाग रहे थे। रानी का अँग्रेजी सेना के बीच से इस तरह से भाग निकलना अंग्रेजों के लिए कलंक है। एक औरत उनके मुँह पर कालिख पोतकर निकल गई और वे सब खड़े-खड़े मुँह ताकते रह गए। उसे कोई पकड़ न सका। क्या इतनी बड़ी सेना में रानी के मुकाबले कोई शूर नहीं ?

भागते-भागते बोकर ने देखा—कुछ दूरी पर कुछ अश्वारोही हैं। उसने अपनी गति और बढ़ायी। और बढ़ायी। तीन चार मील की ओर दौड़ के बाद उनके निकट वह पहुँच गया। उनके नजदीक आते ही अश्वारोही भी लड़ने को तैयार हो गए।

उस निर्जन-क्षेत्र में तलवारें टकराने लगीं। परस्पर बचाव और वार के पेंच

शुरू हो गए। मुट्ठी भर अश्वारोही बोकर की घुड़सवार टुकड़ी से भिड़ गए। अश्वारोहियों का दल दो भागों में बँट गया और दोनों का पीछा शुरू हुआ। एक टुकड़ी के अश्वारोही घायल होकर एक दिशा में भाग गए और दूसरी टुकड़ी के अश्वारोही दूसरी दिशा में भाग गए। बोकर न किसी को मौत के घाट उतार सके और न किसी को गिरफ्तार कर सके।

फिर पीछा शुरू हुआ।

लगातार इक्कीस-मील तक पीछा करने पर भी लेफ्टिनेंट बोकर रानी को पकड़ न सके और रानी अपने साथियों के साथ गायब हो गई।

हारे-थके बोकर लौट आए।

सर ह्यू रोज बेचैनी से भरे उनकी प्रतीक्षा कर रहे थे। बोकर आए। रक्त से वह लथपथ थे। सर रोज को अभिवादन कर चुप-चाप खड़े हो गए।

"क्या हुआ ?"

"......"

"सब पकड़ गए ?"

"......

"रानी पकड़ ली गई ? वह कहाँ है ?"

"भाग गई।"

"भाग गई।"

बोकर का सिर लज्जा से झुक गया। सर ह्यू रोज क्रोध से दाँत पीस उठे। दोनों हाथ मलते हुए उफ़ कर रह गए।

❀

सवेरा होते ही सर ह्यू रोज पूरे वेग से झपटे। रानी अब कहाँ थी! सिपाही लड़े और खूब लड़े। लड़ते-लड़ते सभी सिपाही निराश हो गए। द्रुत-वेग से सर ह्यू रोज राजमहल की ओर बढ़े। गोरी पल्टन भी बढ़ती आयी। राजमहल पर गंगाधर राव को मिला सर विलियम बैंटिंक का झंडा फहरा रहा था। सर ह्यू रोज ने उसे उतारकर उस पर कंपनी का झंडा फहराया।

तोपें दागी गईं और झाँसी विजय की सूचना नगर-वासियों को दी गई।

गोरी-पलटन सिपाहियों की लाशों के ढेर को कुचलती हुई आई। अब उसके मुकाबले कोई न था। गोरी-पलटन के शहर में आते ही भयंकर विजन शुरू हुआ। सेना नगर में घुसकर निरापराध नागरिकों को मौत के घाट उतारने लगी। बूढ़े बच्चे भी न छोड़े गए। स्त्रियों की दुर्गति की गई। अधिकांश युवतियों ने अपने-अपने घरों में आत्म-हत्या कर ली। जो कुछ बचीं उनके साथ गोरों ने अपनी सभ्यता का सुन्दर (!) परिचय दिया। नगर में लूट-पाट भी शुरू हो गई। राजमहल पर भी ऐसा ही धावा किया गया। राजमहल के तमाम नौकर चाकर काट डाले गए और जी-भरकर राजमहल में लूट-पाट के साथ-साथ तोड़-फोड़ भी शुरू की गई।

झाँसी गोरी-पलटन ने अपने बूटों से रौंद दी। सर्वत्र त्राहि-त्राहि मच गई। यह सब देखकर सर ह्यू रोज को प्रसन्नता ही हुई। झाँसी जीत लेने के कारण वह बहुत खुश थे। तुरन्त ही इस सफलता का समाचार अपने अधिकारियों तक भेजने में उन्होंने तनिक भी विलंब न किया।

झाँसी पर अधिकार हो ही गया। रानी भाग गई है। अगर वह लौटकर आई तो उसका मुकाबला किया जायगा। इसके लिए अंग्रेजी-पलटन तैयार है।

❀

रात को सर ह्यू रोज को जगाया गया। वे तुरन्त उठे। राजमहल से बाहर आए। देखा कुछ अश्वारोहियों के साथ गोरे सैनिक खड़े हैं। अश्वारोही रक्त से लथपथ हैं और उनके बीच में एक बूढ़ा रोबीला आदमी है जिसकी जाँघ कट गई है।

"ये कौन हैं?"

"हुजूर, मोरेपन्त हैं। दतिया नरेश ने इन सबको गिरफ्तार करके आपके पास भेजा है!"

"शाबास! दतिया नरेश से कहना कि हम उनके इस काम से बहुत खुश हैं!"

"......

"ये मोरेपन्त हैं।"

"जी हाँ!"

"इसे अभी मेरे सामने गोली मार दो।"

"......"

सेनापति की आज्ञा का पालन हुआ। बोकर के आक्रमण के समय दूसरी दिशा में भाग निकलने वाले मोरेपन्त जब घायलावस्था में दतिया की सीमा पर पहुँचे तो दतिया-नरेश ने समाचार पाते ही उन्हें बंदी बनाकर अंग्रेज सेनापति के पास भेज दिया।

गोरे ने बंदूक तानी।

"ठाँय!"

गोली बूढ़े मोरेपन्त के सीने को पार कर निकल गई। बूढ़ा मोरेपन्त एक ओर लुढ़क गया। उसके शरीर से रक्त का फुहारा उछला। लाल-लाल रंग। मानो वह अंग्रेजी राज के नक्शे के लाल रंग को विस्तार दे रहा है, पर साथ ही साथ चुनौती भी।

✽

रूहेलखंड से मदद के लिए आए हुए सिपाहियों ने प्रायः सभी प्रमुख तोपों का भार सँभाला। विगत कई दिन के युद्ध में वे अपनी वीरता का अच्छा परिचय दे चुके थे। अतएव सिपाही सेना के अधिकारियों को उन पर शीघ्र ही विश्वास हो गया। तोपों का भार उन सबको सौंप दिया गया। सिपाही नित्य की भाँति फिर लड़ने लगे। दोनों पक्ष फिर भिड़ गए। जैसे जैसे समय बीतता जाता था, वैसे-वैसे लखनऊ के युद्ध की निर्णय घड़ी पास आती जा रही थी। निरन्तर युद्ध के कारण दोनों पक्षों के योद्धाओं के हौसले पस्त पड़ रहे थे। इसके साथ-साथ तोपों और बन्दूकों की बुरी दशा थी।

अँग्रेजी पलटन फिर प्राण-प्रण से जुट गई। सिपाही भला कब हटने वाले थे। मौलवी अहमदुल्ला और बेगम हजरतमहल के लिए वे सब कट मर रहे थे। युद्ध की रोज-रोज की पैंतरेबाजी उनके लिए एक खेल सा हो गई थी।

कुछ ही देर में जैसे ही युद्ध ने भयंकर रूप धारण किया, वैसे ही सिपाहियों में खलबली मच गई। उनकी अपनी ही तोपें उन पर गोलाबारी करने लगीं। इस पर बड़ा होहल्ला मचा, पर भला गोलन्दाज किसी की सुनने वाले थे। वे सब तो रिंगनर्ड के आदमी थे, जिन्होंने अपने अधिकारी का संकेत पाते ही तोपों का रुख पलट दिया था। सिपाहियों में भगदड़ मच गई।

उनकी तोपें छिन गईं। उन तोपों से उन पर स्वयं गोले गिरने लगे। इस स्थिति के आगे उनका ठहरना मुश्किल था। सब भाग चले। गोरी पलटन ने खदेड़ना शुरू किया और देखते-देखते गोरी पलटन साँप की तरह लखनऊ की भूमि को निगलती हुई आगे बढ़ने लगी। केवल बन्दूकों के भरोसे सिपाहियों का टिक सकना मुश्किल था। गिरते-पड़ते, मरते, घायल होते वे सब भाग रहे थे।

लखनऊ में युद्ध का दृश्य ही बदल गया। भागने के अतिरिक्त सिपाहियों के पास और दूसरा रास्ता न था।

*

"क्या कहा ! सब भाग रहे हैं !!"

"जी हाँ !"

"क्यों ?"

"हमारी तोपों पर दुश्मन का न जाने कैसे कब्जा हो गया है। बहुतों का कहना है कि हमारी गोलंदाज टुकड़ी ही गोरी पलटन से तोपों के साथ मिल गई है।"

"या अल्लाह ! तब तो एकदम तबाही है ?"

मौलवी अहमदुल्ला घबरा गए। उनकी समझ में न आया। अब क्या करना चाहिए। इतना समझ गए कि अंग्रेजों ने अबकी बेर कोई गहरी चाल उनके साथ खेली है। कुछ देर वह बेचैनी से इधर-उधर टहलते रहे। फिर सीधे बेगम हजरतमहल के पास गए।

"आपने सब सुन लिया होगा !"

"हाँ, अब तो हम कहीं के न रहे !"

"ऐसी बात नहीं हो सकती है, बेगम साहिबा ! जब तक यह मौलवी जिन्दा है, तब तक अंग्रेजों से चैन न लेने देगा !"

"लेकिन लखनऊ तो गया ?"

"जाने दीजिए। हम आगे हटकर फिर लड़ेंगे। हमारा अंग्रेजों से हमेशा मुकाबला होता रहेगा। क्या इन लोगों ने हमको इतना निकम्मा समझ लिया है। धोखा-धड़ी से ये कब तक हम पर हावी रह सकते हैं।"

"इस वक्त क्या करना होगा !"

"हमें यहाँ से हट जाना होगा ।"—मौलवी ने कहा—"मैं शीघ्र इसके लिए प्रबंध करता हूँ । आप निश्चिन्त रहें । मेरे जीते-जी आप पर आँच न आवेगी !

मौलवी अहमदुल्ला तेजी से चला गया । लखनऊ पर अंग्रेजी सेना का अधिकार द्रुत-गति से बढ़ रहा था ।

❀

गोरी-पलटन सिपाहियों को खदेड़ती हुई चली आयी । शाम हो जाने पर भी यह भाग-दौड़ जारी रही । सिपाही लखनऊ छोड़कर भाग रहे थे । मौलवी अहमदुल्ला का आदेश उनके पास आ चुका था कि लखनऊ खाली कर देना है । अंग्रेजों से मुकाबला करने का अब कोई साधन शीघ्र उपलब्ध न हो सकता था । सिपाही तेजी से लखनऊ खाली कर भाग रहे थे । सर्वत्र भागा-भागी मची हुई थी । मौलवी अहमदुल्ला और बेगम हजरतमहल सवेरे ही जा चुके थे । उनका कोई पता न था। देखते-देखते दूसरे दिन लखनऊ सिपाहियों से एकदम खाली हो गया । अंग्रेजों को एक राजा मानसिंह का भय था, पर वह बहुत पहिले लखनऊ छोड़कर जा चुके थे । अतएव बिना किसी विशेष और मुकाबले के ही लखनऊ पर, पूरे लखनऊ पर गोरी-पलटन का अधिकार हो गया ।

लखनऊ लुटने लगा ।

गोरी सेना ने कैसर-बाग लूटा । तमाम कीमती चीजें हथिया लीं । सुनहरे कामदार दुशाले, चाँदी सोने के बर्तन, तरह-तरह के हाथी दाँत के सामान, सोने चाँदी की अन्य वस्तुएँ लूट ली गईं । नवाब का महल तोड़ा-फोड़ा गया । इमामबाड़ा और हजरतगंज में भयानक विजन शुरू हुआ । लखनऊ में गोरी-पलटन क्या आई लुटेरों का दल आ गया ! एक से एक कीमती चीजें लूटी जाने लगीं । आग लगाई जाने लगी ।

मनुष्यता लखनऊ से कूच कर गई ।

बेगम हजरतमहल के निवास-स्थान पर धावा किया गया । तमाम महल में लूट-पाट और तोड़-फोड़ के बाद महल की दासियों को नंगा कर उन पर सामूहिक बलात्कार किया गया । बच्चों और बूढ़ों को काट डाला गया । मदान्ध गोरे सैनिक

हिन्दोस्तानी सैनिकों को ऐसे दुष्कर्मों के लिए उत्तेजित करने लगी। स्वयं प्रधान सेनापति ने मौखिक आदेश दिया कि लखनऊ इस तरह तोड़ दो ताकि निकट भविष्य में वह कभी सिर न उठा सके।

उन्मत्त गोरखे और सिक्ख सिपाहियों ने सारे नगर में हाहाकार मचा दिया। घायल सिपाहियों पर बारूद छिड़ककर उन्हें जीते जी जला दिया गया। जिंदा मनुष्यों के जलने की गंध से लखनऊ के वातावरण में दम घुटने लगा। हजरतगंज में चालीस-पचास घायल सिपाही पड़े कराह रहे थे। सूखी घास डालकर आग लगा दी गई।

लखनऊ के हर गली कूचे में पाशविकता का नंगा नाच हुआ और अंग्रेज अधिकारी जीत की खुशी में शराब पी रहे थे। लखनऊ के नागरिकों और बचे हुए घायल सिपाहियों को अपने प्राण देकर आक्रमण का मूल्य चुकाना पड़ा लूट-पाट के साथ-साथ सामूहिक हत्याकांड भी चल रहा था। इधर-उधर छिपे सिपाही कैद किए जाते और उन्हें गोली मार दी जाती। निहत्थे, निरापराध नागरिकों को भी इसी प्रकार गोली का निशाना बनाया गया।

लखनऊ पर कंपनी का अंग्रेजी झंडा फहरा रहा था, पर इस झंडे के नीचे शैतान का राज हो गया था। नागरिकों में त्राहि-त्राहि मच गई। अंग्रेजी पलटन के सैनिकों के इस आतंक से लोग घर छोड़-छोड़कर भागने लगे। लखनऊ की कमर बुरी तरह तोड़ दी गई।

❀

सतवरपुर में थमकर अमरसिंह गोरी पलटन की प्रतीक्षा करने लगे। साथ ही बड़े पैमाने पर वे युद्ध की तैयारियाँ करने लगे। बाबू साहब की मृत्यु के कारण जोश ठंडा पड़ गया था, पर अमरसिंह की हुँकार ने फिर लोगों में नया जीवन फूँका और हिम्मत हारकर बैठे हुए नौजवानों ने फिर युद्ध की तैयारियाँ शुरू कर दीं। सेनापति लुगार्ड जगदीशपुर पर अपना अधिकार कर अपनी मोर्चेबंदी कर सासाराम से सेनापति करफिल्ड के आने की प्रतीक्षा कर रहे थे।

अमरसिंह इच्छा रहते हुए भी जगदीशपुर पर आक्रमण कर सकने में असमर्थ थे। अपनी शक्ति वह तेजी से बढ़ा रहे थे ताकि सेनापति करफिल्ड के आने से पहिले वह लुगार्ड को भगा सकें, पर ऐसे आसार नजर नहीं आ रहे थे।

आस-पास के क्षेत्रों से आने वाली अफवाहों के कारण जन साधारण में अंग्रेजों की धाक बैठ रही थी। लखनऊ पतन, नाना साहब, तात्या टोपे का पलायन और झाँसी की रानी की पराजय की समाचारों से लोगों का उत्साह ठंडा पड़ रहा था और यह आम धारणा बनती जा रही थी कि गोरों से लड़ना टेढ़ी खीर है और उन्हें इस देश से भगाना एक स्वप्न है। अनेक महीनों से चलने वाली बगावत ने जिस तेजी के साथ अपने कदम उठाए थे उसी गति के साथ वह गिरती जा रही थी। एक के बाद एक वीर काम आ रहे थे। स्वतंत्रता की घोषणा करने वाले क्षेत्र एक के बाद एक दबाए जा रहे थे। शतरंज के मोहरों की तरह बढ़ती हुई गोरी पलटन सिपाहियों को हर कदम पर मात दे रही थी। सतबरपुर में खामोश बैठे अमरसिंह के मन से भी विजय की आशा जा चुकी थी, पर जब वे आजादी का बीड़ा उठा चुके थे, इसलिए उसे रखना वे अपनी राजपूती शासन के खिलाफ समझते थे। अंतिम दम तक लड़ने का निश्चय कर लिया था।

सतबरपुर में अमरसिंह और जगदीशपुर में सेनापति लुगार्ड आमने-सामने पड़े थे और दाँव की प्रतीक्षा में थे कि कब किस पर चढ़ दौड़ें ! दोनों एक दूसरे पर आक्रमण करने के उचित अवसर की प्रतिक्षा में थे।

※

मनु को आया देख तात्या के आश्चर्य का ठिकाना न रहा। वह जैसे आसमान से गिरा। तात्या के तमाम सैनिकों में सनसनी फैल गई। तात्या बड़ी देर तक ठगा सा खड़ा एकटक मनु की ओर देखता रहा। रक्त से भीगी मनु उसके सामने वीर वेश में खड़ी थी।

"आप क्या देख रहे हैं ?"—मनु ने मुस्कुराकर पूछा।

"तुम मनु हो !"

"हाँ, इसमें क्या आपको कोई संदेह है।'

"नहीं, लेकिन..."

"लेकिन क्या तात्या साहब !"—मनु ने गंभीर स्वर में कहा—"झाँसी हमारे हाथ से चली गई।"

तात्या आँखें फाड़कर रह गया। मनु का यह कथन उसे चौंका देने वाला था।

झाँसी मनु के हाथ से जाती रही। यह कैसे आश्चर्य की बात है! क्या भाग्य यही चाहता है कि अभी यह देश गुलाम ही रहे। कैसी अप्रत्याशित घटनाएँ हो रही हैं। कैसी असंभव बातें सुनने को मिल रही हैं। यदि यही क्रम रहा तो कुछ दिन बाद यह भी सुनने को मिलेगा कि सूर्य पश्चिम से उदय होता है।

"झाँसी यकायक हमारे हाथ से निकल गई!"—लक्ष्मीबाई ने कहा—"जाने कैसे ओड़छा दरवाजे से तमाम गोरी पलटन किले में आ गई और सिवाय आपके पास आने के और कोई रास्ता न था। हम लोग झाँसी में आपकी बाट जोह ही रहे थे।"

"मैं आ रहा था।"—तात्या ने कहा—"राव साहब ने आकर कहा कि अभी झाँसी की हालत दृढ़ है, इसलिए मैंने सोचा कुछ और फौजी ताकत बढ़ा लूँ। मैंने बारूद, गोले और कारतूस बनाने का कारखाना खोल दिया है। ताकि हमें युद्ध सामग्री की कमी न पड़े।"

"राव साहब ने आपसे ठीक ही कहा। यह तो दैव की बात है कि अचानक दरवाजा टूट गया या ईश्वर जाने क्या हो गया, जो गोरी पलटन किले में घुस आयी वरन् किले का बाल भी बाँका न हुआ था!"

"अवश्य ही, यह किसी गद्दार का काम है।"

"हो सकता है!"

"मैं बाँदा के नवाब और नाना साहब के आने की प्रतीक्षा में यहाँ रुका रहा। सचमुच यहाँ रुककर बड़ी भूल की। मुझे समय से झाँसी पहुँच जाना चाहिए था।"

"अफसोस करने से कुछ नहीं होगा। हम लोगों को शीघ्र अब चल पड़ना चाहिए। जो हो गया सो हो गया।"

"अच्छा!"

रानी के ठहरने की समुचित व्यवस्था कर दी गई। कालपी भर में यह समाचार फैल गया कि गोरों का झाँसी पर कब्जा हो गया और लक्ष्मीबाई हारकर यहाँ भाग आयी हैं। इस समाचार से सनसनी फैली। एकत्रित सिपाहियों में बड़ी उत्तेजना फैल गई। सब उत्सुकतापूर्वक आदेश की बाट जोहने लगे। राव साहब शाम को लौटकर आए। आते ही उन्होंने सब समाचार सुने। मन ही मन वह बहुत ही प्रसन्न हुए पर ऊपरी दिखावे के लिए उन्होंने बड़ा ही शोक प्रकट किया।

यहाँ तक कि आँखों में आँसू भर लाए। उन्होंने ऐसे भाव प्रकट किए जिससे सबको यह भरोसा हो जाय कि झाँसी जाने का दुःख उन्हें ही है।

तात्या टोपे, राव साहब और रानी आपस में मिले और उन लोगों में आगे की योजना पर विचार विमर्श चला।

रानी ने कहा—"आप कल सवेरे ही मेरे साथ झाँसी के लिए कूच करिए। अभी अंग्रेजों ने हाल ही में झाँसी पर कब्जा किया है। उनके संभल सकने के पहिले ही हमें हमला बोलकर झाँसी छीन लेनी चाहिए।"

"तुम ठीक कहती हो। इस समय गोरे गरम लोहे की तरह हैं। एक ही चोट उन्हें मोड़ा जा सकता है।"

राव साहब ने दखल दिया—"अंग्रेजों का साथ करते मेरी जिंदगी बीती है। मैं नहीं समझता कि वे इतने बेवकूफ होंगे। मेरा कहना है कि कहीं हम लोग जल्दीबाजी में अपना अहित न कर डालें।"

"क्या आप चाहते हैं, हम झाँसी पर हमला न करें!"—मनु का स्वर तीखा था।

"मैं कब यह कहता हूँ। झाँसी पर हमला करने वालों में मैं सबसे आगे रहूँगा, पर मैं चाहता हूँ कि हम लोगों का यह आक्रमण निष्फल न जाय। जीत निश्चित रहे। यकायक बिना जाने-बूझे दुश्मन पर हमला करने का अर्थ है, अपने पैरों पर कुल्हाड़ी मारना।"

"......"

"पता नहीं, इस समय सर ह्यू रोज की क्या स्थिति है!"—राव साहब ने अपनी बात जारी रखी—"पता नहीं, इस समय उनकी मदद के लिए कौन कौन आ गए हैं! यह सब जाने बूझे बिना ही क्या हमारा हमला कर देना ठीक होगा? यदि ऐसा हो गया तो हम सब व्यर्थ में मारे जाँयगे। अंग्रेजी अमलदारी के लिए जो हम खून पसीना बहा रहे हैं, वह व्यर्थ जायगा!"

राव साहब के तर्कों के आगे तात्या टोपे और मनु को झुक जाना पड़ा।

अंत में यह तय हुआ कि झाँसी पर बहुत ही समझ-बूझकर हमला किया जाय और साथ ही साथ बाँदा के नवाब तथा नाना साहब के आने तक रुका जाय। रानी इस योजना के विपरीत थी। वह शीघ्र ही गोरी पलटन पर हमला कर अपनी

खोयी झाँसी वापस ले लेना चाहती थी, पर राव साहब के तर्कों के आगे उसकी यह आकांक्षा मन ही में रह गई। मन ही मन उसे ऐसा महसूस हुआ कि लक्ष्मण राव को उसने अपना दीवान बनाकर उचित नहीं किया।

❀

मौलवी अहमदुल्ला ने बड़ी चतुरायी से अपनी सिपाही सेना को लखनऊ से हटाया और लखनऊ से इक्कीस मील दूर बारी आ गए। बारी में कुछ देर रुककर मौलवी ने शाहजहाँपुर की ओर प्रस्थान किया। शाहजहाँपुर पर अपना अधिकार कर वह फिर गोरी सेना के विरुद्ध अपना अभियान जारी रखने के पक्ष में थे। मौलवी अहमदुल्ला ने एक और चाल खेली। लखनऊ के युद्ध के दरम्यान उसने बेगम हजरतमहल को भी युद्ध कला में निपुण कर दिया था। अतएव बेगम हजरतमहल को उसने अपने साथ नहीं लिया वरन् उन्हें अपने से अलग रक्खा।

एक साथ सिपाही सेना को हटाना उचित न समझ कुछ अपने साथ और कुछ बेगम हजरतमहल के नेतृत्व में सिपाहियों को छोड़ वह लखनऊ से निकल गए। पराजय के समय टुकड़ियों में भाग निकलना अच्छा होता है और इस प्रकार शत्रु संपूर्ण सेना को नष्ट नहीं कर सकता है। मौलवी अहमदुल्ला बारी की ओर चले गए और बेगम हजरतमहल मुहम्मदी की ओर बढ़ी। दोनों की योजना एक हो गई थी कि शाहजहाँपुर पर अपना अधिकार करना है और वहीं मिलना है।

❀

लखनऊ पर अपना अधिकार करने के बाद प्रधान सेनापति केम्पबैल चुप न बैठे। न तो मौलवी मारा गया था और न ही बेगम पकड़ी गई थी। लखनऊ की हालत देखते ही वे भाँप गए कि अधिकांश सिपाही लखनऊ छोड़कर भाग गए हैं और इन सिपाहियों का नेतृत्व अवश्य ही इन दोनों बागियों के हाथ में होगा। प्रधान सेनापति ने तत्काल मौलवी के सिर के लिए पचास हजार रुपए का इनाम घोषित किया। बेगम हजरतमहल के लिए भी ऐसी ही घोषणा की गई।

एक भी बागी का खुले रहना प्रधान सेनापति पसंद न करते थे। अतएव शीघ्रातिशीघ्र लखनऊ का प्रबंध कर वह स्वयं इन दोनों बागियों की तलाश में

चले। जब तक इन दोनों का अंत नहीं होगा, उन्हें चैन न पड़ेगी। मौलवी और बेगम आगे चलकर खतरा पैदा कर सकते हैं।

प्रधान सेनापति बारी गए। वहाँ से मुहम्मदी। मौलवी और बेगम के पीछे वे तेजी से दौड़े। मुहम्मदी पहुँचकर उन्हें पता लगा कि मौलवी शाहजहाँपुर की ओर बढ़ रहा है और हजरतमहल बेगम भी उसी ओर जा रही है। दोनों को ही शाहजहाँपुर की ओर बढ़ते देखते वे तेजी से दौड़े। समझ गए कि ये लोग शाहजहाँपुर पर अपना अधिकार कर फिर अंग्रेजी अमलदारी के खिलाफ मोर्चेबंदी करना चाहते हैं। प्रधान सेनापति शाहजहाँपुर की ओर बढ़े।

रास्ते में उन्हें पता चला कि दिल्ली से भागा शाहजादा फिरोज शाह भी शाहजहाँपुर की ओर बढ़ रहा है। शाहजादा फिरोज शाह दिल्ली पतन के समय चुपके से भाग निकला था। अब उसका इस तरह पता पाकर प्रधान सेनापति और चिन्ता में पड़ गए।

शाहजादा फिरोजशाह इधर-उधर भागता फिर रहा था। उसके पास कोई प्रबल शक्ति न थी। दूसरे दिल्ली की पराजय से सभी घबरा गए थे और बागियों का साथ देने में हिचकते थे। अतएव फिरोजशाह को पूछने वाला कोई न था। अपने मुट्ठी भर साथियों के साथ शाहजादा फिरोजशाह इधर-उधर भाग रहा था। शाहजहाँपुर के निकट आने पर उसे मालूम हुआ कि कुछ ही दूरी पर बेगम हजरतमहल की पलटन पड़ी है। पहिले तो उसे बड़ा आश्चर्य हुआ, पर बाद में इस समाचार की सत्यता के कारण उसे बड़ी खुशी हुई कि उसका साथ तो मिला।

उल्लास से भर शाहजादा फिरोजशाह बेगम हजरतमहल की सेना से आ मिला। दोनों शाहजहाँपुर की ओर बढ़े। शाहजादा फिरोजशाह को साथ लेकर बेगम हजरतमहल ने शाहजहाँपुर पर चढ़ाई कर दी और ठीक समय मौलवी अहमदुल्ला भी अपनी टुकड़ी के साथ आ मिले। शाहजहाँपुर में गोरी अमलदारी की नाम मात्र की पलटन थी। लखनऊ के घेरे के कारण शाहजहाँपुर की रक्षा का प्रबंध ढीला ढाला पड़ा था। फलतः जरा सी ही देर में शाहजहाँपुर पर कब्जा हो गया।

मौलवी, बेगम और शाहजादा शाहजहाँपुर पर काबिज होकर तेजी के साथ अपनी ताकत बढ़ाने लगे ताकि प्रधान सेनापति से निबटा जा सके और एक बार फिर लखनऊ पर बेगम की हुकूमत चल सके। मौलवी बड़े उत्साह के साथ भावी युद्ध की रचना में लग गया।

❀

लखनऊ और झाँसी के समाचार पाकर लार्ड कैनिंग को बड़ी प्रसन्नता हुई। खिन्नती थी तो केवल इसीलिए कि प्रमुख बागियों को पकड़ा नहीं जा सका है। इन लोगों का अन्त होने पर ही अँग्रेजी अमलदारी को शान्ति मिल सकती है। झाँसी और लखनऊ पर अंग्रेजी अमलदारी हो गई है पर ये सबके सब फरार हैं। नाना, तात्या, लक्ष्मीबाई, मौलवी, बेगम हजरतमहल ये सबके सब अभी भी चुप नहीं हुए हैं। कुँवरसिंह के मरने के बाद उसका भाई उठ खड़ा हुआ है। अंग्रेजी अमलदारी के खिलाफ इस देश में उठी बगावत चुप होने का नाम नहीं ले रही है। पूरा साल गुजरने जा रहा है और अभी भी आग बुझी नहीं है। पश्चिमोत्तर सीमा प्रान्त, आसाम, दक्षिण भारत ठंडे पड़ गए हैं, पर वहाँ जैसे अंग्रेजी अमलदारी है, वैसे नहीं भी है। शासन, कानून जैसे कहीं है ही नहीं। केवल अंग्रेजी अमलदारी के आतंक के कारण यहाँ के लोग चुप हैं। अगर दिल्ली, लखनऊ, झाँसी पर गोरी पलटन का कब्जा न हुआ होता तो शायद इन क्षेत्रों में शान्ति न रहती।

इन सब बागियों को मिटा देना जरूरी है। जब तक ये जिंदा रहेंगे, इनकी खुराफातें जारी रहेंगी। इसी दृष्टिकोण से लार्ड कैनिंग आवश्यक हिदायतें भेज रहे थे। दिल्ली में कैद बादशाह को कैदी बनाए रखने का आदेश दे चुके थे। पूर्ण शान्ति के उपरान्त वे बादशाह पर मुकदमा चलाने के पक्ष में थे और इस संबंध में आवश्यक आज्ञा प्राप्ति के लिए वे विलायत पत्र भेज चुके थे। बादशाह पर इस प्रकार मुकदमा चलाकर वे इस देश के रहने वालों को हमेशा के लिए डरा देने वाले थे कि अंग्रेजी अमलदारी के खिलाफ यदि कोई बादशाह भी सिर उठाता है, तो उसका क्या परिणाम होता है!

अपनी फौजों की सफलता के समाचार से लार्ड कैनिंग प्रसन्न थे तो इन

बागियों के छूटे रहने से उनका मन चिंतित था और इन सबकी समाप्ति के उपाय निकालने में ही वे लगे हुए थे।

❀

झाँसी रौंद दी गई। उस पर सर ह्यू रोज का अधिकार हो गया। अपनी व्यवस्था ठीक करने के उपरान्त सर ह्यू रोज ने रानी की टोह में अपने दूत भेजे। उन्हें पता लगा कि रानी कालपी में तात्या के पास पहुँच गई है। इस समाचार को पाकर सर ह्यू रोज चिंता में पड़ गए। आसमान से गिरे तो खजूर में आकर अटक गए। झाँसी जीत ली तो अब यह नयी मुसीबत आ गई। कालपी से अनेक समाचार आए और सभी चिंताजनक थे।

रानी तात्या के साथ है। नाना साहब आने वाले हैं। बाँदा का नवाब भी इन लोगों की मदद के लिए आ रहा है। इतना ही नहीं तात्या टोपे ने गोले, बारूद और कारतूस बनाने का एक कारखाना भी खोल रखा है। सर ह्यू रोज को सबसे अधिक परेशानी तात्या के कारण थी। तात्या को ही वह अपना जबर्दस्त दुश्मन समझ रहे थे। बात ही ऐसी थी। बार-बार मात खाने के बाद भी तात्या तमाम अंग्रेजी अमलदारी के लिए सबसे बड़ा सिर दर्द था।

सर ह्यू रोज अपनी जातीय परम्परानुसार चुप बैठने वाले जीव न थे। उन्होंने झाँसी से एक टुकड़ी कालपी की ओर रवाना कर दी। इस टुकड़ी को भेजकर वह तात्या की ताकत का अनुमान भी लगा लेना चाहते थे और साथ ही इस टुकड़ी के बाद ही वह भी आक्रमण कर देने वाले थे। झाँसी से गोरी पलटन की एक टुकड़ी कालपी की ओर बढ़ी।

❀

अंग्रेजी दल को आया देख पौवाइन के राजा जगन्नाथसिंह घबरा गए। उन्होंने समझा उन पर भी कोई मुसीबत आ गई। निःसहाय विद्रोह फैला था, उस वक्त उन्होंने भी अपना सिर उठाने की कोशिश की थी, पर गोरी पलटन की गति को देखकर उन्होंने अपना इरादा बदल दिया और सबसे भली चुप समझ एकदम खामोश बैठे रहे। उन्होंने न इधर साथ दिया, और न उधर। न बागियों के साथ चले और न गोरी पलटन के साथ अपनी सेना भेजी।

अंग्रेजी दूत को आया देख घबराए।

दूत ने महल में आकर उनसे भेंट की।

"कहिए ?"

"प्रधान सेनापति केम्पवैल ने आपके नाम एक खत भेजा है।"

राजा जगन्नाथसिंह ने घबराकर खत खोला। पढ़ा। पढ़कर उनके मन को संतोष हुआ और उन्होंने उसका अनुकूल उत्तर भेजकर संतोष की साँस ली।

प्रधान सेनापति केम्पवैल ने राजा जगन्नाथसिंह को खत में लिखा था कि इस बगावत के समय राजा जगन्नाथसिंह ने अंग्रेजी अमलदारी के साथ जिस शराफ़त का परिचय दिया है, वह प्रशंसनीय है। पर अब अंग्रेजी सरकार को उनकी एक सहायता की आवश्यकता है। मौलवी अहमदुल्ला लखनऊ से हारकर भाग चुका है और इधर-उधर खुराफात कर रहा है। उसके सिर के लिए पचास हजार रुपये का इनाम है। मौलवी का सिर अब वही ला सकते हैं। उन्हें चाहिए कि मौलवी को धोखा देकर अपने यहाँ बुलाएँ कि अब वे भी इस बगावत में उसका साथ देंगे। इस प्रकार का चकमा देने पर मौलवी अवश्य उसके पास आवेगा। बस! राजा जगन्नाथसिंह उसका सिर उतार लें और प्रधान सेनापति के पास ले आवें। इस कार्य का पुरस्कार राजा जगन्नाथसिंह को मिलेगा ही। साथ ही उनकी जागीरदारी भी पुख्ता कर दी जायगी। राजा जगन्नाथसिंह हिन्दू हैं और नाते एक विधर्मी का, खास तौर से मुसलमान का सिर उतार लेने में उन्हें कोई आपत्ति न होना चाहिए।

राजा जगन्नाथसिंह ने प्रधान सेनापति की बात मंजूर कर ली और दूसरे ही दिन अपना एक विशेष दूत शाहजहाँपुर की ओर रवाना कर दिया।

❀

किसी पर निर्भर रहना अंग्रेजों को आता नहीं। प्रधान सेनापति केम्पवैल राजा जगन्नाथसिंह पर ही निर्भर न रहे। इसके साथ-साथ उन्होंने शाहजहाँपुर की ओर भी अपने कदम बढ़ाए। अगर राजा जगन्नाथसिंह अपने कार्य में सफल होते हैं, तो ठीक है वरना वैसे भी बागियों को चूर करेंगे ही।

प्रधान सेनापति शाहजहाँपुर की सीमा पर आए।

शाहजहाँपुर की स्थिति देख-भालकर वे आक्रमण के लिए आगे बढ़े। मौलवी

अहमदुल्ला अपने साथियों के साथ असावधान न था। वह तो इसी अवसर की प्रतीक्षा में था। केम्पबैल को बढ़ते देख वह भी युद्ध के लिए आगे बढ़ा। इस युद्ध में बेगम हजरतमहल, शाहजादा फिरोजशाह भी थे। सिपाही सेना आगे बढ़ी और फिर युद्ध शुरू हो गया।

पानहाट के मैदान में दोनों पक्ष भिड़ गए।

मौलवी की ललकार पर सिपाही अपने प्राण हथेलियों पर लेकर कूद पड़े। दोनों ओर से भयंकर मार शुरू हुई। बेगम हजरतमहल और शाहजादा भी अपनी-अपनी टुकड़ियों को बढ़ावा दे रहे थे। सेनापति इस युद्ध को चतुराई के साथ लड़ रहे थे। अपनी सेना को उन्होंने दो भागों में बाँट रक्खा था। एक भाग आगे बढ़ाकर वह लड़ रहे थे और दूसरा भाग वक्त जरूरत के रख छोड़ा था। सिपाहियों के जोश से वे परिचित थे।

जैसा केम्पबैल ने सोचा, वही हुआ। सिपाही आगे बढ़े और केम्पबैल के व्यूह में आ गए। केम्पबैल के सैनिकों ने अपना जौहर दिखलाया और पानहाट के इस युद्ध का निर्णय होते देर न लगी। सिपाहियों के पैर उखड़ गए और गोरी पलटन ने उन्हें खदेड़ा। सेनापति उत्साह के साथ आगे पर अनायास भागते सिपाहियों का इरादा पलट गया और वे सब पलटकर टूट पड़े। इस स्थिति से गोरी पलटन घबड़ा गई। सेनापति इस विचित्र आक्रमण के आगे सँभल न सके और इसका परिणाम यह हुआ कि उन्हें पीछे हटना पड़ा।

पीछे लौटने पर केम्पबैल को पता चला कि उनकी इस पराजय का कारण नई सिपाही सेना का आगमन है। अतएव उन्होंने अपने आक्रमण को गति को धीमा कर लखनऊ को सहायक सेना भेजने का आदेश दिया।

*

मानहाट के युद्ध में अपनी सेना को भागते देख मौलवी, बेगम और शाहजादा का दिल बैठ गया। विजय की रही सही आशा भी जाती रही। सिपाहियों का इसमें क्या दोष! अंग्रेजों की प्रबल मार के आगे किसी का भी ठहरना मुश्किल था। लखनऊ गया और अब शाहजहाँपुर से भी गए। आस-पास के किसी भी क्षेत्र से सहायता की कोई आशा नहीं।

इस अवसर पर बेगम हजरतमहल ने ही अपनी चतुराई का परिचय दिया। सेनापति कैम्पबेल की सेना देखकर उसने अनुमान लगा लिया था कि शायद इस युद्ध में विजय न हो। अतएव संकट काल के लिए उसने अपनी टुकड़ी का आधा भाग रोक रखा था। जब सचमुच सिपाहियों के पैर उखड़ने लगे, तो उसने इस सुरक्षित सेना को दौड़ा दिया इस प्रकार भागते सिपाहियों को बल मिला और वे फिर लड़ने लगे। यहाँ तक कि गोरी पलटन को पीछे भी हटा दिया।

आशा की अंतिम किरण। डूब जाने पर भी शाहजादा फीरोजशाह निरुत्साहित न हुआ था। उसने निर्णय कर लिया था कि अगर शाहजहाँपुर से पैर उखड़ जाते हैं, तो वह आगे बढ़ेगा। और कहीं टकराता रहेगा। जब तक उसके शरीर में प्राण हैं, वह अपने भाईयों की हत्या का प्रतिशोध लेने का प्रयास करता रहेगा। निरन्तर निराशा और भाग दौड़ के कारण शाहजादा फीरोजशाह दुर्बल पड़ गया था, पर मन का उल्लास, उत्साह न गया था।

"कल अब जैसा होगा, देखा जायगा!"—शाहजादा ने कहा—"मैं आसानी से इन फिरंगियों के हाथ आने वाला नहीं!"

"मुझे लगता है कि लखनऊ से और सेना आनेवाली है!"—मौलवी बोले—"तभी तो कैम्पबेल चुपचाप हट गया है।"

"हाँ, लखनऊ खबर गई है।"

"हमारे पास और ज्यादा ताकत नहीं। इस तरफ हिन्दुओं का ही जोर है और उनकी मदद लेना हम पसन्द न करेंगे।"

"नाना साहब, तात्या टोपे दूर चले गये हैं। हम उनका साथ देते तो कुछ कामयाबी होती, पर वे लोग नयाओं नहीं पेशवाई चलाना चाहते हैं।"

"सुना है, कुंवरसिंह भी मर गए!"

"अच्छा हुआ!"—मौलवी ने होंठ बिदकाकर कहा—"उसने हमारे कौम की औरत को अपनी रखैल बना रखा था। खुदा की मार उस पर पड़ी!"

मौलवी का रंग-ढंग देख शाहजादा फीरोजशाह चुप-चाप उठकर चला गया। बेगम बैठी रहीं। नाना प्रकार की दुश्चिन्ताओं से उसका मन भरा था। जीवन का संकल्प ही जब चूर-चूर हो जाता है, तो आदमी का मस्तिष्क सुख नहीं पाता। मौलवी ओंठ काटते हुए कुछ देर तक सोच विचार में पड़े रहे।

"नहीं, कहीं से कोई उम्मीद नहीं है। हमें अपने बल लड़ना होगा!"

"......"

"जैसा होगा, कल देखा जायगा! अगर ज्यादा हालत नाजुक होगी तो हम मुहम्मदी लौट जाँयगे।"

*

मौलवी को इतनी रात गए उठाना आसान काम न था। फिर भी नौकर ने समय की आवश्यकता समझ दरवाज़ा खटखटाया।

"कौन?"

"बाहर से आया एक आदमी आपसे मिलने की जिद्द पकड़े हुए है।"

"......"

मौलवी नींद तोड़ बाहर आए। मन ही मन झल्लाहट थी, पर यह समझकर कि शायद कोई गंभीर बात है, वह चुप थे।

"कौन है?"

एक आदमी आगे बढ़ा। मौलवी को अभिवादन कर एक पत्र उनके हाथ रखकर उसने कहा—"राजा साहब उम्मीद करते हैं कि आप वहाँ आइयेगा।"

"......"

वह आदमी चला गया। मौलवी अपने कमरे में आए। चिराग रोशन कर उन्होंने उस खत को पढ़ा। खत राजा जगन्नाथसिंह का था, जिसमें लिखा था कि इस संकट के समय वह मौलवी की सहायता करना चाहते हैं और उनकी पूरी ताकत मौलवी के हाथ है। इस समय आवश्यक विचार विमर्श करने के लिए वे शीघ्रातिशीघ्र पोवाइन आवें और राजा साहब से मिलकर इन अंग्रेजों को भगाने में कामयाब हों।

पत्र पढ़कर मौलवी ने उस पत्र को चूम लिया। नेक आदमियों की मदद संकट के समय खुदा जरूर करता है। मौलवी का मन एक नयी आशा से भर गया। इधर अंग्रेजों की मदद के लिए लखनऊ से सेना आ रही है, तो वे भी अपने लिए राजा जगन्नाथसिंह की सेना ला सकते हैं।

*

अमरसिंह सतबरपुर में जो कुछ भी ताकत इकट्ठा कर सके, उसी के बल पर आगे चले। सेनापति लुगार्ड की शक्ति अधिक होने पर भी उनकी हिम्मत न टूटी थी। अपनी छोटी सी टुकड़ी के साथ वे हेतमपुर आए। दूसरी ओर से सेनापति लुगार्ड भी आगे बढ़ा क्योंकि उसे समाचार मिल चुका था कि सासाराम से सेनापति करफील्ड चल चुके हैं और शीघ्र पहुँच जाना चाहते हैं।

हेतमपुर में फिर मुठभेड़ हुई। अमरसिंह ने गोरी पलटन को काफी क्षति पहुँचायी पर उनके शस्त्रों की मार के आगे सिपाही उन्हें पीछे न हटा सके। सिपाही सेना को ही पीछे हटना पड़ा। अमरसिंह को भी क्षति उठानी पड़ी। वे चुपचाप जंगल में हट गए।

सेनापति लुगार्ड अपनी व्यवस्था सुधारने के साथ-साथ सेनापति करफील्ड के आने की भी प्रतीक्षा करने लगे।

पराजित अमरसिंह ने सीधी भिड़न्त के स्थान पर कुछ और ढंग से लड़ना उचित समझा। अपनी शक्ति के अनुसार सीधा युद्ध उन्हें महँगा पड़ता अतएव उन्होंने छापा मार ढंग से लड़ना उचित समझा। सेनापति लुगार्ड से यदि प्रत्यक्ष युद्ध करके विजयी भी हो जायें तो सेनापति करफील्ड से भी मुकाबला करना पड़ेगा। दूसरे चारों ओर अंग्रेजी अमलदारी प्रबल हो रही है। अतिरिक्त सहायता की अब आशा नहीं।

यही सोचकर अमरसिंह हेतमपुर के जंगल से भी आगे बढ़ गए। यत्र-तत्र छापा मारकर अंग्रेजी सेना को परेशान करना, उन्हें हानि पहुँचाना ही उन्होंने अपना लक्ष्य बना लिया।

※

सेनापति करफील्ड सासाराम से आ गए! सेनापति लुगार्ड ने उनका मोक्लास स्वागत किया। दोनों सेना नायक मिले और अब तक की स्थिति का सिंहावलोकन कर तदनुरूप आक्रमण की योजना बनाई गई। दोनों की सम्मिलित फौजें अमरसिंह को मारने बढ़ी, पर अमरसिंह ने इस बार रवैया अख्तियार कर लिया था। एक स्थान पर उनका पता ही लगता। आज इधर तो कल उधर। इस प्रकार यत्र तत्र आक्रमण कर उन्होंने अंग्रेजों को परेशान करना शुरू किया। दलीलपुर में एक

अंग्रेज को उन्होंने कत्ल कर दिया और अंग्रेजों के आधीन नील की कोठी लूट ली। सेनापति परीशान होने लगे। जब तक वे अमरसिंह को घेरने का प्रयास करते, तब तक अमरसिंह भाग निकलते और दूसरे किसी स्थान पर उपद्रव कर आगे बढ़ जाते। उनके इस प्रकार के उत्पातों से आसपास के गावों और अंग्रेजों में आतंक फैलने लगा। अमरसिंह के इस छापा मार रूप से दोनों सेनापतियों की परीशानी प्रत्यक्ष युद्ध से कहीं अधिक बढ़ गई

नित यह समाचार आने लगे कि अमरसिंह ने आज इस स्थान पर सरकारी खजाना लूट लिया है, तो कल पता चलता कि उन्होंने अमुक स्थानों पर दो अंग्रेजों को मार डाला है अथवा उस क्षेत्र में पड़ी अंग्रेजी सेना के कुछ आदमियों को कत्ल कर डाला है।

निरन्तर भाग दौड़ के उपरान्त भी जब कहीं न तो अमरसिंह से ही सामना हुआ और न ही उसके किसी निश्चित स्थान का पता चला, तो दोनों सेनापतियों ने अपनी सेना को अनेक टुकड़ियों में बाँट दिया और ये टुकड़ियाँ चारों ओर बिखरकर अमरसिंह का पीछा करने लगीं।

*

लखनऊ से अतिरिक्त सहायता के आ जाने के कारण सेनापति कैम्पबेल ने शाहजहाँपुर से बागियों को खदेड़ दिया। सेनापति की ताकत के आगे मौलवी टिक न सका। शाहजहाँपुर से हट जाना पड़ा। युद्ध का यह रंग-ढंग देखकर शाहजादा फीरोज शाह रुहेलखंड की ओर खिसक गया। मौलवी अहमदुल्ला मुहम्मदी आए, पर यहाँ भी गोरी पलटन उसका पीछा करती हुई आ गई। कोई उपाय न देख मौलवी ने राजा जगन्नाथसिंह के पास जाने का निर्णय किया इसके अतिरिक्त और कहाँ से मदद मिल सकती है। मुहम्मदी में बेगम हजरतमहल के संरक्षण में सिपाहियों को छोड़कर मौलवी ने पोवाइन की राह गही।

शहर के निकट आकर उसने एक हाथी किया और उस पर सवार होकर वह राज महल की ओर बढ़ा। राजा जगन्नाथसिंह को मौलवी के आने का समाचार मिला और वे उत्सुकतापूर्वक उसकी बाट जोहने लगे। राजा जगन्नाथसिंह अपने भाइयों के साथ उसका स्वागत करने आगे बढ़े।

मौलवी अहमदुल्ला हाथी से उतरे। राजा जगन्नाथसिंह उनका हाथ चूमकर उन्हें बड़े आदर के साथ महल में लाए। जैसे ही मौलवी अहमदुल्ला कमरे में घुसे राजा जगन्नाथसिंह के एक भाई ने पूर्व आदेशानुसार तलवार से उनका सिर काट लिया। मौलवी को स्वप्न में भी आशा न थी कि इस प्रकार मित्रघात कर कोई उनका सिर काट लेगा। अनायास यह हो गया। मौलवी का धड़ तड़फकर रह गया।

"यह सिर सेनापति को ले जाकर भेंट करने की व्यवस्था करो!"—राजा जगन्नाथसिंह ने आदेश दिया।

आदेश का पालन न हुआ। मसाला लगाकर एक थाली में सिर सँजाया गया और राजा जगन्नाथसिंह अंग्रेज सेनापति से भेंट करने चल पड़े।

※

पहिले दिन कालपी के युद्ध का महँगा मूल्य गोरी पलटन को चुकाना पड़ा, पर उसके बाद सर ह्यू रोज स्वयं आ गए। झाँसी की पूरी ताकत के साथ वे आए। इस मुकाबले में तात्या टोपे ठहर न सका। राव साहब ने भी यहाँ अपना कौशल दिखलाया। फलतः कालपी से पीछे हटकर गलौली मोर्चेबन्दी हुई। गलौली में बाँदा के नवाब भी आ गए। गोरी पलटन पीछा करती हुई सर ह्यू रोज के नेतृत्व में गलौली आयी।

तात्या टोपे ने व्यूह रचना की। गलौली के युद्ध में तात्या टोपे थे, राव साहब थे और बाँदा के नवाब थे। साथ ही रानी थी। चारों व्यक्तियों को अलग-अलग टुकड़ियाँ दी गई। रानी ने बहुत चाहा कि पूरी सेना का नेतृत्व उसके हाथ में रहे। ऐसा करके वह गोरी पलटन को एकदम नष्टकर देने पर कटिबद्ध थी, पर राव साहब उससे जलते थे। एक स्त्री के हाथ में वह सम्पूर्ण सेना का भार नहीं देना चाहते थे।

रानी को केवल ढाई सौ घुड़सवारों का नेतृत्व मिला। इस पर भी निराश न होकर रानी ने युद्ध में भाग लिया।

सामना होते ही तात्या, राव साहब और बाँदा के नवाब अपनी-अपनी टुकड़ियों के साथ भिड़ गए। रावसाहब ने अट पटाँग ढंग से लड़ाई की। तात्या और बाँदा

के नवाब जी तोड़कर लड़े। रानी ने अपने मुट्ठी भर घुड़सवारों के साथ ऐसा जौहर दिखलाया कि गोरी पलटन में हाहाकार मच गया। रानी ने बड़े वेग के साथ तोपों के सामने युद्ध किया। अपने साथियों के साथ उसने तोपों को अपना लक्ष्य बनाया। वह गोरी पलटन की तोपों पर कब्जा कर लेना चाहती थी।

रानी की प्रबल मार के आगे गोरी पलटन छितराने लगे और रानी तोपों की टुकड़ी से सिर्फ बीस गज की दूरी पर रह गई। उसके बाएँ ओर राव साहब थे। रानी ने कई बार राव साहब को संकेत किया कि वह तोपों की ओर अपनी टुकड़ी का रुक करें पर राव साहब ने इस संकेत की ओर अनेक बार ऐसा भाव प्रकट किया, मानो वे उसे समझ ही नहीं पाए हैं। राव साहब तोपों की ओर बढ़ने के बजाय दूसरी ओर जाने लगे। अगर राव साहब ने रानी के संकेत पर काम किया होता तो गोरी पलटन की तमाम तोपों पर कब्जा होता और गोरी पलटन को भागना पड़ता। गलोली युद्ध में अवश्य ही सिपाहियों की जीत होती और तोपें खो देने के बाद गोरी सेना काफी कमजोर पड़ जाती। यह भी सम्भव था कि तब इतिहास कुछ और हो जाता, पर राव साहब दूर हट गए।

रानी अपने बूते फिर आगे बढ़ी। रानी को इस प्रबल वेग के साथ तोपों की ओर बढ़ते देख गोरी सेना में गड़बड़ी मच गई। भयंकर मार-काट करती हुई रानी गोलंदाज टुकड़ी से कुछ ही गज की दूरी पर थी। गोलों की प्रबल मार से रानी बड़ी होशियारी के साथ अपनी रक्षा करती हुई घुड़सवारों के साथ बढ़ रही थी।

सर ह्यू रोज घबड़ा गए।

तुरन्त ऊँट सवारों को दौड़ा दिया। ऊँट सवारों की टुकड़ी ने ऐन मौके पर तोपों के सामने धमककर रानी के रास्ते गतिरोध उत्पन्न कर दिया। इस पर रानी डटी रही। ऊँट सेना को भी वह हटा देती तोपों पर कब्जा कर लेती पर उसके पास इने-गिने घुड़सवार ही थे और उसकी सहायता के लिए कोई टुकड़ी न थी।

रानी को हटना पड़ा।

बुरी तरह घायल हो जाने पर भी वीरतापूर्वक अपनी रक्षा करती हुई गई हट आयी तोपों को फिर मैदान मिला और तब तो ऐसा दृश्य उपस्थित हुआ कि

सिपाही ठहर ही न सके। पुनः पूरे वेग से सर ह्यू रोज ने हमला किया। इस बार को सिपाही झेल न सके और पीछे हटना पड़ा।

सिपाही सेना गोपालपुर की दिशा में बड़ी चतुरायी से पीछे हटी। उसका पीछे हटना देख सर ह्यू रोज दंग रह गए। एक कुशल सेना की तरह सारी टुकड़ियाँ तात्या टोपे के निर्देशन में बड़ी सावधानी से हट रहीं थीं कि गोरी सेना उन्हें खदेड़ न सके। एक टुकड़ी गोरी पलटन को रोके रहती। दूसरी टुकड़ी उसका स्थान लेती और पहिली टुकड़ी पीछे हट जाती। इस चतुरायी के साथ सिपाही हट रहे थे कि उन्हें नुकसान पहुँचा सकना गोरी पलटन के बूते की बात न थी।

राजा जगन्नाथसिंह के आने का समाचार पाकर सेनापति केम्पबेल बड़े प्रसन्न हुए।

"आइए!" आगे बढ़कर उन्होंने स्वागत किया।

राजा जगन्नाथसिंह सामने आए। मुस्कुराए और अपने एक भाई के हाथ पर रखी थाली की ओर इशारा किया। थाली पर रेशमी कपड़ा ढँका था और उसमें कोई वस्तु थी।

"क्या है?"

"आपका तोहफा साहब!"

रेशमी कपड़ा हटा और सेनापति के केम्पबेल ने देखा मौलवी अहमदुल्ला का सिर कटा रखा है। उसे देखते ही वे प्रसन्नता से उछल पड़े।

"शाबास! शाबास!!"

"......"

"शाबास राजा जगन्नाथसिंह!"—सेनापति केम्पबेल ने घोषित किया—"हम आपके इस काम से बहुत खुश हैं। आपको पचास हजार रुपये का नगद इनाम दिया जायगा और आपकी जागीरपुर जाकर आपको राजा की पदवी दी जायगी!"

राजा जगन्नाथसिंह ने बड़े अदब के साथ सेनापति के आगे सिर झुकाकर प्रसन्नता प्रकट की।

"इसमें शक नहीं कि आपने बहुत बड़ा काम किया है।"

"मैंने सिर्फ आपकी आज्ञा का पालन किया है।"

"बहुत खूब !"

मौलवी का कटा सिर पाकर सेनापति कैम्पबैल ने सन्तोष की साँस ली। एक खतरनाक और जानी दुश्मन खत्म हुआ। मौलवी की समाप्ति का अर्थ है अवध के सूबे से बगावत की समाप्ति। मौलवी गया और अब ये जरा जरा से बागी कितने दिन के हैं !

ꕥ

बरेली में खाँ बहादुर खाँ अपनी छापामार नीति के कारण अपना झंडा फहराए हुए था। उसने युद्ध की दूसरी प्रणाली अपना ली थी। नदियों के पुल तोड़ दिए थे और रुहेलखंड के प्रमुख मार्ग अवरुद्ध कर दिये थे। इसी कारण गोरी पलटन उस ओर न बढ़ती थी। शाहजादा फिरोजशाह अपने साथियों के साथ रुहेलखंड आए। खाँ बहादुर खाँ ने उन्हें अपने यहाँ आश्रय दिया। खाँ बहादुर खाँ फिरोजशाह के साथ मिलकर रुहेलखंड के अन्य स्थानों पर अपना अधिकार करने लगे। रुहेलखंड में एक ही सैनिक टुकड़ी कर्नल वालपोल के नेतृत्व में पड़ी थी। कर्नल वालपोल खाँ बहादुर खाँ से पार न पा रहे थे। बार बार लखनऊ सहायता के लिए लिखने पर भी सहायता न आ रही थी।

फिरोजशाह के साथ मिलकर खाँ बहादुर खाँ ने नया अभियान शुरू किया और कर्नल वालपोल को परेशान करना शुरू किया। रुहेलखंड में इन दोनों का आतंक बढ़ने लगा। रुहेलखंड में सर्वत्र अराजकता व्याप्त गई। भरसक कोशिश करने पर भी कर्नल वालपोल बागियों को दबा न पा रहे थे। खाँ बहादुर खाँ गाजी की उपाधि धारणकर रुहेलखण्ड में अपने पैर फैला रहे थे।

कई महीने के बाद कर्नल वालपोल को पत्र मिला कि सेनापति कैम्पबैल स्वयं उनकी सहायता के लिए आ रहे हैं। पत्र पाकर कर्नल वालपोल में उत्साह का सन्चार हुआ और वे अपनी सैनिक शक्ति बढ़ाकर रुहेलखंड के बागियों से युद्ध की तैयारी करने लगे। अब अपनी पराजय की उन्हें इतनी चिन्ता न थी, क्योंकि सेनापति स्वयं उनकी सहायता के लिए आ रहे थे। अपनी सैन्य शक्ति बढ़ाकर वे बरेली के रास्ते बढ़े। बाद में सेनापति कैम्पबैल के भी मिलने की बात थी।

ꕥ

बेगम हजरतमहल की आँखों से आँसू झरझरा पड़े। मौलवी के निर्मम अन्त के समाचार से उनके मन को गहरा धक्का लगा। मुहम्मदी में विश्राम के समय जब बेगम को राजा जगन्नाथसिंह के इस विश्वासघात का समाचार मिला तो वे रो पड़ीं। मौलवी के इस दुःखद अन्त को सुनकर सिपाहियों में घबराहट फैल गई और बहुत से मुहम्मदी छोड़कर इधर-उधर चले गए। अब अंग्रेजी सेना से लड़ना सबने व्यर्थ समझा। यह पक्का विश्वास हो गया कि अंग्रेजों के खिलाफ अब सिर नहीं उठाया जा सकता है।

बेगम हजरतमहल ने चुपचाप मुहम्मदी से प्रस्थान कर दिया। प्रस्थान के समय बहुत ही थोड़े सिपाही उनके साथ थे। पुराने वफादार सिपाहियों ने ही इस संकट के समय बेगम का साथ दिया। उन्हीं के साथ बेगम हजरतमहल अंग्रेजों के हाथों में पड़कर अपनी दुर्दशा कराने से बचने के लिए निरुद्देश्य चल पड़ीं। अब उनको कोई पूछने वाला न था। और न ही उन्हें अपनी मदद के लिए कोई दीख पड़ रहा था।

सेनापति कैम्पबेल ने जब मुहम्मदी पर आक्रमण किया, तो उस समय उनका मुकाबला करने एक भी आदमी न आया। मुहम्मदी में ही प्रधान सेनापति को पता लगा कि बेगम भाग गई हैं। अतएव कुछ सैनिकों को उन्होंने उसकी टोह में रवाना कर दिया। इस प्रकार बागियों को एकदम दबाकर सेनापति ने संतोष की साँस ली। सारा हाल कलकत्ता लिख भेजने के बाद उन्होंने रुहेलखंड में अपने आक्रमण की तैयारियाँ कीं। रुहेलखंड की ओर से सेनापति उदासीन न थे। वहाँ की भारी स्थिति से परिचित रहने के बाद भी वे रुहेलखंड की ओर बढ़ने में असमर्थ थे। अवध के विद्रोह को एकदम दबाने के बाद ही उस ओर बढ़ना ठीक समझते थे। अब वह अवसर आ गया। उन्होंने रुहेलखंड की ओर कूच करने की योजना बना ली और कर्नल वालपोल को खबर भेज दी कि वे आ रहे हैं।

गोपालपुर आकर सब मिलकर आगे की योजना पर विचार करने लगे। तात्या टोपे नाना साहब के लिए परेशान था। अभी तक उनके बारे में कोई समाचार न मिलने के कारण वह चिंतित हो गया कि उन्हें क्या हो गया है? एक

ओर नाना साहब का पता न था। और दूसरी ओर गलौली के युद्ध में मात खाने से उसका मन अत्यन्त दुःखी था। कालपी में उसने जो कारखाना खोल रखा था, उस पर भी अंग्रेजों का अधिकार हो गया था। इधर चारों ओर से निराशाजनक समाचार आ रहे थे।

रानी, राव साहब के रवैये से बड़ी परेशान थी। बहुत कुछ उनके मन का भाव समझ जाने पर भी वह प्रत्यक्ष रूप से कुछ भी आरोप लगा सकने में असमर्थ थी। संकट के समय वह आपस में मन-मुटाव करना ठीक नहीं समझती थी।

बाँदा के नवाब अपने सिपाहियों के साथ तो आ गए थे, पर उन्हें युद्ध कला का कुछ विशेष ज्ञान न था। लगातार की पराजय से वे भी घबरा गए। जिस उद्देश्य से वे आए थे, वह उन्हें मिट्टी में मिलता दिखलायी पड़ रहा था।

रानी ने मौन भंग किया। बोली—"इस तरह भटकते हुए लड़ने की अपेक्षा एक स्थान पर जमकर लड़ना अच्छा है।"

"यहीं आखिरी फैसला हो जाय।"—राव साहब ने कहा।

"नहीं।"—रानी ने चौंका देने वाला सुझाव रक्खा—"हम लोगों को ग्वालियर के किले पर अपना कब्जा कर लेना चाहिए!"

"ग्वालियर के किले पर?"

"हाँ, आपत्ति क्या है! किले के अधिकांश सैनिक मराठा हैं। उनमें देश प्रेम अवश्य होगा। इस युद्ध में वे हमारा साथ अवश्य देंगे। महाराज जयाजी राव शिन्दे अगर अंग्रेजों के चापलूस बना रहना चाहते हैं, तो वे ऐसा करने को स्वतंत्र हैं।"

"ग्वालियर के किले पर क्या कब्जा करना आसान होगा?"

"आसान और टेढ़े का प्रश्न ही क्या है! अब मरना है, तो लड़ते-लड़ते मरना!"

तात्या टोपे को लक्ष्मीबाई की यह योजना पसंद आ गई। गोपालपुर से ग्वालियर है ही कितनी दूर और ग्वालियर पर अगर अधिकार हो जाता है, तो एक बार फिर अंग्रेजों के खिलाफ शक्तिशाली मोर्चा कायम हो जायगा। तात्या टोपे ने राव साहब को भी इसके लिए तैयार कर लिया। बाँदा के नवाब ने भी

इसमें अपनी सहमति दी। योजनानुसार सबके सब गोपालपुर से ग्वालियर की ओर बढ़े।

३३

अमरसिंह का आतंक बढ़ता जा रहा था। उसकी एक टुकड़ी से दलीलपुर में कुछ देर के सामना हुआ। सेनापति लुगार्ड ने घेर लिया। उन्होंने बड़े वेग से उस टुकड़ी पर हमला किया पर मुकाबले पर कोई न आया। सबके सब भाग निकले। सेनापति लुगार्ड ने पूरी ताकत के साथ पीछा किया, पर एक भी सिपाही हाथ न आया। सब दो-दो चार-चार के दल में बँटकर गायब हो गए।

सेना का सामना कर उससे निपटा जा सकता है, पर छापामारों से निपट सकना मुश्किल पड़ता है। अमरसिंह के इस प्रकार के रवैये से सेनापति लुगार्ड बुरी तरह परेशान होने लगे। कलकत्ता उन्होंने लिखा कि अमरसिंह अब बागी नहीं, डाकू हो गया है। डाकुओं की तरह वह इधर-उधर लूट मार करता फिरता है। वैसे अब उसमें कोई विशेष ताकत शेष रही नहीं।

दलीलपुर में पड़े हुए सेनापति लुगार्ड अमरसिंह की ही टोह में थे। उसका कुछ पता न लग रहा था कि कहाँ है वह? सहसा खबर आयी कि डुमराँव में नील की कोठी लूट ली गई और राजपुर ग्राम भी लूट लिया गया। डुमराँव में नील की कोठी में रहने वाले सभी अंग्रेज मार डाले गए हैं। इस खबर को पाकर सेनापति लुगार्ड तिलमिला उठे। डुमराँव गए। अमरसिंह का कुछ भी पता न लगा।

गोरी पलटन की टुकड़ियाँ निरन्तर भागदौड़ कर रही थी। कहीं सामना होता तो छिटपुट लड़ाई के बाद अमरसिंह फिर गायब हो जाता और दूसरे स्थान पर लूट मारकर आगे बढ़ जाता। अमरसिंह का यह आतंक इतना बढ़ा कि इधर-उधर के गोरे अफसर अपना-अपना काम छोड़कर भागने लगे। सेनापति लुगार्ड की कोई योजना काम न आ रही थी। गर्मी का मौसम असह्य था। अपने साथ साथ वे अपने आधीन गोरों को भी इस गर्मी का कष्ट दे रहे थे। सेनापति लुगार्ड की सेना निरन्तर भागदौड़ के कारण पस्त पड़ रही थी। अमरसिंह हाथ न आ रहे थे।

अन्ततः सेनापति लुगार्ड इस स्थिति से उकता गए और उन्होंने कलकत्ता

पत्र लिखकर अपनी असमर्थता प्रकट करते हुए लिखा कि वे इस्तीफा देकर विलायत चले जाना चाहते है। उनके स्थान पर किसी और को नियुक्त कर दिया जाय। वह चोरों का मुकाबला कर सकते है, डाकुओं का नहीं।

कलकत्ता से उनका इस्तीफा मंजूर होकर आ गया। सेनापति लुगार्ड अपने पद से हारकर कलकत्ता चले गए। उन्होंने विलायत की राह पकड़ी। लार्ड कैनिंग के आदेश से सेनापति डगलस ने अमरसिंह के विरुद्ध अपनी कमर कसी और पूरे जोश खरोश के साथ वह सेनापति लुगार्ड के पद पर आ गए।

आते ही उन्होंने अमरसिंह के विरुद्ध उसने एक विस्तृत योजना बनायी, पर उन की यह योजना धरी रह गई। अमरसिंह ने अपना नया जौहर दिखलाया।

खबर आयी कि रातों रात अमरसिंह ने गया का जेलखाना तोड़ दिया। कैदियों और अमरसिंह ने अपने लोगों के साथ नागरिकों के सहयोग से गया से अंग्रेजी अमलदारी उठा दी है। गया पर अमरसिंह का अधिकार हो गया है और अब वह आरा की ओर बढ़ रहा है। इस खबर को पाते ही सेनापति डगलस ने तुरन्त आरा की ओर प्रस्थान किया।

*

ग्वालियर मे बड़ी सनसनी मची। सबको ज्ञात हो गया कि झाँसी की रानी तात्या टोपे, राव साहब और बाँदा के नवाब ग्वालियर पर आक्रमण करने गोपालपुर से चले आ रहे है। इस समाचार को पाते ही महाराज और राजा दिनकर राव बड़ी परेशानी मे पड़ गए। ग्वालियर की सेना मे भी खलबली मच गई। पेशवा के भाई होने के कारण ग्वालियर के सैनिकों मे नाना साहब आदि के प्रति बड़ी श्रद्धा थी। सेना के रंग ढंग कुछ और नजर आ रहे थे। यह संभावना प्रबल होती जा रही थी कि ग्वालियर की सेना आने वाले पक्ष से मिल सकती है।

"महाराज !"—दिनकर राव ने कहा—"शत्रु के प्रति आप ऊपर से आदर भाव प्रकट कीजिए।"

"तुम्हारे कहने का आशय यह कि हम ग्वालियर उनको दे दें !"

"नहीं महाराज ! इस समय कूटनीति से काम लीजिए।"—मंत्री ने सुझाया—"जब तक अंग्रेजी मदद हमारे लिए नहीं आ जाती तब तक आप उन्हें निभाए रखिए।"

"......"

"इसके सिवाय और कोई रास्ता नहीं है, महाराज! इस समय शक्ति प्रदर्शन से काम न चलेगा। आप जैसा मैं कहता हूँ, वैसा कीजिए। आज ही मैं यहाँ से चला जाता हूँ। आप इस योजना में तनिक भी गड़बड़ी न आने दें।"

दिनकर राव की बात महाराज ने मान ली। ग्वालियर की रक्षा के लिए गोरी सेना लाने के लिए दिनकर राव चला गया। महाराज ने युद्ध की कोई तैयारी न की। क्योंकि ऐसा करने पर सेना के बागी हो जाने की आशंका थी। ग्वालियर की खलबली बढ़ती जा रही थी। तात्या टोपे, राव साहब और रानी बराबर बढ़ते आ रहे थे। क्रमशः वे ग्वालियर के एकदम निकट आ गया। दिनकर राव का कुछ पता न था। महाराज घबरा गए। समय पर दिनकर राव की सहायता न आने के कारण महाराज ने स्वयं लड़ने का निर्णय किया। लखनऊ और दिल्ली का पतन देखकर उनका हौसला बढ़ गया।

महाराज ने युद्ध घोषणा कर दी। शत्रुपक्ष पर गोलाबारी करने के लिए तोपें तैयार हो गईं।

४०

दिनकर राव ग्वालियर से चला, तो वह जानता था कि उसके लौटकर आने से पहले ही शत्रु पक्ष ग्वालियर आ जायगा। अतएव भुलावे में डालने के लिए उसने तात्या के पास खबर भेज दी कि ग्वालियर के महाराज उसका स्वागत करने के लिए तैयार हैं। इस प्रकार ग्वालियर का संकट बचाने के लिए चाल खेलता हुआ वह सर ह्यू रोज से मिलने बढ़ गया।

महाराज के मंत्री दिनकर राव का ऐसा संदेशा पा सभी प्रसन्न हुए, पर रानी को कुछ दाल में काला नजर आया। दिनकर राव को वह खूब जानती थी। अनेक बार इसकी धूर्तता का परिचय वह सुन चुकी थी। अतएव उसने सबको सचेत रहने को कहा, पर राव साहब ने इसका विरोध किया। उन्होंने दिनकर राव पर अपना पूरा विश्वास प्रकट किया।

ग्वालियर के निकट जब पूरी सेना आ गई तो रानी ने पूरी तैयारी के साथ ग्वालियर में घुसने का प्रस्ताव किया, पर राव साहब के आगे उसकी एक न चली

सेना साधारण ढंग से चली, पर रानी ने अपनी टुकड़ी तैयार रखी। तात्या टोपे और राव साहब के किले में आते ही तोपें बरसने लगीं। राव साहब ने इस पर बड़ी प्रसन्नता प्रकट करते हुए कहा कि उनके सम्मान में तोपें दागी जा रही हैं। थोड़ा ही और आगे बढ़ने पर उन्हें भागना पड़ा। सेना में खलबली मच गई।

रानी तो एकदम तैयार थी जैसे ही उसने गोलाबारी होते देखी, वह दौड़ पड़ी और उसने बड़े वेग से आक्रमण किया। रानी की इस सावधानी से अन्य टुकड़ियाँ सँभलीं और आक्रमण का उत्तर तेजी से दिया गया। थोड़ी ही देर में इस युद्ध का निर्णय हो गया। रानी ने तोपों पर अपना अधिकार कर लिया और तात्या की टुकड़ी ने ग्वालियर की सेना को खदेड़ दिया।

ग्वालियर पर अधिकार हो गया और महाराज को अपने संरक्षण में रखकर तात्या टोपे ने ग्वालियर पर नाना साहब का अधिकार घोषित कर दिया। रानी एक क्षण का भी विलम्ब नहीं चाहती थी। अतएव उसने राज्य के तमाम जागीरदारों को तत्काल दरबार में आने का आदेश दिया। तात्या टोपे भी इससे सहमत था। राव साहब इस ओर कुछ ध्यान न दे, ब्राह्मण भोज देने की तैयारियाँ करने लगे। ब्राह्मण भोज देकर वे अंग्रेजों के खिलाफ लड़ने के लिए दैवी शक्ति पाना चाहते थे।

रानी ने तात्या के सहयोग से किले की मोर्चेबंदी शुरू कर दी। वह जानती थी कि ग्वालियर पर अधिकार की खबर सुनते ही गोरी पलटनें बड़ी ताकत के साथ आवेंगी! उनके ऐसा करने से पहिले अगर ग्वालियर से झाँसी तक पेशवाई नहीं कायम हो जाती है, तो इस युद्ध में अंग्रेजों की जीत निश्चित है। केवल ग्वालियर का क्या मूल्य!

*

ग्वालियर पर शत्रु पक्ष के अधिकार की खबर सुनते ही सर ह्यू रोज तेजी के साथ चल पड़े। दिनकर राव भी उनके साथ थे। ग्वालियर के निकट आकर दिनकर राव सर ह्यू रोज से अलग होकर ग्वालियर आ गए। सर ह्यू रोज से उन्होंने तय कर लिया था कि वे ग्वालियर पर आक्रमण करें और तब तक वे किले में रहकर ग्वालियर की सेना को फोड़ते रहेंगे। ग्वालियर आते ही दिनकर राव ने

वही काम किया। रानी को उसका वापिस आना तनिक भी पसंद न था और न ही वह दिनकर राव को स्वतंत्र देखना चाहती थी, पर राव साहब के आगे उसकी एक न चली।

दिनकर राव ने काम जारी रक्खा। उसने ग्वालियर की सेना में आतंक पैदा कर दिया और दूसरी ओर सर ह्यू रोज ने आक्रमण कर दिया। तेजी से युद्ध छिड़ा और देखते-देखते मुरार पर गोरी पलटन का अधिकार हो गया। तात्या टोपे और झाँसी की रानी जी तोड़कर युद्ध कर रहे थे। अब तक नाना साहब का कोई पता न था। इस कारण सभी चिन्तित थे।

राव साहब इस युद्ध में बड़े ही निराशाजनक ढंग से भाग ले रहे थे। उनकी स्थिति बदल गई। वे न इधर के रहे, न उधर के। सर ह्यू रोज से उन्हें जिस बात की आशा थी और जिसके लिए उन्होंने झाँसी के साथ दगाबाजी की थी, वह व्यर्थ गई। उनके द्वारा ग्वालियर पर आक्रमण होने के कारण सर ह्यू रोज नाराज हो गए थे कि यदि वे अंग्रेजों के वफादार हैं, तो उन्होंने ग्वालियर के आक्रमण में क्यों साथ दिया? इससे अंग्रेजी सेना को जो हानि उठानी पड़ रही है, उसके लिए राव साहब जिम्मेदार हैं। इस कारण अब सर ह्यू रोज उनकी एक भी नहीं सुन सकते और अब सारी शर्तें मसूख हैं।

*

प्रातःकाल होते ही गोरी पलटन ने बड़े वेग से हमला किया। एक ओर सर ह्यू रोज का चतुराई से बनाया गया व्यूह और दूसरी ओर दिनकर राव की चाल के कारण ग्वालियर की शक्ति गोरी पलटन के मुकाबले तनिक भी न ठहर पा रही थी। भारी तोपों की मार के आगे ग्वालियर की सैनिक टुकड़ियाँ समर्पण करती जा रही थीं। दिनकर राव सेना की एक टुकड़ी के साथ गोरी पलटन से मिल गए। बाँदा के नवाब घायल हो गए। तात्या टोपे को हारकर पीछे हटना पड़ा। युद्ध की भयंकरता देख राव साहब हक्का बक्का थे। वे भी तात्या के साथ पीछे हट गए। रानी ही युद्ध में सबसे आगे थी।

रानी बुरी तरह से घायल होने पर भी लड़ रही थी। उसकी प्रबल मार के आगे बार-बार गोरों के पैर उखड़ जाते रानी के उत्साह का अनुकरण यदि अन्य

लोगों ने किया होता तो शायद युद्ध का निर्णय ही और कुछ होता। रानी की इस मार से तिलमिलाकर सर ह्यू रोज ने पूरी शक्ति से उसे घेर लिया। रानी चारों ओर से घिर गई। रानी को बचाने के लिए उसके साथी एक के बाद एक धराशायी होने लगे। देखते-देखते दो चार को छोड़कर सभी मारे गए।

रानी घबड़ा गई।

अब...?

सहसा उसने घोड़े को ऐंड़ दी और पूरी शक्ति के साथ पलटन को रौंदती हुई वह भाग निकली। उसका आधा शरीर रक्त से लथ-पथ था। रानी भागी तो गोरी पलटन ने उसका पीछा किया, पर उसे कौन पा सकता था। वह निकल गई।

*

दिनकर राव की आँखें प्रसन्नता से चमक उठीं। उसने मैदान मार दिया। रानी गयी। अब मौका आ गया है कि वह अपनी योजना को कामयाब कर ले। युद्ध क्षेत्र से तुरन्त उसने अपना घोड़ा मोड़ा और राव साहब के पास आ पहुँचा। राव साहब ने भी इस अभियान को सफल बनाने में अच्छा ही योग दिया था। जब सर ह्यू रोज की फौज ग्वालियर की ओर बढ़ रही थी, तब वह ब्राह्मण भोज की तैयारियों में लग गए थे। यह अच्छा ही हुआ। एक तरह से इससे गोरी पलटन को मौका मिला।

राव साहब ने दिनकर राव से पूछा—"क्या हुआ ?"

"रानी मैदान से छू हो गई है !"

"और बाकी लोग ?"

"हार रहे हैं।

"ठीक है !"

राव साहब की सहमति पाकर दिनकर राव ने ग्वालियर की सेना को संकेत किया। इस संकेत के पाते ही ग्वालियर के तमाम सैनिक जो अब तक सिपाहियों के साथ लड़ रहे थे, पलट गये और उल्टे उन्होंने सिपाहियों पर वार कर दिया। इस आकस्मिक परिवर्तन से सिपाहियों में भगदड़ मच गई। भारी संख्या में सिपाही मारे गए और बचे खुचे सिपाही इधर उधर भागने लगे !

दूर खड़ा दिनकर राव यह सब दृश्य देखकर बड़ा प्रसन्न हो रहा था। अब महाराज जयाजी राव शिन्दे की हुकूमत फिर ग्वालियर पर कायम होगी! अब उसका मन्त्रि पद पुनः बना रहेगा। अगर ग्वालियर पर तात्या या लक्ष्मी का राज्य होता तो उसे क्या मिलता! दिनकर राव मन ही मन अपनी बुद्धि पर प्रसन्न हुआ। अगर उसने इस तरह की कूटनीति से सहारा न लिया होता, तो कभी कामयाबी हाथ न लगती।

सिपाही भाग रहे थे।

गोरी पलटन किले की ओर बढ़ रही थी। राव साहब भी उसी ओर हटते दीख पड़े। दिनकर राव समझ गया राव साहब किला छोड़कर चले जाँयगे। किले पर फिर गोरी सेना का अधिकार! गोरी सेना का अधिकार माने महाराज का अधिकार!

॥

ग्वालियर के किले पर यूनियन जैक फहरा रहा था। सर ह्यू रोज आनन्द से देख रहे थे। ग्वालियर फिर हाथ आ गया। बागी भाग खड़े हुए। यहाँ से उन्हें दूर खदेड़ दिया गया। बागियों की एक बहुत बड़ी शक्ति लक्ष्मी मारी गई। उसका शरीर जलकर भस्म हो गया। वह स्वयं इस दृश्य को देखकर आ रहे हैं। जब वह उस स्थान पर पहुँचे तो सिर्फ चिता के अंगारे शेष थे। रानी का शरीर उन अंगारों में मिल चुका था। उस समय क्षण भर मौन रह गए। रानी के प्रति उन्होंने मूक श्रद्धांजलि अर्पित की। उसकी बहादुरी के वे कायल थे। स्त्री होकर उसने उन जैसे रण कुशल सेनानी के छक्के छुड़ा दिए। निम्नस्तर के हथकंडों का सहारा लेकर ही रानी को समाप्त किया जा सका। अंग्रेजी शासन की प्रतिष्ठा के लिए ऐसा करना पड़ा।

"साहब, दिनकर राव आपसे मिलना चाहते हैं।"

"भेजो!"

दिनकर राव सर ह्यू रोज के सामने आया। सिर झुकाकर अभिवादन किया।

"महाराजा आनन्द से हैं?"

"जी हाँ!"

"बागियों का कुछ पता लगा ?"

"सब जंगल में भाग गए हैं !"

"......"

"मैं आपसे एक निवेदन करने आया हूँ ।"

"कहो !"

"राव साहब की बाबत...?"

"राव साहब ! हूँ।"

"......"

"हम उनके लिए कुछ नहीं कर सकते हैं। यह सच है कि उन्होंने हमारी मदद की है, पर असल काम तो दूलाजी बुन्देला ने किया है !"

"राव साहब के कहने से !"

"आदेश देने और काम करने में फर्क है !"

"राव साहब ने भी तो इस लड़ाई में एक तरह से हमारी मदद ही की है !"

"हूँ !"

"उनको क्षमादान मिलना चाहिए !"

"मैं असमर्थ हूँ । इसके लिए मुझे कलकत्ता से आज्ञा लेना पड़ेगी । बिना इसके मैं कुछ नहीं कर सकता !"

सर ह्यू रोज से ऐसा रूखा उत्तर पाकर दिनकर राव का मन बैठ गया। राव साहब को क्षमादान मिल जाता तो अच्छा था, पर लगता है, सर ह्यू रोज इसके पक्ष में नहीं है। इसका परिणाम यह होगा कि राव साहब बागियों के साथ भागते रहेंगे।

"पर साहब..."—दिनकर राव ने आगे कहने का प्रयास किया।

"मैं इस विषय में कुछ नहीं कर सकता !"

दिनकर राव निराश होकर लौट आया और उसने अपनी इस असफलता की सूचना राव साहब को भेज दी।

❀

तात्या तोपे का चेहरा एकदम गम्भीर था। सुनसान स्थान पर चन्द लोगों

के साथ तात्या बैठा था। एकदम गम्भीर। रानी लक्ष्मी के हृदय विदारक अंत से उसके मन को गहरी ठेस लगी। रानी का चले जाना बहुत ही बुरा हुआ है।

राव साहब कुछ दूरी पर थे। दिनकर राव के पास से आया पत्र चुप चाप पढ़ रहे थे। लगातार युद्ध और भाग दौड़ से वह परेशान थे। शांतिपूर्वक जीवन व्यतीत करना चाहते थे। बुढ़ापे में वह दुःख भोगते हुए मरना नहीं चाहते थे। इसी उद्देश्य से गुप्तरूप से उन्होंने अंग्रेजों की मदद की, पर उस मदद का अंग्रेजों ने कोई मूल्य न आँका। पत्र समाप्त कर राव साहब ने एक लम्बी साँस ली। गम्भीर हो गए वह। जब अंग्रेज उनकी सेनाओं का मूल्य ही नहीं आकते हैं, तो एक ही रास्ता शेष है। न बागियों के साथ रहें, न अंग्रेजों की शरण जाँए। चुप-चाप कहीं अपना शेष जीवन व्यतीत कर दें। किसी अज्ञात स्थान में चले जाँय। नेपाल की तराई में या हिमालय के जंगलों में, पहाड़ों में!

तात्या टोपे अपने साथ से उठकर राव साहब के सामने आया।

"नाना साहब गए?"

"हाँ, सबेरे ही!"

"अच्छा! मैं तो चुप बैठूँगा नहीं। मुझे कुछ न कुछ करना ही होगा। अगर भाग्य ने साथ दिया तो हम लोग फिर मिलेंगे। मैं आज ही इस स्थान से आगे बढ़ जाना चाहता हूँ। आपकी क्या इच्छा है?"

"मैं भी यहाँ रुकूँगा नहीं, लेकिन हम लोगों का साथ रहना अच्छा नहीं है!"

"ठीक है।"

"......"

"दामोदर राव की भी व्यवस्था हो गई है रामचन्द्र उसे सँभाले रहेगा। देखा जायगा। ठीक है।"

तात्या टोपे राव साहब के पास से हट गया और वह आगे बढ़ने की तैयारियों में लग गया। तात्या की फुर्ती देखकर उसके साथी दंग थे। यह आदमी सचमुच फौलाद का मालूम पड़ता है। बार-बार हार जाने पर भी खामोश नहीं बैठता है!

*

रक्त से लथपथ रानी अपने घोड़े पर भाग रही थी। अंग्रेजों की एक टुकड़ी

उसका पीछा कर रही थी। रानी के साथ उसकी सैनिका और पाँच छः सिपाही ही थे। रानी इन सबसे आगे थी।

पीछा करती हुई गोरी टुकड़ी ने अपनी पूरी शक्ति लगायी।

आगे जाकर रानी को घेर लिया।

"रानी होश्यार!"—सुन्दर चिल्लायी, पर उसके बाद ही ऐसा भरपूर हाथ उस पर पड़ा कि वहीं ढेर हो गई वह।

लक्ष्मी ने मुड़कर देखा।

शत्रु आ पहुँचे!"

वह पुनः हुँकार उठी और उसकी तलवार गोरों से टकराने लगी। हारी-थकी रानी पर पूरी टुकड़ी एक साथ टूट पड़ी। रानी पूरी शक्ति से भिड़ गयी। प्राण रहते तक वह हार न मानने वाली थी। उसकी तलवार धड़ाधड़ दो तीन गोरों का सिर अलग कर गयी। इसी बीच रानी पर भी एक साथ कई वार हुए। एक वार मस्तक पर लगा। दाहिनी आँख बाहर निकल आयी। दाहिनी भुजा भी कट कर झूल गयी। मुँह में लगाम दबा बाँए हाथ से ही रानी लड़ने लगी। उसका यह रौद्ररूप देखकर गोरे घबड़ा गए। सामने के सैनिक हट गए।

रानी को रास्ता मिला।

घोड़े को एड़ दी उसने।

घोड़ा उड़ गया।

"भागी! भागी!!"

अंग्रेज कप्तान चिल्लाया और उसने अपने साथियों को रानी का पीछा करने के लिए ललकारा, पर गोरे सैनिक पीछा करने के लिए सँभलें, सँभलें, रानी दूर जा चुकी थी।

घुड़सवार सैनिक दौड़े।

रानी कहीं न दीखी।

इधर-उधर बहुत तलाश की गई, पर उसका पता न चला। अंग्रेज कप्तान आश्चर्य में पड़ गया।

इस बात का उसे पूरा विश्वास था कि रानी भागकर दूर नहीं जा सकती! रानी जिस बुरी तरह से घायल हुई है, उसे देखते हुए उसका दूर भाग जाना अब

असम्भव है। रक्त की गर्मी के जोश के कारण वह कुछ ही दूर तक भाग सकी होगी और कहीं किसी खन्दक में या आसपास ही कहीं गिर पड़ी होगी। यह सम्भव है कि उसकी दम टूट रही हो अथवा अब तक वह दम तोड़ चुकी हो!

"खोजो!"

अंग्रेज कप्तान मृत रानी को ही अपने साथ ले जाना चाहता था ताकि अंग्रेज और हिन्दोस्तानी सिपाही देख सकें कि रानी मारी गयी।

अंग्रेज कप्तान ने बड़ी देर तक खोज की, पर वह असफल ही रहा।

सहसा एक ओर धुआँ उठता दिखायी दिया।

"यह कैसा धुआँ है?"

"कहीं आग लगी है!"

अंग्रेज कप्तान अपने साथियों के साथ उसी ओर बढ़ा।

४

घोड़ा एक ही छलाँग में सूखी नहर लाँघ गया। रानी घोड़े की पीठ पर चिपक गयी थी। सारा शरीर रक्त से एकदम भीग गया था। रानी की सारी शक्ति क्षीण हो चुकी थी और उसकी आँखें बंद थीं। रानी की दम टूट रही थी।

घोड़ा भी पस्त पड़ गया था। सुनसान जंगलों में वह धीरे धीरे बढ़ रहा था।

कुछ ही दूरी पर फूस की एक कुटिया बनी थी। कुटिया के बाहर खड़ा एक साधु संध्या पूजन कर रहा था। घोड़े की टापों की आवाज सुन वह चौंक पड़ा। ध्यान भंग हुआ। मुड़कर देखा। अरे! कोई घायल...देखते-देखते घोड़ा पास आया। साधु ने घोड़े को पुचकारकर खड़ा किया। उसके आश्चर्य का ठिकाना न रहा। घोड़े पर एक स्त्री। शरीर खून से तर। दाहिनी आँख बाहर थी। दाहिना भुजा कटकर लटकी हुई थी। साधु ने सहारा देकर उस स्त्री को उतारा। उतारते ही वह गिर पड़ी। वह अर्द्ध-मूर्छित अवस्था में थी। खड़े रहने की शक्ति भी शेष न थी। साधु ने उसे वहीं जमीन पर लिटा दिया।

"पा...नी..."

"......"

"पा...नी..."

साधु तुरन्त कुटिया में गया।

कमंडल में गंगाजल ले आया। दो बूँद गंगाजल मुख में जाते ही उसकी आँख खुली।

"बस !"

"......"

"फि...रं...गी...मे...रा शरीर...अग्निदाह..."

और उस स्त्री का सिर एक ओर लटक गया। साधु की आँखें भर आयीं। उस स्त्री की बात से ही वह सारी स्थिति ताड़ गया। उसे आसपास की सारी स्थिति का पता था। साधु को यह समझते देर न लगी कि वह स्त्री और कोई नहीं, झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई है। अवश्य ही युद्ध से पराजित होकर वह यहाँ आयी है। अंग्रेज पीछा कर रहे हैं। अपना मृत शरीर भी वह अंग्रेजों के हाथ में देखना नहीं चाहती।

अब...?

साधु तुरन्त अपनी झोपड़ी की ओर घूमा। फुर्ती से उसने अपनी कुटिया को धराशायी कर दिया। रानी का शरीर उस पर रखा और देखते देखते उसने आग लगा दी। क्षण भर में ही आग की लपटें लहलहा उठीं और रानी का शरीर जलने लगा।

साधु चुप-चाप खड़ा रहा। उसका सिर झुका था। आँखों मे अविरल अश्रुधार बह रही थी।

*

"कौन है ?"

साधु चौंक पड़ा। उसने देखा, रक्त से लथपथ गोरे! वह भाँप गया। बात क्या है ? कप्तान उसके पास आया।

"......"

"इसमें आग किसने लगाया ?"

"मैंने !"

"क्यों ?"

"......"

और तभी एक गोरे सैनिक के मुँह से चीख निकल गयी।

"मैं...मैं..."

उस अग्नि की लपटों के नीचे पड़ी वस्तु की ओर इशारा किया। कप्तान ने देखा, नारी शरीर! समझ गया झाँसी की रानी की देह है। शेर सा गुर्रा पड़ा वह।

"निकालो!"

लपटें अपनी पूर्णता पर थीं और किसी की भी यह हिम्मत न हो सकती थी कि उस शरीर को बाहर कर सके। ऐसा दुस्साहस करने वाला स्वयं लपटों का भाजन बन जाता! किसी का साहस न हुआ। सब टुकुर-टुकुर देखते रहे।

"इसकी औरत है?"

"जी ना!"

"तुमने आग क्यों जलाया?"

"एक हिन्दू का जो कर्तव्य है! मैंने किया।"

"तुम्हारा नाम?"

"गंगादास!"

"इसे गिरफ्तार कर लो।"

अंग्रेज कप्तान की आज्ञा से वह साधु बंदी बना लिया गया। कप्तान ने तुरन्त दो सैनिकों को मेजर ह्यू रोज के पास सारे समाचारों सहित भेजा। निवेदन किया वे स्वयं तुरन्त घटनास्थल पर आकर अपनी आँखों से सारा दृश्य देख जावें।

मेजर तुरन्त दौड़ पड़े।

अग्नि की लपटों में रानी का शरीर जल रहा था। देश की स्वतंत्रता के लिए संग्राम करने वाली रानी देश की ही माटी में मिल रही थी। अंग्रेज कप्तान अपने साथियों के साथ खड़ा-खड़ा इस दृश्य को देख रहा था। आखिर जीते-जी रानी हाथ न आयी। उसका मृत शरीर भी हाथ नहीं आया। केवल रानी के भस्मीभूत शरीर की राख ही हाथ आया।

*

मेजर क्लार्क ने अपने होंठ चाटे। बुद्धि जैसे मारी गई। कुछ समझ में ही

न आ रहा था कि क्या करें ! क्या न करें ! सिपाहियों की मति का पता ही नहीं लग रहा था। दूतों से तो यह खबर आती कि तमाम सिपाही आपस में झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई का ही गुणगान करते हैं। अंग्रेजी अमलदारी के प्रति उनके मन में राजभक्ति कुछ भी नहीं है, पर प्रत्यक्ष रूप से ऐसे कोई आसार नहीं मिलते, जिससे यह कहा जा सके कि नागोद की यह सिपाही पलटन बागी होने वाली है !

अभी कुछ रोज पहिले की बात है ! सिपाहियों ने सेनापति पर अपना विश्वास प्रकट किया था और उनके सम्मान में सब सिपाहियों ने अपनी बंदूकें झुकायी थीं। गोलंदाजों ने तोपें छोड़ी थीं और इस प्रकार सबने अपनी-अपनी राजभक्ति प्रकट की थी, अतएव कैसे विश्वास किया जाए कि नागोद की यह पलटन कभी बागी हो सकती है !

कुछ ही देर पहिले कप्तान स्काट से इसी संबंध में बात-चीत हुई। उनका भी कहना यही रहा। वे भी समझ नहीं पा रहे हैं कि क्या हो गया ?

झाँसी यहाँ से दो सौ मील दूर है !

अभी तक कुछ समाचार नहीं आए कि वहाँ के युद्ध का क्या हुआ !

मेजर किरके इसी असमंजस में पड़े थे ! मान लो कि यहाँ के सिपाहियों ने बगावत कर दी, तब क्या होगा ? अंग्रेजों के पास अपने बचाव का कोई साधन नहीं है। एक ही रास्ता है, भाग खड़े होना ! अगर बगावत होने पर भागेंगे नहीं तो सभी को मौत घाट उतार दिया जायगा। अभी तक तो यही हुआ है। जहाँ जहाँ सिपाहियों ने बगावत की है, वहाँ-वहाँ अंग्रेज मारे गये हैं। जेलखाने टूटे हैं। खजाने लूटे गए हैं। और वही सब यहाँ पर भी होगा !

अगर यहाँ विद्रोह हुआ भी तो यहाँ से भागना ही पड़ेगा।

एक यही रास्ता है, जिससे प्राण बच सकते हैं।

भागकर कहाँ जायँगे ?

यही मेजर किरके निर्णय न कर पा रहे थे। इसी कारण उनकी परेशानी बढ़ती जा रही थी। नागोद के तमाम अंग्रेजों के सामने संकट खड़ा था

❀

"हमसे अच्छी औरतें ! सुनते हैं, झाँसी की औरतें भी अंग्रेजों से लड़ी हैं।"

"सुनी सुनाई नहीं एकदम पक्की बात है। सरदार सुरजीतसिंह ने अपनी आँखों सब देखा है।"

"कहो सरदारजी! बात ठीक है?"

"हाँ!" सुरजीतसिंह ने अपनी मूछों की नोंक मरोड़ते हुए कहा—"मैदान में मैंने झाँसी की औरतों को भी लड़ते देखा!"

"थू! थू! थू!! थू!!"—एक सिपाही ने तैश में आकर कहा—"यहाँ के सिपाहियों पर थू थू थू! औरतें लड़ती हैं। अरे! नामर्दो तुम्हारी कलाइयाँ औरतों की कलाइयों से गई गुजरी हैं।"

बरामदे में बैठे तमाम सिपाहियों में सन्नाटा छा गया। बहुतों के सिर शर्म से झुक गए। झाँसी के मैदान में अगर औरतें इस बहादुरी के साथ लड़ रही हैं, तो सचमुच मर्दों के सिपाहियों के लिए यह डूब मरने की बात है! इससे बड़ी लज्जा की बात और क्या हो सकती है? सब खामोश रह गए। सन्नाटा खिंच गया।

एक बूढ़े सिपाही ने मौन भंग किया।

"हम अंग्रेजों के खिलाफ हथियार उठाकर क्या करेंगे?"

"क्या करेंगे!"—स्वर में व्यंग्य था—"और जगह के सिपाहियों ने क्या किया है।"

"......"

"हम भी बादशाह की मदद के लिए चलेंगे।"

"सुनते हैं, बादशाह को अंग्रेजों ने गिरफ्तार कर लिया है!"

"झूठ! यह अंग्रेजों की फैलायी झूठी खबर है! भला इस मुल्क के बादशाह को कौन गिरफ्तार कर सकता है!"

"हाँ, हाँ! बादशाह गिरफ्तार हुआ होता तो उसकी तरफ से तात्या और नाना साहब क्यों लड़ रहे हैं?"

"हम लोग भी अंग्रेजों के आधीन नहीं रहेंगे।"

"हाँ, हाँ!"

हवलदार अब तक चुपचाप बैठा सब देख सुन रहा था। सिपाहियों का निर्णय सुनकर उसने कहा—"भगवान के लिए तुम ऐसी बेवकूफी मत करना!"

"क्यों?"

"सबके सब मार डाले जाओगे। तोपों के मुँह पर बाँधकर उड़ा दिए जाओगे!"

"कौन उड़ाएगा तोप से?"—सुरजीतसिंह ने कड़ककर पूछा।

"अंग्रेज!"

"हम साले अंग्रेजों की नाक काट लेंगे।"—सुरजीतसिंह ने जोर से कहा—"और तुम अंग्रेजों का साथ दोगे, तो हम तुम्हारी भी नाक काट लेंगे!"

हवलदार को एक मामूली सिपाही की हेकड़ी देखकर जोश आ गया। बिगड़कर खड़ा हो गया।

"देखें! कौन मेरा कुछ बिगाड़ सकता है! तुम लोग अगर गड़बड़ करोगे, तो मैं अंग्रेजों का साथ दूँगा।"

सुरजीतसिंह भी कम न था। सुरजीत वह हवलदार को मारने झपटा, पर कुछ लोगों ने बीच-बचाव कर दिया। झगड़ा शान्त हो गया। लोगों ने समझा-बुझाकर हवलदार को वहाँ से हटा दिया। हवलदार के जाने के बाद भी सुरजीतसिंह का गुस्सा शान्त न हुआ था।

"इस साले को मैं खत्म कर दूँगा।"

सुरजीतसिंह ने घोषणा की।

※

छावनी में सन्नाटा खिंचा था। सिपाही निद्रा-मग्न पड़े थे। कुछ थोड़े से सिपाही इधर-उधर जाग रहे थे। उन की गति-विधि से मालूम पड़ रहा था कि वे सब कुछ करने के इरादे में हैं। दो-दो चार-चार के झुंड में बैठे हुए वे आपस में फुस फुसाकर बातें कर रहे थे। एक व्यक्ति बड़ी तेजी से उन सबके सामने से गुजरा और देखते-देखते अंधकार में गायब हो गया।

एक ओर से धीमा स्वर उठा—"तैयार!"

"......"

"बिगुल बजेगा! बिगुल! होशियार!!"

इसी समय तेजी से एक सिक्ख सिपाही दो आदमियों के साथ एक कोने से निकला। उसके हाथ में नंगी तलवार थी। देखते-देखते वह एक कोठरी के सामने आया। उसने आवाज दी।

"हवलदार !"

"......"

"हवलदार !"

कोठरी का दरवाजा खुला । हवलदार बाहर आया ।

"क्या है ?"

"होशियार ! तेरी मौत आ गई, गद्दार, देख मैं सुरजीतसिंह !"

हवलदार घबरा गया और देखते-देखते सुरजीतसिंह ने उसे मौत-घाट उतार दिया । हवलदार वहीं ढेर हो गया । उसी समय बिगुल बजा और पूरी छावनी में जयघोष गूंज गया ।

"बादशाह सलामत !"

"जिन्दाबाद !"

"नाना साहेब !"

"जिन्दाबाद !"

जयघोष के साथ साथ, तोपों और बंदूकों की आवाजें भी कड़क उठीं । छावनी के तमाम सिपाही इकट्ठे हो गए और सुरजीतसिंह के नेतृत्व में वे सब अंग्रेजों के बंगलों की ओर बढ़े । सिपाहियों के इस शोर से चारों तरफ हलचल मच गई । यह शोर शहर में भी सुनाई पड़ा । इससे और खलबली मची । शहर में भागदौड़ होने लगी । सिपाहियों के झुंड में बाहरी लोग भी आ मिले । शोर मचाते हुए ये सिपाही अंग्रेजी बस्ती की ओर दौड़े । बंदूकें छोड़ते आ रहे थे । सिपाहियों का यह शोर सुनते ही अंग्रेज घबड़ा गए । उठ-उठकर भागने लगे ।

सिपाही आ पहुंचे !

ढाँय ! ढाँय !!

मेजर किरके और कप्तान स्काट ने अंग्रेजों को भगाने की सलाह दी । सब भाग खड़े हुए, पर इस प्रयास में अधिकांश अंग्रेज मारे भी गए । मेजर किरके और कप्तान स्काट के साथ जो अंग्रेज रहे वे ही सुरक्षित नागौद से भाग सके ।

देखते-देखते नागौद से अंग्रेजी अमलदारी उठ गई ।

नागौद के सिपाहियों ने बगावत कर दी । नागौद पर सिपाहियों का झंडा फहराने लगा । एक भी अंग्रेज नागौद में न रहा । सिपाहियों की हुकूमत कायम

हो गई। सरदार सुरजीतसिंह ने सबेरा होते ही बादशाह के नाम एक फरमान जारी किया और घोषणा की, नागोद में आज से बादशाही हुकूमत है!

मेजर किरके के मन में जो शंका थी, वह सत्य उतरी। आखिर नागोद में विद्रोह हो ही गया। अधिकांश साथी मारे गए। थोड़े से ही प्राण बचाकर भाग सके हैं। उफ! कैसा भयानक है यह विद्रोह! मेजर किरके की समझ में ही न आता था कि यह विद्रोह कैसे हो गया? यहाँ के रहने वालों में इतना साहस कहाँ से आ गया? अपने तीस साल के इस जीवन में उन्होंने कभी भी ऐसे दृश्य देखने की कल्पना भी न की थी। इससे पूर्व उन्होंने ऐसे दृश्य देखे थे?

मेजर किरके की आँखों के सामने भारत के पिछले दिन झूल गए।

अंग्रेजों को देखते ही यहाँ के रहने वाले काँप उठते थे। गाँव के लोग तो उन्हें देखते ही यहाँ-वहाँ भागने लगते। स्त्रियाँ घरों में घुस जातीं। एक गोरा आदमी एक शहर में आतंक फैला देने लिए पर्याप्त होता था, पर आज वही लोग गोरों का कत्ल कर रहे हैं? कैसे आश्चर्य और साहस की बात है!

सुनसान स्थान पर अपने साथियों के साथ पड़े मेजर किरके की आँखों में नींद न थी। कहने को तो सब चुपचाप और आराम से पड़े थे, पर यह सब एक बहाना-मात्र था। सच तो यह था कि सभी घबड़ाए हुए और परेशान थे। कोई इधर करवटें बदल रहा था, तो कोई उधर! सब घबराए हुए थे। भागते-भागते सबकी हालत खराब हो गई थी। शराब की कौन कहे, भोजन तक का ठिकाना न था। मारे भूख के सबका हाल-बेहाल था।

नागोद से सब भाग तो खड़े हुए पर कहाँ जाँय?

मेजर किरके के मन में भय समा गया था। हर समय उन्हें ऐसा लगता कि आस-पास कहीं शोर हो रहा है और ढेर से सिपाही उन्हें मारने के लिए आ रहे हैं। अपनी इस कल्पना से मेजर किरके रह-रहकर चौंक पड़ते थे। सुनसान स्थान पर पेड़ों के नीचे सबने रात काटी।

सबेरा हुआ।

मेजर किरके को घेरकर सभी बैठ गए। भूख प्यास और धूल से भरे थे सब।

"चलना चाहिए!"

"......"

"लेकिन इस तरह हम कहाँ भागते रहेंगे ?"

"यहाँ से थोड़ी दूर पर छत्रपुर है ! वहाँ हम लोगों को मदद मिल सकती है ?"

"छत्रपुर में कौन है ?"

"विधवा रानी है । उसका नाबालिग बेटा है ।"

"मदद मिलेगी ?"

इस प्रश्न पर सभी अंग्रेज चुप रह गए क्योंकि स्थिति जैसी थी—उसके अनुसार कुछ भी अनुमान लगा सकना कठिन था ।

कप्तान स्काट बोले——"पता लगा लेने में नुकसान क्या है ?"

अन्ततः कप्तान स्काट की बात मान ली गई और नागौद से भागे तमाम अंग्रेज छत्रपुर की ओर बढ़ गए ।

*

कप्तान डगलस परीशान थे । अमरसिंह के हथकंडे समझ में ही न आ रहे थे । उन्हें ऐसा लग रहा था कि अमरसिंह कुँवरसिंह से अधिक खतरनाक व्यक्ति है । उसकी व्यूह रचना ने तो उन्हें परीशान कर दिया । दानापुर तक सैन्य संचालन का भार कप्तान डगलस पर था । उनके मातहत सात हजार शिक्षित सैनिक थे । स्थान स्थान पर छोटी-छोटी टुकड़ियाँ तैनात थीं । तमाम क्षेत्र में उनके अपने आदमी घूम रहे थे, पर अमरसिंह का पता ही न लगता था । कलकत्ता से बराबर पत्र आ रहे थे । दूत आ रहे थे और उसमें यही सब सूचनाएँ रहती थीं कि शीघ्र से शीघ्र हर संभव उपाय से विद्रोह दबा दिया जाय, पर यहाँ तो कोई उपाय ही कामयाब नहीं होता !

कप्तान डगलस की इस परीशानी को एक दूत ने आकर और बढ़ा दिया ।

उसने सूचना दी कि अमरसिंह एक टुकड़ी के साथ जगदीशपुर की ओर बढ़ता देखा गया है ।

"जगदीशपुर ?"

"जी हाँ !"

कप्तान डगलस ने स्वयं अमरसिंह का रास्ता रोकने का निर्णय किया और अपने नेतृत्व में एक टुकड़ी लेकर वह स्वयं जगदीशपुर की ओर बढ़े । हर हालत में अमरसिंह का उत्पात समाप्त कर देना आवश्यक है । इस तरह ढील देने से

काम न चलेगा । कप्तान डगलस ने पूरी शक्ति और क्षमता के साथ अमरसिंह को समाप्त करने का निश्चय दृढ़ कर लिया ।

कलकत्ता में बैठे प्रधान सेनापति की दृष्टि में वह अपने को अपमानित नहीं करना चाहते थे !

❁

तार पाते ही लार्ड कैनिंग की प्रसन्नता का ठिकाना न रहा !

बस ! अब सब समाप्त !

सब समाप्त !

उन्होंने संतोष की लंबी साँस ली । मन ही मन ईश्वर को लाखों धन्यवाद दिए । इस देश में इतना विकट विद्रोह दबाने में वह समर्थ रहे और उनकी लाज बच गई अन्यथा वे लंदन की लार्ड सभा में अपना मुँह दिखाने काबिल न रहते । लार्ड कैनिंग की आँखों के आगे पिछली स्मृतियाँ घूम गईं । वे तमाम दिन कितने भयानक थे । रात रात उन्हें नींद न आती थी और चौंक-चौंक कर उठ बैठते थे ।

मेरठ में बगावत हो गई ।

दिल्ली हाथ से निकल गई ।

बिहार में कुँवरसिंह गरज कर उठ खड़ा हुआ ।

लखनऊ हाथ से गया ।

कानपुर पर नाना साहब का अधिकार हो गया । तात्या टोपे आगे बढ़ रहा है । अजीमुल्ला अंग्रेजों की लाशों पर अट्टहास कर रहा है और वह झाँसी की रानी... एक के बाद एक स्थानों पर ऐसी चिनगारी फूटी कि सारा देश धधक उठा और एक प्रकार से सारे देश से अंग्रेजी अमलदारी उठ गई । स्थान-स्थान पर सिपाहियों का राज, बादशाह के नाम की हुकूमत ! चारों ओर से बगावत की खबरें । अंग्रेजी-जनता की त्राहि-त्राहि । लंदन में समाचार पर समाचार । लार्ड कैनिंग की उन दिनों क्या दशा थी ? पर बड़ी ही धैर्यता के साथ, धीरे-धीरे कदम बढ़ाए और एक के बाद एक सारा विद्रोह ठंडा कर दिया ।

दिल्ली आ गयी ।

लखनऊ पर अधिकार हो गया।

लखनऊ! उफ!! लखनऊ के लिए कितना बड़ा मूल्य चुकाना पड़ा। अंग्रेजों की सबसे बड़ी क्षति लखनऊ में ही हुई फिर भी लखनऊ पर अंग्रेजी-अधिकार हो गया।

झाँसी पा गए।

तार आया है। सामने रखा है। झाँसी की रानी मारी गई। युद्ध क्षेत्र से वह भागा और एक निर्जन स्थान में उसका देहान्त हो गया। किसी ने उसका अंतिम संस्कार कर दिया।

रानी जीवित हाथ न आ सकी।

कोई बात नहीं, पर उसका आतंक तो जाता रहा। अंग्रेजी राज्य की स्थापना के मार्ग की एक बड़ी दीवार ढह गई।

अजीमुल्ला मारा। तात्या टोपे, नाना साहब, बेगम हजरतमहल, बाँदा का नवाब, बस इने गिने लोग रह गए हैं। बिहार में अमरसिंह उत्पात कर रहा है। बस! यही इने गिने लोग हैं। इनको समाप्त करते कितनी देर लगती है। झाँसी की रानी ही के कारण तो विशेष डर था। वह भी अब समाप्त हो गई। लार्ड कैनिंग ने तुरन्त ही लन्दन को एक संदेश सर [illegible] के पास भेजा।

यह सौभाग्य की बात रही कि इस विद्रोह के समय हिन्दोस्तानियों में संगठन नहीं रहा अन्यथा शायद लार्ड कैनिंग को भी कलकत्ता छोड़कर भागना पड़ता। उत्तर भारत में लगी आग को कलकत्ता आते देर कितनी! इसमें संदेह नहीं कि बहुत ही संगठित ढंग से यह विद्रोह बनाया गया था। कानों कान उस समय पता न लगा, पर यह तो अब मालूम हो रहा है। जिस संगठित ढंग से यह उत्पात हुआ, उसी ढंग से यदि यह कार्य-रूप में परिणित हुआ होता तो अवश्य ही हमेशा के लिए अंग्रेजों को यहाँ से विदा लेना पड़ती।

अपनी इस कल्पना पर लार्ड कैनिंग मुस्कुरा उठे।

हिन्दोस्तानी...छोटे-छोटे टुकड़ों में बंटे देशी रजवाड़े,...भला ये कभी एक हो सकते हैं! इनके अपने स्वार्थ आपस में टकराते रहते हैं। इनमें कभी एका नहीं हो सकता है। जिस दिन एका हो जायगा, उस दिन अपने आप अंग्रेजी हुकूमत को उठ जाना पड़ेगा।

ऐसा नहीं होगा।

नहीं होने दिया जायगा।

अब विद्रोह समाप्त हो गया है। इसकी नींव और गहरे डालना पड़ेगी। इस देश में सामन्तशाही को ही उभाड़ा जायगा। इसी में अंग्रेजी-हुकूमत का कल्याण है।

लार्ड कैनिंग ने अपने सचिव को बुलाया।

आवश्यक निर्देश के पत्र लिखवाए। पूरे देश का नक्शा सामने था। कहाँ की क्या स्थिति है? यह उन्हें विदित था और इसी आधार पर वे आवश्यक निर्देश दे रहे थे।

मन प्रसन्नता से भरा था।

झाँसी की रानी की मृत्यु का समाचार उनके लिए एक वरदान से कम न था।

*

कप्तान स्काट किसी प्रकार साहस बटोरकर छत्रपुर आए। छोटा सा कस्बा! लगातार भागदौड़, भूख-प्यास और धूल-धूप से उनके चेहरे पर रौनक न था। चेहरा साँवला पड़ गया था। बुरी दशा थी। अतएव किसी का खास ध्यान आकर्षित न हुआ। अनुमान से कप्तान स्काट कस्बे में बढ़ते गए। एक बार और छत्रपुर आने का अवसर मिला था। अतएव स्मृति के भरोसे बढ़ते जा रहे थे। छत्रपुर का राज-भवन एक साधारण सा महल है। कई चक्कर के बाद वह राज भवन खोज निकालने में सफल हुए।

सन्तरी द्वार पर था।

कप्तान स्काट उसके पास गए।

"मुझे महारानी से मिलना है!"

"क्यों?"

"एक खास काम है!"

कप्तान स्काट के हिन्दी बोलने के ढंग से सन्तरी चौंक पड़ा। उसे सन्देह हुआ कि आगन्तुक अवश्य ही अंग्रेज है। अपने साथियों से वह इस बात को सुन चुका था कि आजकल काफी संख्या में अंग्रेज, सिपाहियों के डर से इधर-उधर मारे-मारे फिर रहे हैं।

छत्रपुर में शान्ति थी। छोटी सी रियासत में किसी प्रकार का गोलमाल न हुआ था। विधवा रानी शान्तिपूर्वक रह रही थीं। इधर-उधर से कुछ सिपाही छत्रपुर में अवश्य आए थे। एक-दो रोज डेरा लगाकर चले गए थे। छत्रपुर के लोगों की किसी ओर दिलचस्पी न थी।

सन्तरी ने पूछा—"तुम अंग्रेज हो?"

"हाँ!"

"अच्छा!"

सन्तरी अन्दर गया और थोड़ी ही देर में वापस आकर कप्तान स्काट को अपने साथ ले गया। इससे कप्तान स्काट के मन आशा बँधी कि शायद यहाँ कुछ आश्रय मिल जाय। सन्तरी के साथ वह रानी के सामने गए और अभिवादन किया।

रानी पूजा-गृह से निकली थीं।

"बैठो!"

कप्तान स्काट मूढ़े पर बैठ गया।

रानी का अनुकूल रुख देखकर कप्तान स्काट ने अपनी व्यथा कह सुनायी। अपने साथियों को कस्बे के बाहर छोड़कर वह सहायता के लिए आए हैं। रानी ने ध्यान से उनकी बातें सुनी।

बोलीं—"हमारे योग्य जो हो सके, कहिए?"

"हम लोग आश्रय चाहते हैं!"

"आश्रय दे सकना हमारे लिए कठिन होगा। हाँ, हम आपकी सहायता कर सकते हैं!"

कप्तान स्काट ने रानी की बात मंजूर कर ली।

छत्रपुर से आर्थिक सहायता पाकर नागोद से भागे अंग्रेज आगे बढ़े। आर्थिक सहायता पा जाने से उनमें नया जीवन आया। डूबते को तिनके का सहारा काफी होता है!

ॐ

भाई की मृत्यु से विदग्ध अमरसिंह के क्रोध और जोश की सीमा न थी। अपने साथियों के साथ वे जगदीशपुर की ओर बढ़ रहे थे।

जयघोष करती हुई उनकी सेना बढ़ती जा रही था।

"......"

अमरसिंह को कप्तान डगलस की गति-विधियों का पता था। अतएव कप्तान डगलस से पूर्व ही वह जगदीशपुर पहुँच जाना चाहते थे। अमरसिंह ने अपनी सेना को कई भागों में विभक्त कर रखा था। कुछ टुकड़ियों को उन्होंने शाहाबाद आरा की ओर बढ़ा दिया था। प्रत्येक टुकड़ी को यह आदेश था कि वे अमरसिंह की जय-जयकार करने के साथ-साथ इस बात की भी घोषणा करती चलें कि अमरसिंह उनके साथ हैं।

इस तरह के प्रचार से स्थान-स्थान पर कायम सैनिक-चौकियों को इस बात का पता ही न लगता था कि अमरसिंह हैं कहाँ?

कभी खबर आती कि अमरसिंह इस ओर हैं, तो थोड़ी देर बाद खबर आती कि अमरसिंह उस ओर है। इस कारण सैनिक चौकियाँ बड़े भ्रमों में पड़ीं और बढ़ते हुए कप्तान डगलस को इस बात की कोई निश्चित सूचना न मिल सकी कि वास्तव में अमरसिंह हैं किस ओर?

लगातार आने वाले समाचारों की समीक्षा के उपरान्त उन्होंने यह अनुमान लगाया कि अमरसिंह अवश्य ही शाहाबाद की ओर हैं। शाहाबाद की ओर से ही इस बात की जोरदार पुष्टि हो रही थी कि अमरसिंह वहीं हैं। अतएव कप्तान डगलस शाहाबाद की ओर बढ़ गए।

शाहाबाद पहुँचने पर उन्हें लौटना पड़ा। अमरसिंह उस ओर न थे बल्कि उनके कुछ साथी थे जिन्होंने शाहाबाद पर अधिकार कर लिया था। अमरसिंह के साथियों से व्यर्थ में ही युद्ध कर वह अपनी शक्ति क्षीण करना उचित न समझ मुख्य विद्रोही को ही घेरने आगे बढ़े।

जगदीशपुर आए।

पता लगा। अमरसिंह ने जगदीशपुर अपना अधिकार कर लिया है और युद्ध के लिए तत्पर हैं।

कप्तान डगलस को भुलावा देकर अमरसिंह तेजी के साथ जगदीशपुर आ गए थे। उनके वापस लौटते ही जगदीशपुर में उत्साह की लहर दौड़ गई। अमरसिंह के आगमन की खबर से जगदीशपुर की चौकी के अंग्रेज और गोरखे-

सिक्ख सिपाही भाग खड़े हुए। थोड़ी ही देर में जगदीशपुर पर अमरसिंह का अधिकार हो गया। तुरन्त अमरसिंह ने मोर्चे-बन्दी कर ली। जगदीशपुर आकर अमरसिंह ने सन्तोष की साँस ली। जगदीशपुर में टिककर वे अंग्रेजों का भली भाँति मुकाबला कर सकते हैं। अमरसिंह ने अपनी सारी मोर्चे-बन्दी कर ली।

कप्तान लगर्ड के आने का समाचार मिला। अमरसिंह इस आक्रमण का का सामना करने तैयार हो गए। किसी भी क्षण युद्ध ठन जाने की आशा बलवती होती जा रही थी।

❀

छत्रपुर से प्राप्त हुई सहायता डूबते को तिनके के सहारे के समान थी। इसी सहायता के बल अंग्रेज आगे भागे। मेजर किरके की दशा दिन पर दिन चिंतनीय होती जा रही थी। उनका मस्तिष्क विक्षिप्त हो गया था। हर समय वह सिपाही-सिपाही चिल्लाते और इधर उधर भागा करते। कप्तान स्काट के लिए मेजर किरके एक समस्या बन गए। किसी प्रकार सब मेजर किरके को अपने साथ लिये चल रहे थे।

मेजर किरके को हर समय सिपाहियों का भय रहता था।

"सिपाही आ गए। भागो! भागो!"

वह भाग खड़े होते।

साथी उन्हें खोजकर ले आते। जंगलों के रास्तों से अंग्रेज भागते जा रहे थे। राह में कभी-कभी कोई गाँव पड़ जाता, पर गाँव वाले उनको किसी प्रकार की सहायता न करते। डर के मारे इधर उधर छिपने लगते अथवा दुर-दुराकर भगा देते।

बड़े कष्टों से अंग्रेज आगे बढ़ रहे थे।

अपने प्राण किसे प्यारे नहीं होते!

अंग्रेजों की यह टुकड़ी जब नौगाँव की ओर बढ़ रही थी, तो मेजर किरके भाग गए और फिर एक दो रोज तक उनका पता ही न लगा कि कहाँ गए वह? सभी साथी चिन्तित हुए। उन्हें खोज निकालने का प्रत्येक परिश्रम व्यर्थ गया। नौगाँव के निकट पहुँचने पर मेजर किरके का पता लगा। मेजर किरके सड़क

किनारे एक खाई में मृत पड़े थे। अवश्य ही खाई में कूद पड़ने अथवा फिसल-कर गिर जाने से उनकी मृत्यु हुई थी।

साथियों ने उन्हें वहीं दफना दिया।

※

मेजर स्काट ने अपने साथियों का नेतृत्व सँभाला। अनेक कष्ट भोगते हुए सब अंग्रेज चरकारी रियासत आए। कप्तान स्काट अब मेजर थे। वही चरकारी नरेश के समक्ष अपने साथियों की ओर से उपस्थित हुए। सहायता की याचना की।

चरकारी नरेश ने कप्तान स्काट से भेंट नहीं की वरन कुछ शस्त्रधारी सिपाही दिए और उन सिपाहियों के संरक्षण में उन सबको कालिंजर भेज देने की व्यवस्था की। अंग्रेजों के लिए यही पर्याप्त था। उन सबने शस्त्रधारी सिपाहियों के संरक्षण में कालिंजर जाना स्वीकार कर लिया।

इस प्रकार की सुरक्षा-व्यवस्था से अंग्रेजों को कुछ राहत मिली। आशा थी, अगर सकुशल कालिंजर पहुँच गए तो वहाँ पर किसी प्रकार का कष्ट न होगा।

※

बेगम हजरतमहल ने आँसुओं से भरा चेहरा उठाकर कहा—"खुदा के वास्ते, अब तो चुप हो जाइए!"

बूढ़ा बादशाह हठात् हँस पड़ा। उसका चेहरा आँसुओं से तर था। आँसुओं से भीगे चेहरे की हँसी, दर्द के वेग का उफान थी।

"हाँ बेगम!"—बादशाह ने हँसकर कहा—"मुझे चुप हो जाना चाहिए। हमेशा के लिए चुप हो जाना चाहिए!"

बादशाह उठा और कमरे में चहलकदमी करने लगा। बादशाह की कमर झुक गई थी। चेहरे की झुर्रियाँ और गाढ़ी हो गई थीं। नंगे पैर, फर्श पर बाद-शाह टहल रहा था। बेगम जीनतमहल एकटक उसकी ओर देखती रह गई। यह हिन्दोस्तान का बादशाह है! इस बूढ़े के इशारे पर एक दिन हिन्दोस्तान डोलता था। आज वह इतना कमजोर हो गया है कि अपने पाँव में उसे जूती भी नसीब नहीं। मखमली ईरानी कालीनों पर चलने वाले पाँव आज नंगे, फर्श पर चल

रहे हैं। किस्मत का फेर! दिल्ली बादशाह के खानदान का आखिरी चिराग कैसी मायूसी के साथ बुझने जा रहा है!

बेगम जीनतमहल ने एक लंबी साँस लेकर सिर झुका लिया!

एक दिन वह था, जब अंग्रेज यहाँ आए थे। बादशाह के आगे हाथ जोड़कर खड़े होते थे और एक-एक हाथ जमीन की भीख माँगते थे, पर आज का यह भी एक दिन है, जब कि बादशाह अपने भिखारियों का बंदी है। कैदी है बादशाह! मामूली खाना और मामूली कपड़ा मिलता है!

हिन्दोस्तान का आफताब डूब गया!

सुनते हैं, बादशाह पर मुकदमा चलेगा। मुकदमा चलेगा बग़ावत का। मुकदमा चलेगा इस बात का कि बादशाह ने अंग्रेजों का कत्ल किया है! इंसान की किस्मत भी क्या-क्या रंग दिखलाती है! कैसे दिन पलटते हैं! सब कुछ गया। राज गया। इज्जत गई! सपना ढह गया और बादशाह कैदी है। अंग्रेजों ने दिल्ली पर कब्जा कर लिया। अब बादशाहत हमेशा के लिए उठ गई और राज हो गया कंपनी का! राज कंपनी का। हुकूमत अंग्रेज बादशाह की।

बेगम का दिल दर्द से कट गया, पर आँखों से आँसू न आ सके! दर्द था, पर आँसुओं की धारा सूख चुकी थी। असमय में ही बेगम को अपनी कमर टूटती मालूम पड़ रही थी। बंदी जीवन ने बेगम को भी काँटा कर दिया था। जीवन का सारा रस सूख चुका था। हड्डियाँ शेष थीं।

बेगम ने थाली खोली।

गोश्त और रोटी!

गोश्त के नाम पर सिर्फ हड्डियाँ ही थीं।

दो निवाले खाकर बेगम ने थाली रख दी। बादशाह शेर गुनगुनाते हुए टहल रहे थे। बेगम ने अटपटे शब्द ही सुने, हम तो सफर करते हैं, खुश रहो। बादशाह यह पंक्ति हर वक्त कहते रहते हैं। बादशाह की चहलकदमी बंद हुई और वह एक कोने में बैठ गए!

"बेगम!"

"जी!"

"इधर आओ।"

"......"

"क्या अब भी मैं जहाँपनाह हूँ ।"

"हाँ, परवर ?"

"नहीं बेगम ! अल्लाह के सिवाय इस दुनिया में और कोई जहाँपनाह नहीं ।"

"......"

"समझीं ।"

"......"

"जवाँबख्त कहाँ है ?"

"बगल के कमरे में है ।"

"सुबह से उसे देखा नहीं ।"

बेगम जीनतमहल उठी । दरवाजा खोला । दरवाजा खुलते ही पहरे पर तैनात चारों ओर सैनिकों ने संगीनें फैला दीं ।

"जवाँबख्त को भेजो ।"

"जी ।"

बेगम लौटकर आ गई । थोड़ी ही देर में जवाँबख्त आ गया । बादशाह ने उसे अपनी गोद में बैठाकर उसका सिर सूँघा ।

"बेटे ?"

"हाँ, अब्बाजान !"

बहादुरशाह मुस्कुराए । मौत की क्रूर मुस्कुराहट—"बेटे ! तू तो मुल्क का बादशाह होने वाला था न !"

जवाँबख्त खामोश रह गया । बादशाह के बोल सुनकर जीनतमहल फूट-फूटकर रो पड़ी । हाँ, जवाँबख्त मुल्क का बादशाह होने वाला था । वह न हो सका और आज अंग्रेजों की तोड़ी रोटियों का मुहताज है ! समय का फेर ! समय की मार बादशाह की भी कमर तोड़ देती है !

हथियारबंद सिपाहियों के पहरे में जाते हुए अंग्रेज गाँव की सीमा पर ठहरे । हथियारबंद सिपाही उनके पास ही बैठ गए । रात हो गई । अंग्रेज सो रहे और सिपाही भी इधर उधर, जहाँ जिसको जैसा स्थान उचित दीख पड़ा, लेट रहे ।

तीन चार सिपाही एक साथ लेटे थे।

सहसा एक सिपाही चौंककर उठ बैठा। उसने अपने कान तेज किए।

दूर से टुन-टुन की हलकी आवाज आ रही थी।

"यह कैसी आवाज है ?"

"हाँ, इधर से आ रही है !"

"हाँ !"

सभी सिपाही सतर्क हो गए। टुन-टुन की आवाज पास आती जा रही थी।

"बैलगाड़ी है क्या ?"

"बैलगाड़ी होती तो खाली घंटी की आवाज क्यों ? चक्कों की आवाज भी सुनायी पड़नी चाहिए थी !"

"हूँ !"

आवाज क्रमशः पास आयी। आवाज के साथ-साथ एक आकृति भी स्पष्ट होकर सामने आयी। एक साधु की आकृति थी वह।

"साधु है !"

"हाँ।"

साधु उन सबके पास आकर रुक गया।

"कौन है, बच्चा ?"

"सिपाही !"

"सिपाही ! बड़ा भाग्य है तुम लोगों का ! भाग्यवान हो बच्चा, जो सिपाही का जन्म लिया और मुल्क की खातिर लड़ रहे हो !"

"......"

"ये सब कौन सो रहे हैं ? ये भी सिपाही हैं ?"

"......"

"बोलो ?"

एक सिपाही ने काँपते हुए कहा—"ये अंग्रेज हैं बाबा !"

"राम ! राम !! मुझे कैसा धोखा हुआ। भगवान के रूप में कसाई कहाँ से मिल गए ! बच्चो, तुम लोग अंग्रेजों के खैरख्वाह हो ! छिः ! छिः !!"

वह साधु आगे बढ़ गया

उसके जाने के बाद सभी सिपाहियों में सन्नाटा छिा गया। सभी जैसे लकवा मार गया। उनकी धमनियों का सुप्त रक्त खौलने लगा!

साधु की लांछना का उन सबके मन पर गहरा प्रभाव पड़ा। एक सिपाही अत्यधिक उत्तेजित हो गया। उसने बंदूक तान ली और ललकारकर बोला—"मुँह क्या देखते हो! मारो फिरंगियों को।"

सिपाही टूट पड़े।

कुछ अंग्रेजों की नींद खुल गयी। भयंकर-दृश्य देख भाग खड़े हुए। कुछ सोते में ही मार डाले गए। बहुत थोड़े से अंग्रेज भाग सके। अंग्रेजों का कत्ल कर सिपाही जयघोष करते हुए गोगाँव की ओर बढ़ गए।

*

अपने ही जब विश्वासघात करते हैं, तो मनुष्य निरुपाय हो जाता है! प्रत्यक्ष शत्रु पर, चाहे वह कितना भी प्रबल क्यों न हो, अधिकार पा लेना आसान होता है, पर जब अपने ही विश्वासघात करते हैं, चाहे वे कितने भी अशक्त क्यों न हों, भारी हानि पहुँचा देते हैं। ग्वालियर की सेना ने जो कुछ किया, उसका भयंकर प्रभाव पड़ा। सिन्धिया की सेना के इस विश्वासघात के कारण सारी संगठित शक्ति छिन्न भिन्न हो गई और इसका प्रभाव यह हुआ कि झाँसी गई। महारानी गईं और सारा स्वप्न एक बारगी ही ढह गया।

विधि का विधान मेटा नहीं जा सकता है।

बूढ़े रामचन्द्र राव की आँखों के आगे सारे दृश्य घूम गए, पर सबको ईश्वरीय देन समझकर उन्होंने हृदय पर संतोष कर लिया। मनुष्य को न सुख में इतराना चाहिए और न दुःख में घबराना। सभी परिस्थितियों में एक-सा रहने वाला मनुष्य ही जीवन में कुछ कर पाता है!

रामचन्द्र राव के आगे यही एक विकट समस्या थी।

अब क्या हो?

झाँसी छूट गई। महारानी भी सदा के लिए चली गईं और महारानी की थाती। दामोदर राव! दामोदर राव की रक्षा करना ही उनका कर्तव्य है। झाँसी के वंश के इस आखिरी दीप को सँभालकर रखना है। महारानी का स्नेह-पुत्र! दामोदर राव!

क्या अंग्रेज इसे जिन्दा छोड़ेंगे ?

कभी नहीं !

जीवन भर झाँसी का नमक खाया है और इस संकट के समय क्या वह नमक हरामी कर सकते हैं ? क्या वह दामोदर राव को अंग्रेजों को सौंप सकते हैं ? प्राण रहते यह संभव नहीं । जब तक शरीर में एक बूंद भी रक्त रहेगा। दामोदर की वह रक्षा करेंगे । उनके पास जो कुछ भी संपत्ति है, वह सब दामोदर की रक्षा में लगा दी जायगी । रामचन्द्र राव ने इसका दृढ़ निश्चय कर लिया था !

तात्या और नाना साहब ने दामोदर का भार उन पर सौंप दिया है ।

अंग्रेजों से स्वयं वे लड़ रहे हैं और ऐसी दशा में उनके लिए यह संभव नहीं है कि दामोदर की वे लोग रक्षा कर सकें ।

तात्या और नाना से बिदा लेकर रामचन्द्र राव आ गए ।

समय समय पर वे सूचनाएँ भेजते रहेंगे ! पता नहीं, क्या होता है ? युद्ध में हार पर हार है । सिपाहियों की शक्ति घट रही है । अंग्रेजों का प्रभुत्व बढ़ रहा है । इस कारण अब यह संभव नहीं है कि दामोदर को कभी झाँसी मिल सके । अब यह सर्वथा असंभव है कि कभी दामोदर राव भी राजा हो सकेगा ! दामोदर के प्राण बचे रहें, यही बहुत है ! रामचन्द्र राव यही बहुत समझते थे । दामोदर राव के साथ इसीलिए वे घने जंगल में चले आए थे । यहाँ से दूर भी चले जाना चाहते थे ताकि अंग्रेज उनको किसी भी दशा में न पा सकें ।

दामोदर अभी अबोध है । माँ को न देख वह घबराता है । उसे यह सब क्या मालूम कि आज वह इस घोर जंगल में क्यों है ? जब दामोदर बड़ा हो जायगा, तभी उसे सब मालूम होगा और तब वह अपनी माँ पर गर्व करेगा। स्वतंत्रता के इस युद्ध में उसकी माँ ने जिस शूरता का परिचय दिया है । वह इतिहास में सदा अमर रहेगा ।

अमर रहेगी झाँसी । अमर रहेगी झाँसी की रानी ।

रामचन्द्र राव की आँखों आँसू टपक पड़े ।

❀

गगनभेदी नारे उठे ।

"महाराज जयाजी राव सिन्धिया—"

"जिन्दाबाद !"

"......"

लश्कर की ओर सेना बढ़ी जा रही थी। आगे-आगे सिन्धिया नरेश। उनके पीछे विशाल सेना चली आ रही थी। नाना प्रकार के झण्डे फहरा रहे थे। सबसे आगे-आगे अंग्रेजी झंडा था। अंग्रेज सेनापति भी साथ चल रहे थे। ग्वालियर पर अंग्रेजों का अधिकार हो गया था और अब महाराज जयाजी राव सिन्धिया को राज्यासन दिया जा रहा था।

इस उपलक्ष्य में ग्वालियर में बड़ी खुशियाँ मनाई गईं।

तोपों की सलामी दागी गई।

किले पर 'यूनियन जैक' फहराया गया और बड़े ही समारोह के साथ महाराज जयाजी राव को सिंहासन पर बैठाया गया। सर ह्यू रोज, रानर्ट हैमिल्टन, रॉजर मैकफर्सन, राबर्ट नेपियर आदि अंग्रेज सेनापति भी उपस्थित थे।

ग्वालियर पर बाकायदा ,महाराज जयाजी राव की आधीनता में अंग्रेजी राज की स्थापना की घोषणा की गई। महाराज ने अंग्रेज सेनापतियों का अभिवादन कर बाकायदा अंग्रेजी आधीनता स्वीकार की। महाराज की भूरि-भूरि प्रशंसा की गई और उन्हें ग्वालियर-नरेश बना दिया गया।

*

सर ह्यू रोज को लार्ड कैनिंग का स्वीकृति पत्र प्राप्त हो गया। वे प्रसन्नता से भर गए। उनका अपना काम समाप्त हो गया। जिस काम के लिए वे आए थे, वह पूरा हो गया। झाँसी का पतन हो गया। झाँसी और ग्वालियर पर फिर अंग्रेजी हुकूमत हो गई। यही उनको करना था। इसमें कामयाब हुए। इसमें कोई शक नहीं कि एक बहुत बड़ा मूल्य चुकाने के उपरान्त यह सब संभव हुआ है!

सर ह्यू रोज की आँखों के आगे रानी-लक्ष्मी का चित्र झूल गया!

जो न आफ आर्क!

इस देश की भूमि में भी ऐसी स्त्रियाँ हैं। एक स्त्री ने सारी अंग्रेजी-हुकूमत के दाँत खट्टे कर दिए। एक नारी ने अंग्रेजी सत्ता को हिला दिया और जिसने

कठोर श्रम के उपरान्त वह मारी जा सकी ? रानी लक्ष्मी का अंत हुआ। क्या ईमानदारी के साथ ऐसा किया गया ? सर ह्यू रोज की आत्मा उन्हें धिक्कार उठी। नहीं, नहीं ! ईमानदारी के साथ तो लड़ाई लड़ी ही नहीं गई। कहीं भी ऐसा नहीं हुआ। हर जगह पीठ में ही छूरा मारकर बागियों को हराया जा सका है। हर कदम पर हमने विश्वासघात किया।

राव साहब, दूल्हाजी बुन्देला, जयाजी राव जैसे फूट डालने वाले माध्यम अगर न होते तो झाँसी का जीतना, ग्वालियर का पाना असंभव था। दूल्हाजी बुंदेला ने ओरछा दरवाजा खोला और जयाजी राव ने ग्वालियर में विश्वासघात किया। वास्तव में यह विजय नहीं, हार थी। पीठ पर छूरा भोंककर की गई विजय, विजय नहीं कहलाती ! प्रत्यक्ष युद्ध में सफलता पाना अंग्रेजों के लिए असंभव ही था।

खैर, इस सत्य को कौन जानता है !

सभी यह जानते हैं कि अंग्रेजों ने ही विजय पायी और लार्ड कैनिंग को भी यही समाचार भेजा गया है।

अब शेष हैं, राव साहब, बांदा का नवाब और वह शैतान तात्या टोपे ! यही तीन शत्रु यहाँ हैं। इनसे राबर्ट नेपियर निपट लेंगे। प्रमुख शत्रु को तो वह समाप्तकर चुके हैं। ये तीनों युद्ध से भागे हैं और भगोड़ों का जीवन कितना ! कभी न कभी ये भी समाप्त हो जाँयगे।

अपना भार राबर्ट नेपियर पर सौंपकर अब आराम से वे कलकत्ता जा सकेंगे और वहाँ से स्वदेश !

सर ह्यू रोज ने मन ही मन ईश्वर को धन्यवाद दिया कि उनका अभियान एक तरह से सफल हो गया और वे कलंकित होने से बच गए।

अब राबर्ट नेपियर जानें और उनका काम जाने !

ॐ

उच्चाधिकारियों का सम्मेलन हुआ। राबर्ट नेपियर अब सर ह्यू रोज के स्थान पर प्रधान सेनापति नियुक्त हो चुके थे। शेष बागियों को दंडित करना अब उन पर ही था।

"आपका क्या अंदाज है ?"

"मैं तो समझता हूँ कि नाना साहब की बात ही झूठ है !"—ओकिलिन ने कहा—"यह आदमी जिंदा नहीं है और सिपाही या तात्या के आदमी झूठ-मूठ ही इसका प्रचार कर रहे हैं । मैं तो समझता हूँ कि इस तरह से ये हमें धोखे में डाले रहना चाहते हैं !"

"मैं इसे नहीं मानता !"—हैमिल्टन ने कहा—"मेरे अपने खास आदमियों ने खबर दी थी कि नाना को कालपी में देखा गया था ! मैं अपने आदमियों पर अविश्वास नहीं कर सकता हूँ !"

"हो सकता है कि यह नाना नामधारी कोई दूसरा आदमी हो !

"न ! मेरा एक आदमी नाना को खूब पहिचानता है और इस बात पर आप कभी भी यकीन न कीजिएगा कि नाना कानपुर में ही मर गया है । वह निश्चित रूप से तात्या के साथ है और एक प्रकार से वह तात्या का निर्देशक है !"

"माना कि नाना साहब जिंदा हैं । सवाल है, किया क्या जाय ?"

"करना क्या है ! सबको समाप्त करना है !"

रार्बट नेपियर ने आस-पास के क्षेत्र का नक्शा तैयार किया और उस पर बिन्दु बनाकर दर्शाया कि किस तरह से कहाँ कैसी सैनिक तैनाती करना है । यही तय पाया गया कि स्थान-स्थान पर सैनिक तैनाती करना है और ढंग से । यही ध्येय समझकर सारा कार्य किया गया । आफीसरों ने यही मिलकर तय किया कि सर्वत्र सैनिकों का जाल फैला दिया जाय और भागे हुए इन शत्रुओं की कार्रवाइयों को रोक-थामकर समाप्त कर देना ही ठीक समझा गया ।

रार्बट नेपियर के नेतृत्व में शेष बागियों के खिलाफ अभियान शुरू हो गया ।

सेनापति इंगलस के सहायक कप्तान ने खबर पाते ही सोन नदी की ओर कूच कर दिया और देखते-देखते वहाँ रुके सिपाहियों पर टूट पड़े । सिपाहियों को गोरी पलटन के आने की कुछ भी सूचना न थी । दिन छिपने से कुछ देर पहिले ही सहायक कप्तान ने अनायास यह आक्रमण कर दिया । अतएव असावधान सिपाहियों को भारी क्षति उठानी पड़ी ।

सिपाहियों की यह टुकड़ी सोन पारकर रामपुर पहुँचना चाहती थी। ऐसा हो न सका और सोन पार करने से पहिले ही आक्रमण हो गया। जो सँभल सके, वही मुकाबले पर डटे रह सके; पर उनकी संख्या काफी कम थी। अतएव उनको हारकर भागना पड़ा। कुछ मारे गए और कुछ घायल हो गए। कप्तान ने कुछ सिपाहियों को गिरफ्तार भी कर लिया।

सिपाहियों को खदेड़कर कप्तान डगलस के पास वापिस आया। लौटते समय सोन किनारे पड़ी नावों को भी उसने तोड़-फोड़ दिया। इस तरह इस स्थान को उसने हमेशा के लिए बागियों के हित में अनुपयोगी बना दिया। कैदी सिपाही डगलस के सामने पेश किए गए।

"तुम लोग कहाँ जा रहे थे?"

"रामपुर!"

"क्यों?"

"हमें बुलाया गया था!"

"किसने?"

"अमरसिंह ने!"

"अमरसिंह कहाँ है?"

"हमें नहीं मालूम!"

डगलस ने क्रूरता से काम लिया। कैदी सिपाहियों पर कोड़े बरसाए गए, पर किसी ने भी न बतलाया कि अमरसिंह कहाँ है! विवश होकर सेनापति डगलस ने उन सबको पटना भेज देने की व्यवस्था की। डगलस सिपाहियों की ऐसी भक्ति देखकर चिंतित हुए। पिछले अनेक महीनों से उनके सामने यही समस्या रहती है! अमरसिंह का कुछ पता ही नहीं लगता है। वह कहाँ है और किस फेर में है? इस विषय में कुछ भी ज्ञात नहीं होता है। स्थान-स्थान पर सैनिक चौकियाँ कायम हैं, फिर भी कोई उपयोगी काम नहीं हो पा रहा है।

सिपाहियों की छोटी-छोटी टुकड़ियाँ चारों ओर बिखरी हुई हैं। लूटपाट, मार-काट, उत्पात का बाजार गर्म है। ये टुकड़ियाँ छिट-फुट हमले कर परेशानी बढ़ा रही हैं। इनके इस गोरिल्ला-ढंग के युद्ध से इस क्षेत्र में शांति स्थापित नहीं हो रही है! ये सिपाहियों की टुकड़ियाँ सिर-दर्द बनी हुई हैं। सामने मुकाबला भी

नहीं होता। ज्यों ही गोरी पलटन पूरी तैयारी के साथ आगे बढ़ती है, वैसे ही ये भाग खड़े होते हैं।

जगदीशपुर पर फिर अमरसिंह का अधिकार है। पूरी तैयारी से नहीं! आस पास का उत्पात दबा कर ही जगदीशपुर पर आक्रमण करने का विचार था। वह अब कामयाब होता नहीं दीखता।

कप्तान डगलस की चिन्ता बढ़ती जा रही थी।

"ये लोग आक्रमण करने के बाद भाग जाते हैं!"

"जी हाँ!"

"एक काम कीजिए अब! हम भी अपनी घुड़सवार टुकड़ी कई हिस्सों में बाँट दें।"

"जैसा आप कहें।"

"ये घुड़सवार टुकड़ियाँ भगोड़ों का पीछा किया करें और आगे जाकर उन्हें रोक लिया करें। तब तक पीछे से हमारी पैदल टुकड़ी पहुँच कर उनका सफाया कर दिया करे।"

"......"

"ऐसी व्यवस्था किए बिना अब काम चलेगा नहीं!"

डगलस का यह सुझाव मान लिया गया और इसी योजनानुसार आगे का कार्यक्रम बन गया।

❀

"डगलस कहाँ हैं?"

"रामपुर से इसी ओर आ रहे हैं।"

अमरसिंह गंभीर हो गए। जगदीशपुर के पास अंग्रेजी पलटन पड़ी थी, पर अमरसिंह ने उस पर आक्रमण न किया। वे चाहते थे कि जब कप्तान डगलस आ जावें तभी हमला किया जाय। मामूली अंग्रेज आफीसरों के साथ-साथ वह डगलस के साथ भी एक बार कड़ा मुकाबला करना चाहते थे। इसी उद्देश्य से वे रुके हुए थे।

"और कुछ बात?"

"अब हमारी टुकड़ियों का पीछा घुड़सवार किया करेंगे !"

"शाबास ! मैं यही तो चाहता हूँ !"

अमरसिंह भी इसी स्थिति की तलाश में थे। वे अंग्रेजों की बलशाली घुड़सवार सेना को समाप्त कर देना चाहते थे। कई हिस्सों में बँटकर जब घुड़सवार सेना रहेगी और जब कोई टुकड़ी पीछा करेगी तो रस्तों और घने जंगलों की भूलयों के सहारे उन्हें सरलता से समाप्त किया जा सकता है! घुड़सवार सेना के नष्ट होने पर अंग्रेजों को खदेड़ना आसान हो जायगा।

अमरसिंह ने चारों ओर अपना व्यूह फैला रखा था। अपनी सेना को कई भागों में बाँटकर कई स्थानों पर तैनात कर रखा था। चारों ओर से डगलस को घेरकर वह आक्रमण करना चाहते थे इसीलिए वह जगदीशपुर आकर बैठ गए थे।

"अच्छा ! तुम जा सकते हो !"

गुप्तचर को विदाकर अमरसिंह अपने साथियों के साथ मशविरा करने के लिए दूसरे कक्ष में चले गए।

❀

साहस को खा जाती है निराशा !

निराशा की भावना सर्वत्र फैल रही थी और इसी कारण दिन पर दिन बागियों की शक्ति मिटती जा रही थी। स्थान-स्थान पर अंग्रेजों प्रभुत्व बढ़ रहा था और बागी सिपाही इधर से उधर फिर रहे थे। अधिकांश बागी सिपाही दूर-दूर के गाँवों में जाकर बस गए थे। क्योंकि यह अफवाह भी प्रबल थी कि हर एक बागी सिपाही को खोज खोजकर प्राण दंड दिया जायगा।

स्थान स्थान पर बागियों की गिरफ्तारी पर इनाम भी थे।

अधिकांश सिपाही नेपाल की तराई में या अन्य पहाड़ी प्रदेशों में भागकर शान्तिपूर्वक जीवन-यापन करने लगे थे ताकि कोई उन्हें बागी रूप में पहिचान न सके। नैराश्य की इस भावना ने उसी तेजी के साथ विद्रोह दबाना शुरू कर दिया, जिस तेजी के साथ वह उठा था। स्थान-स्थान पर शान्ति थी। लोग बागियों की चर्चा करने से भी डरते थे।

देश की आग ठंडी हो चुकी थी।

अंग्रेजों का रौबदाब बढ़ता जा रहा था।

सर्वत्र भय की लहर थी और कोई भी अंग्रेजों के खिलाफ एक शब्द भी कहने में डर रहा था।

लुके छिपे लोग बादशाह की चर्चा कर लिया करते थे। सारे देश को यह मालूम हो गया था कि बादशाह पर कम्पनी के आदेश से मुकदमा चलेगा और उन्हें फाँसी की सजा अवश्य मिलेगा। अपने बादशाह के लिए हर दुःखित था।

अफवाहें अब भी थीं।

अफवाहें खूब चलतीं और इसी की चर्चा थी कि अंग्रेजों की हुकूमत अब हमेशा के लिए कायम हो गई और इंग्लैंड की महारानी राज करने लगी है।

❀

तात्या टोपे ने आकाश की ओर देखा। आकाश साफ था। पक्षी उड़ रहे थे। हिन्दोस्तान के विशाल आकाश पर कुछ ही परदेशी पंछियों का राज है! तात्या लंबी साँस ले चुपचाप रह गया। मन क्षण-क्षण गुस्से से भरा था। तात्या फिर एक बार निस्सहाय स्थिति में आ गया था। राव साहब, मानसिंह आदि साथ थे। फिरोजशाह भी आ गया था। काफी विचार-विमर्श के बाद यह तय पाया गया कि यहाँ से निकल भागना ही अच्छा होगा।

ग्वालियर का आधिपत्य गया। एक बड़ी संख्या में सिपाही मारे गए। लक्ष्मीबाई समाप्त हो गई। दुःखी नाना शायद इस समाचार को पाकर किसी अज्ञात स्थान की ओर चले गए हैं। सारी शक्ति छिन्न-भिन्न हो चुकी है। सच पूछा जाए, तो यह विद्रोहियों की करारी हार है। एक प्रकार से हमेशा के लिए कमर टूट चुकी है। शायद भाग्य में ही यही था!

भाग्य!

तात्या टोपे के होंठों पर व्यंग भरी मुस्कुराहट खेल गई। भाग्य कर्म से बनता है। भाग्य की रेखाएँ कर्म से बनती हैं। भाग्यवादी अगर होता तो अब तक तात्या ने अंग्रेजों के आगे हथियार रख दिए होते और उसे जागीर या खिताब मिल

गया होता। (सर) सैयद अहमद की तरह गद्दारी वह नहीं कर सकता है। तात्या का कोई साथ दे या न दे, तो भी तात्या लड़ता रहेगा। अकेला लड़ता रहेगा। तात्या अकेला लड़ता रहेगा। नाना साहब साथ रहें या न रहें। आज जो भी उसके साथ हैं, वे भी अगर चले जाँय तो भी तात्या लड़ेगा। यह युद्ध आसानी से वह छोड़ नहीं सकता। भाग्य के नाम पर बैठ नहीं सकता। जो कर्म करते हैं, वे रास्ता पा जाते हैं। कर्मी पहाड़ में भी अपना रास्ता बना सकता है।

तात्या खेमे आया।

खेमे के बाहर चन्द सिपाही पहरा दे रहे थे। मुट्ठी भर सिपाहियों का पड़ाव पास ही पड़ा था। हजारों सिपाहियों में से बस यही शेष रह गए थे। तात्या को इस सबकी चिन्ता न थी। वह जंगल में भी सिपाही पैदा कर लेना जानता था। खेमे आकर तात्या बैठ गया।

"क्या विचार किया?"—मानसिंह ने पूछा।

"जयपुर अपने दूत भेजना चाहता हूँ। शायद कुछ कामयाबी मिले।"

पास ही बैठे फिरोजशाह का चेहरा उदास था। अब उसे कहीं से कोई आशा न थी। जिस आशा से वह तात्या के पास आया था वह कालपी के युद्ध में ही समाप्त हो चुकी थी। फिरोजशाह चुपचाप उदास बैठा रह गया।

"ठीक है। कोशिश करके देखना चाहिए।"

तात्या ने यही विचार किया था। इसीलिए वह खेमे से चुपचाप बाहर हो गया था। जयपुर को टोहकर देखा जाय। अगर कुछ सफलता मिलती है, तो ठीक है। तात्या को अंग्रेजी सेना की गति-विधियों का पूरा पता था। उसे पता था कि सर ह्यू रोज इस्तीफा देकर चले गए हैं। उनके स्थान पर राबर्ट नेपियर की नियुक्ति हुई है। ब्रिगेडियर स्मिथ उसकी टोह में घूम रहे हैं। क्या तात्या को पकड़ लेना इतना आसान है, जितना कि अंग्रेज समझते हैं। मन ही मन तात्या हँस पड़ा। इस जीवन में तात्या को पकड़ सकना अंग्रेजों के लिए संभव नहीं।

"एक विचार मेरा भी है।"—मानसिंह ने कहा।

"क्या?"

"यहाँ पड़े रहने से लाभ क्या! धीरे-धीरे हम लोग भी जयपुर की ओर

रहें !' मानसिंह ने सुझाव रखा—'जब तक दूत खबर लायेगा तब तक हम जयपुर के पास रहेंगे। जैसा होगा, देखा जायगा।"

"यह भी ठीक है।"

तात्या ने मानसिंह की बात मान ली।

काल्पी से बहुत दूर, घने जंगलों में तात्या का यह खेमा था। तात्या के भाग जाने का समाचार सभी सैनिक अड्डों को भेजा जा चुका था और अंग्रेज टुकड़ियाँ तात्या की तलाश करती फिर रही थीं। बचे हुए विद्रोहियों में तात्या का ही सर्वाधिक महत्व था। तात्या अपनी इस स्थिति को समझता था। वह इसी प्रकार कार्य कर रहा था। वह जानता था कि अब पग पग पर कठिन मुकाबला है। अपनी रक्षा करते हुए अंग्रेजों को परीशान करना है।

तात्या ने इस बात का फैसला कर लिया। कि वह खामोश नहीं बैठेगा। हार जाने से क्या होता है ! जब तक दम है, अंग्रेजों को परीशान करता रहेगा। उनकी हुकूमत वह आसानी से कायम न होने देगा। अगर जयपुर से बात तय हो जाय, तब तो फिर एक बार अंग्रेजों के छक्के छुड़ा दिए जाँय।

ग्वालियर की पराजय पर तात्या का मन दुःखित था। इस दुःख का वेग अधिक न था। इसे वह अपनी हार न समझता था। जिस युद्ध में विश्वासघात से कार्य किया जाय, वह कायरों का युद्ध है, वीरों का नहीं। अपने एक सहायक के विश्वासघात से इस पराजय का सामना करना पड़ा अन्यथा इस देश की ताकत को गोरे खा नहीं सकते। अगर इस देश के लोग गोरों की मदद न करें, तो गोरे इस देश में एक क्षण भी नहीं टिक सकते। घर के भेदिए ही लंका ढहाते हैं।

❀

कप्तान ईडन जयपुर में पोलिटिकल एजेंट थे। आस-पास के विद्रोह के समाचारों से वे अवगत थे और साथ ही जयपुर पर भी उनकी दृष्टि थी। झाँसी पतन और ग्वालियर पर अंग्रेजी अधिकार का उन्हें पता लग चुका था। इस बात का उन्हें विश्वास था कि अब बचे हुए बागी जयपुर की ओर ही आवेंगे। अपने आदमी उन्होंने जयपुर के आस-पास छोड़ रखे थे। कौन आया ? कौन गया और

कौन आने वाला है वे इसकी बराबर टोह लिया करते थे। राबर्ट नेपियर से उनका संबंध बराबर बना था। कप्तान ईडन भली-भाँति अपना कार्य कर रहे थे।

॥

राबर्ट नेपियर अपना एक मंत्र जानते थे। यह मंत्र उन्हें अपने सहयोगियों से ही मिला था। सदा कूट-नीति से काम लो। भारतियों से प्रत्यक्ष युद्ध में विजयी होना हमेशा महँगा रहेगा। हथियार के बल हिन्दोस्तानियों को दबाए रखना मुश्किल है। बिना झिझक के प्रत्येक हथकंडा काम में लाना चाहिए। बिना इसके इस देश में निर्वाह नहीं।

तात्या की खोज में कई हथकड़ियाँ थीं।

स्थान-स्थान पर सैनिक चौकियाँ थीं और बराबर तात्या की खोज हो रही थी। हर संभव उपाय से नाकेबंदी की जा रही थी, पर तात्या के संबंध में अब तक कुछ भी खबर न मिली थी। बाँदा के नवाब का भी कुछ पता न था। राबर्ट नेपियर के सामने अब एक ही रास्ता था कि तात्या के साथियों को मिलाया जाय, तभी तात्या के साथ कुछ करना संभव है अन्यथा वह इसी प्रकार सिर-दर्द बना रहेगा। बिना इस युक्ति के काम संभव नहीं। राबर्ट नेपियर की दृष्टि में तात्या के साथ मानसिंह ही ऐसा एक आदमी है, जो हृदय का कुछ कमजोर है।

मानसिंह को अगर किसी प्रकार मिलाया जा सके, तो ठीक है।

राबर्ट नेपियर इसी उपाय को कार्य रूप देने के लिए विचार करने लगे!

सहसा कप्तान ईडन से यह सूचना पाकर वे चौंक पड़े कि तात्या के कुछ दूत जयपुर आ रहे हैं और वे तात्या का कुछ संदेशा लिए हैं।

राबर्ट नेपियर ने तुरन्त कप्तान सार्वस को इसकी सूचना दी। आदेश पाते ही कप्तान सार्वस अपने अभियान पर आगे बढ़ गए।

॥

रात का तीसरा पहर शुरू होते ही कप्तान ईडन अपने साथ कुछ गोरे सैनिकों को लेकर आगे बढ़े। तात्या के दूतों के आगमन का समाचार उन्हें अपने आदमियों के द्वारा मिल चुका था। इसकी सूचना वह राबर्ट नेपियर को दे चुके

थे। जयपुर में प्रवेश करने के पहिले ही वह उन दूतों को पकड़ लेना चाहते थे। इस अभियान का नेतृत्व स्वयं कप्तान ईडन कर रहे थे।

शहर फसील से बाहर आने पर कप्तान ईडन ने अपने दल को दो हिस्सों में बाँट दिया। दोनों दिशाओं में कप्तान ईडन के लोग बढ़ गए। दूतों के सम्बन्ध में उन्हें पता लग चुका था कि वे साधु वेश में आ रहे हैं। चुने हुए साथियों के साथ कप्तान ईडन उनकी खोज में जा रहे थे।

कुछ आगे आने पर एक ओर उनका ध्यान गया।

एक बड़े वृक्ष के नीचे आग धधक रही थी। कोई वहाँ ठहरा है? इस अनुमान से कप्तान ईडन उस ओर बढ़े। नजदीक जाकर देखा धूनी रमाए कुछ साधु! ईडन को भरोसा हो गया। यही तात्या के दूत हैं। पलक झपकते ही सबको घेर लिया।

घुड़सवार सैनिकों द्वारा घिर जाने पर भी साधु मंडली तनिक भी विचलित न हुई। सब शान्त भाव से धूनी के पास बैठे रहे। कोई भी अपने स्थान से हिला डुला नहीं।

"कौन हो तुम लोग?"

"......"

"कौन लोग हो?"—कप्तान ईडन ने कड़ककर पूछा।

"साधु!"—धीमा उत्तर मिला।

"साधु! हम तुम लोगों की तलाशी लेंगे।"

साधुओं ने निर्विकार भाव से अपना कमंडल, त्रिशूल आदि अन्य सामान आगे कर दिया। उन लोगों की उदासीनता और निर्विकार भाव देखकर कप्तान ईडन को कुछ कुछ विश्वास हुआ कि वे सचमुच साधु हैं। यह तात्या के दूतों की मंडली नहीं, वरन सचमुच साधुओं की जमात है। फिर भी वह अपने मन को संतुष्ट कर लेना चाहते थे। साधुओं के सामान की तलाशी लेने पर उनके पास से कोई ऐसी वस्तु प्राप्त न हुई, जिससे कि साधुओं पर कुछ संदेह किया जा सके। फिर भी ईडन उन्हें यों ही छोड़ने वाले न थे।

"कपड़ों की तलाशी लो।"

"बच्चा, हम लोग साधु हैं। भगवान के आदमियों को तंग नहीं करना चाहिए।"

"नहीं। हम तुम्हारी तलाशी लेंगे।"

बारी-बारी से प्रत्येक साधु की तलाशी ली गई। फिर भी कुछ न मिला। ईडन बड़े फेर में पड़े। उन्हें विश्वास था कि तात्या ने लिखित संदेश अवश्य भेजा होगा। दूत से मौखिक काम न लिया होगा, पर यहाँ तो स्थिति ही उलटी थी। साधुओं पर संदेह रहने पर भी उनके पास से ऐसी कोई भी वस्तु न मिली थी, जिससे कि संदेह किया जा सके।

ईडन ने फिर से तलाशी लेने की ठानी।

एक त्रिशूल के ऊपर डमरू बँधा था।

ईडन का माथा ठनका। शायद उस डमरू में कुछ हो?

"फोड़ो इसे।"

ईडन का आदेश सुनते ही एक हट्टा कट्टा साधु थरथरा गया। उसने आगे बढ़कर गोरे का रास्ता रोक लिया। बोला—"आप ऐसा नहीं कर सकते!"

"......"

"यह हमारे ईश्वर का प्रतीक है। इसे आप तोड़-फोड़ नहीं सकते।"

"अवश्य तोड़ा जायगा।"

डमरू फोड़ा गया और ईडन के मुँह से आश्चर्य मिश्रित हर्ष की चीख निकल गई। उस डमरू में से एक पत्र बाहर निकल पड़ा।

ईडन अपने अभियान में सफल हुए।

"बंदी बना लो सबको!"

ईडन सबको पकड़कर ले आए। उस पत्र को खोलकर पढ़ा गया। पत्र जयपुर नरेश के नाम था, जिसमें तात्या ने अंग्रेजों की मट्टी मट्टी खिल्लियाँ उड़ाते हुए, जयपुर नरेश से सहायता का निवेदन किया था। पत्र बड़ी ही उत्तेजित भाषा में लिखा गया था। पत्र से इस बात का सुबूत मिल गया कि ये सब साधु वास्तव में तात्या के दूत हैं।

ईडन फिर बंदियों के सामने आए।

उन लोगों ने तात्या के आदमी होने की बात स्वीकार कर ली, पर यह बताने

से इंकार कर दिया कि तात्या कहाँ है ? ईश्वर की साक्षी में [illegible] और बड़े से बड़े प्रलोभन के आगे वे झुक न सके । [illegible] इस [illegible] की [illegible] सूचना राबर्ट नेपियर के पास भेजने का प्रबंध किया गया, पर इसी बीच [illegible] किसी प्रकार चकमा देकर भाग गया ।

*

अपने सेनापति से समाचार पाते ही कप्तान सार्वेस [illegible] में [illegible] । [illegible] सैनिक चौकियाँ भी सतर्क कर दी गईं । चारों ओर तात्या की खोज में सैनिक छोड़ दिए । नसीराबाद से भी एक सैनिक टुकड़ी तात्या की खोज में चली ।

कप्तान सार्वेस निकट के घने जंगल की ओर बढ़ रहे थे । [illegible] पैदल टुकड़ी उनके काफी पीछे थी । कप्तान सार्वेस को ऐसी सूचना मिली थी कि तात्या अपने कुछ साथियों के साथ इसी घने जंगल को रात में [illegible] को पार [illegible] । घने जंगल में दो चार लकड़हारों को छोड़कर और किसी से भेंट न हुई । कप्तान सार्वेस चुप-चाप चले जा रहे थे ।

"साहब, आगे कुछ लोग हैं ।"

"कौन ?"

"देखने से तो लकड़हारे मालूम पड़ते हैं, पर मुझे कुछ शक है ।"

"देखा जाय !"

कप्तान सार्वेस आगे बढ़े । चार पाँच आदमियों का एक झुंड मिला । कप्तान सार्वेस को देखते ही सब भाग खड़े हुए । [illegible] का, [illegible], और [illegible] का एक आदमी खड़ा रह गया । वह भागा नहीं । उसने कप्तान सार्वेस का बड़े ही [illegible] से अभिवादन किया ।

"तुम कौन हो ?"

"मैं यहीं का रहने वाला हूँ ।"

"तुम्हारे साथ कौन थे ?"

"रास्ते में मिल गए थे । जहाँ तक मैं समझता हूँ, वे व्यापारी थे ।"

"तुमने किसी और को यहाँ देखा है ?"

"कुछ आदमी पीछे हैं ।"

"कितने ?"

"आठ दस ।"

"अच्छा ! तुमने तात्या टोपे का नाम सुना है ?"

"तात्या टोपे ! तात्या टोपे !"—वह प्रसन्नता से उछल पड़ा—"हाँ, मैं तो इसे जानता हूँ । बड़ा अच्छा आदमी है ।"

"तुम जानते हो ?"

"जी हाँ ।"

"कहाँ है ?"

"यहाँ से थोड़ी दूर पर ठहरा है । आज ही मैंने उसे एक सेर दूध भेजा है और आप जानते हैं, एक सेर दूध का उसने कितना दाम दिया है ? अंग्रेज भी इतना नहीं दे सकते ! एक गिन्नी ।"

"हमें वहाँ ले चलो ।"

"आइए !"—फिर वह रुककर बोला—"नहीं, मैं ऐसा नहीं करूँगा, क्योंकि तात्या टोपे ने मुझसे कहा है कि मैं उसका पता किसी को न बतलाऊँ । वह मुझे इनाम देगा ।"

"उससे चौगुना इनाम हम तुम्हें देंगे । हमें उसके पास ले चलो ।"

"नहीं साहब !"

"खबरदार !"—सावेंस ने बंदूक तान दी—"हम तुम्हें गोली मार देंगे ।"

वह अधेड़ हँस पड़ा—"आप गोली मार दीजिए । मैं बताने का नहीं । फिर इतने सारे आदमियों को लेकर जाऊँ ?"

"......"

"अगर आपको देखना है, तो सिर्फ आपको ले चलूँगा । यहाँ से थोड़ी ही दूर पर है वह आपके साथी तब तक यहीं रहें ।

कप्तान सावेंस ने राहगीर की बात स्वीकार कर ली । अपने साथियों को वहीं रुकने और गोली चलने का संकेत होने पर दौड़ पड़ने का आदेश अंग्रेजी में देकर वह उसके साथ चल पड़े । राहगीर उनके घोड़े के आगे-आगे चल रहा था । कप्तान सावेंस साहस के साथ आगे बढ़ रहे थे । सोच रहे थे अगर आज वे तात्या

टोपे को मार गिराने में या कैद करने में सफल हो जाएं तो उनकी तरक्की होगी और उनका काफी नाम होगा। इन्हीं ख्यालों में डूबे कप्तान सार्विस चल रहे थे।

"यहाँ उतर जाइए!"

कप्तान सार्विस गाड़ी से उतरकर उसके साथ हो गए।

"आइए।"

घनी झाड़ियों के पास राहगीर रुक गया।

बोला—"वो देखिए। वो है तात्या!"

कप्तान सार्विस ने जैसे ही उस ओर देखा, वैसे ही वह राहगीर चीते की तरह उछला और उसने एक ही हाथ में उन्हें दे मारा। कप्तान सार्विस जैसे ही गिरे वह उनकी छाती पर चढ़ बैठा और कमर से रस्सी निकालकर सार्विस की मुश्कें कस दीं। पलक झपके ही सारा काम हो गया।

हँसता हुआ हाथ झाड़ वह खड़ा हो गया।

"तात्या को देखा!"

"....."

"अगर न देखा हो, तो जी-भरकर देख लो! तात्या तुम्हारे सामने खड़ा है।"—और तात्या अट्टहास कर उठा।

"....."

"अच्छा! फिर मिलेंगे कैप्टन!"

तात्या घनी झाड़ियों में विलीन हो गया।

*

वैद्यराज तात्या के सामने उपस्थित हुआ। अभिवादन किया।

बोला—"मैं अकेला बचकर आ सका। बाकी लोग जयपुर में गिरफ्तार कर लिए गए।"

वैद्यराज ने पूरी घटना कह सुनायी। पूरा विवरण सुनने के बाद भी तात्या अविचलित रहा।

"बढ़ने वाले को कोई रोक नहीं सकता।"—बुदबुदाकर वह खड़ा हुआ।

तात्या समझ गया। जगपुर की ओर बढ़ने से अब लाभ नहीं। अंग्रेजों को पता लग चुका है और वे सब नाकाबंदी करके बैठे होंगे। तात्या ने माधोपुर या इन्द्रगढ़ की ओर बढ़ने का निश्चय कर लिया। इतनी आसानी से वह हाथ नहीं आ सकता!

तात्या अपने चुने हुए साथियों को ले आगे बढ़ गया।

❀

बिरजिस कादिर की ओर देखकर बेगम हजरतमहल की आँखें भर आयीं। लगातार संघर्ष के बाद भी कुछ हाथ नहीं लगा और अंग्रेजी शक्ति के आगे झुक कर पीछे हटना पड़ा। सब संगी-साथी गए। बीस-पचास सेवकों के साथ कब तक अपनी रक्षा कर सकती हैं। मौलवी मारा। एक-एक करके सभी साथी गए। इस युद्ध का बड़ा मूल्य चुकाना पड़ा। सब कुछ खोकर रोना पड़ा।

नवाब पहिले से ही कलकत्ते में अंग्रेजों के बन्दी हैं। वहाँ सब कुछ लुट गया।

सब कुछ लुट जाने पर भी बेगम के मन सन्तोष था। अपनी ओर से पूरी शक्ति लगाने के बाद भी अगर उसका कुछ फल नहीं मिलता है, तो इसमें दोष किसका! अपनी ओर से अपनी हुकूमत की मजबूती के लिए जी-तोड़ कोशिश की। कुछ हाथ न आया, तो इसमें अफसोस की क्या बात! किस्मत का लिखा नहीं मिटा, तो अफसोस क्यों करना? यही सब सोचकर बेगम हजरतमहल ने अपने मन को समझा लिया। लखनऊ से दूर, बहुत दूर एकान्त में वह बिरजिस कादिर के साथ पड़ी थीं।

चारों ओर अंग्रेजी टुकड़ियाँ उनकी तलाश में घूम रही थीं। किसी भी वक्त गिरफ्तार हो जाने की आशंका थी। बेगम इस ओर से भी निश्चिन्त थीं। अगर गिरफ्तार हो जायगी तो ऐसा होने से पहिले वह अपनी आत्म-हत्या कर लेगी और इसके लिए बेगम की कमर में एक तेज खंजर हमेशा तैयार रहता।

कुछ ही देर बाद उस बियाबान जंगल में घोर अँधेरा छा गया। बेगम के सेवकों ने पड़ाव के आस-पास आग जला दी ताकि जंगली जानवर पास न आ सकें। बिरजिस कादिर को अपने साथ ले बेगम आराम करने चली गईं। गहरा सन्नाटा छा गया। दो-चार सेवक ही जागते रहे।

पास आहट हुई।

सेवक चौंक पड़ा।

"क्या है?"

"कहाँ?"

"यहीं कहीं। कुछ सुरसुराहट आ रही है!"

"हाँ, है तो!"

दोनों सेवक तैयार हो गये आने वाले संकट का सामना करने। देखते-देखते एक हट्टा कट्टा, पर बूढ़ा सा आदमी उनके सामने आकर खड़ा हो गया।

"कौन है?"

"डरने की बात नहीं। मैं तुम लोगों का खैरख्वाह हूँ!"

"तुम कोई भी हो, तुम्हारे यहाँ आने का मतलब?"

"मैं बेगम के नाम खत लाया हूँ। इसे बेगम के पास भेज दो!"—कहते कहते उस आदमी ने एक पुर्जा सैनिक के हाथ पर रख दिया और अन्धकार में विलीन हो गया। उसे उत्तर की आवश्यकता न थी।

❀

तात्या टोपे ने सहसा राह बदल दी।

"हम दक्षिण की ओर चलेंगे!"

तात्या के इस अनायास निर्णय से उसके साथी बड़े हैरान हुए, पर तात्या अपने निश्चय का दृढ़ आदमी। इन्दरगढ़ की ओर बढ़ते हुए सहसा उसके मन में शंका हुई कि अवश्य ही अंग्रेज इस ओर भी उसकी राह रोक लेंगे। इससे अच्छा कि वह दक्षिण की ओर बढ़ जाय और वहाँ कुछ सैन्य सजाकर इस ओर आये। इसी उद्देश्य से तात्या ने हठात् अपनी राह बदल दी।

तात्या तूफान सा चलता। सुबह चलता तो आधी रात के बाद ही रुकने की साँस लेता और इस प्रकार एक दिन में तीस तीस, चालीस-चालीस मील निकल जाना उसके बाँए हाथ का काम था। पहाड़ों को भी तोड़ कर अपना रास्ता बना लेने की क्षमता तात्या टोपे में थी। इसी अदम्य उत्साह के बल पर देखते देखते वह वीर दक्षिण की ओर बढ़ चला।

तात्या सतर्कता के साथ चलता। हर रियासत की सीमा पर पहुँचने से पहिले वह अपना वेश बदल लेता। कभी अकेले आगे निकल जाता कभी कुछ

साथियों के साथ ! दक्षिण की ओर बढ़ते समय उसे अनेक कष्टों का सामना करना पड़ा, पर कष्टों से लड़ना उसने जन्म से सीखा था।

नाना का साथ हमेशा के लिए छोड़कर तात्या अब अपनी जिंदगी के नए रास्ते पर था। एक बार फिर वह अपनी शक्ति की परीक्षा कर लेना चाहता था। उसे विश्वास था, एक छोटी सी चिनगारी पूरा गाँव जला सकती है।

तात्या को रोकने के लिए चारों ओर से सैनिक कटिबद्ध थे। स्थान-स्थान पर तात्या की हुलिया और उसके विषय की आवश्यक हिदायतें भेजी जा रही थीं। हर स्थान के अंग्रेज तात्या के प्रति सतर्क किये जा रहे थे। तात्या बढ़ रहा था। उसके मन को दुःख था। यह देखकर कि स्थान-स्थान पर फिर अंग्रेजी अमलदारी कायम हो गई है। लोग खामोश हो गए हैं और अंग्रेजों के प्रति किसी के मन में तनिक भी असन्तोष नहीं। बरसों के यत्न से देश में जो आग सुलगायी गई वह शीघ्र ही बुझ गई। इसकी आशा उसे कभी न थी। इसीलिए तात्या का मन कभी-कभी बैठ जाता था। फिर भी वह बढ़ रहा था। हर स्थान पर पहुँचते ही उसके मन में नूतन उत्साह आ जाता। दुगुनी शक्ति से आगे बढ़ जाता।

४३

सेवक से पत्र पाकर बेगम हजरतमहल ने उसे पढ़ा। पढ़ते ही चौंक पड़ीं। उनकी आँखों के सामने एक मराठा सरदार की मूर्ति साकार हो उठी। इस मराठे को वह देख चुकी है। विद्रोह से बहुत पहिले वह लखनऊ आया था।

लखनऊ में उसने अंग्रेजों की खूब आवभगत की। वह तीर्थ-यात्रा का बहाना किए हुए था, पर वास्तव में उसके मन में कुछ और ही उद्देश्य था। अपनी इस ध्येयपूर्ति के लिए वह उनसे मिला भी था। लगातार दो घंटे तक उससे बातचीत हुई थी। वास्तव में वह विद्रोह की योजना बनाने आया था। सिपाहियों के हिन्दोस्तानी अफसरों से भी वह मिला था। इस प्रकार तीन दिन लखनऊ में रह कर वह फिर चला गया था। इसके बाद विद्रोह हो गया।

इसी मराठे ने कानपुर पर अपना कब्जा कर लिया।

लखनऊ के सिपाहियों को उसने अपनी ओर बुलाया, पर मौलवी के कारण

सिपाही न आगे [illegible] और न ही कोई दूसरा [illegible] आ सका। फिर भी उस शंका के कारण [illegible] है। इस घराने की ईमानदारी में तनिक भी अविश्वास की गुंजाइश नहीं।

[illegible]!

बेगम ने अपने सैनिकों को आगे बढ़ने का हुक्म दिया।

यह पत्र नाना साहब का था। उन्होंने बेगम को बुलाया था कि वह चाहें तो उनके पास आकर आश्रय ग्रहण कर लें। यथा सम्भव वह उनकी रक्षा का प्रबंध करेंगे। शीघ्र ही वह आ जाएँ। वह उनकी ही प्रतीक्षा में हैं। बेगम ने नाना साहब का यह प्रस्ताव स्वीकार कर लिया।

४६

"वह रहा!"

अंग्रेज कप्तान चीख पड़ा।

घुड़सवार सैनिक तेजी से दौड़े। नर्मदा के तट पर तेजी से कुछ आदमियों का झुंड बढ़ा जा रहा था। घुड़सवारों को देखते ही ये सब भाग खड़े हुए। घुड़सवार सैनिकों ने तेजी से उनका पीछा किया। इससे पहिले कि वे सब किनारे तक पहुँच सकें, भागने वाले आदमियों का झुंड धड़ाम-धड़ाम कर कर नर्मदा में कूद पड़ा।

"फायर!"

एक साथ पचीसों बन्दूकें कड़क उठीं, पर पानी की उठती गिरती लहरों के अतिरिक्त और कोई न दीख पड़ा।

कप्तान ने गौर से देखा।

बीच धारा में कुछ सिर दिखलायी पड़ रहे थे। वे सब बन्दूकों की मार के पहुँच के परे थे। कप्तान हाथ मलता रह गया। भागे हुए लोगों को पकड़ने का अब कोई उपाय नहीं। इस पार खड़ा-खड़ा वह क्रोध से दाँत पीसता रह गया और भागे हुए तमाम लोग उस पार निकल गए।

"भाग गया!"

कप्तान बुदबुदाया और अपने साथियों के साथ लौट पड़ा। बड़ा अफसोस

हो रहा था कि तात्या पहुँच से बाहर भी निकल भागा। इस बार उसका निकल भागना बहुत ही बुरा हुआ। तात्या का नर्मदा पार हो जाना खतरे से खाली नहीं। पूरी अंग्रेजी हुकूमत इस बात की कोशिश कर रही कि तात्या किसी भी हालत में नर्मदा पार न कर सके क्योंकि उसका ऐसा करना खतरनाक होगा।

कप्तान लौर आगा ने तुरन्त अपने अफसरों को इस घटना की सूचना दी कि तात्या नर्मदा पार हो गया।

❀

भालाधारी सिपाहियों ने रास्ता रोक लिया।

"बेगम हजरतमहल हैं!"

"......"

"आने दो।"

सिपाही अदब से हट गए। सेवकों के बाद बेगम हजरतमहल ने प्रवेश किया। घने जंगल में एक विशाल वृक्ष तले नाना साहब बैठे थे। उनके चारों ओर सिपाही तैनात थे। बेगम हजरतमहल ने नाना साहब की ओर देखा। नाना के चेहरे की झुर्रियाँ और उभर आयी थीं। एक ही झलक में यह स्पष्ट हो जाता था कि नाना बहुत हारे-थके हैं और अब उनके जीवन में नैराश्य छा गया है।

बेगम का हृदय बैठ गया।

लखनऊ में जब इस पेशवा से भेंट हुई थी, तो वह किस तरह अदम्य उत्साह से भरा हुआ था। उसकी एक-एक नस फड़कती थी। लगता था, अंग्रेजों को कच्चा चबा जाने के लिए साक्षात काल ने अवतार लिया है। आज वही शख्श किस तरह हारा-थका और मायूस बैठा है!

"आइए!"

नाना साहब ने आगे बढ़कर बेगम का स्वागत किया। बिरजिस कादिर का हाथ पकड़कर नाना ने उसे अपने पास बैठा लिया। क्षण भर को नाना सिहर उठे। काश! आज की यह मुलाकात उस समय हुई होती जब लखनऊ पर आजादी की पताका फहरा रही थी। उस समय क्या ऐसे ही शान्त, गम से भरे

वातावरण में सब लोग मिलते ? नहीं, उस समय आप अवध भर में विद्रोह फूँक उठतीं। और तब...तब अंग्रेजी अमलदारी की कौन कहे, दुनिया की कोई शक्ति लखनऊ को छू नहीं सकती ! भाग्य का फेर ! नाना एक लंबी साँस लेकर रह गए। जो होना था, सो हुआ। अब अफसोस करने से फायदा ?

बेगम नाना साहब के सामने चुपचाप बैठ गईं। सहसा उनकी आँखों से आँसू झरझरा आए। नाना ने आँसू देखे।

"अफसोस करने से क्या लाभ बेगम !"—नाना ने धीरे से कहा—"हम लोगों की किस्मत में यही लिखा था !"

बेगम ने अपना हृदय कड़ा कर आँसू पोंछे।

"अब क्या करना चाहते हैं आप ?"

"......"

"खुदकुशी के सिवाय हम लोगों के आगे और कोई रास्ता नहीं है।"

"न, न, न बेगम ! ऐसा नहीं हो सकता। हम लोग अभी इतने मायूस नहीं हुए हैं।"

"अंग्रेज बुरी तरह से हम लोगों के पीछे पड़े हैं।"

"हम यहाँ नहीं रहेंगे।"

"तब ?"

"यहाँ से बाहर।"

"कहाँ ?"

"नेपाल !"

"नेपाल !"—बेगम हजरतमहल बोलीं—"लेकिन नेपाल के राणा तो हम लोगों के दुश्मन हैं।"

"मैं कोशिश कर रहा हूँ। शायद हम लोग कहीं तराई में आराम से रह सकें। इसीलिए मैंने आपको बुलवा लिया कि अगर आप चाहें तो मेरे साथ रह सकती हैं। मैं हमेशा आपके दुःख-सुख में काम आऊँगा।"

"इसीलिए मैं चली आयी। मेरी जिंदगी अब आपके हाथों है।"

"शुक्रिया !"

टोंक के नवाब के सामने अंग्रेज कप्तान उपस्थित हुआ।

"आपकी रियासत में तात्या टोपे के आने की सम्भावना है। आप जानते हैं, अंग्रेजी अमलदारी ने उसकी गिरफ्तारी पर एक लंबा इनाम रखा है। आप अंग्रेजी सल्तनत के दोस्त हैं इसलिए आपका फर्ज है कि आप तात्या टोपे की गिरफ्तारी में हमारी मदद करें।"

"अवश्य!"

"......"

"हमारी पूरी फौज इसके लिए तैयार है।"

अंग्रेज कप्तान ने नवाब को धन्यवाद दिया और उसी दिन टोंक की सारी फौज तात्या टोपे की टोह में, उसे गिरफ्तार करने के लिए कूचकर गई।

❀

अमरसिंह की ललकार पर सिपाही आगे बढ़े और देखते-देखते आंधी-वेग से सेनापति डगलस की फौज पर टूट पड़े। देखते-देखते दोनों पक्षों में भयंकर युद्ध शुरू हो गया। जगदीशपुर में एक बार फिर रण ठन गया। कुँवरसिंह के एक-एक बूँद रक्त का प्रतिशोध लेने के लिए सिपाही ललक-ललक मरने मारने लगे। तोपों, बंदूकों और संगीनों की भयंकर मार के कारण देखते-देखते सैकड़ों लाशें रण क्षेत्र में पट गईं। रक्त के पनाले फूट निकले।

"मारो! मारो!"

"......"

"बढ़ो! बढ़ो!"

अमरसिंह की हुंकार पर सिपाहियों ने प्रलय मचा दिया। स्वयं अमरसिंह युद्ध का नेतृत्व कर रहे थे।

दूर खड़े सेनापति डगलस सारा दृश्य देख रहे थे। वे देख रहे थे कि किस कौशल से अमरसिंह लड़ रहा है। उसका युद्ध व्यूह देखकर वे दंग थे। बड़े ही कौशल से वह युद्ध का सञ्चालन कर रहा था। सेनापति डगलस क्षण भर को अवाक् रह गए। उन्हें ऐसा लगा कि जैसे इस युद्ध में हारकर उन्हें भागना पड़ेगा, पर क्या डगलस को इस तरह से पराजित किया जा सकता है!

सेनापति आजम प्रत्येक स्थिति के लिए तैयार थे।

लड़ते-लड़ते अमरसिंह ने गोरी पलटन पर कब्जा करना चाहा। तोपचियों के पाँव उखड़ गए। सेनापति उधर युद्ध की प्रत्येक स्थिति पर निगाह रख रहे थे। यह स्थिति देखते ही उन्होंने अपनी कुमुक को संकेत किया।

तत्काल सहायक सेना दौड़ी।

इस नई मदद से अंग्रेजी सेना के पाँव जमे और फिर युद्ध प्रारम्भ हो गया। लड़ते-लड़ते सिपाहियों की शक्ति क्षीण हो गई थी। अंग्रेजी पलटन की इस नई मदद के आगे उनके पाँव न जम सके और देखते-देखते सिपाहियों में भगदड़ मच गई।

अमरसिंह के लाख उपाय करने पर भी अंग्रेजी पलटन के आगे सिपाहियों के पैर न जम सके। हारकर अमरसिंह को पीछे हटना पड़ा।

जगदीशपुर हाथ से जाता रहा।

अमरसिंह जगदीशपुर के जंगल में चले गए।

४४

टोंक के नवाब के तमाम सिपाही आस-पास के क्षेत्र में बिखरे हुए थे। तात्या टोपे और उसके साथियों की तलाश में छोटी-छोटी टुकड़ियाँ इधर-उधर घूम रही थीं। जिस किसी पर भी शक होता, उसे रोक लिया जाता और उसकी तलाशी ली जाती। उसके बारे में पूरी जाँच पड़ताल करने के बाद ही उसे छोड़ा जाता।

सिपाहियों के अफसरों की टोलियाँ अलग घूम रही थीं।

चारों ओर कड़ी नाकेबंदी थी!

किसी भी व्यक्ति के लिए इस नाकेबंदी को भेदकर निकल सकना आसान न था।

दोपहर का सूरज आसमान में चमक रहा था।

"ऐ, कौन है?"

सिपाहियों ने ललकार दी। एक नाटे कद का, गोरा, हट्टा-कट्टा आदमी अपने सिर पर एक बड़ी सी गठरी लेकर चला जा रहा था।

"ए कौन है?"

"......"

"बोलता क्यों नहीं?"

"बनिया!"

आश्चर्य तो यह था कि यह कैसा बनिया है, जो अपने सिर पर इतनी बड़ी गठरी है और फिर इस क्षेत्र में बनिए अकेले इस तरह नहीं घूमते हैं।

"गठरी में क्या है?"

"सामान!"

"गठरी खोलो!"

उस आदमी ने गठरी उतारकर रख दी, पर खोली नहीं। आफीसरों का मुँह ताकता रह गया वह। उसने अपने चेहरे के भाव ऐसे दिखलाए कि मानो उस गठरी में कोई बड़ी भारी बात है! इससे शक और बढ़ा। सिपाहियों के आफीसर उसे घेरकर खड़े हो गए।

"खोल दुम!"

"खोलूँगा, पर एक शर्त पर।"

"क्या?"

"इसमें जो चीज है, उसे आप लोग नहीं लेंगे।"

"अच्छा। खोल!"

उसने गठरी खोल दी और उस गठरी में बँधी वस्तु देखते ही सबके मुँह से आश्चर्य की ध्वनि निकल गयी। उस गठरी में कटे हुए सिर और धड़ थे। गोरों के शरीर थे। स्तब्ध हो सब देखते रह गए।

"मैं इन्हें लिए जा रहा हूँ। मैं अपने घर दिखलाऊँगा कि मैंने इनको मारा है। ये हमारा मुल्क लूटने आए हैं।"

"खबरदार!"

"डाँटते क्या हो! क्या मैं तुम लोगों जैसा नामर्द हूँ। मैंने अपनी माता का दूध पिया है और मैं अपनी माता को गोरों की गोद में नहीं देख सकता। इस मुल्क में पैदा होने वाले लोग ही अगर अपनी माता का शरीर बेचते हैं, तो बेचें। मैं ऐसा नहीं कर सकता। मैं एक हिन्दोस्तानी हूँ और हर हिन्दोस्तानी का फर्ज

है कि वह अपने मुल्क को आज़ाद करे। इस मुल्क पर सिर्फ़ हम लोगों की ही हुकूमत हो सकती है।"

उस आदमी का स्वर गूँज गया। उसकी वाणी में जोश आ गया था। सब ठगे से खड़े रह गए। उसका मुँह ताकते हुए। किसी में साहस न हुआ कि उसकी बात काट सके। उस आदमी ने सबको देखा और फिर मुस्कुरा उठा।

"मैं जानता हूँ। आप लोग किसकी टोह में हैं।"

"......"

"तात्या टोपे। देखो, मैं ही हूँ तात्या टोपे! तुम लोगों के सामने खड़ा हूँ। अगर तुम लोग अपनी माँ के दूध के साथ गद्दारी करना चाहते हो, तो लो मुझे गिरफ्तार कर लो! अंग्रेजों के सामने पकड़ ले जाओ। इनाम मिलेगा।" —और तात्या टोपे अट्टहास कर उठा।

(४)

जनरल नेपियर के हाथ से पत्र छूट गिरा। रंग उड़ गया। पत्र एक नवाब का था। पत्र में नवाब ने सारी स्थिति का वर्णन करते हुए क्षमा माँगी थी। पत्र में लिखा था कि जाने किस जादू के ज़ोर से तात्या टोपे ने उनकी सेना को अपने पक्ष में मिला लिया है और वह इस समय महेन्द्रगढ़ की ओर बढ़ गया है। पत्र पढ़कर सेनापति के आश्चर्य का ठिकाना न रहा।

अवश्य ही इस शत्रु के पास कोई अद्भुत बात है।

चारों ओर से घेरा पड़ा है।

एक से एक अंग्रेज़ी सूरमा उसके पीछे दौड़ रहे हैं, पर वह हाथ ही नहीं आ रहा है। सभी जगह से एक से ही समाचार आते हैं कि तात्या घिर गया था, पर वह देखते-देखते गायब हो गया। गोरी पलटन खड़ी रह जाती है और वह भाग निकलता है। अंग्रेज़ी टुकड़ियाँ खड़ी-खड़ी हाथ मलती रहती हैं और वह दुर्गम नदियाँ पार कर जाता है। हर ओर से असफलता के ही समाचार आ रहे हैं। एक से एक रण-कुशल अंग्रेज सेनानायकों को न जाने क्या हो गया है? तात्या टोपे, जिसके पास कोई शक्ति नहीं, कोई साधन नहीं, चकमा देता फिर रहा है। जहाँ जाता है, वहाँ की सेनाएँ उसके साथ हो जाती हैं। अंग्रेज़ी आज्ञाकारी

को नुकसान पहुँचाता हुआ वह निकल जाता है। अजीब तमाशा है। कलकत्ता के गवर्नर जनरल क्या इस बात पर विश्वास करेंगे? वे तो यही समझेंगे कि तमाम सेना नायक निकम्मे हैं। कुछ नहीं आता। इसमें यहाँ के तमाम लोगों की ही बदनामी है।

सेनापति क्रोध से भर गए।

तुरन्त उन्होंने अपने तमाम मातहतों को आदेशात्मक पत्र लिखे कि जैसे भी हो, तात्या टोपे को तुरन्त जिंदा या मुर्दा पकड़कर लावें। इसमें तनिक भी गफ़लत न हो! साथ ही स्वयं सेनापति भी इसके लिए उद्योग करने लगे।

८५

हावेल ने तुरन्त सेनापति डगलस के पास सूचना भेजी। उसे पता लग चुका था कि पास ही गन्ने के खेत में अमरसिंह डेरा डाले पड़ा है। अमरसिंह से कुछ ही फासले पर रुककर वह डगलस के आने की प्रतीक्षा करने लगा। अमरसिंह गन्ने के खेत में विश्राम कर रहे थे। आसन्न संकट का उन्हें कुछ भी पता न था। उनके सभी साथी भोजन आदि तैयार कर रहे थे। जगदीशपुर की करारी हार के कारण उनकी कमर टूट चुकी थी।

संध्या होने में कुछ ही देर थी।

रात इसी गन्ने के खेत में व्यतीत करने की इच्छा थी।

सहसा उड़ती धूल और शोर सुनकर वे चौंक पड़े।

"अंग्रेज आ गए!"

तुरन्त सब तैयार हो गए। देखते देखते गोरी पलटन ने चारों ओर से घेर लिया। अमरसिंह तनिक भी न घबराए, दोनों हाथ नंगी तलवारें लेकर टूट पड़े और देखते-देखते गोरे सैनिकों को काटते-गिराते भाग निकले!

सेनापति डगलस को इस बार पूरी आशा थी कि वे अमरसिंह को गिरफ्तार कर लेंगे। जिन्दा न सही मुर्दा ही, पर इस बार फिर अमरसिंह भाग निकला। बड़ी द्रुतगति से पीछा किया, पर अमरसिंह हाथ न आया। उसके सारे साथी मारे गए, पर कुछ साथियों के साथ वह भाग ही निकला।

८६

विद्रोह दब चुका था। लार्ड कैनिंग कलकत्ता से इलाहाबाद की ओर रवाना हो चुके थे। किन्तु कुछ उपद्रव ही अब हो रहे थे। तात्या टोपे, नाना साहब, बेगम हजरतमहल, फिरोजशाह कादिर, राव साहब, बाँदा के नवाब का कहीं पता न लग रहा था। राजा बेनीमाधव, मितौली के राजा, फर्रुखाबाद के नवाब, नृपालसिंह, मेंहदी हुसेन यही इने-गिने लोग उपद्रव कर रहे थे, पर उनकी कोई शक्ति न थी। लार्ड कैनिंग को यह विश्वास था कि वे लोग विशेष शक्ति नहीं पहुँचा सकते हैं। अमरसिंह भी जंगलों में छिपता फिर रहा है। सबकी कमर टूट चुकी है। अंग्रेजी अमलदारी पूरी हो चुकी है।

व्यापक विद्रोह था यह।

स्थान स्थान पर लोग उठे। अंग्रेजी अमलदारी का जुआ तोड़ फेंकने के लिए लोग उठे और लोगों ने सशस्त्र विद्रोह किया। कुछ लोगों ने तो काफी परेशान किया और उनका नाम ब्रिटेन तक में गूँज गया पर और अनजाने सहस्रों लोगों ने भी इस विद्रोह में अपना भाग लिया है। ऐसा कोई भी स्थान नहीं छूटा जहाँ किसी न किसी ने अपनी कुरबानी न दी हो। अंग्रेजी अमलदारी को मिटाने के लिए लाखों व्यक्तियों ने भाग लिया और अपने प्राण गँवाए।

हिन्दुस्तान के ये दिन कभी भूले नहीं जा सकते हैं। ईश्वर की ही अनुकम्पा से लार्ड कैनिंग यह विद्रोह दबा सकने में सफल हुए हैं अन्यथा विलायत में तो अंग्रेज न जाने कितनी खिल्लियाँ उड़ाते। उन्हें तो यहाँ की हालत का कुछ पता ही नहीं है। जितना कहा है, वही जानते हैं। कंपनी के डायरेक्टर भी हिन्दुस्तानियों को नंगा और गंवार समझते हैं, पर वे यह नहीं समझते कि यही गंवार कैसे सूरमा होते हैं!

तात्या टोपे के सम्बन्ध में लंदन के अखबार बातें करते हैं, पर यहाँ आकर देखें, तो उनकी आँखें खुल जाँय। तात्या टोपे की वीरता की [illegible]। विद्रोह की व्यापकता के लिए यहाँ के अंग्रेजों को ही दोषी ठहराया जा रहा है। कहा जा रहा है कि हम सब निकम्मे हैं। यहाँ आकर कोई देखने वाला तो नहीं है। सब हिन्दोस्तानियों को गंवार समझकर यहाँ के लोगों को ही शासन के योग्य नहीं समझ रहे हैं।

विलायत गरमाया हुआ है।

यहाँ हुए उपद्रव की ही चर्चा वहाँ पर है और इस बात की जोरदार सिफारिश चल रही है कि महारानी कम्पनी के हाथ से शासन ले लें। महारानी विक्टोरिया अब इस देश की महारानी बन जाँय। यही आजकल वहाँ हो रहा है। लार्ड कैनिंग को सारी बातों का पता था। विलायत से आने वाले समाचारों को देखते हुए उन्हें इसका विश्वास हो रहा था कि कम्पनी के हाथ से महारानी शासन ले लेंगी। इस सम्बन्ध में उनका एक ऐलान भी निकलने वाला है।

लार्ड कैनिंग को इन सब बातों से क्या वास्ता! अपना कार्य उन्होंने भली-भाँति सँभाला है। यही बहुत है। विद्रोह दब गया। ईश्वर ने उनकी लाज रख ली है।

❀

तात्या तेजी के साथ इन्द्रगढ़ की ओर बढ़ रहा था। उसे आशा थी। नाना साहब, नवाब बाँदा, फीरोजशाह और राजा मानसिंह आ गए होंगे। अगर वह शीघ्र ही उस ओर पहुँच जाता है, तो वे सब लोग उससे मिल जाँयगे और साथ आयी यह शक्ति देखकर पुनः प्रसन्न होंगे। अपने कौशल से टोंक की तमाम शक्ति को तात्या टोपे ने अपनी ओर मिला लिया था। इस विशाल वाहिनी के बल पर वह पुनः अंग्रेजों के छक्के छुड़ा देना चाहता था।

रास्ते में ही तात्या को पता चला कि बेगम हजरतमहल भी नाना साहब के साथ आ गई हैं। क्षण भर को तात्या दंग रह गया। ऐसी हालत अगर पहिले हो गई होती, तो क्या पूछना था! जब लखनऊ धधक रहा था तो उस समय बेगम हजरतमहल का हाथ इस ओर न बढ़ा। काश! ऐसा हो जाता तो...पर न हुआ।

इस समाचार से तात्या को कोई विशेष प्रसन्नता न हुई।

वह तेजी से इन्द्रगढ़ की ओर बढ़ रहा था। मूसलाधार वर्षा की उसे तनिक भी चिन्ता न थी। आँधी-पानी और तूफान में भी वह बढ़ना जानता था। दुनिया की कोई शक्ति उसे रोक नहीं सकती। वह बढ़ता जायगा। बढ़ता ही जायगा!

❀

राव साहब के हाथ पत्र पड़ा। पत्रवाहक पत्र देकर तुरन्त चला गया। पत्र आया देख बाँदा के नवाब भी आगे बढ़े।

उत्सुकतापूर्वक पूछा—"क्या है ?"

"तात्या की चिट्ठी !"

"तात्या की ?"

"हाँ !"

"क्या लिखा है ?"

पत्र पढ़कर राव साहब प्रसन्नता से बोल उठे—"शाबाश ! आ रहा है ! वाह ! वाह !!"

"......"

"तात्या दक्षिण से फौज लेकर आ रहा है। इस बार फिर उसके साथ हजारों सिपाही हैं और बहुत सी तोपें हैं। इस बार वह फिर तैयार होकर आ रहा है। हमें उससे मिलना चाहिए। आज ही हम यहाँ से चल देंगे। उसने हमें बुलाया है।"

"राजा मानसिंह को भी खबर कर दीजिए !"

"हाँ !"

"नाना साहब और बेगम तो शायद निकल गए। हो सके तो उनको खबर भिजवाइए। वैसे विशेष आशा तो नहीं है !"

"देखा जायगा। हम जितने भी हैं, वही बहुत हैं !"

नवाब बाँदा ने राव साहब की बात स्वीकार कर ली। उनका मन भी प्रसन्न हुआ। शायद है, दुःख और संकट के ये दिन दूर हो जायँ और जंगलों में भागे भागे फिरने के चक्कर से जान बचे। इसी आशा पर तो सभी हैं।

तात्या आ रहा है।

क्या वह आ सकेगा ?

नवाब बाँदा ने आकाश की ओर देखा। ये काले काले मेघ, आसमान पर उमड़ती हुई ये घटाएँ, रास्ते की कठिनाइयाँ और रास्ते में ही बाधा बनकर चारों तरफ पड़ा हुआ बैरी...इसके बाद यह चम्बल नदी !

चम्बल !

इस बरसात के मौसम में वह अपनी भरी जवानी पर होगी। उसकी लहरें गरज-गरजकर सागर की लहरों से होड़ ले रही होंगी। पहाड़ी नदी बरसात में तो जैसे अपने आगे किसी को समझती ही नहीं। वह तो पहाड़ों तक को चुनौती

देती है। ऐसी दशा में क्या तात्या के लिए चम्बल पारकर सकना सम्भव है। अकेला तो नहीं है वह। उसके साथ विशाल वाहिनी है। इधर चम्बल और उधर चारों तरफ अंग्रेजों का घेरा!

नवाब-बाँदा ने लम्बी साँस ली।

आगे क्या होता है! कुछ कहा नहीं जा सकता।

४३

अमरसिंह के पैर में गहरी चोट लग गई थी। गन्ने के खेत से पीछे हटते समय हठात् संगीन का एक भरपूर वार हुआ और उसी समय वह गिर पड़े होते अगर उनके घोड़े ने उन्हें सँभाला न होता। घाव गहरा था। इस पर भी अमरसिंह को अपने घाव की अथवा शरीर की उतनी चिन्ता न थी, जितनी कि भविष्य की थी।

भविष्य में अब क्या होगा?

उनकी अपनी सारी शक्ति नष्ट हो चुकी है। अंग्रेजों से लड़ते-लड़ते थक चुके हैं। अब छिट-फुट युद्ध का ही रास्ता है पर इस तरह कब तक लड़ा जा सकता है। और इस प्रकार के युद्ध से तो अंग्रेजों को कोई भी नुकसान नहीं पहुँचाया जा सकता!

भाई गए। राज्य गया। सैनिक-शक्ति गई। इस विद्रोह में तो जैसे सब कुछ ही लुटा गया। अब गाँवों से भी कोई आशा नहीं। पहिले तो लोग नाम सुनते ही आ जाते थे, पर अब अंग्रेजों का इतना आतंक बढ़ रहा है कि कोई उनके पास ही नहीं आता। यह सब दिल्ली-पतन के बाद ही हुआ है। लोग समझ गए हैं कि अंग्रेजी शासन को मिटाना खेल नहीं।

क्या हो!

लन्दन से यहाँ उड़ते-उड़ते खबर आयी है कि महारानी विक्टोरिया का ऐलान होने वाला है। अब से इस देश की हुकूमत महारानी के हाथ में रहेगी और कम्पनी का राज जाता रहेगा। सुना गया है कि महारानी विद्रोहियों को क्षमादान करने की घोषणा करेंगी। आत्म-समर्पण करने वाले बागियों पर कोई कार्रवाई न होगी। यह समाचार सत्य भी हो सकता है।

क्या वह आत्म-समर्पण कर दे ?

आत्म-समर्पण !

जिंदगी भर जो अंग्रेजों के आगे कभी झुका नहीं, क्या वही अब अंग्रेजों के आगे झुकेगा ! नहीं, कभी नहीं !

उनके कुछ साथियों की यही राय है ! अमरसिंह आत्म-समर्पण कर दें।

अमरसिंह थरथरा उठे।

आत्म समर्पण...

नहीं ! कभी नहीं !!

*

तात्या तेजी के साथ बढ़ रहा था।

"सुनिए !"

"क्या समाचार है ?"

"अंग्रेजी पलटन चल पड़ी है और चम्बल किनारे हम लोगों को घेर लेने की योजना है।"

"ठीक है !"

"इसलिए हम लोगों का अब और बढ़ना खतरे से खाली नहीं !"

"......"

"रास्ता बदल कर बढ़िए !"

"चुप रहो ! तात्या ने हमेशा खतरों से खेलना सीखा है। हमारी पलटन चम्बल की ओर ही बढ़ेगी। अगर अंग्रेजों में ताकत है, तो हमें रोक लें।"

तात्या ने पीछे लौटने या रास्ता बदलने से इन्कार कर दिया। वह चम्बल पारकर शीघ्र से शीघ्र इन्द्रगढ़ पहुँच जाना चाहता था। तात्या ने अपनी चाल बढ़ा दी। मराठा-वीर अकेले ही अपनी सेना का नेतृत्व करता हुआ बढ़ रहा था।

तीन दिन की लगातार दौड़ के बाद वह चम्बल किनारे जा पहुँचा। बरसात का मौसम अपनी पूर्ण उठान पर था। पहाड़ी नदी चम्बल अपनी भरपूर जवानी पर थी। उसकी लहरों का गर्जन दूर से ही सुनाई पड़ रहा था। तात्या तनिक भी विचलित न हुआ। चम्बल किनारे आकर उसने अपना पड़ाव डाल दिया और नदी पार उतरने की तैयारियाँ करने लगा।

एक ही रात चम्बल किनारे बीती और उस एक ही रात में तात्या ने सारी चम्बल पार करने की तैयारियाँ पूरी कर लीं। बड़े-बड़े लट्ठों को लाकर नावें बनायी गईं। जहाँ से जो साधन जुट सके, जुटाए गए और तात्या चम्बल पार करने के लिए तैयार हो गया। पहिली टुकड़ी चम्बल की धारा में उतरी ही थी कि जोर की ध्वनि सुनायी पड़ी और देखते-देखते राबर्ट नेपियर के नेतृत्व में गोरी पलटन आ गयी।

तात्या मुस्कुराया। वह तनिक भी न घबराया और इस स्थिति के लिए एकदम तैयार था। तत्काल उसने अपनी गोलन्दाज टुकड़ी को आगे बढ़ा दिया। गोलंदाज टुकड़ी आगे बढ़कर गोरी पलटन का रास्ता रोककर खड़ी हो गई और उसने भीषण गोलाबारी कर गोरी पलटन को रोक लिया। सेनापति राबर्ट के नेतृत्व में गोरी पलटन तात्या को रोकने के लिए प्राण-प्रण से युद्ध करने लगी, और तात्या की पिछली टुकड़ियाँ एक के बाद एक चम्बल की धारा में उतर रही थीं।

लाख प्रयत्न करने पर भी राबर्ट नेपियर गोलंदाज-टुकड़ी को भेदकर आगे न बढ़ सके। दोपहर तक उनका रास्ता रुका रहा और तब तक तात्या की सेना चम्बल पार हो गई। इसके बाद क्रमशः एक एक तोप पीछे हटाकर चम्बल पार उतारी जाने लगी। अब कुछ ही तोपें ऐसी रह गईं कि जो अंग्रेजों का मुकाबला नहीं कर सकती थीं, उन्हें छोड़कर गोलंदाज भाग गए।

राबर्ट तेजी से दौड़े।

कुछ ही दूरी पर उन्होंने तात्या को देखा। वह अट्टहास कर रहा था। उसने अपना हाथ हिलाया। मानो वह फिर मिलने का इशारा कर रहा है। देखते-देखते वह छलाँग मारकर चम्बल की धारा में कूद पड़ा। नदी की तेज लहरों में गायब हो गया। गोरी पलटन चम्बल किनारे हाथ मलती खड़ी रह गई।

❀

इलाहाबाद की कोतवाली के सामने अपार जन-समूह एकत्रित था। सारे शहर में पूरे देश की तरह यह बात फैल गई थी कि कंपनी के हाथ से महारानी विक्टोरिया ने राज ले लिया है और इस संबंध में एक घोषणा-पत्र उन्होंने प्रकाशित

किया है। लार्ड कैनिंग वह घोषणा-पत्र आज स्वयं पढ़कर सुनाने वाले हैं। एक बहुत ही सुन्दर शामियाने में नगर के प्रतिष्ठित व्यक्ति एकत्रित थे। शामियाने के बाहर अपार जन समूह खड़ा था।

बिगुल बजा।

लार्ड कैनिंग की उपस्थिति के उपलक्ष्य में बंदूकों की सलामी दी गई। अंग्रेजी-बैंड गूँजा और लार्ड कैनिंग ने स्वयं मंच पर उपस्थित होकर अपने हाथों यूनियन जैक फहराया और तब उन्होंने महारानी विक्टोरिया का ऐलान पढ़ा।

"मैं, विक्टोरिया, जगदीश्वर की कृपा से ग्रेट ब्रिटेन और आयर्लैंड तथा यूरोप, एशिया, अफ्रीका, अमेरिका और आस्ट्रेलिया के सम्मिलित उपनिवेशों की अधीश्वरी और स्वधर्म रक्षाकारिणी। भारतवर्ष में जो सब प्रदेश मेरे अधिकार में थे, उन सबका शासन ईस्ट इंडिया कंपनी करती थी। इस समय पार्लामेंट महासभा की सम्मति से भारत के उन सब प्रदेशों का शासन मैं अपने हाथ में लेती हूँ।"

लार्ड कैनिंग महारानी का घोषणा-पत्र पढ़ रहे थे।

"...जिन्होंने गवर्मेंट के विरुद्ध हथियार उठाए हैं, यदि वे आत्म-समर्पण कर देंगे तो उनको कोई दंड नहीं दिया जायगा। जिन पर अपराध गंभीर है, उन पर यथा योग्य विचार किया जायगा।..."

लार्ड कैनिंग ने महारानी के घोषणा-पत्र की अन्य बातें भी सुनायीं, जिनमें महारानी ने भारतवर्ष की सुख-शान्ति और समृद्धि की कामना का उल्लेख किया था।

इस घोषणा-पत्र के उपरान्त शामियाने में उपस्थित सभी व्यक्तियों ने खड़े होकर महारानी के प्रति अपनी निष्ठा व्यक्त की।

इस अवसर पर कुछ लोगों को विद्रोह के समय कंपनी राज की सेवा करने तथा अंग्रेजों की रक्षा करने के लिए भारी भारी उपहार दिए गए।

महारानी के घोषणा पत्र का नगर की जनता पर प्रभाव पड़ा।

इस घोषणा पत्र के प्रकाशन के तीन चार दिन बाद ही बेगम हजरतमहल का एक ऐलान उर्दू में गुप्त रूप से वितरित हुआ, जिसमें जनता को अंग्रेजों के भुलावे में न आने की सलाह दी गई थी। इस घोषणा-पत्र के विषय में गुप्त रूप से कुछ सनसनी अवश्य फैली, पर कोई विशेष असर नहीं पड़ा। जनता अब हार

मान चुकी थी। अंग्रेजी शासन के दमन चक्र की कठोरता के आगे उसमें इतना साहस न था कि वह सिर उठा सके।

※

बादशाह बहादुरशाह 'जफर' पर एक बंद-कमरे में मुकदमा चलाया गया। उन पर यह अपराध सिद्ध हो गया कि उन्होंने इस विद्रोह में सक्रिय भाग लिया। कंपनी राज की टूट-फूट और गोरों की हत्या के लिए वे जिम्मेदार हैं। इस अपराध में उन्हें सपरिवार आजीवन कारावास का दंड दिया गया और बंदी के रूप में उन्हें कलकत्ता भेज दिया गया, जहाँ से वे रंगून भेजे जाने वाले थे। बादशाह, बेगम जीनतमहल और जवाँबख्त सरकारी बंदी के रूप में अपना शेष जीवन व्यतीत करने के लिए कड़े पहरे में कुछ दिन बाद कलकत्ता से रंगून रवाना कर दिए गए। देश की जनता को यह समाचार दे दिए गया। मूक भाव से लोग यह सब सुनते, देखते रहे।

महारानी के घोषणा पत्र का विद्रोहियों पर प्रभाव पड़ा। शंकरपुर के राजा बेणीमाधव ने भी आत्म समर्पण कर दिया। इनका अपराध क्षमा किया गया। गोंडा के राजा देवी बख्श नेपाल की तराई में भाग गए। राजा पृथ्वीपालसिंह ने भी आत्म-समर्पण किया। फर्रुखाबाद के नवाब आत्म-समर्पण करने के उपरान्त मक्का रवाना हो गए। खाँ बहादुर खाँ को गिरफ्तार कर लिया गया और बरेली की कोतवाली में उन्हें सार्वजनिक रूप से फाँसी की सजा दी गई। मिथौली के वृद्ध राजा को कालेपानी भेज दिया गया।

देश की जनता की रही-सही उत्तेजना भी जाती रही।

बाँदा के नवाब ने आत्म-समर्पण कर दिया।

कुँवर अमरसिंह ने भी आत्म-समर्पण कर दिया।

विद्रोह के अंतिम समय के इन दो सेनानियों के आत्म-समर्पण से देश एकदम निरीह हो गया। विद्रोह की केवल स्मृतियाँ शेष रह गईं। शेष रह गईं बागियों और अंग्रेजों की कहानियाँ।

※

हारा-थका तात्या विश्राम कर रहा था। कुछ ही दूरी पर राजा मानसिंह सो

रहे थे। शायद वे गहरी निद्रा में मग्न थे, पर तात्या की आँखों में नींद न थी। रात काफी जा चुकी थी। बाहर घोर अंधकार छाया हुआ था। कुछ ही देर पहिले बरसा हो चुकी थी।

तात्या सोने का उपक्रम कर रहा था, पर उसे नींद न आ रही थी। पलकें झँपी थीं, पर मन में विचारों का मंथन चल रहा था। तात्या की आँखों के आगे एक के बाद एक अनेक दृश्य झूल रहे थे। चम्बल पार कर जब वह इस ओर आया तो राव साहब और फिरोजशाह का पता ही न था। शायद वे निराश हो कर नाना साहब और बेगम हजरतमहल की भाँति अज्ञात स्थान को जा चुके थे। बाँदा के नवाब कानपुर बढ़ गए थे। उनके आत्म-समर्पण करने की इच्छा का उसे पता लगा तो उसने मन को बड़ी ग्लानि हुई।

अकेला ही तात्या झालरापाटन की ओर बढ़ा। झालरापाटन पर उसका पाँच दिन तक अधिकार रहा, पर कुछ विशेष शक्ति हाथ न आयी। अंग्रेजी सेना अपनी पूरी शक्ति के साथ उसका पीछा कर रही थी। अन्त में झालरापाटन छोड़ कर आगे बढ़ना पड़ा।

सारी बरसात अंग्रेजी को परेशान करता रहा तात्या। कभी उधर तो कभी इधर। उदयपुर, बंबई और महाराष्ट्र प्रान्त को भी तात्या टोपे ने हिला दिया। नर्मदा के इस पार, तो कभी उस पार। लगातार आठ महीने तक गोरी पलटन को छकाया। छिट-पुट न जाने कितने युद्ध हुए, पर वह तात्या किसी के हाथ न आया। दक्षिण की गोरी सेना भी तात्या को पकड़ सकने में असफल रही।

बरसात की समाप्ति के उपरान्त तात्या टोपे को घेरने के लिए गोरी सरकार की पूरी शक्ति लगी और तात्या को एक स्थान से दूसरे स्थान पर भागना पड़ा। तात्या पीछे हटता रहा, पर उसने हार नहीं मानी और न आज भी वह अपनी हार मान सकता है। जब तक तात्या के इस तन में प्राण हैं, तब तक तात्या गोरी सरकार से लड़ता रहेगा।

इस क्षेत्र में आकर फिर मानसिंह से मुलाकात हुई और बड़ी देर तक भावी-योजनाएँ बनती रही हैं। यहाँ से कुछ ही दूरी पर अलवर है। शिविर जी के इस स्थान से कोई चार मील दूर। कल प्रातः अलवर में अगर कुछ बन्दोबस्त नहीं होगा, तो वहाँ से आगे बढ़ जाना पड़ेगा।

सेनापति मीड अपनी पूरी ताकत से उसका पीछा कर रहे हैं। .

एक बार तो अंग्रेजों के चंगुल में आते-आते बड़ी मुश्किल से प्राण बचे। देवास में अंग्रेज उसके गुप्तवास पर आ धमके। अंग्रेजों ने घेर लिया। अगर एक पल की भी देरी कर दी होती तो पकड़ा गया होता, पर पलक झपते ही तात्या भाग खड़ा हुआ और अंग्रेजों के हाथ न आया। शायद इस कांड में मानसिंह के भतीजे अजीतसिंह का हाथ रहा हो।

तात्या ने करवट बदली।

चिन्ताओं के कारण नींद ही नहीं आ रही है।

बरसों से इसी प्रकार उसके दिन बीते। नाना के साथ वह विद्रोह की योजनाएँ बनाता रहा। विद्रोह शुरू हुआ तो उसका संचालन किया। डेढ़ वर्ष से भी ऊपर लड़ता रहा और इधर आठ दस महीने से छिट-फुट संग्राम! उसकी इस अदम्य शक्ति के कारण तमाम अंग्रेज थर्रा गए हैं। सुना है कि लन्दन में भी उसका नाम चर्चा का विषय बन गया है। लोग उसे जादूगर समझने लगे हैं।

तात्या के होंठों पर मुस्कराहट खेल गई।

यह जादू नहीं। आत्म-शक्ति का फल है। जहाँ दृढ़ इच्छा है, वहाँ सब कुछ है। संघर्ष ही जिसका ध्येय हो, उसे कौन रोक सकता है!

तात्या का ध्यान भंग हुआ।

पास ही कुछ खरखरा रहा था। शायद कोई जंगली जानवर! तात्या ने करवट बदली। हठात् कुछ लोगों को आया देख चौंक पड़ा।

"कौन?"

इससे पहिले कि वह उछलकर खड़ा हो सके आठ दस व्यक्ति एक साथ उस पर टूट पड़े। तात्या ने अपनी भरपूर शक्ति लगाकर उन सब लोगों को ठेलने का प्रयास किया, पर वह ऐसा न कर सका। देखते देखते वह स्थान बहुत से लोगों से भर गया। तात्या को बुरी तरह पटककर बेकाबू कर दिया गया और उसके हाथ पैर मजबूत रस्सियों से कस दिए गए।

"जंजीर...जंजीर..."

बेड़ियाँ झनझनायी और लोहे की मोटी जंजीरें तात्या के हाथ-पैरों में पड़ गई।

तात्या गिरफ्तार हो गया।

मशालें भभकीं और उसने देखा सैकड़ों गोरे, हथियारों से लैस ! मानसिंह... देखा वह अंग्रेजों के पास खड़ा था। उस पर किसी प्रकार का बंधन न था। वह स्वतन्त्र खड़ा था।

"मानसिंह..."

तात्या शेर-सा दहाड़ उठा।

"मानसिंह, तुमने मेरे साथ विश्वासघात किया, मानसिंह..."

मानसिंह चुपचाप खड़ा रहा। उसके मुँह से एक शब्द भी न निकला। शायद वह परिस्थितियों के कारण तात्या टोपे के साथ ऐसा करने के लिए विवश था।

१४

फाँसी !

आज तात्या टोपे को फाँसी होगी। पूरे क्षेत्र में बिजली की तरह यह समाचार फैल गया। देखते देखते टीलों के चारों ओर हजारों ग्राम वासियों की भीड़ लग गई। टीले के चारों ओर बड़ी-बड़ी तोपें खड़ी थीं। हाथ में जलते पलीते लिए गोलंदाज टुकड़ी एकदम तैयार खड़ी थी। इसके बाद भारी संख्या में गोरी पलटन अपनी बन्दूकों को तैयार लिए खड़ी थी।

सख्त पहरा था। बिना इजाजत के एक चुड़िया भी टीले तक न आ सकती थी।

तोप गरज उठी।

हजारों दर्शक स्तब्ध रह गए। चारों ओर भयंकर सन्नाटा छा गया। कड़े पहरे में एक मराठा टीले पर लाया गया, उसके हाथों-पावों जंजीरें पड़ी थीं। लोहे की भारी-भारी जंजीरें। उन जंजीरों को खोला भी नहीं गया। ऊंचे टीले पर तिकठी खड़ी थी। तिकठी का फन्दा तात्या के गले लगाया। इसी समय बन्दूकों और तोपों का मुँह हजारों दर्शकों की ओर घूम गया।

फंदा गले में पड़ा।

तात्या मुस्कुराया। बुदबुदाया—"मैंने अपना कर्त्तव्य पूरा किया। आने वाली पीढ़ी मेरे अधूरे काम को..."

खट् !

फन्दा खिंच गया और देखते-देखते तात्या का शरीर तिकठी से लटक गया। उपस्थित हजारों व्यक्ति सिहर उठे। उनके सिर झुक गए।

तात्या की देह झूलती रही।

बड़े-बड़े डाक्टर वहाँ खड़े थे। पारी-पारी से सबने तात्या का भली भाँति निरीक्षण किया और जब उसके मृत होने की पुष्टि की तो शरीर नीचे उतारा गया। शव वहीं छोड़ दिया गया। शाम तक शव, प्रदर्शन के लिए मैदान में कठोर पहरे में पड़ा रहा। बड़े-बड़े अंग्रेज आफीसरों ने तात्या को अन्तिम बार देखा। उसकी स्मृति में उसके बाल नोंच-नोंचकर अंग्रेज आफीसर ले गए।

तात्या के तमाम वस्त्र बड़ी ही सुरक्षा के साथ अंग्रेजों ने अपने पास रखे।

इसके उपरान्त तात्या का शव उसी टीले पर जला दिया गया। शव जब भस्म हो गया तो पहरा हट गया।

दूसरे दिन उस स्थान पर जरा सी राख भी शेष न थी।

❀ विदा ❀

दुर्गासाह म्युनिसिपल लाइब्रेरी
Durga Sah Municipal Library NAINITAL
नैनीताल

सहायिका

हिन्दी

सिपाही विद्रोह—ईश्वरी प्रसाद शर्मा

भारत में अंग्रेजी राज—(२ भा) सुन्दरलाल

गदर का इतिहास (५ खंड)—अज्ञात

उर्दू

दास्ताने-गदर—जहीर

देहली की जाँकनी—ख्वाजा हसन निजामी

तारीखे-हिन्द—शम्सुल उलमा मुंशी जकाउल्ला खाँ

मराठी

झाँसीच्या राणीचें चरित्र—द० ब० पारसनीस

सन १८५७—एन० के० बेहरे

माझा प्रवास—चिं० वि० वैद्य

बँगला

सिपाही युद्धेर इतिहास—रजनीकांत गुप्त

Ibid
Story of Cawnpore—Mowbray Thomson.
Cawnpore—Trevelyan.
Sepoy War—Kaye.
Indian Empire—Martin.
Mutinies in Oudh—Gubbin.
Cawnpore Massacre—Shepherd.
Indian Mutiny- Holme
The Mutiny of Bengal Army.
Forty years in Ineia—Lord Robert.
The Map of life-W. E. H. Leckey.
History of our own times—Justice McCarthy.
Punjab & Delhi—Cave Brown
Twelve years soldier's life in India—Hudson.
A year's Campaigning in India—Medley
Crisis in the Punjab—Cooper.
Patna Crisis—Taylor
Indian Mutiny—Malleson.
Indian Mutiny— Charles Ball.
Indian Revolt— Chamber.
Siege of Delhi—M. G. Handcock.
Narrative of Indian Revolt—George Vicker.
Reminiscences of the Great Mutiny- Fobes Mitchell
Notes on the Revolt—Raikes.
Life of Lord Lawrence.
Fictions exposed and Urdoo works—Leckey.

Central India—Lowey
Siege of D lhi—Major Reid.
Greater Britain—Charles Dilke.
Up Among the Pandey's—Lieut. Majendie.
Indian and Home Memories- Sir Henry Cotton.
A lady's Escape from Gawalior.
Real Danger in India—Forrest.
Incidents of the Sepoy war—Hope Grant.
The Campaign in Central India—Dr. Silvester
B. Plea for Princes of India—John Salvin.

Papers & Periodicals.

Calcutta Review. Vol. XXXII
Official Narrative-I. C. Wilson.
My Confessions-Sir Wm. Muir. Head, Intelligence Dept.
The Friend of India. (Calcutta)
London Times—1857-1859.
State Papers- Forrest.
General Neill's Report.
Jhansi Papers 1858
Greathed's Letters.
Two Narratives of the Mutiny in Delhi
Bombay Telegraph. 1858-1859
Russelle's diary in India